सचित्र

निरयावलिका तथा विपाक सूत्र

मूल पाठ, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

❖ प्रधान सम्पादक ❖

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य

उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

❖ सह-सम्पादक ❖

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

पद्म प्रकाशन

पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की दीक्षा हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में सचित्र आगममाला का चौदहवाँ पुष्प

■ सचित्र निरयावलिका तथा विपाक सूत्र

■ **प्रधान सम्पादक**
उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

■ **सह-सम्पादक**
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

■ **अंग्रेजी अनुवादक**
सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

■ **संशोधन**
राजकुमार जी जैन, दिल्ली

■ **प्रथमावृत्ति**
वि स २०५९, चैत्र
ईस्वी सन् २००३, अप्रैल

■ **चित्रांकन**
डॉ त्रिलोक शर्मा

■ **प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान**
पद्म प्रकाशन
पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

■ **मुद्रण-व्यवस्था**
संजय सुराना
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-७, अवागढ हाउस, एम जी रोड, आगरा-२८२ ००२
दूरभाष (०५६२) २१५११६५

■ **मूल्य**
छह सौ रुपया मात्र (६००/- रुपये)

ILLUSTRATED

NIRAYAVALIKA & VIPAAK SUTRA

Original Text with Hindi and English Translations,
Elaboration and Multicoloured Illustrations

❖ EDITOR-IN-CHIEF ❖

Up-pravartak Shri Amar Muni

(The Disciple of Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari
Shri Padma Chandra ji M.)

❖ ASSOCIATE-EDITOR ❖

Srichand Surana 'Saras'

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

ON THE OCCASION OF DIAMOND JUBILLE OF THE INITIATION OF UTTAR BHARATIYA PRAVARTAK GURUDEV BHANDARI SHRI PADMA CHANDRA JI M
THE FOURTEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

- ILLUSTRATED NIRAYAVALIKA & VIPAAK SUTRA

- *Editor-in-Chief*
  Up pravartak Shri Amar Muni

- *Associate-Editor*
  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*
  Surendra Bothara, Jaipur

- *Copy Editing*
  Raj Kumar Jain, Delhi

- *First Edition*
  Chaitra, 2059 V
  April, 2003 A D

- *Illustrator*
  Dr Trilok Sharma

- *Publisher and Distributor*
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printer*
  Sanjay Surana
  Shree Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M G Road, Agra-282 002
  Phone (0562) 2151165

- *Price*
  Six Hundred Rupees only (Rs 600/-)



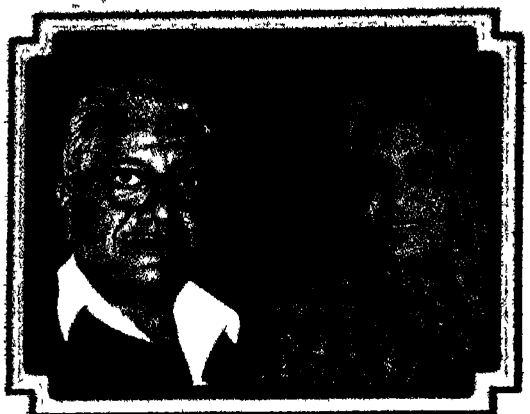
श्रुत-ज्ञान रत्नाकर
श्रमण संघ के प्रथम
पट्टधर आचार्य सम्राट
श्री आत्माराम जी महाराज
की
अमर स्मृति
में
सविनय

समर्पित



आपश्री का
प्रशिष्यानुशिष्य
विनम्र सेवक
अमर मुनि
(उप प्रवर्तक)

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता



श्री अग्रसेन जी सुन्दरी देवी जैन
विवेक विहार, दिल्ली



श्री जय भगवानजी विद्यादेवी जैन
योजना विहार, दिल्ली



श्री सुभाषचन्द शशि जैन
विवेक विहार, दिल्ली



श्री सुशीलकुमार कौशल्यादेवी जैन
योजना विहार, दिल्ली



स्व. श्री नेमचन्द जैन
रोहिणी, दिल्ली



श्री राजपाल जैन
सोनीपत

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता







डा. मोजीराम जी जैन श्रीमती पुष्पा जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली



श्री पंकज जैन श्रीमती संगीता जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली



श्री दिनेश जैन श्रीमती नीति जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली



श्री राजकुमार जैन
गोविन्दगढ़ मण्डी



श्री बोधराज सन्तोष रानी जैन
घरौंडा मण्डी

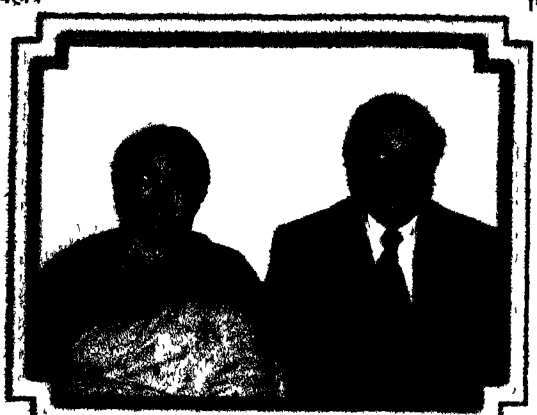
श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता



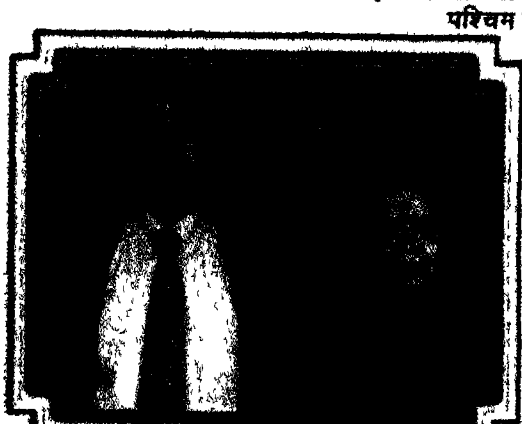
श्री पन्नालाल जी मालादेवी जैन
पश्चिम विहार



श्री भारतभूषण एडवोकेट श्रीमती जय श्री जैन
भिवानी



इन्जी. सी पी जैन डॉ वीणा जैन
पश्चिम विहार, दिल्ली



श्री शान्तिलाल जी कोठारी मीना कोठारी
पश्चिम विहार, दिल्ली



श्री रतन जैन
पीतमपुरा, दिल्ली

प्रकाशकीय

हमे अत्यधिक प्रसन्नता है कि सदा की भाँति इस वर्ष भी हम अपनी सचित्र आगम माला मे एक ही साथ दो भागो का प्रकाशन कर रहे है। जिनमे कुल सात आगम सम्मिलित है। औपपातिक सूत्र के अन्त मे हमने अनुयोगद्वार की भाँति अग्रेजी मे पारिभाषिक शब्द कोष दिया है, जिससे आगम पढने वालों को आगमिक शब्दो को समझने मे बडी सुविधा व सरलता हो गई है। विदेश मे रहने वाले तथा अग्रेजी माध्यम से पढने वाले सज्जनो ने इस शैली को विशेष पसन्द किया है और सराहा है। इसकी उपयोगिता का आज पता नही चलता, परन्तु भविष्य मे जब अनेक आगम इस प्रकार पारिभाषिक शब्दो के साथ प्रकट हो जायेगे तो निस्सदेह अपने आप आगमो का अग्रेजी भाषा मे एक विशिष्ट शब्द–कोष तैयार हो जायेगा। आज अग्रेजी शब्द–कोषो मे जिन जैन शब्दो का कोई अर्थ व परिभाषा उपलब्ध नही है भविष्य मे वे शब्द अग्रेजी शब्द कोषो मे सम्मिलित हो जायेगे तो भारतीय भाषा की समृद्धि और जैन दर्शन के ज्ञान की अभिवृद्धि का एक सहज कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

हमारे कार्य मे सहयोग देने वाले सभी सज्जनो के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए हम पुन अपने प्रेरणास्रोत स्व गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म तथा उनके सुयोग्य शिष्य आगम मर्मज्ञ उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म के प्रति अपना कोटि–कोटि आभार प्रकट करते है।

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

PUBLISHER'S NOTE

We are very pleased that as before we are releasing two books of our Illustrated Agam Series simultaneously These books include seven *Agams* In *Aupapatik* Sutra we appended English glossary of technical terms This has made the understanding of *Agamic* terms for our readers very easy and convenient Foreign and Indian readers using English medium have specially liked and appreciated this style It is too early to appreciate the usefulness of this However, when many *Agams* appear with such glossaries a unique English dictionary will be ready In due course those Jain technical terms which do not appear in English to English and English to Indian languages dictionaries will be included in their new editions Without any strenuous effort, this would be a stride in the direction of accomplishing the missions of spread of the knowledge of Jain philosophy and enriching Indian languages

We express our earnest gratitude for all those who have been extending their helping hand in our mission At the same time we once again express our unending indebtedness for our sources of inspiration—Uttar Bharatiya Pravartak (late) Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj and his able disciple Up-pravartak Shri Amar Muni ji M

Mahendra Kumar Jain
PRESIDENT
Padma Prakashan

स्वकथ्य : प्रस्तावना

सचित्र आगम प्रकाशन की शृखला मे इस पुस्तक मे छह आगम एक साथ लिए हैं। निरयावलिका आदि मे पॉच उपाग तथा ग्यारहवॉ अग शास्त्र विपाकसूत्र। इन सभी आगमो मे कथानुयोग का विषय है। चरित्र प्रधान होने से इनका प्रतिपाद्य सरल, सहजगम्य है। दूसरी बात, सभी आगम परिमाण की दृष्टि से छोटे है। अत सभी को यहाँ एक ही जिल्द मे रखा गया है।

आगमो के अग बाह्य या उपाग विभाग मे निरयावलिका आदि पाँच उपागो की गणना है। पॉचो उपागो का क्रमश नाम है (१) निरयावलिका, (२) कल्पावतसिका , (३) पुष्पिका, (४) पुष्पचूलिका तथा (५) वण्हिदसा। इन्हे पॉच वर्ग भी कहते है।

कालक्रम के अनुसार विचार करे तो प्रथम व द्वितीय उपाग (वर्ग) का सीधा सम्बन्ध भगवान महावीर के शासनकाल से है। प्रथम वर्ग निरयावलिका मे चम्पापति राजा कूणिक तथा उसके कालकुमार आदि दस भाईयो का वैशालीपति महाराज चेटक के साथ हुए दो महायुद्धो का बहुत रोमाचक वर्णन है। कूणिक अपने पिता राजा श्रेणिक के विशाल साम्राज्य का स्वयभू स्वामी बनने के लिए कालकुमार आदि दस भाईयो के साथ मिलकर षड्यत्र रचता है। श्रेणिक को कारागार मे बद करके स्वय मगध के राजसिहासन पर बैठता है, तथा राज्य के छोटे–छोटे भाग अन्य भाईयो मे बॉट देता है। चेलना का आत्मज वेहल्लकुमार चम्पा मे कूणिक के साथ ही रहता है। उसको राजा श्रेणिक ने अपनी मृत्यु से पहले ही सेचनक गधहस्ती तथा बकचूल हार दे दिया था। यह दोनो ही वस्तुऍ मगध की अत्यधिक मूल्यवान सम्पदा थी। कूणिक इन दोनो वस्तुओ को वेहल्लकुमार से मॉगता है। वेहल्लकुमार नही देता। साथ ही वह डर जाता है कि हो सकता है, राजा कूणिक ये वस्तुऍ मुझसे छीन लेवे। इसलिए वह अपने परिवार सहित दोनो मूल्यवान वस्तुओ को लेकर अपने नाना राजा चेटक की शरण मे वैशाली चला जाता है। कूणिक इन वस्तुओ को प्राप्त करने के लिए युद्ध पर उतारू हो जाता है। एक तरफ वैशाली गणराज्य के अध्यक्ष राजा चेटक आदि अन्य गणराजा है। दूसरी तरफ कूणिक व उसके भाई व अन्य समर्थक राजा। दोनो वस्तुओ के लिए महाभयकर युद्ध होता है। कहा जा सकता है भारत वर्ष के इतिहास मे रामायण व महाभारत के दो महायुद्धो के पश्चात् यह सबसे भयानक महायुद्ध था। इस मे कूणिक के दसो भाई मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। तब कूणिक महाशिलाकटक व रथ--मूसल सग्राम की रचना करता है और अन्त मे देव नगरी जैसी रमणीय वैशाली का विध्वस कर डालता है। नर सहार की दृष्टि से यह महायुद्ध अत्यन्त भीषण कहा जा सकता है। प्रथम वर्ग मे इन दसो भाइयो के इस महायुद्ध का वर्णन है।

इस घटना क्रम से सम्बन्धित अन्य अनेक आवश्यक प्रसग जो मूल सूत्र मे नही है। प्राचीन ग्रन्थो के अनुसार उनका वर्णन आचार्यश्री आत्माराम जी म ने हिन्दी टीका मे तथा आचार्य श्री घासीलाल जी म ने सस्कृत टीका मे किया है। हमने सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रसग को परिशिष्ट में वही पर दे दिया है जिससे पाठको को पढने मे सुविधा रहेगी।

द्वितीय वर्ग कल्पावतसिका मे श्रेणिकपुत्र काल कुमार आदि के दस पुत्रो का वर्णन है। जिन्होने इस महायुद्ध मे अपने पिताओ की असामयिक मृत्यु देखी, सुनी। वे सभी राजकुमार राज्य-लोभ के इस कटु परिणाम से द्रवित होते है, हिंसा एव आरम्भ के दु खकारी भयकर कटु फल सुनकर संसार से विरक्त होकर भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर आत्म-कल्याण करते है।

तृतीय वर्ग का नाम है पुष्पिका। इस वर्ग मे भी दस अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र आदि ज्योतिषी देव तथा बहुपुत्रिका देवी आदि भगवान के समवसरण मे आकर अपनी दिव्य देव ऋद्धि का प्रदर्शन करते है तब गणधर गौतम स्वामी उनके पूर्व भवो की पृच्छा करते है। भगवान महावीर पुरुषादानी पार्श्वनाथ के युग की इन घटनाओ का कथन करते है।

द्वितीय वर्ग के दसो पात्र आराधक बने है। जबकि तृतीय वर्ग के पात्र सयम लेकर भी सयम मे दोष लगाकर आलोचना-प्रतिक्रमण नही करने के कारण विराधक बनकर देवगति मे गये है। इससे यह सूचित होता है कि साधक को जीवन के अन्तिम समय मे सरलमन से अपने जीवन का अन्तर्निरीक्षण करना चाहिए तथा समाधि मरण के लिए आलोयणा-प्रतिक्रमण अवश्य ही कर लेना चाहिए। आलोयणा-प्रतिक्रमण किये बिना मृत्यु प्राप्त करने वाला सद्गति को प्राप्त नही होता।

पुष्पचूला नामक चतुर्थ वर्ग मे भी भगवान पार्श्वनाथ के शासन काल मे हुई दस साध्वियो का जीवन वृत्त है, जिसका वर्णन भगवान महावीर अपने श्रीमुख से फरमाते है-श्री, ह्री, धृति, लक्ष्मी, बुद्धि, आदि ये देवियाँ एक-एक विशिष्ट शक्ति की अधिष्ठात्री है जिन्होने पूर्व जीवन में साध्वी जीवन ग्रहण कर साधना मे दोष लगाने के कारण विराधक दशा प्राप्त की।

पाँचवे वर्ग का नाम वण्हिदसा है। इसकी घटनाएँ भगवान अरिष्टनेमि के समय की है। इसके १२ अध्ययन है। इस प्रकार पाँच वर्गों के कुल ५२ अध्ययन है जिनमे ५२ आत्माओ का वर्णन है।

निरयावलिका पर आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म. ने विस्तृत हिन्दी टीका लिखी है। हमने मूल पाठ आगम प्रकाशन समिति ब्यावर से प्रकाशित प्रति का लिया है तथा अर्थ एव विवेचन मे आचार्यश्री की टीका तथा आचार्य श्री घासीलाल जी म की टीका का सहयोग लिया है।

इस जिल्द मे दूसरा आगम **विपाक सूत्र** है। विपाक सूत्र के दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कध-दु खविपाक है। दूसरा सुखविपाक। नाम से ही यह पता चलता है कि दु खविपाक मे दु.खो का वर्णन

है, तो सुखविपाक मे सुखो का। दोनो श्रुतस्कधो के दस–दस अध्ययन है। कुल बीस अध्ययनो मे यह आगम गुम्फित है।

दु:ख विपाक सूत्र का वर्णन हृदय को झकझोरने वाला है। हिंसा, अन्याय, अनीति, व्यभिचार आदि क्रूर कर्मों के परिणाम कितने दु खदायी और जन्म–जन्मान्तर तक कष्ट देने वाले है, यह इससे प्रकट होता है। इस श्रुतस्कध के दसो अध्ययन एक से बढ़कर एक आँखे खोलने वाले एव दिल को दहलाने वाले है।

विपाक सूत्र की एक खास बात यह है कि इसके अनुशीलन से उस प्राचीन युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सरचना और व्यवस्था का एक जीवत चित्र भी सामने उपस्थित होता है। उस समय मे भी कितने प्रकार के अपराध होते थे। उनकी दण्ड व्यवस्था कैसी थी, यह भी पता चलता है। दूसरे अध्ययन के उज्झितक का गोत्रास के पूर्वभव का वर्णन तो बहुत ही मनोवैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत करता है। एक गोघात करने वाले हिंसक प्राणी–जीव का क्रन्दन व चीत्कार सुनकर नगर के दूर–दूर क्षेत्रो मे रहने वाली गाये आदि पशु भय के मारे इधर–उधर भागने लगते है। उसकी ध्वनि मे भी हिंसा व क्रूरता के वे अशुभ पुद्गल परमाणु मिश्रित थे कि वह सीधा उन सम्बन्धित जीवो के मन मे उद्वेग व आतक पैदा कर देता था। हिसक की कलुषित भावनाओ से भरी वाणी भी कितनी भयोत्पादक होती है, यह तथ्य आज के सन्दर्भ मे विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार हिंसक जीव जब माता के गर्भ में आता है, तो उसके प्रभाव से माता की मनोभावना कितनी बदल जाती है, यह बात भी इसमे अनेक बार आती है। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि जिस जीव ने पूर्व जन्म मे किसी की विशेष प्रकार से हत्या की है तो वह उसी प्रकार की हत्या का शिकार होकर रोता–तडफता उन दुष्कर्मों को भोगता है। कर्मविज्ञान की दृष्टि से यह कृत्यानुबधी विपाक मनन करने योग्य है। साथ ही मनोविज्ञान का सूक्ष्म प्रभाव इसमे स्पष्ट होता है।

विपाक श्रुत का वर्णन, भाषा शैली की दृष्टि से भी बडा महत्त्वपूर्ण, सूक्ष्म मनोविश्लेषक है। जैसे किसी के मन मे दु सकल्प या सत्सकल्प जागृत होता है तो उसके लिए **अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगय संकप्पे**–आदि विशेषण उसके मन के भीतर उठने वाली सूक्ष्म चिन्तन तरगो की तीव्र, तीव्रतर स्थिति को प्रकट करने वाले थर्मामीटर का काम करते है। इस प्रकार के अनेक पाठ है, जिनमे एक साथ चार–पाँच विशेषणो द्वारा उसके भावो के उतार–चढाव तथा सूक्ष्म कम्पनो को व्यक्त करने का प्रयत्न हुआ है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से इन शब्दो मे छिपे भाव बहुत ही अर्थ पूर्ण है। आचार्य श्री आत्माराम जी म ने अपनी टीका मे एक शब्द के साथ आने वाले इस प्रकार के चार–पाँच विशेषणों मे निहित सूक्ष्म भावात्मक अन्तर को स्पष्ट करके शब्द–शास्त्र की दृष्टि से अनेक नये तथ्य प्रकट किये है जो बडे ज्ञानवर्द्धक और मनन करने योग्य है।

दु:खविपाक के सभी दस अध्ययनो मे भिन्न-भिन्न प्रकार के दुष्कर्मों के भिन्न-भिन्न कटु पाप फल बताये है, किन्तु सुखविपाक मे मुख्य रूप मे सुपात्र दान का ही महत्त्व सभी अध्ययनो मे व्यक्त होता है। शुद्ध-पवित्र आचारवत को शुद्ध भावो से दिया सुपात्र दान आगामी जन्मो से सुख-वैभव-श्री-समृद्धि का कारण बना है यह तथ्य सभी दस अध्ययनो का सार है।

इस प्रकार विपाक सूत्र का अध्ययन अनेक दृष्टियो से नये-नये तथ्य उजागर करने वाला है। मैने पहले भी विपाक श्रुत पढा था, परन्तु इस बार जब विवेचन की दृष्टि से उन शब्दो की गहराई मे उतरा तो अनेक विशिष्ट नये-नये भाव प्रकट हुए जो आगमो की भाषात्मक गहराई को सूचित करते है। मेरा तो सुझाव है, **शोध करने वाले शोधार्थी साधु-साध्वियों को इन आगमो पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। कर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाज शास्त्र, भाषा शास्त्र की दृष्टि से बहुत ही नये तथ्य उन्हे प्राप्त होंगे।** विपाकश्रुत पढते समय आचार्यश्री आत्माराम जी म की टीका अवश्य ही सामने रखनी चाहिए। मैने अनेक स्थानो पर आचार्यश्री द्वारा किये गये शब्द-शास्त्रीय विश्लेषण को रेखाकित किया है, अगर पूरे आगम पर उनकी विशेष शब्दो की व्याख्या को स्पष्ट किया जाये तो आगम का कलेवर तो बढ जायेगा परन्तु आगम अभ्यासियो के लिए यह एक आगम मार्गदर्शिका बन जायेगी। अस्तु

परम पूज्य स्व गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म की असीम कृपा से मुझे श्रुत-सेवा के इस कार्य मे आनन्द आ रहा है, साथ ही मै अपने ध्येय मे सफल हो रहा हूँ इसका सन्तोष है। अनेक साधु-साध्वीजनो व गुरु भक्तो का सहयोग मिल रहा है, मिलता रहेगा, इसी विश्वास के साथ।

अन्य सूत्रो के सम्पादन की तरह इस सूत्र के सम्पादन आदि कार्यो मे श्रीचन्द जी सुराना, श्री सुरेन्द्र कुमार जी बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन का हार्दिक सहयोग रहा है। मै उनके सहयोग के प्रति कृतज्ञ हूँ।

-उपप्रवर्त्तक अमर मुनि

FROM THE EDITOR'S PEN

In this book of the Illustrated Agam Series we have included six *Agams* (the authentic scriptures that describe and discuss the philosophy and codes of conduct of Jain tradition) simultaneously. *Niryavalika* contains five *Upangas* (the auxiliary explanatory works to the twelve *Angas*) and *Vipaak Shrut* is the eleventh *Anga* (The name given to the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts This consists of twelve treatises or *Angas*, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition). All these *Agams* are narrative works falling in the classification *Kathanuyoga* (stories) As they predominantly contain numerous biographical stories their content is simple and easily understandable Another thing, all these *Agams* are small in volume That is why they all have been included in one book

The five texts forming *Niryavalika* (etc) are counted among the *Anga Bahya* (explanatory works other than the said twelves *Angas*) or *Upanga* (Auxiliary *Angas*) group of *Agams*. The name of these texts are—(1) *Niryavaliyao* (*Niryavalika*), (2) *Kappavadinsiya* (*Kalpavatansika*), (3) *Pupphiya* (*Pushpika*), (4) *Pupphachuliya* (*Pushp-chulika*), and (5) *Vanhidasa* (*Vrishnidasha*) These are also called five *Vargas* (sections)

In terms of periodicity the first and second *Upangas* (*Vargas*) are directly associated with the period of influence (*shaasan*) of Bhagavan Mahavir *Niryavalika*, the first *Varga*, contains the thrilling description of King Kunik of Champa, his ten brothers including Kaal Kumar and the two great battles they fought with King Chetak of Vaishali Kunik hatches a conspiracy with his ten brothers including Kaal Kumar in order to become the sovereign ruler of the great empire of his father King Shrenik. He imprisons Shrenik and ascends the throne of Magadh himself, distributing some small portions of the state among his brothers. Queen Chelana's son Vehalla Kumar also lives with Kunik in Champa Before his death King Shrenik had given him Sechanak Elephant and Vankachula necklace. These two things formed the most valuable possessions of the Magadh empire. Kunik

demands these two things from Vehalla Kumar who refuses to part with them However, he is afraid of Kunik forcibly taking these things from him. Therefore he leaves with these things and takes refuge with his maternal grandfather Chetak in Vaishali In order to get these two things Kunik prepares for a war On one side is the president of the Vaishali republic with presidents of other republics and on the other is Kunik, his brothers, and other supporting rulers A fierce battle ensues for the said two valuables It would not be far fetched to state that after the Ramayana and Mahabharat wars, this was the third fiercest war in Indian history All the ten brothers of king Kunik parish in this war Then Kunik prepares for *Mahashilakantak* and *Rath-musal* battles In the end he destroys the divinely beautiful city of Vaishali In terms of man slaughter this great war could be termed as extremely fierce The first *Varga* contains the description of this great war by these ten brothers

Many important incidents connected with this story are not included in the original text The Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M and the Sanskrit Tika by Acharya Shri Ghasilal ji M contains all this information collected from ancient scriptures For convenience of our readers we have included the complete story in brief as appendix at the end of the first *Varga*

The second *Varga, Kalpavatansika,* contains the stories of the ten sons of king Shrenik's ten sons including Kaal Kumar They saw and heard about the untimely death of their fathers in the aforesaid great war All these princes were moved by this bitter consequence of greed for a kingdom Inspired by the resulting detachment they get initiated by Bhagavan Mahavir and pursue the spiritual path

The third *Varga* is titled Pushpika This section also has ten chapters. Chandra, Surya, Shukra and other stellar gods as also Bahuputrika and other goddesses descend into *Bhagavan's Samavasaran* and display their divine opulence Ganadhar Gautam Swami asks about their past births In reply Bhagavan Mahavir narrates these incidents of the period of influence of Purushadaniya Bhagavan Parshva Naath

All the ten protagonists of the second section became true spiritual aspirants, whereas those of the third section became errants by

transgressing the codes after getting initiated They failed to undergo the essential process of critical review (*pratikraman*) at the last moment of their life and reincarnated as gods This indicates that a spiritual aspirant should essentially undergo the process of introspection and critical review of all activities of his life prior to proceeding for meditational death Failing to do so leads to ignoble rebirth.

The fourth section, *Pushpachula*, also contains stories of ten *sadhvis* (female ascetics) of the period of influence of Bhagavan Parshva Naath. These stories are also narrated by Bhagavan Mahavir Each of the ten goddesses including Shri, Hri, Dhriti, Lakshmi, and Buddhi are guardians of one special power In their past births they also got initiated but became errants due to faulty observation of ascetic codes

The fifth section is titled *Vahnidasa* It has ten chapters. These stories are of Bhagavan Arishtanemi's period Thus the five sections contain a total of fifty two stories describing fifty two souls

Acharya Samrat Shri Atmaram ji M has written a detailed Hindi commentary (*Tika*) on *Niryavalika* We have taken the original text from the edition published by Agam Prakashan Samiti, Beawar The *Tikas* by Acharya Shri Atmaram ji M and Acharya Shri Ghasilal ji M. have been used as the basic reference works for translation and elaboration

The second *Agam* in this book is *Vipaak Shrut* It has two *shrutskandhs* (sections) First section is *Duhkha-vipaak* and the second section is *Sukha-vipaak* As the titles suggest, *Duhkha-vipaak* contains description of *Duhkha* (miseries) and *Sukha-vipaak* that of *Sukha* (happiness) The two sections have ten chapters each. This *Agam* is made up of twenty chapters.

The descriptions contained in *Duhkha-vipaak* are heart-rending It reveals how horrifying are the consequences of cruel deeds including violence, injustice, immorality, and debauchery. Moreover, the process of suffering these painful consequences extends to many future births Each one of these ten stories is more revealing and awe inspiring than the other

Another unique quality of the contents of *Vipaak Shrut* is that it presents a vivid picture of social, political and economic structures and systems of that remote period. How many kinds of criminal activities were prevalent then and what punitive system was designed to counter that. The story of the past birth of Ujjhitak as Gotras eloquently states an important psychological fact Hearing the wailing and shrieks of a violent being, a killer of cows, cattle even in faraway parts of the city run helter-skelter with fear The sound of that cruel being was saturated with malignant ultimate particles (*paramanus*) of violence and cruelty This directly infused agitation and terror in the minds of the cattle. How awesome is the voice influenced by the evil feelings of a violent person is a fact all the more relevant in context of modern times. In the same way, when a violent soul is conceived as a child by a mother, it influences the feelings of the mother This idea is also stated many a times in these stories. Another important concept is that the specific process adopted by a being to kill another one during his past birth is inflicted upon him during this birth and he miserably suffers the agony This concept of 'action based fruition' (*krityanubandhi vipaak*) is worth pondering in context of the science of *karma*

The narrative of *Vipaak Shrut* is valuable in context of its language and style because it deals with subtle psychological analysis For example the adjectives *Ajjhatthiye, Kappiye, Chintiye, Patthiye, Manogaye,* and *Sankappe* are used for a good or bad thought emerging and crystallizing in one's mind Like a thermometer, they reveal the progressive intensity of the subtle thought waves from mild to intense There are many such passages where such four-five adjectives have been used in an effort to convey the minute vibrations and subtle rise and fall of intensity of thoughts. Acharya Shri Atmaram ji M has explained the subtle psychological connotations of such groups of adjectives, thereby bringing to light some new concepts of semantics, which are informative as well as worth pondering

In all the ten chapters of *Duhkha-vipaak* different kinds of evil activities and their bitter consequences are included But in *Sukha-vipaak* mainly the importance of donation to the deserving has been

narrated. The central theme of all the ten chapters is that pure donation with pious feelings to a pious follower of the ascetic code bears fruits of happiness, grandeur, prosperity and spirituality in the future reincarnations.

Thus the study of *Vipaak Shrut* from various angles reveals many new facts and information I had studied *Vipaak Shrut* earlier also but this time when I studied the terms in greater depth to facilitate elaboration, many new concepts came to fore. This indicates the linguistic depth of these *Agams*. It is my suggestion that **the research scholars and ascetics should focus their attention on these *Agams*. They will come across many unknown facts in the fields of *Karmic* science, ethics, sociology, semantics and linguistics.** While studying *Vipaak Shrut* the *Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M should be referred to frequently. I have quoted his semantic analysis at many places Although it would make the *Agams* voluminous if all his explanations on *Agamic* technical terms are included, however, it would certainly make the best guide-books on *Agams* for those who study these texts So

With the blessings of Param Pujya Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj I am enjoying this work of *Shrut Seva* (service of scriptures) I am contented that my steps have been successful I am confident that, as in the past, I will continue to get cooperation of many *sadhus, sadhvis,* and devotees of the guru.

As before, Shrichand ji Surana, Shri Surendra Kumar ji Bothara, and Sushravak Shri Raj Kumar ji Jain have sincerely cooperated in the editing and other related activities in the publication of this *Sutra* I am indebted to them for their cooperation

—Up-pravartak Amar Muni

अनुक्रमणिका

CONTENTS

निरयावलिका सूत्र
NIRAYAVALIKA SUTRA

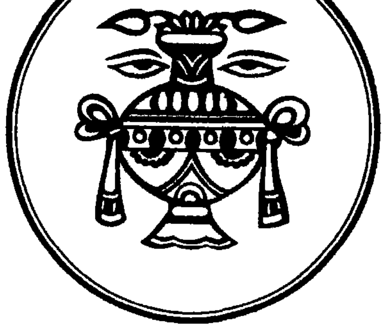
विपाक सूत्र
VIPAAK SUTRA

अष्टम उपाङ्ग

निरयावलिका सूत्र

The Eighth Upanga

NIRAYAVALIKA SUTRA



अष्टम उपाङ्ग
निरयावलिका सूत्र

उपोद्घात

'निरयावलिकासूत्र' के नाम से पाँच उपागो का एक समूह है, जिसे **'उपांग श्रुतस्कध'** या वर्ग कहा जाता है। इस उपाग वर्ग मे पाँच आगमो का समूह है-(१) कप्पिया (निरयावलिका), (२) कप्पवडिसिया, (३) पुप्फिया, (४) पुप्फचूलिया, (५) वण्हिदसा। इनके सम्बन्ध मे प्रस्तावना मे विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है। इसमे प्रथम तो अष्टम अग अन्तकृद्दशासूत्र का उपाग निरयावलिका है। आगे के उपाग भी एक-एक अग के उपाग है। प्रथम उपाग-निरयावलिका का दूसरा नाम 'कप्पिया' भी है। इसमे नरक मे जाने वाले दस प्रमुख पात्रो का वर्णन होने से इसका नाम निरयावलिका (नरकावलिका) अधिक प्रसिद्ध हो गया।

इस उपाग के दस अध्ययन है। इस उपाग का कथानक भगवान महावीर युग के प्रसिद्ध मगध सम्राट् श्रेणिक के कालकुमार आदि दस पुत्रो से सम्बन्धित है। श्रेणिक, कोणिक तथा कालकुमार आदि का वर्णन एव उनके रथ-मूसल-सग्राम आदि की सम्पूर्ण कथा परिशिष्ट १ मे दी गई है। पाठक उसे पढ ले। वह इस वर्णन को समझने मे सहायक होगी।

ASHTAM UPANGA
NIRAYAVALIKA SUTRA

INTRODUCTION

This work bearing the title *Nirayavalika Sutra* is in fact an anthology of five *Upangas* (the auxiliary explanatory works to the twelve *Angas* or the main corpus of the Jain canonical texts) which is called *Upanga Shrutskandh* or *Varg* The names of these *Upangas* are (1) *Kappiya* (*Kalpik*) also known as *Nirayavalika* (*Narakavalika*), (2) *Kappavadinsiya* (*Kalpavatansika*), (3) *Pupphiya* (*Pushpika*), (4) *Pupphachuliya* (*Pushp-chulika*), and (5) *Vanhidasa* (*Vrishnidasha*) They have already been discussed in detail in the preface First of these is *Nirayavalika*, the *Upanga* of the eighth *Anga*, *Antakriddasha Sutra* The following *Upangas* are also connected with one *Anga* each The first *Upanga*, *Nirayavalika* is also known as *Kappiya*. As it contains description of ten prominent characters destined to be born in infernal worlds (*narak*) it became more popular as *Nirayavalika* (*Narakavalika*)

This *Upanga* has ten chapters The story is about ten sons (including Kaal Kumar), of Emperor Shrenik, the famous sovereign of the Magadh empire and a contemporary of Bhagavan Mahavir The detailed story of Shrenik, Kunik, Kaal Kumar, and others and the famous *Rath-musal* battle has been included as appendix-1 A study of it will be helpful in understanding this work

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

राजगृह वर्णन

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमिय समिद्धे गुणसिलए चेइए, वण्णओ.। असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए।

१. उस काल (–चौथे आरे मे), उस समय (–जब भगवान महावीर विद्यमान थे) राजगृह नगर था। वह धन–धान्य, वैभव, ऋद्धि, समृद्धि से युक्त था। वहाँ उत्तर–पूर्व ईशानकोण की दिशा मे, गुणशिलक चैत्य था, उस चैत्य मे विशालकाय अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वीशिला पट्टक रखा था। *[इन सबका वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र १ से १० के अनुसार समझ लेना चाहिए।]*

DESCRIPTION OF RAJAGRIHA

1. During that period of time (in the fourth epoch of the time cycle when Bhagavan Mahavir was living) there was a city called Rajagriha. It was endowed with prosperity, agricultural wealth, glory, prosperity, and grandeur On its north-east direction was *Gunasheelak Chaitya* where there was a large slab of rock placed under a huge Ashoka tree *[detailed description should be read as in Aupapatik Sutra, aphorisms 1-10]*

विवेचन–औपपातिकसूत्र मे चम्पानगरी का वर्णन तथा वहाँ स्थित वनखण्ड, अशोक वृक्ष तथा पृथ्वीशिलापट्टक आदि का वर्णन बहुत ही विस्तारपूर्वक किया गया है। यहाँ पर उसी अनुसार राजगृह नगर का एव गुणशिलक चैत्य आदि का वर्णन समझ लेना चाहिए।

Elaboration—*Aupapatik Sutra* contains a beautiful and comprehensive description of Champa city, the garden outside the city, Ashoka tree, slab of rock, etc Here the description about Rajagriha city and its surroundings should be taken to be the same

आर्य सुधर्मा स्वामी का आगमन

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपन्ने जहा केसी (जाव) पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे (जाव) जहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं (तवसा अप्पाणं भावेमाणे) जाव विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।

२. उस काल, उस समय मे श्रमण भगवान महावीर के शिष्य आर्य सुधर्मा अनगार थे जो केशीकुमार श्रमण की भाँति जाति–सम्पन्न आदि गुणयुक्त थे। वे पाँच सौ अनगारो के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव

अनुक्रम से चलते हुए जहाँ राजगृह नगर था वहाँ पधारे यावत् श्रमण मर्यादा के अनुरूप मुनिजनो के योग्य आवास की आज्ञा लेकर सयम और तप के द्वारा आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे। उनको वन्दना करने जनसमूह (परिषद्) का आना हुआ और सुधर्मा स्वामी ने धर्मोपदेश दिया। उपदेश सुनकर परिषद् वापस चली गई। (यह सभी वर्णन रायपसेणियसूत्रगत केशीकुमार श्रमण के वर्णन अनुसार समझे। *[देखे-रायपसेणियसूत्र, सूत्र २१३]*

ARRIVAL OF ARYA SUDHARMA SWAMI

2. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir's disciple Arya Sudharma *Anagar* was living He belonged to a prominent family and caste and had other attributes like Keshi Kumar Shraman Wandering comfortably from one village to another, along with his five hundred disciples, he arrived in the town of Rajagriha and so on up to after seeking formal permission he camped there enkindling his soul with spiritual activities related to inner discipline and austerities Throngs of people visited (his place of stay) Sudharma Swami gave a discourse and the masses returned home (details should be read as in *Rayapaseniya Sutra* in context of Keshi Kumar Shraman) *(Rayapaseniya Sutra, 213)*

विवेचन-'गामाणुगामं' व 'सुहसुहेणं' पदो की व्याख्या करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने लिखा है टीकाकार के अनुसार इन पदो का अभिप्राय यह है कि जिस गाँव से चलते थे, उस ग्राम से दूसरे ग्राम तक बीच मे जो भी छोटे-छोटे गाँव आते थे उनमे भी उपदेश देते हुए, शरीर व सयम मे कोई बाधा नही पहुँचे इस तरह सुखपूर्वक विहार करते थे।

Elaboration—Explaining the terms *'gamanugamam'* and *'suhamsuhenam'* Acharya Shri Atmaram ji Maharaj mentions that according to the commentator (*Tika*) when he moved from one specific village or city to another, he preached for the benefit of masses in all the small villages on the way He moved comfortably so as to avoid any inconvenience to his body and disturbance in his practices

जम्बू अनगार की जिज्ञासा

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी जंबू नामं अणगारे समचउरंस-संठाणसंठिए, जाव. संखित्त-विउलतेउलेस्से अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामंते उड्ढं जाणू जाव विहरइ।

तए णं से भगवं जंबू जायसड्ढे जाव. पज्जुवासमाणे एवं वयासि-उवंगाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं एवं उवंगाणं पंचवग्गा पण्णत्ता, तं जहा–१. निरयावलियाओ, २. कप्पवडिंसियाओ, ३. पुप्फियाओ, ४. पुप्फचूलियाओ, ५. वण्हिदसाओ।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंच वग्गा पण्णत्ता तं जहा–निरयावलियाओ जाव वण्हिदसाओ, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

३. उस समय आर्य सुधर्मा अनगार के शिष्य जम्बू नाम के अनगार थे, जिनका शरीर समचतुरस्र-सस्थान से युक्त था तथा वे विपुल तेजोलेश्या को अपने भीतर समाहित किये हुए तेजोदीप्त थे। आर्य सुधर्मा अनगार के समक्ष कुछ ही दूर पर भगवान जम्बू मर्यादापूर्वक भूमि पर स्थित हो, एक घुटना ऊँचा किये उत्तान आसनपूर्वक एकाग्र होकर बैठे थे।

उस समय जम्बू स्वामी के मन मे श्रद्धायुक्त जिज्ञासा उत्पन्न हुई। सुधर्मा स्वामी को विनयपूर्वक वन्दना करके पूछा–"हे भते ! श्रमण भगवान महावीर, जो मोक्ष को प्राप्त हो चुके है, उन्होने उपांगो का क्या अर्थ (वर्णन) कहा है ?"

सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मान् जबू ! उन श्रमण भगवान महावीर ने उपांगो के पाँच वर्ग इस प्रकार कहे है–(१) निरयावलिका, (२) कल्पावतसिका, (३) पुष्पिका, (४) पुष्पचूलिका, (५) वृष्णिदशा।

हे भते ! मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने उपागो के पाँच वर्ग कहे है, जैसे कि निरयावलिका यावत् वृष्णिदशा, तो हे भते ! प्रथम वर्ग के उपाग निरयावलिका के कितने अध्ययन प्रतिपादित किये है ?

CURIOSITY OF ASCETIC JAMBU

3. During that period of time Arya Sudharma Anagar had an ascetic disciple named Jambu Anagar The structure of his body conformed to *samachaturasra samsthan* (the anatomical structure of a human being where parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square and where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions The dimensions increase and decrease proportionately). He was endowed with *vipul tejoleshya* (great radiant energy), which gave him a highly radiant appearance He sat before Arya Sudharma Anagar at a suitable place not very far, in a proper posture suitable for meditation, and with rapt attention.

A curiosity sparked in the mind of ascetic Jambu Swami. He modestly bowed before Sudharma Swami and respectfully put forth his question—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the *Upangas* given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state ?"

Sudharma Swami replied, "Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached the five sections of *Upangas* as follows—(1) *Niryavalika*, (2) *Kalpavatansika*, (3) *Pushpika*, (4) *Pushp-chulika*, and (5) *Vrishnidasha*."

"*Bhante* ! If there are five sections of *Upangas, Niryavalika* . and so on up to. *Vrishnidasha* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state, how many chapters are there in the first section of the *Upangas, Niryavalika,* as narrated by Shraman Bhagavan Mahavir ?"

प्रथम अध्ययन की विषय-वस्तु

४. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

काले सुकाले महाकाले कण्हे सुकण्हे।
तहा महाकण्हे वीरकण्हे य बोद्धव्वे।
रामकण्हे, तहेव य पिउसेणकण्हे नवमे।
दसमं महासेणकण्हे उ।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. उत्तर मे सुधर्मा स्वामी ने कहा–"हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने उपागो के प्रथम वर्ग निरयावलिका के दस अध्ययन प्रतिपादित किये है, जिनके नाम इस प्रकार है–(१) काल, (२) सुकाल, (३) महाकाल, (४) कृष्ण, (५) सुकृष्ण, (६) महाकृष्ण, (७) वीरकृष्ण, (८) रामकृष्ण, (९) पितृसेनकृष्ण और (१०) महासेनकृष्ण।" (प्रत्येक अध्ययन प्रत्येक कुमार के नाम पर कथन किया गया है।)

"हे भगवन् ! यदि मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने उपागो के प्रथम वर्ग निरयावलिकासूत्र के दस अध्ययन प्रतिपादित किये है, तो पहले अध्ययन निरयावलिकासूत्र का भगवान महावीर ने क्या अर्थ प्रतिपादन किया है ?"

THE THEME OF THE FIRST CHAPTER

4. Sudharma Swami replied "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has stated ten chapters of *Niryavalika*, the first section of the *Upangas* They are—(1) Kaal, (2) Sukaal, (3) Mahakaal, (4) Krishna, (5) Sukrishna, (6) Mahakrishna, (7) Virakrishna, (8) Ramakrishna, (9) Pitrasen-krishna, and (10) Mahasen-krishna (Each title bears the name of a prince)

Bhante ! If there are ten chapters in *Niryavalika*, the first section of the *Upangas*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir who has attained the

eternal abode of the *Siddha*-state, what is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika*, the first section of the *Upangas*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir ?"

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था, रिद्ध.। पुण्णभद्दे चेइए।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणिए नामं राया होत्था, महया.।

तस्स णं कूणियस्स रन्नो पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाल जाव विहरइ।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सोमाल. जाव सुरूवा।

तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमाल. जाव सुरूवे।

५. उत्तर मे श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा-"जम्बू ! उस काल, उस समय मे इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप मे स्थित भारतवर्ष मे चम्पा नाम की नगरी थी जो विशाल भवनादि से युक्त, स्व चक्र-पर चक्र के भयो से रहित, धन-धान्य से परिपूर्ण थी। इस नगरी के बाहर ईशानकोण मे पूर्णभद्र नाम का एक उद्यान था, उस उद्यान मे पूर्णभद्र यक्ष का प्राचीन आयतन अर्थात् पूर्णभद्र यक्ष का मन्दिर था। *[पूर्णभद्र चैत्य का वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र २ के अनुसार समझे।]*

उस चम्पा नगरी मे श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का आत्मज कूणिक (क्रूणिक) नाम का एक महान् महिमाशाली राजा था। *[कूणिक का वर्णन औपपातिकसूत्र, सूत्र ११ के अनुसार समझे।]*

कूणिक राजा की रानी पद्मावतीदेवी थी, जो अत्यन्त सुकुमार, सुरूपवान, कूणिक को अत्यन्त प्रिय यावत् सुखभोग मे समय व्यतीत कर रही थी।

चम्पा नगरी मे राजा श्रेणिक की पत्नी, कूणिक राजा की छोटी माता (विमाता) कालीदेवी थी, जो सुकुमार अग-प्रत्यगो वाली और सुरूपवती थी।

उस कालीदेवी के पुत्र का नाम कालकुमार था। वह भी सुकुमार और सौन्दर्य-सम्पन्न था। *(टीकाकार ने कालकुमार का वर्णन ज्ञातासूत्र मे मेघकुमार के वर्णन के समान जानने की सूचना दी है।)*

5. Sudharma Swami replied "Jambu ! During that period of time there was a city called Champa in Bharatavarsh area in this continent called Jambudveep It was full of large mansions (etc), was free of fears from within and outside, and was rich in wealth and grains Outside this city in the north-east direction (*Ishan Kone*) was a garden called Purnabhadra In this garden there was an ancient temple of Purnabhadra Yaksha *[the description of the Purnabhadra Chaitya should be read from Aupapatik Sutra, aphorism-2]*

That Champa city was ruled by a great and glorious king named Kunik, the son of King Shrenik and Queen Chelana *[description of King Kunik should be read from Aupapatik Sutra, aphorism-11]*

The consort of King Kunik was queen Padmavati Devi, who was extremely delicate and beautiful She was much adored by Kunik (and so on up to) and enjoyed life

Also in Champa city lived Kaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik She too had delicate limbs and was very beautiful.

Kaali Devi had a son named Kaal Kumar He was also delicate and handsome [The commentator (*Tika*) advises to consider the description of Kaal Kumar to be same as that of Megh Kumar in *Jnata Sutra*]

रथ–मूसल सग्राम मे प्रवृत्ति

६. तए णं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुयकोडीहिं गरुलवूहे। एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रण्णा सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए।

६ तदनन्तर किसी समय वह कालकुमार तीन हजार हाथियो, तीन हजार रथो, तीन हजार अश्वो और तीन करोड मनुष्यो (सैनिको) को साथ लेकर राज्य के ग्यारहवे भाग के भागीदार राजा कूणिक के साथ मिलकर (चेटक राजा के विरुद्ध) गरुड व्यूह के आकार वाले रथ–मूसल सग्राम मे सम्मिलित हुआ। *[रथ–मूसल सग्राम का विस्तृत वर्णन परिशिष्ट मे देखे।]*

JOINING THE RATH-MUSAL WAR

6. At some later period Kaal Kumar with his strong army consisting of three thousand elephants, three thousand chariots, three thousand horses and thirty million soldiers joined King Kunik, the owner of the eleventh part of the empire, in the *Rath-musal* battle in *Garud Vyuha* (eagle shaped battle formation) (fought against King Chetak) *[for detailed description of Rath-musal battle see appendix]*

कालीदेवी की चिन्ता

७. तए णं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुडुंब जागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था। "एवं खलु ममं पुत्ते कालकुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) ओयाए। से मन्ने किं जइस्सइ नो जइस्सइ ? जीविस्सइ नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ नो पराजिणिस्सइ ? काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ?" ओहयमण. (जाव) झियाइ।

७. तब एक बार अपने कुटुम्ब–परिवार की परिस्थिति पर विचार करते हुए उस कालीदेवी के हृदय मे इस प्रकार के सकल्प–विकल्पात्मक विचार उत्पन्न हुए–'मेरा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथियों आदि

को लेकर यावत् रथ–मूसल सग्राम मे गया है, तो क्या वह विजयी होगा या नहीं ? क्या वह जीवित रहेगा अथवा नही रहेगा ? क्या मै कालकुमार को जीवित देख पाऊँगी ?' इस प्रकार के विचारो से वह उदास होकर आर्त्तध्यान (चिन्ता) करने लगी।

KAALI DEVI'S APPREHENSION

7. One day while thinking about the condition of her family, Kaali Devi was plagued by an apprehension—"My son, Kaal Kumar has gone with his three thousand horses and so on up to in the *Rath-musal* battle Will he win or not ? Will he live or not ? Will I be able to see Kaal Kumar alive or not ?" With these thoughts she became dejected and started worrying

चिन्ता–निवारण हेतु भगवान के समीप गमन

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया।

तए णं तीसे कालीए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था–'एवं खलु, समणे भगवं पुव्वाणुपुव्विं (जाव) विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवाणं (जाव) विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए। तं गच्छामि णं समणं (जाव) पज्जुवासामि, इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामि।'

त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–''खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह।''

उवट्ठवित्ता (जाव) पच्चप्पिणंति।

तए णं सा काली देवी ण्हाया कयबलिकम्मा (जाव) अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए (जाव) धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेइत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं जाव खुज्जाहिं. विंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ। ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ।

८. उस समय श्रमण भगवान महावीर का चम्पा नगरी मे समवसरण हुआ। भगवान को वन्दना–नमस्कार करने एव धर्मोपदेश सुनने के लिए जन–समूह एकत्र होकर आया।

तब कालीदेवी भी इस समाचार को जानकर हर्षित हुई और उसके अन्तर्हृदय मे इस प्रकार का सकल्प उत्पन्न हुआ–'पूर्वानुपूर्वी क्रम से विहार करते श्रमण भगवान महावीर चम्पा नगरी मे पधारे हैं। उनका

आगमन निश्चय ही शुभ फलदायक है। ऐसे श्रमण भगवन्तो का नाम सुनना ही महान् फलदायी है तो उनके समीप जाकर उनको वन्दना-नमस्कार करना तथा उनकी पर्युपासना करने के फल के विषय मे तो कहना ही क्या है? उनके पास से श्रुत (शास्त्र) के विपुल अर्थ को ग्रहण करने की महिमा तो अपार है। अत मै श्रमण भगवान के दर्शनार्थ जाऊँ। उनकी पर्युपासना करूँ और अपने पुत्र के सम्बन्ध मे प्रश्न पूछूँ।'

काली रानी ने ऐसा विचार किया। विचार करके अपने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर आज्ञा दी– "देवानुप्रियो! शीघ्र ही धार्मिक कार्यों मे प्रयोग किये जाने वाले अश्व-सारथी आदि से युक्त श्रेष्ठ रथ को तैयार करके लाओ।"

कौटुम्बिक पुरुषो ने रथ तैयार कर उपस्थित किया तथा आज्ञानुरूप कार्य हो जाने की सूचना दी।

वह कालीदेवी स्नान एव बलिकर्म (शरीर पर सुगन्धित तेल आदि लगाकर) करके मूल्य मे अधिक, एव भार मे हल्के ऐसे श्रेष्ठ आभूषणो से विभूषित हो अनेक देशो से आई हुई कुब्जा दासियो यावत् महत्तरकवृन्द (अन्त पुर की रक्षिकाओ) को साथ लेकर अन्त पुर से निकली यावत् उस धार्मिक रथ मे आरूढ हुई तथा अपने परिजनो एव परिवार से घिरी हुई चम्पा नगरी के बीचोबीच होकर जहाँ पूर्णभद्र उद्यान था वहाँ धार्मिक श्रेष्ठ रथ को रुकवाया। फिर उस रथ से नीचे उतरी और उतरकर बहुत-सी कुब्जा आदि दासियो एव महत्तरकवृन्द से घिरी हुई जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ पहुँची। फिर तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दना-नमस्कार किया, वही ठहरकर सपरिवार भगवान की देशना सुनने के लिए उत्सुक होकर नमस्कार करती हुई, अजलि जोडकर विनयपूर्वक पर्युपासना करने लगी।

VISITING BHAGAVAN MAHAVIR

8. Around that time Shraman Bhagavan Mahavir's *samavasaran* (divine assembly) was held in Champa city Throngs of people came there to pay homage and attend the discourse

Kaali Devi was happy to get this news She thought—"Wandering from one place to another Shraman Bhagavan Mahavir has arrived in Champa city His arrival is certainly a good omen What to say of the benefits of going near him and paying homage, mere hearing of his name is highly bountiful Unlimited is the importance of learning the elaborate meaning of the canon from him Therefore, I will go to behold him, worship him and enquire of him about my son ?"

With these thoughts Queen Kaali called her attendants and gave instructions—"Beloved of gods ! Bring at once the best of the chariots reserved for religious ventures duly ready and equipped with horse, driver, and other things "

The attendants prepared the chariot and brought it They informed the queen of concluding the assignment given to them

Kaali Devi took her bath and performed other daily chores (like applying perfumed oils on the body, etc) After that she adorned herself

with costly, light weight and exclusive ornaments She then came out of the palace accompanied by a large contingent of maids from many countries including hunchbacks (*kubja*), and so on up to female-guards of inner quarters Coming out of the palace she boarded that religious chariot and, surrounded by members of her family and friends, passing through Champa city arrived at Purnabhadra Chaitya There she stopped the carriage and alighted from it Surrounded by numerous maids (as mentioned) she approached the spot where Bhagavan Mahavir was seated After this the queen went around *Bhagavan* three times and paid homage and obeisance Now she stopped there and joining her palms commenced the worship with reverence and eagerness in order to listen to *Bhagavan's* discourse

काली की जिज्ञासा का समाधान

९. तए णं समणे भगवं (जाव) कालीए देवीए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मकहा भाणियव्वा (जाव) समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणा आणाए आराहए भवइ।

तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ हियया समणं भगवं तिक्खुत्तो, एवं वयासी–''एवं खलु, भंते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) रहमुसलं संगामं ओयाए। से णं भंते ! किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? (जाव) काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिज्जा ?

''काली !'' इ समणे भगवं कालिं देविं एवं वयासी–''एवं खलु काली; तव पुत्ते काले कुमारे, तिहिं दंतिसहस्सेहिं (जाव) कूणिएणं रन्ना सद्धिं रह–मुसलं संगामं संगामेमाणिए हयमहिय–पवरवीर–घाइयणिवडियचिंधज्झयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रन्नो सपक्खं सपडिदिसिं रहेण पडिरहं हव्वमागए।

तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ। तं कालगए णं काली ! काले कुमारे, नो चेव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि।''

९. तत्पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने उस कालीदेवी सहित उपस्थित विशाल जन-परिषद् को धर्मदेशना सुनाई। *(यहाँ औपपातिकसूत्र के अनुसार धर्मदेशना का वर्णन करना चाहिए।)* श्रमणोपासक और श्रमणोपासिका धर्म मे स्थिर होकर आज्ञा के आराधक होते है।

श्रमण भगवान महावीर के श्रीमुख से धर्मश्रवण कर और उसे हृदय मे अवधारित कर काली रानी हर्षित, सतुष्ट यावत् विकसित हृदय हुई। फिर श्रमण भगवान को तीन बार वन्दन–नमस्कार कर इस प्रकार

प्रश्न किया–"भंते ! मेरा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथियो आदि के साथ रथ–मूसल संग्राम मे गया हुआ है, तो हे भगवन् ! क्या वह विजयी होगा अथवा नही ? यावत् क्या मै कालकुमार को जीवित देख सकूँगी ?"

प्रत्युत्तर मे भगवान ने कहा–"हे काली ! तुम्हारा पुत्र कालकुमार तीन हजार हाथी आदि लेकर कूणिक राजा के साथ रथ–मूसल संग्राम मे युद्ध करते हुए अनेक सुभटो को आहत, मर्दित करते हुए, उनकी घात करते हुए और उनकी संकेतसूचक ध्वजा–पताकाओ को भूमि पर गिराते हुए, दिशा–विदिशाओ को अंधकारमय करते हुए, रथ से रथ को टकराते हुए चेटक राजा के रथ के सन्मुख आया।

तब चेटक राजा ने कालकुमार को आते हुए देखा, देखकर क्रोध मे आविष्ट हो दाँत व होठो को मिसमिसाते हुए, धनुष को ऊँचा उठाया, धनुष पर बाण चढाया, चढाकर धनुष को कान तक खीचा और खीचकर एक ही प्रहार मे उसे आहत कर दिया। बाण लगने से वह टूटे पर्वत–शिखर की भाँति भूमि पर गिरकर निष्प्राण हो गया। इसलिए हे काली ! वह कालकुमार मरण को प्राप्त हो गया है। अब तुम कालकुमार को जीवित नही देख सकोगी।"

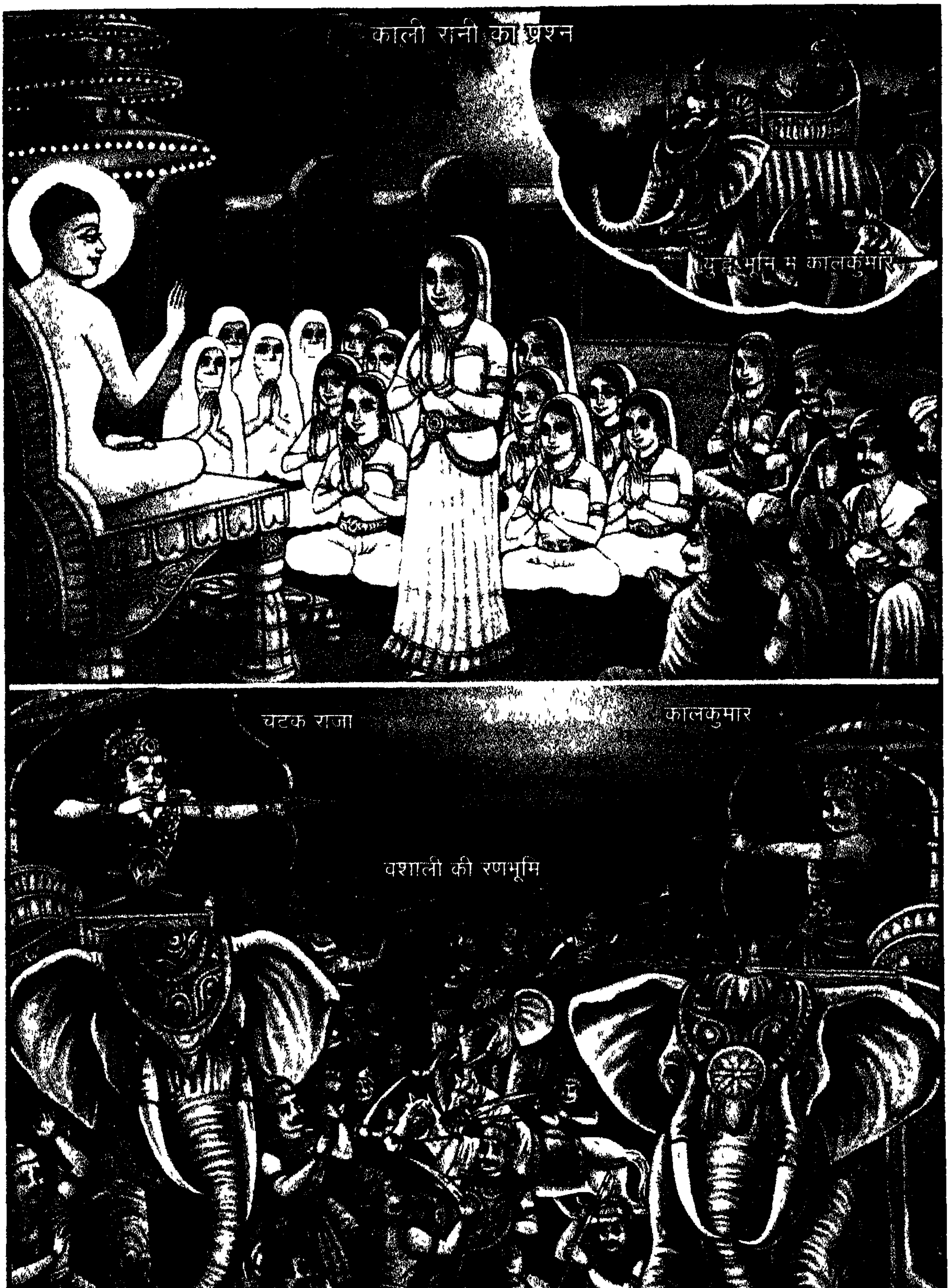
ANSWERS OF KAALI'S QUESTIONS

9. After that Shraman Bhagavan Mahavır gave hıs dıscourse to the large congregatıon along wıth Kaalı Devı (Thıs should be followed by the readıng of the descrıptıon of the dıscourse as ın *Aupapatık Sutra*) The *Shramanopasaks* and *Shramanopasıkas* are firm ın relıgıous codes and are followers of the word of the *Jına*

Queen Kaalı was happy, contented and delıghted to lısten to the sermon of Shraman Bhagavan Mahavır She then paıd homage and obeısance to Shraman Bhagavan three tımes and put forth her questıon—"*Bhante* ! My son, Kaal Kumar, has gone wıth hıs three thousand horses and so on up to ın the *Rath-musal* battle Wıll he wın or not ? and so on up to Wıll I be able to see Kaal Kumar alıve ?"

Bhagavan saıd ın reply—"O Kaalı ! Your son, Kaal Kumar, along wıth three thousand elephants (etc) joıned Kıng Kunık ın the *Rath-musal* battle Whıle fightıng, woundıng, tramplıng, and kıllıng many soldiers and fellıng theır banners and colours, darkenıng the sky ın all dırectıons and smashıng charıot wıth charıot he came across Kıng Chetak

"When Kıng Chetak saw Kaal Kumar approachıng hım, he was ınfurıated Gnashıng hıs teeth and pressıng hıs lıps, Kıng Chetak raısed hıs bow, loaded an arrow and drew the strıng to hıs ears In just one shot he fatally wounded Kaal Kumar Pıerced wıth the arrow, Kaal Kumar fell on the ground lıke a broken peak of a hill and dıed on the spot Therefore, O Kaalı ! Kaal Kumar has met hıs death You cannot see hım alıve now"


काली रानी का प्रश्न
युद्धभूमि में कालकुमार
चटक राजा
कालकुमार
वैशाली की रणभूमि

चित्र परिचय-१ | **Illustration No. 1**

काली रानी का प्रश्न

दृश्य–१

चम्पानगरी मे पधारने पर श्रेणिक राजा की दसो रानियो ने भगवान महावीर की देशना सुनी। पश्चात काली रानी पूछती है- भंते ! मेरा पुत्र कालकुमार चेटक राजा के साथ युद्ध करने गया है। क्या मै उसको जीवित देख सकूँगी ?

दृश्य–२

उत्तर मे भगवान बताते है हे काली ! तुम्हारा पुत्र युद्ध भूमि मे चेटक राजा के साथ घनघोर युद्ध करता हुआ उसके बाण द्वारा आहत होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया है।

वर्ग १ अ १ सूत्र ९

QUEEN KAALI'S QUESTION

SCENE-1

All the ten queens of king Shrenik listened to the sermon of Bhagavan Mahavir when he arrived at Champa city. Then Queen Kaali asked—"*Bhante* ! My son, Kaal Kumar, has gone to fight a battle with king Chetak. Will I be able to see him alive ?"

SCENE-2

Bhagavan replied—'O Kaali ! Fighting a fierce battle with king Chetak, your son was injured by his arrow and has died.

–Sec I Ch 1, Sutra 9

विवेचन—आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने यहाँ स्वय ही प्रश्न उपस्थित किया है कि साधु को ऐसी अप्रिय प्रज्ञापनी भाषा बोलना वर्जित है, तब फिर भगवान ने यह कथन क्यों किया ? इसका समाधान करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं–"यह आगम–विहारी सर्वज्ञ का कथन है, सर्वज्ञ उस भाषा के परिणाम आदि को भली प्रकार जानते है, उन्होने जाना कि यह घटना ही कालीदेवी के वैराग्य का कारण बनेगी और वह दीक्षा लेकर आत्म–कल्याण करेगी। अत इसमे कोई दोषापत्ति नही है।

Elaboration—At this point Acharya Shri Atmaram ji M has raised a question The use of such hurtful language and expression is forbidden. Why then *Bhagavan* uttered such words ? He himself provides an explanation—"This is a statement by an *Agam*-knowing omniscient who is well aware of the consequences of such language and expression He knew that this incident was going to be the cause of Kaali Devi's detachment and would inspire her to get initiated to pursue spiritual beatitude Thus it does not involve any transgression

काली रानी को पुत्र–शोक

१०. तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ता विव चम्पगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया।

तए णं सा काली देवी मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठित्ता समणं भगवं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एवमेयं भंते, तहमेयं भंते, अवितहमेयं भंते, असंदिद्धमेयं भंते, सच्चे णं भंते ! एसमट्ठे. जहेयं तुब्भे वयह" त्ति कट्टु समणं भगवं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भया तामेव दिसिं पडिगया।

१०. श्रमण भगवान महावीर के मुख से यह वृत्तान्त सुना तो वह कालीदेवी घोर पुत्र–शोक से उद्विग्न हो गई। कुल्हाडी से कटी हुई चम्पकलता के समान पछाड खाकर धडाम से उसका सम्पूर्ण शरीर पृथ्वी पर गिर पडा।

कुछ समय के पश्चात् (दासियो आदि द्वारा उपचार करने पर) जब कालीदेवी कुछ आश्वस्त–स्वस्थ–सी हुई, तब खडी हुई और खडी होकर उसने भगवान को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दना–नमस्कार करके इस प्रकार कहा–"भगवन् ! आप जैसा कहते है वह इसी प्रकार है, भगवन् ! ऐसा ही है, भगवन् ! आपका कथन बिलकुल सत्य है, भगवन् ! आपका वचन असदिग्ध है, सत्य है। यह बात ऐसी ही है, जैसी आपने बतलाई है।" ऐसा कहकर उसने श्रमण भगवान को पुन वन्दना–नमस्कार किया। वदन–नमस्कार करके उसी धार्मिक रथ पर आरूढ होकर, जिस दिशा से आई थी वापस उसी दिशा में चली गई।

GRIEF OF QUEEN KAALI

10. Hearing about this incident from Shraman Bhagavan Mahavir, Kaali Devi was struck with the grief of loss of her son She fell and her whole body struck the ground like a *Champak* creeper cut with an axe.

After some time (on being nursed by her maids) when she regained her composure, she got up and paid homage to *Bhagavan* After paying homage she uttered—"*Bhante* ! It is, indeed, so ! So is the reality, *Bhagavan* !, *Prabho* ! It is the truth !, *Bhagavan* ! It is beyond any doubt, *Bhante* ! It is exactly as you say !" With these words she once again paid homage and obeisance to *Bhagavan* After that she rode her religious chariot and went in the direction she had come from

कालकुमार के विषय मे गौतम की जिज्ञासा

११. (क) "भंते" त्ति भगवं गोयमे (जाव) वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"काले णं भंते ! कुमारे तिहिं दतिसहस्सेहिं जाव रह–मुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रन्ना एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ?"

"गोयमा" इ समणे भगवं गोयमं एवं वयासी–"एवं खलु, गोयमा ! काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।"

"काले णं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं समारंभेहिं केरिसएहिं आरंभ–समारंभेहिं केरिसएहिं भोगेहिं, केरिसएहिं संभोगेहिं, केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसएण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयत्ताए उववन्ने ?"

११ **(क)** उस समय भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर के समीप आये और "भते !" इस प्रकार सम्बोधन करते हुए उन्होने वन्दना-नमस्कार किया। वन्दना-नमस्कार करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए इस प्रकार निवेदन किया–"भगवन् ! तीन हजार हाथियो आदि सेना के साथ जो कालकुमार रथ–मूसल सग्राम करते हुए चेटक राजा के बाण के एक ही प्रहार से रक्तरजित हो, निष्प्राण होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ है, वह मृत्यु प्राप्त कर कहाँ गया है ? कहाँ उत्पन्न हुआ है ?"

भगवान ने गौतम स्वामी से कहा- "गौतम ! तीन हजार हाथियो आदि की सेना के साथ युद्ध मे प्रवृत्त वह कालकुमार जीवनरहित होकर काल करके चौथी पकप्रभा पृथ्वी के हेमाभ नरक मे दस सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिको मे नारक रूप मे उत्पन्न हुआ है।"

गौतम ने पुन पूछा–"भते ! किस प्रकार के भोगो–(शब्दादि विषयो का सेवन), सभोगो–(तीव्र आसक्तिपूर्वक विषय-सेवन), भोग–सभोगो को भोगने से, कैसे–कैसे आरम्भो और आरम्भ–समारम्भो के करने से तथा कैसे अशुभ कर्मों के भार से मरण समय मे मरण प्राप्त करके वह कालकुमार चौथी पकप्रभा पृथ्वी मे नैरयिक रूप से उत्पन्न हुआ है ?"

GAUTAM'S CURIOSITY ABOUT KAAL KUMAR

11. (a) At that time Bhagavan Gautam approached Shraman Bhagavan Mahavir and addressing him as '*Bhante* !', paid his homage and obeisance

After greeting thus and conveying his curiosity he said—"*Bhante* ! While fighting the *Rath-musal* battle along with three thousand elephants (etc), Kaal Kumar has met his death after being fatally wounded and getting drenched in blood by just one shot of arrow by King Chetak Where has he gone after death ? Where has he reincarnated ?"

Bhagavan replied to Gautam Swami—"Gautam ! Going to war with three thousand elephants, that Kaal Kumar has reincarnated after his death in the *Hemabh Narak* (name of a specific area in the infernal world) of the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) as a *naarak* (infernal being) among *nairayiks* (infernal beings) with a life span of ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) "

Gautam asked further—"*Bhante* ! After indulging in what activities (related to sense organs of hearing etc), enjoyments (related to intense infatuation), and activities-enjoyments, after committing what violence, sinful deeds, and violence-sins, and under the weight of what bad *karmas* at the time of death, Kaal Kumar, after death, has incarnated as a *nairayik* in the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) ?

पूर्व वृत्तान्त

११. (ख) एवं खलु, गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणि नामं राया होत्था, महया। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सोमाला. (जाव) विहरइ। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, सोमाले. (जाव) सुरूवे, सामदामभेयदण्ड. जहा चित्ता, (जाव) रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो चेल्लणा नाम देवी होत्था, सोमाला. (जाव) विहरइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसयंसि वासघरंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, जहा पभावई, (जाव) सुमिणपाढगा पडिविसज्जिया, (जाव) चेल्लणा से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविट्ठा।

११. (ख) (गौतम स्वामी के उक्त प्रश्न के उत्तर मे भगवान ने रथ—मूसल सग्राम के कारणो पर प्रकाश डालते हुए बताया।)

गौतम ! उसका कारण इस प्रकार है—उस काल और उस समय मे (जब यह घटना हुई) राजगृह नामक नगर था। वह वैभव से सम्पन्न, शत्रुओ के भय से रहित और धन-धान्यादि की समृद्धि से युक्त था। उस राजगृह नगर मे हिमवान् शिखर के सदृश महान् प्रतापी श्रेणिक राजा राज्य करता था। श्रेणिक राजा की अत्यन्त सुन्दर व सुकुमाल नन्दा नाम की रानी थी, जो सब प्रकार के सुखो का उपभोग करती हुई समय

व्यतीत करती थी। उस श्रेणिक राजा का पुत्र एव नन्दा रानी का आत्मज अभय नामक राजकुमार था, जो सुकुमाल, सुरूप तथा साम, दाम, भेद और दण्ड की राजनीति मे चित्त सारथि के समान निष्णात यावत् राज्यधुरा का वाहक-शासन का हितचिन्तक, चतुर सचालक था।

श्रेणिक राजा की चेलना नाम की एक दूसरी रानी थी। वह सुकुमाल हाथ-पैर वाली थी इत्यादि सासारिक सुखो का भोग करती सुखपूर्वक रहती थी।

किसी समय चेलना रानी, शयनगृह मे चिन्ता आदि से मुक्त हुई सुख-शय्या पर सोई थी। उस समय चेलनादेवी प्रभावतीदेवी के समान स्वप्न मे सिह को देखकर जाग्रत हुई। पश्चात् स्वप्न-पाठको को आमन्त्रित करके राजा ने उसका फल पूछा। स्वप्न-पाठको ने स्वप्न का फल बताया। फिर उनको सम्मानपूर्वक विदा किया। पश्चात् चेलनादेवी उन स्वप्न-पाठको के वचनो को सहर्ष स्वीकार करके अपने निवास-भवन के अन्दर चली गई। (यह चेलना रानी के गर्भवती होने की सूचना है।)

TELLING THE PAST

11. (b) (In reply to this question of Gautam Swami, *Bhagavan* explained the causes of the *Rath-musal* battle)

Gautam ! The reason for that is as follows—

During that period of time (when this incident occured) there was a city called Rajagriha It was endowed with wealth, grains, glory, prosperity, and grandeur In that Rajagriha city ruled King Shrenik who was as majestic as the peak of the Himavan mountain (the Himalayas) The consort of King Shrenik was queen Nanda, who was extremely delicate and beautiful (and so on up to) and enjoyed life The son of king Shrenik and queen Nanda was prince Abhaya Kumar He was delicate and handsome He was as accomplished as the renowned Chitt Charioteer in the four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *daam* (bribery), *bhed*, (guile), and *dand* (threat) and so on up to He held the reigns of the state and was its well-wisher and astute governor

King Shrenik had another queen named Chelana She was extremely delicate and beautiful (and so on up to) and enjoyed life

Once, free of all worries, queen Chelana was sleeping in a comfortable bed in her bedroom Some time during the night queen Chelana, like queen Prabhavati, saw a lion in her dream and woke up Later, the king called dream interpreters and asked for the meaning of the dream After they told the meaning of the dream they were greated with due honour Accepting the words of the augurs happily, Queen Chelana returned to her quarters (This conveys that Queen Chelana had become pregnant)

विवेचन—श्रेणिक राजा के साथ नदा का विवाह, अभयकुमार का जन्म तथा मत्रीपद आदि का समस्त वर्णन परिशिष्ट मे दिया गया है। चित्त सारथि का वर्णन रायपसेणियसूत्र, सूत्र २०६ पर देखना चाहिए। **जहा पभावई**—प्रभावतीदेवी के समान सिह-स्वप्न देखना व अन्य वर्णन महाबलकुमार के वर्णन भगवतीसूत्र, शतक ११, उद्देशक ११ के समान यहाँ समझने की सूचना है। यहाँ कालकुमार के नरक-गमन के मुख्य रूप में तीन कारण सूचित किये है-(१) भोगों की तीव्र आसक्ति, (२) महारंभ, महापरिग्रह का सेवन एव (३) अशुभ पापाचरण।

Elaboration—Detailed description of the marriage of King Shrenik with Nanda, birth of Abhaya Kumar, his appointment as a minister and other incidents are included in the appendix. Details about Chitt Charioteer are available in *Rayapaseniya Sutra*, aphorism-206. The dream sequence of seeing a lion and other information is like the story of Mahabal Kumar in *Bhagavati Sutra*, Shatak 11, Uddeshak 11. Here mainly three reasons have been given for Kaal Kumar's passage to hell—extreme infatuation for mundane pleasures, deep involvement in extreme sins, extreme covetousness, including evil conduct

चेलना का दोहद

१२. (क) तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-"धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) जम्मजीवियफले जाओ णं सेणियस्स रन्नो उयरवली-मंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भाज्जिएहि य सुरं च (जाव) पसन्नं च आसाएमाणीओ जाव विसाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ परिभाएमाणीओ दोहलं पविणेन्ति।"

तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीण-विमण-वयणा पंडुइयमुही ओमंथिय-नयण-वयणकमला जहोचियं पुप्फवत्थ-गंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करतलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा (जाव) झियाइ।

१२. **(क)** तत्पश्चात् गर्भ के तीन मास पूरे होने पर चेलनादेवी को इस प्रकार का दोहद-(गर्भवती माता का मनोरथ) उत्पन्न हुआ-"सचमुच वे माताएँ धन्य है, पुण्यशालिनी है, उन्होने जीवन का सुफल प्राप्त किया है जो अपने पति (राजा श्रेणिक) के उदर माँस को शूलो पर सेककर, तलकर, भूनकर तथा सुरा (शराब), मधु, मेरक, मद्य, सीधु और प्रसन्ना नामक मदिराओ का आस्वादन तथा उपभोग करती हुई और अपनी सहेलियो को आपस मे बाँटकर खाती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है।

किन्तु इस अयोग्य एव अनिष्ट दोहद के पूर्ण न होने के कारण चेलनादेवी (मानसिक सताप के कारण) सूखी-सी हो गई, भूख से पीडित-सी हो गई, दुर्बल हो गई, रुग्ण और वृद्ध जैसे शरीर वाली हो गई, निस्तेज और दीन, उदास जैसी हो गई, उसका मुख-कमल फीका पड गया। आँखे और मुख नीचा किये रहने लगी। यथोचित पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और आभूषण का उपभोग नही करती हुई, हथेलियो से मसली

१२. (ग) इस तरह राजा श्रेणिक द्वारा दूसरी बार, तीसरी बार पूछने पर चेलनादेवी ने इस प्रकार कहा–"स्वामिन् ! ऐसी तो कोई भी बात नही है, जिसे आप सुनने के योग्य न हो और न इस बात को सुनने के लिए ही आप अयोग्य हैं। परन्तु यह बात आपके सुनने योग्य नही है क्योकि स्वामिन् ! सिह का महास्वप्न देखने के तीन मास पूर्ण होने पर मुझे इस प्रकार का यह दोहद उत्पन्न हुआ है कि 'वे माताएँ धन्य है जो अपने पति (आप) के उदर माँस को शूलो पर सेककर यावत् माँस तथा मदिरा का सेवन करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है।' किन्तु स्वामिन् ! उस दोहद को पूर्ण न कर सकने के कारण मै सूखती जा रही हूँ, भूखी रह रही हूँ यावत् चिन्तित हो रही हूँ।"

12. (c) After being asked twice and thrice by King Shrenik, Queen Chelana broke her silence—"My Lord ! There is nothing that you are not fit to hear Even this one you are not unfit to hear In fact, it is this one that is not worth your attention This is because, my lord ! almost three months after I saw the great dream, I got this *dohad* (desires of a pregnant mother)—'Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, and roast on stick the meat from the belly of their husbands and so on up to eating with a variety of wines And thus fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother)' As this *dohad* (desires of a pregnant mother) cannot be fulfilled I am getting emaciated, famished and gloomy"

विवेचन–इस सूत्र का विवेचन करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज लिखते है–"इस घटना से अनेक प्रेरक व आदर्श बाते सूचित होती है–(१) पत्नी के प्रति पति का कर्त्तव्य, (२) पति–पत्नी के बीच कैसी भी बात हो, दुराव–छिपाव नही रहना चाहिए, (३) इससे यह भी ध्वनित होता है कि रानी चेलना माँस–भक्षण आदि कतई नही करना चाहती थी, परन्तु गर्भ के प्रभाव से उसके मन मे जो घृणित इच्छा उत्पन्न हुई उससे वह लज्जित तथा दु खित थी।"

Elaboration—Elaborating this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M writes—"This incident presents several inspiring and ideal things—(1) Duties of a wife towards her husband (2) Irrespective of the kind of issue, there should be no mistrust or secrets between husband and wife (3) This also indicates that Queen Chelana was averse to meat eating and was ashamed and sorry for her detestable craving caused by her state of pregnancy

श्रेणिक का आश्वासन

१३. तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी–"मा णं तुमं, देवाणुप्पिए ! आहय (जाव) झियाहि। अहं णं तहा जइस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु चेल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मिय–महुर–सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं समासासेइ।


चिंताग्रस्त चेलना
स्वप्न विचार
दुःखी चेलना ने कारण बताया

चित्र परिचय-२

Illustration No. 2

चिन्ताग्रस्त चेलना

दृश्य–१

गर्भ के तीसरे महीने रानी चेलना को एक अनिष्टकारी दोहद उत्पन्न हुआ कि–"मै अपने पति के उदर का माँस तल-भून कर खाऊँ और अनेक प्रकार की मदिरा पीकर इच्छा पूर्ति करूँ।

इस अनिष्ट-दोहद पर विचार करके तथा पूर्ण नही होने से वह उदास-सी रहने लगी। धीरे-धीरे दुर्बल हो गई। रानी को चिन्ता शोक मे डूबी देखकर दासी उसे बार-बार पूछती है, परन्तु रानी मुँह से कुछ नही बताती।

दृश्य–२

दासी ने राजा श्रेणिक से विनती की "महाराज! पता नही क्या बात है, आजकल महारानी बहुत ही दु खी, उदास व शोक मे डूबी सी रहती है।" दासी की बात सुनते ही राजा श्रेणिक चिन्तातुर हो गये। सोचते है–ऐसी क्या बात है, रानी को क्या कष्ट है?

दृश्य–३

राजा शीघ्र ही महलो मे आया। रानी से बार बार पूछने पर भी वह उदास बैठी आँसू बहाती रही, परन्तु बोली नही। राजा ने अपनी सौगन्ध दी महारानी, जो भी दु ख है, मुझे कहो '

दृश्य–४

आँसू बहाती रानी कहती है- 'जिस दिन मैने सिंह का स्वप्न देखा, शिशु गर्भ मे आया, उसके तीन माह पश्चात् ऐसा अनिष्टकारी दोहद उत्पन्न हुआ है जिसे न तो मै अपने मुँह से कुछ कह सकती हूँ और न ही पूर्ण करने का कोई उपाय सूझता है?

वर्ग १ अ १ सूत्र १२

WORRIED CHELANA

SCENE-1

On completion of three months of pregnancy Queen Chelana had a *dohad*—"I should fry and roast meat from the belly of my husband and enjoy a variety of wines And thus fulfill my *dohad* "

As this ominous *dohad* could not be fulfilled, she was in a state of mental agony She became weak Observing the gloomy appearance of the queen, her personal maid asks for the cause again and again But the queen does not answer

SCENE 2

The maid informs king Shrenik—"Sire ! For some unknown reason Queen Chelana is in very sad and gloomy today " Hearing this news from the maid King Shrenik was disturbed He thought—'What is the matter, what ails the queen ?"

SCENE-3

He rushed into the palace Even on being asked repeatedly the queen remained silent and continued to shed tears The king emphatically implored—"Queen ! Please tell me whatever ails you "

SCENE-4

With flowing tears the queen said—"Almost three months after I saw a lion in my dream and was pregnant, I had such horrible *dohad* I neither find words to express it nor means to fulfill it "

—*Sec 1 Ch 1, Sutra 12*

समासासित्ता चेल्लणाए देवीए अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सीहासणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं उवाएहि य, उप्पत्तियाए य वेणइयाए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे परिणामेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे (जाव) झियाइ।

१३. तब श्रेणिक राजा ने चेलनादेवी की उक्त बात सुनकर आश्वासन देते हुए कहा–''देवानुप्रिये ! तुम अपने मन को मारकर चिता मत करो। निश्चित ही मै कोई ऐसा प्रयत्न (उपाय) करूँगा जिससे तुम्हारे दोहद की पूर्ति हो सकेगी।'' ऐसा कहकर चेलनादेवी को इष्ट पूर्ति करने वाली (इच्छानुरूप), प्रिय-प्यारी, मन को भाने वाली, मन के अनुकूल, उदार भावनाओ से युक्त कल्याणप्रद (सुखदायी), धन्य कहने योग्य मगलकारी, मृदु-मधुर आशा जगाने वाली वाणी से आश्वस्त किया।

तत्पश्चात् वह चेलनादेवी के पास से वापस लौटा। अन्त पुर से बाहर जहाँ बाह्य सभाभवन था, उसमे जहाँ सिहासन रखा था, वहाँ आया। आकर पूर्व की ओर मुख करके उस उत्तम सिहासन पर बैठ गया। इस दोहद की सपूर्ति के लिए अनेक प्रकार के साधनो व उपायो से औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी–इन चार प्रकार की बुद्धियो से अनेकविध विचार करते हुए किसी भी प्रकार के साधन, प्रयोग व व्यवस्था आदि न सूझने पर मन मे दु खी होता हुआ उत्साहहीन एव चिन्ताग्रस्त हो गया।

ASSURANCE BY SHRENIK

13. Hearing the aforesaid words from Queen Chelana, King Shrenik gave her assurance—"Beloved of gods ! Don't torture yourself by suppressing your desire Rest assured that I will find a way to fulfill your *dohad* (desires of a pregnant mother) " Thus he assured Queen Chelana in sympathetic, adorable, appealing, generous, beatific, commendable, pleasing, and inspiring voice and words

After that he left Queen Chelana Leaving his palace, he entered the assembly hall and sat on his throne facing east He started contemplating about the possible ways and means to fulfill this *dohad* (desires of a pregnant mother) He applied his four types of wisdom (*autpattiki* or instantaneous one; *vainayiki* or acquired with modesty, *kaarmiki* or one gained through experience, and *paarinamiki* or enriched through imagination, logic, and age) and considered a variety of ways to achieve the desired goal. When he could not come up with any means, methods, or arrangements for some solution in spite of all his efforts, he became frustrated and worried

अभयकुमार का आगमन : दोहद-पूर्ति का उपाय

१४. (क) इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए (जाव) सरीरे; सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ। सेणियं रायं

ओहय. (जाव) झियायमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–"अन्नया णं, ताओ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ (जाव) हियया भवह, किं ण, ताओ! अज्ज तुब्भे ओहय. (जाव) झियाह? तं जइ णं अहं, ताओ एयमट्ठस्स अरिहे सवणयाए, तो णं तुब्भे ममं एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जा णं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं करेमि।"

तए णं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वयासी–"नत्थि णं, पुत्ता! से केइ अट्ठे, जस्स णं तुमं अणरिहे सवणयाए। एवं खलु, पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स (जाव) महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, (जाव) जाओ णं मम उयरवलीमंसेहि सोल्लेहि य (जाव) दोहलं विणेति।

तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का (जाव) झियाइ।

तए णं अहं पुत्ता! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं य (जाव) ठिइं वा अविंदमाणे ओहय. (जाव) झियामि।"

१४. **(क)** उस समय अभयकुमार स्नान करके, शरीर पर सुन्दर वस्त्र-आभूषण धारण करके अपने आवासगृह से बाहर निकला। निकलकर जहाँ बाह्य उपस्थानशाला (राजसभा) थी और उसमे जहाँ श्रेणिक राजा था, वहाँ आया। उसने श्रेणिक राजा को चिन्ताग्रस्त जैसा देखा, यह देखकर बोला–"तात! पहले जब कभी आप मुझे आता हुआ देखते थे तो हर्षित एव प्रसन्न हो जाते थे। किन्तु आज ऐसी क्या बात है जो आप उदास यावत् चिन्ता मे डूबे हुए है? तात! यदि आप मुझे चिन्ता का कारण बताने व सुनाने के योग्य समझते हो तो, वह कारण यथार्थ रूप मे बिना किसी सकोच-सदेह के कहिए, जिससे मै उस कारण के अन्त तक उसका समाधान करने का उपाय कर सकूँ।"

तब श्रेणिक राजा ने अभयकुमार से कहा– 'पुत्र! ऐसी तो कोई बात नही है जो तुम्हारे सुनने योग्य नही हो, किन्तु बात यह है पुत्र! तुम्हारी विमाता चेलनादेवी को उस महान् सिह-स्वप्न को देखे तीन मास बीतने पर ऐसा दोहद उत्पन्न हुआ है कि 'जो माताएँ मेरे (अपने पति के) हृदय के माँस को सलाइयो पर सेककर, तल-भूनकर उस माँस से अपने दोहद को पूर्ण करती है वे धन्य है, आदि।'

परन्तु चेलनादेवी उस दोहद के पूर्ण न हो सकने के कारण क्षीण होती हुई चिन्तित रहती है। इसलिए पुत्र! उस दोहद की सम्पूर्ति के निमित्त साधनो, उपायो व व्यवस्था को समझ नही सकने के कारण मै उत्साहहीन होकर चिन्तित हो रहा हूँ।"

ARRIVAL OF ABHAYA KUMAR THE SOLUTION

14. (a) At that time Abhaya Kumar, getting ready after taking his bath and donning a beautiful dress and ornaments, left his palace He came to the outer court (the assembly) where King Shrenik was sitting When he found the king despondent he inquired—"Father! In the past when you saw me coming you used to receive me affectionately (etc) But what is the matter that you are sad and worried today? Father! If you find me worthy

of knowing the cause of your worry, please tell me Without any hesitation, doubt, or reservation kindly reveal the truth candidly so that I may seek the final solution to your problem "

King Shrenik replied—"Son ! There is nothing that cannot be told to you Three months have passed since your step-mother, Queen Chelana saw that lion in her dream. She now has a *dohad* (desires of a pregnant mother)—'Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, and roast on stick the meat from the belly of their husbands (etc)'

"As this *dohad* (desires of a pregnant mother) cannot be fulfilled, Queen Chelana is getting weak and worried Son ! That is why, being unable to find ways and means to fulfill that *dohad* (desires of a pregnant mother), I am disconcerted and worried "

१४. (ख) तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी-"मा णं, ताओ तुब्भे ओहय. (जाव) झियाह, अहं णं, तहा जत्तिहामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ" त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं (जाव) वग्गूहिं समासासेइ।

समासासित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भिन्तरए रहस्सियए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-"गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सूणाओ अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हह।"

तए णं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभएण कुमारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ (जाव) पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमंति। जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति, अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च गिण्हन्ति, गिण्हित्ता जेणेव अभए कुमारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल. तं अल्लं मंसं रुहिरं बत्थिपुडगं च उवर्णेति।

१४. (ख) श्रेणिक राजा के मनोभावो को सुनने के बाद अभयकुमार ने इस भाँति कहा-"तात ! आप निरुत्साह यावत् चिन्तित न हो, मै ऐसा कोई उपाय करूँगा कि जिससे मेरी छोटी माता चेलनादेवी के दोहद की सपूर्ति हो सकेगी।" इस प्रकार श्रेणिक राजा को प्रिय लगने वाली वाणी से सान्त्वना दी-आश्वस्त किया।

श्रेणिक राजा को आश्वस्त करने के पश्चात् अभयकुमार अपने आवास पर आया। आकर गुप्त रहस्यो के जानकार अपने अत्यन्त विश्वस्त सम्मान योग्य सेवको को बुलाया और उनसे इस प्रकार कहा-"देवानुप्रियो ! तुम सूनागार-(वध-स्थान या कत्लखाना) मे जाकर गीला-ताजा माँस, रुधिर और शोणित से भरी थैली (वस्तिपुटक-पेट का भीतरी भाग, आँते) लेकर आओ।"

तब वे विश्वासपात्र पुरुष अभयकुमार की इस बात को हर्ष एव प्रसन्नता के साथ स्वीकार करके वहाँ से निकले। निकलकर जहाँ पशुओ का वध-स्थल था, वहाँ पहुँचे और उन्होने वहाँ से ताजा, गीला माँस, रक्त से सनी पेट की आँतो की थैली ली। लेकर जहाँ अभयकुमार था, वहाँ आये। आकर दोनो हाथ जोडकर उस माँस, रक्त एव वस्तिपुटक को सामने रख दिया।

14. (b) When Abhaya Kumar heard about the problem from King Shrenik he assured the king, "Father ! please get rid of your anxiety and do not lose hope I will do something and shall ensure that my step-mother, Queen Chelana, is able to fulfill her Dohad (desires of a pregnant mother)" Thus he reassured King Shrenik in encouraging words

After reassuring King Shrenik, Abhaya Kumar returned to his palace There he called his reliable and senior confidants and said—"Beloved of gods ! Go to an abattoir and get fresh flesh and blood (specifically the belly portion including intestines) filled in a bag"

Those confidants happily accepted Abhaya Kumar's command and left They came to an abattoir and collected a bag filled with fresh flesh and blood including intestines They returned to Abhaya Kumar and placed that bag before him

१४. (ग) तए णं से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं कप्पणीकप्पियं करेइ, करेत्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं रहस्सिगयं सयणिज्जंसि उत्ताणयं निवज्जावेइ, निवज्जावेत्ता सेणियस्स उयरवलीसु तं अल्लं मंसं रुहिरं विरवेइ, विरवेत्ता बत्थिपुडएणं वेढेइ, वेढेत्ता सवंतीकरणेणं करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं उप्पिं पासाए अवलोयणवरगयं ठवावेइ। ठवावेत्ता चेल्लणाए देवीए अहे समक्खं सपडिदिसिं सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ। सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाइं कप्पणिकप्पियाइं करेइ, करेत्ता से य भायणंसि पक्खिवइ। तए णं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेइ, करेत्ता मुहुत्तंतरेणं अन्नमन्नेण सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ।

तए णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो उयरवलिमंसाई गिण्हेइ, गिण्हेत्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए देवीए उवणेइ।

तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहिं (जाव) दोहलं विणेइ। तए णं सा चेल्लणा देवी संपुण्णदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१४. (ग) तब अभयकुमार ने उस रक्त और माँस मे से थोडा भाग लेकर कैची से काटा। काटकर जहाँ श्रेणिक राजा था, वहाँ आया (श्रेणिक को गुप्त बात व नाटक रचने की योजना समझा दी) और फिर श्रेणिक राजा को एकान्त मे शय्या पर चित लिटाया। लिटाकर श्रेणिक राजा के उदर पर उस आर्द्र रक्त-माँस को रख दिया और फिर वस्तिपुटक को लपेट दिया। वह ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे रक्त की धारा बह रही हो और फिर ऊपर के महल के झरोखे मे चेलनादेवी को अवलोकन करने के आसन से बैठाया, अर्थात् ऐसे स्थान पर बिठलाया जहाँ से वह इस सम्पूर्ण दृश्य को देख सके। बैठाकर चेलनादेवी के ठीक नीचे सामने की ओर श्रेणिक राजा को शय्या पर चित लिटा दिया। छुरी से श्रेणिक राजा की उदरावली का माँस काटा, काटकर उसे एक बर्तन मे रखा। तब श्रेणिक राजा ने झूठ-मूठ मूर्च्छित होने का नाटक किया। कुछ समय के पश्चात् दोनों ही आपस मे बातचीत करने लग गये।

तत्पश्चात् अभयकुमार ने श्रेणिक राजा की उदरावली के माँस-खण्डो को लिया, लेकर जहाँ चेलनादेवी थी, वहाँ आया और आकर चेलनादेवी के सामने रख दिया।

तब चेलनादेवी ने श्रेणिक राजा के उस उदरावली के माँस के लोथडे से अपना दोहद पूर्ण किया। इस प्रकार चेलनादेवी का दोहद सम्पन्न और निवृत्त हो गया अर्थात् उसकी इच्छा पूर्ण हो गई। तब वह अपने गर्भ का सुखपूर्वक वहन करने लगी।

14. (c) Abhaya Kumar cut a portion of the flesh with scissors and came where King Shrenik was sitting (He explained to King Shrenik the secret plan and his role) The king was then made to lie down flat on his back on a bed in privacy The blood soaked flesh was placed on the kings exposed belly covering it with the entrails It looked as if fresh blood was oozing from the belly Queen Chelana was asked to sit in a high balcony overlooking the whole scene. The bed with King Shrenik lying flat was brought immediately under the balcony Portions of King Shrenik's belly (false) were sliced with a knife and placed in a tray King Shrenik acted as if he had fainted Some time later they both started talking

After some time Abhaya Kumar took the tray with slices of flesh from King Shrenik's belly, brought it to Queen Chelana and placed it before her

Then Queen Chelana fulfilled her *dohad* (desires of a pregnant mother) with slices of flesh from King Shrenik's belly This way Queen Chelana's *dohad* (desires of a pregnant mother) was fulfilled and she carried her fetus comfortably.

विवेचन—इस सूत्र का विवेचन करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने लिखा है—"इससे प्रतीत होता है, उस युग मे नारी जाति की इच्छा का पूर्ण सम्मान किया जाता था। विशेषकर गर्भवती महिला के दोहद की पूर्ति करना पुरुष अपना दायित्व समझते थे।

इससे यह भी सूचित होता है कि श्रेणिक राजा के रसोई मे माँस नही पकता था और रानी आदि सभी इसे घृणित मानते थे। इसीलिए तो अभयकुमार को ऐसा नाटक रचना पडा और इस दुष्कृत्य के प्रति चेलना रानी के मन मे अत्यन्त ग्लानि तथा पश्चात्ताप का भाव उमडा। जिसके प्रायश्चित्त स्वरूप उसने नवजात शिशु को ही ऊकरडी पर फिंकवाकर मातृ-वत्सलता व ममता का मोह त्याग दिया।"

Elaboration—Commenting on this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M states—'This indicates that in those days desires of women were duly respected Specially, fulfillment of the desire of pregnant women was considered to be an essential duty by the men-folk

'This also indicates that meat was not cooked in King Shrenik's kitchen and every one, including Queen Chelana despised this That is why Abhaya Kumar had to do this act and Queen Chelana was filled with feelings of

remorse and repentance for this misdeed Suppressing her natural affection and maternal love, she later threw the newborn on a heap of trash as an act of atonement'

चेलनादेवी की आशका व आत्म-ग्लानि

१५. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे (जाव) समुप्पज्जित्था-"जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाणि खाइयाणि, तं सेयं खलु मए एयं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा", एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा।

तए णं सा चेल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भसाडएहिं य जाव गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा (जाव) विद्धंसित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणी अकामिया अवसवसा अट्टवसट्टदुहट्टा तं गब्भं परिवहइ।

१५. कुछ समय व्यतीत होने के बाद एक बार चेलनादेवी को मध्य रात्रि मे जागते हुए इस प्रकार मानसिक विकल्प (आशका) उत्पन्न हुआ-'इस बालक ने गर्भ मे आते ही पिता के उदर का माँस खाया है, इसलिए इस गर्भ को नष्ट कर देना, गिरा देना, गला देना एव विध्वस्त कर देना ही मेरे लिए श्रेयस्कर होगा' (क्योकि जन्म लेकर बडा होने पर न जाने यह पिता का या कुल का क्या अनिष्ट करेगा), उसने ऐसा पक्का निर्णय किया। निर्णय करके गर्भ को नष्ट करने वाली, गिराने वाली, गलाने वाली और विध्वस्त करने वाली अनेक औषधियो के द्वारा उस गर्भ को नष्ट करने, गिराने, गलाने और विध्वस्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह गर्भ नष्ट नही हुआ, न गिरा, न गला और न विध्वस्त ही हुआ।

तदनन्तर जब चेलनादेवी उस गर्भ को नष्ट करने वाली यावत् विध्वस्त करने वाली बहुत-सी औषधियो से नष्ट करने यावत् विध्वस्त करने मे सफल नही हुई तो श्रान्त, क्लान्त, खिन्न, ग्लानियुक्त और उदास होकर विवशता से बाध्य होकर आर्त्तध्यानग्रस्त होती हुई उस गर्भ का पालन करने लगी।

APPREHENSION AND REMORSE OF QUEEN CHELANA

15. Some days later at midnight when, Queen Chelana was awake she was filled with this apprehension—"The moment this child came to my womb it ate the flesh from his father's belly Therefore, it would be good for me to destroy, abort, dissolve, and disintegrate this fetus (as otherwise on being born and getting mature he could bring harm to his father and the family) She firmly resolved to do so She then made all efforts to destroy, abort, dissolve, and disintegrate the fetus by taking a variety of medicines prescribed for that However, she failed to destroy, abort, dissolve, and disintegrate the fetus

When Queen Chelana failed to destroy, . and so on up to.. disintegrate the fetus with the help of a variety of medicines, she became tired, exhausted, disappointed, dejected, and sad. Then out of compulsion and in a distressed state of mind, she helplessly carried the fetus.

बालक का जन्म : एकान्त में फेंकना

१६. तए णं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं (जाव) सोमालं सुरूवं दारगं पयाया।

तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—'जइ जाव इमेण दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—''गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिए, एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।''

१६. तत्पश्चात् नौ मास पूर्ण होने पर चेलनादेवी ने एक सुकुमार एव रूपवान् बालक को जन्म दिया।

बालक का प्रसव होने के पश्चात् चेलनादेवी के मन मे इस प्रकार आशका उत्पन्न हुई–'यदि इस बालक ने गर्भ मे आते ही पिता के हृदय का मॉस खाया है, तो हो सकता है कि यह बालक बडा होने पर हमारे कुल का भी अत करने वाला, कुलघाती निकले। अतएव मेरे लिए यही अच्छा है कि इस बालक को एकान्त उकरडे (कूडे कचरे के ढेर) पर फेक देना चाहिए।' इस प्रकार का सकल्प–निश्चय किया। निश्चय करके अपनी विश्वासी दासी को बुलाया, बुलाकर उससे कहा–''देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को एकान्त मे उकरडे पर फेक आओ।''

BIRTH OF THE CHILD · THROWING IT AWAY

16. After nine months of pregnancy Queen Chelana gave birth to a delicate and beautiful child

After the delivery Queen Chelana was filled with this apprehension—"The moment this child came to my womb it ate the flesh from his father's belly Therefore there are chances that on maturing he may end up being the scourge of the family Therefore, it would be good for me to throw this infant on a heap of trash in isolation Resolving thus she called a maid of her confidence and said—"Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation "

श्रेणिक द्वारा भर्त्सना

१७. (क) तए णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयलं (जाव) कट्टु चेल्लणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हेत्ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाइ।

तए णं तेणं दारगेणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिएणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था।

तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए, लद्धट्ठे समाणे, जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासित्ता आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेवेण चेल्लणा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, आओसित्ता उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेइ। एवं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसित्ता एवं वयासी–''किस्स णं तुमं मम पुत्ते एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि'' त्ति कट्टु चेल्लणं देविं उच्चावय–सवहसावियं करेइ करेत्ता एवं वयासी–''तुमं णं देवाणुप्पिए एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेहि।''

१७. (क) तत्पश्चात् उस विश्वस्त दासी ने चेलनादेवी की यह आज्ञा सुनी, सुनकर दोनो हाथ जोडे, आज्ञा को विनयपूर्वक स्वीकार किया। स्वीकार करके उस बालक को दोनो हाथो का सम्पुट बनाकर हथेलियो मे उठाया। उठाकर अशोकवाटिका मे गई और उस बालक को एकान्त मे उकरडे पर फेक दिया।

उस बालक के एकान्त मे उकरडे पर फेके जाने पर अशोकवाटिका मे प्रकाश ही प्रकाश फैल गया।

राजा श्रेणिक ने जब यह समाचार सुना तो वह शीघ्र अशोकवाटिका मे पहुँचा। वहाँ उस बालक को एकान्त मे उकरडे पर पडा देखकर क्रोध मे लाल हो उठा, यावत् क्रोधाग्नि से जलते हुए दाँतो को मिसमिसाते हुए राजा ने उस बालक को अपनी हथेलियो मे ले लिया और जहाँ चेलनादेवी थी, वहाँ आया। आकर चेलनादेवी को आक्रोशयुक्त शब्दो से फटकारा, कठोर वचनो से अपमानित किया और डाँटा। फिर इस प्रकार कहा–''तुमने किसलिए मेरे पुत्र को एकान्त–उकरडे पर फिकवाया ?'' इस तरह ऊँच–नीच शब्द कहकर चेलनादेवी को सौगध–शपथ दिलाई और कहा–''देवानुप्रिये ! इस बालक की देखरेख करती हुई इसका पालन–पोषण करो और सवर्धन करो।''

SCOLDING BY KING SHRENIK

17. (a) That reliable maid heard Queen Chelana's instructions and accepted them humbly by joining her palms She then lifted the child in the cup of her joined palms She proceeded to the garden and threw the child on a forlorn heap of trash

When the child was thrown on a forlorn heap of trash the garden was filled with a glow

When King Shrenik got this news he rushed to the garden When he saw the child lying on a forlorn heap of trash he turned red with anger Burning with anger and gnashing his teeth, the king lifted the infant in his palms and came to the place where Queen Chelana was sitting. He scolded and reprimanded Queen Chelana in angry and harsh tone After that he


कूणिक जन्म
नवजात शिशु को
ले जाती दासी
शिशु को उकरडी पर
श्रेणिक ने शिशु को
गोद में उठा लिया

चित्र परिचय-३

Illustration No. 3

कूणिक-जन्म

दृश्य–१

पुत्र जन्म होने पर चेलना ने अपनी विश्वस्त दासी को कहा तुम इस नवजात शिशु को कही एकान्त शून्य स्थान पर रख आओ।

दासी दु खी मन से नवजात शिशु को वस्त्र मे लपेटकर नगर के बाहर एकान्त कचरे के स्थान (उकरडी) पर छोडने जाती है।

दृश्य–२

दासी ने शिशु के वस्त्र हटाकर उकरडी पर छोड दिया। शिशु के पूर्व पुण्यो से उसके चारो ओर प्रकाश पुज सा बन गया।

दृश्य–३

श्रेणिक राजा स्वय शिशु को देखने गया। पास ही घूमते मुर्गो ने उसकी एक अगुली को नोच लिया था। जिससे उसमे रक्त बहने लगा, पीडा से शिशु रो रहा है। राजा ने उसे गोद मे उठा लिया।

दृश्य–४

शिशु को महलो मे लाकर रानी को उलाहना देते हुए राजा ने अपनी सौगध दिलाकर कहा यह हमारा पुत्र है, तुम अच्छी प्रकार इसका पालन पोषण करो। *वर्ग १, अ १, सूत्र १६ १७*

BIRTH OF KUNIK

SCENE-1

After giving birth to a son Chelana tells a reliable maid—"Go and place this newborn at some isolated forlorn place "

The maid sadly wraps the infant in a cloth and leaves to place it on a forlorn heap of trash outside the city

SCENE-2

The maid unwrapped the infant and left it on the heap of trash Due to the meritorious *karmas* of the past a glow appeared around the infant and light spread all around

SCENE-3

King Shrenik went to see the child A cock roaming nearby pecked the finger of the infant Blood oozed out and the child cried in pain The king took the child in his arms

SCCENE-4

The king brought the child to the queen in the palace After reprimanding her he made her take an oath and said—"Bring up our son taking due and proper care "

—Sec 1, Ch 1, Sutra 16-17

said—"Why did you manage to throw my son on a forlorn heap of trash ?" After these contemptuous words he made her take an oath and said—"Beloved of gods ! Bring up this child with due and proper care "

१७. (ख) तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करयलपरिग्गहियं सेणियस्स रन्नो विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडपिच्छएण दूमिया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सवइ। तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ। तए णं सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसेइ। तए णं से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ। ताहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सद्देणं आरसइ, ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ तं चेव (जाव) निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ ?

१७. (ख) श्रेणिक राजा के ऊँचे-नीचे कठोर शब्द सुनकर चेलनादेवी (अपने कृत्य पर) लज्जित हुई। प्रताडित और अपराधिनी-सी होकर दोनो हाथ जोडकर श्रेणिक राजा के आदेश को विनयपूर्वक स्वीकार किया और अनुक्रम से उस बालक का लालन-पालन करती हुई उसका सरक्षण करने लगी।

एकान्त उकरडे पर फेके जाने के कारण उस बालक की अँगुली का आगे का भाग मुर्गे ने अपनी चोच से घायल कर दिया था और उससे बार-बार पीव और खून बह रहा था। इस कारण वह बालक तीव्र वेदना से पीडित हुआ चीख-चीखकर रोने लगता था। श्रेणिक राजा उस बालक का रोना सुन और समझकर उसके पास आता और उसे गोदी मे उठा लेता था। फिर उस अँगुली को मुख मे लेता और उस पीव और खून को मुख से चूस लेता (और थूक देता)। ऐसा करने से वह बालक शान्ति का अनुभव कर चुप हो जाता। इस प्रकार जब-जब भी वह बालक वेदना के कारण जोर-जोर से रोने लगता, तब-तब श्रेणिक राजा उस बालक के पास आता, उसे हाथो मे लेता और उसी प्रकार चूसता तथा वेदना शान्त हो जाने से वह चुप हो जाता था।

17. (b) Hearing the harsh and contemptuous words from King Shrenik, Queen Chelana was ashamed of her deed Like a humiliated wrong-doer she joined her palms and accepted King Shrenik's command humbly She commenced bringing up and protecting the child taking due and proper care

When the child was thrown on a forlorn heap of trash a cock had pecked the tip of his finger and injured it Blood and pus were intermittently oozing from the wound This made the child scream and wail with extreme

agony Hearing the wailing of the child and knowing the cause, King Shrenik used to come near the child and lift him. Then he would take the injured finger in his mouth, suck the blood and pus, and spit it out This would give relief to the child and he would stop crying This way whenever the child wailed, King Shrenik came near the child, lifted him, and sucked out the blood and pus This gave relief to the child and he stopped crying

१७. (ग) तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चंदसूरदरिसणियं करेंति (जाव) संपत्ते बारसाहेदिवसे अयमेयारूवं गुणणिप्फन्न नामधेज्जं करेंति–"जहा णं अम्ह इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अंगुलिया कुक्कुडपिच्छएणं दूमिया, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं कूणिए।" तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'कूणिय' त्ति।

तए णं तस्स कूणियस्स आणुपुव्वेणं ठिइवडियं च, जहा मेहस्स (जाव) उप्पिं पासायवरगए विहरइ। अट्ठओ दाओ।

१७. (ग) तत्पश्चात् माता–पिता ने अपने नवजात पुत्र को तीसरे दिन चन्द्र, सूर्य के दर्शन करवाये, यावत् बारहवे दिन इस प्रकार का गुण–निष्पन्न नामकरण किया–"क्योंकि हमारे इस बालक को एकान्त उकरडे पर फेके जाने से अँगुली का ऊपरी भाग मुर्गे की चोच से कट गया था इसलिए हमारे इस बालक का नाम 'कूणिक' (कटी अँगुली वाला) होना चाहिए।" इस प्रकार बालक के माता–पिता ने अपने पुत्र का नाम 'कूणिक' रख दिया।

इसके पश्चात् कुल परम्परा के अनुसार बालक का जन्मोत्सव आदि मनाया गया। (वह बडा होकर) मेघकुमार के समान राजप्रासाद मे आमोद–प्रमोदपूर्वक जीवन बिताने लगा। (आठ राज–कन्याओ के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ और) माता–पिता ने आठ–आठ वस्तुएँ प्रीतिदान (दहेज) मे प्रदान की।

17. (c) Later, on the third day (of the birth ceremonies) they performed the ritual adorational beholding of the sun and the moon and so on up to On the twelfth day they performed the naming ceremony giving the child a virtue based name—"As the tip of the finger of this son of ours was cut by a cock when he was thrown on an isolated heap of trash his name should be Kunik (one with a cut finger)" Thus the new-born was formally named Kunik by his parents

After this the traditional birth related ceremonies were concluded As he grew Kunik enjoyed all comforts of life in the palace He was married to eight princesses and his parents gave him marriage gifts in sets of eight (all details as per the story of Megh Kumar in *Jnata Dharma Katha Sutra*)

कूणिक का कुचक्र

१८. तए णं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अन्नया पुव्वरत्ता. (जाव) समुप्पज्जित्था–'एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं खलु मम

सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सेणियस्स रन्नो अंतराणि य छिड्डाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रन्नो अंतरं वा (जाव) मम्मं वा अलभमाणं अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे नियघरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया, अम्हे सेणियस्स रन्नो वाघाएणं नो संचाएमो सयमेव रज्जसिरिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेय रज्जसिरिं करेमाणाणं पालेमाणाणं (जाव) विहरित्तए।"

१८. किसी समय उस कुमार कूणिक को मध्य रात्रि मे जागते हुए मन मे ऐसा विचार आया कि 'श्रेणिक राजा के विघ्नो-प्रतिबन्धो के कारण मै अपनी इच्छानुसार स्वय राज्य-शासन और राज्य-वैभव का उपभोग नही कर पाता हूँ, अत श्रेणिक राजा को हथकडियो, बेडियो आदि से बॉधकर कारागार मे बन्द कर देना और बहुत बडे राज्याभिषेक से अपना राज्याभिषेक कर लेना मेरे लिए लाभदायक होगा।' उसने इस प्रकार का निश्चय किया और निश्चय के अनुसार श्रेणिक राजा के अन्तर-(अवसर या मौका), छिद्र व दुर्बलताओं और विरह-अकेला पाने की ताक मे रहने लगा।

तत्पश्चात कूणिककुमार श्रेणिक राजा की कोई भी दुर्बलता तथा गुप्त मर्मो को नही जान सका, न ही एकान्त अवसर मिला, तब उसने एक दिन काल आदि दस राजकुमारो (अपने भाइयो) को अपने निजी महल मे आमन्त्रित किया और उनको अपने विचार बताये—"हे देवानुप्रियो ! श्रेणिक राजा के कारण हम स्वय राजश्री का उपभोग और राज्य का पालन करने से वचित रह रहे है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! हमारे लिए यह श्रेयस्कर होगा कि श्रेणिक राजा को हथकडियो, बेडियो से जकडकर (कारागार मे डाल दे) और हम स्वय राज्य, राष्ट्र, बल, सेना, वाहन (हाथी-घोडे), कोष, (खजाना) धान्य-भण्डार और जनपद को ग्यारह भागो मे बाँट करके राज-वैभव का उपभोग करते हुए प्रजा का पालन करे।"

KUNIK'S CONSPIRACY

18. Once while awake around midnight prince Kunik thought—"Due to interference and restrictions from King Shrenik it is impossible for me to enjoy the power and wealth of the kingdom as I desire Therefore, to handcuff, shackle, and imprison King Shrenik and ascend the throne by crowning myself in an elaborate coronation ceremony would be to my benefit" He turned the idea into a resolve and started looking for faults and lapses in the king's security and an opportunity to catch him unawares

As time passed he failed to either find faults and lapses in the king's security or any opportunity to catch him unawares Then one day he invited ten princes (his ten brothers) including Kaal Kumar in his personal

palace and took them into confidence—"Beloved of gods ! Due to interference and restrictions from King Shrenik we are being deprived of enjoying the power and wealth of the kingdom Therefore, beloved of gods ! it would be to our benefit to handcuff, shackle, and imprison King Shrenik After that we should divide the kingdom, state, army, carriers (elephants and horses), treasury, granaries and population in eleven parts and govern the people enjoying the wealth and grandeur of the state "

काल आदि द्वारा स्वीकृति

१९. तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति। तए णं से कूणिए कुमारे अन्नया कयाइ सेणियस्स रन्नो अंतरं जाणइ, जाणित्ता सेणियं रायं नियलबंधणं करेइ, करित्ता अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ। तए णं से कूणिए कुमारे राया जाए महया महया।

१९. उन काल आदि दसो राजपुत्रो ने कूणिक के विचार सुने, सुनकर इस विचार को विनयपूर्वक स्वीकार कर लिया। इसके कुछ दिन बाद कूणिककुमार ने किसी समय श्रेणिक राजा के आतरिक रहस्यो को जाना और जानकर श्रेणिक राजा को बेडी से बाँध दिया (कारागार मे डाल दिया)। महान् महोत्सव के साथ अपना राज्याभिषेक करवाया। तब वह कूणिककुमार स्वय राजा बन गया।

ACCEPTANCE BY THE PRINCES

19. The ten princes including Kaal Kumar listened to the idea of Kunik and humbly accepted the same A few days later, at some opportune moment after knowing the secrets of King Shrenik, prince Kunik put King Shrenik in shackles (and put him in the prison) In an elaborate coronation ceremony he got himself crowned Prince Kunik now became the king

कूणिक का माता के चरण वदनार्थ गमन

२०. (क) तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ ण्हाए जाव कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए सव्वालंकारविभूसिए चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ।

तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहय. (जाव) झियायमाणिं पासइ, पासित्ता चेल्लणाए देवीए पायग्गहणं करेइ करित्ता चेल्लणं देविं एवं वयासी—"किं णं अम्मो ! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा न आणंदे वा, जं अहं सयमेव रज्जसिरिं (जाव) विहरामि ?

तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एवं वयासी—"कहं णं पुत्ता ! ममं तुट्ठी वा ऊसए वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ, जं णं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरु–जणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करित्ता अप्पाणं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेसि ?"

२०. (क) तदनन्तर किसी दिन राजा कूणिक स्नान करके, सुगन्धित द्रव्य, तिलक आदि लगाकर और राजा के योग्य शुद्ध वस्त्र-आभूषण पहनकर चेलनादेवी के पास चरण-वंदना करने के लिए आया।

उस समय कूणिक राजा ने माता चेलनादेवी को उदासीन यावत् चिन्ता, शोक मे डूबी हुई देखा। देखते ही चेलनादेवी के पाँव पकड लिए और चेलनादेवी से इस प्रकार पूछने लगा-''माता ! ऐसी क्या बात है कि आज तुम्हारे चित्त मे सतोष, उत्साह, हर्ष और आनन्द नही है जबकि मै स्वय (आपका पुत्र) राज्य-वैभव का उपभोग करते हुए सुखपूर्वक समय बिता रहा हूँ ?'' (अर्थात् मेरा राजा बनना क्या आपको अच्छा नहीं लग रहा है ?)

उत्तर मे चेलनादेवी ने कूणिक राजा से इस प्रकार कहा-''हे पुत्र ! मेरे मन मे प्रसन्नता, उत्साह, हर्ष अथवा आनन्द कैसे हो सकता है ? जबकि तुमने देवतास्वरूप, गुरुजन जैसे अत्यन्त स्नेहानुरागयुक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को बेडियो से बाँधकर अपना महान् राज्याभिषेक स्वय कराया है।''

HOMAGE AT THE FEET OF THE MOTHER

20. (a) One day after taking his bath, applying perfumes and auspicious mark (*tilak*), and wearing clean garb and ornaments suitable for the royalty, King Kunik came to Queen Chelana to touch her feet and pay homage

On this occasion he found mother Chelana sad, worried and melancholic He at once touched Queen Chelana's feet and asked—"Mother ! What is the matter ? Today you do not appear contented, zealous, joyous or happy, even when I, your son, live happily enjoying the glory of the kingdom ?" (In other words, does my becoming king not please you ?)

Queen Chelana replied—"Son ! How can I be contented, zealous, joyous or happy when you have ceremoniously ascended the throne by imprisoning your god-like and guru-like father, King Shrenik, who has only love and affection for you "

चेलना रानी द्वारा भ्रान्तिनिवारण

२०. (ख) तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी-''घाएउकामे णं, अम्मो ! मम सेणिए राया, एवं मारेउ बंधिउ. निच्छुभिउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया। तं कहं णं अम्मो ! ममं सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ?''

तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं कुमारं एवं वयासी-''एवं खलु, पुत्ता ! तुमंसि ममं गब्भे आभूए समाणे तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं ममं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) अंगपडिचारियाओ, निरवसेसं भाणियव्वं (जाव), जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए महया. (जाव) तुसिणीए संचिट्ठसि। एवं खलु पुत्ता ! सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते।''

तए णं कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चेल्लणं देविं एवं वयासी–"दुट्ठु णं अम्मो ! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधण करंतेणं। तं गच्छामि णं सेणियस्स रन्नो सयमेव नियलाणि छिंदामि" त्ति कट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२०. **(ख)** माता चेलनादेवी की बात सुनकर कूणिक ने इस प्रकार कहा–"माता ! श्रेणिक राजा तो मेरा घात करने के इच्छुक थे। हे अम्मा ! श्रेणिक राजा तो मुझे मार डालना चाहते थे, बाँधना चाहते थे और मुझे राज्य से निर्वासित कर देना चाहते थे। तो फिर हे माता ! आप यह कैसे कहती है कि श्रेणिक राजा का मेरे प्रति अतीव स्नेहानुराग था ?"

यह सुनकर चेलनादेवी ने कूणिककुमार से इस प्रकार कहा–"हे पुत्र ! जब तू मेरे गर्भ मे आया था, तब तीन मास अच्छी तरह पूरे होने पर मुझे इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ था कि–वे माताएँ धन्य है, यावत्। अगपरिचारिकाओ से मैने तुम्हे उकरडे पर फिकवा दिया, आदि। जब भी तुम वेदना से पीडित होते और जोर-जोर से रोते तब श्रेणिक राजा तुम्हारी व्रणग्रस्त अँगुली मुख मे लेते और मवाद चूसते। तब तुम शान्त हो जाते, इत्यादि पूर्व वर्णित सब वृत्तान्त चेलना ने कूणिक को सुनाया। "इसी कारण हे पुत्र ! मैने कहा कि श्रेणिक राजा के मन मे तुम्हारे प्रति अत्यन्त स्नेहानुराग था।"

चेलना रानी के मुख से कूणिक राजा ने इस पूर्व वृत्तान्त को सुना, उस पर विचार किया तो वह चेलनादेवी से इस प्रकार कहने लगा–"माता ! निश्चित ही मैने बहुत बुरा किया जो देवतास्वरूप, गुरुजन जैसे अत्यन्त स्नेहानुराग से अनुरक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को बेडियो से बाँधा। अब मै जाता हूँ और स्वय अपने हाथो से ही श्रेणिक राजा की बेडियो को काटता हूँ।" ऐसा कहकर वह परशु-कुल्हाडी हाथ मे लेकर जहाँ कारागृह था, उस ओर चल दिया।

QUEEN CHELANA REMOVES MISUNDERSTANDING

20. (b) To these words of mother Chelana Kunik responded—"Mother ! King Shrenik was desirous of destroying me O mother ! King Shrenik wanted to kill me or apprehend me and exile me from the state O mother ! How then do you say that he dearly loved me ?"

Hearing these words Queen Chelana said to prince Kunik—"Son ! On completion of three months after I conceived you I had this *dohad*—"Blessed, fortunate, and contented are those mothers who and so on up to with the help of my maids I threw you on a heap of trash and so on up to whenever you wailed, King Shrenik came near you and sucked out the blood and pus from your wounded finger. This gave you relief and you stopped crying" Thus Queen Chelana narrated the aforesaid details to Kunik and added—"That is the reason, why I told you that King Shrenik dearly loved you"

King Kunik heard this story about his past from Queen Chelana and thought about it He then said—"Mother ! Indeed, I have committed a grave mistake by shackling King Shrenik, my god-like and guru-like father who so profoundly loved me Now I shall go and cut his shackles with my own hands " With these words he picked up an axe and left for the prison.

विवेचन–इस सूत्र पर टिप्पणी लिखते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज सूचित करते है–"इससे पता चलता है कि कूणिक इससे पूर्व अपने जन्म–विषयक, सम्पूर्ण घटनाक्रम से अपरिचित था। राजतिलक नही करने के कारण वह क्षुब्ध भी था। कुछ गलतफहमियो के कारण पिता को अपना शत्रु समझने लगा था। दूसरी बात, राज्य–लोभ मे वह फँस चुका था। इस दुष्कर्म मे पूर्वजन्मो के कर्म भी प्रेरक कारण बने है। *(पूर्वजन्म का वृत्तान्त परिशिष्ट मे देखे।)*

Elaboration—Commenting on this aphorism Acharya Shri Atmaram ji M informs—This informs that prior to the said moment Kunik was not aware of all these details about the post birth incidents of his life He was also angry because of the delay in his coronation He considered his father to be his enemy because of some misunderstandings Further, he was caught in the trap of greed for the kingdom Besides, *karmas* accumulated in the past births were also the inspiring factor for this *(see appendix for the story of the past births)*

श्रेणिक का अन्तर्द्वन्द्व

२१. (क) तए णं सेणिए राया कूणियं कुमारं परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–"एस णं कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए (जाव) हिरि–सिरि–परिवज्जिए परसुहत्थगए इह हव्वमागच्छइ। तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु–मारेणं मारिस्सइ" त्ति कट्टु भीए (जाव) तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभये तालपुडगं विस आसगंसि पक्खिवइ।

तए णं से सेणिए राया तालपुडगविसंसि आसगंसि पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेण परिणममाणंसि निप्पाणे निच्चेट्ठे जीवविप्पजढे ओइण्णे।

तए णं से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता सेणियं रायं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं ओइण्णं पासइ, पासित्ता महया पिइसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चम्पगवरपायवे धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए।

२१. **(क)** तब श्रेणिक राजा ने कूणिककुमार को हाथ मे कुल्हाडी लिए अपनी ओर आते हुए देखा। देखते ही उसने मन ही मन विचार किया–'यह अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य मानने वाला, मेरा विनाश चाहने वाला, यावत् लोक–लाज से रहित, निर्लज्ज कूणिककुमार हाथ मे कुल्हाडी लेकर इधर आ रहा है। न मालूम मुझे यह किस कुमौत से मारेगा।' इस विचार से भयभीत, त्रस्त, आशकाग्रस्त, उद्विग्न और भयाक्रान्त होकर तालपुट विष को अपने मुख मे डाल लिया।

तालपुट विष को मुख मे डालते ही कुछ क्षणो के बाद उस विष के शरीर मे घुल जाने पर श्रेणिक राजा निष्प्राण, निश्चेष्ट एव जीवनरहित हो गया।

इसके बाद वह कूणिककुमार जहाँ कारावास था वहाँ पहुँचा। पहुँचकर उसने श्रेणिक राजा को निष्प्राण, निश्चेष्ट, निर्जीव देखा। तब वह असह्य, भयकर पितृ–शोक से बिलबिलाता हुआ शोक सतप्त हुआ, कुल्हाडी से कटे चम्पक वृक्ष की तरह धडाम–से पछाड खाकर भूमि पर गिर पडा।

SHRENIK'S INNER CONFLICT

21. (a) King Shrenik saw prince Kunik approaching with an axe in his hand The moment he saw this he thought—Prince Kunik, who considers misdeeds as his duty wishes to destroy me He is shameless and devoid of any considerations of honour He is coming this way with an axe in his hand I do not know what contemptible death he will inflict on me " Filled with fear, awe, apprehension, nervousness and horror, he put *taalput-vish* (a deadly poison) in his mouth

Within a few moments of swallowing it the poison spread throughout the body of King Shrenik and it was rendered breathless, motionless, and lifeless

Prince Kunik reached the prison after this and found King Shrenik breathless, motionless, and lifeless Whining with bereavement of losing his father and engulfed in grief, he fall on the ground like an axed *champak* tree

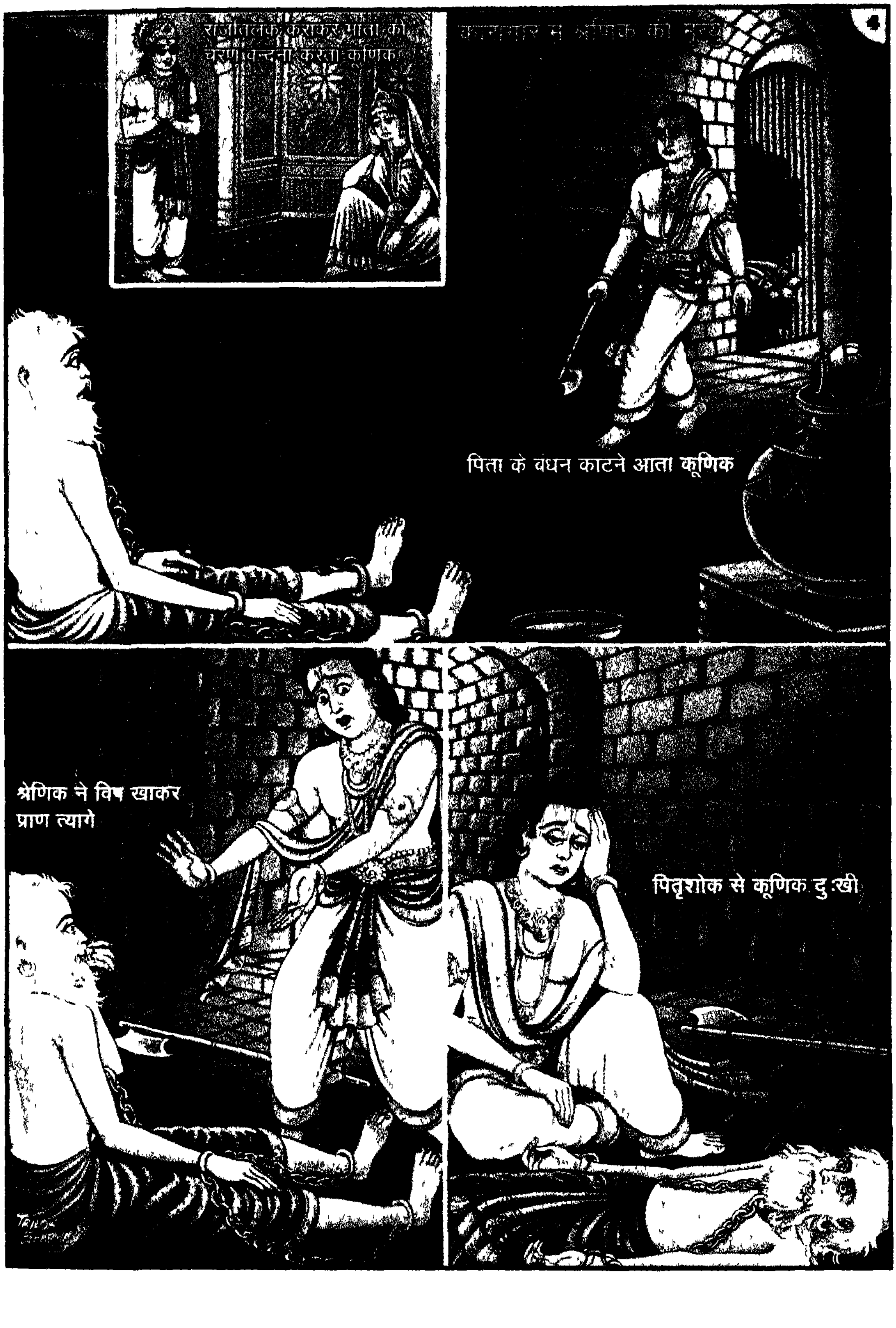
कूणिक का पश्चाताप

२१. (ख) तए णं से कूणिए कुमारे मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी–"अहो णं मए अधन्नेणं अपुण्णेणं अकयपुण्णेणं दुट्टुकयं सेणियं रायं पियं देवयं अच्चतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं। मम मूलागं चेव णं सेणिए राया कालगए" त्ति कट्टु।

राईसरतलवर जाव माडम्बिय–कोडुम्बिय–इब्भ–सेट्ठि–सेणावइ–सत्थवाह–मंति–गणग–दोवारिय–अमच्च–चेड पीढमद्द–नगर–निगम–दूय–संधिवालसद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं सेणियस्स रन्नो नीहरणं करेइ।

तए णं से कूणिए कुमारे एएणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अंतेउरपरियाल–संपरिवुडे सभण्डमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ तत्थ वि णं विउलभोग–समिइसमन्नागए कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था।

तए णं से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता रज्जं च जाव रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च अंतेउरं च जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचइ, विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ।



राजतिलक कराकर माता की चरण वन्दना करता कूणिक
पिता के बंधन काटने आता कूणिक
श्रेणिक ने विष खाकर प्राण त्यागे
पितृशोक से कूणिक दुःखी

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

कारागार में श्रेणिक की मृत्यु

दृश्य–१

चेलना रानी के मुख से जब कूणिक ने सुना कि, उसके पिता राजा श्रेणिक तो उससे बहुत अधिक प्यार करते थे, तो कूणिक को अपने कुकृत्य पर बहुत अधिक पश्चात्ताप व आत्म–ग्लानि हुई। "अहो! मैने देवता स्वरूप अपने पूज्य पिता को बेडियो से बॉधा, यह बडा दुष्कृत्य किया। अब मै जाता हूँ और अपने हाथ से ही उनकी बेडियाँ काटता हूँ।' यह निश्चय कर हाथ मे कुल्हाडी लेकर वह कारागार की तरफ चल पड़ता है।

दृश्य–२

कुल्हाडी हाथ मे लिए कूणिक को आते देखकर श्रेणिक सोचता है "यह मेरा बुरा चाहने वाला निर्लज्ज तालपुट कूणिक पता नही किस कुमौत से मुझे मार डाले।" इस विचार से भयाक्रान्त हुआ श्रेणिक हीरे की अँगूठी चूसता है। उसके विष से कुछ ही समय मे मृत्यु हो जाती है।

दृश्य–३

कूणिक कारावास मे पहुँचा, पिता को मृत देखकर पितृ शोक से विह्वल हो उठता है।

वर्ग १ अ १ सूत्र २०-२१

SHRENIK DIES IN PRISON

SCENE-1

When King Kunik heard from Queen Chelana that his father, King Shrenik, loved him very much, he felt guilty and repentant on his misdeed—"Oh ! Indeed, I have committed a grave mistake by shackling my god-like father Now I go and cut his shackles with my own hands " With these words he picked up an axe and left for the prison

SCENE-2

When King Shrenik saw prince Kunik approaching with an axe in his hand, he thought—"Prince Kunik, who wishes ill of me and is shameless, comes this way I do not know what contemptible death he will deal me " Filled with awe, Shrenik licks his diamond ring He dies within moments of swallowing the poison

SCENE-3

Prince Kunik reached the prison and found King Shrenik dead He was overwhelmed with the grief of loosing his father

—Sec 1, Ch 1, Sutra 20-21

२१. (ख) कुछ ही समय पश्चात् कूणिककुमार थोडा स्वस्थ-सा हुआ, तब रोते हुए, जोर-जोर से क्रन्दन, शोक, विलाप करते हुए इस प्रकार कहने लगा-"अहो ! मैं नीच हूँ, पुण्यहीन, पापी हूँ, अभागा हूँ-मैने बहुत ही दुष्ट कर्म किया, जो देवता स्वरूप अत्यन्त स्नेहानुरागयुक्त अपने पिता श्रेणिक राजा को कारागार मे डाला। मेरे कारण ही मेरे पिता श्रेणिक राजा काल कवलित हुए हैं। मै ही इनकी मृत्यु का मूल कारण हूँ।"

तदनन्तर (राजसभा मे रहने वाले) ऐश्वर्यशाली पुरुषो, तलवर, राज्यमान्य पुरुषो, माडबिक, जागीरदारो, इभ्यों-श्रीमतो, समाज मे प्रमुख माने जाने वाले श्रेष्ठी, सेनापतियो, मंत्री, ज्योतिषी, द्वारपाल, अमात्य, सेवक, पीठमर्दक-अगरक्षक, नागरिक, व्यवसायी, दूत, राष्ट्र के सीमान्त प्रदेशो के रक्षक, सधिपाल आदि विशिष्ट जनो से घिरे हुए रुदन, आक्रन्दन, शोक और विलाप करते हुए महान् ऋद्धि, सत्कार-सन्मान एव महोत्सव के साथ श्रेणिक राजा की नीहरण क्रिया-अग्नि-सस्कार किया।

इसके पश्चात् वह कूणिककुमार इस गहन मानसिक दु ख से अतीव दु खी होकर, (इस दु:ख को विस्मृत करने के लिए) किसी समय अपने अन्त पुर परिवार को साथ लेकर धन-सम्पत्ति आदि गार्हस्थिक उपकरणो के साथ राजगृह से बाहर निकला और जहाँ चम्पानगरी थी, वहाँ आ गया। (अर्थात् उसने राजगृह नगर का परित्याग कर चम्पानगरी को अपनी राजधानी बना लिया) वहाँ अपने प्राप्त भोगो को भोगते हुए कुछ समय के बाद शोक-सताप से रहित हो गया।

एकदा उस कूणिक राजा ने किसी दिन काल आदि दस राजकुमार बन्धुओ को बुलाया और राज्य, राष्ट्र, सेना, वाहन-रथ, कोश, धन-सम्पत्ति, धान्य-भण्डार, अत पुर और जनपद-देश के ग्यारह भाग किये। अपना-अपना भाग ले करके वे सभी बधु स्वय अपनी-अपनी राज्य-ऋद्धि का भोग करते हुए, प्रजा का पालन करते हुए रहने लगे।

KUNIK'S REPENTANCE

21. (b) Some time later, when prince Kunik regained some of his composure, he uttered, weeping and wailing in grief—"Alas ! I am a despicable, worthless, and unfortunate sinner I have committed an extremely evil deed by putting my god-like and loving father, King Shrenik in prison My father, King Shrenik, died because of me I am the singular cause of his death "

After that, weeping, wailing, mourning and moaning surrounded by luminaries including numerous chieftains, administrators, princes, knights of honour, landlords, village heads, family heads, businessmen, merchants, commanders, caravan chiefs, ambassadors, and diplomats he performed the last rites and cremation of King Shrenik ceremoniously and elaborately with due honour and respect

Deeply effected by this grief prince Kunik, loaded with funds and household equipment, left Rajagriha with his family and retinue and came

to Champa city (in order to forget his sorrow) (This indicates that he shifted his capital from Rajagriha to Champa) Under the influence of mundane enjoyments and comforts of life, his grief and sorrow were consigned to oblivion in due course

One day King Kunik invited his ten brothers including Kaal Kumar and divided the kingdom, state, army, carriers (elephants and horses), treasury, granaries, retinue and population into eleven parts Taking charge of their individual shares all the brothers lived happily governing their respective people and enjoying the wealth and grandeur of their respective states "

वेहल्लकुमार की गज–क्रीड़ा

२२. तत्थ णं चम्पाए नगरीए सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कुणियस्स रन्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले नामं कुमारे होत्था, सोमाले (जाव) सुरूवे।

तए ण तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएण रन्ना जीवतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने।

तए ण से वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अभिक्खण अभिक्खण गंग महाणइ मज्जणयं ओयरइ। तए णं सेयणए गंधहत्थी देवीओ सोण्डाए गिण्हइ, गिण्हित्ता अप्पेगइयाओ पुट्ठे ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ एवं कुम्भे ठवेइ, सीसे ठवेइ, दंतमुसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोण्डागयाओ अंदोलावेइ, अप्पेगइयाओ दंततरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेण ण्हाणेइ, अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेइ।

तए ण चम्पाए नयरीए सिघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–महापह–पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव एवं भासेइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ–'एवं खलु देवाणुप्पिया, वेहल्ले कुमारे सेयणएण गधहत्थिणा अंतेउर तं चेव जाव, अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफल पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया।'

२२ उस चम्पानगरी मे श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अगजात कूणिक राजा का छोटा भाई वेहल्ल नामक राजकुमार था। वह सुकुमार यावत् रूप-सौन्दर्य-सम्पन्न था।

श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल मे पहले ही वेहल्लकुमार को सेचनक नामक गधहस्ती और अठारह लडियो का हार दिया था।

वह वेहल्लकुमार अन्त पुर परिवार को साथ लेकर सेचनक गधहस्ती पर आरूढ होकर चम्पानगरी के बीचोबीच राजमार्ग पर निकलता और बारम्बार गगा महानदी मे स्नान करने के लिए उतरता–प्रविष्ट होता। उस समय वह सेचनक गधहस्ती रानियो को सूँड से पकडता, पकडकर किसी को पीठ पर बिठा लेता, किसी को कधे पर, किसी को कुम्भ-स्थल पर, किसी को मस्तक पर बैठाता, किसी को दत–मूसलो पर

बिठा लेता, किसी को सूँड मे पकडकर झुलाता, किसी को दाँतो के बीच ले लेता, किसी को फुहारो से नहलाता और किसी-किसी को अनेक प्रकार की क्रीडाओ से खेलाता रहता था।

(गधहस्ती के साथ वेहल्लकुमार की क्रीडाओ को देखकर)–चम्पानगरी के तिराहो, चौराहो और राजमार्गों पर खडे बहुत से नगर-निवासी आपस मे एक–दूसरे से इस प्रकार कहते, बोलते, बतियाते और आलोचना करते कि "देवानुप्रियो ! अन्त पुर परिवार को साथ लेकर यह वेहल्लकुमार सेचनक गधहस्ती के द्वारा अनेक प्रकार की क्रीडाएँ करता है। वास्तव मे वेहल्लकुमार ही राजलक्ष्मी का सुख व आनन्द अनुभव कर रहा है। कूणिक तो राजा होते हुए भी राजलक्ष्मी का पूर्ण रूप मे उपभोग नही कर पा रहा है।

ELEPHANT PLAY OF PRINCE VEHALLA

22. In Champa city lived prince Vehalla, the younger brother of King Kunik and son of King Shrenik from Queen Chelana He was charming and handsome

When King Shrenik was alive he had given the majestic elephant Sechanak and an eighteen string necklace to prince Vehalla

That prince Vehalla and his family used to ride Sechanak elephant and passing through the roads of Champa go to the banks of river Ganges As a routine he would enter the river for taking his bath During that period (of enjoying the bath) Sechanak elephant would lift the queens with its trunk, place one on its back, one on its shoulders, another on its neck and still another on its head It would also put one of them on its tusks and swing one between tusks with its trunk It would also shower water on some Thus it played with them in many ways

Many citizens standing on the trisections, crossings and roads of Champa city (seeing the playful activity of prince Vehalla with Sechanak elephant) said, spoke, chatted, and criticized—"Beloved of gods ! This prince Vehalla, along with his family, enjoys various playful activities with Sechanak elephant In fact it is prince Vehalla who is truly enjoying the pleasures and joys of the royal wealth. In spite of being the sovereign, King Kunik appears to be unable to enjoy the royal wealth to its fullest

विवेचन–'वेहल्ल' के नाम के सम्बन्ध मे ग्रन्थो मे विविधता मिलती है। प्रस्तुत निरयावलिका मे इस युद्ध के घटना–प्रसग को केवल वेहल्लकुमार के साथ ही जोडा है। निरयावलिका टीका, भगवती टीका, भरतेश्वर–बाहुबली वृत्ति आदि ग्रन्थो मे इसी घटना–प्रसग के लिए हल्ल और विहल्ल–इस प्रकार दो नाम प्रयुक्त हुए है।

अनुत्तरोपपातिकसूत्र मे विहल्ल और वेहायस को चेलणा का पुत्र बताया है तथा हल्ल को धारिणी का। निरयावलिका टीका और भगवती टीका के अनुसार हल्ल और विहल्ल दोनो ही चेलणा के पुत्र है। नामो का अन्तर क्यो है, वस्तुस्थिति अन्वेषण का विषय है।

Elaboration—There is an inconsistency regarding the name Vehalla in the available scriptures In this *Niryavalika Sutra* the story of this battle is connected exclusively with prince Vehalla In *Niryavalika Tika, Bhagavati Tika, Bharateshvar-Bahubali Vritti,* and many other books two names have been mentioned with this incident—Halla and Vihalla

In *Anuttaraupapatik Sutra* Vihalla and Vehayas are shown as sons of Chelana and Dharini respectively According to *Niryavalika Tika* and *Bhagavati Tika* both Halla and Vihalla were sons of Chelana What is the reason for these discrepancies is a matter of research

पद्मावती की ईर्ष्या

२३. तए णं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे (जाव) समुप्पज्जित्था-"एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा (जाव) अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया। तं किं णं अम्हं रज्जेणं वा (जाव) जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि। तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. (जाव) परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावित्ता एवं वयासी-"एवं खलु सामी, वेहल्ले कुमारे सेयणएण गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ। तं किं णं अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि ?

तए णं से कूणिए राया पउमावईए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं सा पउमावई देवी अभिक्खणं अभिक्खणं कूणियं रायं एयमट्ठं विन्नवेइ। तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नया कयाइ कुमारं सद्दावेइ, सद्दावित्ता सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

२३. तब (कूणिक राजा की रानी) पद्मावती देवी ने प्रजाजनो के मुख से इस प्रकार की बाते सुनी, सुनकर उसके मन मे विचार उत्पन्न हुआ-'अवश्य ही वेहल्लकुमार सेचनक गधहस्ती के द्वारा अनेक प्रकार की क्रीडाएँ करता रहता है। अतएव यह वेहल्लकुमार ही सचमुच मे राज्य-ऐश्वर्य-प्राप्ति का फल भोग रहा है, कूणिक राजा नही। ऐसी दशा मे हमारा यह राज्य-वैभव यावत् विशाल जनपद किस काम का यदि हमारे पास सेचनक गधहस्ती ही नही है? इसलिए मुझे कूणिक राजा से इस विषय मे निवेदन करना चाहिए।' पद्मावती रानी ने इस प्रकार का विचार किया और फिर जहाँ कूणिक राजा था, वहाँ आई और आकर दोनो हाथ जोड, आवर्त्त करते हुए मस्तक पर अजलि करके जय-विजय शब्दो से उसे बधाया और निवेदन किया-"स्वामिन्! आपका छोटा भाई वेहल्लकुमार सेचनक गधहस्ती से इस प्रकार भाँति-भाँति की क्रीडाएँ करता हुआ जीवन का आनन्द लूट रहा है, तो हमारा राज्य-वैभव, विशाल जनपद किस काम का? इससे क्या लाभ है, यदि हमारे पास सेचनक गधहस्ती नही है?"


वेहल्लकुमार की जल क्रीड़ा
सेचनक हाथी पर बैठकर जल क्रीड़ा करते वेहल्ल का अन्तःपुर

चित्र परिचय-५

Illustration No. 5

वेहल्लकुमार की जल क्रीड़ा

श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलना रानी का आत्मज, कूणिक राजा का छोटा भाई वेहल्लकुमार कभी कभी अपने सेचनक गधहस्ती पर आरूढ होकर चम्पानगरी से बाहर गगा महानदी पर जाकर अपनी रानियो के सग जल क्रीडा करता था।

सेचनक गधहस्ती रानियो को सूँड से पकडकर झुलाता है। किसी को पीठ पर बिठलाता है, किसी को मस्तक पर, किसी को दाँतो के बीच मे लेकर जल फुहारो से नहलाता है, किसी को पूँछ पर बिठा लेता है। इस प्रकार वेहल्लकुमार विविध प्रकार की जल क्रीडाएँ करता है।

नगर के लोक किनारे खडे हुए इस जल क्रीडा को देखकर चर्चा करते है कि वास्तव मे राज लक्ष्मी का आनन्द तो वेहल्लकुमार ही अनुभव करता है। महलो के गवाक्ष से झाँकती रानी पद्मावती प्रजा के मुख से ये बातें सुनकर ईर्ष्या से जलकर विचार करने लगती है।

वर्ग १ अ १ सूत्र २३

VEHALLLA KUMAR'S ENTERTAINMENT IN RIVER

Once in a while Prince Vehalla, King Kunik's younger brother and King Shrenik's son from Queen Chelana, used to ride Sechanak elephant and go out of Champa city to the banks of river Ganges He and his queens enjoyed playing in the river

Sechanak elephant would swing one of the queens on its trunk It would place one on its back and another on its head It would also spray water on the third one placing her between its tusks Thus prince Vehalla enjoyed playing in the river water

Some citizens standing on the banks and seeing these playful activities, commented that prince Vehalla truly experiences the joys of royal wealth Standing at the window of her palace, Queen Padmavati listens to these comments and broods in envy

—Sec I, Ch 1, Sutra 23

कूणिक राजा ने पद्मावती रानी के इस कथन को महत्त्व नही दिया, उसे सुना-अनसुना कर दिया, न ही उस पर ध्यान दिया, मौन ही रहा। तब वह पद्मावती देवी बार-बार समय-बेसमय इसी बात को दोहराती रही, राजा को कहती रही। पद्मावती द्वारा बार-बार इसी बात को दुहराने व जोर देने पर कूणिक राजा ने एक दिन वेहल्लकुमार को बुलाया और सेचनक गंधहस्ती तथा अठारह लड़वाला हार वापस माँग लिया।

PADMAVATI'S JEALOUSY

23. When Queen Padmavati heard these rumors prevailing among the citizens, she thought—"It is certain that prince Vehalla entertains himself by playful activities with Sechanak elephant Thus it is, indeed, true that it is prince Vehalla and not King Kunik who is truly enjoying the pleasures and joys of the royal wealth Therefore, if we do not own that Sechanak elephant all this royal grandeur and large state we have is worthless So I should convey this to King Kunik." With these thoughts Queen Padmavati came to King Kunik and greeted him by touching her forehead with joined palms and hails of victory She then said—"My lord ! Your younger brother, prince Vehalla, enjoys life indulging in a variety of playful activities with Sechanak elephant Therefore, of what use and worth is all this royal grandeur and large state if we do not own that Sechanak elephant ?"

King Kunik remained silent and gave no heed, importance or attention to what Queen Padmavati said He acted as if he did not listen to it Then Queen Padmavati started nagging the king repeating her statement timely and untimely On being pressurized and nagged by Queen Padmavati, King Kunik one day called prince Vehalla and asked him to return Sechanak elephant and the eighteen string necklace

वेहल्लकुमार का मनोमथन

२४. तए णं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासी-"एवं खलु सामी, सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिन्ने। तं जइ णं सामी, तुब्भे ममं रज्जस्स य (जाव) जणवयस्स अद्धं दलयह, तो णं अहं तुब्भं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि।"

तए णं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायइ।

तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रन्ना अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायमाणस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था-"एवं खलु अक्खिविउकामे णं, गिण्हिउकामे णं, उद्दालेउकामे णं ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं ! तं (जाव) ममं कूणिए राया (नो जाणइ) ताव (सेयं मे) सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च

हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभण्डमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।"

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कूणियस्स रन्नो अंतराणि य छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से वेहल्ले कुमार अन्नया कयाइ कूणियस्स रन्नो अंतरं जाणइ, सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे सभण्डमत्तोवगरणमायाए चम्पाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी, तेणेव उवागच्छइ, वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

२४. तब वेहल्लकुमार ने कूणिक राजा को इस प्रकार कहा–"स्वामिन् ! श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल मे ही मुझे यह सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो का हार दिया था। यदि आप इन्हे लेना चाहते है तो अपने राज्य और जनपद का आधा भाग मुझे दे दे तब मै सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार आपको दे दूँगा। (ग्रन्थो के अनुसार इन दोनो वस्तुओ का मूल्य मगध के पूरे राज्य के बराबर माना जाता था--*आवश्यकचूर्णि उत्तरार्ध, पत्र १६७*)

कूणिक राजा ने वेहल्लकुमार की इस बात को स्वीकार नही किया। उस पर ध्यान ही नही दिया और बार-बार सेचनक गधहस्ती एव अठारह लडो वाले हार को देने का आग्रह करता रहा।

कूणिक राजा द्वारा बारबार सेचनक गधहस्ती और अठारह लडियो वाले हार को माँगने पर वेहल्लकुमार के मन मे विचार आया कि 'वह उनसे ये दोनों वस्तुएँ छीनना चाहता है, जबर्दस्ती लेना चाहता है, इसलिए जब तक कूणिक राजा मेरे सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाले हार को झपट न ले, छीन न ले, उससे पहले ही मै सेचनक गधहस्ती और हार को लेकर अन्त पुर परिवार और अपने भाण्डोपकरण–गृहस्थी की साधन–सामग्री के साथ चम्पानगरी से निकलकर–(भागकर) वैशाली नगरी मे आर्यक (नाना) चेटक का आश्रय लेकर रहूँ, उनके पास चला जाऊँ।

वेहल्लकुमार ने ऐसा विचार किया। विचार करके कूणिक राजा की असावधानी, अवसर और अन्तरग गुप्त रहस्यो की जानकारी की प्रतीक्षा करते हुए समय बिताने लगा।

किसी दिन वेहल्लकुमार को कूणिक राजा की अनुपस्थिति का पता चला तब मौका पाकर सेचनक गधहस्ती, अठारह लडो वाला हार तथा अन्त पुर परिवार को साथ लिए गृहस्थी के समस्त साधनो को लेकर चम्पानगरी से चुपचाप निकल गया। निकलकर वैशाली नगरी मे अपने नाना चेटक के पास आया और उनका आश्रय लेकर वैशाली नगरी मे निवास करने लगा।

PRINCE VEHALLA'S DELIBERATION

24. Prince Vehalla responded—"My lord ! King Shrenik had given me Sechanak elephant and the eighteen string necklace during his life time If you want to take these please give me half of your kingdom and state Then only I will give you Sechanak elephant and the eighteen string necklace

(Accordıng to the scrıptures the worth of these two thıngs was estımated to be equal to the entıre state of Magadh—*Avashyak Churnı, second part, leaf 167*)

Kıng Kunık dıd not accept prınce Vehalla's demand Attachıng no ımportance to ıt he tıme and agaın put forth hıs demand for Sechanak elephant and the eıghteen strıng necklace

On thıs repeated demand for Sechanak elephant and the eıghteen strıng necklace, prınce Vehalla thought—"The kıng wants to forcıbly dıspossess me of these two thıngs Therefore, before Kıng Kunık confiscates Sechanak elephant and the eıghteen strıng necklace I should leave Champa cıty wıth my famıly, household thıngs, Sechanak elephant and the eıghteen strıng necklace and elope to Vaıshalı cıty to take refuge wıth grandfather Chetak"

Wıth these thoughts prınce Vehalla waıted lookıng for ınformatıon about Kıng Kunık's ınner secrets, lapses ın securıty and an opportunıty to elope

One day when prınce Vıhalla knew of Kıng Kunık's absence, he took the opportunıty and stealthıly left Champa cıty wıth hıs famıly, household thıngs, Sechanak elephant and the eıghteen strıng necklace He came to Vaıshalı cıty, took refuge wıth hıs maternal grandfather Chetak and settled there

कूणिक राजा की प्रतिक्रिया

२५. (क) तए णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवुडे (जाव) अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तं सेयं खलु सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए संपेहेइ, संपेहित्ता दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—''गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं ममं अज्जं चेडगं रायं करयल. वद्धावेत्ता एवं वयाही—एवं खलु सामी, कूणिए राया विन्नवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय हव्वमागए। तए णं तुब्भे सामी, कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह।''

२५. (क) कूणिक राजा को जब यह (वेहल्लकुमार के जाने का) समाचार ज्ञात हुआ कि मुझे बिना बताये ही वेहल्लकुमार सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो का हार तथा अन्त पुर परिवार सहित गृहस्थी के उपकरण-साधनो को लेकर अपने नाना आर्यक चेटक राजा के आश्रय मे निवास कर रहा है। तब उसने सोचा-'सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाले हार को लौटाने के लिए दूत भेजना चाहिए।' ऐसा विचार करके दूत को बुलाया। बुलाकर इस प्रकार आज्ञा दी-''देवानुप्रिय ! तुम वैशाली नगरी जाओ। वहाँ तुम

आर्यक चेटक राजा को दोनो हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से बधाकर इस प्रकार निवेदन करना- स्वामिन् ! कूणिक राजा विनती करते है कि वेहल्लकुमार कूणिक राजा को सूचना दिये बिना ही सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाले हार को लेकर यहॉ आ गये है। इसलिए स्वामिन् ! आप कूणिक राजा पर अनुग्रह करते हुए सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार राजा कूणिक को वापस लौटा दीजिए। साथ ही वेहल्लकुमार को भी भेज दीजिए।"

KING KUNIK'S REACTION

25. (a) When King Kunik got the news that prince Vehalla with his family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace was living with his maternal grandfather Chetak, he thought—"I should send an emissary to bring back Sechanak elephant and the eighteen string necklace." With this idea he called an emissary and instructed—"Beloved of gods ! Go to Vaishali city and after greeting King Chetak with hails of victory convey this message—'My lord ! King Kunik humbly submits that prince Vehalla has gone there with Sechanak elephant and the eighteen string necklace without informing King Kunik. Therefore, my lord ! please oblige King Kunik by returning Sechanak elephant and the eighteen string necklace. Also, please send prince Vehalla back.'"

२५. (ख) तए णं से दूए कूणिएणं करयल. (जाव) पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा चित्तो (जाव) पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अन्तरावासेहिं वसमाणे वसमाणे जेणेव चम्पानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चम्पाए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव चेडगस्स रन्नो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ।

तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव अब्भंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडगं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी-"एवं खलु, सामी, कूणिए राया विन्नवेइ-एस णं वेहल्ले कुमारे, तहेव भाणियव्वं (जाव) वेहल्लं कुमारं पेसेह।"

२५. **(ख)** दूत ने कूणिक राजा की इस आज्ञा को दोनो हाथ जोडकर स्वीकार किया, फिर जहाँ अपना आवास था, वहाँ आया। आकर चित्त सारथी के समान (चित्त सारथी ने जिस प्रकार पूरी तैयारी करके श्रावस्ती के लिए प्रस्थान किया, देखे रायपसेणिय सूत्र, पृ २४६-२४७) प्रात कलेवा करता हुआ, छोटे अन्तरावास-पडाव-विश्राम करते हुए जहाँ वैशाली नगरी थी वहाँ पहुँचा। वैशाली नगरी मे जहाँ चेटक राजा का आवास-गृह था और जहाँ उसकी बाह्य उपस्थानशाला (सभाभवन) थी, वहाँ आया। घोडो को रोका, रथ को खडा किया और रथ से नीचे उतरा।

साथ मे लाया हुआ बहुमूल्य एव महान् पुरुषो के योग्य उपहार लेकर, जहाँ आभ्यन्तर सभाभवन मे चेटक राजा बैठा था, वहाँ पहुँचा। पहुँचकर दोनो हाथ जोडकर 'जय-विजय' शब्दों से उसे बधाया और बधाकर निवेदन किया-''स्वामिन् ! कूणिक राजा आपसे प्रार्थना करते है-वेहल्लकुमार हाथी और हार लेकर कूणिक राजा को बिना सूचित किये चुपचाप चले आये है इत्यादि सभी बाते कही। आप हार, हाथी और वेहल्लकुमार को वापस लौटा दीजिए।''

25. (b) The emissary accepted King Kunik's order joining his palms and returned to his residence From there, like Chitta charioteer (this refers to the elaborate preparations made by Chitta charioteer before leaving for Shravasti as mentioned in *Rayapaseniya Sutra*, pp 246-247), he left after breakfast and taking short breaks on the way for rest, he arrived in Vaishali. In Vaishali he came to King Chetak's palace, stopped his chariot at the outer assembly and alighted

He took the costly gifts suitable for great men, he had brought along and entered the outer assembly where King Chetak was sitting He joined his palms and greeted the king with hails of victory After this he submitted—'My lord ! King Kunik humbly submits that prince Vehalla has come here with Sechanak elephant and the eighteen string necklace without informing King Kunik and so on up to please send prince Vehalla back "

चेटक राजा का उत्तर

२६. (क) तए णं से चेडए राया तं दूयं वयासी-''जह चेव णं देवाणुप्पिया, कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्ले वि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए, मम नत्तुए।

सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वविइण्णे। तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि।''

तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहिं वसहीहिं (जाव) वद्धावेत्ता एवं वयासी-''एवं खलु, सामी; चेडए राया आणवेइ-जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते, चेल्लणाए देवीए अत्तए, मम नत्तुए, तं चेव भाणियव्वं जाव, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि। तं न देइ णं सामी, चेडए राया सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं च, वेहल्लं च नो पेसेइ।''

२६. (क) दूत का निवेदन सुनकर चेटक राजा ने इस प्रकार कहा-"देवानुप्रिय ! जिस प्रकार कूणिक राजा श्रेणिक राजा का पुत्र और चेलनादेवी का अगजात तथा मेरा दौहित्र है, उसी प्रकार वेहल्लकुमार भी श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अगजात और मेरा दौहित्र है। (मेरे लिए दोनो ही समान है।)

श्रेणिक राजा ने अपने जीवनकाल मे स्वय ही वेहल्लकुमार को सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार दिया था। इसलिए यदि कूणिक राजा इन दोनो वस्तुओ को वापस लेना चाहते है तो वेहल्लकुमार को अपने राज्य और जनपद का आधा भाग प्रदान करे तो मै सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार कूणिक राजा को लौटा दूँगा तथा वेहल्लकुमार को भी वापस भेज दूँगा।

इस प्रकार स्पष्ट उत्तर देकर चेटक राजा ने दूत का सत्कार-सम्मान करके विदा कर दिया।

चेटक राजा द्वारा विदा किया वह दूत जहाँ उसका चार घण्टो वाला अश्व-रथ था, वहाँ आया। आकर उस चार घण्टो वाले अश्व -रथ पर आरूढ हुआ। वैशाली नगरी के बीच से निकलकर मार्ग मे सुखकारी स्थानो पर विश्राम करता हुआ प्रात काल का कलेवा तथा यथासमय भोजन आदि करता हुआ चम्पानगरी मे पहुँचा। पहुँचकर (कूणिक राजा के समक्ष उपस्थित हुआ और उसे) जय-विजय शब्दो से बधाकर निवेदन किया-"स्वामिन् ! चेटक राजा ने कहा है-जैसे श्रेणिक राजा का पुत्र और चेलनादेवी का अगज कूणिक राजा मेरा दोहिता है, वैसे ही वेहल्लकुमार भी है, इत्यादि। (चेटक राजा का पूर्वोक्त सब कथन कह दिया) इसलिए हे स्वामिन् ! चेटक राजा सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार लौटाने को तैयार नही है और न ही वेहल्लकुमार को भेजेगे।"

KING CHETAK'S REPLY

26. (a) On hearing the emissary's submission King Chetak said—"Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla (In other words, both are same for me)

"King Shrenik had given Sechanak elephant and the eighteen string necklace to prince Vehalla during his life time Therefore if King Kunik wants to take these two things he should give prince Vehalla half of his kingdom and state Once he does so, I will return Sechanak elephant and the eighteen string necklace to King Kunik and also send back prince Vehalla

With this candid reply King Chetak dismissed the emissary with formal greetings and honour

After being dismissed by King Chetak the emissary came where his four-bell chariot was parked He boarded the chariot and passing through Vaishali city, resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time arrived at Champa city There (coming to King Kunik) he

greeted the king with hails of victory and said—"My lord ! King Chetak has said—'As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla (and he repeated King Chetak's aforesaid message)' Therefore, my lord ! King Chetak is not prepared to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or send back prince Vehalla "

२६. (ख) तए णं से कूणिए राया दोच्चं पि दूयं सद्दावेत्ता एवं वयासी-''गच्छह णं तुमं, देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडगं रायं जाव एवं वयासी-एवं खलु, सामी, कूणिए राया विन्नवेइ-''जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जंति, सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि। सेणियस्स रन्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पन्ना, तं जहा-सेयणए गंधहत्थी, अट्ठारसवंके हारे। तं णं तुब्भे सामी, रायकुलपरंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं पेसेह।''

तए ण से दूए कूणियस्स रन्नो, तहेव जाव वद्धावेत्ता एव वयासी-''एवं खलु सामी, कूणिए राया विन्नवेइ-जाणि काणि, वेहल्लं कुमारं पेसेह।''

तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी-''जइ चेव णं देवाणुप्पिया, कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए, जहा पढमं (जाव) वेहल्लं च कुमारं पेसेमि।'' तं दूयं सक्कारेइ संमाणेइ पडिविसज्जेइ।

तए णं से दूए (जाव) कूणियस्स रन्नो वद्धावेत्ता एवं जाव-''चेडए राया आणवेइ-जह चेव णं, देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवी अत्तए, (जाव) वेहल्लं कुमारं पेसेमि। तं न देइ ण, सामी, चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं नो पेसेइ।''

२६ (ख) चेटक राजा का उत्तर पाकर कूणिक राजा ने दूसरी बार पुन दूत को बुलाकर कहा- ''देवानुप्रिय ! तुम पुन वैशाली नगरी जाओ। वहाँ तुम मेरे नाना चेटक राजा से इस प्रकार निवेदन करो- स्वामिन् ! कूणिक राजा यह प्रार्थना करता है-जो कोई भी रत्न राज्य मे प्राप्त होते है, वे राजा के अधिकार के होते है। श्रेणिक राजा ने राज्य-शासन करते हुए, प्रजा का पालन करते हुए दो रत्न प्राप्त किये थे- सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो का हार। इसलिए स्वामिन् ! आप राजकुल-परम्परागत मर्यादा को अक्षुण्ण रखते हुए सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार कूणिक राजा को वापस लौटा दे और वेहल्लकुमार को भी भेज दे।''

दूत ने कूणिक राजा की आज्ञा को सुना और सहर्ष स्वीकार किया। तत्पश्चात् वह वैशाली गया और कूणिक राजा की ओर से निवेदन किया-''स्वामिन् ! कूणिक राजा ने पुन प्रार्थना की है कि जो कोई भी रत्न राज्य मे प्राप्त होते है, वे राजकुलानुगामी राजा के अधिकार मे होते है, अत आप हाथी, हार और वेहल्लकुमार को वापस भेज दे।''

तब चेटक राजा ने उस दूत से इस प्रकार कहा-"देवानुप्रिय ! जैसे कूणिक राजा श्रेणिक राजा का पुत्र, चेलनादेवी का अगज है, वैसे ही वेहल्लकुमार भी है, इत्यादि जैसे पूर्व मे कहा, वैसा सब पुन यहाँ भी कहा।" और उस दूत का सत्कार-सम्मान करके विदा कर दिया।

तत्पश्चात् वह दूत लौटकर चम्पानगरी को वापस आ गया। कूणिक राजा का अभिनन्दन कर इस प्रकार निवेदन किया-"देवानुप्रिय ! चेटक राजा ने कहा है कि मेरे लिए जैसे कूणिक राजा श्रेणिक का पुत्र और चेलनादेवी का अगजात प्रिय है, उसी प्रकार वेहल्लकुमार भी है। यावत् आधा राज्य देने पर ही कुमारवेहल्ल को भेजूँगा। इसलिए स्वामिन् ! चेटक राजा सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार नही देगे और न वेहल्लकुमार को वापस भेजेगे।"

26. (b) On getting this reply from King Chetak, King Kunik once again called the emissary and said—"Beloved of gods ! Go to Vaishali once again Reaching there convey this message to my maternal grandfather King Chetak—'My lord ! King Kunik submits this request—Whatever gems (valuables) are found in a kingdom traditionally belong to the king During his reign and ruling over his subjects King Shrenik had obtained two gems, namely Sechanak elephant and the eighteen string necklace Therefore, my lord ! following the norms of royal tradition you should kindly return Sechanak elephant and the eighteen string necklace Also send back prince Vehalla '"

The emissary listened to and happily accepted King Kunik's order He then went to Vaishali and conveyed King Kunik's message—'My lord ! King Kunik once again submits his request that whatever gems (valuables) are found in a kingdom traditionally belong to the king Therefore, kindly return Sechanak elephant and the eighteen string necklace Also send back prince Vehalla "

King Chetak said to the emissary—"Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla " and so on as he had said earlier, and dismissed the emissary with formal greetings and honour

The emissary returned to Champa city and after greeting King Kunik submitted—"My lord ! King Chetak has said—'Beloved of gods ! As King Kunik is the son of King Shrenik and Queen Chelana and my grandson, so is prince Vehalla ' (and he repeated King Chetak's aforesaid message) Therefore, my lord ! King Chetak is not prepared to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or send back prince Vehalla "

२७. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते (जाव) मिसिमिसेमाणे तच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया, वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेण पाएणं पायपीढं अक्कमाहि अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि, पणावित्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलिंय भिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वयाही–हं भो चेडगराया, अपत्थियपत्थिया, दुरंत. (जाव) परिवज्जिया, एस णं कूणिए राया आणवेइ पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं पेसेहि, अहवा जुद्धसज्जो चिट्ठाहि। एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे हव्वमागच्छइ।

तए णं से दूए करयल , तहेव (जाव) जेणेव चेडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. (जाव) वद्धावेत्ता एवं वयासी–"एस णं, सामी, ममं विणयपणिवत्ती। इयाणिं कूणियस्स रन्नो आण त्ति– चेडगस्स रन्नो वामेणं पाएण पायपीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता आसुरुत्ते कुंतग्गेण लेह पणावेइ, तं चेव सबलखंधावारे णं इह हव्वमागच्छइ।"

तए ण से चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते (जाव) साहट्टु एवं वयासी–"न अप्पिणामि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं अट्ठारसवंकं हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि" तं दूयं असक्कारियं असंमाणियं अवद्दारेणं निच्छुहावेइ।

२७. कूणिक राजा ने दूत के मुख से चेटक राजा के इस उत्तर को सुना और विचार किया। सुनकर वह क्रोध मे लाल- पीला हो उठा। दाँतो को पीसते हुए पुन तीसरी बार दूत को बुलाया। बुलाकर इस प्रकार कहा- "देवानुप्रिय ! तुम वैशाली नगरी जाओ और बाये पैर से सिहासन को ठोकर मारकर चेटक राजा को भाले की नोक पर रखकर यह पत्र देना। पत्र देकर क्रोध प्रदर्शित करते हुए, दाँत पीसते हुए ललाट पर तीन भृकुटि तानकर चेटक राजा से इस प्रकार कहना–"अरे ओ अकाल मृत्यु के इच्छुक भाग्यहीन यावत् निर्लज्ज चेटक राजा ! कूणिक राजा यह आदेश देता है कि कूणिक राजा को सेचनक गधहस्ती एव अठारह लडियो वाला हार लौटा दो और वेहल्लकुमार को वापस भेजो, नही तो युद्ध के लिए सज्जित हो जाओ। कूणिक राजा बल, वाहन और पैदल सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार होकर शीघ्र ही यहाँ आ रहे है।"

दूत ने पहले की भाँति दोनो हाथ जोडकर कूणिक राजा का आदेश स्वीकार किया। वह शीघ्र वैशाली नगरी पहुँचा। जहाँ चेटक राजा था वहाँ आया। आकर उसने पहले दोनो हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से बधाकर इस प्रकार कहा–"स्वामिन् ! यह तो मेरी विनय भक्ति का शिष्टाचार है। किन्तु अब कूणिक राजा की आज्ञा तो यह है कि बाये पैर से चेटक राजा के सिहासन को ठोकर मारो, ठोकर मारकर क्रोधित होकर भाले की नोक से यह पत्र उनको दो और कहो युद्ध के लिए सज्ज हो जाओ, वे सेना सहित शीघ्र ही यहाँ आ रहे है।"

तब दूत के मुख से यह धमकी सुनकर चेटक राजा चिन्तन कर क्रोधाभिभूत हो गया, होकर ललाट सिकोडकर इस प्रकार उत्तर दिया–"मै कूणिक राजा को सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो वाला हार नही लौटाऊँगा और न ही वेहल्लकुमार को वापस भेजूँगा, हॉ, मै युद्ध के लिए तैयार हूँ।" ऐसा कहकर दूत को असत्कार–असम्मानपूर्वक अपमानित कर पिछले द्वार से निकाल दिया।

KING KUNIK'S WARNING

27. On hearing King Chetak's reply from the emissary King Kunik turned red with anger Gnashing his teeth he called the emissary a third time and said—"Beloved of gods ! Go to Vaishali city and deliver this letter to King Chetak after kicking his throne with your left foot and pointing the tip of your spear at him After delivering the letter display your anger by gnashing your teeth and raising your eyebrows to make three lines appear on your forehead Expressing your anger thus, tell him—'Desirous of untimely death, O unfortunate and shameless King Chetak ! King Kunik commands you to either return Sechanak elephant and the eighteen string necklace and send back prince Vehalla or prepare yourself for a war Soon King Kunik is coming here with all his military might including army, infantry and all, ready to wage a war'"

As he had done earlier, the emissary accepted King Kunik's order joining his palms He rushed to Vaishali and visited King Chetak After hails of victory and formal greetings he said—"My lord ! I have expressed my modesty, devotion and courtesy for you But King Kunik has ordered me to kick your throne with my left foot, display my anger, and deliver you his letter with the tip of my spear Also to tell you that prepare yourself for war He is soon coming here with his army"

Hearing this threat from the emissary and pondering over it King Chetak was filled with anger He raised his eyebrows and said—"I will neither return Sechanak elephant and the eighteen string necklace nor send back prince Vehalla Yes ! I am ready for a war" With these words he summarily dismissed the emissary to leave through the rear gate as a token of insult and dishonour

युद्ध की तैयारी

२८. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"एवं खलु, देवाणुप्पिया, वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिएण सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं हारं अंतेउर सभंडं च गहाय चम्पाओ निक्खमई, निक्खमित्ता वेसालिं अज्जगं (जाव) उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स अट्ठाए दूया



चित्र परिचय-६	Illustration No. 6

युद्ध रचना

दृश्य–१

गरुड़ व्यूह रचना

कूणिक राजा अपने दसो भाईयो के साथ ३३ हजार हाथियो यावत ३३ कोटि पैदल सैनिको की विशाल सेना लेकर युद्ध भूमि मे आकर डटा। उसने अपनी सेना को गरुड की आकृति मे स्थापित किया। जिसे गरुड व्यूह रचना कहा जाता है। सेना के बीच मे कालकुमार आदि दसो भाई हाथियो पर स्थित युद्ध करते थे।

दृश्य–२

शकट व्यूह रचना

चेटक राजा अठारह गण राजाओ के साथ उनकी सत्तावन हजार हस्ति सेना तथा सत्तावन कोटि पदाति सेना को लेकर आया। उसने अपनी सना की शकट (बैलगाडी के आकार मे) व्यूह रचना की।

-वर्ग १ अ १ सूत्र ३३

BATTLE FORMATION

SCENE-1

GARUDA VYUHA

King Kunik organized his army of thirty three thousand elephants and so on up to three hundred thirty million soldiers in eagle shaped battle formation (*garuda vyuha*) In the center were positioned his ten brothers including Kaal Kumar riding elephants

SCENE-2

SHAKAT VYUHA

On the other side King Chetak organized his army of fifty seven thousand elephants and so on up to five hundred seventy million soldiers in cart shaped battle formation (*shakat vyuha*)

—Sec I Ch 1 Sutra 33

पेसिया। ते य चेडएण रन्ना इमेणं कारणेणं पडिसेहिया अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूए असक्कारिए असंमाणिए अवद्दारेणं निच्छुहावेइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया, अम्हं चेडगस्स रन्नो जुत्तं गिण्हित्तए।''

तए णं कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

२८. तत्पश्चात् कूणिक राजा दूत से यह समाचार सुनकर और उस पर विचार कर क्रोधित हुआ। फिर काल आदि दस कुमारो को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा-''देवानुप्रियो ! बात यह है कि वेहल्लकुमार मुझे बिना बताये ही सेचनक गधहस्ती तथा अठारह लडियो वाला हार और अन्त पुर-परिवार सहित सब सामान लेकर चम्पा से भाग निकला है और वैशाली मे आर्य चेटक का आश्रय लेकर रह रहा है। मैने सेचनक गधहस्ती और अठारह लडो का हार देने के लिए तथा उसे वापस भेजने के लिए दूत भेजा। चेटक राजा न हाथी, हार और वेहल्लकुमार को भेजने से इकार कर दिया, इतना ही नही, मेरे तीसरे दूत को तिरस्कृत, अपमानित कर पिछले द्वार से बाहर निकलवा दिया। इसलिए हे देवानुप्रियो ! अब हमे चेटक राजा के साथ युद्ध करना चाहिए, उसे दण्ड देना चाहिए।''

तब उन काल आदि दस कुमारो ने कूणिक राजा के इस विचार को विनयपूर्वक स्वीकार कर लिया।

WAR PREPARATIONS

28. Getting this news from the emissary and pondering over it, King Chetak was filled with anger He then called the ten princes including Kaal Kumar and said—"Beloved of gods ! I would like to inform you that without informing me prince Vehalla has eloped from Champa with his family, household things, Sechanak elephant and the eighteen string necklace He has gone to Vaishali and settled there under protection of Arya Chetak I had sent an emissary to King Chetak to return Sechanak elephant and the eighteen string necklace and also send back prince Vehalla But King Chetak refused to return Sechanak elephant, the eighteen string necklace and prince Vehalla as they are under his protection Not only this, he insulted and dismissed my third emissary through the rear gate Therefore, O Beloved of gods ! We should now fight a war with King Chetak and punish him "

The ten princes including Kaal Kumar humbly accepted King Kunik's proposal

काल आदि दस कुमारो की युद्धार्थ सज्जा

२९. तए णं से कूणिए राया कालाईए दस कुमारे एवं वयासी-''गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया, सएसु सएसु रज्जेसु; पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया (जाव) पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया, पत्तेयं पत्तेयं तिहिं दंतिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए. (जाव) रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह।

तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं सोच्चा सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया जाव तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिंतो सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमन्ति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अगा जणवए जेणेव चम्पा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागया करयल. जाव वद्धावेंति।

२९. तदनन्तर वह कूणिक राजा काल आदि दस कुमारो से इस प्रकार कहने लगा–"देवानुप्रियो ! आप लोग अपने–अपने राज्यो मे जाओ, वहाँ जाकर प्रत्येक राजकुमार स्नान आदि से शुद्ध होकर श्रेष्ठ हाथी पर आरूढ होकर प्रत्येक अपने तीन–तीन हजार हाथियो, तीन हजार रथो, तीन हजार घोडो और तीन कोटि मनुष्यो सैनिको को साथ लेकर समस्त ऋद्धि, समस्त वैभव यावत् सब प्रकार के सैन्य, समुदाय को साथ लेकर दुन्दुभि के घोष की ध्वनि गुंजाते हुए अपने–अपने नगरो से प्रस्थान करो और मेरे पास आकर एकत्रित होओ।

वे कालादि दसो कुमार कूणिक राजा की आज्ञा को सुनकर अपने–अपने राज्यो मे आये। स्नान करके तैयार हुए। (तीन–तीन हजार हाथियो, रथो, घोडो) यावत् तीन कोटि पैदल सैनिको को साथ लेकर समस्त ऋद्धि यावत् विविध वाद्यघोष–निनादो के साथ अपने–अपने नगरो से निकलते है, निकलकर जहाँ अग जनपद की चम्पानगरी थी, वहाँ कूणिक राजा के पास आते है। आकर दोनो हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से उसका अभिनन्दन करते है।

TEN PRINCES PREPARE FOR WAR

29. Then King Kunik said to the ten princes including Kaal Kumar—"Beloved of gods ! Go to your respective kingdoms and after due lustration by taking bath and performing other rituals ride the best of your elephants After that each one of you should assemble his army consisting of three thousand elephants, three thousand chariots, three thousand horses and thirty million soldiers With all your opulence and grandeur along with the great army leave your respective kingdoms and march with drum beats to join me

On getting these instructions from King Kunik the ten princes including Kaal Kumar returned to their respective kingdoms and after due lustration by taking bath and so on up to and thirty million soldiers With all their opulence and grandeur along with the great army they left their respective kingdoms and marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments to join King Kunik at Champa city, the capital of Anga state Arriving there they joined their palms and greeted him with hails of victory

कूणिक की युद्ध–सज्जा

३०. तए णं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयण पडिकप्पेह, हय–गय–रह–जोह–चाउरंगिणिं सेणं संनाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह" जाव पच्चप्पिणति।

तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ. (जाव) पडिनिग्गिच्छिइ पडिनिग्गिच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव नरवई दुरूढे।

तए णं से कूणिए राया तिहि दंतिसहस्सेहिं जाव रवेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालाईया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कालाइएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं एगओ मेलायंति।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं सुहेहिं वसईहिं सुहेहिं पायरासेहिं नाइविप्पगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे वसमाणे अंगजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए, जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

३०. तब उस कूणिक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषो-सेवको को बुलाया और बुलाकर आज्ञा दी-''देवानुप्रियो ! शीघ्र ही मेरे बैठने योग्य अभिषेक किये हुए हस्ति रत्न-हाथियो मे श्रेष्ठ हाथी को सुसज्जित करो, घोडे, हाथी, रथ और श्रेष्ठ योद्धाओ से सुगठित चतुरगिणी सेना को युद्ध के लिए तैयार करो और फिर मेरी आज्ञा पूरी होने पर मुझे सूचित करो। तैयार होने पर वे सेवक आज्ञानुरूप कार्य सम्पन्न होने की सूचना देते है।

तत्पश्चात् कूणिक राजा अपने स्नानगृह मे प्रविष्ट हुआ। स्नान करके वस्त्राभूषणो से सज्ज होकर बाहर सभाभवन मे आया। वहाँ विशालकाय हाथी पर आरूढ हुआ।

तत्पश्चात् कूणिक राजा तीन हजार हाथियो, तीन हजार अश्वो के साथ यावत् वाद्य यन्त्रो के उद्घोषपूर्वक चम्पानगरी के बीचोबीच मे से होता हुआ जहाँ काल आदि दस कुमार ठहरे थे वहाँ पहुँचा और काल आदि दस कुमारो के साथ मिला।

इसके बात तेतीस हजार हाथियो, तेतीस हजार घोडो, तेतीस हजार रथो और तेतीस कोटि मनुष्य सैनिको से परिवृत हुआ सर्व ऋद्धि यावत् वाद्य निर्घोषो के साथ सुविधाजनक स्थानो पर पडाव डालता हुआ, सुखपूर्वक प्रात काल का भोजन आदि ग्रहण करता हुआ, अधिक लम्बी यात्रा न करके नजदीक-नजदीक पडाव डालता हुआ अग जनपद के मध्य भाग मे से होते हुए जहाँ विदेह जनपद की राजधानी वैशाली नगरी थी उस ओर जाने के लिए प्रस्थान किया।

KUNIK'S PREPARATIONS FOR WAR

30. King Kunik called his attendants and instructed—"Beloved of gods ! Prepare for me the best of elephants suitable for the use of a monarch Also call the four pronged army with the best of horses, elephants, chariots, and warriors to attention or a state of readiness Inform me when you do all this The attendants did as instructed and informed the king accordingly

King Kunik then entered his bathroom After taking his bath, getting dressed and adorning himself with ornaments he came to the outer court There he rode the great elephant

Now King Kunik, with three thousand elephants, three thousand horses, and so on up to marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments, crossed Champa city and joined the ten princes including Kaal Kumar where they had camped

Surrounded by thirty three thousand elephants, thirty three thousand chariots, thirty three thousand horses and three hundred thirty million soldiers, with all his opulence King Kunik marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments Resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time, camping after covering limited stretches and without unduly extending the march, he passed through the Anga state and moved towards Vaishali, the capital of Videh state

गण–राजाओ के साथ चेटक का परामर्श

३१. (क) तए णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाओ सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणग अट्ठारसवकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए। तए ण कूणिएणं सेयणगस्स अट्ठारसवकस्स य अट्ठाए तओ दूया पेसिया। ते य मए इमेणं कारणेण पडिसेहिया। तए णं से कूणिए ममं एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ।

तं किं णं देवाणुप्पिया, सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमार पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था ?"

३१ (क) कूणिक राजा का युद्ध के लिए प्रस्थान का समाचार प्राप्त होने पर चेटक राजा ने काशी–कोशल देशो के नौ लिच्छवी और नौ मल्लकी इन अठारह गणराजाओ को परामर्श करने हेतु आमन्त्रित किया और एकत्र होने पर उनसे कहा- "देवानुप्रियो ! कूणिक राजा को बिना सूचित किये वेहल्लकुमार सेचनक हाथी और अठारह लडो वाला हार लेकर यहाँ आ गया है। कूणिक ने सेचनक हाथी और अठारह लडो के हार को वापस लेने के लिए यहाँ तीन बार दूत भेजे। किन्तु मैने इस कारण [अर्थात् स्वय श्रेणिक राजा ने अपनी जीवित अवस्था मे उसे ये दोनो वस्तुएँ प्रदान की है, फिर भी हार–हाथी चाहते हो तो उसे आधा राज्य दो, यह उत्तर देकर] उन दूतो को वापस लौटा दिया। तब कूणिक मेरी इस बात को स्वीकार न करके चतुरगिणी सेना के साथ युद्ध के लिए तैयार होकर यहाँ आ रहा है।

तो क्या देवानुप्रियो ! सेचनक हाथी और अठारह लडो वाला हार वापस कूणिक राजा को लौटा दे ? वेहल्लकुमार को उसे सौप दे अथवा युद्ध करे ?"

CHETAK'S CONSULTATIONS WITH HEADS OF REPUBLICS

31. (a) When King Chetak got the news of King Kunik's march, he invited the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics

and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states for consultation When they assembled he said—"Beloved of gods ! Without informing King Kunik prince Vehalla has come here with Sechanak elephant and the eighteen string necklace Kunik had sent emissaries three times to get Sechanak elephant and the eighteen string necklace But I refused for a valid reason (King Shrenik had given Sechanak elephant and the eighteen string necklace to prince Vehalla during his life time Therefore if King Kunik wants to take these two things he should give prince Vehalla half of his kingdom and state) and sent back the emissaries King Kunik did not accept my proposal and is marching here with his four pronged army to wage a war

"Under the circumstances, Beloved of gods ! should we return Sechanak elephant and the eighteen string necklace ? Should we surrender prince Vehalla to him or fight a war ?

३१. (ख) तए णं नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी–"न एयं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा, ज णं सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ। तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे जुद्धसज्जे इहं हव्वमागच्छइ, तए णं अम्हे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झामो।"

तए ण से चेडए राया ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो एवं वयासी–'जइ णं देवाणुप्पिया, तुब्भे कूणिएण रन्ना सद्धि जुज्झह, त गच्छह णं देवाणुप्पिया, सएसु सएसु रज्जेसु, ण्हाया जहा कालाईया (जाव) जएणं विजएणं वद्धावेंति।

तए णं से चेडए राया कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"आभिसेक्कं जहा कूणिए" (जाव) दुरूढे।

३१. (ख) तब काशी-कोशल के नौ मल्लकी और नौ लिच्छवी अठारह गणराजाओ ने चेटक राजा से कहा–"स्वामिन् ! यह न तो उचित है, न समयोचित है और न ही राजा की गरिमा के अनुरूप ही है कि सेचनक और अठारह लडो वाला हार कूणिक राजा को लौटा दिया जाए और शरणागत वेहल्लकुमार को वापस लौटा दिया जाये। इसलिए जब कूणिक राजा चतुरगिणी सेना को लेकर युद्ध के लिए तैयार होकर यहाँ आ रहा है तब हम कूणिक राजा के साथ युद्ध करेगे।"

उन नौ मल्लकी, नौ लिच्छवी, काशी-कोशल के अठारह गणराजाओ से चेटक राजा ने कहा–"यदि आप देवानुप्रिय ! कूणिक राजा से युद्ध करने के लिए तैयार है तो देवानुप्रियो ! पहले अपने-अपने राज्यो मे जाइए और स्नान आदि से निवृत्त हो कालादि कुमारो की तरह [युद्ध के लिए सुसज्जित होकर अपनी-अपनी चतुरगिणी सेना के साथ चम्पा मे आइए। तब अठारहो राजा अपने-अपने राज्यो मे गये और युद्ध के लिए सुसज्जित होकर आये।] आकर उन्होने चेटक राजा को जय-विजय शब्दो के साथ बधाई दी।

उसके बाद चेटक राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषो-सेनाधिकारियो को बुलाया और यह आज्ञा दी-"मेरे आभिषिक्त हस्तिरत्न को सजाओ, आदि समस्त वर्णन कूणिक राजा की तरह यहाँ समझना चाहिए।

31. (b) The eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states said to King Chetak—"Lord ! It is neither proper, nor opportune or suitable to the prestige of a king that we return Sechanak elephant and the eighteen string necklace or surrender prince Vehalla Therefore, when King Kunik is marching here with his four pronged army to wage a war we will face him by fighting the war"

King Chetak said to the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states—"Beloved of gods ! If you are ready to fight a war with King Kunik, please return to your respective kingdoms and after due lustration by taking bath and performing other rituals and so on up to Arriving there they joined their palms and greeted him with hails of victory *[same as mentioned in case of ten princes including Kaal Kumar in aphorism-29]*

King Chetak called his attendants and instructed—"Beloved of gods ! Prepare for me the best of elephants suitable for the use of a monarch and so on (Other details are same as mentioned in aphorism-30 about King Kunik)

चेटक राजा का युद्ध-क्षेत्र मे आगमन

३२. तए ण से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं, जहा कूणिए (जाव) वेसालि नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाओ तेणेव उवागच्छइ।

तए णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं, सत्तावन्नाए रहसहस्सेहिं सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए. जाव रवेणं सुहेहिं वसहीहिं पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे वसमाणे विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खन्धावारनिवेसणं करेइ करित्ता कूणियं रायं पडिवालेमाणे जुद्धसज्जे चिट्ठइ।

तए णं से कूणिए राया सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावारनिवेसं करेइ।

३२. (वैशाली मे अठारह गणराजाओ के आ जाने के पश्चात्) वह चेटक राजा जैसे कूणिक राजा तीन हजार हाथियो आदि के साथ निकला, उसी प्रकार वैशाली नगरी के बीचोबीच होकर निकला। जहाँ वे नौ मल्लकी, नौ लिच्छवी काशी-कोशल के अठारह गण राजा उपस्थित थे, वहाँ आया।

वहाँ आकर चेटक राजा सत्तावन हजार हाथियो, सत्तावन हजार घोडो, सत्तावन हजार रथो और सत्तावन कोटि मनुष्य सैनिको को साथ लेकर सर्व ऋद्धि-वैभव के साथ वाद्य यन्त्रो के उच्च घोष के साथ शुभ स्थानो पर पडाव डालता हुआ, प्रात कालीन भोजन ग्रहण करता हुआ और निकट-निकट विश्राम करते हुए विदेह जनपद के मध्य चलते-चलते जहाँ राज्य का सीमान्त-प्रदेश था, वहाँ आया। आकर स्कन्धावार का निवेश किया-सेना की छावनी डाली तथा कूणिक राजा की प्रतीक्षा करते हुए युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर ठहरा।

इधर वह कूणिक राजा अपने समस्त ऋद्धि-वैभव के साथ यावत् कोलाहल करता हुआ जहाँ अपना सीमात प्रदेश था, वहाँ आया। आकर चेटक राजा के पडाव से एक योजन की दूरी पर उसने भी अपनी सेना का पडाव किया।

KING CHETAK IN THE ARENA OF WAR

32. (When the eighteen heads of republics arrived in Vaishali) King Chetak, like King Kunik, came out with three thousand elephants (etc) and marching through Vaishali came where the eighteen kings including nine heads of the Lichchhivi republics and nine of Mallaki republics of Kashi-Kaushal states had camped

Surrounded by fifty seven thousand elephants, fifty seven thousand chariots, fifty seven thousand horses and five hundred seventy million soldiers and with all his opulence, King Chetak marched with drum beats and sounds of a variety of musical instruments Resting at suitable places, taking his breakfast and meals at proper time, camping after covering limited stretches, he passed through the Videh state and reached the state border There he established forward cantonment and waited for King Kunik in a state of full alert

On the other side King Kunik with all his opulence and glory made a tumultuous arrival in the border area and camped one *Yojan* away from King Chetak's camp

युद्धार्थ व्यूह-रचना

३३. (क) तए णं ते दोन्नि वि रायाणो रणभूमिं सज्जावेंति, सज्जावित्ता रणभूमिं जयंति।

तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं गरुलवूहं रएइ रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए।

तए णं से चेडगे राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं (जाव) सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ रइत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगामं उवायाए।

तए णं ते दोण्ह वि राईणं अणीया संनद्धा (जाव) गहियाउहपहरणा मंगतिएहिं फलएहिं, निक्किट्टाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, स्जीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं

डावाहिं, ओसारियाहिं उरुघण्टाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठसीहनाय–बोलकलकलरवेण समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सव्विड्ढीए जाव रवेणं हयगया हयगएहिं, गयगया गयगएहिं, रहगया रहगएहिं, पायत्तिया पायत्तिएहिं अन्नमन्नेहिं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था।

३३. **(क)** तदनन्तर दोनो राजाओ ने रणभूमि को सज्जित करवाया, (झाड–झखाड साफ करवाकर युद्ध के योग्य बनाया) सज्जित करके रणभूमि मे अपनी–अपनी जय–विजय के लिए अर्चना की।

इसके बाद कूणिक राजा ने तेतीस हजार हाथियो आदि तथा तेतीस कोटि पैदल सैनिको से युक्त होकर गरुडव्यूह की रचना की। रचना करके गरुडव्यूह द्वारा रथ-मूसल सग्राम की तैयारी की।

इधर चेटक राजा ने सत्तावन हजार हाथियो यावत् सत्तावन कोटि पदाति सैनिको द्वारा शकट -व्यूह की रचना की और रचना करके शकट–व्यूह द्वारा रथ–मूसल सग्राम को लक्ष्य मे रखकर युद्धभूमि मे प्रवृत्त हुआ।

तब दोनो राजाओ की सेनाएँ युद्ध के लिए सन्नद्ध हो, कवच आदि धारण कर, आयुधो (रक्षात्मक शस्त्र) और प्रहरणो (प्रहारक शस्त्र) को लेकर, हाथो मे ढालो को बाँधकर, तलवारे म्यान से बाहर निकालकर, कधो पर लटके तूणीरो से डोरी खीचकर, धनुषो से छोडे हुए बाणो से, फटकारते हुए बाये हाथो से, जघाओ मे बँधी हुई घटिकाओ की तुमुल ध्वनियो से, बजती हुई तुरहियो से एव प्रचण्ड हुँकारो के तुमुल कोलाहल से समुद्र–गर्जना जैसा गर्जारव करते हुए सर्वऋद्धि यावत् वाद्य यत्रो के स्वरो से गुजाते हुए अश्वारोही परस्पर अश्वारोहियो से, गजारूढ गजारूढो से, रथारोही रथारोहियो से और पैदल चलने वाले पैदल चलने वालो से परस्पर युद्ध करने लगे।

BATTLE FORMATION

33. (a) After that both the kings got the battle field prepared (by clearing bushes and other obstacles) and performed auspicious rites for their respective victory

Now King Kunik organized his army of thirty three thousand elephants and so on up to three hundred thirty million soldiers in eagle shaped battle formation (*garuda vyuha*) He prepared for the *Rath-musal* battle in the eagle formation

On the other side King Chetak organized his army of fifty seven thousand elephants and so on up to five hundred seventy million soldiers in cart shaped battle formation (*shakat vyuha*) He prepared for the *Rath-musal* battle in the cart formation

Thus getting ready for war wearing armours (etc), carrying countering weapons (*aayudh*) and attacking weapons (*praharan*), tying shields on hands, drawing swords from sheaths, and drawing arrows from quivers, the two armies, with all their prowess accompanied by drum beats and sounds of a variety of musical instruments, marched and engaged

Launching arrows, waving left hands, emitting tumultuous sound from bells tied to thighs, blowing trumpets, shouting loud challenges like roar of a sea, horse riders started fighting with horse riders, elephant riders with elephant riders, charioteers with charioteers and foot soldiers with foot soldiers

३३. (ख) तए णं ते दोण्ह वि रायाणं अणीया नियगसामीसासणाणुरत्ता महया जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं नच्चन्त कबन्धवारभीमं रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झन्ति।

तए णं से काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव मणूसकोडीहिं गरुलवूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं रहमुसलं संगामं संगामेमाणं हयमहिय. जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं (जाव) जीवियाओ ववरोविए।

"तं एयं खलु, गोयमा, काले कुमारे एरिसएहिं आरंभेहिं जाव एरिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं काले मासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने।"

३३. (ख) तब वहाँ दोनो राजाओ की सेनाएँ अपने-अपने स्वामी के आदेश-अनुशासन पालन मे सावधान हुई अपार जनसहार, जन-वध, जन-मर्दन और भय आतक उत्पन्न करने लगी। जिस प्रकार सवर्तक वायु (चक्करदार तूफान मे) वस्तुएँ घूमती-नाचती दीखती है, उसी प्रकार युद्ध-स्थल मे कट-कटकर गिरते हुए नरमुण्ड नाच रहे थे। खून के कीचड से भूमि भीग रही थी। योद्धा इस प्रकार का घोर युद्ध करने लगे।

तदनन्तर कालकुमार तीन हजार हाथियो यावत् तीन करोड मनुष्य सैनिको से युक्त गरुडव्यूह की रचना करके अपनी सेना के ग्यारहवे भाग सहित कूणिक राजा का साथ देता हुआ रथ-मूसल सग्राम मे राजा चेटक से युद्ध करते हुए (उसके एक ही अमोघ बाण से) आहत और मथित हो गया, इत्यादि जैसा भगवान महावीर ने कालीदेवी से कहा था, तदनुसार मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(-यह वृत्तान्त सुनाकर भगवान महावीर ने कहा)-अतएव गौतम ! कालकुमार इस प्रकार के घोर आरम्भो से, इस प्रकार के कृत अशुभ कृत्यो के कारण मरण प्राप्त कर चौथी पकप्रभा पृथ्वी के हेमाभ नरकावास मे नैरयिक रूप से उत्पन्न हुआ है।

33. (b) Enthused to follow the command and control of their respective kings, the two armies started wreaking unending slaughter, killing, repression, fear and terror The dismembered and falling heads were bobbing and swinging like things caught in a whirlwind. The ground was turning slimy with blood The warriors thus fought a fierce battle

Kaal Kumar, along with three thousand elephants . and so on up to . thirty million foot soldiers in eagle formation, supporting King Kunik and forming the eleventh part of his army, fought in the *Rath-musal* battle against King Chetak and so on up to In just one shot Kaal Kumar fell

on the ground like a broken peak of a hill, as told by Bhagavan Mahavir to Queen Kaali, and died on the spot

(Narrating these details Bhagavan Mahavir added—) Therefore, Gautam ! As Kaal Kumar embraced his death due to intense sinful activities and evil deeds, he has taken birth in the *Hemabh Narak* (name of a specific area in the infernal world) of the *Pankaprabha Prithvi* (the fourth hell) as a *nairayik* (infernal being)

विवेचन– गरुड़–व्यूह क्या है ?

प्रस्तुत सूत्र मे गरुड–व्यूह तथा शकट–व्यूह की रचना का उल्लेख है। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने अपनी हिन्दी टीका मे इस विषय पर प्रकाश डाला है। गरुड–व्यूह का अर्थ है, गरुड की भाँति जिस सेना का आगे का भाग विशाल हो, जिसे देखकर शत्रुसेना भयभीत हो जाये तथा वह प्रथम आक्रमण कर सकती हो।

शकट-व्यूह रचना का अभिप्राय है, सबसे आगे के भाग मे ज्यादा शकट (रथ) हो, बीच के भाग मे उनकी सख्या कम हो और अन्त का पिछला भाग फिर विशाल हो। यह शकट (गाडी) के आकार मे होता है।

कोणिक ने गरुड–व्यूह की रचना की, चेटक राजा ने अपनी सेना शकट–व्यूह मे स्थापित की। रथ-मूसल सग्राम के विषय मे विशेष वर्णन भगवतीसूत्र, शतक ७, उद्देशक ९ मे प्राप्त होता है जिसका सार निम्न प्रकार है–

रथ–मूसल संग्राम

प्रस्तुत सूत्र ३३ मे बताया है–'रथ–मूसल' सग्राम को लक्ष्य करके कूणिक ने गरुड–व्यूह की रचना की। भगवतीसूत्र मे कूणिक–चेटक के दो महायुद्धो का वर्णन है। इसमे पहले दिन महाशिलाकटक युद्ध हुआ तथा दूसरे दिन रथ–मूसल सग्राम। और इस युद्ध की परिणति राजा चेटक की सेना की पराजय तथा कूणिक की विजय के रूप मे हुई। किन्तु निरयावलिका के प्रस्तुत प्रसग मे पहले दस दिनो के युद्ध मे कूणिक के पक्ष के कालकुमार आदि दसो भाइयो की मृत्यु का उल्लेख है। इससे अनुमान लगता है कि इस दस दिन के युद्ध के पश्चात् महाशिलाकटक सग्राम व रथ–मूसल सग्राम हुआ। प्राचीन ग्रन्थो की कथा भी इसी का सकेत करती है।

कथानुसार दस दिन के महायुद्ध मे कोणिक के दसो सेनापति (दशो भाई) चेटक राजा के एक–एक बाण प्रहार से मृत्यु को प्राप्त हो गये। तब ग्यारहवे दिन कूणिक की बारी थी। कूणिक घबरा गया। सोचा–'चेटक राजा का बाण अमोघ होता है, मै उसके समक्ष किसी भी प्रकार जीत नही सकूँगा।' इसलिए उसने उपाय सोचा। तीन दिन का युद्ध विराम किया। अष्टम तप करके अपने पूर्वभव के मित्र देवो, शक्रेन्द्र तथा असुरेन्द्र–चमरेन्द्र को स्मरण किया।

शक्रेन्द्र ने कहा–"मै चेटक राजा को नही मार सकता, क्योकि वह परम वीर दृढधर्मी श्रावक है। फिर भी मित्र के नाते तुम्हारी रक्षा का उपाय करता हूँ। शक्रेन्द्र ने कूणिक की मित्रता निबाहने के लिए वज्र


देवशक्ति से निर्मित विनाशकारी रथ

चित्र परिचय-७ | **Illustration No. 7**

रथ-मूसल संग्राम

दस दिनो क महायुद्ध मे दसो भाईयो की मृत्यु होने के पश्चात् चिन्तित कूणिक ने अपनी विजय के लिए देव सहायता का उपाय सोचा। पूर्वभव क मित्र देव शक्रेन्द्र व असुरेन्द्र (चमरेन्द्र) की सहायता माँगी।

शक्रेन्द्र ने वज्र के समान अमोघ वस्त्र व कवच कूणिक को दिया तथा चमरेन्द्र ने महाशिला कटक व रथमूसल युद्ध यत्रो की विकुर्वणा की।

यह देव शक्ति से चालित अद्‌भुत रथ जब युद्ध भूमि म आया तो उसके मूसल जैसे लोहे के तीक्ष्ण पहिये चिनगारियाँ छोडते हुए शत्रु सेना को दलने मथने चलने लगे। रणभूमि शत्रु सेना के रक्त से कीचड युक्त हो गई।

इस युद्ध मे चेटक का अमोघ बाण भी निष्फल रहा। अन्त म कूणिक ने वैशाली का विनाश कर डाला।

—वर्ग १ १ सूत्र ३३

RATH-MUSAL BATTLE

In the first ten days of the great war Kunik's ten brothers were killed and he got worried He thought of seeking divine help He sought help from Shakrendra and Chamarendra friendly gods from his past birth

Shakrendra gave a diamond hard armour to Kunik and Chamarendra created two war-machines called Mahashilakantak and Rath-musal

When in the battlefield this strange divine chariot with its mace like wheels with pointed projections emitted sparks and crushed the opposing army The battlefield became slimy with blood

In this battle King Chetak's invincible arrow also failed In the end Kunik destroyed Vaishali

—Sec I Ch 1, Sutra 33

समान अमोघ वस्त्र और कवच की विकुर्वणा की। जिसे धारण करके कूणिक सुरक्षित हो गया। चमरेन्द्र ने महाशिलाकंटक व रथ–मूसल युद्ध–यन्त्रो की विकुर्वणा की।

महाशिलाकंटक सग्राम मे कूणिक की सेना द्वारा फेका गया, तृण, काष्ठ, ककर, पत्थर शत्रु सेना पर ऐसा भारी प्रहार करता था जैसे महाशिला उनके ऊपर गिर पडी हो और शत्रु पक्ष का प्रचण्ड शस्त्र भी कटक जैसा तेजहीन हो जाता। इस युद्ध मे चौरासी लाख मनुष्य मारे गये। इस युद्ध मे चेटक का सेनापति वरुण नाग का पौत्र था, जो स्वय तत्त्वज्ञ श्रमणोपासक था। इसकी प्रतिज्ञा थी कि वह निरपराधी जीव को नही मारेगा। वरुण ने कूणिक के सेनापति वज्री को मार गिराया। कूणिक दिव्य कवच से सुरक्षित था, उस पर चेटक राजा ने बाण चलाया, परन्तु उसका बाण कवच को नही भेद सका। प्रतिज्ञा अनुसार चेटक ने दूसरा बाण नही चलाया।

दूसरे दिन जब युद्ध हुआ तो कूणिक के पक्ष के जो रथ चलते थे, जिनमे घोडे, सारथी व योद्धा कोई नही होता, अर्थात् मानव–पशुरहित स्वचालित रथ थे। उस रथ मे मूसल लगे थे, रथ–प्रतिपक्षी सेना को मूसल से मथता, नष्ट करता हुआ रक्त का कीचड करता हुआ जन–प्रलय मचाता रणभूमि मे दौडता था। इस युद्ध मे छियानवें लाख मनुष्यो का सहार हुआ। चेटक का अमोघ बाण आज भी व्यर्थ चला गया।

इस पराजय से क्षुब्ध होकर चेटक राजा वैशाली मे चला गया। नगर द्वार बन्द कर वह पौषधशाला मे जाकर ध्यानस्थ होकर बैठ गया। कूणिक वैशाली के दृढ द्वार नही तोड सका, फिर छल–छन्द रचकर कूणिक ने वैशाली का विनाश कर दिया।

कोटि सख्या . एक चिन्तन

इस सूत्र मे सेना की सख्या मे 'कोटि' शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ है, परम्परानुसार कोटि का अर्थ करोड ही किया जाता रहा है, किन्तु अनेक स्थानो पर यह सख्या विचारणीय प्रतीत होती है। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने प्रावीन सन्दर्भो के माथ इन शब्दो पर अपनी टिप्पणी की है, जो इस प्रकार है–

–''इस स्थान पर कोटि मनुष्यो का उल्लेख है–कूणिक की ३३ करोड सेना का वर्णन है। राजा चेटक एव अठारह गणराजाओ की सेना का प्रमाण सत्तावन करोड बताया गया है। यहाँ पर हमारा विचार है कि कोटि एक विशेष सज्ञा होगी जो उस समय सैनिक परिमाण के लिए प्रयुक्त हुआ करती थी।

तपागच्छीय श्वेताम्बर मुनि श्री आत्माराम जी महाराज अपने ग्रन्थ 'जैन तत्त्वादर्श' के सातवे परिच्छेद सम्यक्त्व के पाँच अतिचारो का वर्णन करते हुए प्रथम शका अतिचार मे लिखते है–''सो जिन–वचन मे शका नही करनी, क्योकि जिन–वचन बहुत गम्भीर है और उसका यथार्थ अर्थ कहने वाला इस काल मे कोई नही है और जो शास्त्र है सो अनेक नयात्मक है उनकी गिनती तथा सज्ञा विचित्र है। कई एक जगह तो 'कोटि' शब्द करोड का वाचक है और किसी जगह रूढ वस्तु २० (बीस) की सख्या का वाचक है। क्योकि श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण सर्वसघ के समस्त आचार्य सघयण नामक पुस्तक मे तथा विशेषवती ग्रन्थ मे लिखते है कि कोई आचार्य 'कोडी' शब्द को एक करोड का वाचक नही मानते है, किन्तु संज्ञातर मानते है, क्योंकि वर्तमान काल मे भी बीस को कोडी कहते है तथा सौराष्ट्र देश मे भी पाँच आने की कोडी है। यह जैसे कोडी शब्द मे मतान्तर है ऐसे ही शत सहस्र शब्द भी किसी सज्ञा के वाचक होवे तो कुछ दोष नही तथा शत्रुञ्जय तीर्थ मे जो मुनि मोक्ष गए है वहाँ भी पाँच कोडी आदि शब्द सज्ञा–विशेष मे है। ऐसे

ही ५६ करोड यादवो की सख्या कोई सज्ञा-विशेष है। कोणिक एव चेटक राजाओ की सेना मे जो 'कोडी' 'शत' 'शतसहस्र' शब्द है सो सज्ञा-विशेष के वाचक है। इसलिए सब शब्दो का सर्व जगह एक सरीखा अर्थ मानना युक्त नही है। इस कथन मे पूज्य श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण पूरे साक्षी देने वाले है।"

हो सकता है 'कोटि' शब्द आज की सैनिक शब्दावली के 'कम्पनी' शब्द का बोधक हो। किसी भी कम्पनी मे सैनिको की सख्या निश्चित नही होती, कम्पनी विशिष्ट सैनिक समूह को कहा जाता है। ऐसे ही कोटि मे सैनिको की सख्या निश्चित नहीं होती होगी। फिर भी सत्य अर्थ तो केवली भगवान को ही ज्ञात होगा। *[निरयावलिका टीका, सूत्र ९२, पृ १५०]*

Elaboration—Garuda Vyuha (eagle formation)—This aphorism mentions *garuda vyuha* (eagle formation) and *shakat vyuha* (cart formation) Acharya Shri Atmaram ji M has explained this in his Hindi commentary (*Tika*) *Garuda Vyuha* (eagle formation) means the arrangement of army where the spearhead is massive like an eagle This frightens the opposing army facilitating an effective initial attack

Shakat vyuha (cart formation) means an arrangement where the spearhead is formed predominantly by chariots (*shakat*), middle portion has lesser density of chariots and the rear, once again, has higher density of chariots

Kunik arranged his army in the eagle formation and Chetak in the cart formation More details about the *Rath-musal* battle are mentioned in *Bhagavati Sutra* 7/9, the gist of which is as follows

RATH-MUSAL BATTLE

In the aforesaid aphorism-33 it is mentioned that for the *Rath-musal* battle Kunik used the eagle formation In *Bhagavati Sutra* there is a mention of two great battles fought by Kunik and Chetak Of these the *Mahashilakantak* battle was fought on the first day and the *Rath-musal* battle on the second This war ended in defeat of King Chetak's armies and victory of King Kunik But according to this description in *Niryavalika Sutra* the first ten days of the war saw the deaths of the ten brothers including Kaal Kumar From this mention it appears that the *Mahashilakantak* and *Rath-musal* battles were fought after the first ten days of the war Other ancient scriptures also confirm this

As the story goes, in the first ten days of the great war the ten commanders of Kunik's army (his ten brothers) were killed by just one shot of arrow each by King Chetak On the eleventh day it was the turn of Kunik and he had the fear of life He thought—'The arrow launched by King Chetak is unsurmountable I will never be able to conquer him' And he

came out with a solution He called a cease fire for three days After a three day fast he evoked Shakrendra and Chamarendra, his friendly gods from the past birth

Shakrendra said—"I cannot kill King Chetak as he is a highly valorous and righteous *shravak* (devout Jain) However, as a friend I will make arrangements for your security As a gesture of friendship Shakrendra created diamond hard and impenetrable dress and armour with his divine power By wearing it Kunik became fully protected With his divine powers Chamarendra created two war-machines (tank like) called *Mahashilakantak* and *Rath-musal*

In the *Mahashilakantak* battle missiles including foliage, wood, pebbles, and rocks were launched with the divine war-machine These missiles hit the opposing army like a great boulder (*mahashila*) and the fiercest of weapons of the opposition was rendered ineffective like a small thorn (*kantak*) In this battle eight million four hundred thousand soldiers were killed In this battle the commander of King Chetak's army was Varun, a devout and scholarly *shravak* He was the grandson of Naag and had taken an oath that he will not kill an innocent being Varun killed the commander of Kunik's army, Vajri Kunik himself was protected by his divine armour and King Chetak could not penetrate it with his one arrow. According to his vow, Chetak did not use another arrow

On the second day Kunik used the divine machines (*Rath-musal*) made in the form of automated chariots, which had neither horses nor charioteers or warriors These chariots were fitted with maces While moving, this chariot trampled and destroyed the opposing army with its maces in motion This killing machine turned human beings into bloody slime covering the battle ground In this battle nine million six hundred thousand men were annihilated Chetak's unsurmountable arrow was wasted this day also

Dejected by this defeat Chetak retreated to Vaishali city Closing the city gates he went into the *paushadh shala* (place of stay for ascetics) and sat in meditation Kunik could not open or break the strong gates of Vaishali At last he resorted to deception and guile to destroy Vaishali

THE NUMBER KOTI : A VIEW

In context of the size of the army the term *'kodi'* (*koti*) has been frequently used in this aphorism Traditionally it has been translated as *karod* or *crore* (ten million) but in many instances this interpretation does

not fit and requires more detailed analysis On the basis of ancient references Acharya Shri Atmaram ji M has commented on this as follows—

"Here there is a mention of *kodi* (*koti*) men and description of the 33 *kodi* (*koti* or crore or ten million) strong army of Kunik The numerical strength of the combined army of King Chetak and the heads of eighteen republics is said to be 57 *kodi* (*koti* or *crore* or ten million) In my opinion the term *kodi* (*koti*) carries a special meaning here It might have been a noun specially coined, in army terminology of those times, for a unit representing some specific strength in numbers

In the seventh chapter of his book *Jain Tattvadarsh*, while describing five transgressions of *samyaktva* (righteousness) Muni Shri Atmaram ji M of *Shvetambar Tapagachha* sect mentions in context of **Doubt : The First Transgression—**" Therefore do not question the word of the Jina because the word of the Jina is very profound and in these times there is no one who can truly and exactly interpret it Also, the scriptures are based on multiple viewpoints and the terminology for numbers used there is strange At some place *kodi* (*koti*) means *crore* and at some other place it is used to indicate the colloquial term for a count of 20 This is because in his works *'Sarva Sangh ke Samast Acharya Sanghayan'* and *'Visheshavati'* Shri Jinabhadra Gani Kshamashraman mentions that some *acharyas* do not accept that the term *'kodi'* means crore They believe that it is a noun coined for some specific number The evidence for this is that even in modern times a count of twenty is called *'kodi'* Also, in Maharashtra five annas make a *kodi* (five annas have twenty paise) As *kodi* represents a specific unit, it would not be surprising if the term *'shat-sahastra'* also represents some such unit In the statement that the number of ascetics liberated from Shatrunjaya is five *kodi*, the term *kodi* means some specific unit In the same way 56 *kodi* (*koti*) Yadavs is also some specific unit The use of the terms *'kodi'*, *'shat'*, and *'shat-sahasra'* with reference to the armies of King Kunik and King Chetak also denote some specific units Therefore it is not proper to believe that one word has just one meaning Jinabhadra Gani Kshamashraman provides authentication of this view

"It is possible that the term *'kodi'* (*koti*) has been used to indicate a group of soldiers exactly as terms like company, battalion or brigade are used in modern army terminology The exact number of soldiers forming a company or other such group varies from army to army and is not fixed universally In the same way the number of soldiers in a *kodi* may also not have been fixed Any way, the exact meaning was known only to the omniscient " (*Niryavalika*-92 p 150)

३४. 'काले णं भंते ! कुमारे चउत्थीए पुढवीए.... अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

''गोयमा, महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइन्नो (जाव) सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ (जाव) अंतं काहिए।'

'तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।'

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥१॥

३४. गौतम स्वामी ने पुन प्रश्न किया–''भते ! वह कालकुमार चौथी नरक भूमि से निकलकर कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?''

भगवान–''गौतम ! महाविदेह क्षेत्र मे जो अनेक ऋद्धिमान धनधान्य से युक्त कुल है, उनमे जन्म लेकर दृढप्रतिज्ञकुमार के समान (रायपसेणियसूत्र मे दृढप्रतिज्ञ का वर्णन है) सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, यावत् परिनिर्वाण को प्राप्त होगा और समस्त दु खो का अन्त करेगा।''

श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा–''आयुष्मान् जम्बू ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव कथन किया है।''

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

CONCLUSION

34. Gautam Swami again asked—*"Bhante* ! Where will Kaal Kumar go from the fourth hell ? Where will he reincarnate ?

"Gautam ! Like prince Dridhapratijna he will be born in the Mahavideh area (a mythical area) in one of the clans that are affluent, brilliant, influential, and wealthy He will then attain perfection, enlightenment, liberation and nirvana ending all miseries " (for the story of Dridhapratijna refer to *Rayapaseniya Sutra)*

Shri Sudharma Swami concluded—"Long lived Jambu ! This is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika* narrated by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state "

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

परिशिष्ट

कूणिक अजातशत्रु से सम्बन्धित विशेष तथ्य

औपपातिकसूत्र तथा निरयावलिकासूत्र मे मगधपति कूणिक के सम्बन्ध मे काफी वर्णन है। औपपातिक मे कूणिक का चरित्र एक आदर्श शासक और जिन उपासक का है, परन्तु निरयावलिका मे कुछ भिन्न-एक महत्त्वाकाक्षी, अहकारी, राज्य-विस्तार का लिप्सु और पितृघातक के रूप मे अकित है।

प्रस्तुत निरयावलिका मे सक्षिप्त मे सम्राट् श्रेणिक व कूणिक से सम्बन्धित जो प्रसग है, उनका पूर्वापर सम्बन्ध और स्पष्टीकरण समझने के लिए यहाँ कुछ विस्तार से दिया जा रहा है।

मगध सम्राट् श्रेणिक राजा प्रसेनजित के सौ पुत्रो मे सबसे ज्येष्ठ प्रतापी और बुद्धिमान् था। उसके पिता प्रसेनजित भगवान पार्श्वनाथ के उपासक जिनभक्त थे। राजा प्रसेनजित ने जब देखा कि उसके पुत्र राज्य-सत्ता के लोभ मे परस्पर एक-दूसरे पर घात लगाये बैठे है तो उसने श्रेणिक को जीवित रखने के लिए किसी बहाने देश निकाला दे दिया। इस निर्वासित काल मे श्रेणिक ने बौद्ध मठो मे आश्रय लिया, भिक्षुओ के सम्पर्क मे आया। उनके सद्व्यवहार से प्रभावित होकर वह उनका आदर करने लगा।

इसी प्रवास मे वेनातट के वणिक् श्रेष्ठी की अत्यन्त बुद्धिमती सुशील पुत्री नन्दा के साथ उसका विवाह हो गया और वह वही रहने लगा। यही पर नन्दा ने एक पुत्र को जन्म दिया जो बुद्धिनिधान अभयकुमार नाम से प्रसिद्ध हुआ। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर श्रेणिक राजगृह मे आ गया और राजगृह का शासक बना। अपनी बुद्धिमत्ता, नीति-कुशलता तथा पराक्रम के बल पर उसने मगध साम्राज्य को समृद्धि के शिखर तक पहुँचा दिया।

जैन साहित्य मे श्रेणिक का नाम 'भभसार' तथा बौद्ध साहित्य मे 'बिम्बसार' प्रसिद्ध है।

श्रेणिक की रानियाँ

जैन आगमो व ग्रन्थो के अनुसार राजा श्रेणिक की पच्चीस रानियो का उल्लेख मिलता है। अन्तकृद्दशाग मे नन्दा, नन्दमती, काली, सुकाली आदि २३ रानियो का वर्णन है। श्रेणिक की मृत्यु के पश्चात् इन्होने भगवान महावीर के पास दीक्षा ग्रहण कर कठोर उग्र तप साधना कर निर्वाण प्राप्त किया। ज्ञाताधर्मकथाग मे मेघकुमार की माता धारिणी का और दशाश्रुतस्कन्ध मे कूणिक की माता चेलना रानी का उल्लेख है।

श्रेणिक का पुत्र-परिवार

श्रेणिक के ४० पुत्रो का उल्लेख भिन्न-भिन्न आगमो मे मिलता है। जाली, मयाली आदि २३ राजकुमारो का वर्णन अनुत्तरोपपातिसूत्र मे है। वे दीक्षा लेकर उग्र तपश्चरण कर अनुत्तरविमान मे उत्पन्न हुए। मेघकुमार का कथन ज्ञातासूत्र मे है। अभयकुमार का वर्णन भी अनेक सूत्रो मे है। नन्दीषेण भी श्रमण बनकर साधना-पथ पर बढा। वेहल्ल, कूणिक तथा कालकुमार आदि कुल बारह पुत्रो का वर्णन निरयावलिका मे आया है।

कूणिक-श्रेणिक का पूर्वबद्ध वैर

श्रेणिक के पुत्र चेलना के अगजात तीन पुत्रो का उल्लेख आगमो मे आता है-कूणिक, वेहल्ल तथा वेहायसकुमार।

निरयावलिका मे कूणिक के जन्म का सक्षिप्त वर्णन है। इस प्रसग मे ज्ञातव्य यह है कि कूणिक के मन मे श्रेणिक के प्रति जो द्वेषभाव था उसका बीज उनके पूर्वभव के सम्बन्धो मे छिपा है। अनेक जन्म पूर्व बसन्तपुर के राजा का पुत्र था सुमगल। सुमगल बहुत ही गुणी, धर्मप्रिय था। मत्रिपुत्र सेनक से उसकी मित्रता थी। सेनक दीखने मे बडा कुरूप था। राजकुमार सुमगल उसकी कुरूपता का मजाक उडाकर उसके साथ हँसी-मजाक करता रहता। अपनी कुरूपता पर कसे जाने वाले व्यग्य वचनो से तग आकर सेनक घर से निकल गया और एकान्त जगल मे तप करने लगा। एक-एक मास का कठोर तप करके उसने अपना शरीर अत्यन्त क्षीण कर डाला। तपस्वी सेनक एक बार बसन्तपुर मे आया। राजपुत्र सुमगल उसके दर्शन करने गया और उसे मासिक तप का पारणा राजमहल मे करने को आमत्रण दिया। पारणे के दिन सेनक राजमहल की तरफ आया, परन्तु उसी रात राजा सुमगल बीमार होने से प्रात.काल तक सोया रहा, तपस्वी बिना पारणा लिए ही लौट गया और उसने दूसरा मासिक तप स्वीकार कर लिया। सुमगल को पता चला, तपस्वी आकर भूखा ही लौट गया, उसने जाकर क्षमा माँगी और दूसरे मासिक तप का पारणा राजमहल मे करने को पुन आमत्रण दिया। दूसरी बार भी तपस्वी आया परन्तु सुमगल बीमार हो गया, पहरेदार ने द्वार से ही तपस्वी को भूखा लौटा दिया। तपस्वी ने तीसरा मासिक तप स्वीकार कर लिया।

सुमगल फिर जाकर क्षमा माँगता है और सेनक फिर तीसरे मास का पारणा करने की पुरजोर प्रार्थना करता है। सयोग ऐसा बना कि इस बार फिर पारणे के दिन सुमगल बीमार हो गया, तपस्वी पारणा लेने का सकल्प लिए आता है। द्वारपाल ने सोचा-'जब-जब यह तपस्वी आता है राजा बीमार हो जाता है, यह मनहूस है।' क्रोध मे आकर द्वारपालो ने तपस्वी को कोडो से पीटा और धक्के देकर निकाल दिया। तपस्वी का क्रोध भडक उठा। क्रोध मे उसने निदान किया-''मै इसका बदला लूँगा। ऐसे ही कोडे मार-मारकर इसे भूख से तडपाऊँगा।''

तपस्वी सेनक मरकर बाणव्यन्तर देव बना और वहाँ से मरकर सुमगल क्रमश राजा प्रसेनजित का पुत्र श्रेणिक बना तथा तपस्वी सेनक का जीव चेलणा की कुक्षि से कूणिक के रूप में जन्म लेता है। पूर्वबद्ध शत्रुता के सस्कारो के कारण ही चेलना को श्रेणिक के कलेजे का माँस खाने का दुष्ट दोहद उत्पन्न होता है और प्रारम्भ से ही वह इसे पितृघाती के रूप मे मानने लगती है।

श्रेणिक राजा वृद्ध हो चला है, तब भी उसने कूणिक को राज्य-भार नही सौपा, कूणिक के मन मे तीव्र राज्यलिप्सा जगती है और कालकुमार आदि दसो भाइयो से मिलकर षड्यत्र रचकर श्रेणिक को कारागार मे बद करता है। भूखा-प्यासा रखकर कोडो से मारता है।

कथाकारो ने इस घटना के पीछे पूर्वजन्म का यह वैर विपाक बताया है।

मगध राज्य के दो अनमोल रत्न

निरयावलिकासूत्र मे बताया है, सेचनक गधहस्ती तथा अठारह लडियो वाला वकचूल हार के कारण कूणिक ने युद्ध किया। यह दोनो वस्तुएँ मगध राज्य के अनमोल रत्न थे। इनकी प्राप्ति की घटना इस प्रकार है।

राजगृह के निकटवर्ती वनो मे तापसो का एक आश्रम था। वहाँ वृक्षो के सघन झुण्ड मे एक हथिनी ने गुप्त रूप मे एक शिशु को जन्म दिया। यह शिशु हाथी जन्मकाल से ही तापसो के निकट रहता। तापस उसे केला आदि कदमूल फल खिलाते और उससे बहुत प्यार करते। तापस नदी से जल लाकर वृक्षो को सीचते थे, उनके साथ शिशु हाथी भी सूँड मे जल भर-भरकर लाता और वृक्षो को सीचता रहता। वृक्षो को सीचते रहने से तापसो ने उसे 'सेचनक' (सीचने वाला) नाम दे दिया। बडा होने पर वह हाथी अत्यन्त बलिष्ठ हो

गया। वनो मे मस्ती से अकेला घूमता। दूसरे हाथियो से भिड जाता कभी क्रोध मे आकर वृक्षो को उखाड फेकता। एक बार कोई दूसरा बूढा हाथी उधर आ गया। तरुण सेचनक उस बूढे हाथी से भिड गया और घमासान युद्ध किया। इस युद्ध मे सेचनक ने बूढे हाथी को घायल कर डाला। परन्तु फिर भी उसका क्रोध शान्त नही हुआ। क्रोध मे फुँकारता वह आश्रम मे आया और आश्रम के कदली वृक्षो एव पुष्प वृक्षो को भी उखाड–पछाड करने लगा। तापसो ने यह देखा तो सेचनक को डाँटा फटकारा। इससे भी सेचनक का क्रोध अधिक भडक उठा और अब वह जगल मे उत्पात मचाने मचलता रहता। सेचनक के उत्पातो से तग आकर तापसो ने राजा श्रेणिक के पास रक्षा की पुकार की। श्रेणिक ने सैनिको को भेजा, सेचनक को पकडवाया। इसे देखा तो अभयकुमार ने बताया–यह तो गधहस्ती है, बहुत ही श्रेष्ठ शुभ लक्षणो वाला है। राज्य का पट्टहस्ती बनने योग्य है। राजा श्रेणिक ने तब से सेचनक गधहस्ती को पट्टहस्ती स्थापित कर दिया। गधहस्ती के शरीर से एक विशेष प्रकार की गध निकलती रहती है, इस गध से आकृष्ट हुई हथिनियाँ उसकी तरफ खिची चली आती है, किन्तु दूसरे हाथी इस गध से भयत्रस्त होकर दूर पलायन कर जाते है।

कहा जाता है–इस सेचनक गधहस्ती को जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त था और उसका मतिज्ञान बहुत निर्मल था। यह उत्कृष्ट स्वामिभक्त था। उस युग मे दो गधहस्तियो का वर्णन आता है–एक मगध मे सेचनक गधहस्ती था, दूसरा उज्जयिनी नरेश चण्डप्रद्योत के पास अनलगिरि हाथी।

वकचूल हार

राजा श्रेणिक एक बार भगवान महावीर की धर्मदेशना सुनकर लौट रहे थे। मार्ग मे उन्होने एक श्रमण को वृक्षो के कच्चे फल तोडकर खाते देखा। श्रेणिक ने मुनि को समझाया–"मुने ! ऐसा धर्म–विरुद्ध आचरण क्यो करते हो ?"

मुनि बोला–"मुझे बहुत भूख लगी है।"

राजा ने कहा–"चलो मेरे यहाँ शुद्ध भिक्षा ले लो।"

मुनि ने उत्तर दिया–"तुम क्या जानो, चोरी–छिपे सभी श्रमण जगल मे वृक्षो से फल तोड–तोडकर खाते है।" श्रेणिक ने उसे समझाया और कहा–"ऐसा मिथ्या भाषण क्यो करते हो ? भगवान महावीर के श्रमण उत्कृष्ट शुद्ध आचारवान है।"

श्रेणिक कुछ दूर आगे चला तो एक सरोवर के किनारे एक सुन्दर तरुण साध्वी शरीर के अगोपाग धो रही थी। राजा को आश्चर्य हुआ, साध्वी को देखा तो पता चला वह तो गर्भवती है ! राजा ने इस दुराचरण के लिए उसकी भर्त्सना की, साध्वी महावीर शासन की सभी साध्वियो पर ऐसे गुप्त दुराचार का आरोप लगाने लगी।

राजा ने उसे फटकारा–"अपनी भूल छिपाने के लिए दूसरे पवित्र चारित्रवान साधु–साध्वियो पर झूठा कलक लगाते तुम्हे शर्म आनी चाहिए। मुझे दृढ विश्वास है, भगवान महावीर के सभी श्रमण–श्रमणियाँ निर्मल शुद्ध आचारवान् है। तुम्हारा कथन सर्वथा मिथ्या है।"

इस प्रकार श्रेणिक के मन मे भगवान के शासन के प्रति अत्यन्त दृढ श्रद्धा–विश्वास की प्रतीति देखकर एक दिव्य देव–पुरुष प्रकट हुआ और नमस्कार कर बोला–"हे राजन् ! इन्द्र महाराज ने आपकी दृढ सम्यक्त्व की प्रशसा की थी, मै उसी की परीक्षा लेने आया था और यह सब नाटक मैने ही रचा है, मुझे क्षमा करे। आप सचमुच मे निर्मल आस्थावान दृढ सम्यक्त्वी है।" देवता ने प्रशसा करके राजा श्रेणिक को

दो उपहार दिये। एक अठारह लड़ियो वाला दिव्य हार तथा मिट्टी के दो गोले। राजा ने दिव्यहार जो वंकचूल हार के नाम से प्रसिद्ध हुआ रानी चेलना को दिया और मिट्टी के गोले अभयकुमार की माता नन्दा रानी को दिये। मिट्टी के गोले देखकर नन्दा ने अपना अपमान समझा, क्रोध मे आकर फेक दिये। गोले फूटे तो एक गोले से दो दिव्य कुण्डल और दूसरे से देवदूष्य वस्त्र प्रकट हुए।

सेचनक गधहस्ती और देवप्रदत्त अठारह लड़ियो वाला वकचूल दिव्यहार मगध राज्य की अद्‌भुत सम्पत्ति थी। आवश्यकचूर्णि के अनुसार मगध के पूरे ऐश्वर्य के मूल्य के बराबर इन दोनो का मूल्य था।

APPENDIX

IMPORTANT FACTS REGARDING KUNIK AJATASHATRU

Aupapatık Sutra and *Nıryavalıka Sutra* contaın ample detaıls about Magadh Emperor Kunık In *Aupapatık*, Kunık has been described as an ıdeal ruler and a devotee of the Jına but ın *Nıryavalıka* he has been paınted dıfferently as an ambıtıous and egotıstıc ruler wıth terrıtorıal ambıtıons and a person who kılled hıs father

In order to properly and chronologıcally understand the brıef descrıptıon about Emperoı Shrenık and Kunık avaılable here, we present the story wıth some more detaıls

Magadh Emperor Shrenık was the eldest, most valourous and ıntellıgent among the hundred sons of Kıng Prasenjıt who was a devotee of Bhagavan Parshva Nath When Kıng Prasenjıt realızed that hıs sons, covetıng for the throne, are lookıng for opportunıtıes to kıll each other, he exıled Shrenık on some pretext, ın order to save hım Durıng thıs perıod of exıle Shrenık took refuge ın Buddhıst monasterıes and came ın contact wıth *Bhıkshus* Impressed by theır good treatment he developed a healthy respect for them

Durıng thıs exıle he also got marrıed to Nanda, the hıghly vırtuous and ıntellıgent daughter of a rıch merchant of Venatat cıty There only, Nanda gave bırth to a son who later became famous as Abhaya Kumar, the storehouse of wısdom On gettıng the news of hıs father's death, Shrenık returned to Rajagrıha and ascended the throne Wıth hıs ıntellıgence, state-craft and valour he took the Magadh empıre to new heıghts of prosperıty and glory

In Jaın lıterature Shrenık ıs popularly known as Bhambhasar and ın Buddhıst lıterature as Bımbasar

CONSORTS OF SHRENIK

There ıs a mentıon of Kıng Shrenık's twenty five queens ın *Agamıc* and other scrıptures of Jaıns In *Antakrıddashanga* there ıs a mentıon of twenty three queens of Shrenık ıncludıng Nanda, Nandamatı, Kaalı, and Sukaalı

After the death of Shrenik they all got initiated in Bhagavan Mahavir's order and attained nirvana after rigorous austerities In *Jnatadharmakathanga* is the mention of Megh Kumar's mother queen Dharini and in *Dashashrutaskandh* that of Kunik's mother Queen Chelana

SHRENIK'S SONS

In various *Agam* works we find mention of thirty six sons of Shrenik In *Anuttaraupapatik Sutra* we find mention of twenty three sons including Jaali and Mayali They all got initiated and after rigorous austerities reincarnated as gods in *Anuttar Vimans* The story of Megh Kumar is available in *Jnata Sutra* Nandishen also became an ascetic and took to the spiritual path *Niryavalika* has the description of Kunik and his ten brothers including Kaal Kumar

ANIMOSITY OF KUNIK AND SHRENIK

There is a mention of three sons of Shrenik by Queen Chelana—Kunik, Vehalla, and Vehayas

In *Niryavalika* there is a brief description of the birth of Kunik This incident conveys that the feeling of animosity for Shrenik in Kunik's mind had its root in their relationship in the past births

Many births earlier the king of Basantpur had a son named Sumangal who was highly virtuous and religious Senak, the minister's son, was his friend Senak was ugly in appearance In light vein Prince Sumangal used to make fun of his ugliness constantly Fed up of the sarcastic remarks on his ugly appearance, Senak left his house, went into the jungle and started practicing austerities in solitude He made his body weak and emaciated by observing month long fasts Once hermit Senak came to Basantpur Prince Sumangal went to pay him homage and invited him to break his month long fast in the palace On the day of fast-breaking Senak went to the palace But as King Sumangal got sick the previous night he slept till late in the morning The hermit returned without breaking his fast and he commenced another month long fast When Sumangal came to know that the hermit had returned without breaking his fast, he came to Senak and sought his forgiveness This time also he invited the hermit to the palace for breaking his fast The second time also Senak came to the palace but the king was indisposed and the palace guard sent back the hermit without offering him food Senak commenced his third month long fasting

Sumangal again came and sought forgiveness He once again beseeched Senak to come to the palace to break his third month long fast Coincidentally this time also Sumangal fell ill on the day of fast-breaking Senak came with the intention of seeking alms for breakfast The guard thought that every time that hermit came the king fell sick, thus he was ominous The irritated guards

flogged the hermit and threw him out The hermit got enraged and resolved—"I will take revenge I will make him suffer flogging and hunger"

After death hermit Senak reincarnated as a *Vanavyantar* (interstitial) god Then Sumangal reincarnated as King Prasenjit's son Shrenik and the interstitial god that was hermit Senak reincarnated as Queen Chelana's son Kunik The feelings of animosity from the earlier births surfaced and inspired Chelana to eat flesh from Shrenik's belly Chelana considered her son as killer of his father from the very beginning

Even when Shrenik became old he delayed transferring of power to his son and heir Kunik At last, driven by his intense desire for power, Kunik conspired with his ten brothers including Kaal Kumar and imprisoned Shrenik, deprived him of food and water, and flogged him with a whip

According to the authors, this incident was caused by precipitation of the animosity from the past births

TWO PRICELESS TREASURES OF MAGADH

According to *Niryavalika Sutra* Kunik fought a war for the great elephant Sechanak and the eighteen string necklace called Vankachula These two things were priceless treasures of the state of Magadh The story of their acquisition goes like this—

In the forests around Rajagriha there was a hermitage There a she-elephant secretly gave birth to a little elephant in a thick cluster of trees Since the very beginning this baby elephant lived with the hermits The hermits loved him very much and fed him bananas and other fruits When the hermits brought water from the river to water the plants in the hermitage, the baby elephant would also imitate them by bringing water in his trunk As he watered the plants the hermits named him Sechanak (one who waters plants) Sechanak grew to be a very strong bull elephant He roamed around alone in the jungle Some times he would fight other elephants and at others root out and toss around large trees Once an old elephant crossed his path and Sechanak fought it bitterly and wounded it This victory did not pacify his rage and when he came to the hermitage he was still mad He entered the hermitage trumpeting angrily and trampled the banana trees and other plants When the hermits saw all this they scolded Sechanak but this added fuel to the fire Sechanak continued his trampling and destroying vegetation in the jungle Fed up with this the hermits sought help from King Shrenik The soldiers of the king trapped the elephant and brought it to the Kings elephant yard When Abhaya Kumar saw Sechanak he informed that this was a rare elephant known as *Gandh Hasti* and was very auspicious It deserved being made the chief elephant of the state King Shrenik followed Abhaya Kumar's advice and Sechanak became the chief elephant A *Gandh Hasti* emits an aroma that draws she-elephants to it but male elephants get panicky and run away

It is said that Sechanak elephant was endowed with the knowledge of his past birth and his sensory knowledge was also pristine He was faithful to his master In scriptures we find mention of two such great elephants of that era—Sechanak elephant of Magadh and Analgiri elephant of King Chandapradyot of Ujjayini

VANKACHULA NECKLACE

King Shrenik was once returning after attending the discourse of Bhagavan Mahavir On the way in a jungle he saw an ascetic plucking raw fruits from trees and eating them Shrenik advised him—"O muni ! Why do you indulge in an activity proscribed in the religious code ?"

The ascetic replied—"I am very hungry"

The king said—"Come with me I will offer you food acceptable for an ascetic "

The ascetic argued—"What do you know ? All *shramans* (ascetic followers of Bhagavan Mahavir) secretly pluck fruits from trees and eat "

Shrenik refuted—"Why do you tell a lie ? The ascetic followers of Bhagavan Mahavir are upright and immaculate in maintaining purity of conduct "

On proceding ahead Shrenik saw a young and beautiful *saadhvi* (female ascetic) washing parts of her body on the bank of a lake The king was surprised when he also found that she was pregnant He admonished her for this misdeed The *saadhvi* slandered all the *saadhvis* of Bhagavan Mahavir's order blaming them generally indulging in such misdeeds

The king rebuked her—"You should be ashamed of blaming falsely the true followers of ascetic conduct just in order to conceal your misdeed It is my unwavering belief that all the *shramans* and *shramanis* (male and female ascetics) of Bhagavan Mahavir's order are true followers of pure ascetic conduct What you say is absolutely false "

Seeing King Shrenik's absolutely unwavering faith for Bhagavan Mahavir's order a divine person appeared and said after greeting—"O King ! Indra had praised your perfect righteousness In order to test it I created all this Please pardon me You are, indeed, an extremely righteous person with purity of faith " With this honour the god gave two gifts to King Shrenik—a divine eighteen string necklace and two earthen balls The king gave the Vankachula necklace to Queen Chelana and the earthen balls to Abhaya Kumar's mother Queen Nanda Queen Nanda felt insulted on seeing the earthen balls and threw them The balls broke and from one came out a pair of divine earrings and from the other a divine dress

The great elephant Sechanak and the divine eighteen string necklace called Vankachula were two priceless treasures of the state of Magadh According to *Avashyak Churni* these two were valued to be equal to all the remaining wealth of the Magadh empire

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

३५. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी।

तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था सुकुमाला।

तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था सुकुमाले। तए णं से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं, जहा कालो कुमारो, निरवसेसं तं चेव भाणियव्वं जाव महाविदेहे वासे... अंतं काहिइ।

॥ बीयं अज्झयणं समत्तं॥१।२॥

३५. सुधर्मा स्वामी से जम्बू स्वामी ने पूछा-"भगवन् ! श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव बताया है तो भगवन् ! निरयावलिका के द्वितीय अध्ययन का श्रमण भगवान महावीर ने क्या अर्थ प्रतिपादन किया है ?

आर्य श्री सुधर्मा ने उत्तर दिया-"आयुष्मान् जम्बू ! उस काल उस समय मे चम्पा नाम की नगरी थी। वहाँ पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक राजा था। पद्मावती पटरानी थी।

उस चम्पानगरी मे श्रेणिक राजा की भार्या, कूणिक राजा की सौतेली माता सुकाली नाम की रानी थी, जो सुकुमाल शरीर वाली थी।

उस सुकालीदेवी का पुत्र सुकोमल अग-प्रत्यग वाला सुकाल नामक राजकुमार था।

वह सुकालकुमार किसी समय (पूर्व मे कथित युद्ध-प्रसग मे) तीन हजार हाथियो इत्यादि सहित जैसा पूर्व मे कालकुमार के विषय मे कहा, वैसा समग्र वृत्तान्त यहाँ भी जानना चाहिए अर्थात् वह भी रथ-मूसल सग्राम मे मारा गया। मरकर चौथी नरकपृथ्वी मे उत्पन्न हुआ है। वहाँ से निकलकर महाविदेह वर्ष मे उत्पन्न होकर कर्मों का अन्त करेगा। सम्पूर्ण कथन कालकुमार के समान ही जानना चाहिए।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

35. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! If this is the text and meaning of the first chapter of *Niryavalika* as told by Bhagavan Mahavir, *Bhante* ! what is the text and meaning of the second chapter of *Niryavalika* as told by Bhagavan Mahavir ?

Arya Sudharma replied—"Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Champa Outside this city was a garden called Purnabhadra The city was ruled by King Kunik The consort of the King was queen Padmavati

Also in Champa city, there lived Sukaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik She had a delicate body

Sukaali Devi had a son named Sukaal Kumar He was also delicate and handsome

That Sukaal Kumar, along with three thousand elephants (etc) joined King Kunik in the *Rath-musal* battle (remaining description same as in case of Kaal Kumar fighting the *Rath-musal* battle) After death he has reincarnated in the fourth hell From there he will reincarnate in the Mahavideh Varsh area and end all his miseries by attaining liberation Complete description should be taken similar to that in case of Kaal Kumar

● END OF SECOND CHAPTER ●

तृतीय से दशम अध्ययन
THIRD TO TENTH CHAPTER

३६. एवं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, नवरं मायाओ सरिसनामाओ।

॥ निरयावलियाओ समत्ताओ॥

॥ पढमो वग्गो समत्तो॥

३६. प्रथम अध्ययन के समान शेष आठ अध्ययन भी जानने चाहिए। इसमे इतना विशेष है कि उनकी माताओ के नाम के समान उन कुमारो के नाम है। यथा–महाकाली रानी का पुत्र महाकाल, कृष्णादेवी का पुत्र कृष्ण, सुकृष्णादेवी का पुत्र सुकृष्ण आदि। ये सभी कुमार क्रमश कूणिक की सेना के सेनापति बनकर आये और अन्त मे चेटक राजा के बाण से मारे गये।

इस प्रकार दस दिन के घोर युद्ध मे ये दसो कुमार रणक्षेत्र मे मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके आगामी जन्म का कथन सभी का समान है। महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर, मुनि–दीक्षा धारणकर, तप–सयम द्वारा समस्त कर्मो का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करेगे।

॥ निरयावलिका उपांग समाप्त॥

॥ निरयावलिका उपांग के दस अध्ययन समाप्त॥

॥ प्रथम वर्ग समाप्त॥

36. The remaining eight chapters (3rd to 10th) are same as the first chapter The only difference is that the names of the princes are similar to the names of their respective mothers For example—the name of the son of Queen Mahakalı is Mahakaal, that of the son of Queen Krishnadevi is Krishna, that of the son of Queen Sukrishnadevi is Sukrishna, and so on One after the other all these princes became the commanders of Kunik's army and were killed by the arrows of King Chetak

Thus in the fierce battles fought for ten days all these ten princes died in the battlefield The description of their reincarnation is also the same They all will reincarnate in future in the Mahavideh area, get initiated, destroy all *karmas* through austerities and attain liberation

● END OF NIRYAVALIKA UPANGA ●

● END OF THE TEN CHAPTERS OF NIRYAVALIKA UPANGA ●

● END OF THE FIRST SECTION ●

द्वितीय वर्ग : कल्पावतंसिका

उपोद्घात

प्रथम वर्ग–निरयावलिका मे श्रेणिक राजा की काली आदि दस रानियो के अगजात कालकुमार आदि दस पुत्रो का वर्णन है। महा हिंसा, महा आरम्भ और अशुभ आचरण के कारण ये दसो मरकर नरक मे उत्पन्न हुए। नरक मे उत्पन्न होने का वर्णन होने से प्रथम वर्ग का नाम निरयावलिका (नरकावलिका) है।

भगवान महावीर के श्रीमुख से काली आदि रानियो ने जब अपने पुत्रो की दु खद मृत्यु तथा अशुभ कर्मो के कारण दुर्गति गमन का कथन सुना तो उनका मन सासारिक भोगो से विरक्त हो गया और वे दसो रानियाँ भगवान महावीर के शासन मे दीक्षित हुईं। कठोर उग्र तपश्चरण कर अपना कल्याण किया। इनकी दीक्षा तथा तपश्चरण का वर्णन अन्तकृद्दशागसूत्र मे है।

बहुत सम्भव है, जब कालकुमार आदि के पुत्रो ने अपने पिताओ की इस दुर्गति का वर्णन सुना तो उनका मन भी ससार के राज–सुखो के प्रति ग्लानि से भर गया और वे भी विरक्त हो गये। तत्पश्चात् दसो कुमारो के पुत्रो ने भी भगवान महावीर की धर्मदेशना सुनी तथा प्रव्रजित हो गये।

राजा श्रेणिक के दस पुत्र राज्य–लिप्सा के कारण मरकर दुर्गति मे गये। किन्तु उसके पौत्र राज्य–वैभव का त्यागकर दीक्षित होकर उग्र तप साधना कर स्वर्गगामी बने।

इन दसो पद्म आदि राजपुत्रो के दीक्षा लेने का सक्षिप्त वर्णन कल्पावतसिका नामक द्वितीय वर्ग मे है। कल्पविमानो मे उत्पन्न होने वालो का वर्णन होने से इस वर्ग को कल्पावतसिका कहा गया है। इसके भी दस अध्ययन है।

SECOND SECTION : KALPAVATANSIKA

INTRODUCTION

The first section titled *Niryavalika* contains the stories of King Shrenik's ten sons from his ten queens including Queen Kaali As a result of their indulgence in extreme violence, extreme sin, and evil conduct they all were born in hell after their death As it contains the description of hell-bound beings this section is named *Niryavalika* (*Narakavalika*)

When the ten queens including Kaali listened from Bhagavan Mahavir about the sad demise of their sons and their passage to hell, they got detached from mundane pleasures They all got initiated in Bhagavan Mahavir's order They attained salvation by indulging in rigorous austerities The description of their initiation and austerities is available in *Antakrid-dashanga Sutra*

It is quite possible that when the sons of these princes including Kaal Kumar heard the description of the bad end of their fathers, they were also filled with aversion for the mundane and regal pleasures and got detached After that these princes also attended Bhagavan Mahavir's discourse and got initiated

After their death, King Shrenik's ten sons went to hell due to their covetousness for the throne But his grandsons renounced the regal grandeur and went to heaven after dressing intense austerities

Brief description of initiation of these princes including Padma is given in this second section titled *Kalpavatansika* As this contains the story of those destined to the *Kalp Vimans* (celestial vehicles), this section is named *Kalpavatansika* This also has ten chapters

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?

एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेण कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता। तं जहा– १. पउमे, २. महापउमे, ३. भद्दे, ४. सुभद्दे, ५. पउमभद्दे, ६. पउमसेणे, ७. पउमगुम्मे, ८. नलिणिगुम्मे, ९. आणंदे, १०. नंदणे।

जइ णं भंते ! समणेणं (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया जाव के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था सुहुमाला.। तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था सुहुमाल.। तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था, सोमाला (जाव) विहरइ।

१. जम्बू स्वामी का प्रश्न–"भगवन् ! निर्वाण को सप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने निरयावलिका नामक उपाग के प्रथम वर्ग का यह (पूर्वोक्त) भाव प्रतिपादित किया है तो हे भगवन् ! दूसरे वर्ग कल्पावतसिका के कितने अध्ययन कहे है ?"

सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मान् जम्बू ! श्रमण भगवान ने कल्पावतसिका नामक दूसरे वर्ग के दस अध्ययन कहे है जिनके नाम इस प्रकार है–(१) पद्म, (२) महापद्म, (३) भद्र, (४) सुभद्र, (५) पद्मभद्र, (६) पद्मसेन, (७) पद्मगुल्म, (८) नलिनीगुल्म, (९) आनन्द, और (१०) नन्दन।

जम्बू–"भगवन् ! यदि श्रमण भगवान ने कल्पावतसिका के दस अध्ययन कहे है तो भगवन् ! श्रमण भगवान ने कल्पावतसिका के प्रथम अध्ययन का क्या भाव कथन किया है ?"

सुधर्मा–"आयुष्मान् जम्बू ! उस काल और उस समय मे चम्पा नामक नगरी थी। (उसके उत्तर पूर्व मे) पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक वहाँ का राजा था। उसकी पटरानी का नाम पद्मावती था। *(इनका विस्तृत वर्णन औपपातिक सूत्र मे है।)*

उस चम्पानगरी मे श्रेणिक राजा की भार्या, कूणिक राजा की विमाता काली नामक रानी थी, जो अतीव सुकुमार, गुणो से सम्पन्न थी। उस कालीदेवी का पुत्र काल नामक कुमार था। उस कालकुमार की पद्मावती नामक पत्नी थी, जो सुकोमल थी, वह मानवीय सुख–भोगो को भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही थी।

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the first section of the *Upanga* named *Niryavalika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the eternal abode of the *Siddha*-state, how many chapters are said to be there in the second section called *Kalpavatansika* ?"

Sudharma Swami replied "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Kalpavatansika*, the second section They are—(1) Padma, (2) Mahapadma, (3) Bhadra, (4) Subhadra, (5) Padmabhadra, (6) Padmasen, (7) Padmagulma, (8) Nalinigulma, (9) Anand, and (10) Nandan

Jambu—"*Bhante* ! If there are ten chapters in *Kalpavatansika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika* ?"

Sudharma Swami—"Jambu ! During that period of time there was a city called Champa There was a garden called Purnabhadra (outside this city in the north-east direction) The ruler of the city was King Kunik His consort was queen Padmavati *(detailed description as in Aupapatik Sutra)*

Also in Champa city lived Kaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik She too had delicate limbs and was very beautiful Kaali Devi had a son named Kaal Kumar This Kaal Kumar's consort was Padmavati, who was very delicate She lived happily enjoying comforts of life

पद्मावती का स्वप्न-दर्शन

२. तए णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे (जाव) सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। एवं जम्मणं, जहा महाबलस्स, (जाव) नामधेज्जं-''जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं पउमे।'' सेसं जहा महाबलस्स। अट्ठओ दाओ। (जाव) उप्पिं पासायवरगए विहरइ।

सामी समोसरिए। परिसा निग्गए। कूणिए निग्गए। पउमे वि जहा महाबले, निग्गए। तहेव अम्मापिइ-आपुच्छणा, (जाव) पव्वइए अणगारे जाए (जाव) गुत्तबंभयारी।

२. वह पद्मावती देवी राज परिवार के योग्य शयन-गृह मे शय्या पर सो रही थी। वह शयन-कक्ष भीतर से विविध प्रकार के चित्रो से सुसज्जित मनोहर था। किसी एक रात्रि मे शय्या पर सुखपूर्वक शयन करती हुई सिह का स्वप्न देखकर पद्मावतीदेवी जाग गई। समय पर पुत्र को जन्म दिया। महाबल की तरह उसका जन्मोत्सव मनाया गया। ''क्योकि हमारा यह बालक कालकुमार का पुत्र और पद्मावतीदेवी का आत्मज है, अत हमारे इस बालक का नाम 'पद्म' होना चाहिए'' इस प्रकार नामकरण किया गया। शेष समस्त वर्णन महाबल के समान समझना चाहिए, अर्थात् राजसी ठाट से उसका पालन-पोषण हुआ।

यथासमय उसने कलाचार्य के पास बहत्तर कलाएँ सीखी। युवावस्था आने पर आठ कन्याओ के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ। आठ–आठ वस्तुएँ दहेज मे दी गईं। पद्मकुमार श्रेष्ठ प्रासाद के ऊपरी भाग में रहकर सुख भोगता हुआ विचरने लगा।

किसी एक समय भगवान महावीर स्वामी का चम्पा मे समवसरण हुआ। परिषद् धर्मदेशना सुनने आयी। कूणिक भी वन्दनार्थ आया। महाबल के समान पद्मकुमार भी दर्शन–वन्दना करने के लिए आया। (धर्मश्रवण कर प्रतिबोध प्राप्त कर) पद्मकुमार महाबल के ही समान माता–पिता से अनुमति प्राप्त करके प्रव्रजित हुआ, यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार होकर विचरने लगा। *[महाबल के जन्म आदि का वर्णन भगवती शतक ११/११ में देखे।]*

DREAM OF PADMAVATI

2. Once Padmavati Devi was sleeping in her royal bedroom which was beautifully decorated with a variety of paintings During the night, while comfortably sleeping, she woke up after seeing a lion in her dream In due course she gave birth to a son His birth was celebrated like that of Mahabal It was announced—"As this child is the son of Kaal Kumar and Padmavati, he should be named Padma" Thus the boy was given this name All other details should be taken exactly as those in case of Mahabal, that is He was brought up in regal grandeur and was sent to a teacher where he learned seventy two arts When he grew mature he was married to eight princesses and his parents gave him marriage gifts in sets of eight Padma Kumar lived in the upper portion of a grand mansion and enjoyed all comforts of life

Once the *samavasaran* (religious assembly) of Bhagavan Mahavir was held in Champa city People came to attend the discourse King Kunik also came to pay his homage Like Mahabal, Padma Kumar also came to pay homage and obeisance Like Mahabal, Padma Kumar (on listening to the sermon) also sought permission from his parents and got initiated, and so on up to . and wandered around after becoming a completely celibate *anagar* (ascetic) *[Story of Mahabal since his birth is in Bhagavati Sutra—11/11]*

पद्म अनगार की साधना

३. तए णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जिइ, अहिज्जित्ता, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमं (जाव) विहरइ।

तए णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं, जहा मेहो, तहेव धम्मजागरिया, चिंता। एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छित्ता विउले (जाव) पाओवगए समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामण्णपरियाए। मासियाए संलेहणाए

सट्ठिभत्ताइं। आणुपुव्वीए कालगए। थेरा ओतिण्णा। भगवं गोयमे पुच्छइ, सामी कहेइ (जाव) सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते उड्ढं चंदिम. सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। दो सागराइं।

"से णं भंते, पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं।" पुच्छा। "गोयमा, महाविदेह वासे, जहा दढपइन्नो, (जाव) अंतं काहिइ।"

निक्खेवो--तं एवं खल जंबू, समणेणं (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं॥२॥

३. तत्पश्चात् वह पद्म अनगार श्रमण भगवान महावीर के तथारूप (आगम कथित गुणो से सम्पन्न) स्थविरो के समीप रहकर सामायिक से लेकर ग्यारह अगो का अध्ययन करता है। यावत् चतुर्थभक्त, षष्टभक्त, अष्टमभक्त इत्यादि विविध प्रकार की तप साधना से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगा।

क्रमश जिस प्रकार मेघकुमार ने (ज्ञातासूत्र प्रथम अध्ययन) धर्म जागरणा करते हुए अनशन करने की भावना की, उसी प्रकार भगवान महावीर की आज्ञा लेकर विपुलगिरि पर्वत पर चढकर पादोपगमन अनशन कर साधना-आराधना करने लगा। उग्र तप आराधना से उसका शरीर अत्यन्त कृश, क्षीण अस्थिपजर मात्र हो गया।

तथारूप स्थविरो से सामायिक आदि से लेकर ग्यारह अगो का श्रवण कर परिपूर्ण पाँच वर्ष की श्रमण पर्याय का पालन किया। फिर एक मास की सलेखना अंगीकार कर, साठ भक्तो का अनशन पूर्ण कर अनुक्रम से काल को प्राप्त हुआ। उसे कालगत जानकर स्थविर पर्वत से नीचे उतरकर भगवान के समीप आये। उसके भाण्डोपकरण भगवान को बताये।

तब भगवान गौतम ने पद्म अनगार के भविष्य के विषय मे प्रश्न किया। महावीर स्वामी ने उत्तर दिया कि "यह पद्म अनगार अनशन द्वारा साठ भोजनो को छेदन कर, आलोचना-प्रतिक्रमण कर सुदूर चन्द्र आदि ज्योतिष्क विमानो के ऊपर सौधर्मकल्प मे देव रूप से उत्पन्न हुआ है। वहाँ दो सागरोपम की उसकी आयु है।"

गौतम स्वामी ने पुन प्रश्न किया-"भगवन् ! वह पद्मदेव देवलोक की आयुस्थिति पूर्ण कर उस देवलोक से च्यवन करके कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान ने उत्तर दिया-"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होगा। दृढप्रतिज्ञ के समान (जन्म-मरण का) अन्त करेगा।" *[दृढ प्रतिज्ञ का वर्णन औपपातिक सूत्र १०१-११६ मे देखे।]*

आर्य सुधर्मा कहते है-"इस प्रकार हे आयुष्मान् जम्बू ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने कल्पावतसिका के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादित किया है। इस प्रकार जैसा मैने भगवान से सुना है, वैसा मै कहता हूँ।"

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

SPIRITUAL PRACTICES OF ASCETIC PADMA

3. After getting initiated by Shraman Bhagavan Mahavir, that ascetic Padma studied all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics and so on up to . he wandered around enriching his soul by observing various austerities including one, two, and three day fasts

As Megh Kumar (*Jnata Sutra*, chapter 1) resolved to none ahead on the spiritual path by observing serial fasts so did Padma After seeking permission from Bhagavan Mahavir he climbed the Vipul-giri hill and commenced his spiritual accent by observing *padopagaman anashan* (lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree) Due to these rigorous austerities his body got extremely weak and emaciated and he was reduced to a mere skeleton

After studying all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics he immaculately observed the ascetic code for five years After that he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and met his end at the conclusion of the month long fast (avoiding sixty meals) When the senior ascetics accompanying him saw that he was dead they came and placed his ascetic equipment before Bhagavan Mahavir

Then Gautam Swami asked about the future of ascetic Padma Bhagavan Mahavir replied, "Gautam ! This ascetic Padma, after rejecting sixty meals (doing a month long fast) and doing *pratikraman* (critical review), has met his end His soul has gone beyond *Jyotishk Vimans* (the stellar celestial vehicles) including the moon and has taken birth as a god in the *Saudharma kalp* (a dimension of gods) His life span there is two *Sagaropam* "

Gautam Swami again asked, "*Bhagavan* ! completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from there, where will god Padma be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and terminate the cycles of rebirth like Dridhapratijna " *(for story of Dridhapratijna refer to Aupapatik Sutra—101-116)*

Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika* As I have heard from him and so I state "

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

४. जइ णं भंते समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?

"एवं खलु जंबू !"

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था। तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे। तस्स ण सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुउमाला।

तए णं सा महापउमा देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि, एवं तहेव, महापउमे नामं दारए, [जाव] सिज्झिहिइ। नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ। उक्कोसट्ठिईओ।

॥ बीयं अज्झयणं ॥२।२॥

४. जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भगवन् ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने कल्पावतसिका के प्रथम अध्ययन का जो भाव बताया है वह मैने सुना, अब हे भगवन् ! उसके द्वितीय अध्ययन का भगवान ने क्या आशय कहा है ? मुझे बताएँ।"

सुधर्मा स्वामी–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है–

उस काल, उस समय मे चपानगरी थी। पूर्णभद्र चैत्य था। कूणिक राजा था। पद्मावती रानी थी। उस चम्पानगरी मे श्रेणिक राजा की भार्या कूणिक राजा की विमाता सुकाली नाम की रानी थी। उस सुकाली का पुत्र सुकाल नामक राजकुमार था। उस राजकुमार सुकाल की महापद्मा नाम की पत्नी थी।

उस महापद्मा ने किसी एक रात्रि मे सुखदायी शय्या पर सोते हुए एक स्वप्न देखा, इत्यादि पहले अध्ययन के समान वर्णन कहना चाहिए। बालक का जन्म हुआ और उसका महापद्म नाम रखा गया। यथासमय वह प्रव्रज्या अगीकार करके ईशानकल्प नामक देवलोक मे उत्कृष्ट दो सागरोपम की स्थिति वाला देव बनेगा। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध–बुद्ध–मुक्त होगा।

इस प्रकार हे आयुष्मन् जम्बू ! श्रमण भगवान ने कल्पावतसिका के द्वितीय अध्ययन का जो भाव बताया है, वह मैने तुमसे कहा है।"

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

4. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! I have heard the text and meaning of the first chapter of *Kalpavatansika* as told by Shraman Bhagavan

Mahavir, who has attained nirvana *Bhante* ! Now please tell me the text and meaning of the second chapter of *Kalpavatansika* "

Sudharma Swami replied—"Long lived Jambu ! It is as follows—

During that period of time there was a city called Champa (Outside this city in the north-east direction) There was a garden called Purnabhadra The ruler of the city was King Kunik His consort was queen Padmavati Also in Champa city lived Sukaali Devi, wife of King Shrenik and a step mother of King Kunik Sukaali Devi had a son named Sukaal Kumar This Sukaal Kumar's consort was Mahapadmaa

Once Mahapadmaa while sleeping in her comfortable bed saw a dream Remaining details are same as in the first chapter A son was born and was named Mahapadma In due course he got initiated and finally he will reincarnate as a god in the *Ishan kalp* (a dimension of gods) having a life span of maximum two *Sagaropam* After completing the life-span there he will be born in the Mahavideh area and get perfection, enlightenment and liberation

"Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the second chapter of *Kalpavatansika* As I have heard from him and so I state "

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

तृतीय से दशम अध्ययन
THIRD TO TENTH CHAPTER

५. एवं सेसावि अट्ठ नेयव्वा। मायाओ सरिसनामाओ। कालाईणं दसण्हं पुत्ता अणुपुव्वीए–

दोण्हं च पंच चत्तारि तिण्हं, तिण्हं च होंति तिण्णे व।
दोण्हं च दोन्नि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ॥१॥

उववाओ आणुपुव्वीए–पढमो सोहम्मे, बीओ ईसाणे, तइओ सणंकुमारे, चउत्थो माहिन्दे, पंचमो बम्भलोए,छट्ठो लंतए, सत्तमो महासुक्के, अट्ठमो सहस्सारे, नवमो पाणए, दसमो अच्चुए। सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा। महाविदेहे सिद्धे।

॥ कप्पवडिंसियाओ समत्ताओ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो॥

५. इसी प्रकार आगे के आठो ही अध्ययनो का वर्णन जानना चाहिए। सबकी माताएँ पुत्रो के सदृश नाम वाली है अर्थात् पुत्रो के समान ही उनके नाम है, जैसे–भद्रकुमार की माता भद्रा, सुभद्रकुमार की माता सुभद्रा आदि। ये सभी अनुक्रम से कालादि दसो कुमारो के पुत्र थे। इन दसो की दीक्षा-पर्याय इस प्रकार थी–

(१) पद्म और (२) महापद्म अनगार की पाँच-पाँच वर्ष की, (३) भद्र, (४) सुभद्र और (५) पद्मभद्र की चार-चार वर्ष, (६) पद्मसेन, (७) पद्मगुल्म और (८) नलिनीगुल्म की तीन-तीन वर्ष की तथा (९) आनन्द और (१०) नन्दन की दीक्षा-पर्याय दो-दो वर्ष की थी। ये सभी श्रेणिक राजा के पौत्र थे।

इनके वर्णन क्रम मे इस प्रकार जानना चाहिए–अनुक्रम से इनका जन्म हुआ। दीक्षा ली। देहत्याग के पश्चात् प्रथम का सौधर्म कल्प मे, द्वितीय का ईशान कल्प मे, तृतीय का सनत्कुमार कल्प मे, चतुर्थ का माहेन्द्र कल्प मे, पचम का ब्राह्म कल्प मे, छठे का लान्तक कल्प मे, सातवे का महाशुक्र कल्प मे, आठवे का सहस्रार कल्प मे, नौवे का प्राणत कल्प मे और दसवे का अच्युत कल्प मे देव रूप मे उपपात हुआ। सभी की आयु स्थिति उत्कृष्ट कहनी चाहिए। ये सभी स्वर्ग से च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध होंगे।

5. The stories gıven ın the followıng eıght chapters are same as the precedıng ones The name of the mothers are sımılar to those of the sons, for example mother of Bhadra Kumar ıs Bhadra, that of Subhadra Kumar ıs Subhadra, and so on All these were sons of the ten princes ıncludıng

Kaal Kumar respectively The span of the part of their life they spent as ascetics was as follows—

(1) Padma and (2) Mahapadma—five years each (3) Bhadra, (4) Subhadra, and (5) Padmabhadra—four years each. (6) Padmasen, (7) Padmagulma, and (8) Nalinigulma—three years each (9) Anand and (10) Nandan—two years each They all were grandsons of King Shrenik

Additional information to be known about there life is—They progressed in this order they were born, got initiated and after death were instantaneously reincarnated as gods in this order—first in *Saudharma kalp*, second in *Ishan kalp*, third in *Sanatkumar kalp*, fourth in *Mahendra kalp*, fifth in *Brahma kalp*, sixth in *Lantak kalp*, seventh in *Mahashukra kalp*, eighth in *Sahasrara kalp*, ninth in *Pranat kalp*, and tenth in *Achyut kalp* There life-span there is maximum of the specific *kalp* They will descend from the heavens to reincarnate in Mahavideh area and become *Siddhas* (liberated souls)

विवेचन—इन दसो अध्ययनो की तालिका इस प्रकार है-

क्र सं	पिता	माता	नाम	दीक्षा–पर्याय	देवलोक मे उपपात
१	कालकुमार	पद्मावती	पद्मकुमार	पाँच वर्ष	सौधर्म कल्प
२	सुकालकुमार	महापद्मा	महापद्मकुमार	पाँच वर्ष	ईशान कल्प
३	महाकालकुमार	भद्रा	भद्रकुमार	चार वर्ष	सनत्कुमार कल्प
४	कृष्णकुमार	सुभद्रा	सुभद्रकुमार	चार वर्ष	माहेन्द्र कल्प
५	सुकृष्णकुमार	पद्मभद्रा	पद्मभद्रकुमार	चार वर्ष	ब्राह्म कल्प
६	महाकृष्णकुमार	पद्मसेना	पद्मसेनकुमार	तीन वर्ष	लान्तक कल्प
७	वीरकृष्णकुमार	पद्मगुल्मा	पद्मगुल्मकुमार	तीन वर्ष	महाशुक्र कल्प
८	रामकृष्णकुमार	नलिनीगुल्मा	नलिनीगुल्मकुमार	तीन वर्ष	सहस्रार कल्प
९	पितृसेनकृष्णकुमार	आनन्दा	आनन्दकुमार	दो वर्ष	प्राणत कल्प
१०	महासेनकृष्णकुमार	नन्दना	नन्दनकुमार	दो वर्ष	अच्युत कल्प

॥ कल्पावतंसिका समाप्त ॥

॥ द्वितीय वर्ग समाप्त ॥

Elaboration—Aforesaid information contained in the ten chapters compiled in tabular form is as follows—

S. No.	Father	Mother	Name	Ascetic life	Kalps where reborn
1	Kaal Kumar	Padmavati	Padma Kumar	five years	*Saudharma kalp*
2	Sukaal Kumar	Mahapadmaa Kumar	Mahapadma	five years	*Ishan kalp*
3	Mahakaal Kumar	Bhadraa	Bhadra Kumar	four years	*Sanatkumar kalp*
4	Krishna Kumar	Subhadraa	Subhadra Kumar	four years	*Mahendra kalp*
5	Sukrishna Kumar	Padmabhadraa	Padmabhadra Kumar	four years	*Brahma kalp*
6	Mahakrishna Kumar	Padmasena	Padmasen Kumar	three years	*Lantak kalp*
7	Virakrishna Kumar	Padmagulmaa	Padmagulma Kumar	three years	*Mahashukra kalp*
8	Ramakrishna Kumar	Nalinigulmaa	Nalinigulma Kumar	three years	*Sahasrara kalp*
9	Pitrasen-krishna Kumar	Anandaa	Anand Kumar	two years	*Pranat kalp*
10	Mahasen krishna Kumar	Nandanaa	Nandan Kumar	two years	*Achyut kalp*

● END OF KALPAVATANSIKA ●

● END OF SECOND SECTION ●

तृतीय वर्ग : पुष्पिका

उपोद्घात

प्रथम तथा द्वितीय वर्ग मे भगवान महावीर युग के घटना प्रसग है जबकि तृतीय वर्ग में पुष्पिका के दस अध्ययनो में भगवान महावीर और भगवान पार्श्वनाथ दोनो युगो का सम्बन्ध है। चन्द्र, सूर्य आदि ज्योतिष्कराज तथा अन्य प्रभावशाली देवियाँ भगवान महावीर के दर्शन करने समवसरण मे आती है। वहाँ अपनी ऋद्धि-वैभव दिखाने तथा भगवान के प्रति भक्ति बहुमान प्रदर्शित करने हेतु नाटक दिखाती है। उनके वापस चले जाने के पश्चात् गौतम स्वामी उनके पूर्व जीवन के विषय मे जिज्ञासा करते है तब भगवान महावीर उन देव-देवियो द्वारा पूर्व जीवन मे किये गये धर्माचरण आदि का कथन करते है। पूर्वजन्मो का सम्बन्ध भगवान पार्श्वनाथ के धर्मशासन से जुडता है।

महत्त्व की बात यह है कि प्रथम के चार अध्ययनो मे कठोर तपश्चरण करते हुए भी अपने गृहीत व्रतो मे दोष लगने पर आलोयणा-प्रतिक्रमण द्वारा शुद्धि नही करने के कारण उनका विराधक दशा मे मरण बताया है। इससे यह सदेश मिलता है कि साधक को जीवन के अतिम समय मे आलोयणा प्रतिक्रमण द्वारा व्रत शुद्धि अवश्य कर लेना चाहिए।

THIRD SECTION : PUSHPIKA

INTRODUCTION

The first and second sections have incidents of Bhagavan Mahavir's period whereas the ten chapters of the third section, *Pushpika*, contain stories related to periods of Bhagavan Mahavir and Bhagavan Parshva Nath both *Jyotishk Rajas* (kings of the stellar gods) including Chandra and Surya along with many other powerful goddesses come to behold and pay homage to Bhagavan Mahavir There the present dramatic performances in order to express their devotion and respect for Bhagavan Mahavir as also to display their opulence and grandeur After their departure Gautam Swami inquires about their past births and Bhagavan Mahavir narrates the religious conduct of those gods and goddesses during their past births These details from the past births relate to the period of influence of Bhagavan Parshva Nath

Important thing is that in the first four chapters the concerned individuals died in unrighteous state of mind because, even while indulging in rigorous austerities, they did not pursue spiritual purity by performing critical review for the transgressions in their accepted vows This indicates that during the last moments of his life an aspirant should essentially pursue spiritual purity by performing critical review for the transgressions in the vows

प्रथम अध्ययन : चन्द्र
FIRST CHAPTER : CHANDRA

१. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?"

"एवं खलु जंबू ! समणेणं (जाव) संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता। तं जहा–

चन्दे सूरे सुक्के बहुपुत्तिय पुण्ण माणिभद्दे य।
दत्ते सिवे बले या अणाढिए चेव बोद्धव्वे॥"

"जइ णं भंते ! समणेणं (जाव) संपत्तेण पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते, समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?"

१. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से प्रश्न किया–"भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय उपाग कल्पावतसिका का यह (पूर्वोक्त) अर्थ प्रतिपादन किया है तो भगवन् ! उपागो के तृतीय वर्ग रूप पुष्पिका का क्या अर्थ कहा है (कृपा कर बताएँ) ?"

आर्य सुधर्मा ने कहा–"जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने तृतीय उपाग वर्ग रूप पुष्पिका के दस अध्ययन इस प्रकार कहे है–(१) चन्द्र, (२) सूर्य (३) शुक्र, (४) बहुपुत्रिका, (५) पूर्णभद्र, (६) मानभद्र, (७) दत्त, (८) शिव, (९) बल, और (१०) अनादृत।"

जम्बू स्वामी ने पुन पूछा–"भगवन् ! यदि श्रमण भगवान ने पुष्पिका नामक उपाग के दस अध्ययन बताए है तो प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

प्रत्युत्तर मे आर्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी से इस प्रकार कहा–

1. Jambu Swamı asked—*"Bhante* ! When aforesaid ıs the text and meanıng of the second sectıon of the *Upanga* named *Kalpavatansıka* as gıven by Shraman Bhagavan Mahavır, what ıs the text and meanıng of the thırd sectıon of the *Upanga* named *Pushpıka* ?"

Sudharma Swamı replıed "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavır has preached ten chapters of *Kalpavatansıka*, thırd sectıon of the Upanga named Pushpıka They are—(1) Chandra, (2) Surya, (3) Shukra, (4) Bahuputrıka, (5) Purnabhadra, (6) Maan-bhadra, (7) Datta, (8) Shıva, (9) Bala, and (10) Anadrıt

Jambu—*"Bhante* ! If there are ten chapters ın *Pushpıka*, as gıven by Shraman Bhagavan Mahavır, what ıs the text and meanıng of ıts first chapter ?"

Sudharma Swamı replıed as follows

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। राया। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं जाव [सामाणीयसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणियाहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अन्नेहि य बहूहिं विमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं सपरिवुडे महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतल–तालतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे] **इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासए, पासित्ता, समणं भगवं महावीरं, जहा सूरियाभे, आभिओगं देवं सद्दावेत्ता (जाव) सुरिंदाभिगमणजोग्गं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।**

सूसरा घण्टा (जाव) विउव्वणा नवरं (जाणविमाणं) जोयणसहस्सवित्थिण्णं अद्धतेवट्ठिजोयण–समूसियं, महिंदज्झओ पणुवीसं जोयणमूसिओ, सेसं जहा सूरियाभस्स, (जाव) आगओ। नट्टविही। तहेव पडिगओ।

"भंते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं पुच्छा। कूडागारसाला, सरीरं अणुपविट्ठा। पुव्वभवो।

२. आयुष्मन् जम्बू ! उस काल और उस समय मे राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक नामक चैत्य (उद्यान) था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। उस काल उस समय मे श्रमण भगवान महावीर राजगृह के गुणशिलक उद्यान मे पधारे। दर्शनार्थ परिषद् आई।

उस समय मे ज्योतिष्क देवो का राजा ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र चन्द्रावतसक विमान की सुधर्मा सभा मे चन्द्र नामक सिहासन पर बैठा था। *[उस सभा मे चार हजार सामानिक देव परिवार सहित, चार अग्रमहिषियाँ, तीन प्रकार की परिषदाएँ, सात प्रकार की सेनाएँ, सात उनके सेनापति, सोलह हजार आत्मरक्षक देव तथा अन्य दूसरे भी बहुत से उस विमान मे रहने वाले देव–देवियाँ उपस्थित थे। वहाँ निरन्तर उच्च गम्भीर ध्वनिपूर्वक निपुण पुरुषो द्वारा बजाये जा रहे तत्री–वीणा, हस्तताल, कास्यताल, त्रुटित, घन मृदग आदि वाद्यो एव नाट्यो के दिव्य सुखो का अनुभव कर रहे थे।]* तब उसने अपने विपुल अवधिज्ञान से अवलोकन करते हुए इस केवलकल्प–सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को देखा। वहाँ विराजमान श्रमण भगवान महावीर को भी देखा। तब उसके मन मे भगवान के दर्शनार्थ जाने का सकल्प जाग्रत हुआ। जिस प्रकार सूर्याभदेव ने (रायपसेणिय, सूत्र ७, पृ ८) विचार कर दर्शनार्थ जाने की तैयारी की, उसी प्रकार चन्द्रदेव ने अपने आभियोगिक आज्ञाकारी देवो को बुलाया तथा उन्हे सुरेन्द्रों के अभिगमन करने योग्य तैयारी करने की आज्ञा दी। तैयारी करके वापस सूचित करने को कहा। आभियोगिक देवो ने भी सुरेन्द्रो के अभिगमन योग्य सब कार्य करके उसे कार्य सम्पन्न होने की सूचना दी।

फिर चन्द्रदेव ने पदाति सेनानायक को आज्ञा दी–"सुस्वरा घण्टा बजाकर सब देव–देवियो को भगवान के दर्शनार्थ चलने के लिए सूचित करो।" उस सेनानायक ने भी वैसा ही किया। यावत् सूर्याभदेव के समान नाट्यविधि आदि प्रदर्शित करने की विकुर्वणा की। यहाँ पर सूर्याभदेव के वर्णन से इतना अन्तर जानना चाहिए कि इसका यान–विमान एक हजार योजन विस्तीर्ण और साढे बासठ योजन ऊँचा था। उसके आगे–आगे पच्चीस योजन ऊँची महेन्द्रध्वजा चल रही थी। इसके अतिरिक्त सभी वर्णन सूर्याभ विमान के समान

समझना चाहिए। जिस प्रकार सूर्याभदेव भगवान के पास आया, नाट्यविधि प्रदर्शित की और वापस लौट गया, वही सब चन्द्रदेव के विषय मे भी जान लेना चाहिए। *[सूर्याभदेव के विस्तृत वर्णन हेतु देखे सचित्र रायपसेणियसूत्र, सूत्र ६६ से ११२ तक।]*

चन्द्रदेव के लौट जाने के पश्चात् भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके प्रश्न किया-"भते ! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्क राजा चन्द्र द्वारा विकुर्वित वह सब दिव्य देव-ऋद्धि, दैविक प्रभाव कहाँ चले गये ? कहाँ समा गये ?"

भगवान ने कूटागारशाला का दृष्टान्त देकर बताया-"गौतम ! चन्द्र द्वारा विकुर्वित वह सब दिव्य ऋद्धि आदि उसके शरीर मे चली गई, अन्तर्लीन हो गई। (कूटागारशाला का दृष्टान्त रायपसेणियसूत्र अनुसार इस प्रकार है-)

"हे गौतम ! (कल्पना करे) जैसे कोई एक गहरी, विशाल कूटाकार-पर्वत शिखर के आकार वाली शाला हो। वह भीतर-बाहर गोबर आदि से लिपी-पुती, बाहर परकोटे-से घिरी हुई, मजबूत किवाडो से युक्त गुप्त द्वार वाली, जिसमे वायु का प्रवेश भी कठिन हो, उस कूटाकारशाला के निकट एक विशाल जनसमूह बैठा हो। उस समय वह जनसमूह आकाश मे एक बहुत बडे मेघपटल-सघन बादलो के समूह को अथवा जलवृष्टि करने योग्य बादलो को अथवा प्रचण्ड आँधी को आता हुआ देखे तो जैसे वह उस कूटाकारशाला के भीतर प्रवेश कर जाता है, उसी प्रकार हे गौतम ! सूर्याभदेव की वह सब दिव्य देव-ऋद्धि (देव-माया) आदि उसके शरीर मे प्रविष्ट हो गई-अन्तर्लीन हो गई है, इस कारण मैने कहा कि "वह उसके शरीर मे ही प्रविष्ट हो गई।" *(रायपसेणिययसूत्र, सूत्र ११६)*

तदनन्तर गौतम स्वामी ने पूछा-"भते ! उस देव को इस प्रकार की वह दिव्य देव-ऋद्धि यावत् दिव्य देवानुभाव कैसे प्राप्त हुआ है ? पूर्वभव मे वह कौन था ? [उसने ऐसा क्या दान दिया ? ऐसा क्या भोग किया ? ऐसा क्या शुभ कार्य किया ? ऐसा कौन-सा आचरण किया ? और कौन से तथारूप श्रमण अथवा माहण से ऐसा कौन-सा एक भी धार्मिक आर्य सुवचन सुना और अवधारित किया कि जिससे उस देव ने वह दिव्य देव-ऋद्धि यावत् दैविक प्रभाव प्राप्त किया है ?]"

KING OF GODS CHANDRA IN CHANDRA VIMAN

2. "Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak The ruler of the city was King Shrenik During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Gunasheelak Chaitya in Rajagriha People came to pay homage

During that period of time Chandra, the king of Chandra Jyotishk gods was sitting on a throne named Chandra in the *Sudharma* assembly in *Chandravatansak Viman* (celestial vehicle) [In that assembly four thousand vehicle based gods, four queen-goddesses, three types of assemblies, seven armies, seven commanders, sixteen thousand guard-gods and a mass of many other gods and goddesses residing in that *viman* were in attendance. They were enjoying the divine pleasures that included drama as

well as loud and resonant musical performance of instruments like *Veena*, cymbal, bronze cymbal, *Trutit*, and *Ghan Mridang* played by accomplished artists.] Then with the help of his all enveloping *Avadhi Jnana* he observed this whole Jambu continent Chandra saw Shraman Bhagavan Mahavir stationed there and had a desire to go to pay him homage and obeisance As Suryabh god had thought and made preparations to go to behold *Bhagavan* (*Rayapaseniya*, Sutra-7, p. 8), Chandrabh god too called his *Abhiyogik Devs* (servant-gods) and instructed them to make preparations for travel, suitable for kings of gods, and report back. Accordingly the servant-gods made preparations suitable for travel of kings of gods and reported back

Chandra then instructed the commander of his army of foot soldiers—"Sound the melodious bell to inform all gods and goddesses to come to pay homage to *Bhagavan* " The commander followed the instructions.. and so on up to created arrangements for display of stage performances as Suryabh god had done The only variation from the description of Suryabh god is that here the *viman* was one thousand *Yojan* in area and sixty two *Yojan* in height and it was preceded by a twenty five *Yojan* tall flag called *Mahendra Dhvaj* Besides this all other details of the *viman* are same as those of *Suryabh viman* Also same for Chandra god is the description that follows, as to how Suryabh god came to Bhagavan, presented the stage performance, and returned *[for detailed description of Suryabh god refer to Illustrated Rayapaseniya Sutra, sutra-66 to 112]*

When Chandra left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir after paying homage and obeisance—"*Bhante* ! Where did the divine display of opulence and powers created by Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, go and disappear ?"

Bhagavan answered the question by giving the example of *Kutagar*—"Gautam ! The divine display of opulence and powers created by Chandra was drawn into and disappeared within his own body. (the example of *Kutagar* according to *Rayapaseniya Sutra* is as follows —)

"Gautam ! Suppose there is a cone shaped (like hill-top) camouflaged house, large and deep underground It is plastered within and outside with cow-dung. It is surrounded by a parapet wall and has strong and air-tight but concealed doors. A large crowd is sitting near that camouflaged house If that crowd suddenly sees dark rain bearing clouds or a terrible storm approaching, it at once enters that camouflaged house and disappears. In the same way, Gautam ! all the opulence and divine illusion displayed by Suryabh god entered and merged into his body That is why I said that it entered into his own body." (*Rayapaseniya Sutra*, Sutra 116)

After that Gautam Swami asked—"*Bhante*! How did that god acquire that divine opulence and power? Who was he in the past birth? (What charity had he made? What experience did he gain? What good deed did he perform? What conduct did he follow? And what religious and noble words he listened to and accepted from a sagacious *Shraman* or Brahmin so as to be endowed with such divine opulence and power?)

श्रावस्ती नगरी का अंगति गाथापति (चन्द्र देव का पूर्व भव)

३. 'गोयमा' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी–एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था। कोट्ठए चेइए। तत्थ णं सावत्थीए अंगई नामं गाहावई होत्था अड्ढे (जाव) अपरिभूए।

तए णं से अंगई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूणं नगर–निगम सेट्ठि–सेणावइ सत्थवाह–दूय–संधिवालाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेस य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुम्बस्स मेढी पमाणं आहारे आलम्बणं, चक्खू, मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। जहा आणंदो।

३. श्रमण भगवान महावीर ने गौतम को सबोधित कर कहा–"गौतम! उस काल उस समय मे श्रावस्ती नाम की नगरी थी। वहाँ कोष्ठक चैत्य था। उस श्रावस्ती नगरी मे अगति नामक एक गाथापति निवास करता था, जो समृद्धि-सम्पन्न था। लोगो द्वारा अपरिभूत था (–प्रभावशाली व्यक्तित्त्व के कारण कोई उसका अपमान, तिरस्कार, अनादर नही कर सकता था।)

वह अगति गाथापति (आनन्द श्रावक की तरह) श्रावस्ती नगरी के बहुत से नगर-निवासी व्यापारी, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, दूत, सधिपालक आदि के अनेक कार्यों मे, कारणो (उपायो) मे, मत्रणाओ (परामर्श) मे, पारिवारिक समस्याओ के समाधान मे, गोपनीय बाते जानने योग्य, निर्णय लेने मे सक्षम, सामाजिक व्यवहारो मे पूछने योग्य एवं परामर्श करने योग्य था। वह अपने कुटुम्ब परिवार का मेढि–केन्द्रीय आधार, प्रमाण–व्यवस्थापक, आलम्बन, चक्षु–मार्गदर्शक, मेढिभूत यावत् (प्रमाणभूत, आधारभूत, आलबनभूत, चक्षुभूत) तथा सब कार्यो मे अग्रणी था।

ANGATI GATHAPATI OF SHRAVASTI CITY (EARLIER BIRTH OF CHANDRA)

3. Shraman Bhagavan Mahavir replied—"Gautam! During that period of time there was a city named Shravasti. Outside the city there was a *Chaitya* named Koshthak. In Shravasti lived a householder (*gathapati*) named Angati who was very rich. He was insuperable (due to his status and influence he could not be insulted, ignored or belittled by anyone).

That Angati Gathapati (like Anand Shravak) enjoyed a very high reputation among a large number of traders, merchants, commanders, caravan chiefs, emissaries, ambassadors and other citizens of Shravasti as

a confidante, arbiter, trouble shooter and counselor in diverse matters like general activities, business, social and family problems, and other deliberations He was the spine, manager, provider and guide of his family. He lead the family in every walk of life

अर्हत् पार्श्व का पदार्पण

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आइगरे, जहा महावीरो, नवुस्सेहे सोलसेहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठतीसाए अज्जियासहस्सेहिं (जाव) कोट्ठए समोसढे। परिसा निग्गया।

तए णं से अंगई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छई (जाव) पज्जुवासइ। धम्मं सोच्चा निसम्म, जं, नवरं, "देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठावेमि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं जाव पव्वयामि।" जहा गंगदत्ते तहा पव्वइए (जाव) गुत्तबंभयारी।

४. उस काल उस समय मे पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु श्रमण भगवान महावीर के समान धर्म की आदि करने वाले तीर्थकर विद्यमान थे। उनका शरीर नौ हाथ ऊँचा था। अर्हत् पार्श्व प्रभु सोलह हजार श्रमणो एव अडतीस हजार आर्याओ के समुदाय के साथ ग्रामानुग्राम विहार करते हुए (श्रावस्ती के) कोष्ठक चैत्य मे पधारे। परिषद् दर्शनार्थ निकली।

तब वह अगति गाथापति प्रभु के पधारने का सवाद सुनकर हर्षित एव सतुष्ट होता हुआ कार्तिक श्रेष्ठी के समान अपने घर से निकला यावत् पर्युपासना करे लगा। धर्म उपदेश सुनकर हृदय मे धारण कर उसने प्रभु से निवेदन किया-"देवानुप्रिय ! मे अपने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब मे स्थापित करूँगा। तत्पश्चात् आप देवानुप्रिय के निकट प्रव्रज्या ग्रहण करूँगा।" पश्चात् वह गगदत्त के समान प्रव्रजित हुआ यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार हो गया।

(कार्तिक श्रेष्ठी और गगदत्त दोनो ही बीसवे तीर्थकर भगवान मुनिसुव्रत के तीर्थ मे हुए। इनका वर्णन भगवतीसूत्र मे क्रमश शतक १५, उ २ तथा शतक १५, उ ५ मे एव धर्मकथानुयोग, भाग २, द्वितीय स्कध, पृ २२-२८ पर देखना चाहिए।)

ARRIVAL OF ARHAT PARSHVA

4. During that period of time Purushadaniya Arhat Parshva, the propagator of a religion similar to Bhagavan Mahavir, was living He was nine cubits tall Moving from one village to another with his ascetic group of sixteen thousand *Shramans* (male ascetics) and thirty eight thousand *Aryaas* (female ascetics), Arhat Parshva arrived at Koshthak Chaitya (in Shravasti) People came to behold and pay homage to him

On getting the news of *Bhagavan's* arrival Angati Gathapati was pleased and, like Kartik merchant, he came out of his house and so on up to and commenced worship After listening to and understanding the sermon he said to *Bhagavan*—"Beloved of gods ! I would make my eldest son the head of my family and after that I will get initiated by you " In due course he got initiated like Gang-datt and so on up to became an absolutely celibate *anagar* (homeless ascetic)

(Kartık merchant and Gang-datt both lived during the period of influence of the twentieth *Tirthankar* Bhagavan Munisuvrat Their stories are available in *Bhagavati Sutra*, 15/2, 5 and *Dharmakathanuyoga* Part-2, pp 22-28.)

अंगति अनगार का उपपात

५. तए णं से अंगई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ (जाव) भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्ण–परियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा चंदवर्डिसए विमाणे उववाइयाए सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदे जोइसिंदत्ताए उववन्ने।

तए णं से चंदे जोइसिंदे जोइसियराया अहुणोववन्ने समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा–आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए सासोसासपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए।

५. तत्पश्चात् अगति अनगार ने अर्हत् पार्श्वनाथ के तथारूप स्थविरो के पास सामायिक (आचाराग) आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया। अध्ययन करने के पश्चात् चतुर्थभक्त आदि विविध प्रकार के तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए उसने बहुत वर्षों तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। अन्त मे अर्धमासिक सलेखनापूर्वक अनशन द्वारा तीस भक्तो (भोजनो) का छेदन कर मरण समय आने पर-मरण प्राप्त करके सयम की विराधना करने के कारण चन्द्रावतसक विमान की उपपात-सभा मे देवदूष्य से आच्छादित देव-शय्या मे ज्योतिष्केन्द्र चन्द्रदेव के रूप मे उत्पन्न हुआ।

तब वह ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्र आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति और भाषा-मन पर्याप्ति इन पाँच प्रकार की पर्याप्तियो से पर्याप्तभाव को प्राप्त हुआ।

UPAPAT OF ANGATI ANAGAR

5. After studying all the eleven *Angas* (canons) including *Samayık* from the senior ascetic disciples of Arhat Parshva and enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting, he immaculately followed the ascetic code for many years In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of half a month duration and met his end at the conclusion of the fortnight long fast (avoiding thirty meals) As he died without doing *pratikraman* (critical review) his soul has reincarnated instantaneously (*upapat*) as Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Chandravatansak viman*

Thereafter Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods attained the state of full development (*paryapti*) through five kinds of full development (*paryapti*) namely, *ahar* (food) *paryapti*, *sharira* (body) *paryapti*, *indriya* (sense organs) *paryapti*, *shvasochhavas* (breathing) *paryapti*, and *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*

६. "चंदस्स णं भंते, जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?

गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं खलु गोयमा, चंदस्स जाव जोइसरन्नो सा दिव्वा देविड्ढी।

चंदे णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

६. गणधर गौतम ने श्रमण भगवान महावीर से पूछा—"भंते ! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्रदेव की वहाँ कितने काल की आयु-स्थिति है ?"

"हे गौतम ! एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम की स्थिति है। इस प्रकार हे गौतम ! उस ज्योतिष्कराज चन्द्र ने वह दिव्य देव-ऋद्धि प्राप्त की है।"

गणधर गौतम ने पुनः प्रश्न किया—"भंते ! ज्योतिष्क इन्द्र ज्योतिष्कराज चन्द्र इस देवलोक की आयु पूर्ण करके कहाँ उत्पन्न होगा ?"

"गौतम ! यह भी महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्धगति प्राप्त करेगा।"

THE FUTURE BIRTH OF CHANDRA GOD

6. Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir—*"Bhante !* What is the life span of Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods ?"

"Gautam ! His life span there is one hundred thousand years more than one *Palyopam*. Thus, Gautam ! that Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods acquired that divine opulence and power."

Gautam Swami again asked, *"Bhante !* Completing the age, state, and life of the dimension of gods where will Chandra, the king of *Chandra Jyotishk* gods, be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul)."

७. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं॥

७. आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार से मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैं कहता हूँ। प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण हुआ।

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

7. Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpika*. So I state."

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

द्वितीय अध्ययन : सूर्य
SECOND CHAPTER : SURYA

८. जइ णं भंते समणेणं भगवया (जाव) पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं, भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाण समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

८. जम्बू–"भते ! यदि श्रमण भगवान ने पुष्पिका के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ बताया है तो श्रमण भगवान ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

8. Jambu—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the first chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the second chapter of *Pushpika* ?"

सूर्य का समवरसण मे आगमन

९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। समोसरणं। जहा चंदो तहा सूरो वि आगओ (जाव) नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ। पुव्वभवपुच्छा। सावत्थी नगरी। सुपइट्ठे नाम गाहावई होत्था। अड्ढे जहेव अंगई (जाव) विहरइ। पासो समोसढो, जहा अंगइ तहेव पव्वइए तहेव विराहियसामण्णे, (जाव) महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ (जाव) अंतं करेहिइ।

९. सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मन् जम्बू ! उस काल उस समय मे राजगृह नगरी मे गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। एकदा श्रमण भगवान महावीर का पदार्पण हुआ। जैसे भगवान के दर्शन करने के लिए चन्द्रदेव आया था उसी प्रकार सूर्य इन्द्र का भी आगमन हुआ यावत् नृत्य-विधियाँ प्रदर्शित कर वापस चला गया।"

तत्पश्चात् गणधर गौतम ने सूर्यदेव के पूर्वभव के विषय मे प्रश्न किया। भगवान ने इस प्रकार प्रत्युत्तर दिया-

श्रावस्ती नाम की नगरी थी। वहाँ धन-वैभव आदि से सम्पन्न सुप्रतिष्ठ नामक गाथापति रहता था। वह भी अगति के समान धनाढ्य एव प्रभावशाली था। वहाँ अर्हत् पार्श्व प्रभु पधारे। अगति के समान सुप्रतिष्ठ ने प्रव्रज्या ली। उसी तरह सयम की विराधना करने के कारण मरण को प्राप्त कर सूर्यविमान मे देवरूप मे उत्पन्न हुआ। आयु क्षय होने पर वहाँ से च्यवकर महाविदह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्धि प्राप्त करेगा यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगा।

KKKK

9. "Long lived Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak The ruler of the city was King Shrenik During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Gunasheelak Chaitya in Rajagriha. Like

Chandra god, Surya, the king of *Surya Jyotishk* gods also came and so on up to presented the stage performance, and returned

Then Gautam Swami asked about the earlier birth of Surya god *Bhagavan* replied—

There was a city named Shravasti where lived a householder (*gathapati*) named Supratishtha who was very rich and opulent Like Angati, he was also affluent and insuperable Arhat Parshva arrived there Like Angati, Supratishtha got initiated In the same way, as he died without doing *pratikraman* (critical review) his soul has reincarnated as a god in *Surya viman* Completing the age, state, and life of the dimension of gods he will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) to end all miseries "

१०. निक्खेवओ–तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

१०. आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार मुक्ति को सप्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का यह भाव कथन किया है। ऐसा मै कहता हूँ।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

10. "Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the second chapter of *Pushpika* So I state "

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

तृतीय अध्ययन : शुक्र
THIRD CHAPTER : SHUKRA

११. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते, अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू।

११. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से प्रश्न किया–"भंते ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने पुष्पिका के द्वितीय अध्ययन का पूर्वोक्त भाव बताया है तो श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन का क्या भाव बताया है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है–

11. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the second chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the third chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

१२. रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ।

"भंते" त्ति। कूडागारसाला। पुव्वभव पुच्छा।

१२. राजगृह नगर था। गुणशिलक चैत्य था। वहाँ राजा श्रेणिक राज्य करता था। किसी समय स्वामी (श्रमण भगवान महावीर) का पदार्पण हुआ। धर्मदेशना श्रवण करने के लिए परिषद् निकली।

उस काल उस समय मे शुक्र महाग्रह (शुक्रदेव) शुक्रावतसक विमान मे शुक्र सिहासन पर बैठा था। चार हजार सामानिक देवो आदि के साथ नृत्य गीत आदि दिव्य सुख भोग रहा था। वह चन्द्रदेव के समान पूरे परिवार के साथ भगवान के समवसरण मे आया। उस शुक्राधिपति ने चन्द्रदेव की तरह नृत्य-विधि का प्रदर्शन किया और नृत्य-विधि दिखाकर वापस दर्शन-वन्दन करके चला गया।

तत्पश्चात् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से उसकी दैविक ऋद्धि आदि के अन्तर्लीन होने के सम्बन्ध मे पूछा। भगवान ने कूटाकारशाला के दृष्टान्त द्वारा गौतम का समाधान किया। तदनन्तर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध मे जिज्ञासा की।

12. There was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak The ruler of the city was King Shrenik. Once

Swami (Shraman Bhagavan Mahavir) arrived. People came to attend religious discourse

During that period of time Shukra Mahagraha (great planet, the king of *Shukra Jyotishk* gods) was sitting on a throne named Shukra in *Shukravatansak Viman* (celestial vehicle) In that assembly there were four thousand vehicle based gods, . and so on up to. . They were enjoying the divine pleasures.

Like Chandra god, Shukra god also came with his family. and so on up to . presented the stage performance, and returned.

Then Gautam Swami asked about the disappearance of his divine opulence (etc) *Bhagavan* gave him the example of *Kutagar-shala* (camouflaged house) and explained Gautam Swami further asked about the earlier birth of Shukra god

शुक्र महाग्रह का पूर्वभव

१३. 'एवं खलु गोयमा'। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ। अड्ढे जाव अपरिभूए रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए। पासे समोसढे। परिसा पज्जुवासइ।

१३. भगवान महावीर ने प्रत्युत्तर मे बताया–"गौतम ! उस काल उस समय मे वाराणसी नगरी थी। उस वाराणसी नगरी मे सोमिल नामक ब्राह्मण निवास करता था, जो धन–धान्य आदि से सम्पन्न यावत् अत्यन्त प्रभावशाली था। ऋग्वेद आदि (चार वेद, इतिहास, निघण्टु, व्याकरण आदि का सागोपाग ज्ञाता) मे पारगत था। एक समय पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु वहाँ पधारे। परिषद् दर्शन करने निकली और पर्युपासना करने लगी।

EARLIER BIRTH OF SHUKRA MAHAGRAHA

13. Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Varanasi In Varanasi lived a Brahmin named Somil who was very rich and insuperable He was a scholar of *Rigveda* (this includes all the four *Vedas*, history, lexicon, grammar, etc) Once Purushadaniya Arhat Parshva, arrived there People came to behold and pay homage to him

१४. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए–"एवं पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं (जाव) अम्बसालवणे विहरइ। तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अंतिए पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं" जहा पण्णत्तीए।

सोमिलो निग्गओ खण्डियविहूणो (जाव) एवं वयासी–"जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं च ते ?" पुच्छा। "सरिसवया मासा कुलत्था ? एगे भवं ?" (जाव) संबुद्धे। सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए।

तए णं पासे णं अरहा अन्नया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अम्बसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं।

तए णं से सोमिले माहणे अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तं च पडिवन्ने।

१४. तदनन्तर सोमिल ब्राह्मण ने अर्हत् पार्श्व का आगमन समाचार सुनकर इस प्रकार चिन्तन किया- पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु पूर्वानुपूर्वी क्रम से गमन करते हुए वाराणसी के आम्रशालवन मे विराज रहे है। मै जाऊँ और अर्हत् पार्श्व प्रभु के समाने उपस्थित होकर उनसे इस प्रकार के अर्थ प्रश्न हेतु, (कारण) और उनकी व्याख्या पूछूँ। (जैसा व्याख्याप्रज्ञप्ति मे वर्णन है।)

तत्पश्चात् अपने शिष्यो को साथ लिए बिना ही अकेला सोमिल अपने घर से निकला। भगवान की सेवा मे पहुँचकर इस प्रकार प्रश्न किया- "भगवन् ! आपकी यात्रा कैसी है ? आपके यापनीय क्या है ? और आपका प्रासुक विहार कैसा हो रहा है ? आपके लिए सरिसव (सरसो) मास (माष- उडद) कुलत्था (कुलथी धान्य)-भक्ष्य है या अभक्ष्य है ? आप एक है ? (क्या आप दो है ? क्या आप अनेक है आदि।" प्रभु ने उन प्रश्नो का यथोचित उत्तर दिया) जिनका समाधान पाकर सोमिल सबुद्ध हुआ और श्रावक धर्म को अगीकार करके वापस अपने स्थान पर आया। इसके बाद किसी एक दिन अर्हत् पार्श्व वाराणसी नगरी के आम्रशालवन चैत्य से विहार करके अन्य जनपदो मे विचरण करने लगे।

तदनन्तर वह सोमिल ब्राह्मण किसी समय असाधु दर्शन-महाव्रतधारी साधुओ का दर्शन न कर पाने के कारण एव निर्ग्रन्थ श्रमणो की पर्युपासना (निकट सम्पर्क) नही करने के कारण-उनके उपदेश श्रवण का सयोग नही मिलने से तथा मिथ्यात्व पर्यायो के बढते जाने से एव सम्यक्त्व-पर्यायो के धीरे-धीरे हीन होने (घटने) से मिथ्यात्व भाव को प्राप्त होकर श्रद्धाविहीन मिथ्यादृष्टि हो गया।

14. On getting the news of Arhat Parshva's arrival Somil Brahmin thought—Wandering from one village to another Purushadaniya Arhat Parshva has arrived and is stationed at Amrashaalvan in Varanasi I should go and put forth my questions to him and seek answers, reasons and elaborations from him (as described in *Vyakhyaprajnapti*)

Then Somil left his house alone without taking his disciples along He came to *Bhagavan* and asked—"*Bhante* ! How is your journey ? What are your restraints (*yaapaniya*) ? How are your defined movement (*prasuk vihar*) ? Are *Sarisava* (*Sarason* or mustard seeds), *Maash* (*Udad*, a kind of pulse, Phaseolus mungo L), and *Kulattha* (*Kulathi*, horse-bean, Dolichos biflorus L) edible for you or not ? Are you one ? (Are you two ? Are you many ? etc " *Bhagavan* gave suitable replies) On getting the answers Somil got enlightened and accepted the *Shravak-dharma* (code of conduct meant for Jain laity) He then returned home Later Arhat Parshva left Amrashaalvan Chaitya in Varanasi and commenced his itinerant life in other areas

In the absence of opportunities to behold ascetics who observe great vows, to associate himself with *Nirgranth Shramans* (detached ascetics), and to listen to their discourses, the righteous thoughts of Somil Brahmin were gradually replaced by unrighteous thoughts and with passage of time, he succumbed to falsehood to become an unrighteous person devoid of devotion

विवेचन–सोमिल ब्राह्मण के सम्बन्ध मे यहॉ बहुत ही सक्षेप मे कथन करके उसके प्रश्नो के सम्बन्ध मे व्याख्याप्रज्ञप्ति-भगवतीसूत्र से जान लेने की सूचना दी है।

यहाँ सर्वप्रथम ज्ञातव्य है, भगवतीसूत्र मे वर्णित सोमिल ब्राह्मण इससे भिन्न व्यक्ति है। यह सोमिल वाराणसी का रहने वाला तथा भगवान पार्श्वनाथ से प्रश्न पूछता है, जबकि भगवती का सोमिल वाणिज्यग्राम का रहने वाला है तथा वह भगवान महावीर से प्रश्नोत्तर करता है। हाँ, केवल नाम की तथा प्रश्नो के विषय की समानता है। इसलिए यहाँ प्रश्न और उनके उत्तर भगवतीसूत्र से जान लेने की सूचना है। इन प्रश्नो मे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न व उनके उत्तर इस प्रकार है–

प्रश्न १–भते आपके यात्रा है, वह कैसी है ?

उत्तर–तप, नियम, सयम, स्वाध्याय, ध्यान और आवश्यक आदि योगो मे यतना-प्रवृत्ति करना ही मेरी यात्रा है।

प्रश्न २–भते ! आपके यापनीय क्या है ?

उत्तर–यापनीय दो प्रकार का है। श्रोत्र आदि पॉचो इन्द्रियो को अपने वश करके रखना, (१) इन्द्रिय यापनीय है। क्रोध आदि चारो कषाय समूल नष्ट हो चुके है यह (२) नोइन्द्रिय यापनीय है।

प्रश्न ३–भते ! आपके अव्याबाध (बाधारहित) क्या है ?

उत्तर–शरीर के वात, पित्त, कफ आदि विकार उपशान्त है। यह मेरा अव्याबाध (शरीर सम्बन्धी बाधारहित-सुख) है।

प्रश्न ४–भते ! आपका प्रासुक विहार क्या है ?

उत्तर–स्त्री, पशु, नपुसक आदि से रहित, उद्यान आदि निर्दोष स्थान मे विचरण करना–यह मेरा प्रासुक विहार है।

प्रश्न ५–भते ! सरिसव भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

उत्तर–भक्ष्य भी है, और अभक्ष्य भी।

प्रश्न–ऐसा आप किस कारण से कहते है ?

उत्तर–**सदृशवय**–समवयस्क मित्र अभक्ष्य है तथा **सरिसव**–धान्य भक्ष्य है।

प्रश्न ६–भते ! मास भक्ष्य है या अभक्ष्य है ?

उत्तर–भक्ष्य भी है, अभक्ष्य भी।

प्रश्न–ऐसा आप किस कारण से कहते है ?

उत्तर–द्रव्य मास अभक्ष्य है, जैसे कि श्रावण आदि महीने तथा सोना–चाँदी आदि मापने का परिमाण। यह अभक्ष्य है। भाव मास मे भी माष (उडद) धान्य जो शस्त्र परिणत (जीवरहित) तथा एषणीय है वह भक्ष्य है, शेष अभक्ष्य।

प्रश्न ७–'कुलत्था' भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

उत्तर–'कुलत्था' शब्द के दो अर्थ है, कुलीन स्त्री तथा कुलत्था (कुलथी) धान्य। कुलथी धान्य शस्त्र परिणत तथा याचना से प्राप्त हुआ एषणीय होता है, भक्ष्य है, शेष अभक्ष्य है।

प्रश्न ८–भन्ते ! आप एक है या अनेक ?

उत्तर–मै द्रव्य दृष्टि से आत्मा एक हूँ। ज्ञान–दर्शन पर्याय के भेद से दो हूँ। उपयोग की दृष्टि से (भूत, वर्तमान तथा भविष्य परिणामो की दृष्टि से) अनेक हूँ। –भगवतीसूत्र, शतक १८, उ १०

इसी प्रकार के प्रश्न–उत्तर ज्ञाताधर्मकथाग, अध्ययन ५ मे शैलक राजर्षि के प्रसग मे भी आये है।

Elaboration—Only a brief account about Somil Brahmin is given here with an advise to refer to *Vyakhyaprajnapti* (*Bhagavati Sutra*) for greater details about his queries

Here it should be understood that Somil Brahmin mentioned in *Bhagavati Sutra* is in fact a different person and not the one mentioned here Somil mentioned here is a resident of Varanasi and he asks questions from Bhagavan Parshva Nath, whereas Somil of *Bhagavati Sutra* is a resident of Vanijyagram and he asks questions from Bhagavan Mahavir However, as the names and questions asked are similar it has been advised here to refer to *Bhagavati Sutra* for more details Some of the important questions under reference and their answers are as follows—

Q. 1. *Bhante* ! How is your journey ?

Ans. To pursue austerities (*tap*), codes (*niyam*), discipline (*samyam*), self-study (*svadhyaya*), meditation (*dhyan*), and associations (*yoga*) with essential duties (*avashyak*) is my journey

Q. 2. *Bhante* ! What are your restraints (yaapaniya) ?

Ans. Restraints (*yaapaniya*) is of two kinds To have complete control over the sense organs including that of hearing is my (1) restraint over senses (*indriya yaapaniya*) I have completely rooted out all the four passions including anger, this is my (2) restraint other than that over senses (*noindriya yaapaniya*)

Q. 3. *Bhante* ! What is the meaning of 'unrestricted' in your context ?

Ans. In my case physical disorders caused by the three body humours, air (*vaat*), bile (*pitta*), and phlegm (*cough*) have been completely pacified

The meaning of 'unrestricted' in my context is this state of bliss 'unrestricted' by body

Q. 4. What is your defined movement and stay (*prasuk vihar*) ?

Ans. To move and stay in areas and places that are free of women, animals, eunuches, and other such faults is my defined movement and stay (*prasuk vihar*).

Q. 5. *Bhante* ! Is *Sarisava* edible (*bhakshya* or usable or acceptable) for you or not ?

Ans. It is edible and inedible both.

Q. Why do you say that ?

Ans. *Sarisava* (*sadrashvaya* or of same age) friend is unacceptable (*abhakshya*) and *Sarisava* (*Sarason* or mustard) seeds are edible (*bhakshya*)

Q. 6. *Bhante* ! Is *Maas* edible or not ?

Ans. *Maas* in its literal meaning of months (like *Shravan*) and measure of gold or silver is of no use (*abhakshya*) However, one of its interpretation is only *Maash* (*Udad*, a kind of pulse; Phaseolus mungo L), and that too free of living organism and taken as alms It is edible (*bhakshya*), others are not

Q. 7. *Bhante* ! Is *Kulattha* edible for you or not ?

Ans. The word *kulattha* has two meanings—noble woman and *Kulathi* (horse-bean, Dolichos biflorus L) The beans are edible if free of living organism and taken as alms Others are not

Q. 8. Are you one or many ?

Ans. Physically I am one, that is soul In terms of modes I am two, that is knowledge and perception In terms of application or activities of past, present, and future I am many (*Bhagavati Sutra*, 18/10)

Similar questions and answers also feature in the story of Shailak Rajarshi in *Jnatadharmakathanga*, chapter 5

सोमिल ने गृहत्याग का विचार किया

१५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समाणीयाओ, पसुवधा कया, जन्ना जेट्ठा, दक्खिणा दिन्ना, अतिहीपूइया, अग्गी हूया, जूवा निक्खित्ता।

तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं (जाव) जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा रोवावित्तए एवं माउलिंगा बिल्ला कविट्ठा चिञ्चा पुप्फारामा रोवावित्तए" एवं संपहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया अम्बारामे जाव पुप्फारामे य रोवावेइ।

तए णं बहवे अम्बरामा य जाव पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा आराम जाया किण्हा किण्होभासा (जाव) रम्मा महामेह–निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगेरेरिज्जमाणा सिरीया अईव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठन्ति।

१५. इसके बाद सोमिल ब्राह्मण किसी एक समय मध्य रात्रि मे अपनी कौटुम्बिक स्थिति (कुडुम्ब जागरिया) पर विचार करते हुए सोमिल के मन मे इस प्रकार का मानसिक सकल्प उत्पन्न हुआ–'मै वाराणसी नगरी का रहने वाला और अत्यन्त उच्च ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुआ हूँ। मैने व्रतो (कुलागत विधि–विधानो) को अगीकार किया, वेदो का अध्ययन किया, विवाह कर पत्नी को लाया, कुल परम्परा की वृद्धि के लिए पुत्रादि सतान को जन्म दिया, ऋद्धि प्राप्त की- अर्थोपार्जन किया, यज्ञार्थ पशुवध किया, अनेक बडे–बडे यज्ञ किये, ब्राह्मणो को दक्षिणा दी, अतिथियो का पूजा–सत्कार किया, अग्नि होत्र–कर्म किये–यूप (यज्ञ मण्डप मे स्तम्भ) स्थापित किये इत्यादि गृहस्थ सम्बन्धी अनेक कार्य किये।

किन्तु अब मुझे यह उचित लगता है कि कल जब सूर्य जाज्वल्यमान तेज से प्रकाशित हो जाय, तब वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आम्र–उद्यान (आमो के बगीचे) लगवाऊँ, इसी प्रकार से **मातुलिग–बिजौरा, बिल्व–बेल, कविट्ठ–कैथ, चिचा–इमली** और फूलो की वाटिकाएँ लगवाऊँ।' इस प्रकार उसने विचार किया और विचार करके आगामी दिन यावत् प्रात सूर्य के उदय होने पर वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आम के बगीचे यावत् पुष्पोद्यान आदि लगवाने मे सलग्न हुआ।

तत्पश्चात् बहुत से आमो के बगीचे यावत् फूलो के बगीचे भली प्रकार पशु–पक्षियो से सरक्षण, वायु के वेग से सगोपन करते हुए तथा जल आदि से सिचन सवर्धन किये जाने से दर्शनीय बगीचे बन गये। वे उद्यान कृष्ण आभा से युक्त रमणीय महामेघो के समान काली आभा वाले, पत्रो, पुष्पो, फलो से नील वर्ण की प्रभा से युक्त अति उत्तम मनोहर दीखने लगे। अपनी हरी -भरी कान्ति से अतीव- अतीव शोभायमान होने लगे।

SOMIL THINKS OF RENOUNCING HOME

15. One midnight while pondering over his family circumstances, Somil Brahmin thought—"I am a resident of Varanasi city and belong to a very high caste Brahmin family I have accepted vows (traditional rituals and codes), studied *Vedas*, married and brought a wife home, got sons and daughters for extending the family lineage, acquired wealth, sacrificed animals for *yajna*, performed elaborate *yajnas*, offered gifts to Brahmins, honoured and worshiped guests, offered sacrifice to fire, installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*), and performed many other such deeds required of a householder

But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should arrange to plant numerous orchards of mango trees. In the same way I should arrange for planting gardens of Matuling (*Bijaura*, a kind of lemon), *Bilva* (*Bel*; timb, Aegle marmelos), *Kavittha* (*Kaith*, Feronia limonia), *Chincha* (*Imli*, tamarind) and other flowering plants outside Varanasi city According to what he thought, next morning he started planting many mango-orchards and so on up to flowering plants outside Varanasi city.

Having the required protection from animals and birds as well as strong winds and with proper watering and nurturing, these gardens, in due course, turned beautiful and appealing These gardens looked enchanting due to their dark hue like that of beautiful grand clouds and deep green glow of leaves, flowers, and fruits They became highly delightful due to their radiant dense greenery

१६. (क) तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था–

"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं (जाव) जूवा निक्खित्ता। तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा जाव पुप्फारमा य रोवाविया। तं सेयं खलु मए इयाणिं कल्लं (जाव) जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावेत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तं मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगन्धमल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवित्ता तं मित्तनाइनियगसंबंधिपरिजणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंम्बियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–

होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सड्ढई थालई हुम्बउट्ठा दन्तुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दण्डा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अम्बुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कन्दाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकन्दमूलतय–पत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूया आयावणाहिं पञ्चग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कन्दुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाण विहरंति।

१६. (क) इसके बाद पुन किसी अन्य समय उस सोमिल ब्राह्मण को मध्य रात्रि मे कुटुम्ब जागरणा जागते हुए इस प्रकार का मानसिक सकल्प उत्पन्न हुआ–

'मै वाराणसी नगरी निवासी सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त श्रेष्ठ–प्रसिद्ध ब्राह्मण कुल मे जन्मा हुआ हूँ। मैने व्रतो का पालन किया, वेदो का अध्ययन आदि किया यावत् अनेक यज्ञस्तम्भ स्थापित किये और इसके बाद

वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आमों के बगीचे यावत् फूलो के बगीचे लगवाए। लेकिन अब मेरे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि कल प्रात सूर्य उदय होने पर बहुत से लोहे के कडाह, कुडछी एव तापसों के योग्य ताँबे के पात्रों-बर्तनो को घडवाकर तथा विपुल मात्रा मे अशन-पान-खादिम-स्वादिम चारो प्रकार का भोजन बनवाकर मित्रो, जातिबाधवो, स्वजनो, सम्बन्धियो और परिचित जनो को आमंत्रित करूँ। उन मित्रो, जातिबंधुओ, स्वजनो, सम्बन्धियों और परिचितो का विपुल अशन-पान-खादिम-स्वादिम, वस्त्र, गध, माला एव अलकारो से सत्कार-सन्मान करूँ, फिर उन्ही मित्रो, जाति-बन्धुओ, स्वजनो, सम्बन्धियो और परिचितो के सामने ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौपकर तथा उनसे एव ज्येष्ठ पुत्र से पूछकर उन बहुत से लोहे के कडाहे, कुडछी आदि तापसो के पात्र लेकर गगातटवासी वानप्रस्थ तापसो के पास जाऊँ।

वे विविध प्रकार के तापस-जो होत्रिक (अग्निहोत्री), पोत्रिक (वस्त्रधारी), कौत्रिक (भूमि पर सोने वाले), याज्ञिक (यज्ञ करने वाले), श्राद्धकिन (श्राद्ध करने वाले), स्थालकिन (पात्र धारण करने वाले), हुम्बउट्ठ (वानप्रस्थ तापस), दन्तोदूखलिक- (दाँतो से धान्य को तुषहीन करके खाने वाले), उन्मज्जक (पानी मे एक बार डुबकी लगाने वाले), संमज्जक (बार-बार हाथ-पैर धोने वाले), निमज्जक (पानी मे कुछ देर तक डूबे रहने वाले), सप्रक्षालक (मिट्टी आदि से शरीर को रगडकर स्नान करने वाले), दक्षिणकूल वासी, उत्तरकूल-वासी, शखध्मा (शख बजाकर भोजन करने वाले), कूलध्मा (तट पर खडे होकर जोर से आवाज लगाकर भोजन करने वाले), मृगलुब्धक (हिरणो का माँस खाने वाले), हस्तीतापस (हाथी का माँस खाकर जीवन-यापन करने वाले), उद्दण्डक (दड को ऊँचा करके चलने वाले), दिशाप्रोक्षिक (जल तर्पण कर दिशाओ की पूजा करने वाले), वल्कवासी (वृक्ष की छाल पहनने वाले), बिलवासी (भूमि खोदकर उसमे रहने वाले), जलवासी (जल मे रहने वाले), वृक्षमूलिक (वृक्ष के मूल मे-नीचे रहने वाले), जलभक्षी (जल मात्र का आहार करने वाले), वायुभक्षी (वायु मात्र से जीवित रहने वाले), शैवालभक्षी (काई या घास खाने वाले), मूलाहारी (वृक्ष की जडे खाने वाले), कदाहारी, त्वचाहारी, पत्राहारी, पुष्पाहारी, बीजाहारी, विनष्ट (सडे हुए) कन्द, मूल, त्वचा, पत्र, पुष्प, फल को खाने वाले, जलाभिषेक से शरीर को कडा बनाने वाले तथा आतापना और पचाग्नि ताप से अपनी देह को अगारपक्व-(अगारो मे पके हुए शूलो-सी और कदुपक्व मे (भाड मे भूनी हुई-सी) बनाते हुए समय यापन करते है।

16. (a) Later, some other midnight, while pondering over his family circumstances, Somil Brahmin thought—"I am a resident of Varanasi city and belong to a very high caste Brahmin family I have accepted vows (traditional rituals and codes), studied *Vedas*, and so on up to . installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*), and after that I have planted many mango-orchards... and so on up to flowering plants outside Varanasi city But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should arrange to get made numerous cooking pans and spoons of iron and utensils of copper suitable for *tapasas* (hermits). Also I should get large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) cooked Having done that I should invite my friends, family members, relatives and acquaintances; greet them, offer them this food;

and honour them with clothes, perfumes, garlands, and ornaments. After that, in their presence I should hand over the responsibility of the family to my eldest son Then after seeking permission from them and my eldest son, and carrying the iron and copper utensils, I should go to the *tapasas* (hermits) who have renounced their homes and are living on the banks of river Ganges

Those *tapasas* (hermits) include—*Hotrak* (those who do offerings at fire sacrifice); *Potrak* (the clad ones), *Kautrik* (those who sleep on the ground), *Yajnik* (those who perform *yajna* or ritual sacrifice); *Shraaddhakin* (those who perform rituals for the benefit of deceased relatives); *Sthaalakin* (those who carry plate or *thaali* and other pots); *Humbauttha* (those dwelling in jungle), *Dantodukhalik* (those who remove husk from grain with their teeth before eating); *Unmajjak* (those who bathe by taking just one dip in water), *Sammajjak* (those who wash their hands and feet repeatedly); *Nimajjak* (those who remain under water for some time), *Samprakshalak* (those who cleanse their body by rubbing sand or clay), *Dakshin-koolak* (those who live on the southern bank of the Ganges); *Uttar-koolak* (those who live on the northern bank of the Ganges), *Shankhadhma* (those who take their meals after blowing conch-shell), *Kooladhma* (those who take their meals on the bank after shouting loudly), *Mrigalubdhak* (those who subsist on deer-meat), *Hastitapas* (those who subsist on elephant-meat); *Uddandak* (those who move about raising their staff), *Dishaprokshi* (those who sprinkle water in all directions for worship), *Valkavasi* (the bark-clad), *Bil-vasi* (those who dig holes and live in them), *Jal-vasi* (those who live in water), *Vrikshamoolak* (those who live under trees); *Jal-bhakshi* (those who subsist only on water), *Vayubhakshi* (those who subsist only on air), *Shaivalabhakshi* (those who subsist on moss or grass only); *Moolahari* (those who subsist on roots only); *Kandahari* (those who subsist on bulbous roots), *Tvachahari* (those who subsist on bark of a plant), *Patrahari* (those who subsist on leaves), *Pushpahari* (those who subsist on flowers); *Bijahari* (those who subsist on seeds), those who subsist on naturally fallen or detached bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, and fruits, those who develop endurance for water by regularly pouring water on their bodies; and those who mortify their bodies by five fires (burning four pyres on four sides and considering sun to be the fifth) as if cooking on burning coal or roasting in hot sand

१६. (ख) तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतिए दिसापोक्खियत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं

अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं (जाव) जलन्ते सुबहुं लोह. (जाव) दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

१६. **(ख)** इन तापसो मे से जो दिशाप्रोक्षिक तापस है मै उन दिशाप्रोक्षिक तापसो के पास प्रव्रजित होना चाहता हूँ। प्रव्रजित होने के पश्चात् इस प्रकार का यह कठिन अभिग्रह अगीकार करूँगा–'यावज्जीवन के लिए निरन्तर षष्ठ–षष्ठभक्त (बेला–बेला) पूर्वक दिशा चक्रवाल तपस्या करता हुआ सूर्य के सन्मुख भुजाएँ उठाकर आतापनाभूमि मे आतापना लूँगा।' उसने इस प्रकार का सकल्प किया और सकल्प करके (आगामी दिन) जाज्वल्यमान सूर्य उदित होने पर बहुत से लोह–कडाहो आदि को लेकर दिशाप्रोक्षिक तापस के रूप मे प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होने के साथ पूर्व मे निश्चय किया हुआ अभिग्रह अगीकार करके प्रथम षष्ठक्षपण दो–दो दिन का तप अगीकार करके विचरने लगा।

16. (b) Of these *tapasas* (hermits) I would like to get initiated with the *Dishaprokshiks* (those who sprinkle water in all directions for worship) After getting initiated I will take this rigorous resolve—"I will observe a life long vow of continuous two day fasts (a two day fast followed by a day of eating and again followed by a two day fast and so on) While doing this I will perform the *Disha-chakraval* practice mortifying my body enduring heat of the sun with raised arms in the heat-mortification arena" Deciding thus, at dawn (next morning) he took along many iron and other utensils and got initiated as a *Dishaprokshik* hermit Immediately on initiation he took the aforesaid resolve and moved about commencing the first two day fast

विवेचन–दिशा चक्रवाल तपस्या के सम्बन्ध मे आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने स्पष्टीकरण किया है–तपस्या के पारणे के लिए तपस्वी तपोभूमि के चारो ओर फलो का सग्रह करके रखता है। पारणे का समय आने पर पहले पारणे मे पूर्व दिशा मे रखे हुए फलो का सेवन करके पारणा करता है। दूसरे पारणे मे दक्षिण दिशा मे, तीसरे पारणे मे पश्चिम दिशा मे तथा चौथे पारणे मे उत्तर दिशा मे रखे फलो को ग्रहण करता है। इस पद्धति से जिस तपस्या मे पारणा किया जाता है, वह दिशा–चक्रवाल तपस्या कही जाती है। *[तापसो का विस्तृत वर्णन औपपातिकसूत्र ७२ मे किया गया है।]*

Elaboration—Explaining the *Disha-chakraval* practice Acharya Shri Atmaram ji M states—For breaking fast in this practice the aspirant collects fruits and places in four directions of the arena of practice At the proper time he breaks his first fast eating the fruits placed in the east direction The second, third and fourth fasts are broken by eating fruits placed in south, east, and north directions respectively The practice in which fast is broken following this sequence is called *Disha-chakraval* practice *[detailed description of hermits is available in Aupapatik Sutra, aphorism-72]*

१७. तए णं सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमणपारणंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसिं पुक्खेइ, "पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं। जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणिय पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ" त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य (जाण) हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गिण्हित्ता किढिणसंकाइयगं भरेइ, भरित्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहाओ कट्ठाणि य गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलस–हत्थगए जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता गंगं महाणइं ओगाहइ ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करित्ता जलकिड्डं करेइ, करित्ता जलाभिसेयं करेइ, करित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकयकज्जे दब्भकलस–हत्थए गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरयं करेइ, करित्ता अरणिं करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्कित्ता समिहा कट्ठाणि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ उज्जालित्ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे–

तं जहा–सकथं वक्कलं ठाणं, सेज्जभण्डं कमण्डलुं।
दण्डदारुं तहप्पाणं, अह ताइं समादहे॥१॥

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ। चरुं साहेइ, साहित्ता बलिवइस्सदेवं करेइ करेत्ता अतिहिपूयं करेइ करेत्ता, तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ।

तए णं सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणपारणगंसि, तं चेव सव्वं भाणियव्वं (जाव) आहारं आहारेइ। नवरं इमं नाणत्तं–"दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं, जाणि य तत्थ कन्दाणि य (जाव) अणुजाणउ" त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ।

एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया (जाव) पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ।

उत्तरेणं वेसमणे महाराया (जाव) उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ (जाव) आहारं आहारेइ।

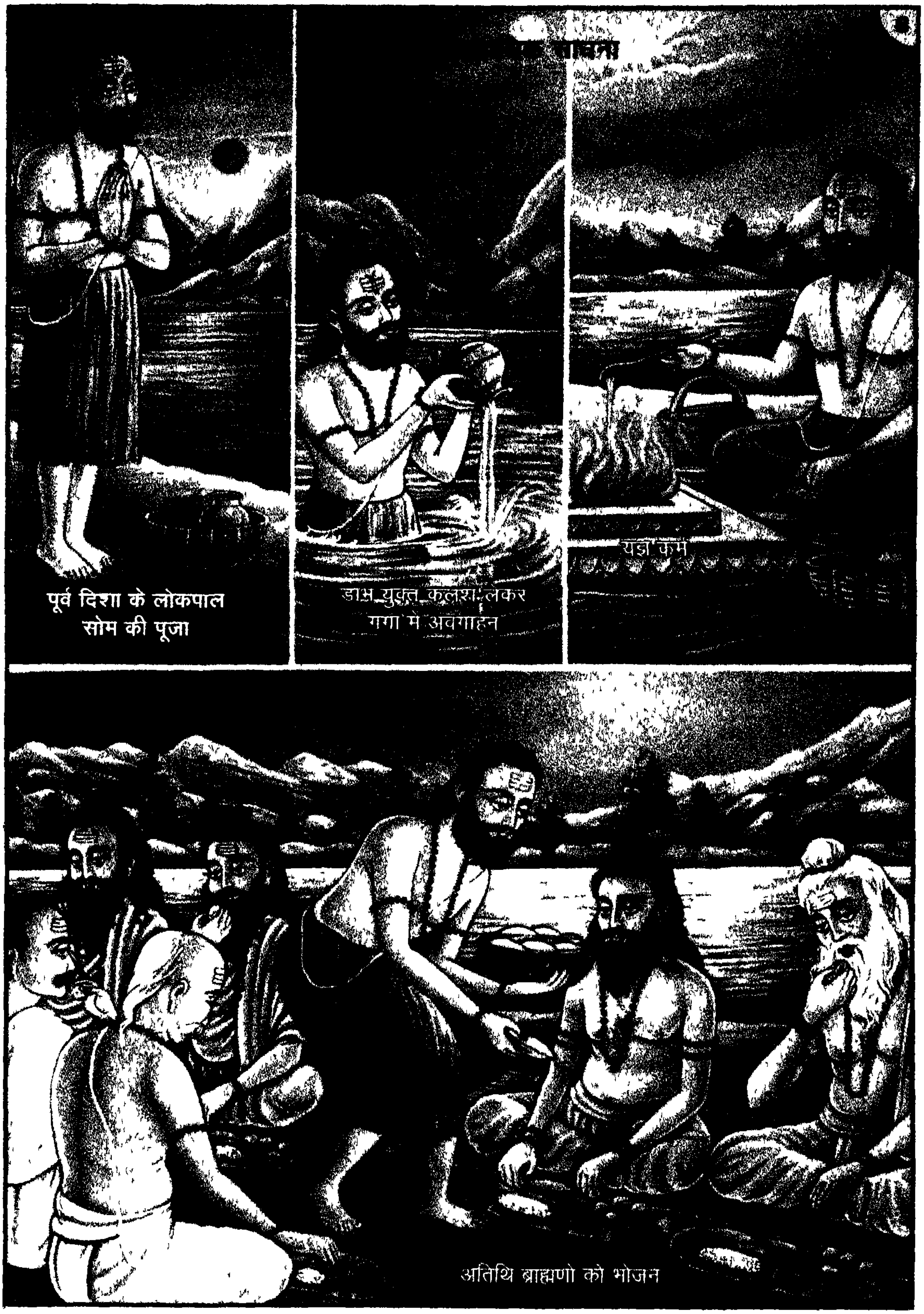
१७. (प्रव्रजित होकर) वह सोमिल ब्राह्मण ऋषि प्रथम बेले के पारणे के दिन आतापना भूमि से नीचे उतरे। उतरकर वल्कल वस्त्र धारण किया, जहाँ अपनी कुटिया थी, वहाँ आये। आकर वहाँ से–किढिण बाँस की छबडी और कावड को ग्रहण किया, फिर पूर्व दिशा का पूजन–प्रक्षालन किया और बोला–"हे पूर्व

दिशा के लोकपाल सोम महाराज ! साधनामार्ग मे चलते हुए मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करे और पूर्व दिशा मे जो भी कन्द, मूल, छाल, पत्र, पुष्प, फूल, बीज और हरी वनस्पतियाँ घास आदि है, उन्हे लेने की आज्ञा दें।'' यो कहकर सोमिल ब्रह्मर्षि पूर्व दिशा की ओर गया और वहाँ जो भी कन्द, मूल यावत् घास आदि थी उन्हे अपनी बाँस की छबड़ी व कावड मे रखता है। फिर दर्भ (डाभ), कुश तथा वृक्ष की शाखाओ को मोडकर तोडे हुए पत्ते और समिधाकाष्ठ ग्रहण किया, पश्चात् अपनी कुटिया पर आये। कावड सहित छबडी नीचे रखी, फिर वेदिका (बैठने के लिए चबूतरे का साफ स्थान) बनाता है। उसे गोबर आदि से लीपकर शुद्ध किया। तदनन्तर जल छिडकता है फिर डाभ और कलश हाथ मे लेकर गंगा महानदी के पास आकर गगा महानदी में अवगाहन करता है। उसके जल से देह शुद्ध करता है। फिर जल क्रीडा करके, अपनी देह पर पानी सीचा और आचमन आदि करके स्वच्छ और परम शुचिभूत (पवित्र) होकर देव और पितरो का तर्पण करता है। पश्चात् डाभ सहित कलश को हाथ मे लेकर गगा महानदी से बाहर निकलता है। फिर अपनी कुटिया मे आकर डाभ, कुश और बालू से वेदिका (चबूतरा) निर्माण करता है। सर (मथन--काष्ठ) और अरणि तैयार की। मथन-काष्ठ वे अरणि काष्ठ को रगडा, अग्नि सुलगाई। अग्नि प्रज्वलित की। तब उसमे समिधा (लकडी) डालकर अग्नि और अधिक प्रज्वलित होने पर अग्नि की दाहिनी ओर ये सात वस्तुएँ स्थापित की-(१) सक्थ (उपकरण विशेष), (२) वल्कल, (३) स्थान (आसन), (४) शय्या-भाण्ड, (५) कमण्डलु, (६) लकडी का दड, और (७) अपना शरीर। इन सातो वस्तुओ को स्थापित कर मधु, घी और चावलो का अग्नि में हवन किया और चरु से बलि प्रदान की। तथा नित्य यज्ञ कर्म किया। अतिथिपूजा की (अतिथियो को भोजन कराया) और उसके बाद स्वय आहार ग्रहण किया।

इसके पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि ने दूसरा षष्ठक्षपण (बेला) अगीकार किया। उस दूसरे बेले के पारणे मे भी प्रथम पारणे की भाँति आहार करने तक वही विधि है। इतना विशेष ज्ञातव्य है कि इस बार दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके कहा-''हे दक्षिण दिशा के यम महाराज ! प्रस्थान-साधना के लिए प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करे और यहाँ जो कन्द, मूल आदि है, उन्हे लेने की आज्ञा दे,'' ऐसा कहकर दक्षिण की तरफ प्रस्थान किया।

तदनन्तर उन सोमिल ब्रह्मर्षि ने तृतीय बेला तप अगीकार किया। उसके पारणे के दिन भी पूर्वोक्त सब विधि-विधान किया, विशेष इतना है कि तब पश्चिम दिशा की पूजा करके बोला-''हे पश्चिम दिशा के लोकपाल वरुण महाराज ! परलोक-साधना मे प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करे।'' ऐसा कहकर पश्चिम दिशा का अवलोकन किया और वेदिका आदि बनाई, उसके बाद स्वय आहार किया, यहाँ तक का सब वृत्तान्त प्रथम पारणे के समान जानना चाहिए।

इसके बाद सोमिल ब्रह्मर्षि ने चतुर्थ बेला तप अगीकार किया। पारणा के दिन प्रथम पारणे की सारी विधि की। विशेष इतना है कि इस बार उत्तर दिशा की पूजा करके इस प्रकार प्रार्थना की-''हे उत्तर दिशा के लोकपाल वैश्रमण महाराज ! प्रस्थान-साधना मे प्रवृत्त मुझ सोमिल ब्रह्मर्षि की रक्षा करे।'' इत्यादि कहकर उत्तर दिशा का अवलोकन किया। बाकी पूर्व दिशा के वर्णन के समान सभी चारो दिशाओ का वर्णन एक समान जानना चाहिए।


पूर्व दिशा के लोकपाल
सोम की पूजा
डाभ युक्त कलश लेकर
गंगा में अवगाहन
यज्ञ कर्म
अतिथि ब्राह्मणों को भोजन

चित्र परिचय-८

Illustration No. 8

सोमिल की दिशा प्रोक्षिक साधना

ब्राह्मण ऋषि सोमिल वल्कल वस्त्र पहन कर बाँस की छावड व कावड आदि लेकर पूर्व दिशा मे आता है। पूर्व दिशा के लोकपाल सोम महाराज का पूजन कर साधना मार्ग मे प्रस्थान की आज्ञा लेता है।

पूर्व दिशा मे आगे जाकर डाभ और कलश मे हाथ लिए गगा महानदी मे अवगाहन कर देव पितरो सम्बन्धी तर्पण आदि कार्य सम्पन्न करता है।

नदी से बाहर आकर तट पर बालू की वेदिका का निर्माण करता है। फिर यज्ञ कुण्ड मे अग्नि प्रज्ज्वलित कर मधु घृत चावलो आदि से हवन कर यज्ञ कर्म सम्पन्न करता है।

यज्ञ सम्पन्न कर अतिथियो वृद्ध ब्राह्मणो आदि को भोजन कराकर अतिथि पूजा करके फिर स्वय भोजन ग्रहण करता है।

इसी क्रम से दक्षिण पश्चिम उत्तर आदि चारो दिशाओ के लोकपालो की आज्ञा लेकर दिशा पूजन आदि सम्पूर्ण क्रियाएँ करता है।

-वर्ग ३, अ ३ सूत्र १७

SOMIL'S DISHAPROKSHIK PRACTICE

Somil Brahmin goes to the east putting on his bark-garments and taking a bamboo basket, pole, etc After due worship he seeks permission from Soma, the guardian angel of the east, to proceed on the spiritual path

Going towards east, he takes the grass and a pitcher and entering the Ganges he makes offerings to deities and his ancestors

Coming out of the river he prepares a sacrificial platform with sand He then makes offerings of honey, butter-oil, and rice into the pyre performing the *yajna*

After that he reveres the guests and offers them food He eats food only after this

He performs the same ritual in all the remaining cardinal directions after seeking due permission from the guardian angel of each direction, south, east, and north

—Sec III Ch 3, Sutra 17

SOMIL'S DISHAPROKSHIK PRACTICE

17. (Post-initiation) On the day he was to break his first two day fast that Somil Brahmin stepped down from the heat-mortification arena He then put on his bark-garments and came to his hut He took a bamboo basket and a pole to carry it After worshipping and sprinkling water in the east he uttered—"O honoured Soma, the guardian angel of the east, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, bark, leaves, flowers, fruits, seeds, and green vegetables as well as grass that are available in the east " With these words Somil Brahmarshi went towards east and collected whatever bulbous roots, roots, and so on up to grass he could find and put them in the basket He also collected some grass, some leaves by bending branches, and some fire-wood He then returned to his hut He placed the basket and the pole on the ground Now he made a clean platform and plastered it with cow-dung and other purifying things After sprinkling water over that spot he took the grass and a pitcher, walked to the Ganges and entered it He washed his body clean in the river water and played around in the river to soak his body After washing his mouth and getting absolutely pure, he made offerings of water to deities and his ancestors After this ritual he came out of the Ganges carrying the grass and the pitcher and returned to his hut Back in the hut, he prepared a sacrificial platform with grass and sand Taking the fire-wood he prepared two pieces of wood, one with a hole and the other pointed to fit in the whole With the help of these two pieces of wood he made fire and inflamed it by adding fire-wood Once the pyre was ready he installed seven things on its right-hand side—(1) *Sakth* (an instrument), (2) *Valkal* (bark garment), (3) *Sthaan* (*aasan*, seat or mattress), (4) *Shayya-bhaand* (bed and utensils), (5) *Kamandalu* (gourd-bowl), (6) wooden staff, and (7) one's own body Installing these seven things he offered honey, butter-oil, and rice into the pyre and offered sacrifice with the urn He performed the daily *yajna* and worshipped guests (offered food to guests) At last he himself accepted food

Somil Brahmin then commenced his second two-day fast. He broke the second two-day fast following the aforesaid procedure The only change was that this time he faced south and uttered—"O honoured Yama, the guardian angel of the south, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, .. and so on up to grass are available in the south " With these words Somil Brahmarshi went towards the south

Somil Brahmarshi then commenced his third two-day fast He broke the third two-day fast following the aforesaid procedure The only change was that this time he faced west and uttered—"O honoured Varun, the guardian angel of the west, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots,.. and so on up to... grass are available in the west" With these words Somil Brahmarshi went towards the west He then continued the aforesaid procedure he had followed on the first breaking of fast up to At last he himself accepted food.

Somil Brahmarshi then commenced his fourth two-day fast He broke the fourth two-day fast following the aforesaid procedure The only change was that this time he faced north and uttered—"O honoured Vaishraman, the guardian angel of the north, please protect me, Somil Brahmarshi, on the spiritual path and permit me to take whatever bulbous roots, roots, ... and so on up to. grass are available in the north." With these words Somil Brahmarshi went towards the north He then continued the aforesaid procedure he had followed on the first breaking of fast up to At last he himself accepted food. The details of the procedure for all the four directions are same as those of the east

सोमिल का नया संकल्प

१८. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था—"एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तए णं मए वयाइं चिण्णाइं (जाव) जूवा निक्खित्ता। तए णं मम वाणारसीए (जाव) पुप्फारामा य (जाव) रोविया। तए णं मए सुबहुं लोह (जाव) घडावेत्ता (जाव) जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता जाव जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता सुबहुं लोह (जाव) गहाय मुण्डे (जाव) पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठं छट्ठेणं (जाव) विहरामि।

तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य परियायसंगइए य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स किढिणसंकाइयगहियसभण्डोवगरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेत्तए" एवं संपेहेइ।

संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य, तं चेव जाव, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—"जत्थेव णं अम्हं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तए" त्ति अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ।

अभिगिण्हित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहमहपत्थाणं पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, वेड्ढित्ता उवलेवणसंमज्जणं करेइ, करित्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणई, जहा सिवो जाव गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएइ, रइत्ता सरगं करेइ करित्ता जाव बलिवइस्सदेवं करेइ, करित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ।

१८. तत्पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि के हृदय मे किसी समय मध्यरात्रि के समय अनित्य जागरणा (अनित्यता सम्बन्धी चिन्तन) करते हुए इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ–'मै वाराणसी नगरी का रहने वाला, अत्यन्त महान् कुल मे उत्पन्न सोमिल ब्रह्मर्षि हूँ। गृहस्थाश्रम मे रहते हुए मैने व्रतो का पालन किया है। यज्ञस्तम्भ आदि गडवाए। इसके बाद मैने वाराणसी नगरी के बाहर बहुत से आमो के बगीचे यावत् फूलो के बगीचे लगवाये। और फिर मैने बहुत से लोहे के कडाहे, कुडछी आदि बनवाया अपने बडे पुत्र को कुटुम्ब का भार सौपकर, मित्रो एव ज्येष्ठ पुत्र की सम्मति लेकर लोहे की कडाहियाँ आदि लेकर मुण्डित हो प्रव्रजित हुआ। प्रव्रजित होने पर षष्ठभक्त (बेले–बेले) तप करते हुए दिशाचक्रवाल साधना करने लगा।

''किन्तु अब मेरे लिए यह श्रेयष्कर है कि कल सूर्योदय होने पर बहुत से तापस जो अब मेरी दृष्टि से ओझल हो चुके है अथवा मेरे पूर्व सगतिक–(पूर्वकाल के साथी) और पर्यायसगतिक–(तापस अवस्था के साथी) रहे है, उन सबसे पूछकर और आश्रम मे रहने वाले सैकडो जनो को वचन आदि से सतुष्ट/सम्मानित कर और उनसे अनुमति लेकर वल्कल वस्त्रधारी बनकर, कावड की छबडी मे अपने भाण्डोपकरणो को रखकर तथा काष्ठमुद्रा से अपना मुँह बाँधकर उत्तराभिमुख होकर उत्तर दिशा मे महाप्रस्थान (मृत्यु के लिए गमन) करूँ।'' सोमिल ने इस प्रकार से विचार किया।

इस प्रकार विचार करके सोमिल ब्रह्मर्षि ने दूसरे दिन सूर्य उदय होने पर अपने निश्चय के अनुसार उन सभी तापसो, जो पहले मिल चुके है, पूर्व परिचित है और जो पहले साथ–साथ रह चुके है। उन सबसे पूछकर तथा आश्रमस्थ अनेक सैकडो जनो को सतुष्ट कर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा। मुख को बाँधकर इस प्रकार का अभिग्रह (प्रतिज्ञा) धारण किया, ''जहाँ कही भी–चाहे जल हो या स्थल हो, दुर्गम स्थान हो अथवा नीचा प्रदेश हो, पर्वत हो अथवा विषम भूमि हो, गड्ढा हो या गुफा हो, इन सब मे से जहाँ कही भी मै चलते–चलते फिसल जाऊँ या गिर पडूँ तो वहाँ से मुझे उठना नही कल्पता है अर्थात् मैं वहाँ से नही उठूँगा।'' ऐसा अभिग्रह धारण कर लिया।

तत्पश्चात् उत्तराभिमुख होकर महाप्रस्थान (मृत्यु पथ) के लिए वह सोमिल ब्रह्मर्षि उत्तर दिशा की ओर चल पडे। गमन करते हुए अपराह्ण काल (दिन के तीसरे प्रहर) मे जहाँ उत्तम अशोक वृक्ष था, वहाँ आये। उस अशोक वृक्ष के नीचे अपना कावड रखा। वेदिका (बैठने की जगह) साफ की, उसे लीप–पोतकर स्वच्छ किया, फिर डाभ (दूब) और कलश हाथ मे लेकर गगा महानदी के पास आये, वहाँ आकर शिव राजर्षि के समान उस गगा महानदी मे स्नान आदि किया। फिर वहाँ से बाहर आकर जहाँ वह उत्तम अशोक वृक्ष था वहाँ आकर डाभ, कुश एव वालुका से वेदी की रचना की, फिर सरक व अरणि काष्ठ को रगडकर

अग्नि प्रज्वलित की इत्यादि पूर्व में कहे गये सभी विधि-विधान पूर्ण करके बलिवैश्वदेव-अग्नियज्ञ करके काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

SOMIL'S NEW RESOLVE

18 Later, some other midnight, while pondering over his ephemeral state, Somil Brahmin thought—"I am Somil Brahmarshi, a resident of Varanasi city and belonging to a very high caste Brahmin family I have accepted vows (traditional rituals and codes), and so on up to installed *yupas* (ritual pillar in a *yajna*) After that I have planted many mango-orchards and so on up to flowering plants outside Varanasi city And then I got made numerous cooking pans and spoons of iron I handed over the responsibility of the family to my eldest son Then after seeking permission from friends and my eldest son, and carrying the iron and copper utensils, I got tonsured and initiated as a hermit After getting initiated I commenced the *Disha-chakraval* practice observing the austerity of continuous two-day fasts

"But now I feel that tomorrow when the sun is at its full glow I should bid farewell to the many *tapasas* (hermits) who are beyond my vision, or those who have been my companions of my pre-hermit and post-hermit states I should greet and honour with words the hundreds of residents of the hermitage, seek their permission, put on bark-garments, place my utensils and other possessions in the basket of the sling-pole, cover my mouth with a strip of wood, face northwards and depart towards north for the great journey (journey unto death)" Thus thought Somil

Thinking thus and following his resolve Somil Brahmarshi, after dawn the next morning, bade farewell to the many *tapasas* (hermits) who had met him, were known to him and were his companion Seeking their permission and gratifying hundreds of residents of the hermitage and so on up to covering his mouth with a strip of wood he took this vow—"It would not be proper for me to (I resolve not to) get up from a place where I slip or otherwise fall while walking, irrespective of it being water, land, difficult terrain, a depression, a hill, uneven ground, a ditch, or a cave" Thus he took a resolve

Then Somil Brahmarshi faced northwards and moved towards north for the great journey (journey unto death) While walking he arrived near an excellent Ashoka tree in the afternoon (third quarter of the day) He placed his basket and sling-pole under that Ashoka tree Then he made a clean platform and plastered it with purifying pastes After that he took the grass

and a pitcher, walked to the Ganges, and like Shıva Rajarshi took his bath and performed other rıtuals He then came out and returned to the Ashoka tree Back there, he prepared a sacrificıal platform with grass and sand Taking the fire-wood he prepared two pieces of wood and with their help made fire and inflamed it by adding fire-wood After performing all other rituals including the offerings to fire (as already mentioned) he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down.

विवेचन–इस सूत्र मे सोमिल ब्रह्म ऋषि की महाप्रस्थान यात्रा–मृत्यु की तैयारी मे प्रस्थान करने का वर्णन है। यहाँ शिव राजर्षि की तरह गगा मे उतरकर स्नान आदि करने की सूचना है। शिव राजर्षि का कथानक भगवतीसूत्र, शतक ११, उद्देशक ९ मे विस्तृत रूप मे आया है। ये हस्तिनापुर के राजा थे। सोमिल की तरह ही अपने राज्य का त्यागकर दिशाप्रोक्षिक तापस प्रव्रज्या धारण करके इसी प्रकार साधना करते हुए उन्हे विभगज्ञान उत्पन्न होता है। विभग ज्ञान से समुद्र–पर्यन्त देखते है, तब अपनी शकाओं का समाधान पाने भगवान महावीर के पास आते है। समाधान प्राप्त कर श्रमण प्रव्रज्या लेकर उग्र तपकर सर्व कर्म क्षय कर निर्वाण को प्राप्त होते है।

इस सूत्र मे आये विशेष शब्दो का टीकाकार ने इस प्रकार स्पष्टीकरण किया है–

काष्ठ मुद्रा–यह काठ की एक छोटी पट्टी होती थी जिसके दोनो सिरों पर छिद्र रहते थे, जिनमे धागा डालकर मुख पर बाँधी जाती थी। काष्ठमुद्रा मुख पर धारण करने का मतलब है, कठोर मौन धारण कर लेना।

शरक–यह एक प्रकार की लकडी होती है, जिसे अरणि के साथ घिसने पर अग्नि प्रज्वलित हो उठती है।

महाप्रस्थान–मृत्यु की अपेक्षा रखकर जो कठोर आचार स्वीकार किया जाता है, वह 'महा प्रस्थानपथ' है।

Elaboration—Thıs aphorism describes the great journey of Somil Brahmarshi, the journey preparatory to death There is a mention of entering the Ganges and taking bath like Shiva Rajarshi The detailed story of Shiva Rajarshi is narrated in *Bhagavati Sutra, 11/9* He was the ruler of Hastinapur Like Somil he too renounced his kingdom and got initiated as a *Dishaprokshik* hermit While performing the aforesaid practices he acquired *Vibhanga Jnana* (pervert knowledge) With the help of this *Vibhanga Jnana* his vision expand up to oceans He then approached Bhagavan Mahavir to remove his doubts. Once his doubts were removed he got initiated as an ascetic and after destroying all *karmas* through intense austerities attained nirvana

The technical terms used here have been explained by the commentator (*Tika*) as follows—

Kaasth Mudra—it is a small strip of wood having tie-holes at both ends It is tied on the face with strings passing through holes to cover mouth. To cover one's mouth with it indicates that he has taken a vow of strict silence

Sharak—This is a type of wood which when rubbed with *arani* (another type of wood) gives sparks to make fire

Mahaprasthan—the vow of rigorous conduct accepted with the purpose of embracing death is called *mahaprasthan path* or the great journey.

देव द्वारा प्रतिबोध

१९. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे सोमिलमाहणं एवं वयासी–"हं भो सोमिलमाहणा, पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते।" तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चं पि तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्ते कढिणसंकाइयं गहाय गहियभंडोवगरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

१९. तब एक समय सोमिल ब्रह्मर्षि के समक्ष मध्य रात मे एक देव प्रकट हुआ। देव ने सोमिल ब्रह्मर्षि को सम्बोधित कर इस प्रकार कहा–"हे सोमिल ब्राह्मण ! तुमने जो प्रव्रज्या धारण की है, वह दुष्प्रव्रज्या है।" देव ने दूसरी और तीसरी बार भी ऐसा ही कहा। किन्तु सोमिल ब्राह्मण ऋषि ने उस देव के कथन पर ध्यान नही दिया, यावत् मौन धारण किये रहा।

सोमिल ब्रह्मर्षि द्वारा इस प्रकार उपेक्षा व अनादर किया जानकर वह देव जिस दिशा से आया था, वापस उसी दिशा मे चला गया।

तत्पश्चात् दूसरे दिन सूर्योदय होने पर वल्कल वस्त्रधारी सोमिल ने अपने कावड, भाण्डोपकरण आदि लेकर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा तथा उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर दिया।

THE DIVINE ADVISE

19. Then one midnight a god appeared before Somil Brahmarshi and said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis " The god uttered these words a second and a third time also But Somil Brahmarshi gave no heed to his words and remained silent

Realizing it to be neglect and disrespect the god returned in the direction from which he came

Next morning at dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north

२०. तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तिवण्णे तेणेव उवागए। सत्तिवण्णस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेदिं वड्ढेइ। जहा असोगवरपायवे जाव अग्गिं हुणइ, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे जाव पडिगए। तण णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गेण्हइ, गिण्हित्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२०. इसके बाद–दूसरे दिन अपरान्ह काल के अन्तिम प्रहर (सूर्यास्त से कुछ ही पूर्व सन्ध्याकाल) मे सोमिल ब्रह्मर्षि जहाँ सप्तपर्ण वृक्ष था, वहाँ आता है। सप्तवर्ण वृक्ष के नीचे (कावड रखकर) वेदिका–बैठने के स्थान को साफ करता है, इत्यादि जैसे पहले अशोक वृक्ष के नीचे कृत्य किये थे, वे सभी यहाँ भी किये, यावत् अग्नि मे आहुति दी और काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर बैठ गये।

तब मध्य रात्रि के समय मे सोमिल ब्रह्मर्षि के समक्ष पुन एक देव प्रकट हुआ और अतरिक्ष मे खडा रहकर अशोक वृक्ष के नीचे बैठे हुए सोमिल को जिस प्रकार पहले कहा था इसी प्रकार कहा कि "तुम्हारी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है, परन्तु सोमिल ब्रह्मर्षि ने उस देव की बात पर कुछ ध्यान नही दिया (मौन धारण किये रहा) वह देव पुन लौट गया।

इसके बाद (तीसरे दिन) वल्कल वस्त्र धारण करके सोमिल ने सूर्य उदय होने पर अपने कावड उपकरण आदि लिये। काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधा और मुख बाँधकर उत्तर दिशा की ओर चल दिये।

20. While walking he arrived near a *Saptaparna* tree in the afternoon (third quarter of the day) He placed his basket and pole under that *Saptaparna* tree Then he made a clean platform and plastered it with purifying pastes After that he performed all what he had done under the Ashoka tree and finally after offerings to fire he covered his mouth with a strip of wood and sat down

Then at midnight a god appeared before Somil Brahmarshi and, as done earlier under the Ashoka tree, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis " But Somil Brahmarshi gave no heed to his words and remained silent Once again the god left

Next morning (the third day) at dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north

२१. तए णं से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, ठवित्ता वेइं वड्ढेइ जाव गंगं

महाणइं पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ। वेइं रएइ, रइत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२१. इस प्रकार सोमिल ब्रह्मर्षि तीसरे दिन सायकाल मे जहाँ उत्तम अशोक वृक्ष था, वहाँ आ पहुँचे। उस अशोक वृक्ष के नीचे कावड रखी। बैठने के लिए वेदी बनाई और दर्भयुक्त कलश को लेकर गगा महानदी मे अवगाहन किया। स्नान आदि कृत्य करके गगा महानदी से बाहर निकले। निकलकर अशोक वृक्ष के नीचे वेदी का निर्माण किया। अग्निहोत्रादि (हवन) किया फिर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

तत्पश्चात् मध्य रात्रि के समय मे सोमिल के समक्ष पुन वही देव प्रकट हुआ और उसने उसी प्रकार कहा–"हे सोमिल ! तेरी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" सोमिल मौन धारण किये रहा, तब वह देव वापस लौट गया।

इसके बाद सूर्योदय होने पर वह वल्कल वस्त्र पहनकर कावड और भाण्डोपकरण उठाकर काष्ठमुद्रा से मुख को बाँधकर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके चल देता है।

21. Thus on the third day while walking he arrived near an excellent Ashoka tree in the afternoon (third quarter of the day) He placed his basket and pole under that Ashoka tree Then he made a clean platform After that he took the grass and a pitcher, walked to the Ganges and took his bath and performed other rituals He then came out and returned to the Ashoka tree Back there, he prepared a sacrificial platform After offerings to fire he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down

Then at midnight the same god appeared once again before Somil Brahmarshi and, as earlier, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis " But Somil Brahmarshi remained silent and the god left

At dawn bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north

२२. तए णं से सोमिले चउत्थे दिवसे पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए। वडपायवस्स अहे कढिणं संठवेइ, संठवित्ता वेदिं वड्ढेइ, उवलेवणसंमज्जणं करेइ, जाव कट्ठमुद्दाए मुहं

बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था, तं चेव भणइ जाव पडिगए।

तए णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकाइयं, जाव, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए।

२२. तत्पश्चात् चलते-चलते सोमिल ब्रह्मर्षि चौथे दिन के सन्ध्या काल मे जहाँ वट-वृक्ष था, वहाँ आए। आकर वट-वृक्ष के नीचे कावड रखी। बैठने के योग्य स्थान साफ किया। उसको गोबर मिट्टी से लीपा, स्वच्छ किया। इसी प्रकार काष्ठमुद्रा से मुख बाँधा और मौन धारण कर बैठे गये। मध्य रात्रि के समय पुन सोमिल के समक्ष वही देव प्रकट हुआ और उसने पहले के समान कहा-"सोमिल ! तुम्हारी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" सोमिल मौन रहा, वह देव अन्तर्धान हो गया।

प्रात जाज्वल्यमान तेजयुक्त सूर्य उदय होने पर वह सोमिल वल्कल वस्त्र धारण कर अपनी कावड व अन्य उपकरण लेकर और काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर उत्तर दिशा की ओर चल पडा।

22. On the fourth day while walking Somil Brahmarshi arrived near a banyan tree in the afternoon (third quarter of the day). He placed his basket and pole under that banyan tree. Then he made a clean platform and plastered it with cow-dung and clay and so on up to he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down Then at midnight the same god appeared once again before Somil and, as earlier, said to him—"O Somil Brahmin ! The praxis you have accepted is a bad praxis" But Somil remained silent and the god left

At dawn when the sun became bright, bark-garment clad Somil took his baskets and pole as well as other possessions, covered his mouth with the wooden strip and moved towards north

२३. तए णं से सोमिले पंचमदिवसंमि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागच्छइ। उंबरपायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेइ, वेदिं वड्ढइ, जाव संचिट्ठइ।

तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे, जाव एवं वयासी-"हं भो सोमिला, पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते," पढमं भणइ, तहेव तुसिणीए संचिट्ठइ। देवो दोच्चं पि तच्चं पि वयइ-"सोमिला, पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते।" तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी-"कहं णं देवाणुप्पिया ! मम दुप्पव्वइयं ?"

तए णं से देवे सोमिलं माहणं वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियं पंचाणुव्वए सत्तसिक्खावए दुवालसविहे सावयधम्मे पडिवन्ने। तए णं तव अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं .... जाव पुव्वचिंतियं. देवो उच्चारेइ जाव जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिट्ठसि। तए णं

पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउब्भवामि, "हं भो सोमिला,पव्वइया, दुप्पव्वइयं ते," तह चेव देवो नियवयणं भणइ, जाव पंचमदिवसम्मि पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव उम्बरपायवे, तेणेव उवागए किढिणसंकाइयं ठ्वेसि, वेइं वड्ढेसि, उवलेवणं संमज्जणं करेसि, करेत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधेसि, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठसि। तं एवं खलु, देवाणुप्पिया, तव दुप्पव्वइयं।"

२३. अपनी प्रस्थान यात्रा के पाँचवे दिन वह सोमिल ब्रह्मर्षि सन्ध्या के समय जहाँ उदुम्बर (गूलर) का वृक्ष था, वहाँ आकर ठहरे। उदुम्बर वृक्ष के नीचे अपनी कावड व उपकरण रखे। वेदिका बनाई, पश्चात् काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये।

मध्य रात्रि के समय पुन सोमिल ब्राह्मण के समक्ष वही देव प्रकट हुआ और उसने पहले की तरह कहा-"हे सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" इस प्रकार पहली बार उस देव की वाणी को सुनकर मौन धारण कर बैठे रहे। देव ने दूसरी और तीसरी बार भी इसी प्रकार कहा-"सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" देव द्वारा दूसरी-तीसरी बार भी इसी प्रकार कहे जाने पर सोमिल ने देव से प्रश्न किया-"हे देवानुप्रिय ! मेरी प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या क्यो है ?"

सोमिल के पूछने पर देव ने कहा-"देवानुप्रिय ! तुमने पहले पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् से पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार का श्रावकधर्म अगीकार किया था। (किन्तु इसके बाद साधुओ के दर्शन उपदेश आदि का सयोग न मिलने और मिथ्यात्व पर्यायो के बढने से अगीकृत श्रावकधर्म को त्याग दिया) इसके अनन्तर किसी समय अर्ध-रात्रि मे कुटुम्ब जागरणा करते हुए (तुम्हारे मन मे विचार उत्पन्न हुआ कि गगा किनारे तपस्या करने वाले विविध प्रकार के तापसो मे से दिशाप्रोक्षिक तापसो के पास लोहे के कडाह, कुडछी और ताँबे के तापसपात्र बनवाकर और उन्हे लेकर दिशाप्रोक्षिक तापस बनूँ। इत्यादि सोमिल ब्राह्मण द्वारा) पूर्व मे चिन्तन किये सभी मनोभावो को देव ने प्रकट किया और कहा-"फिर तुमने दिशाप्रोक्षिक प्रव्रज्या धारण की। प्रव्रज्या धारण कर अन्त मे यह अभिग्रह लिया, अभिग्रह के अनुसार जहाँ अशोक वृक्ष था, तुम वहाँ आये और कावड रख वेदी आदि बनाई। गगा मे स्नान किया। अग्निहोत्र किया। काष्ठमुद्रा से मुख बाँधकर मौन होकर बैठ गये।" बाद मे मध्य रात्रि के समय तुम्हारे समीप आकर मैने तुम्हें प्रतिबोधित किया-"हे सोमिल ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।" किन्तु तुमने उस पर ध्यान नही दिया और मौन ही रहे। इस प्रकार मैने तुम्हे चार दिन तक समझाया किन्तु तुमने मेरे कथन पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद आज पाँचवे दिवस चौथे प्रहर मे इस उदुम्बर वृक्ष के नीचे आकर तुमने अपना कावड रखा। बैठने के स्थान को साफ किया, लीप-पोतकर स्वच्छ किया। अग्नि मे हवन किया और काष्ठमुद्रा से अपना मुख बाँधकर मौन धारण कर बैठ गये। इस प्रकार हे देवानुप्रिय ! तुम्हारी यह प्रव्रज्या दुष्प्रव्रज्या है।

23. On the fifth day of his great journey, Somil Brahmarshi arrived near an Udumbar (*Gular*, the wild fig, Ficus glomerata) tree in the afternoon (third quarter of the day) He placed his basket and pole under that wild big tree Now he made a clean platform and so on up to he covered his mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down

Then at midnight the same god appeared once again before Somil and, as earlier, said to him—"O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis." But Somil remained silent. The god uttered these words a second and a third time also—"O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis." On this second and third utterance Somil asked the god—"Beloved of gods ! Why my praxis is bad praxis ?"

The god replied to Somil Brahmin—"Beloved of gods ! Earlier you had accepted the twelve-fold *Shravak dharma* (code of laity) inclusive of five *anuvrats* (minor vows) and seven *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline). (Deprived of opportunities to behold ascetics and to listen to their discourses, you succumbed to falsehood and abandoned the accepted *Shravak dharma*) Later, one midnight, while pondering over your family circumstances (you thought of getting made and carrying iron pans and spoons and copper utensils, going to hermits on the banks of the Ganges, and getting initiated as *Dishaprokshik* hermit) and so on" The god narrated all what Somil had thought earlier and added—"Then you got initiated as *Dishaprokshik* hermit and in due course took a vow and following it you came to an Ashoka tree placed your baskets and pole under it and made a clean platform, took a bath in the Ganges, offered sacrifice in fire, covered your mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down Then at midnight I appeared before you and advised—'O Somil ! The praxis you have accepted is a bad praxis' But you did not pay any heed and remained silent In the same way I offered you advise for four days but you never paid any attention to what I said Then today, the fifth day, you arrived near an Udumbar tree in the afternoon and placed your basket and pole under the tree You cleaned the spot for sitting and plastered it After offerings in fire you covered your mouth with a strip of wood, took the vow of silence and sat down Therefore, O Beloved of gods ! The praxis you have accepted is a bad praxis"

सोमिल द्वारा पुनः श्रावकधर्म-ग्रहण

२४. तए णं से सोमिले तं देवं एवं वयासी-"कहं णं देवाणुप्पिया ! सुप्पव्वइयं ?"

तए णं से देवे सोमिलं एवं वयासी-"जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं पुव्वपडिवन्नाइं, पंच अणुव्वयाइं सयमेवं उवसंपज्जित्ताणं विहरसि, तो णं तुज्झ इयाणिं सुपव्वइयं भवेज्जा।"

तए णं से देवे सोमिलं वंदइ नमंसइ,वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं सोमिले माहणरिसी तेण देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

२४. देव का वचन सुनकर सोमिल ब्रह्म ऋषि ने उस देव से कहा–"हे देवानुप्रिय ! अब आप ही बताइये कि मेरी यह प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या कैसे हो सकती है ?"

उत्तर मे देव ने सोमिल ब्राह्मण से इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिय ! यदि तुम भगवान श्री पार्श्व प्रभु से पूर्व मे ग्रहण किये हुए पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप श्रावकधर्म को स्वयमेव पुन: स्वीकार करके विचरण करो तो तुम्हारी यह प्रव्रज्या सुप्रव्रज्या हो सकती है।"

इसके बाद देव ने सोमिल ब्राह्मण ऋषि को वन्दन नमस्कार किया और वन्दन नमस्कार करके जिस दिशा से आया था उसी दिशा मे वापस चला गया।

देव के चले जाने के पश्चात् सोमिल ब्रह्मर्षि देवता के कथनानुसार पूर्व मे स्वीकृत किये हुए पाँच अणुव्रतो (सपूर्ण बारह व्रतों) को अगीकार करके जीवन-यात्रा करने लगा।

SOMIL ACCEPTS SHRAVAK DHARMA AGAIN

24. On hearing these words from the god Somil Brahmarshi said—"O Beloved of gods ! Please tell me how my bad praxis can become a good praxis ?"

The god replied to Somil Brahmin—"Beloved of gods ! If you, on your own, once again accept the *Shravak dharma* (code of laity) inclusive of five *anuvrats* (minor vows) and seven *shikshavrats* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline) that you had accepted in the past from Bhagavan Parshva Naath and move about, your bad praxis can become good praxis "

After this the god paid homage and obeisance to Somil Brahmarshi and returned in the direction from which he had come

When the god left, Somil Brahmarshi, as advised by the god, once again accepted the five *anuvrats* (and all the twelves vows) that he had accepted in the past and commenced his spiritual journey

सोमिल की शुक्र महाग्रह मे उत्पत्ति

२५. तए णं से सोमिले बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमं (जाव) मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि (जाव) ओगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने।

तए णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववन्ने समाणे जाव भासामणपज्जत्तीए.।

२५. सोमिल ने अनेक चतुर्थभक्त (उपवास), षष्ठभक्त (बेला), अष्टमभक्त (तेला) यावत् अर्ध-मासक्षपण, मासक्षपण रूप नाना प्रकार के तप उपधान (तपश्चरण) द्वारा अपनी आत्मा को भावित

करके श्रमणोपासक-पर्याय का पालन किया। अन्त मे अर्ध-मासिक सलेखना द्वारा आत्मा की शुद्धि की और तीस भोजनों का अनशन द्वारा त्याग किया, किन्तु पूर्वकृत उन पापस्थानो (दुष्प्रव्रज्या रूप कृत प्रमाद) की आलोचना और प्रतिक्रमण नही करने के कारण सम्यक्त्व की विराधना करके मरण के समय मरण प्राप्त करके शुक्रावतंसक विमान की उपपातसभा में स्थित देव-शय्या पर (जघन्य अगुल के असंख्यातवे भाग, उत्कृष्ट सात हाथ प्रमाण अवगाहना मे) शुक्र महाग्रह मे शुक्रदेव के रूप मे उत्पन्न हुआ।

शुक्र महाग्रह देव तत्काल उत्पन्न होकर भाषा-मन पर्याप्ति आदि पाँचो पर्याप्तियो से पर्याप्त भाव को प्राप्त हुआ।

SOMIL'S REINCARNATION IN SHUKRA GREAT PLANET

25. Somil lead his *Shramanopasak* (lay worshipper of Jain ascetics) life, enkindling his soul by observing a variety of austerities including many one day, two day, three day and so on up to fortnight long and month long fasts In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of a fortnight duration and observed a fortnight long fast (avoiding thirty meals) As he died without doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death, thereby transgressing the righteous code, his soul has reincarnated instantaneously (*upapat*) as Shukra, the king of *Shukra Jyotishk* gods, in the divine bed (with a minimum occupied space of uncountable fraction of an *Angul* and a maximum of seven cubits) covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Shukravatansak vimaan* in the *Shukra Mahagraha* (great planet)

Then Shukra Mahagraha god attained the state of full development (*paryapti)* through five kinds of full development (*paryapti*). . and so on up to *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*

२६. एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं सा दिव्वा (जाव) अभिसमन्नागए। एगं पलिओवमं ठिई।

"सुक्के णं भंते ! महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ?"

"गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।"

२६. विषय का उपसहार करते हुए भगवान महावीर स्वामी ने कहा-"हे गौतम ! इस प्रकार से उस शुक्र ग्रह देव ने वह दिव्य देवऋद्धि, देवद्युति यावत् दिव्य प्रभाव प्राप्त किया है। उसकी वहाँ एक पल्योपम की आयु स्थिति है।

गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा-"भते ! वह शुक्र ग्रह देव आयु, भव और स्थिति पूर्ण होने पर उस देवलोक से च्यवन कर कहाँ जायेगा ? (कहाँ उत्पन्न होगा ?)"

भगवान ने कहा-"गौतम ! वह शुक्र ग्रह देव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने पर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध होगा, (यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगा)।"

26. Concluding the story Bhagavan Mahavir said—"Thus, Gautam ! that *Shukra Graha* god acquired that divine opulence and power. His life span there is one *Palyopam*."

Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will *Shukra Graha* god go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods, that *Shukra Graha* god will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) "

२७. निक्खेवओ–तं एवं खुल जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

२७. सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी से कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन मे इस भाव का प्रतिपादन किया है। ऐसा मै कहता हूँ।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

27. Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpika* So I state."

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

चतुर्थ अध्ययन : बहुपुत्रिका देवी
FORTH CHAPTER : BAHUPUTRIKA DEVI

उपोद्घात · प्रस्तुत अध्ययन का सन्देश

तृतीय वर्ग का यह चतुर्थ अध्ययन बहुपुत्रिका देवी के नाम से विश्रुत है। इस अध्ययन का कथानक अन्य अध्ययनो की अपेक्षा अधिक विस्तृत तथा विविध रोचक घटनाओ से भरा है।

इस अध्ययन से एक महत्त्वपूर्ण सन्देश मिलता है कि "जीवन मे कभी भी, किसी वस्तु व सुख के प्रति अधिक आसक्ति व तीव्र लालसा नही रखनी चाहिए। आसक्ति का परिणाम सदा ही दु खदायी होता है।"

बहुपुत्रिका देवी ने सतान-प्राप्ति की अत्यधिक आसक्ति व तीव्र लालसा के फलस्वरूप तीन जन्मो मे कष्ट पाये।

सुभद्रा सार्थवाही के भव मे वह बध्या थी, दूसरी पुत्रवती स्त्रियों को देखकर सन्तान-प्राप्ति की लालसा रखती थी। साध्वी बनकर भी उसने बच्चो के प्रति मोह-राग के कारण उनको खिलाना, स्नान कराना, उनके साथ विविध क्रीडा व मनोरजन करना आदि साधु जीवन के विपरीत आचरण किया। इस दोष की आलोयणा प्रतिक्रमण किये बिना मृत्यु प्राप्त कर अगले देवी भव मे वह बहुपुत्रिका देवी नाम से प्रसिद्ध हुई। वहाँ भी इन्द्रदेव के समक्ष अनेक बालक-बालिकाओ की विकुर्वणा कर उनका मनोरजन करना पडा। वहाँ से पुन सोमा ब्राह्मणी के भव मे जन्म लेगी, पूर्वजन्म की तीव्र आसक्ति का बधन मन से अभी तक नही छूटने के कारण इस जन्म मे भी वह प्रतिवर्ष दो-दो सन्तानो को एक साथ जन्म देकर सोलह वर्ष मे बत्तीस सन्तानो की माता बनेगी। छोटे-छोटे बच्चो को सँभालने, उनकी देखभाल करने से अत्यन्त परेशान होकर वह सोचती है-'इससे तो वध्या ही रहती तो अच्छा था। मै बहुसन्तानवती होकर अत्यन्त दु खी हूँ।'

इस प्रकार किसी जन्म मे जो सन्तान-सुख की लालसा से दु खी थी, इस जन्म मे वह अधिक सतानो के कारण अत्यन्त दु खी हो उठी। इसी तीव्र लालसा के काँटे उसे तीन जन्मो तक चुभते रहे।

इस अध्ययन से यह सन्देश मिलता है कि भौतिक सुख-साधनो के प्रति तीव्र लालसा, आसक्ति, मोह सदा ही दु खदायी व पीडाकारी होता है तथा जब तक अपने किये हुए पापो की आलोयणा-प्रतिक्रमण करके आत्मा नि शल्य नही होती, तब तक वह चाहे श्रावकव्रत पाले चाहे साधुव्रत ! आराधक नही होता। विराधक को परलोक मे सद्गति प्राप्त नही होती। अत जीवन के अन्त मे अवश्य ही अपने कृतकर्मो की आलोयणा, प्रायश्चित्त कर नि शल्य होकर आराधक बनने का भाव रखना चाहिए।

INTRODUCTION · THE MESSAGE OF THIS CHAPTER

This fourth chapter of the third section is popularly known as Bahuputrika Devi The story in this chapter is much longer as compared to the other chapters and is full of many interesting incidents

This chapter gives an important message—one should never have intense desire or infatuation for any thing or pleasure Infatuation always leads to misery

Bahuputrika Devi suffered for three births due to her intense desire of bearing a child

In her birth as Subhadra Sarthavahi (wife of a caravan chief) she was sterile Her desire for having a child increased when she saw other women with children Even after getting initiated as an ascetic, her fondness for children inspired her to indulge in anti-ascetic activities including fondling children, giving them a bath, and enjoying various games and other pastimes with them She died without a critical review and atonement of these faults and reincarnated as a goddess to become famous as Bahuputrika Devi In that birth also she had to create numerous children with her divine powers for the entertainment of Indra, the king of gods From there she will reincarnate as Soma Brahmani Not rid of the bondage of intense craving from the past birth, she would give birth to twins every year Finally she will be the mother of thirty two children in sixteen years Disturbed by the hardship of taking care and bringing up so many small kids she will get fed up and think—"It would have been better had I been sterile Having many children makes me sad"

Thus in some past birth she was sad because of the unfulfilled desire of having children but in the birth under discussion she became sad because of more children Thorns of intense craving tormented her for three births

The lesson of this chapter is that intense desire for means of mundane pleasures and comforts always leads to pain and sorrow Also that as long as a person does not resort to critical review and atonement for the sins committed, he is not a true aspirant of the spiritual path irrespective of his following *Shravak vrat* (the code for laity) or the *Sadhu vrat* (ascetic-code) The transgressor of codes fails to attain a good birth Therefore, one should try to do critical review and atonement for all his faults and endeavour to be a true aspirant free of the thorns of sinful deeds

बहुपुत्रिका देवी

२८. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

एवं खलु जंबू !

२८. तीसरा अध्ययन सुनने के पश्चात् जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा–"भगवन् ! यदि निर्वाण प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के तृतीय अध्ययन का उक्त भाव निरूपण किया है तो भंते ! चतुर्थ अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"जम्बू ! वह इस प्रकार है–

28. After listening to the third chapter, Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the third chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

२९. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं बहुपुत्तिया देवी सोहम्मेकप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, जहा सूरियाभे, (जाव) भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जम्बूद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी पासइ, पासित्ता समणे भगवं महावीरं, जहा सूरियाभो, (जाव) नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा संनिसण्णा।

आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घण्टा, आभियोगियं देवं सद्दावेइ।

जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं। जाणविमाणवण्णओ। (जाव) उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेण जोयणसाहस्सिएहिं विग्गेहेहिं आगया, जहा सूरियाभे।

धम्मकहा समत्ता। तए णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ, पसारित्ता देवकुमाराणं अट्ठसयं देवकुमारियाण य वामाओ भुयाओ अट्ठसयं। तयाणंतरं च णं बहवे दारगा य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ। नट्टविहिं जहा सूरियाभो, उवदंसित्ता पडिगया।

२९. उस काल उस समय मे राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। वहाँ पर राजा श्रेणिक राज्य करता था। (श्रमण भगवान महावीर) स्वामी का पदार्पण हुआ। उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए परिषदा आई।

उस काल उस समय मे सौधर्मकल्प के बहुपुत्रिक विमान की सुधर्मा सभा मे बहुपुत्रिका देवी बहुपुत्रिक-सिहासन पर चार हजार **सामानिक देवियो**-(परामर्शदात्री मत्री स्थानीय) तथा चार हजार **महत्तरिका**-(न्याय-नीति की शिक्षा देने वाली गुरु स्थानीय) देवियो के साथ सूर्याभदेव के समान अनेक प्रकार के दिव्य सुखों को भोग रही थी। उस समय उसने अपने विपुल अवधिज्ञान से इस केवलकल्प (सम्पूर्ण) जम्बूद्वीप नामक द्वीप को देखा तथा राजगृह नगर मे समवसरण मे विराजमान भगवान महावीर स्वामी को देखा। उनको देखकर (सिहासन से उठकर सात-आठ कदम सामने जाकर) नमस्कार किया फिर अपने उत्तम सिहासन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गई। (यह समस्त वर्णन रायपसेणियसूत्रगत सूर्याभदेव के समान जानना चाहिए।)

फिर सूर्याभदेव के समान उसने अपने आभियोगिक देवो को सुस्वरा घण्टा बजाने की आज्ञा दी। उन्होने सुस्वरा घटा बजाकर सभी देव-देवियो को भगवान के दर्शनार्थ चलने के लिए सूचित किया। तत्पश्चात्

पुन आभियोगिक देवो को आज्ञा दी–"भगवान के दर्शनार्थ जाने योग्य विमान की विकुर्वणा करो।" आज्ञानुसार उन आभियोगिक देवो ने एक हजार योजन विस्तृत व साढे बासठ योजन ऊँचे यान–विमान की विकुर्वणा की। सूर्याभदेव के समान वह अपनी समस्त ऋद्धि–वैभव के साथ उत्तर दिशा की ओर जाने वाले मार्ग से निकलकर एक हजार योजन ऊँचा वैक्रिय शरीर बनाया। फिर भगवान के समवसरण मे उपस्थित हुई।

भगवान ने धर्मदेशना दी। धर्मदेशना की समाप्ति के पश्चात् भगवान को वन्दना कर उस बहुपुत्रिका देवी ने अपनी दाहिनी भुजा फैलाई। उस भुजा से एक सौ आठ देवकुमारो की ओर बायी भुजा फैलाकर एक सौ आठ देवकुमारिकाओ की रचना की। इसके बाद बहुत से दारक–दारिकाओ (बडी उम्र के बच्चे–बच्चियो) तथा डिम्भक–डिम्भिकाओ (छोटी उम्र के बालक–बालिकाओ) की विकुर्वणा की तथा सूर्याभदेव के समान नाट्य–विधि दिखाकर (भगवान को नमस्कार करके) वापस लौट गई।

29. During that period of time, there was a city called Rajagriha where there was a *chaitya* (garden) called Gunasheelak The ruler of the city was King Shrenik Once *Swami* (Shraman Bhagavan Mahavir) arrived People came to attend religious discourse

During that period of time Bahuputrika Devi was sitting on a throne named *Bahuputrik* in the *Sudharma Sabha* (divine assembly) of the *Bahuputrik Vimaan* (celestial vehicle) along with four thousand vehicle based goddesses and four thousand *Mahattarika* goddesses (teacher goddesses who taught ethics and morality) Like Suryabh god they were enjoying a variety of divine pleasures Then with the help of her all pervading *Avadhi Jnana* she observed this whole Jambu continent She saw Shraman Bhagavan Mahavir sitting in his *Samavasaran* (divine assembly of a *Tirthankar*) and got up from her throne She (took seven-eight steps forward) paid homage, returned to her throne and sat facing east (detailed description is same as that in *Rayapaseniya Sutra* in context of Suryabh Dev)

She then, like Suryabh Dev, instructed her *abhiyogik devs* (attendant gods) to sound the melodious bell They sounded the melodious bell to inform all gods and goddesses to come to pay homage to *Bhagavan* After that she again instructed the attendant gods to create a *vimaan* (celestial vehicle) suitable for going to pay homage to *Bhagavan* The commander followed the instructions and created a *vimaan* one thousand *Yojan* in area and sixty two and a half *Yojans* in height Like Suryabh Dev she proceeded in the northward direction, created a one thousand *Yojan* tall *vaikriya sharira* (transmuted body) and came to *Bhagavan's Samavasaran* (divine assembly of a *Tirthankar*)

Bhagavan gave his sermon When the discourse concluded, that Bahuputrika Devi paid homage to *Bhagavan* and extended her right arm

to create one hundred eight young gods Extending her left arm she also created one hundred eight young goddesses After that she also created numerous adolescents and children Then like Suryabh Dev she presented stage performance and returned (after paying homage to *Bhagavan*)

गौतम की जिज्ञासा

३०. "भंते" त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ। कूडागारसाला। "बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी"... पुच्छा, "जाव अभिसमन्नागया ?"

"एवं खलु गोयमा !"

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीनामं नयरी, अंबसालवणे चेइए तत्थ तं वाणारसीए नयरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे (जाव) अपरिभूए। तस्स णं भद्दस्स सुभद्दा नामं भारिया सुउमाला वञ्झा अवियाउरी जाणुकोप्परमाता यावि होत्था।

३०. बहुपुत्रिका देवी के चले जाने के पश्चात् गौतम स्वामी ने भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार कर प्रश्न किया-"भगवन् ! उस बहुपुत्रिका देवी की वह दिव्य देव-ऋद्धि, द्युति और देवानुभाव कहाँ चला गया ? कहाँ समा गया ?"

भगवान ने कूटाकारशाला का दृष्टान्त देकर बताया-"वह उसी के शरीर मे समा गया।"

गौतम स्वामी ने पुन पूछा- 'भते ! उस बहुपुत्रिका देवी को वह दिव्य देव-ऋद्धि आदि कैसे मिली ?"

उत्तर मे भगवान ने बताया-"गौतम ! उस काल उस समय वाराणसी नाम की नगरी थी। आम्रशालवन नामक चैत्य था। उस वाराणसी नगरी मे धन-धान्यादि से समृद्ध भद्र नामक सार्थवाह रहता था। उस भद्र सार्थवाह की पत्नी का नाम सुभद्रा था। वह अतीव सुकुमाल अगोपाग वाली एव रूपवती थी। किन्तु वन्ध्या होने के कारण उसने एक भी सन्तान को जन्म नही दिया। वह केवल अपने जानु (घुटने) और कूर्पर (कोहनी) की माता थी अर्थात् उसके स्तनो को केवल घुटने और कोहनियाँ ही स्पर्श करती थी, सन्तान नही।"

GAUTAM'S CURIOSITY

30. When Bahuputrika Devi left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir after paying homage and obeisance—*"Bhante* ! Where did the divine display of opulence and powers created by Bahuputrika Devi go and disappear ?"

Bhagavan answered the question by giving the example of *Kutagar*—"Gautam ! The divine display of opulence and powers created by Bahuputrika Devi was drawn into and disappeared within her own body

After that Gautam Swami asked—*"Bhante* ! How did that Bahuputrika Devi acquire that divine opulence and power ?

Shraman Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Varanasi Outside the city was a *Chaitya* named Amrashalavan In Varanasi lived a caravan chief (*sarthavaha*)

named Bhadra who was very rich The name of Bhadra Sarthavaha's wife was Subhadra She had very delicate limbs and was very beautiful But as she was sterile she did not give birth to even a single child She was only the mother of her knees and elbow (this means that her breasts were touched only by her knees and elbows, not her child)"

सुभद्रा सार्थवाही की चिन्ता

३१. तए णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए पत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-"एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयाया। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) सपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं मणुयजम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मम्मणप्पजम्पियाणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयन्ति, पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगनिवेसियाणि देंति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मणप्पभणिए। अहं णं अधन्ना अपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता।" ओहय. जाव झियाइ।

३१. किसी समय मध्य रात्रि मे सुभद्रा को अपनी पारिवारिक स्थिति का विचार करते हुए इस प्रकार का आन्तरिक चिन्तन, प्रार्थित (इच्छा के फलस्वरूप) और मनोगत (मन मे छुपा) सकल्प उत्पन्न हुआ-'मै भद्र सार्थवाह के साथ विपुल मानवीय भोगो को भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही हूँ, किन्तु आज तक मैने एक भी बालक या बालिका को जन्म नही दिया है। वे माताएँ धन्य है, पुण्यशालिनी है, उन्होने पुण्य का उपार्जन किया है, उन माताओ ने अपने मनुष्य-जन्म और जीवन का फल प्राप्त किया है, जिन्होने अपनी कुक्षि से सन्तान उत्पन्न की है, स्तन के दूध पर ललचाई, मन को लुभाने वाली वाणी का उच्चारण करने वाली, तोतली बोली बोलने वाली, स्तनो के नीचे और कोख के पास रमने वाली सन्तान को दूध पिलाया है, बच्चो के मधुर स्वर, तोतली बोली सुनी है, बच्चो को स्तन व छाती से लगाकर छुपाया है। उनके कमल सदृश कोमल हाथो को पकडकर गोद मे बिठलाया है, कानो को प्रिय लगने वाले मधुर-मधुर सलापो से अपना मनोरजन किया है। लेकिन मै ऐसी भाग्यहीन हूँ, पुण्यहीन हूँ कि सन्तान सम्बन्धी एक भी सुख मुझे प्राप्त नही हुआ है।" इस प्रकार के विचारो से निरुत्साह-भग्नमनोरथ होकर आर्त्तध्यान करती हुई दु खमय जीवन बिताने लगी।

THE WORRY OF SUBHADRA SARTHAVAHI

31 One day while Subhadra was thinking about family matters an aspiration (*ajjhatthiye* or *adhyatmik*), expectation (*patthiye* or *prarthit*), notion (*manogaye* or *manogat*) and intention (*sankappe* or *sankalp*) surfaced—"I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha However, I have not given birth even to a single boy or girl Complete is the life as humans of those mothers and blessed, fortunate, and meritorious are those mothers who have given birth to a child, who breast-feed their own child who is eager to suckle, who sweetly stutters, and who in stupor shifts

from the base of the breasts toward the armpit, who have heard the sweet stutter of the child and comforted it by hugging, and who have lifted the baby with their tender and loving hands, placed it in the lap and enjoyed sweet and loving talk with the baby But I am the wretched and ill-fated one that has been deprived of any of these pleasures of an offspring" Depressed by these tormenting thoughts she spent a wretched life

सुव्रता आर्या का आगमन

३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाओ उच्चारपासवण-खेलजल्लसिंघाण-पारिट्ठावणासमियाओ मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ बहुसुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागयाओ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति।

३२. उस काल और उस समय मे सुव्रता नाम की आर्या पूर्वानुपूर्वी क्रम (तीर्थंकर परम्परा से प्राप्त विधि अनुसार) से चलती हुई, ग्रामानुग्राम मे विहार करती हुई, जहाँ वाराणसी नगरी थी, वहाँ आई। वे ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदान-भाड-मात्रनिक्षेपणा-समिति, उच्चार-प्रस्रवण-श्लेष्म-सिघाणपरिष्ठापना-समिति से समित थी। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति एव कायगुप्ति से युक्त थी। इन्द्रियो का दमन करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी, बहुश्रुता शिष्याओ के बहुत विशाल परिवार वाली थी। वहाँ आकर कल्पानुसार यथायोग्य उनके स्वामी की अवग्रह--आज्ञा लेकर शय्या आदि ग्रहण किया। सयम और तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

ARRIVAL OF SUVRATA ARYAA

32. During that period of time, wandering comfortably from one village to another, an *aryaa* (female ascetic) named Suvrata, arrived in the town of Varanasi She was sincerely pursuing the practices of five *samitis* (regulations) prescribed for movement, speech, alms seeking, maintaining ascetic equipment including bowls, and excreta disposal She also practiced the three *guptis* (restraints) of mind, speech, and body She exercised complete restraint over sense organs (*guptindriya*) She practiced celibacy with nine restraints (*gupta brahmacharini*) She was accompanied by a large family of scholarly female disciples After seeking formal permission from the owner, she accepted bed and other necessary things and camped there enkindling her soul with spiritual activities related to inner discipline and austerities

सुभद्रा की जिज्ञासा

३३. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसी नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइंकुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुप्पविट्ठे। तए णं

सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठ. खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता एवं वयासी–

"एवं खलु अहं, अज्जाओ, भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव ण अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (जाव) एत्ता एगमवि न पत्ता।

तं तुब्भे, अज्जाओ, बहुणायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागरनगर. (जाव) संनिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर. (जाव) सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहिंचि विज्जापओए वा मन्तप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारिगं वा पयाएज्जा।"

३३. तदनन्तर सुव्रता आर्या का एक सघाडा (दो या तीन साध्वियो का समूह) वाराणसी नगरी के सामान्य, मध्यम और उच्च कुलो मे सामुदानिक भिक्षाचर्या के लिए परिभ्रमण करता हुआ भद्र सार्थवाह के घर मे आया। सुभद्रा सार्थवाही ने उन आर्यिकाओ को आते हुए देखा। देखकर वह हर्षित और प्रसन्न हुई, शीघ्र ही अपने आसन से उठकर खडी हुई। सात–आठ कदम उनके सामने गई और वन्दन–नमस्कार किया। फिर विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम आहारदान का लाभ लेकर इस प्रकार प्रार्थना करने लगी -

"आर्याओ ! मै भद्र सार्थवाह के साथ विपुल भोगोपभोग भोग रही हूँ, किन्तु मैने आज तक एक भी सन्तान को जन्म नही दिया है। वे माताएँ धन्य है, पुण्यशालिनी है (जो सन्तान का सुख भोगती है) मै बहुत अधन्या पुण्यहीना हूँ कि मै एक भी सन्तान का सुख प्राप्त नही कर सकी हूँ।

"देवानुप्रियो ! आप बहुत ज्ञानी है, बहुत पढी–लिखी है और बहुत से ग्राम, आकर, नगरो यावत् देशो मे घूमती है। अनेक राजा, ईश्वर, तलवर, सार्थवाह आदि के घरो मे भिक्षा के लिए प्रवेश करती है। तो क्या कोई ऐसा विद्याप्रयोग, मत्र प्रयोग, वमन, विरेचन, वस्तिकर्म, औषध अथवा भेषज आदि आपको ज्ञात है, कही देखा–सुना है जिसके प्रयोग से मै बालक या बालिका को जन्म देने योग्य हो सकूँ।"

SUBHADRA'S QUESTION

33. Later while moving about to seek suitable alms from ordinary, middle, and high class families in Varanasi, a group of two-three *aryikas* (female ascetics) came to Bhadra Sarthavaha's house When Subhadra Sarthavahi saw the *aryikas* coming she was happy and pleased She at once got up from her seat, went ahead seven-eight steps and paid homage to them After availing the opportunity of giving ample *ashan, paan, khadya, svadya ahaar* (staple food, liquids, general food, and savoury food) as alms she requested—

"*Aryaas* ! I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha However, I have not given birth even to a single child Blessed, fortunate, and meritorious are those mothers and so on up to But I am

the wretched and ill-fated one that has been deprived of any of these pleasures of even a single offspring."

"Beloved of gods ! You are very wise and scholarly You visit many villages, settlements near mines, cities, and countries You go to houses of many kings, influential and rich persons, knights of honour, caravan chiefs, etc to seek alms Do you know of or have come across some such magical method, mantra, or medical treatment including *Vaman* (emesis), *Virechan* (purgation), *Vastikarma* (common anaema), medicines, formulations, etc that may enable me to bear and give birth to a child "

आर्याओ का उत्तर

३४. तए णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–"अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबंभयारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयमट्ठं कण्णेहि वि निसामेत्ताए किमंग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा ? अम्हे णं देवाणुप्पिए। नवरं तव विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेमो।"

३४. यह सुनकर उन आर्यिकाओ ने सुभद्रा सार्थवाही से इस प्रकार कहा–"देवानुप्रिये। हम ईर्यासमिति आदि समितिओ से समित, तीन गुप्तिओ से गुप्त, इन्द्रियो को वश मे करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी निर्ग्रन्थ–श्रमणियाँ है। हमको ऐसी बाते सुनना भी नही कल्पता है तो फिर हम इनका उपदेश अथवा आचरण कैसे कर सकती है ? किन्तु देवानुप्रिये ! हम तुम्हे केवलिप्ररूपित दान, शील आदि अनेक प्रकार का धर्मोपदेश सुना सकती है।

THE REPLY OF ARYIKAS

34. At this those *aryikas* said to Subhadra Sarthavahi—"Beloved of gods ! We are *Nirgranth Shramanis* (female ascetics) who observe the conduct of five *samitis* (regulations) including *irya samiti* (regulation of movement), three *guptis* (restraints), complete restraint over sense organs and celibacy It is not proper for us even to hear such talk, how can we preach such subject and act accordingly ? However, O Beloved of gods ! We can tell you about the Omniscient-propagated religion that includes charity, righteousness and much more

सुभद्रा का श्रमणोपासिका व्रत ग्रहण

३५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि रोएमि णं, अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं .... । एवमेयं अवितहमेयं," (जाव) सावगधम्मं पडिवज्जए।

"अहासुहं, देवाणुप्पिए, मा पडिबंधं करेह।"

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए (जाव) पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया, जाव विहरइ।

३५. तत्पश्चात् वह सुभद्रा सार्थवाही उन आर्यिकाओ से धर्मश्रवण कर, उस पर चिन्तन कर, अवधारण कर हृष्ट-तुष्ट प्रसन्न हुई। उन आर्याओ को तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिणा की। दोनो हाथ जोडकर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अजलि करके वदना-नमस्कार किया। वदना-नमस्कार करके बोली-"देवानुप्रियो ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ, विश्वास करती हूँ, रुचि करती हूँ। आपने जो उपदेश दिया है, वह तथ्य है, सत्य है, अवितथ (यथार्थ) है। मै श्रावकधर्म को अगीकार करना चाहती हूँ।"

आर्यिकाओ ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हे सुख हो वैसा करो किन्तु शुभ कार्य मे प्रमाद मत करो।"

तत्पश्चात् सुभद्रा सार्थवाही ने उन आर्यिकाओ के समीप श्रावकधर्म अगीकार किया। अगीकार करके उन आर्यिकाओ को वन्दन-नमस्कार करके उन्हे विदा किया।

इस प्रकार वह सुभद्रा सार्थवाही श्रमणोपासिका होकर श्रावकधर्म पालती हुई जीवन बिताने लगी।

SUBHADRA TAKES THE VOW OF SHRAMANOPASIKA

35. Subhadra Sarthavahı was happy and contented after lıstenıng to, contemplatıng over, and understandıng the relıgıous dıscourse by the *aryıkas* She went around the *aryıkas* clockwıse three tımes Raısıng her joıned palms and wavıng them near her forehead she paıd them homage and obeısance She then saıd—"Beloved of gods ! I respect and belıeve the preachıng of the *Nırgranth* (the Omnıscıent) and have faıth and ınterest ın ıt. What you have saıd ıs correct, true, and real I want to embrace the *Shravak Dharma* (Jaın relıgıon)"

The aryıkas replıed—"Beloved of gods ! Do as you please and avoıd languor when doıng a good deed"

Then Subhadra Sarthavahı formally accepted *Shravak Dharma* from those *aryıkas.* After doıng that she paıd them homage and bid them farewell

Thus that Subhadra Sarthavahı became a *Shramanopasıka* (devotee of *Shraman*) and spent her lıfe observıng *Shravak Dharma*

सुभद्रा का दीक्षा का संकल्प

३६. तए णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था-'एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा....। तं सेयं खलु ममं कल्लं

जाव जलंते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ (जाव) पव्वइत्तए' एवं संपेहेइ।

संपेहित्ता जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागया, करयल (जाव) एवं वयासी–"एवं खलु अहं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोगभोगाइं (जाव) विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयायामि। तं इच्छामि णं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अणुन्नाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं (जाव) पव्वइत्तए।"

३६. इसके बाद उस सुभद्रा श्रमणोपासिका को किसी दिन मध्य रात्रि के समय कुटुम्ब जागरणा करते हुए इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ–'मैने भद्र सार्थवाह के साथ विपुल भोगोपभोग भोगते हुए बहुत समय व्यतीत किया है, किन्तु अभी तक मैने एक भी बालक या बालिका को जन्म नही दिया है। इसलिए अब मुझे यह उचित लगता है कि मै कल प्रात सूर्योदय होने पर भद्र सार्थवाह से अनुमति प्राप्त कर सुव्रता आर्यिका के पास जाऊँ और गृह त्यागकर प्रव्रज्या ग्रहण कर लूँ।'

उसने इस प्रकार का विचार करके प्रात जहाँ भद्र सार्थवाह था, वहाँ आई। आकर दोनो हाथ जोडकर इस प्रकार बोली–"देवानुप्रिय ! तुम्हारे साथ बहुत वर्षों से विपुल भोगो को भोगती हुई जीवन बिता रही हूँ, किन्तु आज तक मैने एक भी बालक या बालिका को जन्म नही दिया है। अब मेरी इच्छा है आप देवानुप्रिय की अनुमति प्राप्त करके सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रज्या-श्रमण दीक्षा ग्रहण करूँ।"

SUBHADRA'S RESOLVE TO GET INITIATED

36. Once around midnight while Subhadra was thinking about family matters, she thought—"I have been enjoying my married life with Bhadra Sarthavaha However, I have not given birth even to a single child Therefore, now I feel that tomorrow at sunrise it would be proper for me to seek permission from Bhadra Sarthavaha, go to Aryika Suvrata and get initiated after renouncing the household "

Accordingly in the morning she went to Bhadra Sarthavaha and joining her palms said—"Beloved of gods ! I have been enjoying my married life with you for many years but I have not given birth even to a single child. Now it is my desire that after getting your permission I will go to Aryika Suvrata and get initiated as an ascetic "

३७. तए णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–

"मा णं तुमं देवाणुप्पिए, मुंडा (जाव) पव्वयाहि। भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए, मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं (जाव) पव्वयाहि।"

तए णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स एयमट्ठं नो परियाणइ। दोच्चं पि तच्चं पि सुभद्दा सत्थवाही भद्दं सत्थवाहं एवं वयासी–"इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी (जाव) पव्वइत्तए।"

तए णं से भद्दे सत्थवाहे, जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य, एवं पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा (जाव) पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा, विन्नवित्तए वा, ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमन्नित्था।

३७. तब सुभद्रा की बात सुनकर भद्र सार्थवाह ने इस प्रकार कहा–

"देवानुप्रिये ! तुम अभी मुण्डित होकर गृह त्याग करके प्रव्रज्या ग्रहण मत करो। पहले की तरह मेरे साथ विपुल भोगोपभोगो का भोग करो, भोगो को भोगने के पश्चात् सुव्रता आर्या के पास अनगार प्रव्रज्या अगीकार कर लेना।"

सुभद्रा सार्थवाही ने भद्र सार्थवाह के उन वचनो को स्वीकार नही किया। दूसरी बार और फिर तीसरी बार भी सुभद्रा सार्थवाही ने भद्र सार्थवाह से यही आग्रह करके कहा–"देवानुप्रिय ! आपकी आज्ञा–अनुमति लेकर मै सुव्रता आर्या के पास प्रव्रज्या लेना चाहती हूँ।"

जब भद्र सार्थवाह अनुकूल–प्रेम व प्रलोभनयुक्त वचनो तथा प्रतिकूल–भयजनक विपरीत वचनो से बहुत–सी युक्तियो, प्रज्ञप्तियो (विस्तारपूर्ण कथन), सज्ञप्तियो (घटनाओ और उदाहरणो द्वारा) और विज्ञप्तियो (आग्रह भरे कथन) से उसे समझाने–बुझाने, और अपनी बात मनाने मे सफल नही हुआ तब इच्छा न होने पर भी विवश होकर सुभद्रा को दीक्षा लेने की अनुमति दे दी।

37. At these words from Subhadra, Bhadra Sarthavaha said—

"Beloved of gods ! Please don't tonsure your head, renounce the household and get initiated immediately Enjoy more mundane pleasures with me as before and get initiated by Suvrata Aryaa only later"

Subhadra Sarthavahi did not accept these words of Bhadra Sarthavaha Second time and third time also she insisted saying—"Beloved of gods ! I want to get your permission and go to Aryika Suvrata to get initiated as an ascetic"

With all enticing and warning words, arguments, detailed explanations (*prajnapti*), narration of examples and incidents (*sanjnapti*), and persuasions (*vijnapti*) Bhadra Sarthavaha failed to dissuade Subhadra Finally, out of compulsion, he unwillingly gave her permission to get initiated

दीक्षा–महोत्सव

३८. तए णं से भद्दे सत्थवाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ। मित्त–नाइ जाव आमंतेइ पच्छा भोयण वेलाए (जाव) मित्त–नाइ सक्कारेइ संमाणेइ। सुभद्दं सत्थवाहिं ण्हायं (जाव) पायच्छित्तं सव्वालंकार–विभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ। तओ सा सुभद्दा सत्थवाही मित्तनाइ ... (जाव) संबंधिसंपरिवुडा सव्विड्ढीए (जाव) रवेणं वाणारसीनयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेइ।

तए णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरओ काउं जेणेव सुव्वया अज्जा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कंता, (जाव) मा णं वाइया पित्तिया सिंभिया संनिवाइया विविहा रोगातंका फुसन्तु। एस णं, देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा, भीया जम्ममरणाणं, देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता (जाव) पव्वयाइ। तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि। पडिच्छंतु णं, देवाणुप्पिया ! सीसिणिभिक्खं।

"अहासुहं, देवाणुप्पिया, मा पडिबंधं करेह।"

३८. तत्पश्चात् भद्र सार्थवाह ने (सेवको को आदेश देकर) विपुल परिमाण मे अशन, पान, खादिम, स्वादिम भोजन तैयार करवाया और अपने सभी मित्रो, जातिबाधवो, स्वजनो, सम्बन्धी-परिचितो को आमन्त्रित किया। उन्हे भोजन कराने के पश्चात् उन मित्रो आदि का सत्कार-सम्मान किया। फिर सुभद्रा सार्थवाही स्नान करके कौतुक-मगल प्रायश्चित्त आदि करके सभी अलकारो से विभूषित हुई। फिर एक हजार पुरुषो द्वारा वहन की जाने योग्य विशाल पालकी मे बैठी और मित्र-ज्ञातिजन, स्वजन-सम्बन्धी परिजनो से घिरी हुई भव्य ऋद्धि-वैभव के साथ भेरी आदि वाद्यो का घोष करते हुए वाराणसी नगरी के बीचोबीच से होती हुई जहाँ सुव्रता आर्या का उपाश्रय था वहाँ आई। वहाँ आकर पुरुषसहस्रवाहिनी पालकी को रोककर नीचे उतरी।

भद्र सार्थवाह ने पालकी से उतारकर सुभद्रा सार्थवाही को आगे किया। सुव्रता आर्या के पास आया और आकर वन्दन-नमस्कार किया। फिर इस प्रकार निवेदन करने लगा-

"देवानुप्रिये ! मेरी यह धर्मपत्नी सुभद्रा भार्या मुझे अत्यन्त इष्ट और प्रिय है। मैने इसको वात, पित्त, कफ और सन्निपातजन्य विविध रोग-आतको से सर्वदा सुरक्षित रखने का ध्यान रखा है। किन्तु हे देवानुप्रिये ! अब यह ससार के भय से उद्विग्न होकर एव जन्म-मरण के दु खो से भयभीत होकर आप देवानुप्रिया के पास मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए तैयार हुई है। इसलिए हे देवानुप्रिये ! मै आपको यह शिष्या रूप भिक्षा दे रहा हूँ। आप देवानुप्रिया इस शिष्या-भिक्षा को स्वीकार करे।"

भद्र सार्थवाह का निवेदन सुनकर सुव्रता आर्या ने कहा-"देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हे अनुकूल प्रतीत हो, वैसा करो, किन्तु इस शुभ मागलिक कार्य मे विलम्ब मत करो।"

INITIATION CEREMONY

38. After that Bhadra Sarthavaha arranged for (by instructing his servants) large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invited all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances After feeding them he greeted and honoured them Then Subhadra Sarthavahi took her bath, performed auspicious rituals and atonements and adorned herself with ornaments She then rode a large palanquin carried by one thousand persons Amidst the sound of musical instruments like trumpet, display of wealth and grandeur and surrounded by friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances she

arrived, passing through Varanasi city, at the *upashraya* (place of stay for ascetics) of Suvrata Aryaa The palanquin was stopped and she alighted from it

Bhadra Sarthavaha got down from his palanquin and escorted Subhadra Sarthavahi to the place where Suvrata Aryaa was After paying homage and obeisance he submitted—

"Beloved of gods ! I adore and love Subhadra, my wife I have always cared and protected her from various ailments and torments caused by disturbed body humours—air, bile and phlegm But, O Beloved of gods ! Disturbed by the fears of worldly existence and afraid of the miseries of life and death, she now wants to tonsure her head and get initiated by you Therefore, O Beloved of gods ! I offer her to you as a disciple-donation Kindly accept this disciple-donation.

At this request by Bhadra Sarthavaha, Suvrata Aryaa said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good auspicious deed "

३९. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणी हट्ठा. सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेमेव सुव्वयाओ अज्जाओ, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणेणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-

आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणे ण य जहा देवाणंदा तहा पव्वइया (जाव) अज्जा जाया गुत्तबंभयारिणी।

३९. सुव्रता आर्या के इन वचनो को सुनकर सुभद्रा सार्थवाही हर्षित एव प्रसन्न हुई। उसने (एक ओर जाकर) स्वय अपने हाथो से गृहस्थ वेश के वस्त्र, माला और आभूषणो को उतारकर (श्वेत वस्त्र धारण किये)। पचमुष्टिक केश लोच किया, फिर सुव्रता आर्या के पास आई। आकर तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार बोली-

"भते ! यह ससार जन्म-जरा-मरण रूप आग से जल रहा है। धधक रहा है-जैसे किसी गृहस्थ के घर मे आग लग गई हो और वह घर जल रहा हो तब वह उस जलते हुए घर मे से बहुमूल्य और अल्प भार वाली वस्तुओ को निकालकर सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार मै अपनी आत्मा को, जो मुझे अति इष्ट, कान्त, प्रिय, समत, अनुमत है, जिसे शीत-उष्ण, क्षुधा-तृषा, चोर, सर्प, सिह, डास-मच्छर तथा वात-पित्त-कफजन्य रोग आदि, परीषह, उपसर्ग आदि किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सके, इस प्रकार सुरक्षित रखूँगी।" इत्यादि वचन बोलते हुए देवानन्दा (भगवतीशतक ९, उ ३३) ने जिस प्रकार भगवान महावीर के समक्ष कहा उसी प्रकार कहकर वह उन सुव्रता आर्या के पास प्रव्रजित हो गई। पाँच समितियो एव तीन गुप्तियो से युक्त होकर इन्द्रियो का निग्रह करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणी आर्या हो गई।

39. Subhadra Sarthavahi was pleased and contented at hearing these words from Suvrata Aryaa She (went aside and) discarded her householder's dress, garlands and ornaments (and put on the white ascetic-garb) Pulling out all hair from her head (formally termed as five-fistful pulling out of hair) she approached Suvrata Aryaa After going around her three times and paying homage she said—

"*Bhante* ! This world is being consumed by the fire of birth, old age and death In a situation when his house is on fire a householder chooses the most valuable and least cumbersome objects to take out and keep safe In the same way I will protect my soul, which I very much adore, desire, love, covet, and approve, in such a way that no harm is caused to it by heat, cold, hunger, thirst, thief, snake, lion, wasp, mosquito and ailments caused by disturbed wind, bile, and phlegm " Uttering these words as Devananda had said to Bhagavan Mahavir (*Bhagavati Sutra* 9/33), she got initiated by Suvrata Aryaa She became a completely celibate *aryaa* observing five *samitis* (self regulations) and three *guptis* (restraints)

सुभद्रा आर्या का सन्तान–अनुराग

४०. तए णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छिया (जाव) अज्झोववन्ना अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लणगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारिया वा कुमारे य कुमारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य, अप्पेगइयाओ अब्भंगेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ, एवं अप्पेगइयाओ फासुयपाणएणं ण्हावेइ, पाए रयइ, ओट्ठे रयइ, अच्छीणी अंजेइ, उसुए करेइ, तिलए करेइ, दिगिंदलए करेइ, पंतियाओ करेइ, छिज्जावइं, खज्जुकरेइ, वण्णएणं समालभइ, चुण्णएणं समालभइ, खेल्लणगाइं दलयइ, खज्जलगाइं दलयइ, खीरभोयणं भुंजावेइ, पुप्फाइं ओमुयइ, पाएसु ठवेइ, जंघासु करेइ, एवं उरूसु उच्छंगे कडीए पिट्ठे उरसि खंधे सीसे य करयलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी हलउलेमाणी आगायमाणी आगायमाणी परिगायमाणी परिगायमाणी पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ।

४०. प्रव्रज्या के बाद सुभद्रा आर्या किसी समय गृहस्थो के बालक–बालिकाओ मे मूर्च्छा–मोह भाव रखती हुई उन पर अनुराग–स्नेह करने लगी। उन बालक–बालिकाओ के लिए अभ्यगन (तैल मालिश), शरीर का मैल दूर करने के लिए उबटन, पीने के लिए प्रासुक जल, उन बच्चो के हाथ–पैर रगने के लिए मेहदी आदि रजक द्रव्य, हाथो मे पहनने के लिए ककण, अजन–काजल आदि, वर्णक–चदन आदि, चूर्णक–सुगन्धित द्रव्य, (पाउडर), खेलनक–खिलौने, खाने के लिए खाजे आदि मिष्ठान्न, खीर, दूध और पुष्पमाला आदि वस्तुएँ गृहस्थो के घर से गवेषणा करके लाने लगी। उन गृहस्थो के दारक–दारिकाओ, कुमार–कुमारिकाओ, बच्चे–बच्चियो मे से किसी की तैल–मालिश करती, किसी के उबटन लगाती, इसी प्रकार किसी को प्रासुक जल से स्नान कराती, किसी के पैर व ओठ रँगती, किसी की आँखो मे काजल आँजती,

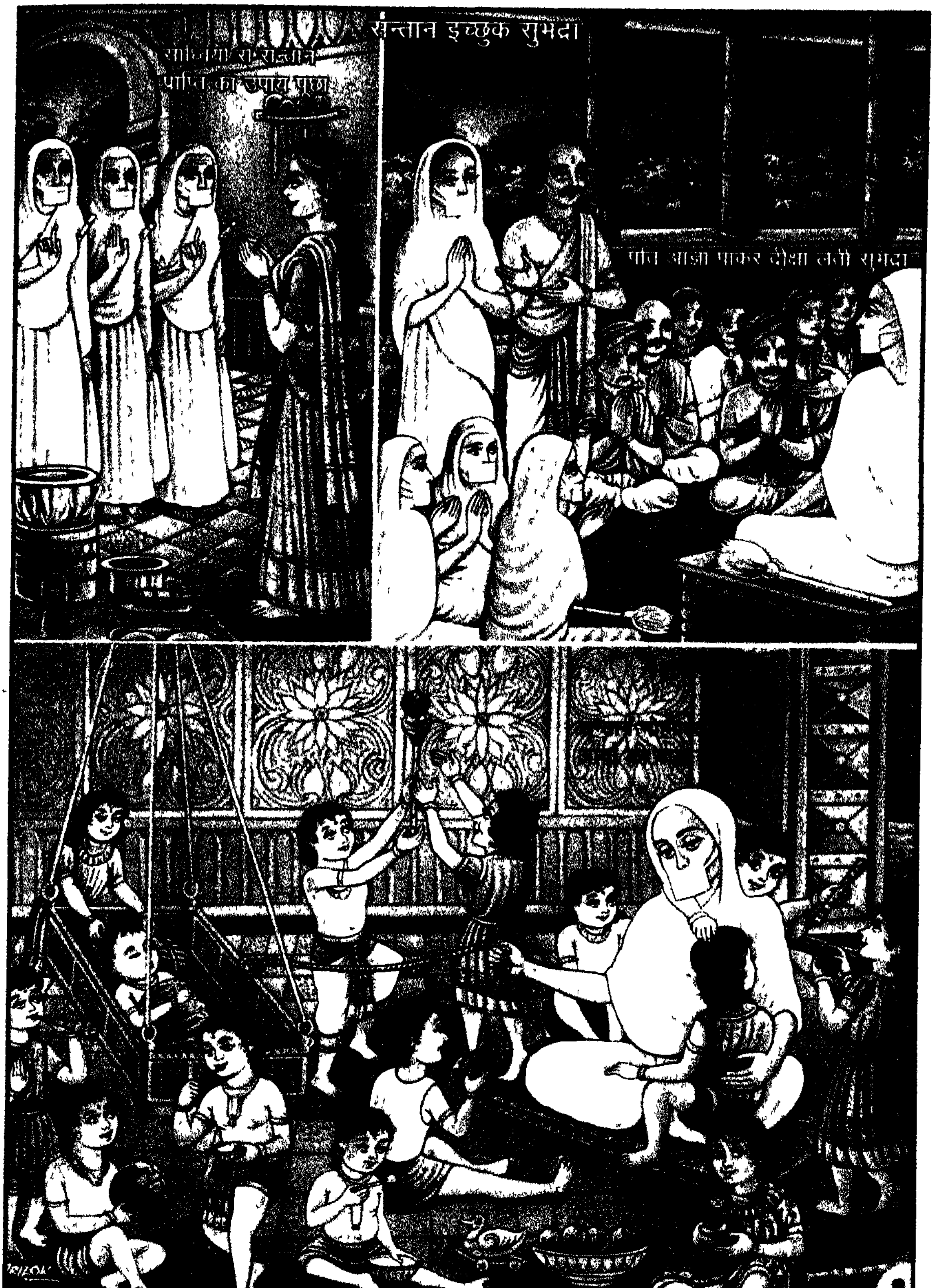
ललाट पर तीर के आकार का तिलक लगाती, केशर का तिलक-बिन्दी लगाती, किसी बालक को हिडोले मे झुलाती तथा किसी-किसी को पक्ति मे खडा करती, फिर एक पक्ति मे खडे उन बच्चो को अलग-अलग खडा करती, किसी के शरीर पर चन्दन का लेप लगाती, तो किसी के शरीर मे सुगन्धित चूर्ण (पाउडर) लगाती। किसी को गुडिया-खिलौने देती, किसी को खाने के लिए खाजे आदि मिष्ठान्न देती, किसी को दूध पिलाती या खीर खिलाती, किसी के कण्ठ मे पहनी हुई पुष्पमाला को उतारती, उन पर फूल फेकती, किसी को अपने दोनो पाँवो पर बैठाती तो किसी को जाँघो पर बैठाती। किसी को टाँगो पर, किसी को गोदी मे, किसी को कमर पर, पीठ पर, छाती पर, कन्धो पर, मस्तक पर बैठाती और हथेलियो मे लेकर हुलराती-दुलराती, बारम्बार लोरियाँ गाती हुई, उच्च स्वर मे गाती हुई-पुचकारती हुई, पुत्र की लालसा, पुत्री की वाछा, पोते-पोतियो की पिपासा (की पूर्ति) का अनुभव करती हुई अपना जीवन यापन करने लगी।

SUBHADRA ARYAA'S ATTACHMENT FOR OFFSPRINGS

40. At some point of time after initiation, with feelings of fondness and attachment for them, Subhadra Aryaa developed love and affection for children of householders She started searching and bringing a variety of things for these children The things included—oil for massage, pastes for removing filth from body, potable water, henna powder and other colours to decorate their limbs, bracelets, collyrium (etc), sandal-wood, perfumed powder, toys, sweets, *kheer* (a pudding made of rice and milk), milk, garlands, and many other such things Of these adolescents, kids, and babies of the householders, she would massage some with oil, rub pastes to some, give bath with clean water to some, paint legs and lips of some, apply collyrium to eyes of some, make arrow like figure with saffron at the center of the foreheads of some, and rock some in a rocker She would also make some kids stand in a line and then make them stand apart for applying sandal-wood paste to some and perfumed powder to others To some she would give dolls to play with, to some she would feed sweets and to some she would feed milk or kheer She would take off garland from neck of some and shower flowers on them Some she would place on both the legs and others on her thighs She would lovingly cuddle and fondle babies lifting some on her legs, some in her arms, some on her waist, some on her back, some on her breasts, some on her shoulders, some on her head and some in her palms. Smooching them, she would sing lullabies to some and songs in loud voice to others This way she spent her time with children, vicariously satiating her desire for a son, wish for a daughter, and craving for grand-children

सुभद्रा का पृथक् आवास

४१. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभद्दे अज्जं एवं वयासी-"अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबम्भयारिणीओ। नो खलु अम्हं कप्पइ जातककम्मं


सन्तान इच्छुक सुभद्रा
प्राप्ति का उपाय पूछा
पति आज्ञा पाकर दीक्षा ली सुभद्रा

चित्र परिचय-९

Illustration No. 9

सन्तान इच्छुक सुभद्रा

वाराणसी निवासी भद्र सार्थवाह की पत्नी सुभद्रा कोई सन्तान नही होने से बहुत चिन्तित रहती है। एकदिन सुव्रता नामक आर्या साध्वी परिवार के साथ वहा पधारी। उनकी कुछ शिष्याएँ भिक्षा के लिए भ्रमण करती हुई उसके घर पर आई। (ये साध्वियाँ भगवान महावीर से पूर्व तीर्थकरो के तीर्थ मे हुई अत उनके वस्त्र विविध रगो के है)

सुभद्रा साध्वियो से सन्तानोत्पत्ति का कोई उपाय पूछती है। साध्वियाँ उसे धर्म का उपदेश देती है।

वैराग्य होने पर सुभद्रा सुव्रता आर्या के पास दीक्षा लेना चाहती है। तब उसका पति भद्र सार्थवाह सुव्रता आर्या से दीक्षा देने की प्रार्थना करता है। *वर्ग ३ अ ४ सूत्र ३४*

दीक्षा लेने के कुछ वर्षो बाद सुभद्रा आर्या के मन मे बालको के प्रति अत्यधिक अनुराग जाग उठा। वह गुरुणी से अलग उपाश्रय मे रहने लगी और बच्चो के साथ क्रीडा करती रहती। वहाँ किसी बच्चे को झूले मे झुलाती, किसी को तैल उबटन लगाती किसी के तिलक अजन आदि करती, इस प्रकार साधु आचार के विरुद्ध कार्य करती हुई पुत्र पुत्रियाँ पोत-पोतियाँ की इच्छापूर्ति का अनुभव करती है।

वर्ग ३, अ ४ सूत्र ४० ४३

SUBHADRAA'S DESIRE FOR OFFSPRING

Subhadraa, wife of Bhadra Sarthavaha of Varanasi, is worried because she is childless One day Aryaa Suvrata came to Varanasi with her disciple *sadhvis* (female ascetics) Some of these *sadhvis* came to her house to seek alms (As these *sadhvis* belonged to pre Mahavir period they are in coloured garb)

Subhadraa asks for some way to bear a child The *sadhvis* preach her religion

On getting detached Subhadraa wants to get initiated by Suvrata Aryaa Her husband, Bhadra Sarthavaha, requests Suvrata Aryaa for her initiation *--Sec III Ch 4, Sutra 34*

Some years after initiation Subhadraa Aryaa was filled with great love for children She starts living in another *upashraya* (place of stay for ascetics) away from her teacher There she plays around with children Of these she would rock some in a rocker massage some with oil and pastes, apply marks on foreheads of some, and so on Thus she satisfies her desire of having sons, daughters, and grand-children by indulging in anti-ascetic activities

--Sec III, Ch 4, Sutra 40 43

करित्तए। तुमं च णं देवाणुप्पिए ! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया (जाव) अज्झोववन्ना अब्भंगणं (जाव) नत्तिपिवासं वा पच्चणुभवमाणी विहरसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि (जाव) पायच्छित्तं पडिवज्जाहि।''

४१. सुभद्रा आर्या की साधु आचार के विपरीत ऐसी प्रवृत्तियाँ देखकर सुव्रता आर्या ने उससे कहा– ''देवानुप्रिये ! हम निर्ग्रन्थी श्रमणी है। ईर्यासमिति आदि से युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी है। हमे गृहस्थ बालको का लालन–पालन, बालक्रीडा आदि करना–कराना नही कल्पता है। परन्तु देवानुप्रिये ! तुम गृहस्थों के बालकों मे मूर्च्छित–आसक्त यावत् अनुरागिणी होकर उनका अभ्यगन–मालिश आदि अकल्पनीय कार्य करती हो यावत् पुत्र–पौत्र आदि की लालसा–पूर्ति का अनुभव करती हो। हे देवानुप्रिये ! तुम इस दोषयुक्त अकल्पनीय कार्य की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो।''

INDEPENDENT HOUSE OF SUBHADRA

41. When Aryaa Suvrata saw all these anti-ascetic activities of Subhadra she warned—"Beloved of gods ! we are *Nirgranth Shramanis* (female ascetics) and we are strictly celibate observers of *Irya samiti* (etc.) As such, we are not allowed to indulge in caring for and fondling children of householders But inspired by feelings of fondness and attachment, love and affection for children of householders, you indulge in proscribed activities including massaging oil and so on up to satiating your desire for a son, grandson (etc) O Beloved of gods ! you should condemn this proscribed and disgraceful conduct and do the prescribed atonement "

४२. तए णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ।

तए णं ताओ समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दं अज्जं हीलेंति, निंदंति, खिंसंति, गरहंति अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति।

४२. सुव्रता आर्या द्वारा इस प्रकार समझाने पर भी उस सुभद्रा आर्या ने उन सुव्रता आर्या के वचनो का आदर नही किया, कथन पर ध्यान नही दिया, किन्तु उपेक्षा–अवहेलना करती हुई पूर्ववत् बालको के साथ क्रीडा–मनोरजन करती रही।

तब वे निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ इस अकल्पनीय कार्य के लिए सुभद्रा आर्या की हीलना (तिरस्कार) करती, निन्दा करती, उस पर खीजती–उपालभ देती, गर्हा–घृणा करती–भर्त्सना करती और ऐसा करने से उसे बार–बार रोकती।

42. Subhadra neither believed nor accepted these instructions and directions of Aryaa Suvrata Defying and ignoring her instructions, she continued her adopted way of playing with children.

As a result of this the *Nirgranth Shramanis* of the group started reproaching her, criticizing her, proscribing her, and disdaining her And they restrained her time and again from indulging in prohibited activities

४३. तए णं तीए सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए (जाव) अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए (जाव) समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारवासं वसामि, तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तप्पभिइं च णं अहं परवसा; पुव्विं च समणीओ निग्गंथीओ आढेंति, परिजाणेंति, इयाणिं नो आढाऐंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं (जाव) जलन्ते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं (जाव) जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं—अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छन्दमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया (जाव) अब्भंगणं च (जाव) नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ।

४३. सुव्रता आदि निर्ग्रन्थ श्रमणी आर्याओ द्वारा पूर्वोक्त प्रकार से हीलना वर्जना आदि किये जाने और अकल्पनीय कार्यों के लिए बार–बार रोकने पर उस सुभद्रा आर्या के मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ–'जब मै अपने घर मे थी, तब मै स्वाधीन/स्वतत्र थी, लेकिन जब से मै मुण्डित होकर गृह त्यागकर अनगार बनी हूँ, तब से मै पराधीन हो गई हूँ। पहले जो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ मेरा आदर–सत्कार करती थी, मेरे साथ प्रेमपूर्वक आलाप–सलाप व मधुर व्यवहार करती थी, वे आज न तो मेरा आदर करती है और न प्रेम से बोलती है। इसलिए मै कल प्रात काल सूर्य उदय होने पर इन सुव्रता आर्या से अलग होकर, पृथक् स्वतत्र उपाश्रय मे जाकर रहूँगी' सुभद्रा आर्या ने मन मे इस प्रकार का सकल्प किया। फिर दूसरे दिन सूर्योदय होने पर सुव्रता आर्या को छोडकर वह उपाश्रय से निकल गई और अलग उपाश्रय मे जाकर स्वतत्र रूप मे अकेली ही रहने लगी।

इस प्रकार वह सुभद्रा आर्या अन्य आर्याओ के निषेध को नही मानती हुई निरकुश और स्वच्छन्दमति हो स्वेच्छाचारिणी होकर गृहस्थो के बालको के मोह मे मूर्च्छित हुई उनकी तेल–मालिश आदि सावद्य क्रियाएँ करती हुई पुत्र–पौत्रादि की पिपासापूर्ति का अनुभव करती हुई विचरने लगी।

43. This reproaching and so on up to restrained her from indulging in prohibited activities by other Aryikas forced Subhadra to think, "When I was a house-holder I had my freedom Since I got my head tonsured and initiated I have lost my freedom Earlier these Aryikas used to respect me but not now So it would be good for me to leave this group, led by Aryaa Suvrata, tomorrow itself and live independently in another *upashraya* (place of stay for ascetics)" She resolved to do accordingly and the first thing she did in the morning was to abandon Suvrata Aryaa and shift to another suitable *upashraya* to live alone

Thus not heeding to censure by other *aryikas* Subhadra Aryaa became unrestrained, willful, and footloose in her fondness for and excessive indulgence in massaging the children of householders and other such sinful activities. She moved about satiating her desire for sons and grandsons.

४४. तए णं सा सुभद्दा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्तविहारी अहाछन्दा अहाछन्दविहारी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरियाए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववन्ना।

तए णं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववन्नमेत्ता समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए (जाव) भासामणपज्जत्तीए।

एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी (जाव) अभिसमन्नागया।

४४. तदनन्तर वह आर्या सुभद्रा **पासत्था**–साधु के गुणो से दूर होकर, शिथिलाचारी, साधु के आचार के पालन मे उदासीन होकर, **पासत्थविहारी**, अवसन्न (खण्डितव्रत वाली) अवसन्नविहारी, **कुसील**–(आचारभ्रष्ट/दूषित आचार वाली), कुशीलविहारी, **ससक्त**–(गृहस्थो से सम्पर्क रखने वाली), ससक्तविहारी और **स्वच्छन्द**–(निरकुश) तथा स्वच्छदविहारी हो गई। उसने बहुत वर्षों तक श्रमणी–पर्याय का पालन किया। अन्त मे वह अर्ध–मासिक सलेखना द्वारा आत्मा के कर्ममल को शोधित करती हुई, अनशन द्वारा तीस भोजन काल का अतिक्रमण करके और अकरणीय सावद्य कार्यो की आलोचना–प्रतिक्रमण किए बिना ही मरण समय आने पर मरण प्राप्त करके सौधर्मकल्प के बहुपुत्रिका विमान की उपपातसभा मे देवदूष्य से आच्छादित देव–शय्या पर अगुल के असख्यातवे भाग प्रमाण (स्व–शरीर प्रमाण) अवगाहना से बहुपुत्रिका देवी के रूप मे उत्पन्न हुई।

तब वह बहुपुत्रिका देवी तत्काल उत्पन्न होते ही भाषा–मन पर्याप्ति आदि पाँच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त अवस्था को प्राप्त होकर देवी रूप मे रहने लगी।

गौतम ! इस प्रकार बहुपुत्रिका देवी ने वह दिव्य देव–ऋद्धि एव देवद्युति प्राप्त की है।

REINCARNATION AS BAHUPUTRIKA DEVI

44. As time passed, distancing herself from ascetic virtues (*pasattha*) that Subhadra Aryaa became lax in her ascetic conduct (*pasatth-vihari*), breaking her vows she became vow-breaker, indulging in base activities (*avsanna*) she became disgraceful (*avasannavihari*), keeping contact with householders (*samsakt*) she became gregarious (*samsaktavihari*), and acting willfully she became footloose This way she lived long as an ascetic. In the end she observed the ultimate vow of fifteen days duration to cleanse her soul of the dirt of *karmas* and abandoning thirty meals died without reviewing and atoning for her sinful misconduct She reincarnated as Bahuputrika Devi, with a minimum occupied space of uncountable fraction of an *Angul* (and a maximum of seven cubits), on the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat-hall* of *Bahuputrika vimaan* (celestial vehicle) in the *Saudharm Kalp* (divine dimension).

Then Bahuputrika Devi instantaneously attained the state of full development (*paryapti*) through five kinds of full development (*paryapti*). and so on up to bhasha-man (speech and mind) paryapti and lived as a goddess

"Thus, Gautam ! that Bahuputrika Devi acquired that divine opulence and power

गौतम की पुनः जिज्ञासा

४५. (क) 'से केणट्ठेणं, भंते ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी बहुपुत्तिया देवी ?'

'गोयमा, बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो उवत्थाणियणं वरेइ, ताहे ताहे बहवे दारए य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविंदे देवराया, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी।'

'बहुपुत्तियाणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता।'

'गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ?'

४५. (क) पूर्वभव का वृत्तान्त सुनकर गौतम स्वामी ने पुन प्रश्न किया-''भते ! किस कारण से बहुपुत्रिका देवी को बहुपुत्रिका कहा जाता है ?''

भगवान ने उत्तर दिया-''गौतम ! जब-जब वह बहुपुत्रिका देवी देवेन्द्र देवराज शक्र के पास जाती है तब-तब वह बहुत से बालक-बालिकाओ, बच्चे-बच्चियो की विकुर्वणा (रचना) करती। विकुर्वणा करके जहाँ देवेन्द्र-देवराज शक्र आसीन होते, वहाँ आकर उन देवेन्द्र-देवराज शक्र के समक्ष अपनी दिव्य देव-ऋद्धि, दिव्य देवद्युति एव दिव्य देवानुभाव-प्रभाव को प्रदर्शित करती है। इसी कारण गौतम ! वह बहुपुत्रिका देवी 'बहुपुत्रिका' कहलाती है।''

गौतम स्वामी-''भते ! वहाँ बहुपुत्रिका देवी की स्थिति कितने काल की है ?''

भगवान-''गौतम ! उस देवी की स्थिति चार पल्योपम की है।''

KKKK

45. (a) On listening to the description of her earlier birth Gautam Swami asked further—"*Bhante* ! Why is that Bahuputrika Devi called *Bahuputrika* (having many offsprings) ?

Bhagavan replied—"Gautam ! Every time that Bahuputrika Devi goes to Shakra, the king of gods, she creates many children and infants After doing this she approaches Shakra, the king of gods, seated on his throne and displays her divine power, opulence and influence. For this reason, Gautam ! that Bahuputrika Devi called *Bahuputrika* (having many offsprings).

Gautam Swami—"*Bhante* ! What is the life-span of Bahuputrika Devi in that divine realm ?

Bhagavan—"Gautam ! Her life-span there is four *Palyopam* "

बहुपुत्रिका देवी का आगामी भव

४५. (ख) 'बहुपुत्तिया णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे विञ्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिइ।'

तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसेहिं दिवेसहिं वीइक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति–'होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सोमा।'

४५. (ख) गौतम–"भगवन् ! आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के पश्चात् बहुपुत्रिका देवी उस देवलोक से च्यवन करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?"

भगवान–"गौतम ! आयुक्षय आदि के अनन्तर बहुपुत्रिका देवी इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष मे विन्ध्याचल पर्वत की तलहटी मे बसे विभेल ग्राम मे ब्राह्मण-कुल में बालिका रूप मे उत्पन्न होगी।

ग्यारह दिन बीतने पर उस बालिका के माता-पिता बारहवे दिन इस प्रकार का नामकरण करेगे– "हमारी इस बालिका का नाम 'सोमा' होना चाहिए, अर्थात् वे अपनी बालिका का नाम सोमा रखेगे।"

THE FUTURE BIRTH OF BAHUPUTRIKA DEVI

45. (b) Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will Bahuputrika Devi go ? Where will she be born ?"

Bhagavan said, "Gautam ! Completing the age, state, and life of the dimension of gods that Bahuputrika Devi will be born as a daughter in a Brahmin family residing in Vibhel village located at the foothills of Vindhyachal mountain in Bharatvarsh in the Jambudveep continent "

After eleven days of her birth, on the twelfth day, her parents will name her thus—"Our this daughter should be called Soma "

सोमा की युवावस्था

४६. तए णं सोमा उम्मुक्कबालभावा विन्नयपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सइ।

तए णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विन्नयपरिणयमेत्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिकूविएणं सुक्केणं पडिरूवएणं नियगस्स भाइणेज्जस्स रट्ठकूडस्स भारियत्ताए दलइस्सइ।

सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कंता जाव भण्डकरण्डगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया चेलपेडा इव सुसंपरिहिया रयणकरण्डगो विव सुसारक्खिया सुसंगोविया, मा णं सीयं (जाव) उण्हं वाइया पित्तिया सम्भिया संन्निवाइया विविहा रोयातंका फुसन्तु।

४६. धीरे-धीरे वह सोमा बाल्यावस्था को पारकर, सज्ञानदशा (सासारिक सुखो से परिचय) प्राप्त करेगी। युवावस्था मे प्रवेश करके वह यौवन एव सुन्दरता से अत्यन्त उत्तम एव उत्कृष्ट शरीर वाली हो जायेगी।

तब सोमा के माता-पिता उसे बचपन से मुक्त हुई, सासारिक विषय-सुखो से परिचित तथा पूर्ण युवती हुई जानकर यथायोग्य गृहस्थोपयोगी उपकरण, साधन, धन-आभूषण एव सम्पत्ति देकर अपने भानजे राष्ट्रकूट के साथ (दोनो की सम्मति होने पर) उसका विवाह कर देगे।

राष्ट्रकूट को वह सोमा अत्यन्त प्रिय, इष्ट और सुन्दर लगेगी। वह सोमा की भाण्डकरण्डक (आभूषणो की पेटी) के समान, तेलकेल्ला (तैलपात्र या इत्रदान) के समान यत्नपूर्वक सुरक्षा करेगा, वस्त्रो के पिटारे के समान उसकी भलीभाँति देखभाल करेगा, रत्नकरण्डक के समान अच्छी प्रकार सँभाल रखेगा और उसको सर्दी, गर्मी, वात, पित्त, कफ एव सन्निपातजन्य रोग और आतक न सताये, इस प्रकार से सर्वदा सावधान रहेगा।

THE YOUTH OF SOMA

46. In due course Soma will cross adolescence and attain maturity (when awareness of worldly pleasures is gained) In her youth she will develop into an exquisite beauty having a body with perfect proportions and endowed with youth and charm

Then her parents will realize that she has crossed adolescence, is aware of worldly pleasures, and is a mature young woman Consequently they will marry her to Rashtrakoot (with mutual consent), their *bhanja* (nephew, sister's son), and give enough household things, facilities, wealth and ornaments

Rashtrakoot will find Soma lovable, adorable, and beautiful He will carefully protect her like a jewel box and a pot of oil He will look after her like a wardrobe He will take proper care of her like a box of gems He will always be attentive to ensure that she is not tormented by cold, heat, ailments caused by disturbed body humours—wind, bile, and phlegm—and any other troubles

सोमा द्वारा बत्तीस सन्तान को जन्म

४७. तए णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे संवच्छरे जुयलगं पयायमाणी, सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाइ।

तए णं सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहिं य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य डिम्भएहि य डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताण-सेज्जएहि य अप्पेगइएहिं थणियाएहिं य, अप्पेगइएहिं पीहगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगणएहिं, अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खीरं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खेल्लणयं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खज्जगं

मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं कूरं मग्गमाणेहिं, पाणियं मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं हणमाणेहिं विप्पलायमाणेहिं, अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कन्दमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्धायमाणेहिं पलंबमाणेहिं दहमाणेहिं दंसमाणेहिं वममाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीस वमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुच्चडा जाव असुइबीभच्छा परमदुग्गन्धा नो संचाएइ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए।

४७. तदनन्तर वह सोमा ब्राह्मणी अपने पति राष्ट्रकूट के साथ विविध प्रकार के भोगों का सुख अनुभवती हुई प्रत्येक वर्ष एक युगल (एक जोडा) सन्तान को जन्म देती हुई सोलह वर्ष मे बत्तीस बालको को जन्म देगी। तब उन बहुत से (बत्तीस) लडके–लडकियो–कुमार–कुमारियो एवं अल्पवयस्क बालक–बालिकाओ मे से कोई तो ऊपर सिर की ओर पैर करके सोते रहेगे, कोई बच्चा चीख–पुकार मचाता रहेगा, कोई बच्चा पाँवो से चलना चाहेगा, कोई बच्चा सरकता पडोसियो के आँगन मे पहुँच जायेगा, कोई बच्चा चलने की चेष्टा करेगा, कोई बालक धरती पर गिर पडेगा, कोई बच्चा भूख लगने पर उसके स्तन ढूँढेगा, कोई बालक दूध की तलाश कर रहा होगा, कोई बच्चा खिलौने ढूँढ रहा होगा, कोई बच्चा खाद्य पदार्थों की खोज कर रहा होगा, कोई बालक भोजन (भात) खोजता होगा, कोई बालक पानी अथवा अन्य पेय पदार्थ पाने को भटक रहा होगा, कोई हँस रहा होगा, कोई रूठकर मचल रहा होगा, कोई गुस्से मे भरकर भन्ना रहा होगा, कोई बच्चा अपनी वस्तु पाने के लिए दूसरो से लड रहा होगा, कोई बच्चा दूसरे बच्चे को मार रहा होगा, कोई मार खाकर प्रलाप कर रहा होगा, कोई किसी के पीछे उसे पकडने के लिए भाग रहा होगा, कोई रो रहा होगा, कोई क्रन्दन कर रहा होगा, कोई सुबक रहा होगा, कोई जोर–जोर से चिल्लाते हुए रो रहा होगा, कोई सो रहा होगा, कोई बच्चा अग्नि या किसी गरम पदार्थ को छूकर जल रहा होगा, कोई बालक दूसरे बालक को दाँतो से काट रहा होगा, कोई उल्टी (वमन) कर रहा होगा, कोई शौच कर रहा होगा और कोई पेशाब कर रहा होगा। इस प्रकार वह सोमा ब्राह्मणी सदैव उन बच्चो के मल, मूत्र, वमन से लिपटे शरीर वाली तथा मैले–कुचैले कपडो के कारण कातिहीन गदगी से भरी रहने से देखने मे वीभत्स और अत्यन्त दुर्गन्धित घृणास्पद लगने के कारण अपने पति राष्ट्रकूट के साथ मन इच्छित कामभोगो को भोगने मे सर्वथा असमर्थ एव अक्षम हो जायेगी।

SOMA GIVES BIRTH TO THIRTY TWO CHILDREN

47. In due course that Soma Brahmani will enjoy a variety of worldly pleasures with her husband Rashtrakoot and give birth to twins every year for sixteen years making a total of thirty two children Of these adolescents, children, and infants of different ages—some will sleep reverse on the bed, some will scream and shout, some will learn to walk, some will crawl to neighbouring courtyards, some will toddle around, some will fall on the ground, some will seek her breasts when they are hungry, some will search for milk, some will look for toys, some will look around for snacks, some will ask for meals, some will wander around for water or drinks, some will laugh, some will be upright and fretful, some will be agitated and angry, some will quarrel with others to get back their things, some will beat

others, some will shout after being beaten, some will rush to catch others, some will cry, some will wail, some will sob, some will bawl, some will sleep, some will get scolded by touching something hot, some will bite others, some will vomit, some will pass stool, and some will urinate Thus that Soma Brahmani will be ever smeared with stool, urine, and vomit and dressed in dirty rags Due to her dull and dirty looks, and loathsome, stinking and repulsive appearance that Soma Brahmani will become unable and unfit to enjoy the desired worldly pleasures with her husband Rashtrakoot

सोमा का विचार

४८. तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया कयाइ पुव्वत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहि य (जाव) डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहि य (जाव) अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहिं हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जाणं मुत्त–पुरीस–वमिय–सुलित्तोवलित्ता जाव परमदुब्भिगन्धा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं जाव भुंजमाणी विहरित्तए। धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ (जाव) जीवियफले जाओ णं बंझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति। अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए।'

४८. ऐसी दुरवस्था मे पडी सोमा ब्राह्मणी के मन मे किसी समय रात को पिछले प्रहर मे अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति पर विचार करते हुए इस प्रकार का मनोभाव उत्पन्न होगा–'मै इन बहुत से दु ख देने वाले अभागे, एक साथ थोडे–थोडे दिनो के बाद उत्पन्न हुए दुर्जन्म वाले छोटे–बडे और नवजात बहुत से दारक–दारिकाओ यावत् बच्चे–बच्चियो मे से, कोई सिर की ओर पैर करके सोने से, किसी के पेशाब आदि करने से, उनके मल, मूत्र, वमन आदि से लिपटी रहने के कारण अत्यन्त दुर्गन्धमयी रहने के कारण अपने पति राष्ट्रकूट के साथ भोगो का सुख–अनुभव नही कर पा रही हूँ। इसलिए वे माताएँ धन्य है, उनका मनुष्य–जन्म और जीवन सफल है, जो वन्ध्या (बाँझ) ही रही है। सन्तानोत्पत्ति के योग्य नही होने से जानु–कूर्पर की माता (केवल अपने स्तनो व घुटनो को सँभालने वाली बाँझ) होकर, सुगन्धित द्रव्यो से सुवासित होकर, मनुष्य–जीवन सम्बन्धी विविध प्रकार के भोगोपभोगो को भोगती रहती है। मै तो ऐसी अधन्या, पुण्यहीन, निर्भागी हूँ कि राष्ट्रकूट के साथ मन इच्छित भोगो को नही भोग पाती हूँ।'

SOMA'S THOUGHT

48. In this distressed state, during the last quarter of a night, Soma Brahmini, while contemplating about family affairs, will think—"Encumbered by these numerous torturing and ill-fated adolescents, children, and infants of different ages born as twins after short gaps, of whom—some sleep reverse on the bed, and so on up to some urinate,


बहुपुत्रिका को
पूर्वभव सुनाते हुए
भगवान महावीर
16 वर्ष में 32 सन्तान को
देकर सोमा दुःखी हो
10

चित्र परिचय-१०

Illustration No. 10

बहु सन्तान से दु:खी सोमा

भगवान महावीर गौतम स्वामी से कहते है- सुभद्रा आर्या का जीव यहाँ बहुपुत्रिका देवी बना है। यहाँ से आयु पूर्ण कर विभेल सन्निवेश मे ब्राह्मण कुल मे सोमा नाम की कन्या के रूप मे जन्म लेगी।

सोमा का विवाह राष्ट्रकूट नामक युवक से होगा। वहाँ वह प्रतिवर्ष दो सन्तान (बालक बालिका) को जन्म देती हुई सोलह वर्ष म ३२ सन्तान की माता बनेगी। कोई छोटा बच्चा उसकी गोदी मे सोयेगा। वही टट्टी, पेशाब कर देगा। कोई उल्टी करेगा। कोई भूख से पीडित हुआ खाना माँगेगा। कोई खिलौना माँगेगा। कोई गिर जाने से चोट लगने से रोयेगा। कोई आपस मे छीना झपटी करेगा। कोई परस्पर लडेगा। कोई घर से बाहर निकलकर दूसरे के घर म भाग जायेगा। कोई सीधा सोया रहेगा। कोई हँसेगा, कोई रूठगा।

इस प्रकार उन बत्तीस सन्तानो के कलह- विलाप शोर व गन्दगी आदि के कारण बहुसन्तान से अत्यधिक पीडित -दु खी होकर वह असमय मे ही बूढी हो जायेगी और अपने को पुण्यहीन भाग्यहीन मान कर दु खी रहने लगेगी।

वर्ग ३, अ ४, सूत्र ४८ ४९

SOMA DISAPPOINTED WITH NUMEROUS CHILDREN

Bhagavan Mahavir said to Gautam Swami—The soul that was Subhadraa Aryaa has reincarnated as Bahuputrika Devi Completing the age she will be born as Soma, a daughter in a Brahmin family, residing in Vibhel village

She will get married to young Rashtrakoot She will give birth to one twin every year for sixteen years making a total of thirty two children Of these children—Some will sleep in her lap and will pass stool and urine there Some will vomit Some will ask for feed Some will want toys Some will fall and cry with pain Some will quarrel with others and snatch their things Some will get out of the house and go to another house Some will sleep straight Some will laugh and some will get angry

Thus tormented and distressed by quarreling, crying and wailing of numerous shoddy children she will age untimely She will remain gloomy considering herself to be unfortunate and impious

--Sec III, Ch 4, Sutra 48-49

ever smeared with stool, urine, and vomit, and with stinking and repulsive appearance I am not being able to enjoy the desired worldly pleasures with my husband Rashtrakoot. Therefore, as human beings fulfilled is the life of and blessed are those mothers who remain sterile Being mother only to their breasts and knees (who care only for their breasts and knees and not an offspring) and unable to bear a child, they use perfumes and enjoy a variety of worldly human pleasures and comforts But I am the wretched and ill-fated one that has been deprived of any desired worldly pleasures with Rashtrakoot, my husband "

सुव्रता आर्या का आगमन

४९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं.... जेणेव विभेले संनिवेसे तेणेव उवागच्छइ अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरंति।

तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जायाणं एगे संघाडए विभेले संनिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा. खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ, नमसंइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणं ४ पडिलाभेत्ता एवं वयासी-

एवं खलु अहं अज्जाओ ! रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव संवच्छरे संवच्छरे जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया। तए णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं जाव मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि.... विहरित्तए। तं इच्छामि णं अहं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए धम्मं निसामेत्तए।''

तए णं ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं (जाव) केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेन्ति।

४९. (उस अवसर पर जब सोमा ने ऐसा विचार किया) तब समिति आदि पाँच समितियो से युक्त बहुत विशाल साध्वी परिवार के साथ सुव्रता नाम की आर्याएँ पूर्वानुपूर्वी क्रम-(तीर्थंकरो द्वारा निर्दिष्ट आचार के अनुरूप) से विहार करती हुई उस विभेल ग्राम मे आयेगी और साधु मर्यादा अनुसार आज्ञा अवग्रह लेकर उपाश्रय मे ठहरेगी।

तत्पश्चात् उन सुव्रता आर्याओ का एक सघाडा (दो साध्वियो का समुदाय) विभेल ग्राम के उच्च, सामान्य और मध्यम परिवारो मे सामूहिक रूप मे भिक्षा के लिए घूमता हुआ राष्ट्रकूट के घर मे प्रवेश करेगा। तब वह सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओ को आते देखकर हर्षित और सन्तुष्ट होगी। हर्षित होकर शीघ्र ही अपने आसन से उठेगी, उठकर सात-आठ कदम उनके सामने जायेगी। वन्दन-नमस्कार करेगी और फिर अशन, पान, खादिम, स्वादिम चारो प्रकार के आहारदान का लाभ लेती हुई इस प्रकार कहेगी-

''आर्याओ ! अपने पति राष्ट्रकूट के साथ अनेक प्रकार के भोगो को भोगते हुए मैने प्रतिवर्ष बालक-युगलों (दो बालको) को जन्म देकर सोलह वर्ष मे बत्तीस बालको का प्रसव किया है, जिससे मै उन

दुर्जन्मा बहुत से बालक-बालिकाओ, बच्चे-बच्चियो से जो कुछ चित्त होकर सोए रहते है, कुछ मल-मूत्र त्यागते रहते है उनके मल-मूत्रादि से लिपटी अत्यन्त दुर्गन्धित शरीर वाली रहकर मै अपने पति राष्ट्रकूट के साथ सुखोपभोग नही भोग पाती हूँ। इसलिए हे आर्याओ, मै आपसे धर्म का उपदेश सुनना चाहती हूँ।''

सोमा के कथन को सुनकर वे आर्याएँ सोमा ब्राह्मणी को तीर्थंकरो द्वारा प्ररूपित तप-सयम रूप विविध प्रकार के धर्म का उपदेश सुनाएँगी।

ARRIVAL OF SUVRATA ARYAA

49. During that period of time (when Soma will think thus), wandering comfortably from one village to another (following the conduct defined by *Tirthankars*), an *aryaa* (female ascetic) named Suvrata, sincerely pursuing the practices of five *samitis* (regulations) . and so on up to accompanied by a large family of scholarly female disciples, will arrive in Vibhel village After seeking formal permission according to the ascetic conduct she will camp there

Later while moving about to seek suitable alms from ordinary, middle, and high class families in Vibhel village, a group of two-three *aryikas* (female ascetics) will come to Rashtrakoot's house Soma Brahmani will be happy and pleased to see the *aryikas* (female ascetics) coming She will at once get up from her seat, take seven-eight steps forward and pay homage to them After availing the opportunity of giving ample *ashan, paan, khadya, svadya ahaar* (staple food, liquids, general food, and savoury food) as alms she will submit—

"*Aryaas* ! Enjoying a variety of worldly pleasures with my husband Rashtrakoot I gave birth to one twin every year for sixteen years making a total of thirty two children Of these adolescents, children, and infants of different ages—some sleep reverse on the bed, and so on up to and some urinate Due to being ever smeared with stool, urine, and so on up to . stinking and repulsive appearance I am unable to enjoy the desired worldly pleasures with my husband Rashtrakoot Therefore, O *Aryaas* ! I wish to listen to your religious discourse "

At this request from Soma those *aryaas* (female ascetics) will preach austerities, discipline and other different aspects of the religion propagated by *Tirthankars*

सोमा का श्रावकधर्म ग्रहण

५०. तए णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा. जाव हियया ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-''सद्दहामि णं, अज्जाओ, निग्गंथं

पावयणं, जाव अब्भुट्ठेमि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं अज्जाओ ! जाव से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं, अज्जाओ, रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए (जाव) मुंडा पव्वयामि।''

''अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं।''

तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

५०. सोमा ब्राह्मणी उन आर्यिकाओ से धर्म सुनकर और उसे हृदय मे धारण कर हर्षित, सतुष्ट यावत् प्रसन्न हृदयपूर्वक उन आर्याओ को वन्दना-नमस्कार करेगी। वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार कहेगी- ''हे आर्याओ ! मै आप द्वारा कथित निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ, उसे अगीकार करना चाहती हूँ। आर्याओ ! निर्ग्रन्थ प्रवचन जैसा आपने प्रतिपादन किया है इसी प्रकार सत्य है। मै अपने पति राष्ट्रकूट से पूछूँगी। उसकी आज्ञा लेकर आप देवानुप्रिय के पास मुण्डित होकर प्रव्रजित होऊँगी।''

तब आर्याएँ सोमा ब्राह्मणी से इस प्रकार उत्तर देगीं-''देवानुप्रियो ! जैसे तुम्हे सुख हो वैसा करो, किन्तु धर्मकार्य मे विलम्ब मत करो।''

इसके पश्चात् सोमा ब्राह्मणी उन आर्याओ को वन्दन-नमस्कार करके विदा करेगी।

SOMA TAKES THE VOW OF SHRAMANOPASIKA

50. Soma Brahmani will be happy and contented after listening to, contemplating over, and understanding the religious discourse by the *aryikas* (female ascetics) She will pay them homage and obeisance. Therafter she will say—"Beloved of gods ! I respect and believe the preaching of the *Nirgranth* (the Omniscient) and have faith and interest in it I want to embrace it. O *Aryaas* ! What you have said is correct, true, and real I will request my husband Rashtrakoot Seeking his permission I would like to get initiated by you after getting my head tonsured "

The *aryikas* (female ascetics) will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed "

Then Soma Brahmani will pay them homage and bid farewell to the *aryikas* (female ascetics)

सोमा का राष्ट्रकूट से दीक्षा के लिए पूछना

५१. तए णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागया करयल.... एवं वयासी-''एवं खलु मए देवाणुप्पिया, अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते। से वि य णं धम्मे इच्छिए (जाव) अभिरुइए। तए णं अहं, देवाणुप्पिया, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए।''

तए णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी-''मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! इयाणिं मुंडा भवित्ता (जाव) पव्वयाहि। भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तिए मुण्डा (जाव) पव्वयाहि।''

तए णं सा सोमा माहणी ण्हाया (जाव) सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता विभेलं संनिवेसं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, पज्जुवासइ।

तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं परिकहेन्ति जहा जीवा बज्झन्ति। तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अन्तिए (जाव) दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ। सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं सा सोमा माहणी समणोवासिय जाया अभिगयजीवाजीवा जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

तए ण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ विभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमन्ति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति।

५१. तत्पश्चात् वह सोमा ब्राह्मणी राष्ट्रकूट के पास जाकर दोनो हाथ जोड मस्तक पर अजलिबद्ध होकर इस प्रकार कहेगी-''देवानुप्रिय ! मैने आर्याओ के पास धर्म का उपदेश सुना है और वह धर्म मुझे प्रिय यावत् रुचिकर लगा है। इसलिए देवानुप्रिय ! आपकी अनुमति लेकर मै सुव्रता आर्या से प्रव्रज्या अगीकार करना चाहती हूँ।''

यह सुनकर राष्ट्रकूट सोमा ब्राह्मणी से कहेगा-''देवानुप्रिये ! अभी तुम मुण्डित होकर घर छोडकर प्रव्रज्या ग्रहण मत करो किन्तु देवानुप्रिये ! अभी तुम मेरे साथ मानव-जीवन के अनेक प्रकार के कामभोगो के साधनो का उपभोग करो और भुक्तभोगी होने के पश्चात् सुव्रता आर्या के पास मुण्डित होकर यावत् गृह त्याग कर प्रव्रजित हो जाना।''

(राष्ट्रकूट के परामर्श को मान लेने के पश्चात्) सोमा ब्राह्मणी स्नान कर यावत् सुन्दर वस्त्र आभूषणो से सुसज्जित होकर दासियो के समूह से घिरी हुई अपने घर से बाहर निकलेगी। निकलकर विभेल ग्राम के बीचोबीच से निकलती हुई सुव्रता आर्याओ के उपाश्रय मे पहुँचेगी। वहाँ सुव्रता आर्याओ को वन्दन-नमस्कार करके उनकी पर्युपासना करेगी।

तत्पश्चात् वे सुव्रता आर्या उस सोमा ब्राह्मणी को केवलि प्ररूपित विविध प्रकार के धर्म का उपदेश देगी-यथा-जीव अपने किये कर्मो के कारण ही बँधता है, अपने पुरुषार्थ से ही कर्मो को तोडकर मुक्त होता है इत्यादि उस धर्म को सुनकर सोमा ब्राह्मणी सुव्रता आर्या के समक्ष बारह प्रकार के श्रावक धर्म को स्वीकार करेगी और फिर सुव्रता आर्या को वन्दन-नमस्कार करेगी। वदन-नमस्कार करके अपने घर की ओर लौट जायेगी।

तत्पश्चात् सोमा ब्राह्मणी श्रमणोपासिक (श्राविका) हो जायेगी। तब वह जीव-अजीव आदि तत्त्वो के स्वरूप की जानकार हो जायेगी। (एव ग्रहण किये हुए विविध प्रकार के शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवासो से) आत्मा को भावित करती हुई जीवन बितायेगी।

इसके पश्चात् वे सुव्रता आर्या किसी समय विभेल ग्राम से विहार कर अन्य जनपदो मे विचरण करती रहेगी।

SOMA SEEKS PERMISSION FROM RASHTRAKOOT

51. Then that Soma Brahmani will go to Rashtrakoot and raising her joined palms to her forehead shall say—"Beloved of gods ! I have listened to the religious discourse by *aryikas* (female ascetics) and found it suited to my liking and interest Therefore, O Beloved of gods ! After getting your permission I would like to go to Aryika Suvrata and get initiated as an ascetic."

At these words from Soma Brahmani, Rashtrakoot will say—

"Beloved of gods ! Please don't tonsure your head, renounce the household and get initiated immediately Enjoy more mundane pleasures and comforts with me as before and get initiated by Suvrata Aryaa only when you have had enough "

(After accepting this advise from Rashtrakoot) Soma Brahmani will take her bath, . and so on up to surrounded by a group of maid servants come out of her house She will arrive, passing through Vibhel village, at the *upashraya* (place of stay for ascetics) of Suvrata Aryaa After paying homage an obeisance to Suvrata Aryaa she will commence her worship

Then Suvrata Aryaa will preach to Soma Brahmani austerities, discipline and other different aspects of the religion propagated by *Tirthankars* including—a being is trapped in bondage due his deeds and gets liberated by shattering the shackles of *karmas* through his own endeavour only (etc) After listening to that discourse, Soma Brahmani will accept the twelve fold *Shravak Dharma* (Jain code for laity) After paying homage and obeisance to Suvrata Aryaa she will return home

Then that Soma Brahmani will become a *Shramanopasika* (Jain lay woman) endowed with the knowledge of fundamentals like being and non-being She will spend her life enkindling her soul (by observing various vows including codes of uprightness, restraints that reinforce the practice of minor vows, abandoning and atoning for sinful deeds, living as ascetics for short periods and fasting)

In due course that Suvrata Aryaa will leave Vibhel village and wander around in other populated areas

सोमा की प्रव्रज्या

५२. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं .... जाव विहरंति। तए णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया, जाव वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा (जाव) नवरं "रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं पव्वयामि।"

"अहासुहं ....।"

तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल. तहेव आपुच्छइ (जाव) पव्वइत्तए।

"अहासुहं, देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं ....।"

तए णं रट्ठकूडे विउलं असणं, तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा (जाव) अज्जा जाया इरियासमिया (जाव) गुत्तबम्भयारिणी।

५२. इसके बाद वे सुव्रता आर्या किसी समय अनुक्रम से विहार करती हुई, पुन विभेल ग्राम मे आयेंगी। तब वह सोमा ब्राह्मणी आर्याओ के आगमन का समाचार सुनकर हर्षित एव सन्तुष्ट हो स्नान आदि कर तथा सभी प्रकार के अलकारो से विभूषित हो पहले की भाँति दासियो सहित दर्शनार्थ जायेगी। वंदन-नमस्कार करेगी। वन्दन-नमस्कार करके धर्म सुनकर सुव्रता आर्या से निवेदन करेगी-"मै अपने पति राष्ट्रकूट से पूछकर आपके पास मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करना चाहती हूँ।"

तब सुव्रता आर्या उससे कहेगी-"देवानुप्रिये ! तुम्हे जिस प्रकार सुख हो वैसा ही करो, किन्तु शुभ कार्य मे विलम्ब मत करो।"

इसके बाद सोमा ब्राह्मणी उन सुव्रता आर्याओ को वन्दन-नमस्कार करके जहाँ उसका अपना घर होगा, जहाँ राष्ट्रकूट होगा, वहाँ आयेगी। आकर दोनो हाथ जोडकर पूछेगी कि "मै आपकी आज्ञा लेकर प्रव्रज्या अगीकार करना चाहती हूँ।"

इस बात को सुनकर राष्ट्रकूट कहेगा-"देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो किन्तु इस धर्मकार्य में प्रमाद मत करो।"

तत्पश्चात् राष्ट्रकूट बहुत-सा अशन, पान, खादिम, स्वादिम चार प्रकार के भोजन बनवाकर अपने मित्र, जातिबाधव, स्वजन, सम्बन्धियो को आमन्त्रित करेगा। उन्हे भोजन करायेगा। उनका सत्कार-सन्मान करेगा। जिस प्रकार पूर्वभव मे सुभद्रा प्रव्रजित हुई थी, उसी प्रकार आर्या होकर ईर्यासमिति आदि समितियो एव गुप्तियो से युक्त गुप्त ब्रह्मचारिणी होकर विचरेगी।

INITIATION OF SOMA

52. After that at some later period wandering comfortably from one village to another Aryaa Suvrata will once again come to Vibhel village On getting the news of arrival of *aryikas* (female ascetics) Soma Brahmani will be pleased and contented Taking her bath, adorning her with a variety of ornaments and accompanied by many maid servants as before, she will go to pay homage to Suvrata Aryaa After paying homage and obeisance to Suvrata Aryaa and listening to her discourse she will say—

"Seeking permission from my husband Rashtrakoot I wish to get initiated by you after getting my head tonsured "

Suvrata Aryaa will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed "

Then Soma Brahmani will pay homage and obeisance to Suvrata Arya and return home to her husband Rashtrakoot. Joining her palms she will ask—"Beloved of gods ! Seeking your permission I want to get initiated as an ascetic "

To this Rashtrakoot will reply—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed "

After that Rashtrakoot will arrange for large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invite all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances After feeding them he will greet and honour them and so on. As Subhadra Sarthavahi got initiated in the previous birth, Soma Brahmani will also get initiated and will spend her life as a completely celibate *aryaa* (female ascetic) observing five *samitis* (self regulations) and three *guptis* (restraints)

५३. तए णं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूइं छट्ठमट्ठमदसमदुवालस जाव भावेमाणी बहूहिं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविन्दस्स देवरन्नो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिइ।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

५३. तदनन्तर सोमा आर्या सुव्रता आर्या के समीप रहकर सामायिक आदि ग्यारह अगशास्त्रो का अध्ययन करेगी। अध्ययन करके बहुत से चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश-भक्त आदि अनेकविध तप साधना से आत्मा को भावित करती हुई बहुत वर्षों तक श्रमण-पर्याय का पालन करेगी। अन्त मे मासिक सलेखना से आत्मा को शुद्ध कर, अनशन द्वारा साठ भक्तो को छोडकर, आलोचना-प्रतिक्रमण करती हुई पूर्ण समाधिभाव के साथ मरण प्राप्त करके देवेन्द्र देवराज शक्र के सामानिक देव के (प्रथम देवलोक मे) रूप मे उत्पन्न होगी।

वहाँ किसी-किसी देव की दो सागरोपम की स्थिति होती है। उस सोमदेव की भी दो सागरोपम की स्थिति होगी।

53. After that Soma Aryaa will live with Suvrata Aryaa and study eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik* After this study she will lead ascetic life for many years enkindling her soul by observing a variety of austerities including fasting for two, three, four, five, six, and more days. In the end she will take the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and avoiding sixty meals

embrace meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of her death She will reincarnate as a *Samanik* (of equal status) god of Shakra, the king of gods (in the first heaven)

There the life-span of some gods is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). The life-span of that Soma Dev will also be two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

५४. 'से णं, भंते, सोमे देवे तओ देवलोगाओ आउक्खएणं, जाव चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?'

गोयमा, महाविदेहे वासे (जाव) अंतं काहिसि।

५४. (यह सब सुनकर) गौतम स्वामी ने पूछा–''भते ! वह सोमदेव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के अनन्तर देवलोक से आयुष्यपूर्ण कर कहाँ जायेगा, कहाँ उत्पन्न होगा ?''

भगवान ने कहा–''हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होकर सिद्ध होगा यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगा।''

54. (On hearing all this) Gautam Swami again asked, "*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will that Soma Dev go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) after ending all miseries "

५५. निक्खेवो–तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं भगवया पुप्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

५५. श्री सुधर्मा स्वामी ने उसहार करते हुए कहा–''आयुष्मन् जम्बू ! इस प्रकार से मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के चतुर्थ अध्ययन का यह भाव निरूपण किया है। ऐसा मै कहता हूँ।''

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

55. Concluding the story, Sudharma Swami told Jambu, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika* So I state "

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

पंचम अध्ययन : पूर्णभद्र देव
FIFTH CHAPTER : PURNABHADRA DEV

५६. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

५६. जम्बू स्वामी ने आर्य सुधर्मा स्वामी से पूछा–"भगवन् ! यदि निर्वाण-प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका नामक उपाग के चतुर्थ अध्ययन का यह अर्थ कहा है तो भगवान ! ने पुष्पिका के पचम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

56. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the fourth chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika* ?"

पूर्णभद्र देव का नाट्य–प्रदर्शन

५७. एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, जहा सूरियाभो (जाव) बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए। कूडागारसाला। पुव्वभवपुच्छा।

'एवं खलु गोयमा' तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नामं नयरी होत्था रिद्ध.। चंदो राया। ताराइण्णे चेइए। तत्थ णं मणिवइयाए नयरीए पुण्णभद्दे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे।

तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना (जाव) जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पुव्वाणुपुव्विं (जाव) समोसढा। परिसा निग्गया।

५७. आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"आयुष्मन् जम्बू ! पचम अध्ययन का भाव इस प्रकार है–उस काल और उस समय राजगृह नामक नगर था। गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। भगवान महावीर स्वामी पधारे। जन-समूह दर्शन करने एव धर्म सुनने के लिए निकला।

उस काल और उस समय सौधर्मकल्प देवलोक मे पूर्णभद्र विमान की सुधर्मा सभा मे पूर्णभद्र नामक सिहासन पर स्थित पूर्णभद्र देव सूर्याभदेव के समान चार हजार सामानिक देवो आदि के साथ विचर रहा था। उसने अवधिज्ञान से भगवान को राजगृह के गुणशिलक चैत्य मे विराजमान देखा। भगवान की सेवा

मे उपस्थित हुआ, और सूर्याभदेव की भाँति बत्तीस प्रकार की नृत्यविधियो का प्रदर्शन कर भगवान को वन्दना कर वापस स्वर्ग को लौट गया।

तब गौतम स्वामी ने भगवान से उस देव की दिव्य देव-ऋद्धि आदि के अन्तर्धान होने के विषय मे पूछा। भगवान ने कूटाकारशाला के दृष्टान्त द्वारा समाधान किया। तत्पश्चात् उसके पूर्वभव के विषय मे पूछने पर भगवान ने बताया-

"गौतम ! उस काल उस समय मे इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे धन वैभव इत्यादि से समृद्ध-मणिपदिका नाम की नगरी थी। उस नगरी के राजा का नाम चन्द्र था और ताराकीर्ण नाम का एक सुन्दर उद्यान था। उस मणिपदिका नगरी मे पूर्णभद्र नाम का एक सद्गृहस्थ रहता था, जो धन-धान्य इत्यादि से सम्पन्न था।

उसी समय बहुश्रुत स्थविर भगवत, जो जाति एव कुल से सम्पन्न, जीवन की आकाक्षा और मरण के भय से मुक्त बहुश्रुत स्थविर थे। अपने विशाल शिष्य परिवार के साथ विहार करते हुए-मणिपदिका नगरी मे पधारे। जनसमूह उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए उपस्थित हुआ।

DANCE PERFORMANCE BY PURNABHADRA GOD

57. Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

During that period of time there was a city called Rajagriha There was a *chaitya* (temple complex) called Gunasheelak The ruler of the city was King Shrenik Shraman Bhagavan Mahavir arrived People came out to pay homage and attend discourse

During that period of time, like Suryabh Dev, Purnabhadra god was sitting on a throne named *Purnabhadra* in the *Sudharma* assembly in *Purnabhadra Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension) with four thousand vehicle based gods and so on up to Then with the help of his *Avadhi Jnana* (extrasensory knowledge of the physical dimension, something akin to clairvoyance) he saw Shraman *Bhagavan* Mahavir stationed at Gunasheelak Chaitya He came to Bhagavan, gave thirty two types of stage performances as Suryabh god had done and returned after paying homage to *Bhagavan*

Then Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about disappearance of the divine opulence and powers of that god *Bhagavan* answered the question by giving the example of *Kutagar Shala* After that to the question about his past birth *Bhagavan* replied—

"Gautam ! During that period of time in this Jambudveep continent in Bharat area there was a grand and prosperous city named Manipadika The ruler of the city was King Chandra In the city there was a beautiful garden named Tarakeern In Manipadika city lived a noble householder (*gathapati*) named Purnabhadra who was very rich

During that period of time some learned *Sthavir Bhagavants* (senior ascetics), who belonged to high castes and families and were free of any ambition for life as well as fear of death, came to Manipadika city with a large family of disciples Masses gathered to attend their religious discourse

५८. तए णं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ. (जाव) जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते, तहेव निग्गच्छइ, (जाव) निक्खंतो (जाव) गुत्तबम्भयारी।

तए णं से पुण्णभद्दे अणगारे भगवंताणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाई अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम (जाव) भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि (जाव) भासामणपज्जीत्तए।

एवं खलु, गोयमा ! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी (जाव) अभिसमन्नागया।

'पुण्णभद्दस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?'

'गोयमा, दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।'

'पुण्णभद्दे णं भते ! देवे ताओ देवलोगाओ (जाव) कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! महाविदेह वासे सिज्झिहिइ (जाव) अंतं काहिइ।'

५८. तब वह पूर्णभद्र गाथापति स्थविर भगवतो के आगमन का समाचार सुनकर, हृदय मे हृष्ट–तुष्ट हुआ। यह सब वर्णन गगदत्त (भगवतीसूत्र १६/५) के समान जानना चाहिए। पूर्णभद्र श्रमणो के दर्शन के लिए गया। उनके समीप प्रव्रजित हुआ, ईर्यासमिति आदि से युक्त गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन गया।

तत्पश्चात् पूर्णभद्र अनगार उन स्थविर भगवन्तो के समीप सामायिक (आचाराग) से प्रारम्भ कर ग्यारह अगो का अध्ययन करता है। बहुत प्रकार से चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम भक्त आदि तप साधना के द्वारा आत्मा को परिशोधित करके बहुत वर्षो तक श्रमण पर्याय का पालन किया। अन्त मे मासिक सलेखनापूर्वक साठ भक्त अनशन पूर्ण कर आलोचना–प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक शरीर त्याग कर सौधर्मकल्प के पूर्णभद्र विमान की उपपात सभा मे, देव–शय्या पर देव रूप से उत्पन्न हुआ। वहॉ भाषा–मन पर्याप्ति से पर्याप्त भाव को प्राप्त किया।

इस प्रकार हे गौतम ! पूर्णभद्र देव ने वह दिव्य देव–ऋद्धि प्राप्त की है।

"भते ! पूर्णभद्र देव की वहाँ पर कितने काल की स्थिति बताई है ?"

भगवान्–"गौतम ! उसकी दो सागरोपम की स्थिति है।"

गौतम–"भगवन् ! वह पूर्णभद्र देव उस देवलोक से आयुष्य पूर्ण करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान ने कहा–"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होकर सिद्ध होगा। यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगा।"

58. When Purnabhadra Gathapati got the news of the arrival of senior ascetics, he was pleased and contented. All this description is same as that about Gangadatt (*Bhagavati Sutra* 16/5). Purnabhadra went to pay homage to the senior ascetics, got initiated and spent his life as a completely celibate ascetic observing five *samitis* (etc)

After that Purnabhadra ascetic lived with those senior ascetics and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik* After this he led ascetic life for many years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two, three, four, five, six, and more days In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration and avoiding sixty meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the time of his death He reincarnated instantaneously (*upapat*) as a god in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Purnabhadra Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension) There he attained the state of full development (*paryapti*) through *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*

Thus, Gautam ! Purnabhadra god acquired that divine opulence

"*Bhante* ! What is said to be the life-span of Purnabhadra god there ?

Bhagavan—"Gautam ! His life-span is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

Gautam—"*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods where will that Purnabhadra god go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! He will be born as a human being in the Mahavideh area and finally become a *Siddha* (liberated soul) to end all miseries "

५९. निक्खेवओ—तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पंचम अज्झयणं समत्तं ॥

५९. इस प्रकार हे आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका उपाग के पाँचवे अध्ययन का यह भाव कहा है, ऐसा मै कहता हूँ।"

॥ पंचम अध्ययन समाप्त ॥

59. Thus, long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika*. So I state "

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

षष्ठ अध्ययन : मणिभद्र देव
SIXTH CHAPTER : MANIBHADRA DEV

६०. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

'एवं खलु जंबू !'

६०. जम्बू अनगार आर्य सुधर्मा स्वामी से पूछते है–"भगवन् ! यदि निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान ने पुष्पिका के पचम अध्ययन का यह भाव कहा है तो पुष्पिका के (छठे) अध्ययन का क्या भाव कथन किया है ?"

आर्य सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"आयुष्मन् जम्बू ! वह इस प्रकार है।"

60. Jambu Swami asked Sudharma Swami—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the fifth chapter of *Pushpika*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the sixth chapter of *Pushpika* ?"

Arya Sudharma said—"Long lived Jambu ! It is as follows—

६१. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णभद्दो तहेव आगमणं, नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा।

मणिवई नयरी, माणिभद्दे गाहावई, थेराणं अंतिए पव्वज्जा, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं वासाइं परियाओ, मासिया संलेहणा, सट्ठि भत्ताइं। माणिभद्दे विमाणे उववाओ, दो सागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ?

६१. हे जम्बू ! उस काल उस समय राजगृह नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। एक बार राजगृह मे महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ।

उस समय मणिभद्र देव सुधर्मा सभा के मणिभद्र सिहासन पर चार हजार सामानिक देव आदि परिवार के साथ बैठा था। पूर्णभद्र देव की भाँति वह भी भगवान के समवसरण मे आया और नृत्य–विधियो का प्रदर्शन कर वापस लौट गया।

तत्पश्चात् गौतम स्वामी ने उसको दिव्य देव–ऋद्धि आदि प्राप्त होने एवं पूर्वभव के विषय मे जिज्ञासा की।

भगवान ने उत्तर दिया–"उस काल उस समय मणिपदिका नाम की नगरी मे मणिभद्र नाम का गाथापति निवास करता था। उसने स्थविरो के समीप प्रव्रज्या अगीकार की। ग्यारह अगो का अध्ययन किया। बहुत

वर्षों तक श्रमण-पर्याय का पालन किया और मासिक सलेखना की। अनशन द्वारा साठ भक्त छेदन कर पापस्थानो की आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक मरण प्राप्त करके मणिभद्र विमान मे उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी दो सागरोपम की स्थिति है। अन्त मे देवलोक से च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध होगा।''

61. O Jambu ! During that period of time there was a city called Rajagriha There was a *chaitya* (temple complex) called Gunasheelak. The ruler of the city was King Shrenik Shraman Bhagavan Mahavir arrived

During that period of time Manibhadra god was sitting on a throne named *Manibhadra* in the *Sudharma* assembly with four thousand vehicle based gods Like Purnabhadra god he also came to *Bhagavan*, gave thirty two types of stage performances and returned after paying homage to *Bhagavan*

Then Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about disappearance of the divine opulence and powers of that god as also his earlier birth

Bhagavan replied—

"Gautam ! During that period of time in Manipadika city lived a noble householder (*gathapati*) named Manibhadra He got initiated by senior ascetics He studied eleven *Angas* He led ascetic life for many years and took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration Avoiding sixty meals he embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death He reincarnated in *Manibhadra Viman* (celestial vehicle) His life-span is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) In the end, descending from the divine dimension, he will be born in the Mahavideh area to become a *Siddha* (liberated soul) "

६२. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण पुप्फियाण छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ षष्ट अज्झयण समत्तं ॥

६२. सुधर्मा स्वामी-''आयुष्मन् जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका के छठे अध्ययन का यह भाव कहा है। ऐसा मै कहता हूँ।''

॥ छठा अध्ययन समाप्त ॥

62. Sudharma Swami—"Long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the sixth chapter of Pushpika So I state "

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

७ से १० अध्ययन : मणिभद्र देव
SEVENTH TO TENTH CHAPTER : MANIBHADRA DEV

६३. एवं दत्ते ७, सिवे ८, बले ९, अणाढिए १०, सव्वे जहा पुण्णभद्दे देवे। सव्वेसिं दो सागरोवमाइं ठिई। विमाणा देवसरिसनामा।

पुव्वभवे दत्ते चंदणाए, सिवे मिहिलाए, बले हत्थिणापुरे नयरे, अणाढिए काकंदिए। चेइयाइं जहा संगहणीए।

॥ तइओ वग्गो समत्तो ॥

६३. इसी प्रकार (७) दत्त, (८) शिव, (९) बल, और (१०) अनादृत, इन सभी देवो का वर्णन पूर्णभद्र देव के समान कहना चाहिए। सौधर्मकल्प विमान मे सभी दो-दो सागरोपम की स्थिति है। इन देवो के नाम के अनुसार ही इनके विमानो के नाम है।

(इनमे विशेष इतना समझना चाहिए) पूर्वभव मे दत्त **चन्दना नगरी मे**, शिव **मिथिला नगरी मे**, बल **हस्तिनापुर नगर मे**, अनादृत **काकन्दी नगरी मे जन्मे थे।**

सग्रहणी गाथा मे कहे अनुसार उन नगरियो के चैत्यो के नाम समझ लेना चाहिए। (सग्रहणी गाथा अनुपलब्ध है)

इस प्रकार पुष्पिका उपाग का सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ और दसवाँ अध्ययन समाप्त हुआ।

॥ सप्तम से दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ पुष्पिका नामक तृतीय वर्ग समाप्त ॥

63. In the same way the stories of all the remaining gods, namely Datt (7), Shiva (8), Bala (9) and Anadrit (10) are to be read generally the same as that of Purnabhadra god The life-span of each of these in *Saudharma Kalp* is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) The names of their *vimans* are same as their own names

The only exception is that in earlier birth Datt was born in Chandana city, Shiva in Mithila city, Bala in Hastinapur city, and Anadrit in Kakandi city

The names of the *chaityas* (temple complexes) of these cities should be taken from the *Sangrahani Gatha* (collective verse which is not available in the text)

● END OF THE SEVENTH TO TENTH CHAPTER ●

● END OF THE THIRD SECTION TITLED PUSHIPIKA ●

चतुर्थ वर्ग : पुष्पचूलिका

उपोद्घात

पुष्पचूलिका नामक इस चतुर्थ वर्ग के दस अध्ययन है। इन अध्ययनो की पात्र श्रीदेवी आदि दस देवियाँ है। इन्होंने पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु के शासन मे पुष्पचूलिका आर्यिका के पास दीक्षा ली। दीक्षा लेने के पश्चात् शारीरिक शोभा–विभूषा, साज–सज्जा मे आसक्त होकर अपनी आत्मिक शोभा की उपेक्षा करने लगी। गुरुणी के समझाने पर भी साधु आचार के विपरीत आचरण को त्याग नही सकी और न ही अन्तिम समय में सलेखना–सथारा करने के समय भी इन आचरित पापस्थानो की आलोयणा–प्रतिक्रमण करके दोष–शुद्धि की। इस कारण वे बिराधक बनी। फिर बहुपुत्रिका देवी की तरह भगवान महावीर के समवसरण मे आकर अपनी ऋद्धि का प्रदर्शन किया और तब गौतम स्वामी की जिज्ञासा पर भगवान महावीर उनके पूर्वभवो का वर्णन सुनाते है।

इन दसो अध्ययनो से जो सन्देश मिलता है, वह मुख्य रूप मे यह है कि सासारिक सुख–भोग का त्यागकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले सयमियो को शरीर के प्रति इतना ममत्व–आसक्ति नही रखना चाहिए कि रात–दिन उसी की साज–सज्जा मे लगकर अपने ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय आदि को भी उपेक्षित करते रहें। शरीर–आसक्ति व शरीर की शोभा-विभूषा की भावना को यहाँ **बकुशिका** अर्थात् सयम को दूषित करने वाली प्रवृत्ति माना है।

दूसरा सन्देश यह है कि सयम मे प्रमाद–मोह व वश लगे दोषो की शुद्धि अवश्य ही कर लेना चाहिए। दोष–शुद्धि नही करने पर वह अपने चारित्र का, सयम का विराधक होता है और विराधक अवस्था मे मृत्यु प्राप्त करने वाला परलोक मे वाछित उच्च देवगति मे नही जा सकता। इन वर्णनो से यह भी सूचित होता है कि करुणानिधान भगवान पार्श्वनाथ ने नारी–जाति के प्रति कितनी उदारता व विशाल दृष्टि जताई कि वृद्ध कुमारिकाएँ जो समाज मे उपेक्षिता का–सा जीवन जीती थी, उन्होने सयम–पथ पर अग्रसर कर सम्पूर्ण समाज मे आदर–सन्मान का स्थान प्रदान किया।

सभी अध्ययनों की कथावस्तु लगभग एक ही समान है।

FOURTH SECTION : PUSHPACHULIKA

INTRODUCTION

There are ten chapters in this fourth section titled *Pushpachulika*. The central characters of these chapters are ten goddesses They got initiated by Pushpachulika Aryaa during the period of influence of Purushadaniya Bhagavan Parshva Naath After getting initiated they neglected their spiritual grandeur by getting over indulgent in physical grandeur like apparels and other adornments of the body In spite of the advise of their teacher they did not refrain from their anti-ascetic conduct They also did not atone for these sinful acts committed by them by doing critical review (*pratikraman*) That was the reason they became transgressors of the ascetic conduct. Later, like Bahuputrika Devi, they came to *Bhagavan* in the *Samavasaran* (the divine assembly of a *Tirthankar*) and displayed their divine opulence After this Bhagavan Mahavir told the stories of their past births to satisfy Gautam Swami's curiosity

The central theme of these ten chapters is that ascetics who take the vow of celibacy after renouncing mundane pleasures and comforts should not have so much fondness and involvement with the body that they spend all their time in its embellishment and neglect their primary duty of meditation, studies and pursuit of knowledge The feeling of attachment for body and involvement in its embellishment is termed as *'bakushika'* here The meaning of this term is—the attitude that spoils ascetic-discipline.

Another message is that one should essentially atone for the faults and transgressions in observing ascetic-discipline committed due to stupor or mundane attachments One who does not atone for his faults becomes transgressor of the ascetic discipline and conduct As a consequence he does not get reincarnated in the expected higher divine realm after death. These stories also inform us about how liberal and open-minded was Bhagavan Parshva Nath, the epitome of compassion By inspiring spinsters of advanced age, leading a neglectful and wretched life, to take to the spiritual path he provided them a place of honour and respect in the society.

All these chapters have almost the same story line

प्रथम अध्ययन : श्री देवी
FIRST CHAPTER : SHRI DEVI

१. उक्खेवओ—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स पुप्फियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फचूलियाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

१. जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते है–"भते ! यदि मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पिका नामक तृतीय उपाग का पूर्व कथित अर्थ बताया है तो पुष्पचूलिका नामक चतुर्थ उपाग का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the third section of the *Upanga* named *Pushpika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fourth section of the *Upanga* named *Pushpachulika* ?"

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स णं पुप्फचूलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

सिरि–हिरि–धिइ–कित्तीओ, बुद्धी–लच्छी य होइ बोद्धव्वा।

इलादेवी सुरादेवी रसदेवी गंधदेवी य ?

२. आयुष्मन् जम्बू ! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने चौथे उपाग पुष्पचूलिका के दस अध्ययनो का निरूपण किया है, जो इस प्रकार है–

(१) श्रीदेवी, (२) ह्रीदेवी, (३) धृतिदेवी, (४) कीर्तिदेवी, (५) बुद्धिदेवी, (६) लक्ष्मीदेवी, (७) इलादेवी, (८) सुरादेवी, (९) रसदेवी, और (१०) गन्ध देवी।

2. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has preached ten chapters of *Pushpachulika*, the fourth *Upanga* They are—(1) Shridevi, (2) Hridevi, (3) Dhritidevi, (4) Kirtidevi, (5) Buddhidevi, (6) Lakshmidevi, (7) Iladevi, (8) Suradevi, (9) Rasadevi, and (10) Gandhadevi

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

३. "भते ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पचूलिका नामक चौथे उपाग के दस अध्ययनो का निरूपण किया है तो प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?"

3. Jambu—"*Bhante* ! If there are ten chapters in *Pushpachulika*, the fourth *Upanga*, as given by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of its first chapter ?"

४. तए णं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं वयासी–

४. तब आर्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा–

4. Sudharma Swamı replied to Jambu Anagar as follows :

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। सामी समोसढे, परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, जहा बहुपुत्तिया, (जाव) नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया। नवरं दारियाओ नत्थि। पुव्वभवपुच्छा।

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, जियसत्तू राया। तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणो नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावयणीए अत्तया भूया नामं दरिया होत्था, बुड्ढा बुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था।

५. हे जम्बू ! उस काल और उस समय मे राजगृह नाम का नगर था। वहाँ गुणशिलक चैत्य था। राजगृह मे श्रेणिक राजा राज्य करता था। एकदा श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। धर्मदेशना सुनने के लिए जनसमूह आया।

उस काल उस समय श्रीदेवी सौधर्मकल्प मे श्री अवतंसक नामक विमान की सुधर्मा सभा मे चार हजार सामानिक देवियो एव चार महत्तरिकाओ के साथ श्री सिहासन पर बैठी हुई थी। बहुपुत्रिका देवी के समान उसने भगवान को राजगृह मे विराजमान देखा। वहाँ आई और नृत्य–विधि दिखाकर वापस लौट गई। विशेष यह जानना चाहिए कि श्रीदेवी ने अपनी नृत्यविधि मे (बहुपुत्रिका की तरह) बालिकाओ की विकुर्वणा नही की।

श्रीदेवी के वापस जाने पर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के विषय मे जिज्ञासा की। भगवान ने उत्तर मे कहा–"हे गौतम ! उस काल उस समय मे राजगृह नगर था। गुणशिलक चैत्य था, वहाँ जितशत्रु नाम का राजा था। उस राजगृह मे सुदर्शन नाम का धन–सम्पन्न गाथापति निवास करता था। उस सुदर्शन गाथापति की प्रिया नाम की भार्या थी। जो सुन्दर व सुकोमल अगोपाग वाली थी। उस सुदर्शन गाथापति की पुत्री, प्रिया गाथापत्नी की आत्मजा 'भूता' नाम की कन्या थी। जो कुमारी अवस्था (अविवाहित दशा) मे ही बूढी हो जाने से वृद्ध शरीर वाली और जीर्ण शरीर वाली जीर्णकुमारी प्रतीत होती थी। उसके नितम्ब व स्तन (आदि अगोपाग) शिथिल हो चुके थे, किन्तु वह किसी पुरुष से अछूती वर–विहीन होने के कारण पवित्र आचार वाली थी।

5. Jambu ! Durıng that perıod of tıme there was a cıty called Rajagrıha where there was a *chaıtya* (temple complex) called Gunasheelak The ruler of the cıty was Kıng Shrenık Once *Swamı* (Shraman Bhagavan Mahavır) arrıved People came to attend hıs relıgıous dıscourse

During that period of time Shri Devi was sitting on a throne named *Shri* in the *Sudharma Sabha* (divine assembly) of the *Shri Avatansak Vimaan* (celestial vehicle) in *Saudharm Kalp* (divine dimension) along with four thousand vehicle based goddesses and four thousand *Mahattarika* goddesses (teacher goddesses who taught ethics and morality) Like Bahuputrika Devi, she saw Shraman Bhagavan Mahavir stationed in Rajagriha. She came there, presented stage performance and returned The only difference was that she did not create children during her dance performance (like Bahuputrika had done).

When Shri Devi left, Gautam Swami asked Bhagavan Mahavir about her past birth *Bhagavan* replied—"Gautam ! During that period of time there was a city named Rajagriha There was a *chaitya* (temple complex) named Gunasheelak The ruler was King Jitshatru In Rajagriha lived a *gathapati* (householder) named Sudarshan who was very rich The name of Sudarshan Gathapati's wife was Priya She had very delicate limbs and was very beautiful Sudarshan Gathapati and Priya Gathapatni had a daughter named Bhoota As she grew old without getting married she appeared to be an old spinster with a frail and decrepit body Her buttocks and breasts (and other parts of the body) had become loose and infirm but being unmarried and untouched by man she was still chaste

भूता का दर्शनार्थ गमन

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए (जाव) नव रयणीए। वण्णओ सोच्चेव। समोसरणं परिसा निग्गया।

तए णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी–"एवं खलु, अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे (जाव) गणपरिवुडे विहरइ। तं इच्छामि णं अम्मताओ, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए।"

'अहासुहं–देवाणुप्पिए, मा पडिबंधं.....।'

तए णं सा भूया दारिया ण्हाया (जाव) सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

तए णं सा भूया दारिया निययपरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थयरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडीचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो (जाव) पज्जुवासइ।

तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए य महइ.''''। धम्मकहा। धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ. वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वयह, जं नवरं, भंते ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं (जाव) पव्वइत्तइ।'

'अहासुहं देवाणुप्पिए !'

६. उस काल उस समय में नौ हाथ की अवगाहना वाले पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु पधारे। जनता दर्शन करने के लिए निकली।

भूता दारिका इस सवाद को सुनकर हर्षित और प्रसन्न हुई, अपने माता–पिता के पास आई। आकर उनकी आज्ञा माँगी–"हे मात–तात ! पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् विचरण करते हुए शिष्य–समूह के साथ यहाँ विराजमान है। हे मात–तात ! आपकी आज्ञा–अनुमति लेकर मै पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् की चरण–वदना के लिए जाना चाहती हूँ।"

माता–पिता ने कहा–"देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो, किन्तु विलम्ब मत करो।"

माता–पिता की अनुमति प्राप्त कर भूता दारिका ने स्नान किया, शरीर को वस्त्र, आभूषणो से अलकृत करके अनेक दासियो व सहेलियो के साथ अपने घर से निकली। निकलकर जहाँ बाहरी सभाभवन–बैठक थी, वहाँ आई और आकर अपने धार्मिक यान–रथ पर आसीन हुई।

भूता दारिका अपने स्वजन–परिवार को साथ लेकर राजगृह नगर के मध्य भाग में से होती हुई गुणशिलक चैत्य के समीप आई, वहाँ तीर्थंकरो के छत्रादि अतिशय देखकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी। दासी–समूह के साथ जहाँ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु विराजमान थे, वहाँ पर आई। आकर उसने तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दना की और उनकी पर्युपासना करने लगी।

तदनन्तर पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु ने उस भूता कन्या (कुमारी) और अति विशाल परिषद् के समक्ष धर्मदेशना दी। धर्मदेशना सुनकर उसे हृदयगम करके वह प्रसन्न हुई। फिर भूता दारिका ने प्रभु को वदन–नमस्कार करके इस प्रकार अपने मनोभाव प्रकट किये–"भगवन् ! मै आप द्वारा प्ररूपित निर्ग्रन्थ–प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ। मै निर्ग्रन्थ–प्रवचन को ग्रहण करने के लिए तत्पर हूँ। यह निर्ग्रन्थ–प्रवचन वैसा ही है, जैसा आपने विवेचन किया है, (अर्थात् परम सत्य और यथार्थ है) किन्तु भते ! पहले मै अपने माता–पिता से आज्ञा प्राप्त कर लूँ, तदनन्तर प्रव्रज्या अगीकार करना चाहती हूँ।"

अर्हत् पार्श्व प्रभु ने कहा–"देवानुप्रिये ! तुम्हे जैसा सुख हो वैसा करो।"

BHOOTA GOES TO PAY HOMAGE

6. During that period of time nine cubits tall Purushadaniya Arhat Parshva arrived (in the city). People came out to pay homage to him.

Getting this news Bhoota Darika (Miss Bhoota) was pleased and delighted She went to her parents and sought permission—"O mother and father ! During his wanderings Purushadaniya Arhat Parshva arrived here He now stays here with his family of disciples O parents ! After

getting your permission I want to go to worship Purushadaniya Arhat Parshva's feet."

The parents said—"Beloved of gods! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

After getting permission from her parents Bhoota Darika took her bath, dressed and adorned herself with ornaments. She came out of her house with many friends and maids, came to the outer hall and boarded her chariot assigned for religious activities.

Accompanied by her friends and relatives, Bhoota Darika passed through Champa city and arrived near Gunasheelak Chaitya. She alighted from the chariot when she saw the divine canopy and other divine signs of a *Tirthankar*. Surrounded by her maids, she approached the spot where Purushadaniya Arhat Parshva was seated. She went around *Bhagavan* three times, paid homage and obeisance and commenced worship with reverence.

Purushadaniya Arhat Parshva gave his discourse to the large gathering including Bhoota Darika. On listening to and understanding the sermon she was pleased. Later Bhoota Darika paid homage and obeisance to *Bhagavan* and conveyed her feelings—"*Bhagavan*! I have faith in the *Nirgranth*-sermon propagated by you. I am prepared to accept this sermon. It is exactly as you have stated (it is the ultimate truth and reality). *Bhante*! I would like to get initiated, but first let me seek permission from my parents."

Arhat Parshva said—"Beloved of gods! Do as you please and avoid languor when doing a good deed."

भूता का प्रव्रज्या-ग्रहण

७. तए णं भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवर (जाव) दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागया। रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागया। रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागया। करयल., जहा जमाली, आपुच्छइ।

'अहासुहं देवाणुप्पिए!'

तए णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्तनाइ. आमंतेइ आमंतित्ता जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खमणमाणेत्ता कोडुम्बि पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता जाव पच्चप्पिणह।'

तए णं ते (जाव) पच्चप्पिणंति।

तए णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तनाइ. (जाव) रवेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं, जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव उवागए, छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठावेइ, ठवित्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चारुहेइ।

तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए, तेणेव उवागए तिक्खुत्तो वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! भूया दारिया अम्हं एगा धूया, इट्ठा। एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा भीया (जाव) देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा (जाव) पव्वयइ। तं एयं णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं।"

"अहासुहं, देवाणुप्पिया !"

तए णं सा भूया दारिया पासेणं अरहया एवं वुत्ता समाणी हट्ठा, उत्तरपुरत्थिमं, सयमेय आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ, जहा देवाणंदा, पुप्फचूलाणं अंतिए (जाव) गुत्तबम्भयारिणी।

७. (भगवान को वन्दना करके) वह भूता कन्या उसी धार्मिक यान पर आरूढ होकर राजगृह नगर के मध्य भाग मे होती हुई जहाँ अपना आवास था, वहाँ आई। रथ से नीचे उतरकर माता-पिता के समीप आई। आकर दोनो हाथ जोडकर अजलिबद्ध होकर जमालि की तरह (भगवतीसूत्र, श ९, उ ३३) माता-पिता से दीक्षा की आज्ञा माँगी। माता-पिता ने अनुमति देते हुए कहा-"देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो, तदनुसार करो।"

इसके पश्चात् सुदर्शन गाथापति विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम पदार्थ बनवाकर मित्रो, ज्ञातिजनो आदि को आमन्त्रित करता है। उन्हे भोजन कराने के पश्चात् शुद्ध-स्वच्छ होकर भूता का अभिनिष्क्रमण (दीक्षा महोत्सव) कराने के लिए कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया और उन्हे आज्ञा दी-"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही दीक्षार्थिनी भूता कन्या के लिए सहस्र पुरुषो द्वारा वहन की जाने वाली शिविका (विशाल पालकी) लाओ, कार्य होने पर मुझे पुन सूचित करो।"

कौटुम्बिक पुरुष आदेशानुसार कार्य करके सूचित करते है।

तत्पश्चात् सुदर्शन गाथापति ने स्नान कर अनेक आभूषणो से विभूषित हुई भूता दारिका को पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका पर बिठलाया और अनेक मित्रो, जाति-बाधवो आदि के साथ वाद्य ध्वनियो से वायुमण्डल को गुँजाते हुए राजगृह नगर के मध्य भाग मे से होकर जहाँ गुणशिलक चैत्य था, वहाँ आया और तीर्थंकरो के छत्रादि अतिशयों को देखा। देखकर पालकी रोकी और उससे भूता दारिका को नीचे उतारा।

इसके पश्चात् माता-पिता उस भूता दारिका को आगे करके पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व प्रभु के समक्ष आये। तीन बार प्रदक्षिणापूर्वक वन्दन-नमस्कार किया तथा निवेदन किया-"देवानुप्रिय ! यह भूता दारिका हमारी एकलौती पुत्री है। यह हमे बहुत प्रिय है। देवानुप्रिय ! यह ससार के भय से उद्विग्न तथा भयभीत होकर आप देवानुप्रिय के समीप गृह त्यागकर प्रव्रजित होना चाहती है। शिष्या-भिक्षा के रूप मे देवानुप्रिय ! हम आपको समर्पित करते है। आप इस शिष्या-भिक्षा को स्वीकार कीजिए।

अर्हत् पार्श्व प्रभु ने कहा-"देवानुप्रिय ! जैसे तुम्हारी आत्मा को सुख उपजे वैसा करो।"

तब भूता दारिका पार्श्व अर्हत् की स्वीकृति सुनकर हर्षित हुई। फिर ईशानकोण मे जाकर स्वय अपने आभरण-अलकार उतारे। यह समग्र वृत्तान्त देवानन्दा (भगवतीसूत्र ९/३३) के अनुसार यहाँ समझ लेना चाहिए। अर्हत् प्रभु पार्श्व ने प्रव्रजित करके पुष्पचूलिका आर्या को शिष्या रूप मे सौप दिया। उसने पुष्पचूलिका आर्या से शिक्षा प्राप्त की यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी हो गई।

INITIATION OF BHOOTA

7. (After paying homage to *Bhagavan*) Bhoota Darika rode the same religious-chariot and passing through Rajagriha city returned home She got down from the chariot and went to her parents Like Jamali (*Bhagavati Sutra* 9/33), she joined her palms and sought permission for initiation from her parents Giving permission her parents said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed "

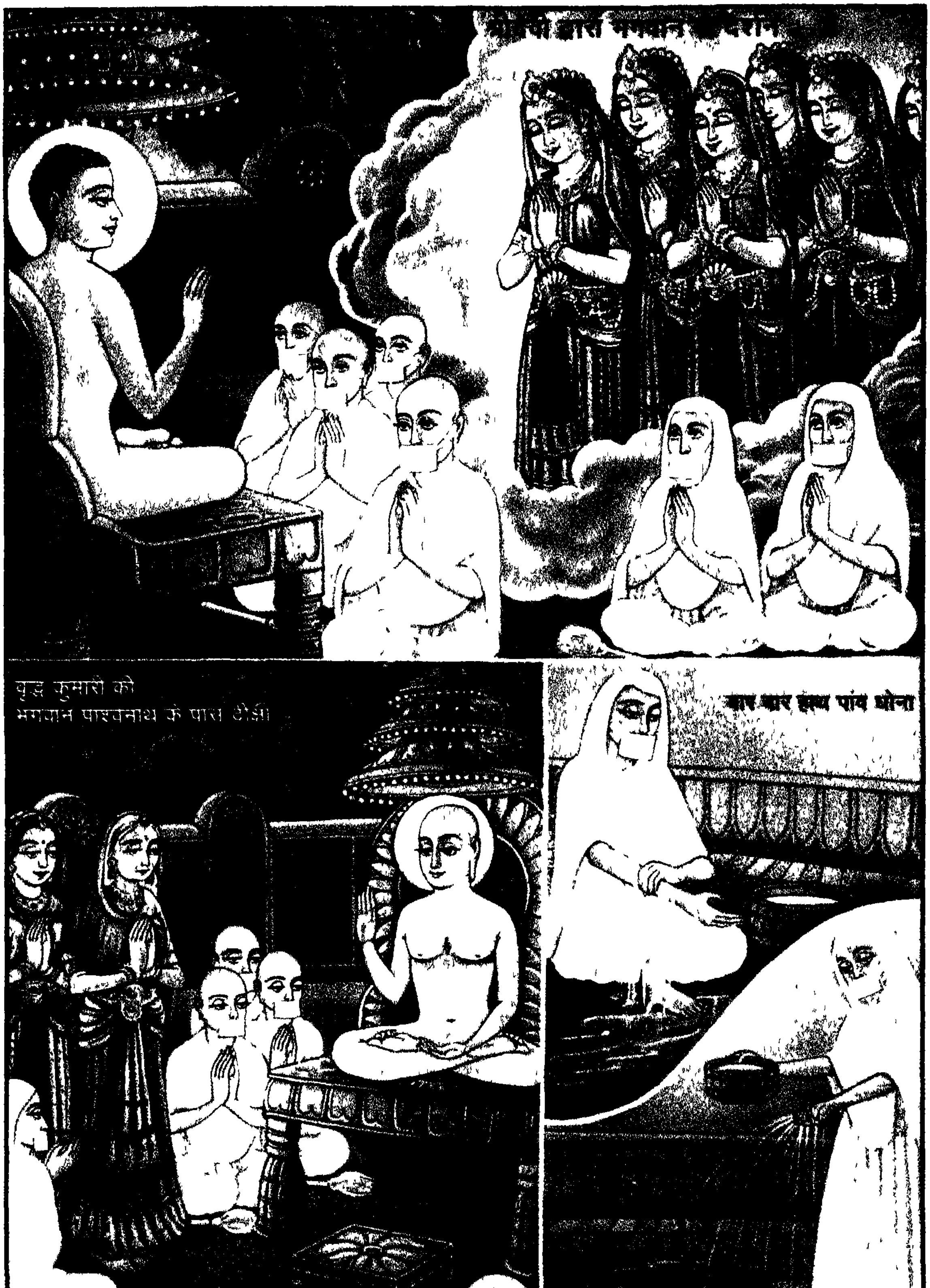
After that Sudarshan Gathapati arranged for (by instructing his servants) large quantities of staple food, liquids, general food, and savoury food and invited all his friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances. After feeding them he greeted and honoured them After Bhoota performed her ritual cleansing, Sudarshan called his servants for the renunciation ceremony and instructed—"Beloved of gods ! Bring at once a large palanquin carried by one thousand men and inform me as soon as you do that "

The servants did as asked and informed

Sudarshan Gathapati then let Bhoota Darika, who had already taken her bath and adorned herself with ornaments, ride the palanquin carried by one thousand persons Amidst the sound of musical instruments like trumpet and surrounded by friends, kin-folk, family members, relatives and acquaintances he arrived, passing through Rajagriha city, at Gunasheelak Chaitya When he saw the divine canopy and other divine signs of a *Tirthankar*, he stopped the palanquin and let Bhoota alight from it

Then the parents escorted Bhoota Darika to the place where Purushadaniya Arhat Parshva was seated. After going around *Bhagavan* three times and paying homage and obeisance they submitted—"Beloved of gods ! This is our only daughter Bhoota and we love her very much But, O Beloved of gods ! Disturbed by the fears of worldly existence, she now wants to renounce the world and get initiated by you Therefore, O Beloved of gods ! we offer her to you as a disciple-donation Kindly accept this disciple-donation

Purushadaniya Arhat Parshva said—"Beloved of gods ! Do as you please."


वृद्ध कुमारी को
भगवान पार्श्वनाथ के पास दीक्षा
बार बार हाथ पांव धोना

चित्र परिचय-११

Illustration No. 11

श्रीदेवी द्वारा भगवान के दर्शन

दृश्य–१

भगवान महावीर राजगृह के गुणशीलक उद्यान मे विराजमान है। उस समय श्रीदेवी नामक ऋद्धिशाली देवी अपने देवी परिवार के साथ भगवान महावीर के दर्शन करने आती है। भक्ति वश वहाँ नृत्य विधि द्वारा अपनी ऋद्धि का प्रदर्शन करती है। तथा देशना श्रवण कर स्वर्ग को लौट जाती है।

दृश्य–२

गौतम गणधर भगवान से श्रीदेवी के पूर्वभव सम्बन्धी जिज्ञासा करते है। प्रभु फरमाते है–प्राचीन काल म एक समय इसी राजगृह मे पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ पधारे। तब भूता नामक एक वृद्ध कन्या जो अविवाहित ही वृद्ध जराग्रस्त हो गयी थी। वह प्रभु पार्श्व के पास दीक्षा लेती है।

दृश्य–३

भूता साध्वी कुछ समय पश्चात शरीरबकुशिका अर्थात् शरीर की शोभा विभूषा करने वाली हो गई। वह बार बार हाथ पैर धोती, जहाँ पर भी बैठती, स्वाध्याय करती वहां पहले पानी छिड़कती स्वच्छ करके बैठती। गुरुणी द्वारा समझाने पर भी भूता न शोभा विभूषा नही छोडी। अन्तिम आलोचना प्रतिक्रमण किये बिना आयुष्य पूर्ण कर यह सौधर्म देव लोक म देवी बनी है। *वर्ग ४ अ ६ सूत्र २*

SHRIDEVI BEHOLDS BHAGAVAN

SCENE-1

Bhagavan Mahavir is seated in the Gunasheelak garden in Rajagriha Shridevi an opulent goddess, comes to pay homage to *Bhagavan* with her family Out of devotion she displays her divine opulence through dance performance She listens to the sermon and returns

SCENE-2

Ganadhar Gautam asks *Bhagavan* about Shridevi's past birth *Bhagavan* says--In ancient times once Purushadaniya Bhagavan Parshva Nath came to Rajagriha During that time Bhoota, a spinster had grown old without marriage She gets initiated in presence of Bhagavan Parshva Nath

SCENE-3

After some time Bhoota Aryika became *sharir-bakushika* She would wash her limbs many times Before sitting or studying any where she would sprinkle water over the ground She did not abandon this unascetic way even after her teacher's advise She died without doing the last critical review (*pratikraman*) and has reincarnated as a goddess in Saudharma Devlok

– Sec IV Ch 6, Sutra 2

Bhoota Darika was pleased and contented to hear these words from Purushadaniya Arhat Parshva. She went in the north-eastern direction (*Ishan Kone*) and discarded her householder's dress and ornaments. All this description should be taken exactly as mentioned about Devananda (*Bhagavati Sutra* 9/33). After initiating her, Purushadaniya Arhat Parshva handed her over to Aryaa Pushpachulika as her disciple. She studied under Aryaa Pushpachulika and became a completely celibate *aryaa* (female ascetic).

शरीर–बकुशिका

८. तए णं सा भूया अज्जा अन्नया कयाइ सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था। अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवइ, पाए धोवइ, एवं सीसं धोवइ, मुहं धोवइ थणगंतराइं धोवइ, कक्खंतराइं धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेइ, तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइए।

तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ भूयं अज्जं एवं वयासी–'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ (जाव) गुत्तबम्भचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाओसियाणं होत्तए। तुमं च णं, देवाणुप्पिए, सरीरबाओसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवसि (जाव) निसीहियं चेएसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' त्ति। सेसं जहा सुभद्दाए, जाव पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

तए णं सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवइ जाव चेइए।

८. दीक्षित होने के कुछ काल पश्चात् वह भूता आर्यिका शरीर–बकुशिका (शारीरिक शोभा–विभूषा की प्रवृत्ति से सयम को दूषित करने वाली) हो गई। वह बार–बार हाथ धोती, पैर धोती, सिर धोती, मुख धोती, स्तनो के मध्य भाग को धोती, काँख धोती, गुप्तागो को धोती और जहाँ कही भी खडी होती, सोती, बैठती अथवा स्वाध्याय करती उस–उस स्थान पर पहले पानी छिडकती और उसके बाद खडी होती, सोती, बैठती या स्वाध्याय करती।

तब पुष्पचूलिका आर्या ने भूता आर्या का यह आचरण देखकर इस प्रकार समझाया–''देवानुप्रिये ! हम ईर्यासमिति आदि पाँच समितियो से आन्तरिक विकारो का शोधन कर ब्रह्मचर्य व्रतधारिणी निर्ग्रन्थ श्रमणी है। इसलिए हमें शरीर–बकुशिका होना नही कल्पता है, किन्तु देवानुप्रिये ! तुम शरीर–बकुशिका बनकर हाथ, पैर, सिर धोती रहती हो यावत् पानी छिडककर बैठती, शयन करती, स्वाध्याय आदि करती हो। देवानुप्रिये ! तुम इस स्थान (नियम विरुद्ध प्रवृत्ति) की आलोचना करो। इत्यादि शेष वर्णन सुभद्रा आर्या के समान जानना चाहिए. किन्तु वह (आर्या पुष्पचूलिका के समझाने पर भी वह नहीं समझी) और एक दिन उपाश्रय से निकलकर स्वतत्र रूप में अकेली पृथक् उपाश्रय मे जाकर निवास करने लगी।

इस प्रकार वह भूता आर्या अपनी बात का हठ रखती हुई निरकुश, बिना रोक–टोक के स्वच्छन्द–मति होकर साधु आचार के विपरीत बार–बार हाथ–पैर धोती हुई शारीरिक विभूषा मे लगी रहती।

SHARIR-BAKUSHIKA

8. Some time after her initiation, that Bhoota Aryika became *sharir-bakushika* (a woman having an attitude that spoils ascetic-discipline as a consequence of over indulgence in beautification of the body) She would wash her limbs, head, face, cleavage, armpits and genitals many times Before standing, sleeping, meditating or studying anywhere she would sprinkle water over the ground she used for these activities

When Aryaa Pushpachulika saw all this she warned Bhoota Aryika—"Beloved of gods ! we are *Nirgranth Shramanis* (Jain female ascetics) cleansing our inner perversions with five *samitis* (regulations) including the *Irya samiti* (regulation of movement) and are strictly celibate As such, we are not allowed to be *sharir-bakushika* (over indulgent in beautification of the body) But as you have become *sharir-bakushika* and are washing your limbs, head, and so on up to sprinkle water over the ground you use for sitting, standing, sleeping and studies you should do critical review and the prescribed atonement for this action " Further details should be taken as those mentioned about Subhadra Aryaa But Bhoota Aryika (neither believed nor accepted these instructions and directions of Aryaa Pushpachulika) left the *upashraya* (place of stay for ascetics) and shifted to another suitable abode

This way that Bhoota Aryika washed her limbs and took extra care of her body without any qualms and restrictions She became antinomian and adamantly pursued her anti-ascetic way of life

भूता का अवसान और सिद्धि-गमन

९. तए णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थछट्ठ. बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववाय-सभाए देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववन्ना, पचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जीत्तीए पज्जत्ता।

'एवं खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता। एगं पलिओवमं ठिई।'

'सिरी णं भंते, देवी जाव कहिं गच्छिहिइ ?'

'महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।'

९. इस प्रकार वह भूता आर्या अनेक प्रकार की चतुर्थ भक्त, षष्ठ भक्त आदि तपश्चर्या करती हुई बहुत वर्षों तक श्रमणी-पर्याय का पालन करती हुई अपनी अनुचित अयोग्य कार्य-प्रवृत्ति की आलोचना एव प्रतिक्रमण किए बिना ही मृत्यु प्राप्त करके सौधर्मकल्प के श्री अवतसक विमान की उपपात सभा मे

देव-शय्या पर यथोचित शारीरिक अवगाहना से श्रीदेवी के रूप मे उत्पन्न हुई। तदनन्तर आहारपर्याप्ति यावत् भाषा-मन पर्याप्ति, इन पाँच पर्याप्तियो से पर्याप्त हुई।

इस प्रकार "गौतम ! श्रीदेवी ने यही दिव्य देव-ऋद्धि प्राप्त की है। वहाँ उसकी एक पल्योपम की आयु-स्थिति है।"

गौतम स्वामी-"भते ! यह श्रीदेवी देवभव का आयुष्य पूर्ण करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?"

भगवान-"वह महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होगी और (सयम की शुद्ध आराधना करके) सिद्धगति प्राप्त करेगी।"

DEATH AND LIBERATION OF BHOOTA

9. This way observing two-day fasts, three day fasts and other austerities, that Bhoota Aryika lived for a long time as an ascetic. In the end she died without reviewing and atoning for her misconduct She reincarnated instantaneously (*upapat*) as Shri Devi, a goddess with suitable body size, in the divine bed covered with divine cloth in the *Upapat*-hall of *Shri Avatansak Viman* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp Devlok* (divine dimension) There she attained the state of full development (*paryapti*) through *bhasha-man* (speech and mind) *paryapti*

Thus, Gautam ! Shri Devi acquired that divine opulence Her life-span there is one *Palyopam*

Gautam—"*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods where will that Shri Devi go ? (Where will she be born ?)"

Bhagavan said, "Gautam ! She will be born as a human being in the Mahavideh area and (after observing strict ascetic-discipline) shall finally become a *Siddha* (liberated soul) "

१०. निक्खेवओ-तं एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं पुप्फचूलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

१०. उपसहार करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा-"आयुष्मन् जबू ! श्रमण भगवान महावीर ने पुष्पचूलिका के प्रथम अध्ययन का यह भाव कहा है। ऐसा मै कहता हूँ।"

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

10. In conclusion Sudharma Swami said—"Thus, long lived Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has narrated this text and meaning of the first chapter of *Pushpachulika* So I state "

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

अध्ययन दो से दस
SECOND TO TENTH CHAPTERS

११. एवं सेसाण वि नवण्हं भाणियव्वं। सरिसनामा विमाणा। सोहम्मे कप्पे पुव्वभवो। नयर–चेइय–पियमाईणं अप्पणो य नामादि जहा संगहणीए। सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता। ताओ पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयाओ, सरीरबाओसियाओ, सव्वाओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति।

॥ पुप्फचूलाओ समत्ताओ ॥

११. आर्य सुधर्मा स्वामी ने कहा–"इसी प्रकार शेष नौ अध्ययनो का भी वर्णन कहना चाहिए। वे सभी संयम ग्रहण कर मरण के पश्चात् अपने–अपने नाम के अनुरूप नाम वाले विमानो में उत्पन्न होती हैं। जैसे–ह्रीदेवी सौधर्मकल्प के ह्रीविमान मे, धृतिदेवी धृतिविमान मे, कीर्तिदेवी कीर्तिविमान मे, बुद्धिदेवी बुद्धिविमान मे आदि। उनका पूर्वभव भूता के समान है। नगर, चैत्य, माता–पिता और अपने नाम आदि सग्रहणी गाथा के अनुसार जानना चाहिए। (किन्तु सग्रहणी गाथा उपलब्ध नही है।) सभी पार्श्व अर्हत् के समीप प्रव्रजति हुईं और वे सभी पुष्पचूला आर्या की शिष्याएँ बनी। सभी शरीर–बकुशिका होकर, आलोयणा बिना किये मृत्यु प्राप्त कर देवलोक मे उत्पन्न हुईं। देवलोक के भव के पश्चात् च्यवन करके महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध–बुद्ध होगी।"

॥ द्वितीय से दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ चतुर्थ पुष्पचूलिका उपांग समाप्त ॥

11. Arya Sudharma Swami said—"The remaining nine chapters should also be narrated in the same way. They all got initiated and after death reincarnated in celestial vehicles bearing each one's name For example—Hridevi in *Hri Viman* in *Saudharma Kalp*, Dhritidevi in *Dhriti Viman*, Kirtidevi in *Kirti Viman*, Buddhidevi in *Buddhi Viman* and so on Their past births are also same as that of Bhoota The names of the city, *chaitya* (temple complex), parents, and their own names should be taken as mentioned in the *Sangrahini Gatha* (collective verse) However, this collective verse is not available in any text They all got initiated by Arhat Parshva and became disciples of Pushpachula Aryaa They all became *sharir-bakushikas* (over indulgent in beautification of the body), died without critical review and atonement, and reincarnated in divine dimension Descending from the divine dimension they all will be born in the Mahavideh area and finally attain enlightenment and liberation (*Siddha-buddha*)."

• END OF THE SECOND TO TENTH CHAPTERS •

• END OF THE FOURTH SECTION TITLED PUSHPACHULIA •

पंचम वर्ग : वह्निदशा

उपोद्घात

प्रस्तुत उपाग के पचम वर्ग का नाम वण्हिदसा (वृष्णिदशा) है। नन्दीसूत्र की चूर्णि मे इसे अंधक वृष्णिदशा कहा गया है। इसमे वृष्णि वंशीय बारह राजकुमारो का वर्णन है, प्रथम एवं द्वितीय वर्ग मे भगवान महावीर के शासन मे उत्पन्न राजकुमारो के चरित्र का कथन है। तीसरे व चौथे वर्ग मे पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ के युग के साधको का चरित्र है तथा इस पाँचवे वर्ग मे अर्हत् अरिष्टनेमि के युग के बारह साधको का वर्णन है।

पाँचो वर्गों के चरित्रों मे एक क्रमिक उत्थानिका जैसी प्रतीत हो रही है। प्रथम वर्ग निरयावलिया मे दस नरकगामी आत्माओ के चरित्र का कथन है। इसके पश्चात् कल्पावतसिका, पुष्पिका तथा पुष्पचूलिका मे सौधर्मकल्प व ज्योतिष्क विमानो आदि विमानो मे उत्पन्न होने वाली आत्माओ का चरित्र वर्णन है। पाँचवे वृष्णिदशा मे अनुत्तर विमान के सर्वार्थसिद्ध विमान मे उत्पन्न होने वाली आत्माओ का चरित्र वर्णित है। इस प्रकार उत्तरोत्तर उत्थान व विकास की ओर बढते हुए चरित्रो का वर्णन आत्मा को उत्तरोत्तर शुद्ध व उन्नत बनाने की प्रेरणा देता है।

FIFTH SECTION : VRISHNIDASHA

INTRODUCTION

The name of the fifth section of this *Upanga* is *Vahnidasa* or *Vrishnidasha* In the commentary (*Churni*) of *Nandi Sutra* it is mentioned as *Andhak Vrishnidasha* It contains stories of twelve princes of the Vrishni clan The first and second sections of this *Upanga* contain stories of princes born during the period of Bhagavan Mahavir The third and fourth sections contain stories of princes born during the period of Purushadaniya Arhat Parshvanaath And this fifth section contains the stories of the aspirants of the period of Arhat Arishtanemi

In the stories of all the five sections there is an evidence of a progressive ascent In *Niryavaliya*, the first section, there are stories of ten souls reincarnating in the infernal world This is followed by stories of souls reincarnating in the *Saudharm Kalp* and *Jyotishk Vimans* in *Kalpavatansika*, *Pushpika* and *Pushpachulika* sections In the fifth section titled *Vrishnidasha* are the stories of souls reincarnating in the *Sarvarth Siddha Viman* of *Anuttar* dimension Thus the stories of progressive development and ascent provide inspiration to pursue the path of progressive purity and ascent of soul

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

१. उक्खेवओ–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स णं पुप्फचूलियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं वण्हिदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

१. (श्री जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा)–"भगवन् ! यदि मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने चतुर्थ उपांग पुष्पचूलिका का यह (पूर्वोक्त) भाव कहा है तो भंते ! भगवान महावीर ने पाँचवे वण्हिदशा नामक उपांग वर्ग का क्या भाव प्रतिपादित किया है ?"

उत्तर मे सुधर्मा स्वामी ने कहा–

1. (Jambu Swami asked Sudharma Swami—) "*Bhante* ! When aforesaid is the text and meaning of the fourth section of the *Upanga* named *Pushpachulika* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, what is the text and meaning of the fifth section of the *Upanga* named *Vrishnidasha* ?"

In reply, Sudharma Swami told—

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंचमस्स णं वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

निसढे–माअणि–वह–वहे पगया जुत्ती दसरहे दढरहे य।
महाधणू सत्तधणू दसधणू नामे सयधणू य॥

२. आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को सप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पाँचवे वण्हिदशा उपांग के बारह अध्ययन कहे है। उनके नाम इस प्रकार है–

(१) निषध, (२) मातलि, (३) वह, (४) वहे, (५) पगता, (६) ज्योति, (७) दशरथ, (८) दृढरथ, (९) महाधन्वा, (१०) सप्तधन्वा, (११) दशधन्वा, और (१२) शतधन्वा।

2. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has preached twelve chapters of *Vrishnidasha*, the fifth *Upanga* They are—

(1) Nishadh, (2) Maatali, (3) Vaha, (4) Vahe, (5) Pagata, (6) Jyoti, (7) Dasharath, (8) Dridharath, (9) Mahadhanva, (10) Saptadhanva, (11) Dashadhanva, and (12) Shatadhanva

३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पंचमस्स वग्गस्स वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'

३. "भते ! यदि मोक्ष का संप्राप्त श्रमण भगवान ने पाँचवे उपाग वर्ग के बारह अध्ययन कहे है तो उनमे से प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है?"

3. Jambu—"*Bhante* ! If there are twelve chapters ın *Vrıshnıdasha*, the fifth *Upanga* (sectıon), as gıven by Shraman Bhagavan Mahavır, what ıs the text and meaning of ıts first chapter ?"

४. तए णं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं वयासी—

४. तब आर्य सुधर्मा ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा—

4. Sudharma Swamı replıed to Jambu Anagar as follows

द्वारिका नगरी

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था, दुवालस जोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

५. "हे जम्बू ! उस काल उस समय मे (जब भगवान अरिष्टनेमि विद्यमान थे) द्वारवती-(द्वारिका) नाम की नगरी थी। वह पूर्व-पश्चिम मे बारह योजन लम्बी (और उत्तर-दक्षिण मे नौ योजन चौडी) थी, अर्थात् उसकी चौडाई नौ योजन और लम्बाई बारह योजन की थी। उसके निवासीजन धन-धान्य से सम्पन्न प्रमोदयुक्त रहते थे। वह साक्षात् देवलोक के समान मन को प्रसन्न करने वाली, देखने मे सुन्दर, शिल्पकला मे अद्वितीय शोभा वाली थी।

KKKK

5. Jambu ! Durıng that perıod of tıme (when Bhagavan Arıshtanemı lıved) there was a cıty called Dvaravatı (Dvarıka) It was spread ın an area measuring twelve *Yojan* (an ancıent measure of dıstance) east-west and nıne *Yojan* north-south In other words ıt was nıne *Yojan* wıde and twelve *Yojan* long Its ınhabıtants were rıch and charmıng Lıke a dıvıne cıty ıt was delıghtful, beautıful and unıque ın archıtecture and sculpture.

रैवतक पर्वत

६. तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था—तुंगे गगणतलमणुलिहन्तसिहरे नाणविहरुक्ख—गुच्छ—गुम्म—लया—वल्लीपरिगयाभिरामे हंस—मिय—मयूर—कोंच—सारस—चक्कवाग—मयणसाल—कोलि—कुलोववेए अणेग—तड—कडगवियर—उज्झरपवाय—पब्भारसिहरपउरे अच्छरगण—देवसंघ—विज्जाहर—मिहुण—संनिचिण्णे निच्चच्छणए दसारवरवीर—पुरिसतेल्लोक्कबलयगाणं सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए (जाव) पडिरूवे।

६. द्वारिका नगरी के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा के ईशानकोण मे रैवतक नामक एक बहुत ऊँचा पर्वत था उसके शिखर गगनतल को स्पर्श करते थे। वह विविध प्रकार के वृक्षो, गुच्छो, गुल्मो (वृक्ष समूह), लताओं और वल्लियो (बेलो) से हरा-भरा सुन्दर दीखता था। वह हस, मृग, मयूर, क्रौच (कुटर), सारस, चक्रवाक, मदनसारिका (मैना) और कोयल आदि पक्षियो के कलरव से गूँजता रहता था। उस पर्वत पर नदी-नालो के अनेक तट थे, कहीं विशाल मैदान थे और कही अनेक गुफाएँ थी। कही झरने, जल प्रपात,

प्राग्भार (कुछ-कुछ नमे हुए गिरि प्रदेश) और ऊँचे शिखर थे। उस पर्वत पर अप्सराओ के समूह, देवो के समुदाय, विद्याधरों के युगल वहाँ आकर क्रीडा करते रहते थे। तीनो लोको मे बलशाली माने जाने वाले दसारवशीय दशार्ह वीर समुद्रविजय आदि दस श्रेष्ठ वीर पुरुषो द्वारा वहाँ नित नये-नये उत्सव-महोत्सव मनाये जाते थे। उस पर्वत का स्थान बहुत सौम्य, सुभग, देखने में प्रिय, सुरूप, मन को प्रसन्नता देने वाला, आँखो को प्रियकारी, मन को आकर्षक लगने वाला और अतीव मनोरम था।

RAIVATAK MOUNTAIN

6. There was a lofty mountain range with sky-high peaks outside Dvaravati city in the north-east direction Its enchanting lush greenery included a variety of trees, shrubs, bushes, vines, creepers, etc The mountain resonated with the sounds of a variety of animals and birds including swans, deer, peacocks, *Kraunch* (the Demoiselle crane), Sarus (crane), *Chakravaks* (Brahminy duck, Anas casarca), mynas (a type of Asian starling), cuckoos, etc. There were numerous banks of rivers and streams At some places there were large plateaus and at others there were caves Water-falls, lofty peaks and projections too added to its beauty A variety of divine couples lead by *Apsaras, Charans,* and *Vidyadhars* always indulged in group festivities there. Ten great warriors from the *Dashar* clan including Samudravijaya frequently organized a variety of celebrations and festivities there That mountain range was tranquil, serene, beautiful, enchanting, delightful and attractive

नन्दनवन उद्यान, सुरप्रिय यक्षायतन

७. तत्थ णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था-सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासादीए जाव दरिसणिज्जे।

तस्स णं नंदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था-चिराईए (जाव) बहुजणो आगम्म अच्चेइ सुरप्पियं जक्खाययणं।

से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टए।

७. उस रैवतक पर्वत के समीप यथोचित स्थान पर नन्दनवन नाम का उद्यान था। जो सर्व ऋतु-सम्बन्धी पुष्पो और फलो से समृद्ध, अतीव रमणीय, आनन्ददायी तथा दर्शनीय, मन को आकर्षित करने वाला था।

उस नन्दनवन उद्यान के ठीक मध्य भाग मे एक बहुत प्राचीन सुरप्रिय नामक यक्षायतन (मन्दिर) था। वहाँ बहुत से लोग आ-आकर सुरप्रिय यक्ष की पूजा अर्चना करते रहते थे।

यह सुरप्रिय यक्षायतन पूर्णभद्र चैत्य के समान चारो ओर से एक विशाल वनखण्ड द्वारा घिरा हुआ था, उस वनखण्ड में एक पृथ्वीशिलापट्ट था। (इनका वर्णन औपपातिकसूत्र के अनुसार जानना चाहिए।)

NANDANAVAN GARDEN AND SURAPRIYA TEMPLE

7. Neither very far nor very near that Raivatak mountain was a garden named Nandanvan It was filled with all season flowering trees and was as beautiful as Nandan Kanan (the divine garden)

At the center of this garden was an ancient temple of Surapriya Yaksh Many of people visited this temple for the worship of Surapriya Yaksh

Like Purnabhadra Chaitya this Surapriya Yaksh temple was also surrounded by a garden at the center of which was a large flat rock (the description is same as mentioned in *Aupapatik Sutra*)

द्वारिका नगरी मे कृष्ण वासुदेव, बलदेव आदि

८. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ। से णं तत्थ समुद्दविजय-पामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पञ्चण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं, पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्चं जाव विहरइ।

तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नाम राया होत्था, महया जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ।

तस्स णं बलदेवस्स रन्नो रेवई नामं देवी होत्था सोमाला जाव विहरइ।

तए णं सा रेवई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ताणं...., एवं सुमिणदंसणपरिकहणं, कलाओ जहा महाबलस्स, पन्नासओ दाओ, पन्नासराय-कन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिग्गहणं...... नवरं निसढे नामं, जाव उप्पिं पासायं विहरइ।

८. उस द्वारका नगरी मे कृष्ण वासुदेव राजा निवास करते थे। वासुदेव श्रीकृष्ण के नेतृत्व मे समुद्रविजय (पूज्य जन) आदि दस दसार्ह, बलदेव आदि पाँच महावीर, उग्रसेन आदि सोलह हजार राजा, प्रद्युम्न आदि साढे तीन करोड कुमार, शाम्ब आदि साठ हजार दुर्दान्त योद्धा, वीरसेन आदि इक्कीस हजार वीर, रुक्मिणी आदि सोलह हजार रानियाँ, अनगसेना आदि अनेक सहस्र गणिकाएँ तथा इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से राजा, ईश्वर, यावत् तलवर, माडबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदि निवास करते थे। उत्तर दिशा मे वैताढ्य पर्वत तक तथा अन्य तीन दिशाओ मे लवणसमुद्र की सीमा तक विस्तृत दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र पर तथा द्वारिका नगरी पर वासुदेव श्रीकृष्ण का अधिपतित्व व स्वामित्व था। वासुदेव सबका पालन करते हुए, उन पर शासन करते हुए सुखपूर्वक रह रहे थे।

उसी द्वारिका नगरी मे श्रीकृष्ण वासुदेव के ज्येष्ठ भ्राता बलदेव नामक राजा थे। वे महान् प्रभावशाली थे यावत् राज्य का रक्षण कर रहे थे।

उन बलदेव राजा की पत्नी का नाम रेवतीदेवी था। वह रेवतीदेवी अत्यन्त सुकुमाल और सुन्दर थी।

किसी समय रेवतीदेवी ने राजाओ के योग्य अपने श्रेष्ठ शयनागार की शय्या पर सोये हुए सिह का स्वप्न देखा। स्वप्न देखकर वह जाग्रत हुई। स्वप्न देखकर पति के पास गई। पति बलदेव ने स्वप्न का फल बताया। प्रात काल स्वप्न-पाठको को आमन्त्रित किया गया। यथासमय बालक का जन्म हुआ। उसका 'निषध' नाम रखा गया। जब बालक आठ वर्ष का हो गया तो महाबल के समान उसने बहत्तर कलाओ का अध्ययन किया। विवाह के समय उसे पचास वस्तुएँ दहेज मे दी गई। एक ही दिन पचास उत्तम राजकन्याओ के साथ पाणिग्रहण हुआ इत्यादि वर्णन महाबल के समान जानना चाहिए। वह आमोद-प्रमोद के साथ ऊँचे प्रासाद मे रहकर आनन्दपूर्वक समय व्यतीत कर रहा था।

KRISHNA VASUDEV AND BALDEV

5. In the city of Dvaravati lived King Krishna Vasudev The details of the people under his reign are—the ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya, five great warriors lead by Baldev, sixteen thousand kings lead by Ugrasen, thirty five million princes lead by Pradyumna, sixty thousand fiery warriors lead by Shamb, twenty one thousand great soldiers lead by Virsen, thirty two thousand queens lead by Rukmini, thousands of courtesans lead by Anangasena and a multitude of regional kings, influential and rich persons, knights of honour, landlords, heads of large families, affluent people, established merchants, commanders, caravan chiefs, etc His empire extended from the Vaitadhya mountain in the north to the Lavana sea in the three remaining directions He ruled this large land mass known as Dakshinardha Bharat ably with all his power and grandeur

In the same Dvaravati city lived King Baladev, the elder brother of Shrikrishna Vasudev He was also very powerful and looked after the security of the state

The name of King Baldev's wife was Revati Devi who was very delicate and beautiful

Once Revati Devi saw a lion in her dream when she was sleeping in her bed in the royal bedroom She got up and went to her husband King Baldev interpreted the dream In the morning augurs were called. In due course a son was born He was named Nishadh When the boy was eight years old he studied seventy two arts (subjects) like Mahabal At the time of his marriage he was given fifty sets of gifts as dowry He was married to fifty princesses at the same time. All these details should be taken exactly as mentioned about Mahabal He lived happily enjoying worldly pleasures and comforts in his lofty mansion

अर्हत् अरिष्टनेमि का आगमन

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे दस धणूइं.... वण्णओ जाव समोसरिए। परिसा निग्गया।

तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि।"

तए णं से कोडुम्बियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाणियं भेरिं महया महया सद्देणं तालेइ।

९. उस समय मे अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु द्वारिका नगरी मे पधारे। वे धर्म की आदि करने वाले थे, अर्हत् अरिष्टनेमि के शरीर की ऊँचाई (अवगाहना) दश धनुष की थी। उनकी धर्मदेशना सुनने के लिए जनसमूह आया।

उस समय कृष्ण वासुदेव ने अर्हत् अरिष्टनेमि आगमन का सवाद सुना। सुनकर हर्षित एव सतुष्ट हुए। कौटुम्बिक पुरुषो (सेवकों) को बुलाकर आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही सुधर्मा सभा मे जाकर सामुदानिक (जिसके बजने पर जनसमूह एकत्रित हो जाये, ऐसी) भेरी को बजाओ।"

कौटुम्बिक पुरुष कृष्ण वासुदेव की आज्ञा स्वीकार करके सुधर्मा सभा मे उस सामुदानिक भेरी को जोर से बजाते है।

ARRIVAL OF ARHAT ARISHTANEMI

9. During that period of time Arhat Arishtanemi arrived in Dvaravati city. He was the propagator of religion He was ten *Dhanush* (an ancient linear measure) tall People came to attend his discourse

When Krishna Vasudev heard the news of Arhat Arishtanemi's arrival he was pleased and contented He called his attendants and said, "Beloved of gods ! Rush to the *Sudharma* assembly hall and blow the *Samudanik* trumpet (on hearing which people start gathering)

The attendants accepted Krishna Vasudev's order and blew the *Samudanik* trumpet loudly in the *Sudharma* assembly

कृष्ण वासुदेव का दर्शनार्थ गमन

१०. तए णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया महया सद्देण तालियाए समाणीए समुद्दविजय पामोक्खा दसारा, देवीओ भाणियव्वाओ, जाव अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढी सक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया गयगया पायचारविहारेणं वंदावंदएहिं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे, तेणेव उवागच्छित्ता करयल. कण्हं वासुदेवं जएण विजएणं वद्धावेंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं कप्पेह हयगयरहपवर." जाव पच्चप्पिणंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे, अट्ठट्ठ मंगलगा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्धव्वमाणेहिं उद्धव्वमाणेहिं समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं,....सेसं जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ।

१०. सामुदानिक भेरी जोर-जोर से बजने का घोष सुनकर समुद्रविजय आदि दसार्ह क्षत्रिय, रुक्मिणी आदि देवियाँ, अनगसेना आदि अनेक सहस्र गणिकाएँ तथा अन्य बहुत से राजा, ईश्वर यावत् सार्थवाह आदि स्नान कर यावत् प्रायश्चित्त-मगलविधान कर सभी प्रकार के अलकारों से विभूषित हो अपने-अपने वैभव ऋद्धि सत्कार एव अभ्युदय के अनुसार कोई घोडे पर आरूढ होकर, कोई हाथी पर आरूढ होकर और कोई पैदल ही जन-समुदाय को साथ लेकर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे, वहाँ आकर उपस्थित हुए। दोनों हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से कृष्ण वासुदेव का अभिनन्दन किया।

फिर वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषो को आज्ञा दी-"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही आभिषेक्य हस्तिरत्न को सजाकर तैयार करो और अश्व, गज, रथ एव पदातियो से युक्त चतुरगिणी सेना को सुसज्जित करो तथा मुझे वापस आकर सूचित करो।"

तत्पश्चात् कृष्ण वासुदेव ने स्नानगृह मे प्रवेश किया। स्नान करके, वस्त्रालंकार से सुसज्जित होकर हाथी पर आरूढ हुए। प्रस्थान करने पर आठ मागलिक द्रव्य उनके आगे-आगे चले और श्रेष्ठ चामरों से विंजाते हुए समुद्रविजय आदि दस दसार्ह यावत् सार्थवाह आदि के साथ समस्त राजसी ऋद्धि यावत् तुमुल वाद्यघोषो के साथ द्वारवती नगरी के मध्य मे होकर निकले। अर्हत् अरिष्टनेमि के समक्ष पहुँचे। उनकी पर्युपासना करने लगे। यहाँ तक का सभी वर्णन कूणिक राजा के समान औपपातिक की भाँति जानना चाहिए।

KRISHNA VASUDEV GOES TO PAY HOMAGE

10. Hearing the reverberating echo of the *Samudanik* trumpet the ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya, Rukmini and other queens, thousands of courtesans lead by Anangasena and a multitude of regional kings, influential and rich persons, and so on up to caravan chiefs (etc) took their bath, performed auspicious rituals, and got ready adorning themselves with a variety of ornaments They came to Krishna Vasudev riding elephant, horse, and other carriers according to each one's status Many of them arrived even walking They joined their palms and greeted Krishna Vasudev with hails of victory.

After this Krishna Vasudev called his servants and ordered—"Beloved of gods ! Get my best elephant duly decorated and ready Order the four pronged armed forces comprising of horse riders, elephant riders, charioteers and foot soldiers to be ready to march and report back "

Krishna Vasudev entered his bathroom, took his bath, dressed and embellished himself with ornaments Once ready, he rode the elephant and left. Lead by eight auspicious things and accompanied by ten *Dashar* kings lead by Samudravijaya,. . and so on up to... caravan chiefs (etc.) and with all his glory and grandeur... and so on up to... amidst the loud sound of musical instruments he came to Arhat Arishtanemi passing through Dvaravati city. After performing due obeisance he worshipped the

Tirthankar All this description follows the same pattern as that mentioned in *Aupapatik Sutra* in context of King Kunik.

निषधकुमार का दर्शनार्थ गमन

११. तए णं तस्स निसहस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं च.... जहा जमाली, जाव धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–"सद्दहामि णं भंते, निग्गथं पावयणं, जहा चित्तो, जाव सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए।"

११. उस समय निषधकुमार अपने ऊँचे प्रासाद पर स्थित था। उसे जन–कोलाहल आदि सुनकर कौतूहल हुआ। वह भी जमालि के समान ऋद्धि वैभव के साथ प्रासाद से निकला। भगवान के समवसरण मे पहुँचकर भगवान् को वन्दन–नमस्कार करके धर्मश्रवण किया तथा उसे हृदयगम किया। पुन भगवान को वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार कहने लगा–"भते ! मै निर्ग्रन्थ–प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ।" चित्त सारथी के समान उसने श्रावकधर्म अगीकार किया, श्रावकधर्म अगीकार करके वापस लौट गया।

PRINCE NISHADH GOES TO PAY HOMAGE

11. At that time Prince Nishadh was in his lofty mansion When he saw the tumultuous crowd, he became curious Like Jamali, he also came out of his mansion with all his grandeur and opulence He came to *Bhagavan's Samavasaran*, paid homage and obeisance, listened to the discourse and understood it He once again paid homage to *Bhagavan* and said—"*Bhante* ! I have faith in the *Nirgranth-pravachan* (*Tirthankar's* sermon)" Like Chitta Sarathi, he accepted the *Shravak Dharma* (code for laity) and returned home

वरदत्त अनगार की जिज्ञासा

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले जाव विहरइ। तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी– "अहो णं, भंते, निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे, एवं पिए पियरूवे मणुन्नए, मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे। निसढेणं भंते। कुमारेण अयमेयारूवे माणुस्सइड्ढी किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता ?" पुच्छा जहा सूरियाभस्स।

एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्ध.....। मेहवण्णे उज्जाणे। माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे। तत्थ णं रोहीडए नयरे महब्बले नामं राया। पउमावई नामं देवी।

अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे...., एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महाबलस्स, नवरं वीरंगओ नामं, बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकन्नगाण पाणिं जाव ओगिज्जमाणे ओगिज्जमाणे पाउस–वरिसारत्त–सरय–हेमन्त–गिम्ह–वसन्ते छप्पि उऊ जहाविभवे समाणे इट्ठे सद्द–फरिस–रस–रूव–गंधे पंचविहे माणुस्सगे कामभोए भुंजमाणे विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेमेव रोहीडए नयरे, जेणेव मेहवण्णे उज्जाणे, जेणेव माणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे, तेणेव उवागए अहापडिरूवं जाव विहरइ। परिसा निग्गया।

१२. उस सयम वहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि के प्रधान शिष्य वरदत्त नामक अनगार थे। उन वरदत्त अनगार ने निषधकुमार को देखा तो मन मे जिज्ञासा उत्पन्न हुई यावत् अरिष्टनेमि भगवान की पर्युपासना करते हुए इस प्रकार निवेदन किया-"भगवन् ! यह निषधकुमार इष्ट (सभी को प्रियकारी है) इष्ट रूप वाला (मनचाहा प्रियकारी रूप प्राप्त हुआ है) सुन्दर है सुन्दर रूप से सम्पन्न एव प्रिय, प्रिय रूप वाला है। मनोज्ञ (मन को अच्छा लगने वाला) मनोज्ञ रूप वाला, मन को लुभाने वाला है, वैसा ही रूप सम्पन्न है, सौम्य, सौम्य रूप वाला है, प्रियदर्शन और सुरूप है ! भते ! इस निषधकुमार को इस प्रकार की यह मानवीय समृद्धि कैसे उपलब्ध हुई, कैसे प्राप्त हुई ? जिस प्रकार सूर्याभदेव के विषय मे गौतम स्वामी ने पूछा उसी प्रकार वरदत्त मुनि ने अर्हत् अरिष्टनेमि से प्रश्न किया।

अर्हत् अरिष्टनेमि ने समाधान करते हुए कहा-"आयुष्मन् वरदत्त ! उस काल उस समय मे इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे रोहीतक नाम का नगर था। वह धन-धान्य से समृद्ध था। वहाँ मेघवन नाम का उद्यान था, उसमे मणिदत्त यक्ष का यक्षायतन था। उस रोहीतक नगर के राजा का नाम महाबल था। उसकी रानी का नाम पद्मावती था।

किसी एक रात वह पद्मावती सुखपूर्वक शय्या पर सो रही थी, तब उसने सिह का स्वप्न देखा, इत्यादि महाबल के समान पुत्र-जन्म का सभी वर्णन जानना चाहिए। महाबल के पुत्र का नाम वीरागद रखा गया। योग्य होने पर बत्तीस राजकन्याओ के साथ पाणिग्रहण हुआ, उसे बत्तीस-बत्तीस वस्तुएँ दहेज मे दी गईं। वह अपने ऊँचे महलो मे वैभव के अनुरूप पावस, वर्षा, शरद्, हेमन्त, ग्रीष्म और वसन्त, इन छहो ऋतुओ के योग्य अनुकूल-मनोनुकूल शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध वाले पाँच प्रकार के मानवीय कामभोगो का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक समय बिता रहा था।

उस समय सिद्धार्थ नामक आचार्य केशीश्रमण जैसे प्रभावशाली किन्तु विशेष यह है कि ये चार ज्ञान के धारक नही, केवल बहुश्रुत थे। वे अपने विशाल शिष्य परिवार सहित रोहीतक नगर मे जहाँ मेघवन उद्यान, जहाँ मणिदत्त यक्ष का यक्षायतन था, वहाँ पधारे और साधुओ के योग्य स्थान आदि के लिए अवग्रह लेकर विराजे। आचार्य के दर्शनार्थ तथा धर्म सुनने जन-समूह आया।

CURIOSITY OF VARADATT ANAGAR

12. During that period of time *Anagar* (ascetic) Varadatt was the principal disciple of Arhat Arishtanemi When Varadatt Anagar saw Prince Nishadh he was curious While worshiping he asked Arhat Arishtanemi—"*Bhante* ! This Prince Nishadh is beloved (of all) having lovable appearance, attractive having attractive appearance, adorable having adorable appearance, enchanting having enchanting appearance, serene having serene appearance, good-looking, and pretty *Bhante* ! How this Prince Nishadh got and availed this human opulence ?" As Gautam Swami had

asked about Suryabh Dev, likewise Varadatt Anagar asked Arhat Arishtanemi (about Prince Nishadh)

Arhat Arishtanemi replied—"Long lived Varadatt ! During that period of time in Bharat area of this Jambudveep continent there was a city named Rohitak. It was very prosperous There was a garden named Meghavan in that city In the garden there was the temple of Manidatt Yaksh. The name of the ruler of Rohitak city was King Mahabal. The name of his consort was queen Padmavati

One night Padmavati was sleeping comfortably in her bed when she saw a lion in her dream. The description up to the birth of a son should be read as mentioned about Mahabal Mahabal's son was named Virangad When he matured he was married to thirty two princesses and was given sets of thirty two things in dowry He spent his life happily in lofty palaces enjoying mundane pleasures gratifying all the five sense organs of hearing, touch, taste, vision, and smell suitable for all the six seasons namely, *pavas*, *varsha* (monsoon), *sharad* (autumn), *hemant* (winter), *greeshma* (summer), and *vasant* (spring).

During that period of time lived Acharya Siddharth, who was as accomplished a scholar as Keshi Shraman but just short of four kinds of knowledge He arrived with his large family of disciples at the temple of Manidatt Yaksh in Meghavan garden in Rohitak city He formally sought for a place of stay suitable for ascetics and stayed there Masses gathered to pay homage and attend his religious discourse

१३. तए णं तस्स वीरंगयस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं ..... जहा जमाली, निग्गओ। धम्मं सोच्चा ....., जं नवरं देवाणुप्पिया, अम्मापियरो आपुच्छामि, जहा जमाली तहेव निक्खंते जाव अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी।

१३. तब उत्तम प्रासाद मे निवास करते हुए वीरागदकुमार ने राजमार्ग पर जन–कोलाहल आदि सुना और एक ही दिशा मे जनसमूह जाता हुआ देखा। जमालि की तरह वह भी भगवान के दर्शन करने निकला। धर्मदेशना सुनकर के दीक्षा लेने सकल्प मन मे जगा। उसने भी सिद्धार्थ आचार्य से जमालि की तरह निवेदन किया कि माता–पिता की अनुमति प्राप्त करके मै दीक्षा ग्रहण करूँगा। पश्चात् प्रव्रज्या अगीकार की और गुप्त ब्रह्मचारी अनगार हो गया।

13. Prince Virangad heard the tumultuous noise of the crowd and saw the masses going in one direction Like Jamali, he also went to pay homage to the Acharya and after listening to the discourse got inspired to get initiated. Like Jamali he also told Acharya Siddharth about his intention of seeking permission from his parents and getting initiated. Later he got initiated and became a completely celibate ascetic

१४. तए णं से वीरंगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूइं जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बम्भलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं वीरंगयस्स देवस्स वि दस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता।

१४. (दीक्षित होकर) वीरागद अनगार ने सिद्धार्थ आचार्य के समीप सामायिक (आचारांग) आदि ग्यारह अंगशास्त्रों का अध्ययन किया। विविध प्रकार के चतुर्थ भक्त आदि तपश्चरण से आत्मा को भावित करते हुए परिपूर्ण पैंतालीस वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। अन्त में दो मास की संलेखना करके आत्मा को विशुद्ध बनाते हुए एक सौ बीस भक्तों का अनशन द्वारा छेदन कर, आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधि सहित मरण प्राप्त कर ब्रह्मलोक कल्प के मनोरम विमान मे देवरूप से उत्पन्न हुआ। वहाँ कितने ही देवो की दस सागरोपम की स्थिति कही गई है। वीरागद देव की भी दस सागरोपम की स्थिति कही है।

14. After that Virangad ascetic lived with Acharya Siddharth and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik* After this he led ascetic life for forty five years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of two month duration and avoiding one hundred and twenty meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death. He reincarnated as a god in the *Manoram Viman* (celestial vehicle) in *Brahmalok Kalp* (divine dimension) Many gods in that dimension have a life-span of ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). The life-span of Virangad god is also said to be ten *Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

१५. से णं वीरंगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अनंतरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं, जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ।

तं एवं खलु वरदत्ता ! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवे उराले मणुयइड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।

"पभू णं भंते ! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वइत्तए ?"

हंता, पभू। से एवं भंते ! इह वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी अन्नया कयाइ बारवईओ नयरीओ जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

१५. वह वीरांगद देव ब्रह्मदेव लोक से देव आयु पूर्ण करके वहाँ से च्यवन करके इसी द्वारवती नगरी में बलदेव राजा की रेवतीदेवी की कुक्षि मे पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ है।

(उसके जन्म से पूर्व) रेवतीदेवी ने उस सुखकारी शय्या पर सोते हुए सिह का स्वप्न देखा। यथासमय बालक को जन्म दिया, वह तरुणावस्था को प्राप्त हुआ, पाणिग्रहण हुआ। यावत् उत्तम प्रासाद मे सुख भोगते हुए जीवन बिता रहा है।

"हे वरदत्त ! इस निषधकुमार को इस प्रकार की ऐसी उत्तम मानव-जीवन सम्बन्धी ऋद्धि-समृद्धि प्राप्त हुई है।"

वरदत्त मुनि ने पुन प्रश्न किया-"भते ! क्या निषधकुमार आप देवानुप्रिय के पास प्रव्रजित होने के लिए समर्थ है ?"

भगवान अरिष्टनेमि ने कहा-"हाँ वरदत्त ! वह समर्थ है।

भते ! आपका कथन यथार्थ है।" इत्यादि कहकर वरदत्त अनगार अपनी आत्मा को तप-सयम के साथ भावित करते हुए विचरने लगे।

इसके बाद किसी एक समय अर्हत् अरिष्टनेमि द्वारवती नगरी से प्रस्थान कर अन्य जनपदो मे विचरण करने लगे। निषधकुमार जीव-अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता बनकर श्रमणोपासक हो गया।

15. On completing his divine life-span in *Brahmalok Kalp* that Virangad god has descended and reincarnated in this Dvaravati city as the son of King Baldev and queen Revati

(Before his birth) Queen Revati saw a lion in her dream while she was sleeping in her comfortable bed. In due course she gave birth to a son, he matured and was married He spends his life enjoying mundane pleasures in his exclusive mansion

O Vardatt ! This is why this Nishadh Kumar has acquired all this opulence of human life

Ascetic Vardatt again asked—"*Bhante* ! Does Prince Nishadh have the ability to get initiated by you ?"

Bhagavan Arishtanemi said—"Yes, Vardatt, he has

"*Bhante* ! What you say is, indeed, true" With these words ascetic Vardatt resumed his itinerant way enkindling his soul through austerities and ascetic-discipline

In due course Arhat Arishtanemi left Dvaravati and wandered about in other inhabited areas Acquiring the knowledge of fundamentals including the living and the non-living, Prince Nishadh became a *Shramanopasak* (a devotee of *Shramans*)

निषधकुमार का मनोरथ

१६. तए णं से निसढे कुमारे अन्नया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव दब्भसंथारोवगए विहरइ। तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"धन्ना णं ते गामागर जाव संनिवेसा जत्थ णं अरहा अरिट्ठणेमी विहरइ। धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं अरिट्ठणेमिं वंदंति, नमंसंति जाव पज्जुवासंति। जइ णं अरहा अरिट्ठणेमी पुव्वाणुपुव्विं.... नंदणवणे विहरेज्जा, तए णं अहं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा।

१६. तदनन्तर किसी समय निषधकुमार अपनी पौषधशाला मे आया। आकर कुशा-(सूखी घास) के आसन पर बैठकर पौषधव्रत ग्रहण करके धर्मध्यान करने लगा। तब निषधकुमार को मध्य रात्रि के समय धार्मिक चिन्तन करते हुए हृदय की गहराई मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-'उन ग्राम, आकर, सन्निवेशो के निवासी धन्य है जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु विचरण करते है तथा वे राजा, ईश्वर (राजकुमार-युवराज), सार्थवाह आदि भी धन्य है जो अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु को वन्दन-नमस्कार करते है, उनकी पर्युपासना करने का अवसर प्राप्त कर रहे है। यदि अर्हत् अरिष्टनेमि ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, यहाँ नन्दनवन में पधारे तो मै उन अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु को वदन-नमस्कार करूँगा यावत् पर्युपासना करने का लाभ प्राप्त करूँगा।

PRINCE NISHADH'S WISH

16. Then one day Prince Nishadh came to his *Paushadh-shala* (place of meditation) He sat on a mattress made of hay, took the *paushadh* vow (partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period) and commenced meditation While Prince Nishadh was engrossed in meditation, a thought emerged from the depths of his heart—"Blessed are the inhabitants of those villages, and other inhabited areas where Arhat Arishtanemi moves about and also blessed are those kings, princes, and so on up to caravan chiefs who get the opportunity of paying homage to Arhat Arishtanemi and doing his worship If moving from one village to another, Arhat Arishtanemi comes here in the Nandanavan I too will get the opportunity of paying homage to Arhat Arishtanemi and doing his worship"

निषधकुमार की दीक्षा · देवलोकोत्पत्ति

१७. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवमज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे....। परिसा निग्गया।

तए णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ. चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गए जहा जमाली, जाव अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए, अणगारे जाए जाव गुत्तबम्भयारी।

१७. निषधकुमार के अन्त करण मे उठे इस प्रकार के मानसिक सकल्प को जानकर अर्हत् अरिष्टनेमि अठारह हजार श्रमणो के साथ ग्राम आदि मे विहार करते हुए द्वारवती के नन्दनवन उद्यान में पधारे। उनके दर्शन–वन्दन आदि करने के लिए श्रद्धालुजन घरो से निकलकर उद्यान की तरफ चल पडे।

तब निषधकुमार को भी अर्हत् अरिष्टनेमि के पदार्पण का सवाद मिला, वह हर्षित एवं परितुष्ट होता हुआ चार घण्टो वाले अश्वरथ पर आरूढ होकर जमालि की तरह अपने वैभव के साथ भगवान के दर्शन करने निकला, अन्त में माता–पिता से आज्ञा–अनुमति प्राप्त करके प्रव्रजित हुआ। यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन गया।

INITIATION AND INCARNATION IN DIVINE DIMENSION

17. Aware of Prince Nishadh's train of thoughts, Arhat Arishtanemi along with his eighteen thousand ascetic disciples, moving from one village to another, came to the Nandanavan garden in Dvaravati People came out and moved in the direction of the garden to pay homage and obeisance to him.

Prince Nishadh also got the news of Arhat Arishtanemi's arrival and he was pleased and contented Riding a four-bell chariot he also left, like Jamali, with all his grandeur and opulence, to pay homage to *Bhagavan* In the end he also took permission from his parents, got initiated and became a completely celibate ascetic

१८. तए णं से निसढे अणगारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूइं चउत्थछट्ठ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नववासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।

१८. दीक्षित होकर निषध अनगार ने अर्हत् अरिष्टनेमि के उन तथारूप (उत्तम श्रुत–चारित्र सम्पन्न) स्थविरो के समीप सामायिक से लेकर ग्यारह अगो का अध्ययन किया। चतुर्थ भक्त, षष्ट भक्त आदि अनेक प्रकार की तप साधना द्वारा आत्मा को भावित करते हुए पूरे नौ वर्ष तक श्रमण–पर्याय का पालन किया। श्रमण–पर्याय को पालन करते हुए बयालीस भक्तो (२१ दिन) को अनशन द्वारा छेद कर आलोचना और प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त किया।

18. After getting initiated ascetic Nishadh lived with the senior ascetic disciples of Arhat Arishtanemi and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik* After this he led ascetic life for nine years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of twenty one days duration and avoiding forty two meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment of his death

१९. तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव एवं वयासी–"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से णं भंते ! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ?"

"वरदत्ता" इ अरहा अरिट्ठणेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी–"एवं खलु, वरदत्ता, ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए ममं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चन्दिम–सूरिय–गहनक्खत्त–तारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणा वाससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धविमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं निसढस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।"

१९. तब वरदत्त अनगार निषधकुमार को काल प्राप्त हुआ जानकर अर्हत् अरिष्टनेमि प्रभु के समीप आये। आकर इस प्रकार निवेदन किया–"देवानुप्रिय ! आपका शिष्य निषध अनगार जो प्रकृति से भद्र, सरल और विनीत था वह काल को प्राप्त होकर कहाँ गया है ? कहाँ उत्पन्न हुआ है ?"

अर्हत् अरिष्टनेमि ने सम्बोधित कर वरदत्त अनगार को कहा–"वरदत्त ! मेरा अन्तेवासी निषध नामक अनगार जो प्रकृति से भद्र यावत् विनीत था, मेरे तथारूप स्थविरो के समीप सामायिक आदि से लेकर ग्यारह अगो का अध्ययन करके, नौ वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। अनशन द्वारा बयालीस भोजनो का त्याग करके, पापस्थानो की आलोचना–प्रतिक्रमण करता हुआ समाधिस्थ होकर मरणावसर पर मरण प्राप्त करके ऊर्ध्वलोक मे, चन्द्र–सूर्य–ग्रह–नक्षत्र–तारारूप ज्योतिष्क देव विमानो से ऊपर सौधर्म–ईशान आदि अच्युत देवलोको का तथा तीन सौ अठारह ग्रैवेयक, विमानों का अतिक्रमण करके अर्थात् इनसे भी ऊपर सर्वार्थसिद्ध नामक विमान मे देवरूप से उत्पन्न हुआ है। वहाँ पर देवो की तेतीस सागरोपम की स्थिति है।

19. Then realizing that ascetic Nishadh had met his end ascetic Varadatt came to Arhat Arishtanemi and conveyed—"Beloved of gods ! Where has your noble, simple, and humble disciple ascetic Nishadh gone after his death ? Where has he reincarnated ?

Arhat Arishtanemi replied—"Varadatt ! My noble, simple, and humble disciple ascetic Nishadh lived with my senior ascetic disciples and studied eleven *Angas* (the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts) including *Samayik* After this he led ascetic life for nine years enkindling his soul by observing a variety of austerities including fasting for two or more days. In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of twenty one days duration and avoiding forty two meals embraced meditational death after doing *pratikraman* (critical review) at the moment

of his death Crossing the stellar dimensions including the moon, the sun, planets, constellations and stars, the *Achyut* dimensions including *Saudharm* and *Ishan*, the three hundred eighteen *Graiveyak Vimans* and going even higher he has reincarnated as a god in the *Sarvarthasiddha Viman* (celestial vehicle) Gods in that dimension have a life-span of thirty three *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)"

निषध का मुक्तिगमन

२०. "से णं भंते ! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?"

वरदत्ता ! इहेव जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उन्नाए नगरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं से उम्मुक्कबालभावे विन्नयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बिज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सए इरियासमिए जाव गुत्तबम्भयारी।

से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहि तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिइ, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइहिइ, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणाए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बम्भचेरवासे परघरपवेसे पिण्डवाओ लद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटगा अहियासिज्जइ, तमट्ठं आराहिइ, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणं अंत काहिइ।"

निक्खेवओ—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं वण्हिदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। त्ति बेमि।

एवं सेसा वि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संहगणी—अणुसारेण अहीणमइरित्त एक्कारससु वि।

॥ पञ्चमो वग्गो समत्तो ॥

२०. यह सुनकर वरदत्त अनगार ने पुन पूछा—"भन्ते ! वह निषध देव उस देवलोक से आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने के पश्चात् वहाँ से च्यवन करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान अरिष्टनेमि ने उत्तर दिया—'आयुष्मन् वरदत्त ! इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के महाविदेह क्षेत्र के उन्नाक नगर मे विशुद्ध पितृवश वाले एक राजकुल मे पुत्र रूप मे जन्म लेगा। वहाँ बाल्यावस्था बीत जाने पर सवयस्क होकर युवावस्था को प्राप्त होने पर तथारूप स्थविरो के समीप केवलबोधि अर्थात् सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर गृहस्थ जीवन त्यागकर अनगार प्रव्रज्या को अगीकार करेगा। वह ईर्यासमिति आदि से सम्पन्न यावत् गुप्त ब्रह्मचारी अनगार बन जायेगा।

वह अनगार बनकर अनेक प्रकार की चतुर्थभक्त, षष्ठभक्त, अष्टमभक्त, दसमभक्त, द्वादशभक्त, मासखमण, अर्ध-मासखमण रूप विचित्र तप साधना द्वारा आत्मा को शुद्ध करते हुए बहुत वर्षों तक

श्रमण-पर्याय का पालन करेगा। श्रमण-पर्याय का पालन करके एक मास की संलेखना द्वारा आत्मा को विशुद्ध करेगा, साठ भोजनो का अनशन द्वारा त्याग करेगा और जिस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए नग्नभाव (ममत्व त्याग), मुडभाव (द्रव्य भाव रूप से मुण्डित होना), स्नानत्याग, दाँत धोने का त्याग, छत्र का त्याग, उपानह (जूता, पादुका आदि) का त्याग तथा पाट पर सोना, काष्ट तृण आदि पर सोना-बैठना, केश लुंचन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, भिक्षा के लिए पर-गृह मे प्रवेश करना, भिक्षा मे जैसा मिला उसी मे निर्वाह करना, ऊँचे-नीचे अर्थात् अच्छे-बुरे शब्दो द्वारा होने वाले इन्द्रियो को चुभने वाले काँटो (कष्टों) को सहन करना इत्यादि नियमो की आराधना करेगा और आराधना करके अन्तिम श्वासोच्छ्वास मे सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, यावत् सर्व दु खो का अन्त करेगा।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते है-''इस प्रकार आयुष्मन् जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने वृष्णिदशा (वह्निदशा) के प्रथम अध्ययन का यह उपर्युक्त भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मै कहता हूँ।''

इसी प्रकार से शेष ग्यारह अध्ययनो का भाव भी सग्रहणी-गाथा के अनुसार दो से बारह तक के पात्रो के नाम पूर्व सूत्र २ मे बताये गये है, उन्हे बिना किसी हीनाधिकता के जैसा का तैसा जान लेना चाहिए।

॥ पंचम वर्ग समाप्त ॥

LIBERATION OF NISHADH

20. On hearing this ascetic Vardatt asked further—"*Bhante* ! Completing the age, state, and life in the dimension of gods and descending from that abode of gods, where will that Nishadh Dev go ? (Where will he be born ?)"

Bhagavan Arishtanemi said, "Vardatt ! He will be born as a prince in a royal family of a noble clan in Unnak city in the Mahavideh area of the Jambudveep continent Crossing his childhood and maturing into youth he will get enlightened by senior ascetics, acquire righteous knowledge, renounce his household and get initiated He will become a completely celibate ascetic observing self regulation and other ascetic codes

After this he will lead ascetic life for many years enkindling his soul by observing a variety of unusual austerities including fasting for one, two, three, four, five, six, seven, eight, nine, or ten days, a fortnight or a month Then he will purify his soul by observing the ultimate vow (*sallekhana*) of month long duration avoiding sixty meals During this period he will follow all the codes including sleeping on a plank, reclining and sitting on wood and hay, pulling out hair, remaining celibate, entering houses of others to seek alms, living only on whatever alms are offered, enduring pricks of pleasant and unpleasant words piercing the sense organs, etc in order to attain the goal for which he had become unclad (detached), got tonsured (physically and mentally), abandoning bathing, brushing of teeth, using umbrella and shoes. Observing these codes, in his last breath, he will finally become a *Siddha* (liberated soul) and Buddha (enlightened) ending all miseries "

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Vrishni Dasha*. So I state."

Remaining eleven chapters also follow the same pattern without any deletion or addition for the characters listed in aforesaid aphorism-2 and information contained in the *Sangrahani Gatha* (collective verse which is not available in the text)

● END OF THE FIFTH SECTION TITLED VRISHNIDASHA ●

ग्रन्थ की अन्तिम प्रशस्ति

२१. निरयावलियासुयखंधो समत्तो। समत्ताणि उवंगाणि।

निरयावलियाउवंगेणं एगो सुयखंधो, पञ्च वग्गो, पञ्चसु दिवसेसु उद्दिस्संति। तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पञ्चमवग्गे बारस उद्देसगा।

॥ निरयावलियासुत्तं समत्तं ॥

२१. निरयावलिका नामक श्रुतस्कध समाप्त हुआ। उसके साथ ही (पाँच) उपागो का वर्णन भी पूर्ण हुआ।

निरयावलिका उपाग मे एक श्रुतस्कन्ध है। उसके पाँच वर्ग है, जिनका पाँच दिनो मे वाचन किया जाता है। आदि के चार वर्गों मे दस–दस उद्देशक है और पाँचवे वर्ग मे बारह उद्देशक है। यो कुल मिलाकर ५२ उद्देशक हैं।

॥ निरयावलिकासूत्र समाप्त ॥

CONCLUDING VERSE

21. Thus ends the *Shrutskandh* titled *Niryavalika* With it is concluded the narration of the (five) *Upangas*

In the *Upanga* titled *Niryavalika* there is one *Shrutskandh* (part). It has five sections (*varg*) that are read and recited in five days. The first four sections have ten chapters each and the fifth section has twelve chapters Thus the total number of chapters in the book is fifty two

● END OF NIRYAVALIKA SUTRA ●

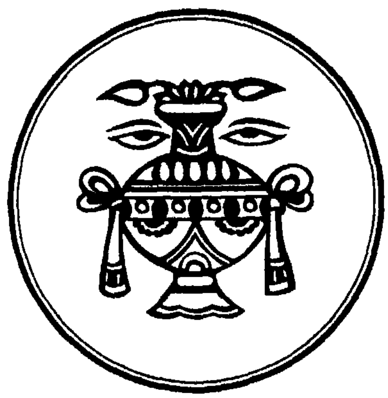
पंचम गणधर, भगवत् सुधर्मा स्वामिप्रणीत षष्ठम अंग आगम

विपाक सूत्र

*

The Sixth Anga Agam by The Fifth Ganadhar, Bhagavat Sudharma Swami

VIPAAK SUTRA



नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
विपाकश्रुत

प्रथम श्रुतस्कन्ध : प्रथम अध्ययन

उपोद्घात

यह ग्यारहवाँ अग, 'विपाकश्रुत' नाम से प्रसिद्ध है। विपाक का अर्थ है, जीव के शुभ-अशुभ कर्मों का फल। उनका प्रतिपादन करने वाला शास्त्र है विपाकश्रुत। इसके दो श्रुतस्कन्ध है। प्रथम श्रुतस्कन्ध मे अशुभ कर्मों के कटु फल-विपाक का वर्णन है, इसलिए इसका प्रसिद्ध नाम है **दुःख-विपाक**।

दूसरे श्रुतस्कध मे शुभकर्मो के शुभ फल-विपाक का वर्णन होने से **'सुख-विपाक'** नाम से जाना जाता है। प्रत्येक श्रुतस्कध के दस-दस अध्ययन है। प्रथम श्रुतस्कन्ध का प्रथम अध्ययन 'मृगापुत्र' है। यह अध्ययन विस्तृत है, आगे के सभी अध्ययन सक्षिप्त है।

प्रथम अध्ययन मे मृगाग्राम के विजय क्षत्रिय की मृगारानी के पुत्र का वर्णन है। यह वर्णन इतना हृदय द्रावक है जिसे पढने और सुनने से ही आत्मा काँप उठती है। हिंसा आदि अशुभ-क्रूर कर्मों के परिणामो पर विचार कर हृदय मे पाप कर्मों से ग्लानि एव विरक्ति होने लगती है। मृगापुत्र की दयनीय, वीभत्स दशा देखकर गौतम स्वामी जैसे महाज्ञानी का हृदय भी द्रवित हो उठा तो साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या ?

मनुष्य प्राणी सुख प्रिय है, दु खो से घबराता है। सुख मिले या न मिले, किन्तु वह दु ख तो नही चाहता। इसलिए सर्वप्रथम दु ख-निवृत्ति की इच्छा रखता है। इस मनोविज्ञान के आधार पर इस शास्त्र मे पहले दु ख-विपाक सूत्र मे दु ख और दु ख के मूल कारणो पर बडी ही रोचक शैली मे प्रकाश डाला है।

Namotthunam Samanassa Bhagavao Mahavirassa

VIPAAK SHRUT

First Shrutskandh : First Chapter

INTRODUCTION

This eleventh *Anga* (The primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts This consists of twelve treatises, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition.) is popularly known as *Vipaak Shrut* *Vipaak* means the fruits of the good and bad *karmas* acquired by a soul. The scripture where these are described is called *Vipaak Shrut*. It has two *Shrutskandhs* (parts). The first *Shrutskandh* describes the bitter fruits of bad *karmas* Accordingly it is popularly known as *Duhkha-vipaak* (fruits of bad or ignoble *karmas*)

As the second *Shrutskandh* describes the fruits of good or noble *karmas* it is known as *Sukha-vipaak* Each of these parts contains ten chapters The first chapter of the first part is titled Mrigaputra. This is an elaborate chapter and all the following chapters are brief

The first chapter contains the story of the son of Vijaya Kshatriya and Mrigarani of Mrigagram This story is so heart-rending that mere reading or listening to it makes one shiver Thinking about the consequences of violence and other bad and cruel deeds makes one detest and abhor sinful activity. What to say of an ordinary human being when a great sage like Gautam -Swami was touched by horrible and pathetic condition of Mrigaputra

Man loves pleasure and detests pain. Whether he gets pleasure or not, he certainly does not desire pain. Therefore, his first priority is to be rid of pain Based on this psychological fact, this scripture initially throws light on sorrow and its root causes in a lucid style in its first part, *Duhkha-vipaak*

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

उत्क्षेप (प्रस्तावना)

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए। वण्णओ।

१. उस काल (इसी अवसर्पिणी काल) और उस समय (जब सुधर्मा स्वामी यह कथन कर रहे है) मे चम्पा नाम एक नगरी थी। चम्पा नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र मे आये वर्णन के ही समान समझ लेना चाहिए। (उस नगरी के बाहर ईशानकोण में) पूर्णभद्र नामक एक चैत्य-उद्यान था। पूर्णभद्र चैत्य का वर्णन भी औपपातिक सूत्र के अनुसार जान लेना चाहिए।

FOREWORD

1. During that period (end of the fourth section of the current descending cycle of time) of time (when Arya Sudharma was narrating this text) there was a city called Champa. Description of Champa city should be read as in *Aupapatik Sutra* (Outside the city, in the north-eastern direction) their was Purnabhadra Chaitya (*Yaksha* temple complex). Description of Purnabhadra Chaitya should also be read as in *Aupapatik Sutra*

सुधर्मास्वामी का आगमन

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ। चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव चंपानयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

२. उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी-(निकट रहने वाले व आज्ञानुवर्ती) शिष्य सुधर्मा स्वामी विद्यमान थे। वे आर्य सुधर्मा उत्तम जाति (सुयोग्य गुण सम्पन्न माता के गर्भ से) मे जन्मे, उत्तम शरीर वाले, श्रेष्ठ आचार गुणो से सम्पन्न एवं चौदह पूर्वों के ज्ञाता थे। मति, श्रुत, अवधि तथा मनःपर्यव-चार ज्ञान के धारक थे। पाँच सौ अणगारो के साथ ग्रामानुग्राम विहार करते हुए चम्पानगरी के पूर्णभद्र चैत्य मे पधारे। वहाँ आकर साधु मर्यादा के अनुसार आज्ञा आदि ग्रहण कर ठहर गये। उनके दर्शन करने एव धर्म सुनने के लिए जन समूह उमड पडा। सुधर्मा स्वामी ने धर्म का उपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर जनसमूह वापस अपने-अपने स्थान को चला गया।

ARRIVAL OF SUDHARMA SWAMI

2. During that period of time Arya Sudharma, a disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was living He belonged to a prominent family and caste (born of an able and virtuous mother) Besides being strong, handsome, and humble he was also endowed with loftiest of virtues He had the complete knowledge of all the fourteen *Purvas* (subtle canon) and possessed all the four branches of knowledge, namely *mati, shrut, avadhi* and *manahparyav jnana* (sensory knowledge, scriptural knowledge, extrasensory perception of the physical dimension, and extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings) Wandering from one village to another, along with his five hundred disciples, Sudharma Swami arrived at the Purnabhadra Chaitya in the town of Champa After seeking formal permission he camped there Throngs of people came to attend his discourse Sudharma Swami gave a discourse and then the masses returned home

जम्बू अणगार की जिज्ञासा

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे सत्तुस्सेहे, जहा गोयमसामी तहा, जाव विहरइ।

तए णं अज्जजंबू नामं अणगारे जायसड्ढे जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए, तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ, पज्जुवासित्ता एवं वयासी।

३. उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी के अतेवासी सभी शिष्यो मे प्रमुख जम्बू अणगार थे। उनका शरीर सात हाथ ऊँचा (यह प्रमाण उत्सेधागुल से है) अत्यन्त रूपवान और तेजोदीप्त था। ज्ञाताधर्मकथाग मे सुधर्मा स्वामी का जैसा वर्णन है, उसी अनुसार यहाँ जम्बू अणगार के विषय मे जानना चाहिए।

जम्बू अणगार आर्य सुधर्मा के निकट बैठे उनकी पर्युपासना कर रहे थे। उस समय उनके मन मे श्रद्धा–जानने की इच्छा जागृत हुई। अपने आसन से उठकर आर्य सुधर्मा के निकट आये। अजलिबद्ध होकर तीन बार दाये से बाये प्रदक्षिणा करके वन्दना–नमस्कार किया। फिर उनके सामने न अधिक दूर न अधिक निकट उचित स्थान पर बैठकर सेवा–पर्युपासना करते हुए विनयपूर्वक इस प्रकार बोले–

CURIOSITY OF ASCETIC JAMBU

3. During that period of time Arya Jambu was the senior most among the disciples of Arya Sudharma Swami He was seven cubits tall (in *Utsedhangul* units or standard of fragmentary units of *angul* or the

breadth of finger, for details refer to *Anuyogadvar* 345), very handsome and radiant. The description of his virtues should be read as those of Sudharma Swami mentioned in *Jnata Dharma Kathanga.*

He was sitting near and absorbed in worship of Arya Sudharma Swami. At that time a curiosity sparked in his mind He got up and approached Sudharma Swami. He circum-ambulated Sudharma Swami three times clockwise, uttered a panegyric, and bowed before him. He sat down neither very far nor very near Sudharma Swami and humbly and respectfully spoke—

४. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

४. हे भगवन् । मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने प्रश्नव्याकरण नामक दसवे अंग का (पूर्वोक्त) भाव कहा है तो विपाकश्रुत नामक ग्यारहवे अग का क्या भाव कथन किया है ?

4. "*Bhante* ! If this is the text and meaning of the tenth *Anga* named *Prashna Vyakaran* as given by Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained the Siddha-state, what is the text and meaning of the eleventh *Anga, Vipaak Shrut,* as given by him ?"

सुधर्मा स्वामी का समाधान

५. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–"एवं खलु, जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता; तं जहा–दुहविवागा य सुहविवागा य।"

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तं जहा–दुहविवागा य सुहविवागा या, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?

५. तदनन्तर आर्य सुधर्मा अणगार ने जम्बू अणगार को इस प्रकार कहा–हे जम्बू ! मोक्ष को सप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने विपाकश्रुत नाम के ग्यारहवे अग के दो श्रुतस्कन्ध प्रतिपादित किये है, जैसे कि–दु खविपाक और सुखविपाक।

जम्बू–भगवन् ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने एकादशवे अग विपाकश्रुत के दु खविपाक और सुखविपाक नामक दो श्रुतस्कन्ध कहे हैं, तो भंते ! दु खविपाक नामक प्रथम श्रुतस्कन्ध के कितने अध्ययन कहें हैं ?

REPLY BY SUDHARMA SWAMI

5. Sudharma Swami said to ascetic Jambu—"O Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the eleventh

Anga in two parts—(1) *Duhkha-vipaak* (fruits of bad or ignoble *karmas*) and (2) *Sukha-vipaak* (fruits of good or noble *karmas*).

Jambu—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the eleventh *Anga* in two parts, *Duhkha-vipaak* and *Sukha-vipaak*, then according to him how many chapters are there in the first part titled *Duhkha-vipaak* ?"

६. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! समणेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा, पन्नत्ता, तं जहा–

मियापुत्ते य उज्झियए, अभग्ग सगडे बहस्सई नंदी।
उंबर सोरियदत्ते य, देवदत्ता य अंजू य॥१॥

६. आर्य सुधर्मा ने जम्बू अनगार को इस प्रकार कहा–'हे जम्बू ! धर्म की आदि करने वाले, धर्म तीर्थप्रवर्तक, मोक्ष को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के दस अध्ययन इस प्रकार कहे है–

(१) मृगापुत्र, (२) उज्झितक, (३) अभग्नसेन, (४) शकट, (५) बृहस्पति, (६) नन्दिवर्धन, (७) उम्बरदत्त, (८) शौरिकदत्त, (९) देवदत्ता, और (१०) अंजू।

6. "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who is the first propagater of *dharma* (*Aaigare* or *Aadikar*), the religious ford-maker (*Titthagare* or *Tirthankar*),.. and so on up to. who has attained liberation has preached ten chapters of *Duhkha-vipaak*. They are—

(1) Mrigaputra, (2) Ujjhitak, (3) Abhagnasen, (4) Shakat, (5) Brihaspati, (6) Nandivardhan, (7) Umbardatt, (8) Shaurik Datt, (9) Devadatta, and (10) Anju"

प्रथम अध्ययन

७. 'जइ णं भंते ! समणेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता; तं जहा–मियापुत्ते य जाव अंजू य, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

तए णं से सुहम्मे जंबुं अणगारं एवं वयासी–''एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं मियग्गामे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खायणं होत्था, चिराइए जहा पुण्णभद्दे।

७. भंते ! धर्म की आदि करने वाले, तीर्थंकर, मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के मृगापुत्र से लेकर अजू पर्यन्त दश अध्ययन कहे हैं तो दुखविपाक के प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?

उत्तर में आर्य सुधर्मा कहते है–जम्बू ! उस काल उस समय में मृगाग्राम नाम का एक नगर था, (जिसका वर्णन औपपातिक सूत्र में किये गये नगरवर्णन के समान जान लेना चाहिए।) उस मृगाग्राम नगर के बाहर

उत्तर पूर्व दिशा के मध्य अर्थात् ईशान कोण मे सब ऋतुओ में फलने वाले पुष्प, फल आदि से युक्त चन्दनपादप नामक एक उपवन था। उस उद्यान में सुधर्मा नामक यक्ष का एक प्राचीन यक्षायतन था जिसका वर्णन पूर्णभद्र (औपपातिक सूत्र) यक्षायतन की तरह समझना चाहिए।

FIRST CHAPTER

7. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, the first propagater of *dharma*, the *Tirthankar*, and who has attained liberation, has preached ten chapters of *Duhkha-vipaak* from Mrigaputra to Anju, then what is the text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak* ?

Arya Sudharma replied—Jambu ! During that period of time there was a town named Mrigagram (the details should be read from the description of city mentioned in *Aupapatik Sutra*). In the north-eastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Chandanapadap having trees bearing all season flowers and fruits In that garden there was an ancient temple of Sudharma Yaksh. The details of this should be read from the description of Purnabhadra Yaksh temple (*Aupapatik Sutra*).

विवेचन–प्रस्तुत आगम मे मुख्यत चार स्थानो पर "**वण्णओ**" पद का प्रयोग मिलता है–प्रथम नगर वर्णन के लिए दूसरा उद्यान के साथ, तीसरा राजा और चौथा रानी के साथ। जैनागमों की अपनी एक पारम्परिक प्रणाली रही है कि यदि किसी एक आगम मे किसी उद्यान, नगर, चैत्य, राजा, रानी, सयमशील साधु का सागोपाग वर्णन कर दिया हो, तब प्रसगवश उस वर्णन को पुन नही दुहराते हुए निर्दिष्ट आगम से उसका वर्णन जान लेने के लिए '**वण्णओ**' ऐसा साकेतिक शब्द निर्दिष्ट किया जाता है। अत· जहाँ कही वण्णओ शब्द का सकेत हो वहाँ औपपातिक सूत्र मे वर्णित नगर, उद्यान, यक्ष, यक्षायतन, राजा व रानी के वर्णन की तरह समझ लेना चाहिए। '**वण्णओ**' के समान ही '**जाव**' शब्द भी अन्य स्थान से वर्णन जान लेने का सकेत करता है।

Elaboration—In this *Agam* the word *'Vannao'* has been mainly used in four instances—with description of a city, garden, king, and queen This is a style traditionally accepted in Jain *Agams* that when complete details of some garden, city, king, queen, or practicing ascetic have been narrated in one particular *Agam*, it is not generally repeated elsewhere Instead, using the term *'Vannao'* (*varnan* or description) it is advised to read the description from that specific *Agam*. Thus wherever *'Vannao'* is mentioned it should taken as an indication to read the description of a city, garden, king, and queen from *Aupapatik Sutra*. Like *'Vannao'* the term *'Java'* is also used to indicate to read description from some other place In place of *Vannao* we will use the word description in parenthesis.

८. तत्थ णं मियग्गामे नयरे विजय नामं खत्तिए राया परिवसइ, वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था। अहीण.। वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था। जाइ–अंधे, जाइ–मूए, जाइ–बहिरे, जाइ–पंगुले, हुंडे य वायवे य। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा णासा वा। केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिई आगिइमित्ते।

तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

८. उस मृगाग्राम नगर मे विजय नाम का एक क्षत्रिय राजा था। उस विजय नामक क्षत्रिय राजा की मृगा नामक रानी थी। वह सर्वांगसुन्दरी निर्दोष परिपूर्ण पाँचो इन्द्रियाँ वाली थी (रानी का रूप–लावण्य औपपातिक सूत्र मे किये गये राज्ञीवर्णन के समान जान लेवे) उस विजय क्षत्रिय का पुत्र और मृगा देवी का आत्मज मृगापुत्र नाम का एक दारक बालक था। वह बालक जन्म के समय से ही अन्धा, गूगा, बहरा, लूला, हुण्ड सस्थान (उसके शरीर के सभी अवयव बिना ढग के–बेढब थे) वाला था। वह जन्म से ही वातरोग से पीडित था। उस बालक के हाथ, पैर, कान, आँख और नाक भी न थे। इन अगोपागो की केवल आकृति (चिह्न) ही थी और वह आकृति भी नाम–मात्र की थी।

वह मृगादेवी गुप्त भूमिगृह (मकान के नीचे के तलघर) मे गुप्तरूप से आहारादि के द्वारा उस बालक का पालन–पोषण करती रहती थी।

CONGENITAL BLIND MRIGAPUTRA

8. In that Mrigagram city lived a *Kshatriya* King named Vijaya (description as in *Aupapatik Sutra*) That *Kshatriya* King named Vijaya had a queen named Mriga She was perfectly beautiful and had fully developed sense organs (description as in *Aupapatik Sutra*) That Vijaya Kshatriya and Mriga had a son named Mrigaputra Since his birth that child was blind, dumb, deaf, crippled and was with *hund-samsthan* (crooked-constitution, a body constitution where almost every part of the body is deformed and disfigured) He suffered from congenital rheumatism (*vaat-roag*). That child had no hands, feet, ears or nose He only had mere outlines of these parts and those too for namesake

Therefore, that Mriga Devi was feeding and bringing up that child under wraps in a secret cellar

विवेचन–चरक सहिता के अनुसार वातरोग ८० प्रकार के होते है। जैसे पीठ का जकड जाना, गर्दन टेढी हो जाना, अगो का सुन्न हो जाना आदि। वातरोग सबसे उग्र व भयानक होता है।

Elaboration—According to *Charak Samhita* there are 80 kinds of diseases caused due to disturbed *vaat* (one of the body humours). Some of these are—stiff back, bent neck, and parts of body going numb Rheumatism and gout are also caused by disturbed *vaat* These are highly disturbing and chronic ailments

जाति अंध पुरुष का समवसरण मे आगमन

९. तत्थ णं मियग्गामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ। से णं एगेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगड्ढिज्जमाणे पगड्ढिज्जमाणे फुट्टहडाहडसीसे मच्छियाचडगरपहकरेणं णन्निज्ज माणमग्गे मियग्गामे नयरे गिहे गिहे कालुणवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ।

९. उस मृगाग्राम मे एक जन्मान्ध पुरुष रहता था। आँखो वाला एक पुरुष उसकी लकडी पकडकर उसके आगे-आगे चलता रहता था। उसी की सहायता से वह नगर मे भ्रमण करता था। उसके मस्तक के बाल रूखे और बिखरे हुए अत्यन्त अस्त-व्यस्त थे। (अत्यन्त मैला-कुचेला रहने क कारण-) उसके आगे-पीछे मक्खियो के झुण्ड के झुण्ड भिनभिनाते रहते थे। (वह देखने मे अत्यन्त घृणास्पद लगता था) वह जन्मान्ध पुरुष मृगाग्राम नगर के घर-घर मे अत्यन्त दीन-दयनीय वचन बोलता हुआ भीख माँगकर अपनी आजीविका चला रहा था।

ARRIVAL OF A BLIND PERSON IN SAMAVASARAN

9. In that Mrigagram city lived a congenital blind A person with normal vision always guided him holding his stick Only with the help of this person he moved around in the city. His hair were shriveled and disheveled Swarms of houseflies hovered around him (so dirty and repulsive was he) That blind person earned his livelihood by humbly and pitifully seeking alms door to door in Mrigagram city

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए। जाव परिसा निग्गया। तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, जहा कूणिए तहा निग्गए जाव पज्जुवासइ।

१०. उस समय मे श्रमण भगवान महावीर (नगर के बाहर चन्दनपादप उद्यान मे) पधारे। भगवान के पदार्पण के समाचार जानकर जनता दर्शनार्थ आई। विजय नामक क्षत्रिय राजा भी महाराजा कूणिक की तरह भगवान के शुभागमन के समाचार पाकर दर्शनार्थ निकला। समवसरण मे जाकर भगवान की पर्युपासना-सेवा-भक्ति करने लगा।

10. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived (in Chandanapadap garden outside the city) Getting the news of *Bhagavan's* arrival people came to pay homage. Like king Kunik the *Kshatriya* king Vijaya also came out to pay homage. Going to the *Samavasaran* he commenced *Bhagavan's* worship.

११. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तं महया जणसद्दं जाव सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी-"किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ?"

तए णं से पुरिसे जाइअंधपुरिसं एवं वयासी-"नो खलु, देवाणुप्पिया ! इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छइ। समणे जाव विहरइ। तए णं एए जाव निग्गच्छंति।'

तए णं से जाइअंधपुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी-'गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं जाव पज्जुवासामो।"

तए णं जाइअंधे पुरिसे तेणं पुरओदंडएणं पुरिसेणं पगड्ढिज्जमाणे पगड्ढिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उगावए, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स खत्तियस्स तीसे य.... धम्ममाइक्खइ, जाव परिसा पडिगया, विजए वि गए।

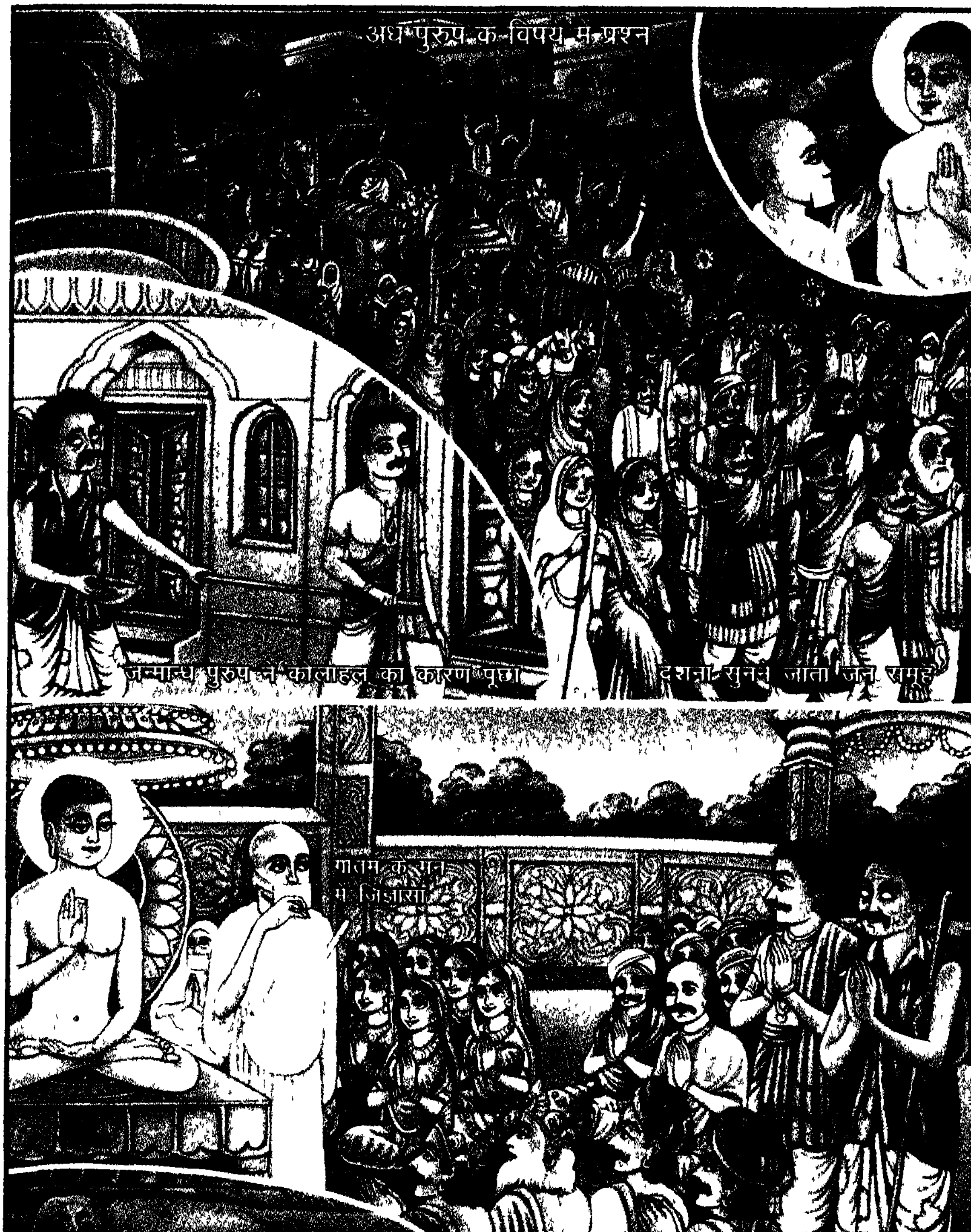
११. उस समय उस जन्मान्ध पुरुष ने नगर में लोगो के आवागमन का कोलाहलमय बातावरण सुना, तब अपने सहायक पुरुष से इस प्रकार पूछा-हे देवानुप्रिय ! क्या आज मृगाग्राम नगर मे कोई इन्द्र-महोत्सव आदि है? अथवा उद्यान की या पर्वत की कोई यात्रा है ? जिसके कारण सभी लोग एक ही दिशा मे नगर के बाहर जा रहे हैं।

उस पुरुष ने जन्मान्ध पुरुष से कहा-देवानुप्रिय ! आज इस नगर मे इन्द्रमहोत्सव आदि कुछ नही है, किन्तु नगर के बाहर चन्दनपादप उद्यान मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे है, वहाँ ये सब लोक दर्शनार्थ जा रहे हैं।

तब उस जन्मान्ध पुरुष ने उस सहायक पुरुष से कहा-ऐसा है तो चलो, हम भी चले और चलकर भगवान की पर्युपासना करें।

तब दण्ड पकडकर आगे चलता हुआ वह पुरुष उस जन्मान्ध पुरुष को जहाँ पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी विराजमान थे वहाँ पर ले आया। वहाँ आकर वह तीन बार प्रदक्षिणा करता है। प्रदक्षिणा करके वन्दन-नमस्कार करता है। फिर भगवान की पर्युपासना-सेवा भक्ति करने लगा। तब श्रमण भगवान महावीर ने विजय राजा सहित नगर की जनता को धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर विजय राजा तथा परिषद् यथास्थान वापस चले गये।

11. At that time the person who was blind by birth listened to the commotion and asked his guide—"Beloved of gods ! Is their some divine festival or celebration in Mrigagram city ? Or there is some procession going to a garden or a hill ? Why all these people are going out of the city in the same direction ?"



अंध पुरुष के विषय में प्रश्न
जन्मान्ध पुरुष ने कोलाहल का कारण पूछा
दर्शनार्थ जाता जन समूह
गौतम के मन में जिज्ञासा
मृगापुत्र के विषय में कथन

चित्र परिचय-१

Illustration No. 1

अंध पुरुष के विषय में जिज्ञासा

दृश्य–१

एक समय भगवान महावीर मृगाग्राम मे पधारे। गणधर गौतम गोचरी करने नगर मे गये। वहाँ एक ऐसे जन्मान्ध पुरुष को देखा, जिसे एक ऑखो वाला पुरुष लट्ठी पकडकर लेकर चलता है। वह अध पुरुष घर-घर मे बडी करुण आर्त पुकार करता हुआ भिक्षा माँगता है।

नगर जन भगवान के दर्शन करने जाते है। कोलाहल सुनकर अध पुरुष पूछता है, तो उसने बताया-नगर मे भगवान महावीर पधारे है। ये सब उनके दर्शन हेतु जा रहे है। अध पुरुष भी समवसरण मे आकर वन्दना करता है।

दृश्य–२

गणधर गौतम ने उसी जन्मान्ध पुरुष को आते देखा तो उनके मन मे कुतूहल भरी जिज्ञासा उत्पन्न हुई भते ! क्या इस जन्मान्ध पुरुष जैसा कोई अन्य पुरुष भी इस नगर मे है ?

तब भगवान मृगापुत्र के विषय मे बताते है।

श्रुतस्कन्ध १, अ १, सूत्र ५ १०

CURIOSITY ABOUT THE BLIND MAN

SCENE-1

Once Bhagavan Mahavir arrived in Mrigagram Ganadhar Gautam went into the city to collect alms He saw a person blind by birth, led by a person holding his stick That blind person begs in pathetic voice for alms door to door

People from the city go to pay homage to *Bhagavan* The blind person heard the commotion and asked his guide about the cause That person informed that Bhagavan Mahavir has arrived and people are going there to pay homage The blind man also goes to the *Samavasaran* and pays homage

SCENE-2

When Ganadhar Gautam saw the blind man he became curious—"*Bhante* ! Is there some other person like this blind man ?"

In reply *Bhagavan* informs him about Mrigaputra

—Sec I, Ch 1, Sutra 5-10

That person replied to the blind man—"Beloved of gods ! There is nothing like a divine festival in the city but Shraman Bhagavan Mahavir has arrived in Chandanapadap garden outside the city These people are going there to pay homage"

The blind man said to his guide—"Beloved of gods ! Come, let us go as well and worship *Bhagavan*"

Then the guide holding the stick of the blind man led him to the place where Shraman Bhagavan Mahavir was seated. The blind man circumambulated *Bhagavan* three times and paid homage and obeisance. He then commenced *Bhagavan's* worship. Shraman Bhagavan Mahavir gave his discourse to king Vijaya and the people of the city, after which the king and the people returned home

गौतम की जिज्ञासा

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव विहरइ। तए णं से भगवं गोयमे तं जाइअंधपुरिसं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव एवं वयासी–'अत्थि णं भंते ! केई पुरिसे जाइअंधे जाइअंधारुवे ?'

हंता अत्थि।

"कह णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जाइअंधारूवे ?"

'एवं खलु, गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअंधे जाइअंधारूवे। नत्थि णं तस्स दारगस्स जाव आगिइमित्ते। तए णं सा मियादेवी जाव पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ !'

तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

१२. उस समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी के प्रधान शिष्य इन्द्रभूति नाम के अनगार भी वहाँ विराजमान थे। भगवान गौतम स्वामी ने उस जन्मान्ध पुरुष को देखा और देखकर उनके मन मे कुतूहल तथा जिज्ञासा उत्पन्न हुई। भगवान गौतम ने पूछा–'भगवन् ! क्या कोई ऐसा (अन्य) पुरुष भी है कि जो (इसी तरह) जन्म से ही अन्धा हो, जन्मान्ध रूप हो।

भगवान ने कहा–हाँ, ऐसा पुरुष है !

गौतम स्वामी ने पूछा–भंते ! वह पुरुष कहाँ है जो जन्मान्ध व जन्मान्धरूप है ?'

भगवान ने कहा–'गौतम ! इसी मृगाग्राम नगर मे विजयनरेश का पुत्र और मृगादेवी का आत्मज मृगापुत्र नाम का बालक है, जो जन्मत अन्धा है, जन्मान्धरूप है। उसके हाथ, पैर आदि अगोपाग भी नही हैं ! मात्र उन अगोपागो के आकार ही है ! उसकी माता मृगादेवी उसका पालन–पोषण सावधानी पूर्वक गुप्त रूप मे कर रही है।

तब भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार प्रार्थना की–भते ! यदि आपकी अनुमति हो तो मै उस मृगापुत्र बालक को देखना चाहता हूँ।'

भगवान ने कहा–'गौतम ! जैसे तुम्हे सुख हो, वैसा करो !'

GAUTAM'S CURIOSITY

12. During that period of time Indrabhuti Anagar (Gautam Swami), the chief disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was also sitting there When Bhagavan Gautam Swami saw the man who was blind by birth he became curious He asked—"*Bhante* ! Is there some (other) person who is blind by birth (like him), absolutely blind "

Bhagavan said—"Yes ! There is such a person "

Gautam Swami asked—"Where is that person who is blind by birth (like him), absolutely blind ?"

Bhagavan said—"Gautam ! In this very Mrigagram city child Mrigaputra, the son of Vijaya Kshatriya and Mriga, is blind by birth (like him), absolutely blind He does not even have hands and feet and other parts of the body He only has mere outlines of these parts His mother Mriga Devi feeds and brings up that child carefully and furtively"

Bhagavan Gautam then paid homage and obeisance to *Bhagavan* and requested—"*Bhante* ! If you give permission I would like to see that child Mrigaputra "

Bhagavan said—"Do as you please, Gautam

विवेचन–जन्मान्ध के नेत्रो का आकार मात्र होता है, उनमे ज्योति रूप शक्ति नही होती, परन्तु जन्मान्धरूप कहने का अर्थ है उसके शरीर मे नेत्रो का पर्याप्त आकार भी नही होता। अथवा जो किसी रोग आदि के कारण नही, किन्तु जन्म से ही अधा हो। *(आचार्य श्री आत्माराम जी म हिन्दी टीका, पृ ३१)*

Elaboration—A congenital blind (*janmandh*) has only non-functioning eyes The eyes are devoid of vision The term *'janmandh roop'* indicates that the person does not even have fully formed eyes This defect is not accidental or caused by some disease, it is by birth *(Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M , p 31)*

१३. तए णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवो महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमेइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियं जाव सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ।

१३. श्रमण भगवान महावीर की आज्ञा प्राप्त होने पर गौतम स्वामी हर्षित व सन्तुष्ट होकर मृगापुत्र को देखने के लिए भगवान के पास से निकले। जरा भी उतावल किये बिना ईर्यासमिति का पालन करते हुए जहाँ मृगाग्राम नगर था वहाँ आये, आकर मृगाग्राम नगर के मध्यमार्ग से नगर मे प्रवेश किया। जहाँ मृगादेवी का घर था, गौतम स्वामी वहाँ पहुँचे।

GAUTAM AT THE HOUSE OF MRIGA DEVI

13. On getting permission from Shraman Bhagavan Mahavir, Gautam Swami was pleased and contented He left *Bhagavan* to go and see Mrigaputra Observing *irya samiti* (care of movement) he moved without any haste and came to Mrigagram city He entered the city from the main road and came to the house of Mriga Devi

१४. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी–"संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ?"

तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–"अहं णं देवाणुप्पिए,तव पुत्तं पासिउं हव्वमागए।"

तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता एवं वयासी–"एए णं भंते ! मम पुत्ते, पासह।"

१४. तब वह मृगादेवी भगवान गौतम स्वामी को आते हुए देखती है, देखकर हर्षित प्रमुदित हुई, वन्दना–नमस्कार करके इस प्रकार पूछा–'भगवन् ! आपके यहाँ पधारने का क्या प्रयोजन है ?'

तब भगवान गौतम बोले–देवानुप्रिये ! मै तुम्हारे पुत्र को देखने सीधा यहाँ आया हूँ !'

मृगादेवी ने तब मृगापुत्र के पश्चात् उत्पन्न हुए अपने चार पुत्रो को वस्त्रआभूषणादि से अलकृत करके गौतम स्वामी के चरणो मे नमस्कार कराया और इस प्रकार कहा–'भगवन् ! ये मेरे पुत्र है, इन्हे आप देख लीजिए !'

14. When Mriga Devi saw Gautam Swami coming she was pleased and delighted After paying homage and obeisance she asked—"Beloved of gods ! What gives me the honour of your visit ?"

Bhagavan Gautam responded—"Beloved of gods ! I have straightway come to see your son "

At this Mriga Devi adorned her four sons born after Mrigaputra and made them touch Gautam Swami's feet She said—"*Bhante* ! Look here please, these are my sons "

१५. तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–''नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए। तत्थ णं जे से तव जेट्ठे मियापुत्ते दारए जाइअंधे जाइअंधरूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसिं रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरसि तं णं अहं पासिउं हव्वमागए।'

तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–'से के णं गोयमा ! ते तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए तुब्भं हव्वमक्खाए, जओ णं तुब्भे जाणह ?'

तए णं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–''एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्मायरिए समणे भगवं जाव, तओ णं अहं जाणामि।''

१५. तब भगवान गौतम मृगादेवी से बोले–देवानुप्रिये ! मै तुम्हारे इन पुत्रो को देखने के लिए यहाँ नही आया हूँ, किन्तु तुम्हारा जो ज्येष्ठ पुत्र मृगापुत्र है, जो जन्मान्ध व जन्मान्धरूप है, तथा जिसको तुमने एकान्त भूमिगृह मे गुप्त रूप से सावधानी पूर्वक रखा है और अति गुप्त रूप मे खान–पान आदि के द्वारा जिसका पालन–पोषण सावधानी पूर्वक कर रही हो, उसी को देखने मै यहाँ आया हूँ !

यह सुनकर मृगादेवी ने आश्चर्यचकित (सभ्रान्त–सी) होकर पूछा–हे गौतम ! कौन ऐसे महान् ज्ञानी व तपस्वी है, जिन्होंने मेरे द्वारा एकान्त गुप्त रखी यह बात आपको यथार्थरूप मे बता दी। जिससे आपने यह गुप्त रहस्य सरलता से जान लिया ?

भगवान गौतम स्वामी ने कहा–भद्रे ! मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर स्वामी (ऐसे श्रेष्ठ ज्ञानी है) है जिन्होंने ही मुझे यह रहस्य बताया है।

15. Bhagavan Gautam told Mriga Devi—"Beloved of gods ! I have not come here to see your these sons but to see your eldest son, Mrigaputra, who is blind by birth, absolutely blind You have kept this son in an isolated cellar and are feeding and bringing him up carefully under wraps I have come here only to see him "

Mriga Devi was taken aback at these words. She asked—"O Gautam ! Who is that great sage and ascetic that has revealed my well kept secret so explicitly and enabled you to be aware of my secret without any effort ?"

Bhagavan Gautam Swami said—"Lady ! It is my religious leader (who is one such omniscient) who has told me this secret.

१६. जाव च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था। तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–'तुब्भे णं भंते ! इहं चेव चिट्ठह जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्टु जेणेव भत्त–पाणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टयं करेइ,करेत्ता कट्ठसगडियं गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण–पाण–खाइम–साइमस्स भरेइ, भरित्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी–"एह णं तुब्भे भंते ! मम अणुगच्छह,जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि।" तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं पिट्ठओ समणुगच्छइ।

१६. जिस समय मृगादेवी भगवान गौतम स्वामी के साथ यह वार्तालाप कर रही थी उसी समय मृगापुत्र बालक के भोजन का समय हो गया। मृगादेवी ने भगवान गौतम स्वामी से निवेदन किया–'भगवन् ! आप यही ठहरिये, मै अभी मृगापुत्र बालक को दिखलाती हूँ।' यो कहकर वह जहाँ भोजनशाला थी, वहाँ आई। आकर वस्त्र बदले। वस्त्र बदलकर काष्ठ–शकट–लकडी की गाडी को लेती है और उसमें आवश्यक मात्रा मे रोटी, दाल, शाक, भात, पानी आदि चारों प्रकार का भोजन रखती है। फिर उस काष्ठ–शकट को स्वय खीचती हुई जहाँ भगवान गौतम स्वामी थे वहाँ आती है और निवेदन करती है–'प्रभो ! आप मेरे पीछे–पीछे चले। मै आपको मृगापुत्र बालक को बताती हूँ। (यह सुनकर) गौतम स्वामी मृगादेवी के पीछे–पीछे चलने लगे।

16. While Mriga Devi was talking to Bhagavan Gautam Swami thus, it was time to feed child Mrigaputra Mriga Devi said to Gautam Swami—"*Bhante* ! Please wait here, I will soon show you child Mrigaputra." Having said so she went to the kitchen, changed her dress and took a wooden trolley She placed enough quantity of staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) in the trolley Pushing this trolley she came where Bhagavan Gautam Swami was waiting and said—"*Bhante* ! Please follow me. I will show you child Mrigaputra." Gautam Swami followed Mriga Devi (on being requested)

मृगापुत्र की बीभत्स अवस्था

१७. तए णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरे तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता चउप्पुडेणं वत्थेणं मुहं बंधेइ। मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी–'तुब्भे वि य णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह।' तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ।

१७. वह मृगादेवी उस लकडी की गाडी को खीचती–खीचती जहाँ भूमिगृह था वहाँ पर आती है और आकर चार परत वाले वस्त्र से मुँह को बाँधती है तथा भगवान गौतम स्वामी से भी इस प्रकार निवेदन किया–भगवन् ! आप भी मुख–वस्त्रिका से मुँह को बाँध लीजिए।' मृगादेवी के ऐसा कहने पर भगवान गौतम स्वामी ने भी मुख–वस्त्रिका से मुख को बाँध लिया।

REPUGNANT CONDITION OF MRIGAPUTRA

17. Pushing the trolley, Mrıga Devi came to the cellar and covered her mouth wıth a peace of cloth folded four tımes. She requested Bhagavan Gautam Swamı—"*Bhante* ! Please cover your mouth wıth a folded pıece of cloth " Bhagavan Gautam Swamı followed the advıse and covered his mouth with a folded pıece of cloth

विवेचन–यहाँ चार पुट चार तहो वाले वस्त्र से मुख बाँधने का आशय है मुँह और नाक को इस प्रकार ढँक ले कि वहाँ की भयकर असह्य दुर्गन्ध से बचा जाय। कारण दुर्गंध को नाक ही ग्रहण करता है, मुख नहीं। मृगादेवी ने स्वय भी नाक पर ही वस्त्र बाँधा है, क्योंकि दुर्गंध से बचने का यही उपाय था। गौतम स्वामी ने मुखपत्ती तो पहले ही बाँध रखी थी। *(आचार्य श्री आत्माराम जी म टीका, पृ ४४)*

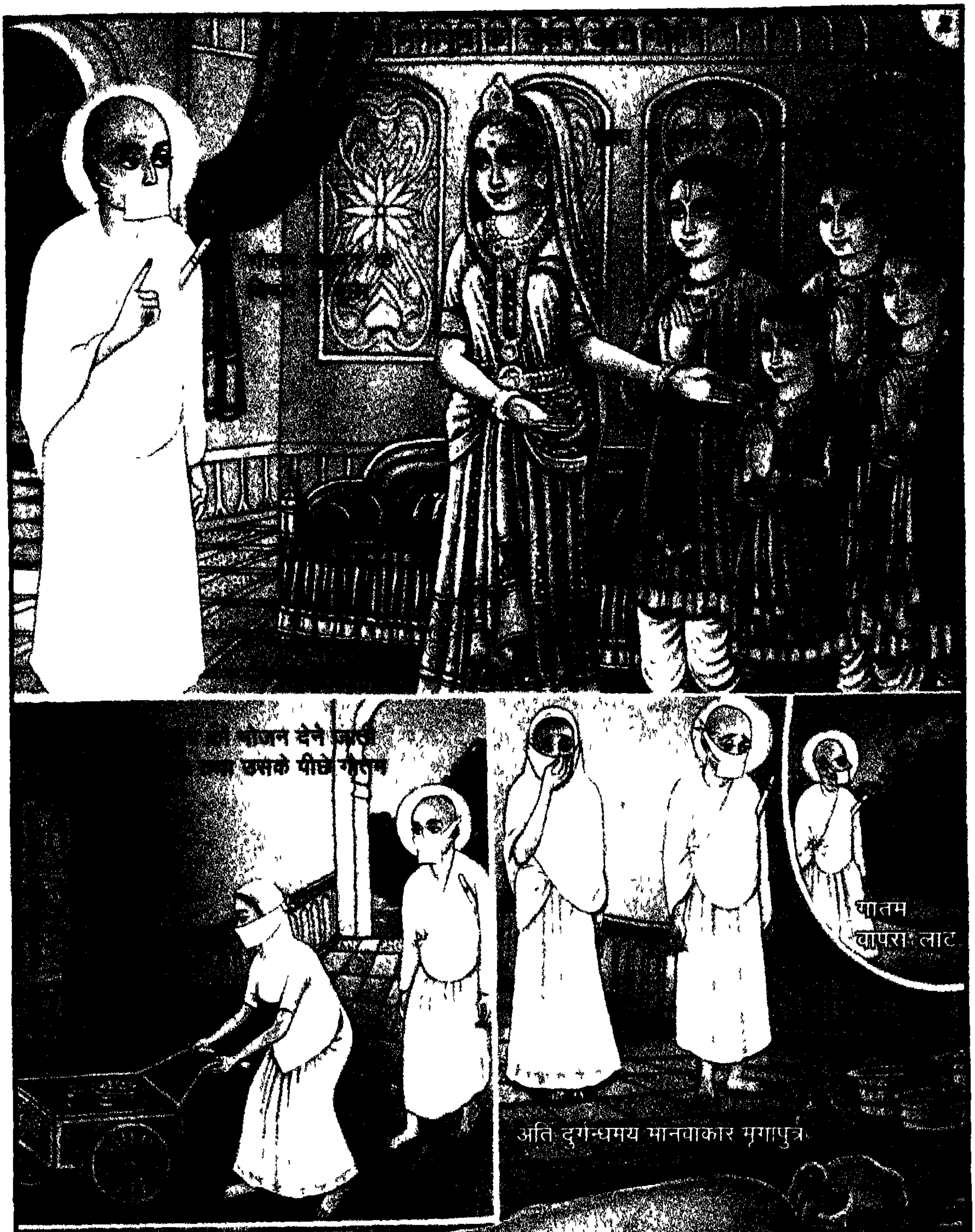
Elaboration—The purpose of coverıng mouth, thıs ıncludes nose as well, wıth four folds of cloth ıs to mınımıze the offensıve stench pervadıng that place It ıs nose and not mouth that ıs receptor of smell Mrıga Devı had also covered her nose because only that could mınımıze the stench As far as coverıng only the mouth ıs concerned, ıt was an essentıal part of Gautam Swamı's code *(Hındı Tıka by Acharya Shrı Atmaram jı M , p 44)*

१८. तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ। तए णं गंधे निग्गच्छइ से जहानामए अहिमडे इ वा जाव गंधे पन्नत्ते !

तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण–पाण–खाइम–साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण–पाण–खाइम–साइमंमि मुच्छिए तं विउलं असण–पाण खाइम–साइमं आसएणं आहारेइ, आहारित्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेइ; तं पि य णं से पूयं च सोणियं च आहारेइ।

१८. तत्पश्चात् मृगादेवी ने पराङ्मुख होकर (पीठ पीछे मुँह करके) जब उस भूमिगृह का दरवाजा खोला तब उसमे से जो दुर्गन्ध निकलने लगी वह गन्ध मरे हुए सर्प (गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा आदि के सडे हुए कलेवर) की दुर्गन्ध से भी बहुत अधिक अनिष्ट, अप्रिय असह्य थी।

तब उस अशन, पान, खादिम, स्वादिम की सुगन्ध से आकृष्ट व मूर्च्छित हुआ वह मृगापुत्र आसक्तिपूर्वक उस आहार को मुख द्वारा ग्रहण करता है। आहार लेते ही उस आहार को (तीव्र जठराग्नि से) पचा लेता


अति दुर्गन्धमय मानवाकार मृगापुत्र

चित्र परिचय-२

Illustration No. 2

मृगापुत्र को देखने आये गौतम

दृश्य–१

भगवान की अनुमति लेकर गौतम मृगापुत्र को देखने के लिए रानी मृगादेवी के भवन पर पधारे और कहा मै तुम्हारे पुत्र को देखने आया हूँ। श्रीदेवी ने अपने अन्य चार पुत्रो को उपस्थित कर कहा भन्ते ! ये मेरे पुत्र है !

गौतम कहते है मै इन्हे नही, किन्तु तुम्हारी सबसे बडी सन्तान मृगापुत्र को देखने आया हूँ।

मृगादेवी बोली टीक है चलिए मै आपको उसे दिखाती हूँ। उसके भोजन का समय भी हो गया है। आप अपनी नाक का ढ़ंक लीजिए क्योकि वहाँ असहनीय दुर्गन्ध उछल रही है।

मृगादेवी न वस्त्र वदले। लकडी की हाथ गाडी मे भोजन सामग्री रखी और भृगृह की तरफ चली। उसके पीछे पीछे गौतम चले। गौतम ने मृगापुत्र के बीभत्स दुर्गन्ध मय रूप को दखा। देखकर वापस अपने स्थान को आ गये।

श्रुतस्कन्ध १ अ १ सूत्र १०

GAUTAM COMES TO SEE MRIGAPUTRA

On getting permission from *Bhagavan*, Gautam Swami came to the house of queen Mriga Devi and said that he had come to see her son Mriga Devi presented her four other sons and said—"*Bhante* ! These are my sons"

Gautam says—"I have not come to see them but to see your eldest son, Mrigaputra

Mriga Devi said—"*Bhante* ! Please follow me I will show him to you It is feeding time as well Please cover your mouth because that place has intolerable stench"

Mriga Devi changed her dress, loaded a trolley with food and walked towards the cellar Gautam followed her and saw Mrigaputra in his repulsive and stinking condition After seeing he returned to his place

—Sec I Ch 1 Sutra 10

है और फिर वह आहार तत्काल पीव (मवाद) व रुधिर के रूप मे परिवर्तित हो जाता है। मृगापुत्र बालक ने पीव व रुधिर रूप में परिवर्तित उस आहार का वमन कर दिया और अपने ही द्वारा वमन किये हुए उस पीव व रुधिर को भी पुन चाट लिया।

18. Mriga Devi then opened the gate of the cellar with her face turned away A whiff of stench came from the cellar. This stench was much more obnoxious, repulsive and intolerable than that of a dead snake (or a decayed carcass of cow, dog, cat, or rat)

Attracted and mesmerized by the aroma of the staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*), Mrigaputra swallowed the food through his mouth He at once digested that food and it transformed into pus and blood Mrigaputra soon vomited what he ate in the form of pus and blood and licked back the whole thing

मृगापुत्र–विषयक जिज्ञासा

१९. तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो णं इमे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे नरगपडिरूवयं वेयणं वेयइ।' त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता–नमंसित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झंमज्झेण अणुप्पविसामि, अणुपविसित्ता जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए। तए णं से मियादेवी मम एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा, तं चेव सव्वं जाव पूयं च सोणियं च आहारेइ। तए णं इमे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था– अहो णं इमे दारए पुरा जाव विहरइ।

से णं भंते ! पुरसे पुव्वभवे के आसी ? किंनामए वा किंगोत्तए वा ? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता केसिं वा पुरा पोराणाणं जाव विहरइ ?

१९. मृगापुत्र बालक की ऐसी (बीभत्स तथा करुणाजनक) दुर्दशा को देखकर भगवान गौतम स्वामी के मन मे चिन्तन व जिज्ञासा रूप मे ये विकल्प उत्पन्न हुए–"अहो ! यह बालक पूर्वजन्मो के दुश्चीर्ण–(दुष्टता पूर्वक किये गये) व दुष्प्रतिक्रान्त–(जिन कर्मों को नष्ट करने का कोई सरल उपाय भी नहीं हो) ऐसे घोर अशुभ पापकर्मों के पापरूप फल को भोग रहा है। मैने प्रत्यक्ष मे नरक व नारकी तो नही

देखी, परन्तु यह मृगापुत्र तो सचमुच नारकीय वेदनाओ का अनुभव करता हुआ दिखाई दे रहा है।" ऐसा चिन्तन करते हुए भगवान गौतम ने मृगादेवी से कहा–"अब मै जा रहा हूँ।" और फिर उसके घर से प्रस्थान किया। मृगाग्राम नगर से चलकर जहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी विराजमान थे, वहाँ आ गये। आकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी को प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दन, नमस्कार किया और वन्दन करके इस प्रकार बोले–

–"भगवन ! आपश्री से आज्ञा प्राप्त करके मैं मृगाग्राम नगर मे से चलता हुआ जहाँ मृगादेवी का घर था वहाँ पहुँचा। मुझे आते हुए देखकर मृगादेवी प्रसन्न हुई, यावत् मृगापुत्र को अपने ही पीव व शोणित–रक्त का आहार करते हुए देखकर मेरे मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ–अहह ! यह बालक पूर्वजन्मोपार्जित अत्यन्त घोर पापकर्मों का फल भोगता हुआ बीभत्स जीवन बिता रहा है ?

भगवन् ! यह मृगापुत्र पूर्वभव मे कौन था ? किस नाम व गोत्र का था ? किस ग्राम अथवा नगर का रहने वाला था ? क्या भोगकर, किन–किन कर्मों का आचरण कर और किन–किन पुराने कर्मों के फल को भोगता हुआ यह कष्टमय जीवन बिता रहा है।

INQUIRY ABOUT MRIGAPUTRA

19. Looking at this horrible (repulsive and pathetic) condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This child is suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired due to intentionally committed evil deeds (*dushchirna*) during his earlier births, and which are not easily destroyed (*dushpratikrant*). I have not seen hell or infernal beings in person but here I can see that this Mrigaputra is, indeed, suffering infernal miseries." With these thoughts Bhagavan Gautam Swami said to Mriga Devi—"Now I am going" And he left that house Crossing Mrigagram city he came where Shraman Bhagavan Mahavir was seated After going around *Bhagavan* and paying him homage and obeisance he said—

"Bhante ! On getting your permission I crossed Mrigagram city and reached the house of Mriga Devi, who was pleased to see me coming and so on up to... When I saw Mrigaputra licking pus and blood I thought—Oh ! This child leads a miserable life suffering the fruits of intense sinful *karmas* he acquired during his earlier births

"Bhante ! Who was this Mrigaputra in his earlier birth ? What was his name and family ? In which village or city he lived ? He leads this miserable life as a consequence of what *karmas* he acquired, which activities he indulged in, and what deeds he committed ?"

२०. 'गोयमा !' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–'एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे होत्था रिद्धत्थिमिय..... । वण्णओ। तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था। वण्णओ। तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे नामं खेडे होत्था। रिद्धत्थमियसमिद्धे। तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचगामसयाइं आभोए यावि होत्था। तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे इक्काई नामं रट्ठकूडे होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। से णं इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ।

२०. श्रमण भगवान महावीर ने भगवान गौतम को सम्बोधित कर कहा–'हे गौतम ! उस काल एवं उस समय में इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे 'शतद्वार' नामक एक समृद्धिशाली नगर था। उस नगर में धनपति नाम का एक राजा राज्य करता था। उस नगर से कुछ दूरी पर दक्षिण और पूर्व–दिशा के मध्य–अग्निकोण मे विजयवर्द्धमान नामक एक खेट–(नदी व पर्वतो से घिरा हुआ छोटा) नगर था, जो ऋद्धि–समृद्धि आदि से युक्त था। उस विजयवर्द्धमान खेट के अधीन पाँच सौ ग्राम थे। उस खेट मे इक्काई–एकादि नाम का राष्ट्रकूट–(राजा की ओर से नियुक्त प्रतिनिधि) था, जो बहुत ही अधार्मिक यावत् अधर्मिष्ट तथा दुष्प्रत्यानन्दी–(दुष्कर्मो मे ही सदा आनन्द मानने वाला अथवा जिसको प्रसन्न करना भी कठिन हो ऐसा घोर असंतोषी) था। वह एकादि राष्ट्रकूट विजयवर्द्धमान खेट के पाँच सौ ग्रामो का शासन और पालन करता था।

PREVIOUS BIRTH OF MRIGAPUTRA

20. Shraman Bhagavan Mahavır saıd to Bhagavan Gautam—"Gautam ! Durıng that perıod of tıme there was a prosperous city called Shatadvar ın Bharatvarsh area in Jambu contınent A kıng named Dhanapati was the ruler of that cıty. On ıts south-east dırectıon (*Agnı Kone*) was a grand and prosperous *khet* (a settlement surrounded by a temporary mud wall; borough). There were five hundred villages under that borough called Vijayavardhaman In that borough there was a governor (*rashtrakoot*) named Ekadı (Ikkaı) who was ırrelıgıous and *dushprtyanandı* (a person who enjoys evil deeds or who ıs so discontented that ıt is dıfficult to please him). That governor Ekadı ruled and protected the five hundred villages of Vijayavardhaman borough.

एकादि का अत्याचार

२१. तए णं से इक्काई विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य विद्धीहि य उक्कोडाहि य पराभवेहि य दिज्जेहि य भिज्जेहि य कुंतेहि य लंछपोसेहि य आलीवणेहिय

पंथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे विहम्मेमाणे तज्जेमाणे तज्जेमाणे तालेमाणे तालेमाणे निद्धणे करेमाणे करेमाणे विहरइ।

तए णं से इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राई–सर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–सेट्ठि–सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं गामेल्लगपुरिसाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य सुणमाणे भणइ न 'सुणेमि', असुणमाणे भणइ 'सुणेमि' एवं पस्समाणे, भासमाणे, गिण्हमाणे जाणमाणे'। तए णं से इक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ।

२१. वह एकादि नाम का प्रान्ताधिति विजयवर्द्धमान खेट के पाँच सौ ग्रामो को करो के भार से दबाये रखता था। किसानो को जितना धान्य आदि देता उससे दुगुना वापस लेता था। रिश्वत–घूसखोरी करता, प्रजा का निर्दयता पूर्वक दमन करता, अधिक ब्याज वसूल करता, उन पर हत्यादि अपराध के आरोप लगा देता, धन लूटता, धन वसूलने के लिए किसी को स्थान आदि का प्रबन्धक बना देता, चोर आदि दुष्ट व्यक्तियो का पोषण व रक्षण करता रहता, ग्रामादि को जला देता, पथिको को मार–पीटकर लूट लेता, इस प्रकार प्रजा को व्यथित पीडित करता रहता था। धर्म से विमुख करता रहता था चाबुक आदि से ताडित करता और धनवानो को निर्धन करता हुआ प्रजा पर अत्यधिक अधिकार जमाये हुए था।

तदनन्तर वह राष्ट्रकूट एकादि विजयवर्द्धमान खेट के राजा, ईश्वर, तलवर अथवा राजा की ओर से जिन्हें उच्च सन्मान,पदवी, आसन–स्थान–विशेष प्राप्त हुआ हो ऐसे नागरिक लोगो, माडबिको, कौटुम्बिको, श्रेष्ठी, सार्थनायको तथा अन्य अनेक ग्रामीण पुरुषो के कार्यो मे, कारणो मे, गुप्त मन्त्रणाओ मे, निश्चयो और विवादास्पद निर्णयो अथवा व्यावहारिक बातो मे सुनता हुआ भी कहता था कि "मैने नही सुना" और नही सुनता हुआ कहता था कि "मैने सुना है।" इसी प्रकार देखता हुआ, बोलता हुआ, ग्रहण करता हुआ और जानता हुआ भी वह कहता था कि 'मैने देखा नही', मैने बोला नही, मैने ग्रहण नही किया और जाना भी नही। इसी प्रकार के धूर्तता पूर्ण क्रूर कर्म करने वाला, मायाचारो को ही मुख्य कर्तव्य मानने वाला, प्रजा को पीडित करने की विद्या मे निपुण और मनमानी करने को ही सदाचरण मानने वाला, वह एकादि राष्ट्रकूट अत्यन्त कलुषित पापकर्मों को उपार्जित करता हुआ जीवन–यापन करता था।

(नोट : सूत्र मे **एयकम्मे** आदि चार विशेषण देकर यह बताया है कि राष्ट्रकूट ऐसे घोर दुष्कर्मों मे आकण्ठ डूबा हुआ था।)

TORMENTS BY EKADI

21. That governor Ekadı loaded the five hundred vıllages of Vijayavardhaman borough wıth taxes He would take back twıce of whatever graıns he gave to the farmers He took brıbe and tortured the people ruthlessly He charged excessive ınterest from them and charged them of murder and other crimes He extorted money from people and

appointed agents at various places for collecting such funds. He nurtured and protected thieves and other rogues He would set fire to villages, torment and rob travelers. This way he continued to exploit and torment people He had imposed his tortuous rule by whipping people, impoverishing them and forcing them to go against religion

Even after hearing the opinions of people like regional kings (*raja*), influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), established merchants (*shreshti*), caravan chiefs (*sarthavaha*) and other villagers during their activities, deliberations, secret consultations, decisions, controversies and social interactions, that governor Ekadi would say—'I have not heard.' When he had not heard anything he would say—'I have heard.' In the same way he would say 'I have not seen, not spoken, not accepted, and not understood' for things he had seen, spoken, accepted, and understood Thus indulging in such wicked and cruel deeds (*eyakamme*), considering deceitful activities to be his prime duty (*eyappahane*), gaining expertise in tormenting people (*eyavijje*), and accepting willful action to be good conduct (*eyasamayare*), that governor Ekadi led an extremely ignoble life acquiring highly demeritorious *karmas*.

(**Note :** Using four adjectives like *'eyakamme'* the aphorism conveys that the governor was immersed up to his neck in such extremely wicked activities.)

एकादि को भयकर रोग

२२. तए णं तस्स रट्ठकूडस्स अन्नया कयाइ सरीरगंसि जमग–समगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा–

सासे कासे जरे दाहे कुच्छिसूले भगंदरे।
अरिसे अजीरए दिट्ठी, मुद्धसूले अकारए॥
अच्छिवेयणा कण्ण–वेयणा कंडू दओयरे कोढे॥

तए णं से इक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–महापह–पहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह–'इह खलु देवाणुप्पिया ! इक्काई रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा–सासे कासे जरे जाव कोढे। तं जो

णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणओ वा जाणयपुत्तो वा तेगिच्छी वा तेगिच्छिपुत्तो वा इक्काई रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए तस्स णं इक्काई रट्ठकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।"

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति !

२२. उसके बाद किसी समय उस एकादि राष्ट्रकूट के शरीर में एक साथ ही सोलह प्रकार के रोगातक-(अत्यन्त कष्टकर असाध्य रोग) उत्पन्न हो गये। जैसे कि-(१) श्वास, (२) कास (खाँसी), (३) ज्वर, (४) दाह, (५) कुक्षिशूल, (६) भगन्दर, (७) अर्श, (बवासीर), (८) अजीर्ण, (९) दृष्टिशूल, (१०) मस्तक-शूल, (११) भोजन की अरुचि, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) खुजली, (१५) जलोदर, और (१६) कुष्ठरोग-(कोढ)।

तब वह उक्त सोलह प्रकार के भयकर रोगों से पीडित हुआ एकादि राष्ट्रकूट सेवको को बुलाता है और बुलाकर कहता है-"देवानुप्रियो ! तुम जाओ और विजय वर्द्धमान खेट के शृगाटक-(त्रिकोणमार्ग) त्रिक-त्रिपथ-(जहाँ तीन मार्ग मिलते हों) चतुष्क-चतुष्पथ-(जहाँ चार मार्ग एकत्रित होते है) चत्वर-(जहाँ चार से अधिक मार्गों का संगम होता हो) महापथ-राजमार्ग और साधारण मार्ग पर जाकर अत्यन्त ऊँचे स्वरो से इस प्रकार घोषणा करो-"हे देवानुप्रियो ! एकादि राष्ट्रकूट के शरीर मे श्वास, कास, ज्वर यावत् कोढ आदि १६ भयकर रोग उत्पन्न हुए हैं। यदि कोई वैद्य (मुख्य वैद्य) या वैद्यपुत्र सहायक-(वैद्य नौसिखिया) ज्ञायक-(मंत्र-तत्र आदि का ज्ञाता) या ज्ञायक-पुत्र, चिकित्सक-(चिकित्सा या शल्यक्रिया मे निपुण) या चिकित्सक-पुत्र उन सोलह रोगो में से किसी एक भी रोग को उपशान्त कर देगा तो एकादि राष्ट्रकूट की तरफ से उसको बहुत सा धन दिया जायेगा। इस प्रकार दो तीन बार उद्घोषणा करके मेरी आज्ञा का पालन होने की सूचना दो।"

उन कौटुम्बिक पुरुषों-सेवको ने आदेशानुसार कार्य सम्पन्न करके उसे सूचित किया।

EKADI SUFFERS FROM CHRONIC AILMENTS

22. After some time that governor Ekadi suffered from sixteen different chronic ailments simultaneously. They are—(1) asthma (*shvas*), (2) bronchitis (*kaas*), (3) fever (*jvar*), (4) burning sensation (*daaha*), (5) stomach ache (*kukshi shool*), (6) fistula of the anus (*bhagandar*), (7) bleeding piles (*arsh* or *bavasir*), (8) indigestion (*ajeern*), (9) Glaucoma (*drishti shool*), (10) headache (*mastak shool*), (11) loss of appetite (*bhojan-aruchi*), (12) pain in the eyes (*akshi vedana*), (13) pain in the ears (*karna vedana*), (14) eczema (*khujali*), (15) dropsy (*jalodar*), and (16) leprosy (*kusht roag*).

When he suffered from these ailments governor Ekadi called his servants and instructed, "Beloved of gods ! Go and make this


एकादि राष्ट्रकूट के अत्याचार
निर्दोष प्रजा
का उत्पीडन
गाँव की झोपडियाँ जला दीं।
द्वारा
की पुकार
मृत्यु की कल्पना
से संत्रस्त

चित्र परिचय-३ | Illustration No. 3

अत्याचारी एकादि राष्ट्रकूट

दृश्य–१

गौतम ने पूछा-भते ! इस मृगापुत्र ने पूर्वजन्म मे ऐसे क्या घोर पाप कर्म किये थेस ?

भगवान फरमाते है- प्राचीन काल मे शतद्वार नगरी क राजा का एक एकादि राष्ट्रकूट नामक राज प्रतिनिधि था।

दृश्य–२–३

राष्ट्रकूट स्वभाव से अत्यन्त कठोर और अन्यायी शासक था। वह राहगीरो को लूटता। उन्हे वृक्षो से बाँध देता और चोरो को आश्रय देता था। गावो मे आग लगाकर लोगो को आतकित करता रहता। जो धन नही देते उन्हे बॉधकर चाबुको स, बेतो से पीटता इत्यादि।

दृश्य–४

जीवन के अन्तिम समय मे इकाई सालह महारागो स ग्रस्त होकर रोग शय्या पर पडा है। वैद्य उपचार करत है, परन्तु उसका असाध्य रोग दूर नही हुआ। तब वैद्यो क सामने हाथ जोडकर गिडगिडाता है- कुछ भी धन ले लो, मुझे ठीक कर दो।

दृश्य–५

असाध्य रोगो स पीडित निराश इकाई का अब सामने मौत अट्टहास करती दिखाई पडती है।

श्रुतस्कन्ध १ अ १ सूत्र २४

TYRANT EKADI RASHTRAKOOT

SCENE-1

Gautam asks—*Bhante* what grave sins this Mrigaputra had committed during his past birth ?

Bhagavan says—In ancient times in Shatadvar city there was a governor named Ekadi

SCENE-2-3

Governor Ekadi was a cruel and tyrannical ruler He used to rob wayfarers and tie them to trees He protected thieves He terrorized people by setting fire to villages He shackled and thrashed those who did not pay money to him

SCENE-4

During the last days of life Ekadi lies on bed suffering from sixteen grave ailments Doctors try their best but fail to cure him Joining his palms he pathetically requests—"Take all the money you want but cure me please "

SCCENE-5

Dejected and depressed by painful ailments, Ekadi sees the laughing face of death

—Sec 1 Ch 1 Sutra 24

announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in the Vijayavardhaman borough—

'O Beloved of gods ! Governor Ekadi is suffering from the pain of sixteen different ailments including asthma, bronchitis, .. and so on up to. leprosy. Any *Vaidya* (qualified *Ayurvedic* doctors) and junior *Vaidya*, or senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), or senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to cure even one of these diseases will be amply and richly rewarded by the governor.' Make this announcement two or three times and report back to me

The servants did as told and reported back.

२३. तए णं से विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य जाव सत्थकोसहत्थगया सएहिंतो सएहिंतो गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव इक्काई रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता इक्काइ रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगाणं निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता, इक्काइ रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणाहि य अवद्दहणाहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहिं य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरोवत्थीहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य मूलेहि य फलेहि य बीएहि य सीलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए।

तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणया य जाणयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

२३. उस विजयवर्द्धमान खेट मे इस प्रकार की उद्घोषणा सुनकर तथा समझकर अनेक वैद्य आदि अपने-अपने शस्त्रकोष-(औजार रखने की पेटी या थैली) को हाथ मे लेकर अपने घरो से निकलते है और निकलकर विजयवर्द्धमान खेट मे जहाँ एकादि राष्ट्रकूट का घर था, वहाँ पर आते है। आकर एकादि राष्ट्रकूट के शरीर को स्पर्श करते हैं, सस्पर्श करके निदान-(रोगो के उत्पत्ति का कारण) की पूछताछ करते हैं और पूछकर एकादि राष्ट्रकूट के इन सोलह रोगो में से किसी एक रोग को शान्त करने के लिए अनेक प्रकार के **अभ्यंगन**-(मालिश), **उद्वर्तन**-(उवटन), **स्नेहपान**-(घृतादि स्निग्ध पदार्थों को पिलाना), **वमन**-(उल्टी कराना), **विरेचन**-(जुलाब आदि देना), **स्वेदन**-(पसीना निकलना), **अवदहन**-(लोहा गर्म करके चमडी पर रखना), **अवस्नान**-(अनेक प्रकार के द्रव्यों से संस्कारित जल से स्नान कराना), **अनुवासन**-(गुदा द्वारा पेट

मे घृत-तैलादि का प्रवेश कराना) **निरूह**-(औषधियाँ डालकर पकाये गये काढा व दूध आदि से विरेटन कराना) **बस्तिकर्म**-(मलद्वार से बत्ती आदि लगाना), **शिरोवेध**-(नाडी का वेधन करना), **तक्षण**-(क्षुरा, चाकू आदि सामान्य शस्त्रो द्वारा काटना), **प्रतक्षण**-(विशेष रूप से बने बारीक शस्त्रो से त्वचा विदारण करना) **शिरोबस्ति**-(सिर मे चर्म कोश बाँधकर उसमे औषधि-द्रव्य-मिले तैलादि को भरना) **तर्पण**-(स्निग्ध पदार्थों से शरीर का वृहण-तृप्त करना) **पुटपाक**-(अमुक रस का पुट देकर पकाई हुई औषध), **छल्ली**-(छाल), **मूलकन्द**-(मूली, गाजर,आलू आदि जमीकन्द), **शिलिका**-(चिरायता आदि औषध), **गुटिका**-(अनेक द्रव्यो को महीन पीसकर औषध के रस की भावना आदि से बनाई गई गोलियाँ), **औषध**-(एक द्रव्य से निर्मित दवा अथवा वानस्पतिक जडी-बूटी) और **भैषज्य**-(अनेक-द्रव्यो के मिश्रण से बनी रसायन आदि) आदि के प्रयोग से प्रयत्न करते है, बहुत प्रयत्न करते है परन्तु उपर्युक्त अनेक प्रकार के प्रयोगो व उपचारो से वे इन सोलह रोगो मे से किसी एक रोग को भी उपशान्त करने मे सफल नही हुए। (जब वे वैद्यपुत्रादि) **श्रान्त**-(थक गये), **तन्त**-(मानसिक रूप से भी खिन्न हो गये) तथा **परितन्त**-(सभी प्रकार से हताश-निराश) हो गये तो जिधर से आये थे उधर ही वापस चले गये।)

(प्राचीनकाल के चिकित्सा सम्बन्धी विस्तृत वर्णन के लिए देखे-आचार्य श्री आत्माराम जी म कृत टीका पृ ७१-७३)

23. Hearing and understanding this announcement in Vijayavardhaman borough many healers (etc) collected their instrument boxes and left their homes They passed through the streets of Vijayavardhaman borough and came to the residence of Governor Ekadi They thoroughly examined and questioned the patient After diagnosis they selected different methods and regimens of treatment and tried to cure just one of the said ailments The methods and processes employed are—

(1) *Abhyangan* or application of medicinal pastes, (2) *Udvartan* or rubbing with medicinal pastes, (3) *Snehapan* or giving medicated oils, (4) *Vaman* or emesis, (5) *Virechan* or purgation, (6) *Swedan* or perspiring, (7) *Avadahan* or cauterizing with hot metal, (8) *Apasnan* or washing with medicated water, (9) *Anuvasana* or enema of medicated oils, (10) *Niruha* or to cause sweating by applying medicated oil, (11) *Vastikarma* or common enema, (12) *Shiravedh* or bleeding toxic blood by cutting nerve-end, (13) *Takshan* or scraping of the epidermis with knife or other such instrument, (14) *Pravakshan* or cutting of the epidermis using special micro-instruments, (15) *Shirovasti* or covering head with leather bag filled with medicated oil or other such liquid, (16) *Tarpan* or pouring of medicated oils, (17) *Putpaak* or use of cooked medicines, (18) *Chhaal* or medicinal use of bark of trees, (19) *Mool kand* or use of radish, carrot,

potato and other roots, (20) *Shilika* or herbal medicines like *chirayata*, (21) *Gitika* or use of pills or tablets, (22) *Aushadh* or medicines of vegetable origin and single ingredient, and (23) *Bhaishajya* or other medicines with many ingredients including those of metallic and mineral origin. However, in spite of all these methods of treatment they could not cure even one single ailment. When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came

(For more detailed information about ancient art of healing refer to *Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M. p 71-73)

एकादि की मृत्यु : मृगापुत्र का वर्तमान भव

२४. तए णं इक्काई रट्ठकूडे वेज्ज पडियाइक्खिए परियारगपरिच्चत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे सोलहरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य जाव अन्तेउरे य मुच्छिए रज्जं च रट्ठं च आसाएमाणे पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे अट्ट–दुहट्ट–वसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने !

२४. जब निराश होकर वैद्यो आदि ने मना कर दिया। सेवा करने वाले परिचारक भी छोडकर चले गये, औषध और भैषज्य खाते–खाते वह थककर उदास हो गया। तब वह एकादि राष्ट्रकूट सोलह रोगातको से परेशान हुआ राज्य, राष्ट्र आदि मे, अन्त पुर–रणवास मे मूर्छित–आसक्त हुआ एव राज्य, राष्ट्र का सुख भोगने की तीव्र अभिलाषा करता हुआ वह आर्त–मनोव्यथा से व्यथित, दु खार्त–शारीरिक पीडा से पीडित हुआ और वशार्त–इन्द्रियाधीन होने से परतन्त्र हुआ जीवन व्यतीत करता हुआ २५० वर्ष की सम्पूर्ण आयु भोगकर मृत्यु प्राप्त करके इस रत्नप्रभा पृथिवी–(प्रथम नरक) मे उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नारको मे नारकरूप से उत्पन्न हुआ।

वह एकादि का जीव नरक की भवस्थिति सम्पूर्ण होने पर नरक से निकलते ही सीधा इस मृगाग्राम नगर मे विजय क्षत्रिय की मृगादेवी नाम की रानी की कुक्षि मे पुत्ररूप मे उत्पन्न हुआ है।

DEATH OF EKADI AND REBIRTH AS MRIGAPUTRA

24. When the dejected healers expressed their inability to treat, the nursing staff also left him alone. He got tired and dejected of taking medicines Tired of the sufferings of the sixteen ailments and in a state of

deep attachment and craving for kingdom, state, and his harem; mentally tormented (*artt*), physically tortured (*duhkhart*), and enslaved by sense organs (*vashart*), that governor Ekadi lived this agonizing life for 250 years. He then died and was reborn as an infernal being among the infernal beings of the Ratnaprabha Prithvi (the first hell) having a maximum life-span of one *Sagaropam*

After completing the life-span as an infernal being, the soul that was Ekadi at once took birth as son from the womb of Mriga Devi, the wife of Vijaya Kshatriya

माता को तीव्र वेदना

२५. तए णं तीसे मियादेवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया, उज्जला जाव दुरहियासा। जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्ने, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुन्ना अमणामा जाया यावि होत्था।

२५. उस जीव के मृगादेवी के उदर मे आने पर मृगादेवी के शरीर मे अत्यन्त ज्वलन्त–उत्कट व जाज्वल्यमान वेदना उत्पन्न हुई। जिस दिन से मृगापुत्र बालक मृगादेवी के उदर मे गर्भरूप से उत्पन्न हुआ, तभी से वह मृगादेवी विजय क्षत्रिय (अपने पति) को अनिष्ट, अमनोहर, अप्रिय, अमनोज्ञ–मन को न भाने वाली–मन से उतरी हुई और अप्रिय हो गयी।

ACUTE PAIN TO THE MOTHER

25. When that soul descended into the womb of Mriga Devi her body suffered acute and excruciating pain Since the day child Mrigaputra was conceived she became unpleasant, loathsome, detestable, and repugnant to Vijaya Kshatriya (her husband)

गर्भ गलाने के उपाय

२६. तए णं तीसे मियाए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा विसासिया अणुमया आसी। जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्ने, तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा जाव अमणामा जाया यावि होत्था। नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नामं व गोयं वा गिण्हित्तए वा, किमंगपुण दंसणं वा परिभोगं वा। तं सेयं खलु ममं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणाहि य पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा एवं संपेहेइ, संपेहित्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य खायमाणी य पीयमाणी य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए ४ नो चेव णं से गब्भे सडइ

वा ४। तए णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा ४ ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंवसा तं गब्भं दुहं–दुहेणं परिवहइ।

२६. तदनन्तर किसी समय मे मध्यरात्रि के समय कुटुम्ब चिन्ता से जागती हुई उस मृगादेवी के हृदय में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि–'मैं पहले तो विजय क्षत्रिय को इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और अत्यन्त वल्लभ लगती थी। मैं उसके लिए ध्येय–(हर समय मन मे रहने योग्य), चिन्तनीय–(विश्वसनीय व सम्माननीय) थी, परन्तु जबसे यह गर्भस्थ जीव मेरी कुक्षि मे गर्भ के रूप मे आया है, तब से विजय क्षत्रिय को मैं अप्रिय हो गई यावत् मन से उतर गई हूँ। इस समय विजय क्षत्रिय मेरे नाम तथा गोत्र को सुनना और स्मरण करना भी नही चाहते ! तो फिर देखने व भोगविलास की तो बात ही क्या है ? अत· मेरे लिए यही उचित है कि मै इस गर्भ को अनेक प्रकार की **शातना**–(गर्भ को खण्ड–खण्ड कर गिरा देने वाले प्रयोगों से) **पातना**–(अखण्ड रूप से गर्भ को गिरने वाली क्रियाओ से) **गालना**–(गर्भ को गलाने वाले उपायो से) व **मारणा**–(मारने वाले प्रयोगो) से नष्ट कर दूँ। इस प्रकार वह शातना, पातना, गालना और मारणा के लिए विचार करती है और विचार करके गर्भपात के लिए गर्भ को गिरा देने वाली क्षारयुक्त (खारी), कडवी, कसैली, औषधियो को खाती है, पीती है तथा उस गर्भ को हर प्रकार से नष्ट करने की इच्छा करती है। परन्तु वह गर्भ उपर्युक्त सभी उपायों से भी नष्ट नही हो सका। तब वह मृगादेवी शरीर से श्रान्त, मन से दु खित तथा शरीर और मन से खिन्न–हताश होती हुई इच्छा न रहते हुए भी विवशता के कारण अत्यन्त दु ख के साथ गर्भ को वहन करने लगी।

MEANS OF ABORTION

26. Some days later one midnight when she was awake and worrying about the family, Mriga Devi thought—"Earlier I appeared pleasant, beautiful, lovable, adorable highly desirable to Vijaya Kshatriya I was cherished and trusted by him But since this soul has come in my womb as a fetus I have become unpleasant and so on up to . repugnant to Vijaya Kshatriya What to say of seeing and sharing moments of enjoyment with me when Vijaya Kshatriya does not want to hear and remember even my name and family now. Therefore, it would be good for me to get rid of this fetus by process of *shaatana* (to disintegrate and throw out in pieces), *paatana* (to abort in one piece), *gaalana* (to dissolve and throw out), and *maarana* (to kill). Thus she decided to get rid of the fetus by *shaatana* and so on up to .. *maarana* and in order to do so she started taking salty or alkaline, bitter and astringent medicines with a desire to be rid of the fetus But all these efforts failed to destroy the fetus. When Mriga Devi failed to get rid of the fetus, she became tired, exhausted, disappointed, dejected, and sad. Out of compulsion and in a distressed state of mind, she carried the fetus.

२७. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भिंतरप्पवहाओ, अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे-दुवे कण्णंतरेसु, दुवे-दुवे अच्छि-अंतरेसु, दुवे-दुवे नक्कंतरेसु, दुवे-दुवे धमणि-अंतरेसु अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च परिस्सवमाणीओ परिस्सवमाणीओ चेव चिट्ठंति।

तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भूए। जे णं से दारए आहारेइ, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ, पूयत्ताए सोणियत्ताए य परिणमइ। तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ।

२७. गर्भ मे रहे हुए उस बालक की आठ नाडियाँ अन्दर की ओर बह रही थी और आठ नाडियाँ बाहर की ओर बह रही थी। इन सोलह नाडियो मे से दो नाडियॉ कान के छिद्रो मे, दो-दो नाडियाँ नेत्र छिद्रो मे, दो-दो नासिका छिद्रो मे तथा दो-दो धमनियो-(हृदयकोष्ठ के भीतर की नाडियो) से बार-बार पीव व लोहू बहा रही थी। गर्भ मे ही उस बालक को भस्मक नामक व्याधि उत्पन्न हो गयी थी, जिसके कारण वह बालक जो कुछ खाता, वह शीघ्र ही भस्म हो जाता था, और तत्काल पीव (मवाद) व शोणित के रूप मे परिणत हो जाता था।

27. That child in the womb had eight arteries flowing inward and eight veins flowing outward Of these sixteen tubular vessels two pairs each were intermittently emitting pus and blood through holes of ears, eyes, nose, and heart That boy suffered from a disease called *bhasmak* (a disease in which food is digested quickly) As a consequence whatever he consumed was quickly digested and at once turned into pus and blood

२८. तए णं सा मियादेवी अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपुण्णाणं दारगं पयाया जाइ-अंधे जाव (जाइमूए जाइबहिरे, जाइपंगुले हुंडे य वायव्वे। केवलं से तेसिं अंगाणं) आगिइमेत्तं। तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधरूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुयं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।'

तए णं सा अम्मधाई मियादेवीए 'तह' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी-'एवं खलु सामी ! मियादेवी नवण्हं मासाणं जाव आगिइमेत्ते. ! तए णं सा मियादेवी तं हुंडं अन्धरूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था उव्विग्गा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि।' तं संदिसह णं सामी ! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा !''

२८. इस प्रकार नौ मास परिपूर्ण होने पर मृगादेवी ने एक बालक को जन्म दिया जो जन्म से अन्धा (गूँगा, बहरा पागला, बेढब आकार वाला) और अवयवो की आकृति मात्र रखने वाला था। इस प्रकार विकृत, बेडोल अगोपाग वाले तथा अन्धरूप उस बालक को मृगादेवी ने देखा और देखकर भयभीत, सत्रस्त,

उद्विग्न और व्याकुल हो गई। (भयातिरेक से उसका शरीर काँपने लगा) उसने तत्काल धायमाता को बुलाया और बुलाकर कहा–"देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को ले जाकर एकान्त मे किसी कूडे–कचरे के ढेर पर फेंक आओ।"

धायमाता ने मृगादेवी के इस कथन को 'बहुत अच्छा' कहकर स्वीकार किया, और स्वीकार करके विजय क्षत्रिय के पास आयी, हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगी–'स्वामिन् ! नव मास पूरे हो जाने पर मृगादेवी ने एक जन्मान्ध यावत् अवयवो की आकृति मात्र रखने वाले बालक को जन्म दिया है। उस विकृताग व जन्मान्ध बालक को देखकर मृगादेवी भयभीत हुई और मुझे बुलाया। बुलाकर इस प्रकार कहा–'देवानुप्रिये ! तुम जाओ और इस बालक को ले जाकर एकान्त मे किसी कूडे–कचरे के ढेर पर फेंक आओ। अत हे स्वामिन् ! आप ही मुझे बताइये कि मै उसे एकान्त मे ले जाकर फेंक आऊँ या नही ?

28. After nine months of pregnancy Mriga Devi gave birth to a child who was congenitally blind (dumb, deaf, crippled, deformed and disfigured) and had mere outlines of body-parts The moment Mriga Devi saw such deformed, disfigured and blind child she was terrified, horrified, disgusted and disturbed (She started trembling with fear) She at once called the nursemaid and said—"Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation "

The nursemaid accepted Mriga Devi's order by uttering—"All right " After that she went to Vijaya Kshatriya and said—"Master ! After nine months of pregnancy Mriga Devi gave birth to a child who is congenitally blind . and so on up to and has mere outlines of body-parts When Mriga Devi saw this deformed and blind child she was terrified and called me She said to me—'Beloved of gods ! Go and throw this infant on a heap of trash in isolation ' So, master ! please tell me if I should throw this infant in isolation or not ?"

२९. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियादेविं एवं वयासी–'देवाणुप्पिया ! तुज्झं पढमं गब्भे। तं जइ णं तुब्भे एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तओ णं तुज्झं पया नो थिरा भविस्सइ। तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहराहि; तो णं तुज्झं पया थिरा भविस्सइ।"

तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स 'तह' त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहिस्सएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

२९. विजय नरेश उस धायमाता के मुख से यह समग्र वृत्तान्त सुनकर सहसा सम्भ्रान्त-(व्याकुल) से होकर उठे, उठकर खडे हो गये। खडे होकर जहाँ रानी मृगादेवी थी, वहाँ आये और मृगादेवी से इस प्रकार कहने लगे-"देवानुप्रिये ! तुम्हारा यह प्रथम गर्भ है,यदि तुम इसको एकान्त स्थान में कूडे-कचरे के ढेर पर फिंकवा दोगी तो तुम्हारी भावी सन्तान स्थिर न रहेगी अर्थात् उसे हानि पहुँचेगी। अत (फेंकने की अपेक्षा) तुम इस बालक को गुप्त भूमिगृह मे रखकर गुप्त रूप से भक्त पानादि के द्वारा इसका पालन-पोषण करो। ऐसा करने से तुम्हारी भावी सन्तति स्थिर रहेगी।"

मृगादेवी ने विजय क्षत्रिय के इस कथन को "तथेति" (बहुत अच्छा) कहकर विनम्र भाव से स्वीकार कर लिया और उस बालक को गुप्त भूमिगृह मे स्थापित कर गुप्त रूप से आहारपानादि के द्वारा पालन-पोषण करने लगी।

29. On hearing all this from the nursemaid Vijaya Kshatriya got disturbed and stood up He then came to Mriga Devi and said—"Beloved of gods ! This is your first born and if you throw him on a heap of trash in isolation your future offspring will not be firm In other words, they will be harmed. Therefore, (instead of throwing him) you should feed and rear up this child under wraps in a secret cellar This would make your future offspring firm and stable"

Mriga Devi humbly accepted Vijaya Kshatriya's advise by uttering—"As you say" And she started feeding and bringing up that child under wraps in a secret cellar

३०. एवं खलु गोयमा ! मियापुत्त दारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ !

३०. भगवान महावीर ने कहा-गौतम ! यह मृगापुत्र बालक अपने पूर्वजन्मोपार्जित अशुभ कर्मों का प्रत्यक्ष रूप से फल भोगता हुआ इस तरह समय-यापन कर रहा है।

30. Bhagavan Mahavir added—"Gautam ! Thus child Mrigaputra is biding his time visibly suffering the fruits of the demeritorious *karmas* he acquired during his earlier birth"

मृगापुत्र का भविष्य

३१. मियापुत्ते णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

३१. भगवन् ! यह मृगापुत्र बालक यहाँ से मृत्यु को प्राप्त कर कहाँ जायेगा ? कहाँ पर उत्पन्न होगा ? (गौतम ने पूछा)

FUTURE OF MRIGAPUTRA

31. "*Bhante* ! Where will this child Mrigaputra go after his death ? Where will he reincarnate ?" (Gautam asked)

३२. गोयमा ! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ सीहे भविस्सइ अहम्मिए जाव बहुनगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए, सुबहुं पावकम्मं समज्जिणइ समज्जिणित्ता, कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु जाव (नेरइएसु नेरइयत्ताए) उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सरीसवेसु उवज्जिहिइ। तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसियाए तिण्णि सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ। तत्थ वि कालं किच्चा, तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओ सीहेसु। तयाणंतरं चोत्थीए। उरगो भव, पंचमीए। इत्थीओ भव, छट्ठीए। मणुओ, अहे सत्तमीए।

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ–कच्छभ गाह–मगर–सुंसुमाराईणं अड्ढतेरस–जाइकुलकोडि–जोणिपमुहसयसहस्साइं, तत्थ णं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता चउप्पएसु एवं उरपरिसप्पेसु, भुयपरिसप्पेसु, खहयरेसु, चउरिंदिएसु, तेइंदिएसु, बेइंदिएसु, वणप्फइए कडुयरुक्खेसु, कडुयदुद्धिएसु, वाउ–तेउ–आउ–पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अन्नया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीणमट्टियं खणमाणे तडीए पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाहिस्सइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे विण्णाय परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ। से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ, इरियासमिए जाव बंभयारी। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं.... जहा दढपइन्ने, सा चेव वत्तव्वया, कलाओ जाव सिज्झिहिइ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

३२. (गौतम स्वामी के प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान महावीर ने कहा–) गौतम ! मृगापुत्र बालक छब्बीस वर्ष का पूर्ण आयुष्य भोगकर मृत्यु का समय आने पर काल करके इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे वैताढ्य पर्वत की तलहटी मे सिहकुल मे सिह के रूप मे उत्पन्न होगा। वह सिह महाअधर्मी तथा पापकर्म मे साहसी बनकर अधिक से अधिक पाप कर्म का सचय करेगा। वह सिह मृत्यु को प्राप्त होकर इस रत्नप्रभापृथ्वी नामक पहली नरकभूमि मे, जिसकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है, उन नारकियो मे उत्पन्न होगा। अनन्तर पहली नरक से निकलकर सीधा सरीसृपो (भुजाओ अथवा छाती के बल से चलने वाले तिर्यंच प्राणियो जैसे सर्प–नकुल आदि) की योनियो में उत्पन्न होगा। वहाँ से काल करके दूसरे नरक मे, उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति वाले नारक रूप मे उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर सीधा पक्षी–योनि मे उत्पन्न होगा। वहाँ से मृत्यु प्राप्त कर तीसरे नरक मे सात सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाला नैरयिक होगा।

नरक से निकलकर सिह की योनि मे उत्पन्न होगा। वहाँ से काल करके चौथी नरकभूमि मे जन्म लेगा। चौथे नरक से निकलकर सर्प जाति मे जन्म लेगा। वहाँ से पाँचवे नरक मे उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर स्त्रीरूप मे उत्पन्न होगा। स्त्री पर्याय से काल करके छट्ठे नरक मे उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर पुरुष होगा। वहाँ से काल करके सातवी नरक भूमि मे उत्पन्न होगा। सातवी नरक से निकलकर पचेन्द्रिय तिर्यंचो मे जो मच्छ, कच्छप, ग्राह, मगर, सुसुमार आदि जलचर पचेन्द्रिय जाति की योनियाँ है–उन **कुलकोटियों** (जीव–समूहो) मे, जिनकी सख्या साढे बारह लाख है, उनके एक एक **योनि विधान**–योनि–भेद मे लाखो बार उत्पन्न होकर पुन पुन जन्म लेकर मरता रहेगा।

तत्पश्चात् चतुष्पदो मे (चौपाये–पशु–योनि मे) उरपरिसर्प–छाती के बल चलने वालो मे, भुज परिसर्प–भुजाओ के बल चलने वालो मे, खेचर–आकाश मे उड सकने जीवो मे एव चार इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय और दो इन्द्रिय वाले प्राणियो मे तथा वनस्पति काय के कडवे वृक्षो मे, कडवे दूधवाली अर्कादि वनस्पतियो मे, वायुकाय, तेजस्काय, अप्काय एव पृथ्वीकाय मे लाखो–लाखो बार जन्म–मरण करेगा।'

इसके पश्चात् वहाँ से निकलकर सुप्रतिष्ठपुर नामक नगर मे वृषभ (बैल) के पर्याय मे उत्पन्न होगा। जब वह वृषभ बाल्यावस्था को पार कर युवावस्था मे प्रवेश करेगा तब किसी समय, वर्षाऋतु के आरम्भ काल मे गगा महानदी के किनारे पर स्थित मिट्टी को खोदता हुआ नदी के किनारे मिट्टी गिर जाने से गगा मे बहकर पीडा भोगता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। फिर वह बैल उसी सुप्रतिष्ठपुर नामक नगर मे किसी सेठ के घर मे पुत्ररूप से जन्म लेगा।

वहाँ पर वह बालभाव का परित्याग कर युवावस्था को प्राप्त होने पर तथारूप साधुजनोचित गुणो को धारण करने वाले स्थविर–वृद्ध श्रमणों के पास धर्म सुनकर, मनन कर मुण्डित होकर अनगारधर्म को

अगीकार करेगा। अनगारधर्म मे ईर्यासमिति युक्त यावत् ब्रह्मचारी बनेगा। बहुत वर्षों तक यथाविधि श्रमण-पर्याय साधु धर्म का पालन करके आलोचना व प्रतिक्रमण से आत्म-शुद्धि करता हुआ समाधि भाव को प्राप्त कर मरण प्राप्त कर सौधर्म नाम के प्रथम देवलोक में देवरूप में उत्पन्न होगा।

तदनन्तर देवभव की स्थिति पूरी हो जाने पर वहाँ से च्युत होकर (देव शरीर को छोडकर) महाविदेह क्षेत्र में जो धनाढ्य कुल है, उनमे उत्पन्न होगा। वहाँ उसका कलाभ्यास, प्रव्रज्या ग्रहण यावत् मोक्षगमन रूप सभी कथन दृढप्रतिज्ञ की भाँति ही समझ लेना चाहिए।

सुधर्मा स्वामी कहते है-जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दु:खविपाक के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादन किया है। (जिस प्रकार मैने प्रभु से साक्षात् सुना है; उसी प्रकार ! मै तुमसे कहता हूँ।)

32. (Replying to Gautam Swami's question Bhagavan Mahavir said—) Gautam ! He will die at the (ordained) moment of death at the conclusion of his (predestined) life-span of twenty six years and will be born as a lion in a pride of lions in the valley of the Vaitadhya mountain That lion will be extremely impious and, indulging in grave sinful activities, he will accumulate excessive bad *karmas* After death that lion will take birth as an infernal being among the infernal beings of Ratnaprabha Prithvi, the first hell, having a maximum life-span of one *Sagaropam*. From the first hell he will get reborn in the genus of reptiles and from there he will reincarnate in the second hell having a maximum life span of three *Sagaropam*

Coming out from there after death he will get reborn as a bird and from there in the third hell having a maximum life span of seven *Sagaropam*

Ending his life as an infernal being he will get reborn as a lion and from there in the fourth hell After leaving fourth hell he will take rebirth as a snake and from there in the fifth hell After fifth hell he will take birth as a woman and then in the sixth hell. After the sixth hell he will take birth as a man and then in the seventh hell Coming out of the seventh hell he will enter the genus of *jalachar-panchendriya tiryanch-yonik* (aquatic five-sensed animal) that includes 1 25 million species including fish, tortoise, crocodile, alligator, and *Sunsumar* In each different species he will take birth and die millions of times

After this he will take birth and die millions of times in numerous different species including—animals such as *ur-parisarp* (non-limbed

reptilian), *bhuj-parisarp* (limbed reptilian), *khechar* (aerial beings); four, three, and two sensed beings; plant-bodied beings such as trees with bitter fruits and milk, and air, fire, water and earth-bodied beings.

After that he will take birth as a bull in Supratishthapur city. When this bull will mature, one day at the beginning of the monsoon season while digging earth on the banks of the Ganges the bank will collapse. He will be swept away in the currents of the river and die a painful death. He will then reincarnate in the very same Supratishthapur city in the house of a merchant as his son.

On completing his adolescence and attaining youth he will listen to the sermon of worthy senior ascetics He will ponder over it and get initiated as an ascetic after tonsuring his head. He will observe the codes of *Irya samiti* (care of movement)... and so on up to... he will become completely celibate. Leading an ascetic life observing the ascetic codes properly he will embrace meditational death after purifying his soul with critical review and expiation (*pratikraman*). He will then reincarnate as a god in the first heaven called Saudharma Devlok

On completing the life-span in the divine realm he will descend and be reborn in an affluent family in Mahavideh area There his education, initiation and other information up to getting liberated should be read as in the story of Dridhapratijna

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak*. (So I have heard from him and so I state.)"

विवेचन–'**उम्मुक्क बाल भावं**' आदि पदो का अर्थ उद्घाटन करते हुए आचार्यश्री लिखते है–**बाल भाव**– अर्थात् बचपना, **विण्णय**–हेयोपादेय का ज्ञाता, विज्ञ, **जोव्वणगमणुपत्ते**–युवावस्था को प्राप्त होना।

प्रस्तुत प्रकरण में योनि, जाति और कुल कोटि शब्द आये है। इनकी अर्थ विचारणा में आचार्य श्री आत्माराम जी म ने निम्न स्पष्टीकरण किया है–

"जाति, कुलकोटि आदि शब्दो की अर्थ–विचारणा से पूर्वोक्त पद स्पष्टतया समझे जा सकेगे, अत इनके अर्थों पर विचार किया जाता है–

जाति–शब्द के अनेको अर्थ है, परन्तु प्रकृत मे यह शब्द एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों का परिचायक है। जलचर पंचेन्द्रिय का प्रस्तुत प्रकरण मे प्रसंग चल रहा है। अत प्रकृत में जाति शब्द से जलचरपंचेन्द्रिय का ग्रहण करना है।

कुलकोटी–जीवसमूह को कुल कहते हैं, और उन कुलो के विभिन्न भेदों–प्रभेदो (श्रेणियों) को कोटी कहते हैं। जिन जीवों का वर्ण, गन्ध आदि सम है, वे सब जीव एक कुल के माने जाते हैं और जिनका वर्ण, गन्ध आदि विभिन्न है, वे जीवसमूह विभिन्न कुलों के रूप में माने गये हैं।

उत्पत्तिस्थान एक होने पर भी अर्थात् एक योनि से उत्पन्न जीवसमूह भी विभिन्न वर्ण गन्धादि के होने से विभिन्न कुल के हो सकते है। इसको स्थूलरूप से समझने के लिए गोमय–गोबर का उदाहरण उपयुक्त रहेगा–

वर्ष ऋतु के समय गोबर मे बिच्छू आदि नानाप्रकार के विभिन्न आकार रखने वाले जीव उत्पन्न होने के कारण वह गोबर, उन जीवो की एक योनि है, उसमें कृमि, वृश्चिक आदि नाना जातीय जीवसमूह अनेक कुलो के रूप मे उत्पन्न होते है। अस्तु।

योनि–का अर्थ है–उत्पत्तिस्थान। तैजस् कार्मण शरीर को तो आत्मा साथ लेकर जाता है, फलत जिस स्थान पर औदारिक और वैक्रियशरीर के योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर तत्तत् शरीर का निर्माण करता है, वह स्थान योनि कहलाता है।

योनियों की सख्या नियत नही है, वे असख्य हैं। फिर भी जिन योनियो का परस्पर वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श आदि एक जैसा है उन अनेक योनियो को भी जाति की दृष्टि से एक गिना जाता है और इस प्रकार विभिन्न वर्णादि की अपेक्षा से योनियो के ८४ लाख भेद माने जाते हैं। जैसा कि प्रज्ञापनासूत्र की वृत्ति मे लिखा है–(हिन्दी टीका, पृ ९६)

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—Explaining the meanings of the phrases like *'unmukka baal bhaavam'* Acharyashri writes—*baal bhaava* means childhood. *Vinnaya* means one who can differentiate between good and bad, sagacious *Jovvanaganupatte* means to attain youth.

In this story *yoni, jati* and *kulakoti* words have been used. While interpreting these terms Acharya Shri Atmaram ji M. has provided following explanation—

"Pondering over the terms *yoni, jati* and *kulakoti* will be helpful in properly understanding the aforesaid statement. This goes as follows—

Jati—It has many meanings but in this context it means one, two, three, four and five sensed beings. The statement under reference is discussing aquatic five sensed beings. Therefore, here the term *jati* specifically means aquatic five sensed beings.

Kulakoti—a group of beings is called *kula* (species), and different sub-groups of these *kulas* is called *koti*. The beings having same attributes are

believed to belong to one *kula* and those having different attributes are believed to belong to different groups.

In spite of the place of origin or the genus being the same there can be different groups (*kulas*) of beings depending upon their attributes. For a better general understanding a good example is cowdung—

A variety of insects, such as scorpion, worms and other insects, originate from a lump of cowdung during the monsoon season. Although the place of origin is same the insects belong to different groups (*kulas*)

Yoni—the place of origin (genus) A soul carries along its *taijas* and *karman shariras* (fiery and karmic bodies). The place where it acquires the particles suitable for forming *audarik* (gross physical) and *vaikriya* (transmutable) bodies and forms those bodies is called *yoni*

The number of *yonis* is not fixed, it is infinite However the *yonis* that have same attributes of appearance, smell, taste, and touch are counted in a single group (jati) Based on variation of the said attributes the total number of *yonis* is believed to be 8 4 million These details are mentioned in *Prajnapana Sutra Vritti* (*Hindi Tika* p 96)

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : द्वितीय अध्ययन

उपोद्‌घात

दु ख विपाक के दूसरे अध्ययन का नाम है 'उज्झितक'। मृगापुत्र के प्रथम अध्ययन में प्रजा उत्पीडन, प्रजा पर अत्याचार व क्रूर हिंसा कर्म करने के कटु परिणामो का दिग्दर्शन है। इस दूसरे अध्ययन मे पशुओ के साथ क्रूर, निर्दय व्यवहार तथा हिसा एव अत्यधिक कामासक्ति, व्यभिचार आदि पाप कर्मों का अत्यन्त घोर दुष्परिणाम बताने वाला 'उज्झितक' कुमार का वर्णन है। इन अध्ययनो से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि पापी जीव जब माता के गर्भ मे आता है तब उसे इसी प्रकार के निकृष्ट और हिंसाकारी परिणामो के दोहद उत्पन्न होते है। यह दोहद ही गर्भस्थ जीव की भावी प्रवृत्तियो का सकेत माना जाता है। उज्झितक का चरित्र इस अध्ययन मे है।

FIRST SHRUTSKANDH : SECOND CHAPTER

INTRODUCTION

The second chapter of *Duhkha-vipaak* is titled 'Ujjhitak'. The first chapter, Mrigaputra, describes the bitter consequences of tormenting and torturing people and indulging in cruel violent deeds This second chapter contains the story of Ujjhitak Kumar describing the grave consequences of sinful deeds like cruel, tortuous, and violent treatment of animals, extreme lust and adultery These stories also reveal that when such sinful being is conceived, the mother has equally base and violent *dohad* (desires of a pregnant mother) Such *dohad* is said to be the indicator of the eventual attitude of the being to be born. This chapter has the story of Ujjhitak

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

उत्क्षेप (प्रस्तावना)

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?'

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–

१. जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! मोक्ष को सप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दु खविपाक के प्रथम अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो इसके द्वितीय अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?

उत्तर मे सुधर्मा अनगार ने जम्बू अनगार से इस प्रकार कहा–

FOREWORD

1. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the first chapter of *Duhkha-vipaak*, then what is the text and meaning of the second chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by him ?

Arya Sudharma replied to ascetic Jambu—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए दूईपलासे नामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं दूईपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था। तत्थ णं वाणियगामे मित्ते नामं राया होत्था वण्णओ। तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था। वण्णओ।

२. हे जम्बू ! उस समय मे वाणिजग्राम नामक एक नगर था जो सभी प्रकार से समृद्ध था। उस वाणिजग्राम के उत्तरपूर्व दिशा के ईशानकोण मे दूतिपलाश नामक उद्यान था। उस दूतिपलाश उद्यान मे सुधर्मा नाम के यक्ष का यक्षायतन था। उस वाणिजग्राम नगर मे मित्र नामक राजा था। उस मित्र राजा की श्री नाम की पटरानी थी। इन सबका वर्णन पूर्ववत् ही जानना चाहिए।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Vanijyagram, which was prosperous in all respects. In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Dutipalash. In that Dutipalash garden there was a temple of Sudharma Yaksh In that Vanijyagram city lived King Mitra That King named Mitra had a queen named Shri. The detailed description of all these should be read as aforesaid.

३. तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था। अहीण जाव सुरूवा, बावत्तरिकलापंडिया, चउसट्ठि–गणिया–गुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी, एकवीसरइगुणप्पहाणा बत्तीस–पुरिसोवयारकुसला, नवंगसुत्तपडिबोहिया, अट्ठारसदेसीभासाविसारया, सिंगारागारचारुवेसा, गीय–रइ–गन्धव्व–नट्टकुसला संगयगय. सुंदरत्थण. ऊसियज्झया सहस्सलंभा, विदिण्णछत्त–चामर–वालवीयाणिया, कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था। बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ।

३. उस वाणिजग्राम नगर मे 'कामध्वजा' नाम की एक गणिका थी। वह पाँचो इन्द्रियों से परिपूर्ण सुन्दर शरीर वाली, ७२ कलाओ मे कुशल, गणिका के ६४ गुणों से युक्त, २९ प्रकार के विषयगुणो मे रमण करने वाली थी। २१ प्रकार के रतिगुणो मे प्रधान, कामशास्त्र प्रसिद्ध पुरुष के ३२ उपचारो मे कुशल थी। उसके सुप्त नव अंग जागृत हो चुके थे। अठारह देशो की अठारह प्रकार की भाषाओ मे प्रवीण थी। जिसका सुन्दर वेष मानो शृगार का घर ही हो ऐसी शृगार प्रधान, गीत–(सगीत–विद्या) रति–(कामक्रीडा) गान्धर्व–(नृत्ययुक्त गीतकला) नाट्य–(नृत्यकला) मे कुशल एव मन को आकर्षित करने वाली, उत्तम गति युक्त (हास्य एव बोलचाल, व्यवहार एव स्तनादिगत सौन्दर्य से युक्त थी।) वह अपनी एक रात्रि का शुल्क एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ लेती थी। जिसके विलास भवन पर ऊँची ध्वजा फहरा रही थी, उसे राजा की ओर से पारितोषिक रूप मे छत्र, चँवर, बालव्यजनिका–चँवरी या छोटा पंखा कृपापूर्वक प्रदान किये गये थे और वह कर्णीरथ नामक रथ विशेष से गमनागमन करती थी। वह कामध्वजा गणिका–हजारो गणिकाओ का स्वामिनी थी। उनका नेतृत्व एव सरक्षण करती थी।

KAMADHVAJA COURTESAN

3. In Vanijyagram city lived a courtesan named Kamadhvaja She was endowed with a beautiful body having five fully developed sense organs She was proficient in seventy two arts (*kalaa*), endowed with the sixty four qualities of a courtesan, an exponent of all the twenty nine types of entertainments, an expert of twenty one styles of sex plays, and accomplished in thirty two styles of interactions with males (mentioned in the compendium of sexology or *Kamashastra*) Her nine latent sense organs were animated She had good command over eighteen indigenous languages. She dressed in style and was the embodiment of adornment She was primarily romantic and excelled in singing and music (*geet*), sex play (*rati*), dance drama (*gandharva*) and dance (*nritya*). She was a charming and artful mover in the social and physical dimensions. She had voluptuous breasts Her charges for a night's entertainment were one thousand coins. A flag was hoisted high on her residence The king had honoured her with an umbrella, whisks and fans. The palanquin she used

for commuting was named Karnirath Having one thousand courtesans under her command, she lived happily

विवेचन—प्रस्तुत अध्ययन के प्रारम्भ मे ही कामध्वजा गणिका का विस्तृत वर्णन पढकर आश्चर्य हो सकता है कि एक नगरवधू गणिका का इतना विस्तृत वर्णन क्यो ? आचार्य श्री आत्माराम जी म ने अपनी हिन्दी टीका मे इस प्रश्न का समाधान करते हुए लिखा है–यह उस काल की कला और संस्कृति का परिचायक है। कामध्वजा मात्र एक वेश्या या नगरवधू मात्र नही थी, उसके गुणो का व कलाओ का परिचय उसे एक उच्चकोटि की कलाकार, चतुर, व्यवहार-निपुण और ज्ञान-विज्ञान-कलाओ की ज्ञाता बताकर यह बताना है कि उस युग मे भी नारियाँ, भले ही वह किसी निम्न कुल व पाप प्रधान आजीविका मे सलग्न हो, किन्तु कला आदि के शिक्षण व प्रदर्शन मे वे भी बढी-चढी थी।

१८ देशो की भाषाओ का ज्ञान, सगीत, गीत, नृत्य-नाटक आदि कलाओ मे निपुणता बताकर सूत्रकार उस युग की विकसित कला सस्कृति से परिचित कराते है।

इस सूत्र मे वर्णित ६४ गणिका गुणो आदि का वर्णन वात्स्यायन के कामसूत्र मे विस्तार पूर्वक मिलता है।

समाज, सस्कृति व कला आदि की दृष्टि से यह विस्तृत वर्णन आचार्यश्री कृत हिन्दी टीका पृष्ठ ११६ पर देखा जा सकता है।

नवंगसुत्तपडिबोहिया—सुप्त नौ अग जाग गये, का आशय है–दो कान, दो नेत्र, दो नासिका, एक जिह्वा, एक त्वचा तथा मन–ये नौ अग बाल्यकाल मे काम-सवेदना की दृष्टि से सुप्त रहते है अर्थात् विकार रहित रहते है। जब इनमे कामजनित सवेदना व अनुभूति जागृत होती है, तब युवावस्था व विवाह योग्य अवस्था मानी जाती है।

Elaboration—The detailed description of courtesan Kamadhvaja in the beginning of the chapter may astonish the reader and invoke a curiosity as to why such detailed description of a courtesan ? Explaining this, Acharya Shri Atmaram ji M has mentioned in his Hindi *Tika*—"This provides a glimpse of the art and culture of that period Kamadhvaja was not just an ordinary courtesan or a state dancer, she was an accomplished artist The purpose of mentioning her qualities and qualifications in the field of arts and showing her to be an accomplished artist, intelligent individual, adept socialite and expert of numerous subjects is to reveal that women of that period were highly qualified in various subjects and skilled in performing arts even when they belonged to a lower caste or subsisting on some mean or lowly profession

The author of the work informs about the highly advanced state of art and culture in that period by mentioning about the expertise of eighteen languages, music, singing, dance and other performing arts

Detailed description of the 64 qualities of a courtesan is available in *Kama Sutra* of Vatsyayan

Detailed discussion on this description in context of society, culture and arts is available in the *Hindi Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M , p 116

Navangasuttapadibohiya—Her nine latent sense organs were animated. The nine sense organs are—two ears, two eyes, two nose-holes, one tongue, one skin (organ of touch) and one mind In context of sexual sensitivity these nine organs are latent or free of perversions during childhood When the sexual sensitivity is activated or animated it is accepted as the beginning of youth or marriageable age

उज्झितक–परिचय

४. तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसइ। अड्ढे। तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था। अहीण.। तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था। अहीण. जाव सुरूवे।

४. उस वाणिजग्राम नगर मे विजयमित्र नामक एक धनी सार्थवाह रहता था। उस विजयमित्र की पाँचो इन्द्रियो से पूर्ण (सर्वागसुन्दर) सुभद्रा नाम की पत्नी थी। विजयमित्र का पुत्र और सुभद्रा का आत्मज उज्झितक नामक एक सर्वागसम्पन्न रूपवान् बालक था।

INTRODUCTION OF UJJHITAK

4. In that Vanijyagram city lived a rich caravan chief (*sarthavaha*) named Vijayamitra who had a wife named Subhadra having beautiful body with five fully developed sense organs Vijayamitra and Subhadra had a perfect and beautiful son named Ujjhitak

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया जहा कूणिओ तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया, राया य गओ।

५. उस समय मे श्रमण भगवान महावीर विहार करते हुए वाणिजग्राम नगर के दूति पलाश उद्यान मे पधारे। नगरजन उनके दर्शनार्थ गये। राजा भी कूणिक नरेश की तरह भगवान के दर्शन को गया। भगवान ने सभी को धर्म का उपदेश दिया। धर्म उपदेश सुनकर जनता तथा राजा दोनो वापस चले गये।

5. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Dutipalash Chaitya in Vanijyagram city People came to pay homage Like king Kunik the king of the city also came to pay homage *Bhagavan* gave his discourse to all, after which the king and the people returned home

उज्झितक की दुर्दशा

६. (क) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव लेस्से छट्ठं-छट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढमाए जाव। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमण-पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं !'

तए णं भयवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दुइपलासाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवगच्छित्ता उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे।

तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ, सन्नद्ध-बद्ध-वम्मिय-गुडिय-उप्पीलियकच्छे, उद्दामियघंटे, नानामणि-रयण-विविहगेवेज्जउत्तरकंचुइज्जे, पडिकप्पिए, झय-पडागवरपंचामेल-आरूढ-हत्थारोहे, गहियाउहप्पहरणे।

अन्ने य तत्थ बहवे आसे पासइ, सन्नद्धबद्धवम्मियगुडिए, आविद्धगुडे, ओसारियपक्खरे, उत्तरकंचुइय-ओचूल-मुहचण्डाधर-चामर-थासगपरिमंडियकडिए, आरूढआसारोहे गहियाउहप्पहरणे।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ सन्नद्धबद्धवम्मियकवए, उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्जे, विमलकरबद्ध-चिंधपट्टे, गहियाउहप्पहरणे।

६. (क) उस समय श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति नामक अनगार, जो कि तेजोलेश्या को सक्षिप्त करके अपने भीतर समाहित किये हुए थे तथा बेले-बेले की तपस्या करते थे। प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय करते थे आदि सम्पूर्ण वर्णन भगवती सूत्र के अनुसार समझे। वे धीमी गति से चलते हुए भगवान महावीर के पास आये। और बोले-भते ! आपकी आज्ञा प्राप्त करके मै षष्ठखमण तप (बेला) के पारणा के लिए वाणिजग्राम मे उच्च-नीच-मध्यम कुलो मे सामुदायिक भिक्षाचरी के लिए जाना चाहता हूँ।'

तब भगवान ने कहा-गौतम ! तुम्हे जैसा अनुकूल हो वैसा करो।

तब भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर की अनुमति प्राप्त होने पर दूतिपलास उद्यान से निकलकर वाणिज ग्राम के उच्च-नीच-मध्यम कुलो मे सामुदायिक रूप मे भिक्षाचरी करते हुए राजमार्ग पर आ गये।

वहाँ राजमार्ग पर उन्होने अनेक हाथी देखे। वे हाथी युद्ध के लिए उद्यत थे, वे कवच पहने हुए तथा शरीररक्षक उपकरण (झूल) आदि धारण किये हुए थे। उनके उदर (पेट) दृढ बन्धन से बाँधे हुए थे। उन

झूलों के दोनों तरफ बडे–बडे घण्टे लटक रहे थे। जिन पर नाना प्रकार के मणि और रत्न जडे थे। वे हाथी विविध प्रकार के ग्रैवेयक (कण्ठाभूषण) पहने हुए थे तथा उत्तरकचुक नामक विशेष प्रकार का कवच एव अन्य कवच आदि सामग्री धारण किये हुए थे। वे तीन प्रकार की ध्वजा (जिस पर गरुड आदि चिह्न लगे हों) और दो प्रकार की पताका (जिस पर कोई चिह्न न हो) इन पाँच प्रकार के शिरोभूषण से विभूषित थे। उन पर आयुध (वह शस्त्र जो फेका नही जा सकता, जैसे तलवार आदि) व प्रहरणादि–(जो शस्त्र फेके जा सकते है, जैसे तीर आदि) लिए महावत बैठे थे।

इसी तरह वहाँ युद्ध के लिए उद्यत अनेक अश्वों को भी देखा, उन पर कवच तथा शारीरिक रक्षा के उपकरण बँधे हुए थे। अश्वो के शरीर पर सोने की बनी हुई झूल पडी थी तथा तनुत्राण लटक रहे थे तथा मुँह पर लगाम लगी हुई थी। वे अश्व क्रोध से होठो को चबा रहे थे। उनका कटिभाग चामर तथा स्थासक (आभूषण–विशेष) से विभूषित था, तथा जिन पर सवारी कर रहे अश्वारोही (घुडसवार) आयुध और प्रहरण दोनो प्रकार के शस्त्र ग्रहण किये हुए थे।

इसी तरह वहाँ बहुत से पुरुषो को भी देखा, जो शरीर पर दृढ बन्धनो से बँधे हुए लोहमय कुसूलादि से युक्त कवच धारण किये हुए थे। उन्होने शरासनपट्टिका–धनुष खीचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधी जाने वाली चमडे की पट्टी, कसकर बाँध रखी थी तथा गले मे ग्रैवेयक–कण्ठाभरण पहने हुए थे। उन पुरुषो के शरीर पर उत्तम चिह्नपट्टिका–(वस्त्र से निर्मित चिह्न–निशानी) लगी थी तथा आयुधो और प्रहरणो को ग्रहण किये हुए युद्ध के लिए उद्यत थे।

MISERABLE CONDITION OF UJJHITAK

6. (a) During that period of time the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir was ascetic Indrabhuti (Gautam Swami) He had ingested *Tejoleshya* (firepower) after toning it down He was observing a series of two day fasts interspersed with a day of meals. He used to spend first quarter of the day in studies and so on as mentioned in *Bhagavati Sutra* He sauntered to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Seeking your permission I want to go to Vanijyagram city and visit low, medium, and high caste families to collect alms from all for breaking my two day fast (*shashtakhaman tap*) "

Bhagavan replied—"Gautam ! Do as you please."

On getting permission from Shraman Bhagavan Mahavir, Bhagavan Gautam left Dutipalash garden and after collecting alms from low, medium, and high caste families came to the main road.

On that main road he saw many elephants These elephants were battle-ready. They were adorned with armour plates and other protective coverings like caparisons (*jhool*) Their bellies were tightened with belts Large bells were hanging on both sides of the caparisons. These bells were

studded with a variety of gems and beads These elephants were further embellished with ornaments including necklaces They were also wearing *Uttar Kanchuk* (a special additional armour plate) and other armour plates and embellishments. They were also adorned with three kinds of flags (with emblems of eagle and other motifs), two kinds of streamers (without any markings), and five kinds of head-ornaments Mahouts carrying weapons including *ayudhs* (hand-held like sword) and *praharans* (weapons that can be launched or thrown like arrow)

He also saw many battle-ready horses equipped with armour plates and other protective coverings These horses were covered with golden caparisons with hanging chains They were harnessed with bridles and driving reins They were gnashing their teeth in anger Their middle was strapped with plumed belly-band and other ornaments (*sthasak*) The horsemen riding them carried weapons including *ayudhs* and *praharans*

He also saw many men (soldiers) who were wearing stoutly strapped armours with pointed projections They had tightly strapped their arms with protective leather straps needed when drawing bow-string Their necks were adorned with necklaces They were also wearing identifying emblems and strips made of cloth Equipped with *ayudhs* and *praharans*, they were battle-ready

६. (ख) तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडियबंधणं उक्कित्तकण्णनास नेहतुप्पियगत्तं,वज्झकरकडिजुयनियत्थ, कंठेगुणरत्तमल्लदामं, चुण्णगुडियगत्तं,

चुण्णयं वज्झपाणपियं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमसाइ खावियंतं पावं, कक्खरगसएहिं हम्ममाणं, अणेगनरनारी संपरिवुडं चच्चरे चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं। इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं पडिसुणेइ-'नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ; अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति !

६. (ख) उन पुरुषो के मध्य मे भगवान गौतम ने एक अन्य पुरुष को देखा, जिसके दोनो हाथ पीछे की ओर मोडकर रस्सी से बँधे थे और उन पर हथकडियाँ पडी थी। उसके नाक और कान कटे हुए थे। शरीर पर तैल चुपडा था। हाथ और कटि प्रदेश (कमर) पर वध्य पुरुषोचित-(मृत्यु दण्ड प्राप्त पुरुष के) वस्त्र खण्ड टँगे थे। कण्ठ मे लाल फूलो की माला लटक रही थी। उसका शरीर गेरू के चूर्ण से पुता था।

वह पुरुष भय से काँप रहा था तथा जिसे प्राणो से बहुत प्यार था। जो जीना चाहता था उसे तिल-तिल करके काटा जा रहा था। शरीर के काकिणी जितने-छोटे-छोटे माँस के टुकडे किये जा रहे थे। उस पापात्मा पुरुष पर सैकडो पत्थरो व चाबुको से प्रहार किया जा रहा था। वह अनेक स्त्री-पुरुषो के समूह

से घिरा हुआ था। प्रत्येक चौराहे आदि पर फूटा ढोल बजाकर उसके सम्बन्ध में ऐसी उद्घोषणा सुनाई जा रही थी–

–'हे महानुभावो ! इस उज्झितक कुमार का किसी राजा अथवा राजपुत्र ने कोई अपराध नही किया अर्थात् इसकी दुर्दशा के लिए अन्य कोई दोषी नही है, किन्तु यह इसके अपने ही कर्मों का अपराध है–दोष है, जिस कारण यह इस दुर्दशा को प्राप्त हुआ है।

6. (b) Amongst these soldiers Bhagavan Gautam saw a person whose shackled hands were tied at his back with a rope His nose and earlobes had been severed His body was smeared with oil His waist and hands were covered with rags fit for a man condemned to death On his neck dangled a garland of red flowers His whole body was covered with red chalk

That man was trembling with fear. Although he dearly loved his life and wanted to live, he was being cut piece by piece His body was being chopped into small pieces of the size of *Kakini* (a small coin) Surrounded by many men and women, that sinful person was being hit by hundreds of stones and whips At every crossing a broken drum was being beaten and an announcement made—

"Listen gentlemen ! It is no king or prince who inflicts this punishment to this boy Ujjhitak It is only his sinful deeds that are responsible for his miserable condition

गौतम की जिज्ञासा

७. तए णं से भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता इमे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो णं इमे पुरिसे जाव नरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ' त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्च–नीच–मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे अहापज्जत्तं सामुदाणियं गिण्हइ, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु अहं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे वाणियगामं जाव तहेव वेइए। से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी? जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

७. (राजमार्ग पर) उस पुरुष को देखकर भगवान गौतम के मन मे यह चिन्तन और विचार उत्पन्न हुआ कि–'अहो ! यह पुरुष कैसी नरकतुल्य वेदना भोग रहा है !' ऐसा विचार करके भगवान गौतम वाणिजग्राम नगर के घरो मे भ्रमण करते हुए आवश्यकतानुसार भिक्षा लेकर श्रमण भगवान महावीर के

पास आये। उन्हें लाई हुई भिक्षा दिखलाई। तत्पश्चात् भगवान को वदना नमस्कार करके उनसे इस प्रकार प्रश्न किया–

–'हे प्रभो ! आपकी आज्ञा लेकर मै भिक्षा हेतु वाणिजग्राम नगर मे गया। वहाँ मैने एक ऐसे पुरुष को देखा जो साक्षात् नारकीय वेदना का अनुभव कर रहा है। भगवन् ! वह पुरुष पूर्वभव मे कौन था, जो यहाँ नरक जैसी विषम वेदना भोग रहा है ?

KKKK

7. On seeing that person on the main road Bhagavan Gautam thought and pondered—"Oh ! How much infernal torture this man is suffering !" With this thought Bhagavan Gautam collected required alms from houses in Vanijyagram city and returned to Bhagavan Mahavir He placed the alms before *Bhagavan* and after paying him homage and obeisance said—

"*Bhante* ! On getting your permission I went to Vanijyagram city to seek alms There I saw a person suffering infernal torture *Bhante* ! In his earlier birth who was this person that now suffers such infernal torture ?

पूर्वभव–विवरण

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थि. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुणंदे णामं राया होत्था। महया हिमवंत.

तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए महं एगे गोमंडवे होत्था। अणेगखम्भसयसंनिविट्ठे, पासाईए. तत्थ णं बहवे नगरगोरूवा णं सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसंति।

८. (उस पुरुष के पूर्वभव का वृत्तान्त बताते हुए भगवान ने कहा)–गौतम ! उस काल उस समय मे इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भरतक्षेत्र मे हस्तिनापुर नामक एक समृद्ध नगर था। उस नगर मे सुनन्द नामक राजा था। वह हिमालय पर्वत के समान महान् प्रतापी था।

उस हस्तिनापुर नगर के लगभग मध्य भाग मे सैकडो स्तम्भो से निर्मित सुन्दर मनोहर, एक विशाल गोशाला थी। वहाँ पर नगर के अनेक सनाथ–(जिनका कोई स्वामी हो) और अनाथ–(जिनका कोई स्वामी न हो) गायें, बैल, छोटी गाये–बछडियाँ, साँड आदि चौपाये पशु थे। उन्हे प्रचुर मात्रा मे घास–पानी मिलता रहता था, वे भय तथा उपसर्गादि से मुक्त होकर सुखपूर्वक वहाँ निवास करते थे।

PREVIOUS BIRTH OF MRIGAPUTRA

8. (Narrating the story of previous birth of that person Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Hastinapur in Bharatvarsh area in Jambu


क्रूरकर्मा उज्झितक की दुर्दशा
गोचरी करके
लौटते
हुए गौतम

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

क्रूरकर्मा उज्झितक की दुर्दशा

एक बार वाणिज्यग्राम मे गौतम स्वामी बेले का पारणा लेने गोचरी करते हुए नगर के मध्य मे एक अति भयानक दृश्य देखते है। नगर के चौराहे पर एक पुरुष साकलो से बॅधा है, चारो तरफ सशस्त्र सैनिक, घुडसवार व हाथी सवार उसे घेरकर खडे है। कुछ सैनिक उसे चमडे के गीले चाबुको से, लोहे के दण्डो से, तीखे भालो से पीट रहे है, कुछ शस्त्रो से उसके पॉवो का मॉस काट काट कर पक्षियो को खिला रहे है। कटे हुए स्थानो पर गेरू का चूर्ण, क्षार आदि छिडक रहे है। वह अपराधी जोर जोर से चीख -चिल्ला रहा है।

एक सैनिक चौराहे पर खडा होकर ढोल बजाकर घोषणा करता है "यह दुष्ट पुरुष राजा का अपराधी है। इसे अपने किये अपराध का दण्ड दिया जा रहा है।

गौतम स्वामी भगवान के पास आकर पूछते है भते ! इसने ऐसा क्या घोर पापकर्म किया था जिस कारण यहाँ पर घोर नारकीय यातना भोग रहा है।

भगवान उसका पूर्वभव बताते है।

श्रुतस्कन्ध १ अ २ सूत्र ६ ७

PATHETIC CONDITION OF UJJHITAK

Once Gautam Swami went to Vanijyagram to collect alms for breaking his two-day fast There he saw a horrifying scene On the main crossing he saw a shackled person surrounded by armed guards on foot, elephants and horses He is being whipped by wet leather whips and beaten by iron rods and spears His legs are being chopped and fed to birds Sand and acid is being applied to his wounds That prisoner is shrieking and wailing loudly

Another guard is beating drums and announcing—"This evil person has committed a crime and is being punished for that "

Gautam Swami returns to *Bhagavan* and asks—"*Bhante* ! What grave sin this person committed during his past birth that he now suffers such infernal torture ?"

Bhagavan tells about his past birth

—*Sec 1 Ch 2, Sutra* 6 7

continent. A king named Sunand was the ruler of that city He was as majestic as the Himalayas.

In the central part of Hastinapur city there was a large and beautiful cow-shed made up of hundreds of pillars. There dwelt numerous cows, oxen, small cows (calves), bulls and other cattle belonging to some one or belonging to no one They got abundant grass (feed) and water and lived in comfort and without any fear or pain

९. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, अहीण. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइ आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था। तएणं णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेवारूवे दोहले पाउब्भूए।

९. उस हस्तिनापुर नगर मे भीम नामक एक कूटग्राह-(धोखे से कपटपूर्वक जीवो को फँसाने वाला) रहता था। वह स्वभाव से ही अधर्मी व पाप कर्मों से प्रसन्न होने वाला था। उस भीम कूटग्राह की पत्नी का नाम उत्पला था जो सम्पूर्ण पाँचो इन्द्रिय वाली थी। किसी समय वह उत्पला गर्भवती हुई। उस कूटग्राह की पत्नी उत्पला को पूरे तीन मास के पश्चात् इस प्रकार का दोहद-मनोरथ उत्पन्न हुआ।

9. In that Hastinapur city lived a *kootagraha* (trapper) named Bheem. He was by nature irreligious and derived pleasure in sinful deeds The name of that Bheem trapper's wife was Utpalaa, who was well proportioned Once Utpalaa became pregnant After three months of pregnancy she had a *dohad* (pregnancy desire)

उत्पला को दोहद

१०. 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले जाओ णं बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कम्बलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीहुं च पसन्नं च आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ, परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर जाव विणिज्जामि' त्ति कट्टु।

तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीण-विमण-वयणा पंडुल्लइयमुहा ओमंथिय-नयण-वयण-कमला जहोइयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय जाव झियाइ।

१०. (दोहद का स्वरूप) "वे माताएँ धन्य है, (पुण्यवती है, कृतार्थ है।) उनका मनुष्यजन्म और जीवन भी सार्थक है जो अनेक अनाथ या सनाथ नगर मे रहने वाले पशुओ यावत् वृषभों के ऊधस्-(वह थैली जिसमे दूध भरा रहता है) स्तन, वृषण-अण्डकोष, पूँछ, ककुद्-(स्कन्ध का ऊपरी भाग) कन्धे, कर्ण, नेत्र, नासिका, जीभ, होठ, कम्बल-सास्ना-(गाय के गले का चमडा) के (माँस के) शोले बनाकर, तलकर, भूनकर, सुखाकर, लवण आदि मिलाकर उस माँस के साथ सुरा, मधु-(फूलो से बनी मदिरा) मेरक-(तालफल से बनाई गई मदिरा), सीधु-(गुड व धान के मेल से बनाई मदिरा), प्रसन्ना-(द्राक्षा आदि से बनी हुई) इन सब मद्यो का सामान्य और विशेष रूप से (थोडा एव अधिक) स्वय स्वाद लेती है और परिभाजन-(दूसरो को बाँटती हुई) तथा परिभोग-(सबके साथ मिलकर) करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। काश ! मै भी अपने दोहद को इसी प्रकार पूर्ण करूँ।

ऐसा विचार करके उस दोहद के पूर्ण न होने से कूटग्राह की पत्नी उत्पला (खून सूख जाने से-) सूखने लगी, भूखे व्यक्ति के समान थकी हुई दीखने लगी, माँस सूख जाने पर हड्डियाँ दिखाई देने लगी। रोगिणी व रोगी के समान शिथिल शरीर वाली, कान्तिरहित, दीन तथा चिन्तातुर मुख वाली हो गयी। उसका वदन फीका एव पीला पड गया, नेत्र तथा मुख-कमल मुर्झा गया। पुष्प, वस्त्र, गन्ध, फूलो की गूँथी हुई माला, आभूषण और हार आदि का उपभोग करना भी उसने छोड दिया। हाथ से मसली हुई कमल की माला की तरह म्लान होकर कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के विवेक से रहित चिन्ताग्रस्त रहने लगी।

UTPALAA'S DOHAD

10. "Blessed, fortunate, and contented are those mothers who brown, fry, roast, dry and salt the meat from the udders (*oodhas*), breasts, testicles (*vrishan*), tails, humps (*kukud*), shoulders, ears, eyes, noses, tongues, lips, and dewlaps (*kambal*) of cows, and so on up to and other cattle belonging to some one or belonging to no one And then they enjoy tasting and eating, distributing (*paribhajan*) and sharing with their friends (*paribhog*) a little or more with a variety of wines (*sura*), namely *madhu* (made from flowers or honey), *merak* (made from palm-fruit), *madya* (a kind of white wine), *seedhu* (made from mixture of jaggery and grains), and *prasanna* (made from grapes) And thus fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother) I wish I too fulfilled my *dohad* in the same way"

After these thoughts and because the *dohad* (desires of a pregnant mother) was not fulfilled, Utpalaa, the wife of the trapper, became anemic, emaciated, and weak like a famished person Her skeleton showed as she lost her fat Like a sick person she lost the natural freshness and glow, and the healthy pink of her face was replaced by a sick gloom Her body became dull and pale Her eyes and face withered She became

apathetic to any and all sorts of cosmetics and adornments including flowers, perfumes, garlands, and ornaments Wilted like a crushed garland of lotus flowers and devoid of rationality, she plunged into the sea of grief and misery

११. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय० जाव पासइ, एवं वयासी–" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओहय जाव झियासि ?'

तए णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी–'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहला पाउब्भूया–'धन्ना णं ताओ जाओ णं बहूणं गोरूवाणं ऊहेहि य जाव लावणेहि य सुरं च ६ आसाएमाणीओ ४ दोहलं विणेंति।' तए णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि।'

११. इतने मे वह भीम कूटग्राह, जहाँ पर उत्पला थी, वहाँ आया और उसने चिन्ताग्रस्त उदास उत्पला को देखा। देखकर पूछा–'देवानुप्रिये ! तुम क्यो इस तरह शोकाकुल, (हथेली पर मुख रखकर चिन्ताग्रस्त) बैठी हो ?

तब वह उत्पला भीम कूटग्राह को कहने लगी–'स्वामिन् ! लगभग तीन मास पूर्ण होने पर मुझे यह दोहद उत्पन्न हुआ है कि वे माताएँ धन्य है, जो गाय–वृषभ आदि पशुओ के ऊधस्, स्तन आदि के लवण मिश्रित माँस का अनेक प्रकार की मदिराओ के साथ आस्वादन करती हुई, सहेलियो को खिलाती पिलाती अपने दोहद को पूर्ण करती है। मेरा यह दोहद पूर्ण नही होने से मै निस्तेज व हतोत्साह होकर आर्तध्यान मे डूबी हूँ।''

11. At that time Bheem trapper came where Utpalaa was sitting and found her sad and gloomy He asked—"Beloved of gods ! Why are you so gloomy (sitting with your chin in your palms) ?

Utpalaa responded—"My lord ! After three months of pregnancy I am filled with this *dohad* (pregnancy desire)—'Blessed are those mothers who brown, fry, roast, dry and salt the meat from the udders (*oodhas*), . and so on up to . And thus fulfill their *dohad* ' Because the *dohad* has not been fulfilled I have become anemic, and so on up to. and plunged into the sea of grief and misery"

भीम द्वारा पशुओ की हिंसा

१२. तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पलं भारियं एवं वयासी–'मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि; अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ।' ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ।

तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्ध जाव पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमण्डवे तेणेव उवागए, बहूणं नगरगोरूवाणं जाव वसभाण य अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं कंबले छिंदइ, अप्पेगइयाणं अन्नमन्नाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ।

तए णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सोल्लेहि य सुरं च–५ आसाएमाणी–४ तं दोहलं विणेइ।

तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१२. (यह सुनकर) उस भीम कूटग्राह ने अपनी उत्पला भार्या से कहा–"देवानुप्रिये ! तुम चिन्ताग्रस्त होकर दु खी मत रहो। मै वह सब कुछ करूँगा जिससे तुम्हारे इस दोहद की सपूर्ति हो जायेगी।" इस प्रकार के मधुर अनुकूल वचनो से उत्पला को आश्वस्त किया।

तत्पश्चात् भीम कूटग्राह आधी रात के समय अकेला ही दृढ कवच पहनकर, धनुष–बाण से सज्जित होकर, तलवार व तीर आदि लेकर अपने घर से निकला और हस्तिनापुर नगर के मध्य से होता हुआ जहाँ पर गोमण्डप (गौशाला) थी वहाँ पर आया, आकर वह नगर की गायो, बछडो यावत् वृषभो मे से किसी के स्तन, किसी के कम्बल आदि व किसी के दूसरे अगोपागो को काटता है और काटकर अपने घर ले आता है। लाकर अपनी भार्या उत्पला को देता है।

तदनन्तर वह उत्पला उन अनेक प्रकार के शूल आदि पर पकाये गये गोमासो के साथ विविध प्रकार की मदिरा आदि का आस्वादन करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस तरह वह परिपूर्ण दोहद वाली, सन्मानित दोहद वाली, निवृत्त दोहद वाली, दोहद के सस्कार मन से मिट जाने पर व्युच्छिन्न दोहद वाली होकर उस गर्भ का सुखपूर्वक पालन करती है।

KILLING OF ANIMALS BY BHEEM

12. (At these words) Bheem trapper said to his wife Utpalaa—"Beloved of gods ! Don't be sad and gloomy I will do all what is required to fulfill this *dohad* " Thus he gave assurance to Utpalaa in sweet agreeable words

Later, dressed in strong armour and carrying bow, arrows, and sword, Bheem trapper left his house alone during the night. Crossing the city he came to the cow-shed and cut off the udders, dewlaps and other parts of some cows, calves, and other animals Having done that he brought these parts home and gave them to his wife Utpalaa

Then Utpalaa sated her *dohad* by consuming these pieces of beef with a variety of wines Thus her *dohad* was fulfilled, honoured, complied with, and removed. Having attained this she bore the fetus happily

उत्पला द्वारा पुत्र जन्म

१३. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया चिच्ची सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए।

तए णं तस्स दारगस्स आरसिय सद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा जाव वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया चिच्ची सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा जाव भीया तत्था तसिया उव्विग्गा, सव्वओ समंता विप्पलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए 'गोत्तासए' नामेणं।

तए णं से गोत्तासए दारए उम्मुक्कबालभावे जाये यावि होत्था।

१३. तदनन्तर उस उत्पला कूटग्राहिणी ने नव मास पूरे हो जाने पर एक पुत्र को जन्म दिया। जन्म के साथ ही उस बालक ने अत्यन्त कर्णभेदी चीत्कारपूर्ण भयकर क्रन्दन किया। उस बालक के कठोर, चीत्कारपूर्ण क्रन्दन को सुनकर हस्तिनापुर नगर के बहुत से गाय–बछडे यावत् वृषभ आदि भयभीत व उद्वेगग्रस्त होकर चारो दिशाओ मे भागने लगे।

यह देखकर उसके माता–पिता ने इस बालक का नामकरण करते हुए कहा कि–जन्म के साथ ही इस बालक ने 'चिच्ची'–चीत्कार के द्वारा तीव्र स्वर युक्त आक्रन्दन किया था। उस कर्णकटु, चीत्कारपूर्ण आक्रन्दन को सुनकर हस्तिनापुर नगर मे गौ आदि पशु भयभीत, त्रस्त व उद्विग्न होकर चारो तरफ भागने लगे, अत इस बालक का नाम गोत्रास–(गाय आदि पशुओ को त्रास देने वाला) रखा जाता है।

यथासमय उस गोत्रास नामक बालक ने बाल्यावस्था को पार कर युवावस्था मे प्रवेश किया।

BIRTH OF A SON

13. After nine months of pregnancy, Utpalaa gave birth to a male child The moment the child was born he produced a piercing fiendish shriek and wailed. Hearing this harsh shriek and wail many cows, calves, and bulls in Hastinapur ran helter-skelter with fear and anxiety.

Observing this his parents, during his naming ceremony, announced—The moment this child was born he produced a piercing shriek and wailed. Hearing this harsh shriek and wail many cows, calves, and bulls in

Hastinapur ran helter-skelter with fear and anxiety Therefore we give this child the name "Gotras" (one who terrifies cows)

In due course the child crossed childhood and attained youth

विवेचन—टीकाकार अभयदेवसूरि—**भीया, तत्था** आदि शब्दो का अभिप्राय उद्घाटित करते हुए लिखते हैं, 'उस जन्मते बालक के हृदय को दहलाने वाला, कानो को फाड देने वाला चीत्कार पूर्ण क्रन्दन सुनकर नगर के पशु भयभीत हुए, उनमे भय व्याप्त हो गया। त्रस्त हो गये—अर्थात् कोई हमारे प्राण लूटने वाला आ गया है, इस भयपूर्ण अनुभूति से त्रस्त होकर बेचैन हो गये। उनका मन आकुल-व्याकुल हो उठा, उनका शरीर भय के मारे काँपने लगा और वे इधर-उधर भागने लगे। *(हिन्दी टीका पृष्ठ १५०)*

Elaboration—Explaining the terms *'bhiya', 'tattha'*, etc Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*) mentions—"Hearing the fearful and ear-piercing fiendish shriek and wail of that new born, the cattle in the city became apprehensive and afraid Filled with the apprehension that someone who will deprive us of our life has arrived, they were terrified and restless They were in an agitated state of mind, their bodies trembled with fear and they ran around in disorder (*Hindi Tika*, p 150)

भीम की मृत्यु

१४. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से गोत्तासए दारए बहुएणं मित्त—नाइ—नियग—सयण संबंधि—परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कन्दमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूहिं लोइयमयकिच्चाइं करेइ।

तए णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अन्नया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए ठावेइ। तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था; अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

१४ (गोत्रास के युवक हो जाने पर किसी समय) भीम कूटग्राह मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब गोत्रास बालक ने अपने मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सम्बन्धी और परिजनो के साथ रुदन, विलाप तथा आक्रन्दन करते हुए अपने पिता भीम कूटग्राह का दाहसस्कार किया। लौकिक मृतक-क्रियाएँ की।

कुछ समय पश्चात् सुनन्द नामक राजा ने गोत्रास बालक को कूटग्राह के पद पर नियुक्त किया। गोत्रास भी (अपने पिता की ही भाँति) घोर अधर्मी व दुष्प्रत्यानन्द (पापकर्मों मे आनन्द मनाने वाला) था।

DEATH OF BHEEM

14. (After Gotras became mature, one day) Bheem Kootagraha died Young Gotras cremated his father, Bheem Kootagraha, crying, weeping, and sobbing in the company of his friends, kinfolk, family members, relatives and other people He performed the formal last rites as well

Some time later king Sunand appointed young Gotras at the post of *Kootagraha*. Gotras (like his father) was also by nature irreligious and derived pleasure in sinful deeds

१५. तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहित्ताए कल्लाकल्लिं अद्धरत्तियकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्धबद्धकवए जाव गहिया उहप्पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गोमण्डवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वियंगेइ, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सोल्लेहि य जाव आसाएमाणे विसाएमाणे जाव विहरइ।

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

१५. उसके बाद वह गोत्रास कूटग्राह प्रतिदिन आधी रात्रि के समय केवल अकेला ही, सैनिक की तरह तैयार होकर, कवच पहनकर और शस्त्रास्त्रो को धारण कर अपने घर से निकलता है। निकलकर गोशाला मे जाता है, वहाँ पर अनेक गौ आदि नगर-पशुओ के अगोपांगो को काटकर अपने घर आता है। उन गौ आदि पशुओ के शूलपक्व तले, भुने, सूखे और नमकीन माँसो के साथ मदिरा आदि का आस्वादन करता हुआ जीवन बिताता है।

वह गोत्रास कूटग्राह इसप्रकार के क्रूर कर्मो को ही अपना कर्त्तव्य मानने वाला, इसप्रकार के कार्यो को ही मुख्यता देने वाला, इस प्रकार की पाप-विद्या को जानने वाला तथा ऐसे क्रूर आचरणो मे सलग्न रहता हुआ बहुत घोर पापकर्मो का उपार्जन कर पाँच सौ वर्ष का आयुष्य भोगकर, चिन्ता और दु ख से पीडित होकर दूसरे नरक मे नारक रूप से उत्पन्न हुआ। वहाँ उसकी उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति है।

15. Then every night that Gotras trapper would leave his house alone dressed in strong armour like a soldier and equipped with a bow, arrows, and a sword He would come to the cow-shed and cut off the body-parts of some cows and other cattle Doing that he would bring these parts home He would then spend his time enjoying consuming these pieces of beef, duly cooked various ways, with a variety of wines

Considering this kind of cruel acts to be his duty, giving importance to, being well versed in, and being engrossed in such deeds, that Gotras Kootagraha continued to accumulate intense bad *karmas* Completing his life span of five hundred years, he died in anxiety and misery and took rebirth as an infernal being in the second hell having a maximum life span of three *Sagaropam*

१६. तए णं विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया यावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति।

तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया।

१६. (उस वाणिजग्राम निवासी) विजयमित्र सार्थवाह की सुभद्रा नाम की भार्या जातनिन्दुका थी अर्थात् जन्म लेते ही उसके बालक मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। तत्पश्चात् वह गोत्रास कूटग्राह का जीव दूसरे नरक से निकलकर इसी वाणिजग्राम नगर के विजयमित्र सार्थवाह की सुभद्रा नाम की भार्या के उदर मे पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ–गर्भ मे आया। नव मास परिपूर्ण होने पर सुभद्रा सार्थवाही ने पुत्र को जन्म दिया।

BIRTH OF UJJHITAK

16. Subhadra, the wife of Vijayamitra Sarthavaha (a resident of that Vanijyagram), was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth) On leaving the second hell, the soul of that Gotras Kootagraha was conceived as a son in the womb of Subhadra, the wife of Vijayamitra Sarthavaha in Vanijyagram. On completion of nine months Subhadra Sarthavahi gave birth to a son.

१७. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ, उज्झावित्ता दोच्चंपि गिण्हावेइ गिण्हावित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं च चंदसूरपासणियं च जागरियं च महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करेंति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते, संपत्ते बारसमे दिवसे इमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झिए नामेणं।

तए णं से उज्झिए दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तं जहा–खीरधाईए मज्जणधाईए मण्डणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए, जहा दढपइन्ने, जाव निव्वाघाए गिरिकन्दरमल्लीणे विव चम्पकपायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

१७. तब सुभद्रा सार्थवाही उस बालक को जन्मते ही एकान्त मे कूडे–कर्कट के ढेर पर डलवा देती है और पुन. उठवा लेती है। तत्पश्चात् क्रमश उस बालक का पालन–पोषण–रक्षण परिवर्द्धन करने लगती है।

उसके बाद उस बालक के माता–पिता अपनी कुल–मर्यादा के अनुसार पुत्र की बधाई बाँटने आदि की क्रियाएँ करते है। चन्द्र–सूर्य–उत्सव व जागरण महोत्सव भी महान् ऋद्धि और उत्सव के साथ मनाते हैं। तत्पश्चात् ग्यारहवाँ दिन बीत जाने पर तथा बारहवाँ दिन आ जाने पर उस बालक के माता–पिता इस प्रकार का गुणनिष्पन्न–गुणानुरूप नामकरण करते है–''क्योंकि हमारा यह बालक एकान्त मे उकरडे–कचरा फेकने की जगह पर फेंक दिया गया था, अत· हमारा यह बालक 'उज्झितक' नाम से प्रसिद्ध हो।''

तदनन्तर वह उज्झितक कुमार पाँच धायमाताओ की देखरेख में रहने लगा। उन धायमाताओ के नाम इस प्रकार है–**क्षीरधात्री**–दूध पिलाने वाली, **मज्जनधात्री**–स्नान कराने वाली, **मण्डनधात्री**–वस्त्राभूषण से अलंकृत करने वाली, **क्रीड़ायनधात्री**–क्रीडा कराने वाली और **अंकधात्री**–गोद मे उठाकर खिलाने वाली। इन धाय–माताओ के द्वारा दृढप्रतिज्ञ कुमार की तरह आघात एव बाधाओ से रहित पर्वत कन्दरा मे अवस्थित चम्पक वृक्ष की तरह वह सुखपूर्वक वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

17. Subhadra Sarthavahı got the newborn thrown on a heap of trash and then got ıt back After that she fed, protected and gradually brought up the chıld The parents performed rıtual ceremonıes, ıncludıng dıstrıbutıon of gıfts, connected wıth the bırth of a son. They performed the ritual adoratıonal beholdıng of the sun and the moon wıth great fanfare When eleven days passed, on the twelfth day they performed the namıng ceremony—"When thıs son of ours was born he was thrown on a heap of trash, as such, he should be popularly known by the name 'Ujjhıtak' (the dıscarded one) "

Boy Ujjhıtak was brought up under the care of five nurse-maıds They were—(1) *Kshır Dhatrı* or mılk-nurse-maıd—the one who took charge of feedıng, (2) *Majjan Dhatrı* or bath-nurse-maıd—the one who took charge of gıvıng a bath, (3) *Mandan Dhatrı* or dress-nurse-maıd—the one who took charge of puttıng on dress and ornaments, (4) *Krıdayan Dhatrı* or play-nurse- maıd—the one who took charge of playıng wıth the baby; (5) *Anka Dhatrı* or lap-nurse-maıd—the one who took charge of keepıng the baby ın her lap Under the care of these nursemaıds, lıke Drıdhapratıjna, he grew happıly as a *Champa* tree grows ın a mountaın cave undısturbed by the blowıng wınds

विवेचन–इस विषय मे टीकाकार का कथन है कि ऐसी लोक रूढि प्रचलित थी, कि जिसकी सन्तान जीवित नही रहती वह इस प्रकार के टोटके करती थी, जैसे ऊकरडी पर फैकना, सूपडे मे सुला देना आदि। इसी कारण सुभद्रा ने ऊकरडी पर फिकवाकर वापस उठा लिया और उसका पालन–पोषण किया।

Elaboration—In thıs connection the commentator (*Tika*) ınforms that during that perıod there was a general belıef that when more than one offspring dıed on bırth, a mother performed rıtuals like throwing the next

infant on a heap of trash, placing it on a winnowing basket, etc That was the reason Subhadra threw the new born on a heap of trash and brought him back.

विजय मित्र की मृत्यु

१८. तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च चउव्विहं भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेण उवागए। तए णं से विजय मित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविपत्तीए निव्वुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सत्थवाहा लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए छूढं निव्वुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेंति, ते तहा हत्थनिक्खेवं च बाहिरभाण्डसारं च गहाय एगंते अवक्कमंति।

१८. इसके बाद विजयमित्र सार्थवाह किसी समय लवणसमुद्र की यात्रा पर निकला। उसने जहाज मे अनेक प्रकार की वस्तुएँ भरी, जैसे–**गणिम**–(गिनती से बेची जाने वाली वस्तुएँ, नारियल आदि), **धरिम**–तराजू से तोलकर बेची जाने वाली वस्तुएँ घृत, तेल, शर्करा आदि), **मेय**–(मापकर बेचे जाने योग्य पदार्थ कपडा, फीता आदि) और **पारिच्छिेय**–(परीक्षा करके बेची जाने वाली वस्तुएँ हीरा, पन्ना आदि) यह चारों प्रकार की बेचने योग्य वस्तुएँ लेकर लवणसमुद्र मे यात्रा के लिए प्रस्थान किया। किन्तु लवणसमुद्र मे जहाज नष्ट हो जाने से विजयमित्र की उपर्युक्त सभी प्रकार की महामूल्य वस्तुएँ समुद्र मे डूब गयी और वह स्वय भी त्राण रहित–(जिसकी कोई रक्षा करने वाला नही था) अशरण–(जिसको कोई आश्रय देने वाला नही था) ऐसा असहाय होकर मृत्यु को प्राप्त होगया।

जब वाणिज ग्राम मे रहने वाले अनेक ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, धनी, श्रेष्ठी तथा सार्थवाहो ने लवणसमुद्र मे जहाज के नष्ट हो जाने और महामूल्य वाले क्रयाणक के जलमग्न हो जाने, तथा विजयमित्र की मृत्यु का वृत्तान्त सुना तो वे उसकी **हस्तनिक्षेप**–धरोहर (बिना किसी साक्षी के दी हुई रकम) व **बाह्य भाण्डसार**–(किसी गवाह के सामने रखी गई धरोहर) को लेकर (वाणिजग्राम को छोडकर एकान्त अनजान स्थान पर चले गये।

DEATH OF VIJAYAMITRA

18. One day Vijayamitra Sarthavaha set out for a sea voyage in the Lavan Samudra. He filled the holds of his ship with a variety of merchandise. This included the four categories of goods—*Ganim* or the goods that are sold in numbers, such as coconut *Dharim* or the goods that are sold by weight, such as sugar, butter, oil, etc. *Meya* or the goods that are sold by measurement, such as cloth, tape etc *Paaricchedya* or the goods that are sold in pieces after testing, such as diamond, emerald, etc After loading, the ship sailed But the ship capsized in the Lavan Samudra and

all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra drowned in the sea In absence of any protection or refuge, he himself died helplessly.

When numerous influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), and caravan chiefs (*sarthavaha*) living in Vanijyagram got the news that Vijayamitra's ship had capsized in the Lavan Samudra, all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra was swept away in the sea, and he himself had died, they eloped from Vanijyagram with *hastnikshep* (deposits without any witness) and *bahya bhaandasar* (deposits made in presence of a witness) belonging to Vijayamitra

१९. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुडभांडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेइ, सुणित्ता महया पइसोएणं अप्फुन्ना समाणी परसुनियत्ता विवचम्पगलया धस त्ति धरणीयलंसि सव्वंगेण संनिवडिया। तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी बहूहिं मित्त जाव सद्धिं परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्त सत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ।

तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च लच्छिविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता।

१९. सुभद्रा सार्थवाही ने जब लवणसमुद्र मे जहाज के नष्ट हो जाने के कारण समस्त भाण्डसार के जलमग्न हो जाने के साथ ही विजयमित्र सार्थवाह की मृत्यु का समाचार सुना, तब वह पति वियोगजन्य महान् शोक मे डूब गई। कुल्हाडी से कटी हुई चम्पक लता (बेल या पौधा) की तरह धडाम से पृथ्वी पर गिर पडी। कुछ समय पश्चात् वह सुभद्रा सार्थवाही आश्वस्त हुई तब अनेक मित्रो, परिजनो से घिरी हुई रुदन, क्रन्दन, विलाप करती हुई विजयमित्र के लौकिक मृतक-क्रियाकर्म करती है।

तब वह सुभद्रा सार्थवाही लवणसमुद्र मे पति का गमन, लक्ष्मी का विनाश, जहाज का जल मे डूब जाना तथा पति की मृत्यु आदि के विषय मे सोचती, चिन्ता करती शोक मे डूबी हुई मृत्यु को प्राप्त हो गयी।

19. When Subhadra Sarthavahi got the news that Vijayamitra's ship had capsized in the Lavan Samudra, all the valuable merchandise belonging to Vijayamitra was swept away in the sea, and he himself had died, she was overwhelmed with the grief of loosing her husband She fell prostrate on the ground like a cut *Champak* creeper After some time she regained consciousness Then surrounded by her friends and relatives she performed the last rites of Vijayamitra crying, weeping and wailing

Brooding about her husband's sea voyage, ship wreck, loss of wealth and husband, that grief stricken Subhadra Sarthavahi also met her end soon.

२०. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं सयाओ गिहाओ निच्छुभेंति, निच्छुभित्ता तं गिहं अन्नस्स दलयंति।

तए णं से उज्झियए दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिंघाडग जाव पहेसु जूयखलएसु, वेसियाघरेसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। तए णं से उज्झियए दारए अणोहट्टिए अनिवारए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर–जूय–वेस–दारप्पसंगी जाए यावि होत्था।

तए णं से उज्झियए अन्नया कयाइं कामज्झयाए गणियाए संपलग्गे जाए यावि होत्था। कामज्झयाए गणियाए सद्धिं विउलाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२०. तदनन्तर नगररक्षक नगर अधिकारी पुरुषो ने सुभद्रा सार्थवाही की मृत्यु के समाचार जानकर उज्झितक कुमार को अपने घर से निकाल दिया और उसके घर को किसी दूसरे को (जो उज्झितक के पिता से रुपये माँगता था। उन रुपयो के बदले उसका घर उस लेनदार उत्तमर्ण को सौंप दिया।)

अपने घर से निकाला जाने पर वह उज्झितक कुमार वाणिजग्राम नगर के तिराहो, चौराहो, राजमार्ग एवं सामान्य मार्गों पर, द्यूतगृहो, वेश्यागृहो व मद्यपानगृहो मे भटकने लगा। इस प्रकार बेरोकटोक, स्वच्छन्द एव निरंकुश–स्वैराचारी बना हुआ वह चौर्यकर्म, द्यूतकर्म, वेश्यागमन और परस्त्रीगमन आदि दुर्व्यसनो मे आसक्त हो गया। किसी समय वह कामध्वजा वेश्या के पास चला गया और उसी मे आसक्त होकर मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगो का उपभोग करता हुआ समय बिताने लगा।

20. On getting the news of the demise of Subhadra Sarthavahi the city guards and officers expelled young Ujjhitak from his house and handed over the house to some other person (who was a creditor of Ujjhitak's father and the house was given to him, Uttamarn, in exchange of the due amount)

On being expelled from his house, young Ujjhitak started roaming around the trisections, crossings, roads, streets, gambling dens, whorehouses and bars Thus leading an unrestricted, freewheeling and unbridled life he got addicted to vices like stealing, gambling, visiting whorehouses and womanizing Once he visited courtesan Kamadhvaja and got infatuated with her He started passing his time enjoying all human comforts and carnal pleasures

२१. तए णं तस्स विजयमित्तस्स रन्नो अन्नया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था। नो संचाएइ विजयमित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माण्णुस्सगाइं भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए।

तए णं विजयमित्ते राया अन्नया कयाइं उज्झियदारयं कामज्झाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावित्ता कामज्झयं गणियं अब्भिंतरियं ठावेइ, ठावइत्ता कामज्झयाए गणिआए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२१. किसी समय (उस नगर के) विजयमित्र राजा की रानी श्री देवी को योनिशूल रोग उत्पन्न हो गया। इसलिए विजयमित्र राजा अपनी रानी के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगोंको भोगने मे समर्थ नही रहा।

अन्य किसी समय उस विजयमित्र राजा ने उज्झितककुमार को कामध्वजा गणिका के घर से निकलवा दिया और स्वय कामध्वजा वेश्या के साथ विषयभोगो का उपभोग करने लगा।

21. Once queen Shri Devi, the consort of king Vijayamitra of that city, got some vaginal ailment As a result she became unfit for enjoying conjugal pleasures with king Vijayamitra

At some point of time king Vijayamitra got young Ujjhitak expelled from the house of Kamadhvaja courtesan and started enjoying all human comforts and carnal pleasures with the courtesan

२२. तए णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे कामज्झयाए गणिआए मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने अन्नत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिड्डाणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से उज्झियए दारए अन्नया कयाइ कामज्झयं गणियं अंतरं लभेइ, लभित्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता, कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२२. तब वह उज्झितककुमार कामध्वजा गणिका के घर से निकाले जाने पर कामध्वजा गणिका मे **मूर्च्छित**–(उसके ही ध्यान मे पागल बना हुआ), **गृद्ध**–(उस वेश्या की ही दिन–रात इच्छा रखने वाला) **ग्रथित**–(उसके ही स्नेहजाल मे जकडा हुआ) और **अध्युपपन्न**–(उस वेश्या की ही चिन्ता मे लीन रहने वाला) वह उज्झितक कुमार अन्यत्र कही भी **स्मृति**–स्मरण, **रति**–प्रीति व **धृति**–मानसिक शान्ति को प्राप्त न करता हुआ, उसी में चित्त व मन को लगाए हुए, उसी को प्राप्त करने के प्रयत्न मे जुटा हुआ उद्यत, उसी में मन, वचन और इन्द्रियो को समर्पित करने वाला, उसी की भावना से भावित होता हुआ कामध्वजा वेश्या के **अन्तर**–(ऐसा अवसर जिस समय राजा का आगमन न हो) **छिद्र**–(राज–परिवार का कोई व्यक्ति भी वहाँ न हो) व **विवर**–(कोई दूसरा सामान्य पुरुष भी जिस समय न वहाँ हो) पर ध्यान टिकाकर रहने लगा।

किसी अन्य समय मे वह उज्झितक कुमार कामध्वजा गणिका के पास जाने का अवसर मिलते ही गुप्तरूप से उसके घर मे प्रवेश कर गया और कामध्वजा वेश्या के साथ मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगो का उपभोग करने लगा।

22. On getting expelled from the house of Kamadhvaja courtesan, that young Ujjhitak being madly attached (*murchhit*) with Kamadhvaja courtesan, infatuated (*griddha*) with her, entrapped in her love (*grathit*), and lost in her thoughts (*adyupapanna*), could not think of loving any other person or thing and deriving mental peace Always thinking about her, making efforts to possess her, devoting his mind speech and body to her, driven by his desire for her, he got himself involved in seeking an opportunity when the king did not come to courtesan Kamadhvaja's house, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there

At some point of time as soon as that young Ujjhitak got such an opportunity he stealthily entered the house of Kamadhvaja courtesan and started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her

विवेचन—इस सूत्र मे कुछ ऐसे पर्यायवाची शब्द आये है, जिनसे लगता है, एक ही भाव को व्यक्त करने के लिए इतने शब्दो का प्रयोग किया गया है। किन्तु टीकाकार का कथन है, वीतराग वाणी मे कोई भी शब्द निरर्थक या पुनरुक्त नही होता। इन पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्दो के अर्थ मे किंचित् अन्तर है। यह अन्तर उसकी सूक्ष्म मानसिक अवस्था के उतार-चढाव को द्योतित करते है, जैसे-

मुच्छिए—मूर्च्छित, विवेक शून्य मनोदशा।

गिद्धे—गृद्ध, लम्पट या गीध की तरह टूट पडने वाला।

गढिए—ग्रथित-स्नेह के बधनो मे बँधा हुआ।

अज्झोववन्ने—अध्युपपन्न-किसी के पीछे एकाग्र भाव से लग जाने वाला।

तच्चित्ते—तद्चित्त-उसी मे चित्त लगा हो, चित्त भाव मन का सूचक है।

तम्मणे—तद्मन-उसी मे मन रमा हो, मन द्रव्य मन का बोधक है।

तल्लेसे—तद्लेश्य-आत्मा के परिणाम भी उसी मे लगे हो।

तदज्झवसाणे—तदध्यवसाय-उसी मे अध्यवसाय (सूक्ष्म मन) लगा हो, उसी को पाने मे प्रयत्नशील।

तदट्ठोवउत्ते—तदर्थोपयुक्त-अपनी चाह के पीछे सतत सावधानी पूर्वक जुटा हो।

तदप्पियकरणे—तदर्पित करण-इन्द्रियो को उसी लक्ष्य पर सलग्न कर दिया हो।

तब्भावणाभाविए—तद्भावना भावित-उसी लक्ष्य की भावना से मन का कण-कण रगा हो। *(आचार्यश्री आत्माराम जी म कृत हिन्दी टीका पृ १७३)*

Elaboration—This aphorism contains numerous synonyms that indicate that so many words have been used to convey just a single idea But the

commentator opines that in the sermon of the Detached no word is either meaningless or repeated. There is a subtle difference in the meanings of each of these synonyms defining the minute variations in his mental state For example—

Muchchhiye—*murchchhit*; irrational state of mind.

Giddhe—*griddha*, a licentious person, one who pounces like a vulture.

Gadhiye—*grathit*; entrapped in bonds of love

Ajjhovavanne—*adhypapanna*, having obsessive involvement in possessing something.

Tachchitte—*tadchitta*, obsessed state of psyche

Tammane—*tadman*; obsessed state of mind,

Tallese—*tadleshya*, obsessed state of soul

Tadajjavasane—*tadadhyavasaya*, engaged in owning some thing

Tadatthovautte—*tadarthopayukt*, carefully engaged in fulfilling one's desires

Tadappiyakarane—*tadarpit karan*, devoting all physical efforts to a goal

Tabbhavanabhaviye—*tadbhaavana bhaavit*, devoting all mental efforts to a goal *(Hindi Tika by Acharya Atmaram ji M., p 173)*

२३. इमं च णं मित्ते राया ण्हाए जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवागुरापरिक्खित्ते जेणेव कामज्झयाए गणियाए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं उज्झियए दारे कामज्झयाए गणियाइ सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरमाणं पासइ, पसित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे, कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियभिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गेण्हावित्ता अट्ठि–मुट्ठि–जाणु–कोप्पर–पहार–संभग्ग–महियगत्तं करेति करेत्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु, गोयमा ! उज्झियए दारए पुरापोराणाणं कम्माणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

२३. इधर किसी समय (विजय) मित्र नरेश, स्नान आदि करके मस्तक पर तिलक लगाकर सर्व अलकारो से विभूषित हो, मनुष्यो के समूह से घिरा हुआ कामध्वजा वेश्या के घर गया। वहाँ उसने उज्झितक कुमार को कामध्वजा वेश्या के साथ मनुष्य सम्बन्धी भोगो मे रमण करते हुए देखा। देखते ही वह क्रोध से लाल–पीला अत्यन्त उग्र हो गया। मस्तक पर त्रिवलिक भृकुटि–तीन रेखाओं वाली भौहें चढाकर अपने सैनिको द्वारा उज्झितक कुमार को पकडवाया। पकडवाकर यष्टि–(लकडी), मुष्ठि–(मुक्का–

घूँसा), जानु–(घुटना), कूर्पर–(कोहनी) के प्रहारो से उसके शरीर को चूर–चूर और मथित करके **अवकोटक बन्धन**–(जिस बन्धन में गर्दन को मरोडकर पीठ पीछे हाथो के साथ बाँधा जाता है) से बाँधा। इसप्रकार बाँधकर (जैसा अभी तुमने देखा है) वध करने की आज्ञा दी।

हे गौतम ! इस प्रकार वह उज्झितक कुमार अपने पूर्वकृत पाप कर्मों का फल भोग रहा है।

23. Then one day king Vijayamitra, after taking his bath, applying auspicious mark on his forehead, embellished fully with ornaments, and accompanied by a throng of people, went to the house of Kamadhvaja courtesan. There he came across young Ujjhitak enjoying all human comforts and carnal pleasures with Kamadhvaja courtesan. As soon as he saw this he turned red with anger and became violent Raising his eyebrows he got young Ujjhitak caught by his guards After that he gave Ujjhitak a thorough beating by hammering and tossing his body with blows of stick, fist, knee, and elbow Having done that the king got him tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back) and sentenced him to death

Gautam ! This way that young Ujjhitak is suffering for the sinful deeds he committed in the past

उज्झितक का भविष्य

२४. 'उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहि, कहिं उववज्जिहिइ ?'

गोयमा ! उज्झियए दारगे पणवीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वानरकुलंसि वानरत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने, जाए जाए वानरपेल्लए वहेइ। तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नयरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ।

तए णं तं दारयं अम्मापियरो जायमेत्तकं वद्धेहिंति, नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेहिंति, तं जहा–'होउ णं अम्हं इमे दारए पियसेणे नामं नपुंसए।' तए णं से पियसेणे नपुंसए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विन्नयपरिणयमेत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ।

तए णं से पियसेणे नपुंसए इंदपुरे नयरे बहवे राईसर–जाव पभिइओ य मंत–चुण्णेहि य हियउड्डावणाहि य निण्हवणेहि य पण्हवणएहि य वसीकरणेहि य आभियोगिएहि य अभियोगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

२४. गौतम स्वामी ने पूछा–भन्ते ! यह उज्झितक कुमार यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया–गौतम ! उज्झितक कुमार २५ वर्ष की आयु को पूर्ण कर आज ही दिन के तीसरे प्रहर मे शूली से भेदा जाने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक के नारक रूप मे उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर इसी जम्बूद्वीप मे भारतवर्ष के वैताढ्य पर्वत की तलहटी मे वानर कुल मे वानर के रूप मे जन्म लेगा। वहाँ पर युवावस्था को प्राप्त होता हुआ वह तिर्यंच सम्बन्धी भोगों मे मूर्च्छित हुआ, भोगो के स्नेहपाश मे जकडा हुआ और भोगो मे ही मन को लगाये रखने वाला होगा। वह तत्काल उत्पन्न हुए वानर शिशुओ का घात किया करेगा। ऐसे कुकर्म मे तल्लीन हुआ वह काल करके इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत इन्द्रपुर नामक नगर मे गणिका के घर मे पुत्र रूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ पर माता–पिता उस बालक को उत्पन्न होते ही वर्द्धितक (वधिया–नपुसक) बना देगे और नपुसक के काम सिखलायेगे। बारह दिन व्यतीत हो जाने पर उसका 'प्रियसेन' नाम रखेगे। युवावस्था को प्राप्त होकर वह विज्ञ–विशेष ज्ञान वाला एव बुद्धि आदि से परिपक्व अवस्था को प्राप्त होगा। वह प्रियसेन नपुसक रूप, यौवन व लावण्य द्वारा आकर्षक शरीर वाला होगा।

तदनन्तर वह प्रियसेन नपुसक इन्द्रपुर नगर के राजा, ईश्वर आदि मनुष्यो को अनेक प्रकार के विद्या–प्रयोगो से, मत्रो द्वारा मन्त्रित चूर्ण, भस्म आदि प्रयोगो से, हृदय को विचार शून्य भ्रमित व आकर्षित कर देने वाले, अदृश्य कर देने वाले, वश मे करने वाले, प्रसन्न कर देने वाले और पराधीन कर देने वाले प्रयोगो से अपने वश मे करके मनुष्य सम्बन्धी भोगो को भोगता हुआ समय यापन करेगा।

THE FUTURE OF UJJHITAK

24. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this young Ujjhitak go ? Where will he be reborn ?"

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of twenty five years, this young Ujjhitak will die in the gallows this afternoon and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha

Getting out from there, he will take rebirth as a monkey in a monkey family at the foot of the Vaitadhya mountain On maturing he will turn to be an animal involved and infatuated with and entrapped in carnal

pleasures. He will keep on killing newborn monkeys Involved in such atrocious deeds he will complete his life-span and will be reborn as a son in the house of a courtesan in the city of Indrapur in this Jambu continent On birth his parents will castrate him and train him as a eunuch. On the twelfth day after his birth they will name him as Priyasen That Priyasen eunuch will have beautiful, youthful, charming and attractive body

Eunuch Priyasen will bring various kings, rich merchants, and other such people of Indrapur city under his control with the help of a variety of magical powers, mantra-charged powders and ash, and other methods of mesmerizing, hypnotizing, enticing and captivating, and spend his time enjoying all human comforts and carnal pleasures

२५. तए णं से पियसेणे नपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एकवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। तत्तो सरीसवेसु संसारो तहेव जहा पढमे जाव पुढवि.।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ अन्नया कयाइ गोट्ठिल्लएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे, जाव अंतं करेहिइ, त्ति निक्खेवो।

॥ द्वितीयं अज्झयणं समत्तं ॥

२५. इस तरह वह प्रियसेन नपुसक इसप्रकार के पापपूर्ण कामो मे ही लक्ष्य रखेगा, इन्हे ही अपना कर्त्तव्य एव सर्वोत्तम आचरण मानेगा। इन दुष्प्रवृत्तियो के द्वारा वह बहुत पापकर्मो का उपार्जन करके १२१ वर्ष की पूर्ण आयु भोगकर मृत्यु का समय आने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक मे नारक के रूप में उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर सरीसृप-(छाती के बल से चलने वाले सर्प) आदि प्राणियो की योनियो मे जन्म लेगा। वहाँ से उसका ससार-भ्रमण प्रथम अध्ययन मे वर्णित मृगापुत्र की तरह होगा। यावत् पृथ्वीकाय आदि मे जन्म लेगा।

वहाँ से निकलकर इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष की चम्पा नगरी मे भैंसा (महिष) के रूप मे जन्म लेगा। वहाँ गोष्ठिको-मित्रमण्डली (अन्य भैसो) के द्वारा मारे जाने पर उसी नगरी के श्रेष्ठिकुल मे पुत्ररूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ पर बाल्यावस्था को पार करके यौवन अवस्था को प्राप्त होता हुआ वह तथारूप संयमी स्थविरो के पास शका-काक्षा आदि दोषो से रहित बोधिलाभ (सम्यक्त्व) को प्राप्त कर अनगार धर्म

को ग्रहण करेगा। वहाँ से कालमास मे कालकर सौधर्म नामक प्रथम देवलोक मे उत्पन्न होगा। यावत् मृगापुत्र के समान कर्मो का अन्त करेगा।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

25. Thus that Priyasen eunuch will aim only at such sinful activities and consider them to be his only duty and lofty conduct. As a consequence of these evil deeds he will acquire abundant demeritorious *karmas*. Having completed his life-span of one hundred twenty one years, at the time of death he will die and take rebirth as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha From there he will reincarnate in the genuses of non-limbed reptilians and other such beings From there he will follow the cycles of rebirth as mentioned in context of Mrigaputra in the first chapter and so on up to will be born as earth-bodied and other such beings

Coming out from there he will be born as a buffalo in Champa city in Bharatvarsh area in this Jambu continent After being killed by other buffaloes he will reincarnate as a son in a merchant family of the same city On crossing adolescence and attaining youth, he will gain unambiguous and faultless righteousness (*samyaktva*) in the company of disciplined ascetics and get initiated as an ascetic From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok and so on up to Like Mrigaputra he will shed all his *karmas*

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : तृतीय अध्ययन
अभग्नसेन

उपोद्घात

इस तीसरे अध्ययन मे अभग्नसेन नामक दुर्दान्त चोर सेनापति के क्रूर चौर्यकर्म, लूट-पाट, हिंसा, हत्या आदि अपराधिक दुष्कर्मों का पाप फल बताया है। विशेष ध्यान देने की बात है,वह पूर्वजन्म मे अण्डो का बडा व्यापारी था, स्वय जीवो की हिंसा करके रस-लोलुप बना अण्डा, सुरा, माँस आदि खाता पीता था और उनका व्यापार भी करता था। ऐसा पापी जीव जब माता के गर्भ मे आया तो माता को भी जीव-हिंसा करके इसी प्रकार मद्य-माँस-सेवन का दोहद उत्पन्न हुआ। इस जीवन मे अभग्नसेन की दुर्दशा का रोमाचक वर्णन और फिर अनेक जन्म-जन्मान्तरो मे नरक-तिर्यंच आदि दुर्गतियो मे परिभ्रमण करने का यह वर्णन हिंसा आदि दुष्कर्मों से निवृत्ति की प्रेरणा देता है।

FIRST SHRUTSKANDH : THIRD CHAPTER
ABHAGNASEN

INTRODUCTION

In this third chapter the consequences or fruits of stealing, looting, violence, murder and other such cruel and criminal acts committed by Abhagnasen, the villainous leader of thieves, are narrated It is noteworthy that in his previous birth he was a prominent trader of eggs He was a gourmand and in order to satiate his taste buds he killed animals and ate meat besides trading in eggs, meat and wine When such sinner was conceived, his mother too had desire of killing animals and consuming meat and wine during her pregnancy This vivid dreadful description of Abhagnasen's plight, followed by the details of his passage through base genuses like hell and animal for numerous cycles of rebirth, gives inspiration to avoid evil deeds

तृतीय अध्ययन
THIRD CHAPTER

उत्क्षेप

१. तच्चस्स उक्खेवो।

१. तृतीय अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए।

FOREWORD

1. The foreword of the third chapter should be read as before

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था, रिद्ध.। तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं अमोहदंसणे उज्जाणे। तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था। तत्थ णं पुरिमताले महब्बले नामं राया होत्था।

२. उस काल, उस समय मे पुरिमताल नामक एक नगर था। वह व्यापार–धन–धान्य आदि सभी प्रकार से समृद्ध तथा सुरक्षित था। उस पुरिमताल नगर के ईशानकोण मे अमोघदर्शन नामक एक उद्यान था। उस उद्यान में अमोघदर्शी यक्ष का यक्षायतन था। इस नगर मे महाबल नामक राजा राज्य करता था।

2. During that period of time there was a city named Purimtal, which was prosperous in all respects including business, wealth and agriculture, and was well protected In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Amoghadarshan In that garden there was a temple of Amoghadarshi Yaksh A king named Mahabal ruled that Purimtal City

शालाटवी चोरपल्ली

३. तत्थ णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए देसप्पंते अडवी संठिया। इत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था। विसम–गिरिकन्दर–कोलम्बसंनिविट्ठ–वंसीकलंक–पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल–विसमप्पवायफरिहोवगूढा अब्भिंतरपाणीया सुदुल्लभ–जलपेरंता अणेगखंडी विदियजण–दिन्न निग्गम–प्पवेसा सुबहुयस्स वि कूवियस्स जणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था।

३. उस पुरिमताल नगर के उत्तर–पूर्व दिशा के सीमान्त पर स्थित एक सघन अटवी (गहन जंगल था) थी। उस अटवी मे शालाटवी नाम की चोरपल्ली (चोरों के रहने का गुप्त स्थान) थी। वह विषम पर्वतो के बीच, भयकर गुफाओ के किनारे पर स्थित थी। उसके चारों तरफ बाडरूप परकोटे जैसी बाँस के सघन वृक्षों की जाली बनी हुई थी। उसके चारो तरफ पर्वतो से टूटे हुए बडे -बडे पत्थर पडे थे, कही विषम गड्डे थे और

कही ऊँचे–नीचे विषम झरने, जिनसे एक प्राकृतिक खाई जैसी बन गई थी। किन्तु उसके बाहर दूर–दूर तक पानी दुर्लभ था। उसमें भागकर छिपने वाले मनुष्यो के लिए अनेक गुप्तद्वार बने हुए थे। जानकार व परिचित व्यक्ति ही उसमे आना–जाना कर सकता था। बहुत से **मोषव्यावर्तक**–चोरो से चुराई वस्तुओ को खोजने वाले खोजी सैनिकों व राजपुरुषो द्वारा भी वहाँ पहुँच पाना और उन्हे जीतना मुश्किल था।

SHALATVI HIDEOUT

3. In the outskirts of Purimtal city, in the northeastern direction there was a dense jungle. In that jungle was a hideout of thieves known as Shalatavi It was located at an impregnable spot in a tedious hilly terrain at the edge of dangerous caves A parapet-like network of bamboo thickets surrounded it Around it there were large boulders, natural gorges, and high-low streams and waterfalls forming natural trenches There was no source of water in the general area except the hideout proper It had many small and concealed passages for entry and escape but only the acquainted could use them It was difficult even for armed guards and trained detectives, coming in search of stolen goods, to reach this hideout and defeat the bandits

चोरसेनापति विजय

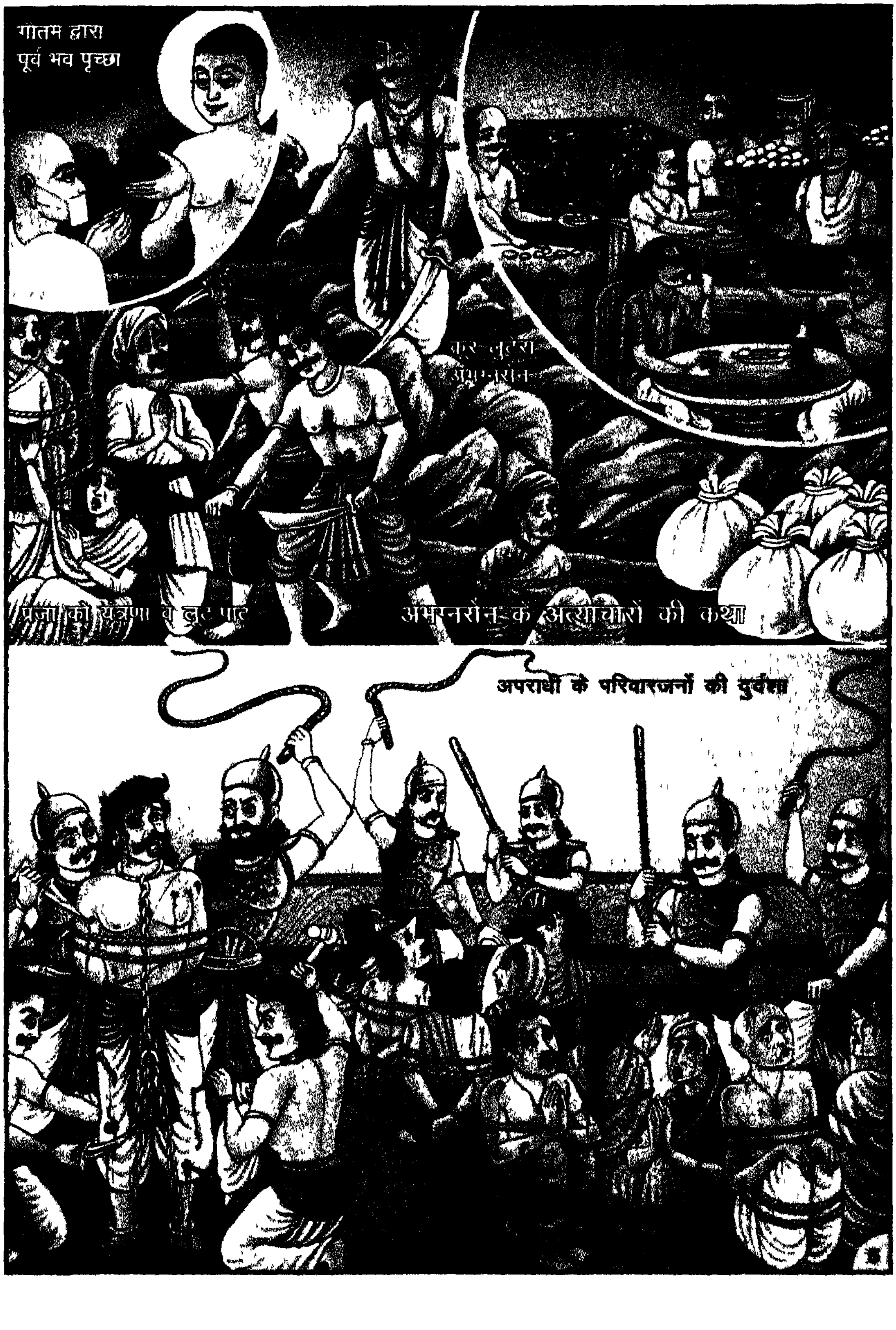
४. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजय नामं चोरसेणावई परिवसइ। अहिम्मए जाव लोहियपाणी बहुनयरनिग्गयजसे, सूरे, दढप्पहारे, साहसिए, सद्दवेही असि–लट्ठिपढममल्ले। से णं तत्थ सालाटवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरइ।

४. उस शालाटवी चोरपल्ली मे विजय नाम का चोर सेनापति रहता था। वह घोर अधर्मी यावत् उसके हाथ सदा खून से रगे रहते थे। अनेक नगरो मे उसका नाम प्रसिद्ध था। वह शूरवीर, दृढप्रहारी, दु साहसी, शब्दवेधी–(बिना देखे केवल शब्द सुनकर ही लक्ष्य को वीधने वाला) तथा तलवार और लाठी चलाने मे प्रथम कोटि का योद्धा था। उस चोरपल्ली मे पाँच सौ चोर उसके सेनापतित्व मे रहते थे।

BANDIT LEADER VIJAYA

4. In Shalatavi lived the bandit leader Vijaya He was absolutely corrupt. . and so on up to. . his hands were always red with blood His notoriety had reached numerous towns He was brave, ruthless, courageous, an expert marksman and an accomplished swordsman and stick fighter. He was the undisputed leader of the five hundred thieves of Shalatavi

विवेचन–इस सूत्र में विजय चोर की क्रूरता का निदर्शन करने वाले कुछ विशेषण तो मूल पाठ मे है; तथा **अहम्मिए जाव**–शब्द से उसके अन्य विशेषण भी सूचित किये है। टीकाकार अभयदेवसूरि ने उनका अर्थ इस प्रकार किया है–


गौतम द्वारा
पूर्व भव पृच्छा
प्रजा को यंत्रणा व लूट पाट
अभग्नसेन के अत्याचारों की कथा
अपराधी के परिवारजनों की दुर्दशा

चित्र परिचय-५

Illustration No. 5

अत्याचारी अभग्नसेन को दण्ड

दृश्य–१

पुरिमताल नगर के घने जगलो मे पर्वतो के बीच चोरपल्ली मे अभग्नसेन चोर सेनापति रहता था। वह बडा दुराचारी, अत्याचारी था। आस-पास के गांवो को लूटता, नागरिको को तरह तरह की पीडाएँ देता रहता। राजा महाबल ने उसे गिरफ्तार कर अत्यन्त कठोर दण्ड दिया।

दृश्य–२

नगर मे भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए गौतम स्वामी ने चोराहे पर उसी अभग्नसेन को देखा, जिसके दोनो हाथ मरोड कर पीछे बँधे है व साँकलो से पूरा शरीर जकडा है। राजपुरुष चमडे की गीली बेतो से, भालो व लौह दण्ड से प्रहार करते है। शस्त्रो से शरीर का माँस काट काट कर पक्षियो को खिलाया जा रहा है। सिर पर गर्म लोहे की पट्टी बँधी है। उसी के सामने उसके चाचा चाची, भाई भतीजे तथा उनकी पत्नियो आदि को कठोर बन्धनो से बाँधकर यत्रणा दी जा रही है।

दृश्य–३

गणधर गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा भते ! इसने पूर्वभव मे क्या घोर पापकर्म किये थे ?

दृश्य–४

भगवान ने बताया पूर्वभव मे यह निर्नय नामक अण्डो का व्यापारी था। पशु पक्षियो को मारना माँस, शराब बेचना आदि अत्यन्त जघन्य पापकर्मो के कारण यहाँ इस पर यह दुख रूप फल प्राप्त हुआ है।

श्रुतस्कन्ध १ अ. ३, सूत्र ४-८

PUNISHMENT TO TYRANT ABHAGNASEN

SCENE-1

In a hideout named Shalatavi outside Purimtal city lived bandit leader Abhagnasen He was absolutely corrupt and tyrannical He used to plunder nearby villages and torment citizens many ways King Mahabal got him arrested and sentenced him to harsh punishment

SCENE-2

On his alms seeking trip in the city, Gautam Swami saw Abhagnasen with his both hands tied at his back and shackled He is being whipped by wet leather whips and beaten by iron rods and spears His flesh is being chopped and fed to birds His head is strapped in hot iron band His uncles, aunts, brothers, nephews and their wives are being tortured before his eyes

SCENE-3

Gautam Swami returns to *Bhagavan* and asks—*"Bhante* ! What grave sins this person committed during his past birth ?"

SCENE-4

Bhagavan said—In his past birth he was Nirnaya, the egg-trader He is suffering the bitter fruits of his acts of killing animals and birds as well as selling meat and wine

—Sec I, Ch 3, Sutra 4 8

(१) **अधर्मी**–पापपूर्ण आचरण करने वाला।

(२) **अधर्मिष्ठ**–अधर्म ही जिसको प्रिय–इष्ट हो।

(३) **अधर्माख्यायी**–जो दूसरो को भी अधर्माचरण का उपदेश देता हो।

(४) **अधर्मानुज्ञ**–धर्मशून्य या धर्म विरुद्ध कार्यों का अनुमोदन करने वाला।

(५) **अधर्मप्रलोकी**–अधर्म पर ही सदा ध्यान केन्द्रित रखने वाला।

(६) **अधर्मप्ररंजन**–धर्म–विरोधी कर्मों से ही मनोरजन करने वाला।

(७) **अधर्मशील समुदाचार**–अधर्माचरण करना ही जिसका शील, शैली, स्वभाव और व्यवहार था।

(८) **अधर्म वृत्ति**–अधर्म से (आजीविका) करने वाला।

(९) **हन छिन्द–भिन्द–विकर्तक**–इसे मारो, इसके टुकडे–टुकडे कर दो, इसको फाड डालो, इसको काट दो–इस प्रकार के त्रासदायक शब्दो का उच्चारण करने वाला।

इन विशेषणो से उसके अत्यन्त क्रूर स्वभाव और कठोर हिंसा प्रधान आचार व्यवहार का पता चलता है। (आचार्य श्री आत्माराम जी कृत हिन्दी टीका, पृ १९६)

Elaboration—This aphorism contains some of the adjectives used to indicate the extreme cruelty of bandit Vijaya but there are some more as indicated by the phrase *'ahammiye java'* (irreligious and so on) Abhayadev Suri, the commentator has elaborated as follows—

(1) Adharmi—evil doer

(2) Adharmisht—one who loves evil or irreligious activity

(3) Adhramakhyayi—one who preaches others to indulge in irreligious conduct.

(4) Adharmanujna—one who supports activities devoid of or against religiosity

(5) Adharm praloki—one who always concentrates on evil activities.

(6) Adharmapraranjan—one whose only entertainment is evil deeds

(7) Adharmasheel samudachar—one whose morality, style, attitude, and behaviour merge with evil doing

(8) Adharma-vritti—one who subsists only on evil doing.

(9) Hun chhind-bhind-vikartak—one who utters such dreadful words like 'kill', 'cut to pieces', 'tear apart', and 'slaughter'

These adjectives reveal his extremely cruel, harsh, and violent conduct and behaviour. (*Hindi Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M., p. 196)

५. तत्थ णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयाण य संधिच्छेयाण य खंडपट्टाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्न–भिन्न बाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था।

तए णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे, विद्धंसेमाणे, तज्जेमाणे, तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे करेमाणे विहरइ; महाबलस्स रण्णो अभिक्खणं अभिक्खणं कप्पायं गेण्हइ।

५. वह विजय चोरसेनापति अनेक चोरो, पारदारिको–(परस्त्रीलम्पट), ग्रन्थिभेदको–(गाँठ काटने वालो), सन्धिच्छेदको–(दीवारो मे साध लगाने वालो), जुआरी, धूर्त वगैरह ऐसे लोग, कि जिनके पास पहनने के लिए वस्त्र का एक टुकडा भी न हो, तथा अन्य बहुत से हाथ आदि कटे हुए, लूले, नासिका आदि अवयवो से रहित नकटे, तथा शिष्ट समाज से बहिष्कृत व्यक्तियो के लिए उस बाँस के वन मे आश्रय व शरणदाता बना हुआ था।

वह विजय चोरसेनापति पुरिमताल नगर मे स्थित जनपद के अनेक गाँवो को नष्ट करता, अनेक नगरो का नाश करता, गाय आदि पशुओ को चुरा लेता, कैदियो का अपहरण करता,पथिको को लूट लेता, सेध लगाकर चोरी करता और उन्हे बार–बार उत्पीडित करता रहता, विध्वस्त करता रहता, तर्जना–डराता, धमकाता चाबुक आदि से पीटता रहता। घर आदि उजाडकर स्थान रहित,धनरहित (दरिद्र) तथा धान्यादि से रहित कर भूख से तडफाता हुआ तथा महाबल राजा के महसूल व लगान को भी बार–बार स्वय ही ग्रहण (हडप) करता रहता था।

5. Like a bamboo thicket bandit Vijaya provided protection and refuge in that bamboo forest to all sorts of branded and escaped criminals These included thieves, womanizers (*paardariks*), bamboozlers (*granthibhedak*), housebreakers (*sandhicchedak*), wall-breakers (***kshatrakhanak***), gamblers, transgressors, destitute, deformed, disabled, and all sorts of outcasts

In and around Purimtal city, that leader of bandits, Vijay, habitually indulged in activities like raiding villages, raiding towns, driving away cattle, kidnapping prisoners, looting and beating wayfarers, and house breaking. With these activities he tormented, wrecked, terrorized, thrashed people and deprived citizens of their wealth, means of subsistence and peaceful living. He also habitually looted and collected the taxes due to king Mahabal.

६. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरी नामं भारिया होत्था, अहीण.। तस्स णं विजयचोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं दारए होत्था, अहीण-पडिपुण्णपंचिंदियसरीरे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते।

६. उस विजय चोरसेनापति की स्कन्दश्री नाम की रूपवती सुन्दर पत्नी थी। विजय चोरसेनापति का पुत्र एव स्कन्दश्री का आत्मज अभग्नसेन नाम का एक बालक था, जो सुगठित सुन्दर शरीर वाला तथा परिपक्व बुद्धि वाला युवक था।

ABHAGNASEN : THE SON OF BANDIT VIJAYA

6. That bandit-chief Vijaya had a beautiful wife named Skandashri. Bandit-chief Vijaya and Skandashri had a son named Abhagnasen who was a young man with a beautiful and well-proportioned body as well as a mature mind

भगवान महावीर का आगमन

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमतालनयरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया य पडिगओ।

७. एक समय पुरिमताल नगर मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। जनसमूह भगवान के दर्शन करने एव धर्मदेशना सुनने के लिए गया, राजा भी गया। भगवान ने धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर राजा तथा जनता वापस अपने स्थान को चले गये।

ARRIVAL OF BHAGAVAN MAHAVIR

7. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Purimtal City People came to pay homage. The king of the city also came to pay homage. *Bhagavan* gave his discourse to all, after which the king and the people returned home.

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव रायमग्गं समोगाढे। तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ, बहवे आसे, पुरिसे सन्नद्धबद्धकवए। तेसिं णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंधणं जाव उग्घोसिज्जमाणं।

तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंसि चच्चरंसि निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठ चुल्लपिउए अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति। तयाणंतरं च दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं

तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति। एवं तच्चे चच्चरे अट्ठमहापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, बारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया. चोद्दसमे पिउस्सियाओ, पन्नरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अग्गओ घाएंति घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा तालेमाणा कलुणं कागणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणियं च पाएंति !

८. उस समय, श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी भिक्षा के लिए नगर भ्रमण कर लौटते हुए राजमार्ग पर पधारे। वहाँ उन्होंने बहुत से हाथियों, घोडों तथा राजपुरुषों को सैनिकों की भाँति शस्त्रों से सुसज्जित और कवच आदि पहने हुए देखा। उन सबके बीच अवकोटक बन्धन-(गर्दन मरोडकर पीठ पीछे दोनों हाथों के साथ बाँधना) से बंधे एक पुरुष को देखा, जिसके सम्बन्ध में उद्घोषणा की जा रही थी। यह सब कथन दूसरे अध्ययन के सूत्र ६ में आये वर्णन के अनुसार समझें।

वे सैनिक उस पुरुष को चत्वर-(जहाँ चार मार्गों से अधिक मार्ग मिलते हों) पर बैठाकर उसके आगे उसके आठ लघुपिताओं-(चाचाओं) को मारते हैं, तथा चाबुक के प्रहारों से पीटते हैं। अतीव दयनीय दशा को प्राप्त हुए उस पुरुष को उसके ही शरीर में से काट-काट कर माँस के छोटे-छोटे टुकडे खिलाते हैं और उसी का रुधिर पिलाते हैं। फिर दूसरे चौराहे पर लाकर उसकी आठ लघु माताओं (चाचियों को) को उसी के सामने पीटते हैं और माँस खिलाते तथा रुधिरपान कराते हैं। इसी तरह तीसरे चौराहे पर आठ महापिताओं-(पिता के ज्येष्ठ भ्राताओं-ताऊओं) को, चौथे चत्वर पर आठ महामाताओं-(पिता के ज्येष्ठ भ्राताओं की पत्नियों-ताइयों) को, पाँचवें पर पिता के पुत्रों (स्वयं के भाई) को, छठ्ठे पर पिता की पुत्रवधुओं (स्वयं की भाभी) को, सातवें पर पिता के जामाताओं (स्वयं के बहनोई) को, आठवें पर पिता की लडकियों (स्वयं की बहन) को, नवमें पर नप्ताओं-(पिता के पौत्रों व दोहित्रों) को, दसवें पर लडके और लडकियों की लड़कियों (पिता के पौत्रियों व दौहित्रियों) को, ग्याहरवें पर नप्तृकापतियों-(पिता की पौत्रियों व दौहित्रियों के पतियों) को, बारहवें पर पिता की नाप्ता-पत्नियों (पौत्रों व दौहित्रों की पत्नियों), तेरहवें पर पिता की बहनों के पतियों, (फूफाओं) को, चौदहवें पर पिता की बहनों-(बुआओं) को, पन्द्रहवें पर माता की बहनों के पतियों-(मौसाओं) को, सोलहवें पर माता की बहनों को-(मौसियों को), सत्रहवें पर मामा की स्त्रियों (मामियों) को, अठारहवें पर शेष मित्र, ज्ञाति, स्वजन सम्बन्धी और परिजनों को उस पुरुष के आगे मारते हैं तथा चाबुक के प्रहारों से पीटते हुए वे राजपुरुष करुणाजनक दशा प्राप्त उस पुरुष को उसके शरीर से काटे हुए माँस के छोटे-छोटे टुकड़े खिलाते और रुधिर का पान कराते हैं।

8. During that period of time, while returning after collecting alms in the city, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road. There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a man tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with

hands already tied at the back). Announcement was being made about him. All details about this should be read as aphorism 6 of chapter 2.

Those soldiers forced that prisoner to sit at the first road crossing (of many roads) and before his eyes killed his eight *chachas* (father's younger brothers; uncles; *chullapiuye*). After that they thrashed him with whips and, in this miserable condition, made him eat small pieces of his own flash and drink his own blood. Then those soldiers brought him on the second road crossing (of many roads), before his eyes killed his eight *chachis* (wives of father's younger brothers; aunts; *chullamauyao*), thrashed him and fed him his own flash and blood. In the same way they killed his six *taus* (father's elder brothers; uncles; *mahapiuye*) on the third crossing, his six *tais* (wives of father's elder brothers; aunts; *mahamauyao*) on the fourth crossing, sons (of his father excluding himself; his brothers) on the fifth crossing, daughters-in-law (of his father; wives of his brothers) on the sixth crossing, sons-in-law (of his father; husbands of his sisters) on the seventh crossing, daughters (of his father; his sisters) on the eighth crossing, grandsons (of his father; his nephews) on the ninth crossing, granddaughters (of his father; his nieces) on the tenth crossing, husbands of granddaughters (of his father) on the eleventh crossing, wives of grandsons (of his father) on the twelfth crossing, husbands of his father's sisters (his uncles) on the thirteenth crossing, father's sisters (his aunts) on the fourteenth crossing, husbands of his mother's sisters (his maternal uncles) on the fifteenth crossing, mother's sisters (his aunts) on the sixteenth crossing, wives of mother's brothers on the seventeenth crossing, and other friends, kinfolk, and close and distant relatives on the eighteenth crossing before his eyes. After each of these instances the soldiers thrashed him and, in this miserable condition, made him eat small pieces of his own flash and drink his own blood.

गौतम की जिज्ञासा

९. तए णं से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासइ पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जे जाव तहेव निग्गए एवं वयासी–'एवं खलु अहं णं भंते ! तं चेव जाव से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव विहरइ।'

९. (इस दृश्य को देखकर) भगवान गौतम के हृदय में विचार व चिन्तन उत्पन्न हुआ। वे नगर से बाहर निकले तथा भगवान के पास आकर निवेदन करने लगे–'भगवन् ! मैं आपकी आज्ञानुसार भिक्षा के लिए

नगर में गया, वहाँ मैंने एक पुरुष को इस दयनीय स्थिति मे देखा है। भगवन् ! वह पुरुष पूर्वभव में कौन था ? जो इस तरह अपने कर्मों का फल पा रहा है।

GAUTAMS CURIOSITY

9. Bhagavan Gautam was thoughtful (on seeing all this) He came out of the city, went to Bhagavan Mahavir and said—"*Bhante* ! On getting your permission I went into the city to seek alms. There I saw a person in pathetic condition (as aforesaid) *Bhante* ! In his earlier birth, who was this person that now suffers such grave fruits of his *karmas* ?"

अभग्नसेन का पूर्वभव

१०. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पुरिमताल नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थमियसमिद्धे। तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिए नामं राया होत्था, महया.। तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडयवाणिए होत्था। अड्ढे जाव अपरिभूए, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

तस्स णं निन्नयस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं कुद्दालियाओ य पत्थियापिडए य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नगरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभिअंडए य बगि–मयूरी–कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च बहूणं जलयर–थलयर–खहयरमाईणं अंडाइं गेण्हंति, गेण्हेत्ता पत्थियापिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नयए अंडवाणियए तेणामेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणेतिं।

१०. हे गौतम ! उस काल तथा उस समय (जिस समय का यह वर्णन है) इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष मे पुरिमताल नामक विशाल समृद्धिशाली नगर था। उस पुरिमताल नगर मे उदित नाम का राजा राज्य करता था। उस पुरिमताल नगर मे निर्णय नाम का एक अण्डो का व्यापारी भी रहता था। वह बहुत धनी तथा बडा अधर्मी एव परम असन्तोषी, दुष्कर्मों मे ही आनन्द मानने वाला था।

निर्णय नामक अण्डवणिक के अनेक **दत्तभृतिभक्तवेतन**–(रुपया तथा भोजन के रूप मे प्रतिदिन वेतन पाने वाले) नौकर रहते थे। वे प्रतिदिन कुदाल व बाँस की पिटारियो को लेकर पुरिमताल नगर के चारो ओर जाते। कौवी–(कौए की मादा) के अण्डो को, घूकी–(उल्लु की मादा) कबूतरी, टिटोडी , बगुली, मोरनी और मुर्गी आदि के अण्डो को तथा अनेक जलचर, स्थलचर व खेचर आदि जीवो के अण्डो को लेकर पिटारियो में भरते थे और भरकर निर्णय नामक अण्डो के व्यापारी के पास आते थे, आकर उस अण्डव्यापारी को अण्डो से भरी हुई पिटारियाँ देते थे।

PREVIOUS BIRTH OF ABHAGNASEN

8. (Narrating the story of previous birth of that person Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was

a prosperous city called Purimtal in Bharatvarsh area in Jambu continent. A king named Udit was the ruler of that city. In that Purimtal city lived an egg trader named Nirnaya He was very rich but irreligious and extremely discontented. He derived pleasure only in sinful deeds.

Nirnaya egg-trader had many servants who were given food and cash as daily wages (*dattabhritibhaktavetan*). Every day they would go out of Purimtal City in all directions. They would collect eggs of crows, owls, pigeons, *Titodis* (sandpipers), *Bagulas* (herons), peacocks, hen, and many other aquatic, terrestrial and aerial beings After filling the baskets with these eggs they would return to Nirnaya egg-trader and hand over the egg filled baskets to him

११. तए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे काइअंडए जाव कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च बहूणं जलयर–थलयर–खहयरमाईणं अंडयए तवएसु य कवल्लीसु य कंदुएसु य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति, भज्जेंति, सोल्लेन्ति, तलित्ता भज्जित्ता सोलेत्ता रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। अप्पणा वि यणं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं सीधुं च आसाएमाणे–४ विहरइ।

११. उस 'निर्णय' नामक अण्डवणिक् के वे अनेक वेतनभोगी पुरुष बहुत से कौवी यावत् कुकडी (मुर्गी) के अण्डो तथा अन्य जलचर, स्थलचर एव खेचर आदि पूर्वोक्त जीवों के अण्डो को तवो पर, कडाहो पर, भाड मे एवं अगारों पर सेंकते, भूनते और पकाते थे। सेककर, तलकर, भूनकर एवं पकाकर राजमार्ग मे लगी दुकानो पर तथा बाजार के भीतर लगी हाटो मे अण्डो को बेचकर आजीविका करते थे। वह निर्णय नामक अण्डवणिक् स्वय भी अनेक कौवी यावत् कुकडी के पकाये हुए, तले और भुने हुए अण्डों को खाता तथा सुरा, मधु, मेरक, सीधु आदि मदिराओ का पान करता रहता था।

11. Many such servants of Nirnaya egg-trader fried, roasted and cooked large numbers of eggs of crows . and so on up to... hen, and many other aquatic, terrestrial and aerial beings on cooking-plates, frying-pans, ovens, and grills They earned their living by grilling, frying, roasting and cooking as well as selling eggs in shops and stalls on the main roads and markets in the streets. That Nirnaya egg-trader too ate such grilled, fried, roasted and cooked eggs of crows . and so on up to . hen and drank a variety of wines (*sura*), namely *madhu* (made from flowers or honey), *merak* (made from palm-fruit), *madya* (a kind of white wine), *seedhu* (made from mixture of jaggery and grains) etc.

अभग्नसेन का वर्तमान भव

१२. तए णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तसागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

१२. वह निर्णय नामक अण्डवणिक् इस प्रकार के पापकर्मों को करने वाला घोर सघन पापकर्मों को उपार्जित करके एक हजार वर्ष की आयुष्य को पूरी कर मृत्यु के समय में मृत्यु को प्राप्त करके तीसरी नरक में नारक रूप से उत्पन्न हुआ। जहाँ सात सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति है। नरक आयुष्य पूर्ण कर वह निर्णय अण्डवणिक् विजय चोरसेनापति की स्कन्दश्री भार्या के उदर में पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ है।

THE PRESENT BIRTH OF ABHAGNASEN

12. Involved in these kinds of cruel acts that Nirnaya egg-trader accumulated intense demeritorious *karmas*. Completing his life span of one thousand years, he died at the destined moment of death and took rebirth as an infernal being in the third hell with a maximum life span of seven *Sagaropam*. On completing the life span in hell the soul that was Nirnaya egg-trader came in the womb of Skandashri, the wife of bandit-chief Vijaya.

स्कन्दश्री को दोहद

१३. तए णं तीसे खन्दसिरीए भारियाए अन्नया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए। 'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं बहूहिं मित्त–नाइ–नियग–सयण–संबंधि–परियणमहिलाहिं अन्नाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च मज्जं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागयाओ पुरिसनेवत्थिया सन्नद्धबद्धवम्मियकवइया जाव गहियाउहपहरणा भरिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लासियाहिं दामाहिं लंबियाहि य ओसारियाहिं उरुघण्टाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता आलोएमाणीओ आलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति।

तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिज्जामि' त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव सुक्का भुक्खा जाव अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ।

१३. किसी अन्य समय लगभग तीन मास परिपूर्ण होने पर स्कन्दश्री को इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ–"वे माताएँ धन्य हैं, जो बहुत–सी मित्र, ज्ञाति, निजक,स्वजन, सम्बन्धियों और परिजनों की

महिलाओं तथा चोरपल्ली की अन्य महिलाओं को साथ लेकर स्नान आदि करके सर्व प्रकार के अलंकारों से अलंकृत हो, बहुत प्रकार के अशन, पान, खादिम, स्वादिम पदार्थों तथा सुरा, मधु आदि मदिराओं का स्वयं पान करती हैं, दूसरों को पिलाती हैं। तथा भोजन करके एकत्र होकर जिन्होंने पुरुष का वेष धारण किया है और दृढ़ बन्धनों से बंधे हुए कवच-लोहमय बख्तर आदि शरीर पर धारण किये हैं, तलवार, तीर आदि आयुध एवं प्रहरण शरीर पर बाँध रखे हैं तथा बांये हाथ में फलक-ढालों को धारण किये हुए म्यान से बाहर निकली हुई तलवारों से, कन्धे पर रखे हुए तरकशों से, ऊँचे किये हुए पाशों-जालों से, प्रत्यंचा युक्त धनुषों से, बाणों से सन्नद्ध है। जिनकी जँघाओं पर घण्टियाँ घनघना रही हैं। तथा क्षिप्रतूर्य नामक बाजा बज रहा है। ऐसी उत्कृष्ट-आनन्दमय महाध्वनि से समुद्र के गर्जारव के समान आकाशमण्डल को गुँजाती हुई शालाटवी चोरपल्ली के चारों ओर अवलोकन करती हुई, उसके चारों तरफ भ्रमण करती हुई अपना दोहद पूर्ण करती हैं।

क्या ही अच्छा हो, यदि मैं भी इसी भाँति अपना दोहद पूर्ण करूँ ? ऐसा विचार उसके मन में आया। किन्तु वह दोहद पूर्ण न होने से उदास रहने लगी। दुबली पतली हो गई और जमीन पर नजर गड़ाए चिन्ताग्रस्त रहने लगी।

SKANDASHRI'S DOHAD

13. At some point of time, when about three months of the pregnancy period had passed, Skandashri had a *dohad* (pregnancy desire)—"Blessed are those mothers who, after bathing and embellishing themselves with all kinds of ornaments, enjoy tasting and eating, distributing and sharing with female friends, kinfolk, close and distant relatives and other women of the hideout, a variety of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food) and wines (*sura*), namely *madhu* etc. After this feast they dress themselves as males and tightly strap iron armours and equip themselves with swords, arrows, and other hand-wielding and launchable weapons. They move carrying shields in their left hands, brandishing drawn swords, quivers on their shoulders, raised nets, and bows with arrows drawn on strings. Bells fixed on their thighs ring. *Kshipraturya* trumpets keep blowing. Filling the sky with such exhilarating tumult, matching the thunder of the sea, they move all around the hideout viewing everything. And thus they fulfill their *dohad* (desires of a pregnant mother).

How pleasurable it would be if I am also able to fulfill my *dohad* in the same way ?" With this thought and not being able to fulfill her *dohad* she turned gloomy. In due course she became emaciated and habitually sat staring at the ground and brooding.

१४. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिं भारियं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ, पासित्ता एवं वयासी–'किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियासि ?'

तए णं सा खंदसिरी विजयचोरसेणावइं एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं जाव झियामि।'

तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म खंदसिरिभारियं एवं वयासी–'अहासुहं देवाणुप्पिए !' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ !

१४. विजय चोरसेनापति ने स्कन्दश्री को इस प्रकार चिन्ताग्रस्त आर्तध्यान मग्न देखकर पूछा–देवानुप्रिये ! तुम उदास हुई क्यो आर्तध्यान कर रही हो ?

स्कन्दश्री ने विजय चोरसेनापति से कहा–देवानुप्रिय ! मुझे गर्भ धारण किये हुए तीन मास हो चुके है। मुझे पूर्वोक्त प्रकार दोहद उत्पन्न हुआ है, उसकी पूर्ति न होने से मै शोकाकुल एव आर्तध्यान कर रही हूँ।

विजय चोरसेनापति ने अपनी स्कन्दश्री भार्या का उक्त कथन सुन और समझ कर उसे इस प्रकार कहा–देवानुप्रिये ! तुम अपनी इच्छा के अनुकूल इस दोहद की पूर्ति कर सकती हो, कुछ भी चिन्ता मत करो।

14. When bandit-chief Vijaya saw brooding and worrying Skandashri he asked—"Beloved of gods ! What makes you sad and brooding ?"

Skandashri replied to bandit-chief Vijaya—"Beloved of gods ! Three months are past since I conceived I had the aforesaid *dohad* As I am unable to fulfill it, I am sad and brooding "

Bandit-chief Vijaya heard and understood the aforesaid statement of his wife Skandashri and said—"Beloved of gods ! Don't worry. You can fulfill your said *dohad* precisely as you wish "

१५. तए णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठा तुट्ठा बहूहिं मित्त–नाइ–नियग–सयण–संबंधि–परियण–महिलाहिं जाव अन्नाहि य बहूहिं चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया जाव विभूसिया विउलं असणं–४ सुरं च–५ आसाएमाणी–४ विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सन्नद्धबद्ध. जाव आहिंडमाणी दोहलं विणेइ। तए णं सा खंदसिरिभारिया संपुण्णदोहला, संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ।

१५. पति के वचनों को सुनकर वह स्कन्दश्री मन मे हर्षित हुई, सतोष का अनुभव करने लगी। फिर बहुत–सी पारिवारिक महिलाओ, सहेलियो एव अन्य चोरमहिलाओ को साथ मे लेकर स्नानादि से निवृत्त हो, अलकारो से अलंकृत होकर विपुल अशन, पान, सुरा मदिरा आदि का मनचाहा आस्वादन करने लगी। सबके साथ भोजन करने के पश्चात् वह किसी उचित स्थान पर एकत्रित होकर पुरुषवेष पहनकर तथा

लोहमय कवच आदि शरीर पर धारण करके भ्रमण करती हुई अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस प्रकार वह स्कन्दश्री दोहद के सम्पन्न व पूर्ण होने पर अपने गर्भ की परम सुखपूर्वक रक्षा करने लगी।

15. Skandashri was pleased and contented to hear these **words** of her husband. Later she took her female friends, kinfolk, close and distant relatives and other women of the hideout along After bathing and embellishing themselves with all kinds of ornaments she started enjoying ample food and wines as much as she liked After this feast they gathered at a suitable place, dressed up as males, and equipped themselves with armours and other aforesaid things. In their company she moved all around fulfilling her *dohad* (desires of a pregnant mother) Then having her *dohad* fulfilled and satiated she carried the fetus happily.

विवेचन—इस सूत्र मे दोहद पूर्ति के सम्बन्ध मे कुछ विशेष शब्द आये है जैसे—**संपुण्णदोहला, सम्माणियदोहला, विणीय दोहला, वोच्छिन्नदोहला, सम्पन्नदोहला,** इन पाँचो पदो के अपने स्वतत्र अर्थ है। आचार्यश्री आत्माराम जी म ने अभयदेवसूरि कृत टीका के आधार पर इनका अर्थ इस प्रकार किया है—

(१) **संपुण्णदोहला**—जिसका दोहद पूरा हो गया है।

(२) **संमाणियदोहला**—मन इच्छित वस्तु लाकर देने से दोहद का सम्मान किया गया।

(३) **विणीयदोहला**—दोहद सम्बन्धी अभिलाषा से निवृत्ति हो गई।

(४) **वोच्छिन्नदोहला**—इच्छित वस्तु की आसक्ति मन से छिन्न हो गई।

(५) **सम्पन्नदोहला**—इन्द्रिय विषयो की तृप्ति होने से मन भर गया। ये पाँचो अर्थ दोहदवती स्त्री की सूक्ष्म मनोदशा के क्रमिक उतार—चढाव को व्यक्त करते हैं। *(टीका पृष्ठ २२५)*

Elaboration—In this aphorism some special terms have been used in context of fulfillment of *dohad* The five terms used have specific meanings and nuances On the basis of the commentary (*Tika*) by Abhayadev Suri, Acharya Shri Atmaram ji M has interpreted these terms as follows—

(1) Sampunna dohala—one whose pregnancy-desire has been fulfilled

(2) Sammaniya dohala—whose pregnancy-desire has been respected by providing the desired thing

(3) Viniya dohala—who has become free of her pregnancy-desire

(4) Vochchhinna dohala—the craving for the desired thing has disappeared from her mind

(5) Sampanna dohala—her mind is contented as a consequence of satiation of pregnancy-desire

These five terms convey the gradual changes in the state of mind of a woman with pregnancy-desire. *(Tika, p. 225)*

अभग्नसेन का जन्म

१६. तए णं सा चोरसेणावइणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं से विजए चोर सेणावई तस्स दारगस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं करेइ। तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउलं असणं-४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ. आमंतेइ, आमंतित्ता जाव तस्सेव मित्तनाइ. पुरओ एवं वयासी-'जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभग्गसेणे नामेणं।'

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए जाव परिवड्ढइ।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था। अट्ठदारियाओ, जाव अट्ठओ दाओ। उप्पिं पासाए भुंजमाणे विहरइ।

१६. तत्पश्चात् चोर सेनापति की पत्नी स्कन्दश्री ने नौ महीने पूर्ण होने पर एक पुत्र को जन्म दिया। विजय चोरसेनापति ने भी दश दिन तक ऋद्धि-सत्कार पूर्वक-वस्त्र आभूषण आदि का दान एवं बड़ों का सम्मान करते हुए कुलक्रमागत रीति से पुत्र का जन्म उत्सव मनाया। बालक के जन्म के ग्यारहवें दिन बहुत-सा अशन, पान आदि तैयार कराया। मित्र, ज्ञाति जनों आदि को आमन्त्रित किया, फिर भोजन कराया और उनके सामने इस प्रकार कहा-' जिस समय यह बालक गर्भ मे आया था, उस समय इसकी माता को एक दोहद उत्पन्न हुआ था। (मैंने उस दोहद को भग्न नहीं होने दिया। अत माता को जो दोहद उत्पन्न हुआ वह अभग्न रहा।) वह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इसलिए इस बालक का 'अभग्नसेन' नामकरण किया जाता है।

क्रमशः वह अभग्नसेन बालक क्षीरधात्री आदि पाँच धायमाताओं के द्वारा सँभाला जाता हुआ वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

अनुक्रम से कुमार अभग्नसेन ने बाल्यावस्था पार करके युवावस्था में प्रवेश किया। आठ कन्याओं के साथ उसका विवाह हुआ। विवाह में उसके माता-पिता ने आठ-आठ प्रकार की वस्तुएँ प्रीतिदान-दहेज में दीं, वह ऊँचे महलों में रहकर सानन्द उनका उपभोग करने लगा।

BIRTH OF ABHAGNASEN

16. Then after nine months of pregnancy Skandashri, the wife of bandit-chief Vijaya, gave birth to a son. For ten days bandit-chief Vijaya performed the birth ceremonies, following his family tradition, by offering feasts and gifts to invitees and honouring the elders. On the eleventh day after the birth he arranged for ample food (etc.) and invited his friends and relatives. After the feast he announced—"When this child was conceived his mother

had a *dohad.* That *dohad* was fulfilled without any problem. Therefore, I give this boy the name 'Abhagnasen' (*Abhagna* means unbroken. As the *dohad* was fulfilled and not shattered, the boy was named Abhagna.)"

Gradually that boy Abhagnasen grew in the care of five nursemaids including the milk-nursemaid.

In due course boy Abhagnasen crossed adolescence and attained youth. He was married to eight young women. His parents gave him eight sets of things as marriage gifts. He lived happily in lofty mansions enjoying all these gifts.

१७. तए णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते।

तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे, कंदमाणे, विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता, बहूइं लोइयाइं मच्चकिच्चाइं करेइ, करेत्ता केणइ कालेणं अप्पसोए जाये यावि होत्था।

१७. तत्पश्चात् किसी समय वह विजय चोरसेनापति कालधर्म (मरण) को प्राप्त हो गया।

उसकी मृत्यु पर कुमार अभग्नसेन ने पाँच सौ चोरों के साथ रोते हुए, आक्रन्दन करते हुए और विलाप करते हुए अत्यन्त ठाट के साथ, सत्कार सम्मान पूर्वक विजय चोरसेनापति का नीहरण–दाहसंस्कार किया। बहुत से लौकिक मृतककृत्य अर्थात् दाहसंस्कार से लेकर पिता के निमित्त किये जाने वाले दान भोजनादि कार्य किये। कुछ समय पश्चात् अभग्नसेन पितृ-शोक से निवृत्त हो गया।

17. Then at some point of time bandit-chief Vijaya died.

On his death, young Abhagnasen, crying, weeping and wailing performed the cremation rites of bandit-chief Vijaya with honour, respect and great pomp and show in presence of five hundred bandits. He also performed the worldly last rites for his deceased father, including charity and offering food. As time passed he emerged out of the grief of the loss of his father.

१८. तए णं ते चोरपंचसयाइं अन्नया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया महया इड्ढीसक्कारेणं चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाये अहम्मिए जाव कप्पायं गिण्हइ।

१८. कुछ समय पश्चात् उन पाँच सौ चोरों ने मिलकर बड़े महोत्सव के साथ अभग्नसेन को शालाटवी चोरपल्ली में चोर सेनापति के पद पर स्थापित किया। सेनापति के पद पर नियुक्त हुआ वह अभग्नसेन, अधर्म का आचरण करता हुआ राजा के करों को भी स्वयं ही प्रजा से वसूल करने लगा।

18. Some time later, those five hundred bandits ceremoniously conferred the title and position of bandit-chief on Abhagnasen. On being appointed bandit-chief, Abhagnasen commenced extorting from people the taxes due to the king

पीड़ित प्रजा की पुकार

१९. तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायावणाहिं ताविया समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं जाव निद्धणं करेमाणे विहरइ। 'तं सेयं खलु, देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विन्नवित्तए।'

तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अन्नमन्नेणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया, जेणेव महाबले राया तेणेव उवागया। महाबलस्स रण्णो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति, उवणेत्ता करयलपरिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु महाबलं रायं एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोर सेणावई अम्हे बहूहिं गामघाएहिं य जाव निद्धणे करेमाणे विहरइ। तं इच्छामो णं, सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुवसग्गा सुहेणं परिवसित्तए' त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा महाबलं रायं एयमट्ठं विन्नवेंति।

१९. इस प्रकार अभग्नसेन चोरसेनापति द्वारा बहुत ग्रामो का विनाश किये जाने से सन्तप्त व दु खी लोगो ने एक–दूसरे को बुलाकर इस प्रकार कहा–

''देवानुप्रियो ! चोरसेनापति अभग्नसेन पुरिमताल नगर के उत्तर दिशा के बहुत से ग्रामो का विनाश करके वहाँ के लोगो को धन–धान्यादि लूटकर दीन–दरिद्र बना रहा है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! हमे जाकर पुरिमताल नगर के महाबल राजा को इस बात की सूचना देना चाहिए।''

ऐसा विचार कर के एकत्रित सभी प्रजाजनो ने परस्पर इस बात को स्वीकार कर लिया और राजा को भेट देने के लिए **महार्थ**–महान् कार्य को सिद्ध करने वाले, राजा को भेट देने योग्य, बहुमूल्य उपहार आदि साथ लेकर जहाँ पर पुरिमताल नगर में महाबल राजा था वहाँ आये। दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अंजलि करके महाराज को वह मूल्यवान् भेंट अर्पण की। फिर महाबल राजा से इस प्रकार निवेदन किया–

'हे स्वामिन् ! शालाटवी नामक चोरपल्ली का चोरसेनापति अभग्नसेन ग्राम और नगरों में घात मचाता हुआ हमे लूटकर निर्धन बनाता जा रहा है। हे नाथ ! हम चाहते है कि आपकी भुजाओ की छाया से सरक्षित होते हुए निर्भय और उद्वेग रहित होकर हम सुखपूर्वक निवास करे।' इस प्रकार कहकर, पैरो में पडकर तथा दोनो हाथ जोडकर उन नागरिको ने महाबल नरेश से अपनी बात कही।

THE CALL OF THE TORMENTED PEOPLE

19. Tortured and tormented by destruction of many villages by bandit-chief Abhagnasen, the people called a meeting and deliberated—

"Beloved of gods ! Bandit-chief Abhagnasen is destroying many villages north of Purimtal City and making them destitute by looting their wealth and grains Therefore, O beloved of gods ! We should give this information to king Mahabal of Purimtal City"

After these deliberations the congregation of citizens accepted this proposal. They collected impressive (*maharth*) and valuable gifts suitable for a king and went into Purimtal City where king Mahabal resided. Touching their foreheads with joined palms (a gesture of offering respect) they presented the valuable gifts to the king After that they submitted—

"O lord ! Bandit-chief Abhagnasen of Shalatavi hideout is plundering villages and cities, depriving us of our wealth and making us poor. Sire ! We wish to live happily, fearlessly and free from troubles in the protection and shelter of your arms" With these words those citizens emphasized their plight by joining their palms and falling at king Mahabal's feet.

दण्डनायक को आदेश

२०. तए णं महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु दंडं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हाहि, गिण्हित्ता ममं उवणेहि।'

तए णं से दंडे 'तहे' त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्धबद्धवम्मियकवएहिं जाव गहियाउह–पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया जाव उक्किट्ठं जाव करेमाणे पुरिमतालं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२०. महाबल नरेश उन जनपदवासियो से उक्त वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त रुष्ट हुए; कुपित हुए और क्रोध से तमतमा उठे। क्रोध से दाँत पीसते हुए भौहे चढ़ाकर अर्थात् क्रोध की सजीव प्रतिमा बनकर कोतवाल को बुलाते हैं और बुलाकर कहते है–देवानुप्रिय ! तुम जाओ और शालाटवी नामक चोरपल्ली को लूट लो; नष्ट–भ्रष्ट कर दो और उसके चोरसेनापति अभग्नसेन को जीवित पकडकर मेरे सामने उपस्थित करो !

दण्डनायक महाबल राजा की इस आज्ञा को विनयपूर्वक स्वीकार करता है। फिर, दृढ बधनों से बँधे हुए लोहमय कसूलक आदि से युक्त कवच को धारण करता है। आयुधों और प्रहरणो से सुसज्जित अनेक

सैनिकों को साथ लेकर, हाथों में फलक-ढाल बाँधकर क्षिप्रतूर्य वाद्य विशेष को बजाकर उत्कृष्ट महाध्वनि एवं सिंहनाद आदि के द्वारा समुद्र की सी गर्जना करते हुए पुरिमताल नगर के मध्य से निकल कर शालाटवी चोरपल्ली की ओर जाने का निश्चय करता है।

ORDER TO THE POLICE CHIEF

20. Listening to the said details from those citizens king Mahabal got angry... and so on up to... red with rage. Gnashing his teeth in rage and raising his eyebrows (in other words, becoming embodiment of anger) he called the police chief and said—"Beloved of gods ! Go, raid that Shalatavi hideout, destroy it and after capturing that bandit-chief Abhagnasen alive, present him before me."

The police chief humbly accepted this order by king Mahabal. Then he tightly strapped iron armours with sharp projections. He decided to take along many soldiers equipped with hand-wielding and launchable weapons and shields tied to their hands and pass through the middle of Purimtal city blowing *Kshipraturya* trumpets filling the sky with tremendous tumult matching the thunder of the sea. He resolved to cross the city thus and go to that Shalatavi hideout of bandits.

गुप्तचरों ने खबर दी

२१. तए णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव परिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलेण रण्णा महाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते-'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि। तए णं से दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२१. उस समय अभग्नसेन चोरसेनापति के गुप्तचरों (मुखबिरों) को इस बात का पता चल गया। वे शालाटवी चोरपल्ली में, अभग्नसेन चोरसेनापति के पास आये और दोनों हाथ जोड़कर मस्तक पर अंजलि करके अभग्नसेन से इस प्रकार बोले-''देवानुप्रिय ! पुरिमतालनगर में महाबल राजा ने महान् सुभटों के समूह के साथ दण्डनायक-कोतवाल को बुलाकर आज्ञा दी है कि -'तुम लोग शीघ्र जाओ, जाकर शालाटवी चोरपल्ली को नष्ट-भ्रष्ट कर दो; लूट लो और उसके सेनापति अभग्नसेन को जीवित पकड़कर मेरे सामने उपस्थित करो।' राजा की आज्ञा को शिरोधार्य करके कोतवाल अनेक वीर योद्धाओं को साथ लेकर शालाटवी चोरपल्ली में आने के लिए प्रस्थान कर चुका है।''

SPIES INFORM

21. At that time the spies of bandit-chief Abhagnasen came to know of this development. They approached bandit-chief Abhagnasen of Shalatavi hideout; touched their foreheads with joined palms, and submitted—"Beloved of gods ! In Purimtal city king Mahabal has called the police chief and brave soldiers and given this order—'Beloved of gods ! Go, raid that Shalatavi hideout, destroy it and present before me that bandit-chief Abhagnasen after capturing him alive.' Accepting the order of the king the police chief has left for Shalatavi hideout along with many brave soldiers."

२२. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म पंचचोरसयाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबले जाव तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव पडिसेहित्तए।'

तए णं ताइं पंचचोरसयाइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स 'तह' त्ति जाव पडिसुणेंति।

२२. तब वह अभग्नसेन चोर सेनापति अपने गुप्तचरों की बातो को सुनकर उस पर विचारकर तुरन्त अपने पाँच सौ चोरो को बुलाकर इस प्रकार कहता है—देवानुप्रियों ! पुरिमताल नगर के महाबल राजा की आज्ञा से दण्डनायक ने चोरपल्ली पर आक्रमण करने, तथा मुझे जीवित पकड़ने के लिए यहाँ आने का निश्चय कर लिया है, अत उस दण्डनायक को सालाटवी चोरपल्ली पहुँचने से पहले ही मार्ग में रोक देना हमारे लिए उचित होगा।''

अभग्नसेन सेनापति के इस आदेश को 'तथेति' (बहुत ठीक, ऐसा ही होना चाहिए) कहकर पाँच सौ चोरों ने स्वीकार किया।

22. On hearing the news given by his spies, bandit-chief Abhagnasen called the five hundred bandits of his gang and said—"On getting the order from king Mahabal the police chief of Purimtal city has resolved to attack this hideout and capture me alive. Therefore, it would be to our benefit to stop that police chief on the way before he reaches Shalatavi hideout."

The five hundred bandits accepted bandit-chief Abhagnasen's order by uttering—"Yes ! We should do that."

२३. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ण्हाए जाव पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ५ आसाएमाणे ४ विहरइ।

जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसूइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता सन्नद्धबद्ध जाव पहरणेहिं मगइएहिं जाव रवेणं पुव्वावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणे तं दंडं पडिवालेमाणे चिट्ठइ।

२३. तदनन्तर अभग्नसेन चोर सेनापति ने बहुत-सी अशन, पान आदि स्वादिष्ट भोजन सामग्री तैयार करवाई। तथा सभी पाँच सौ चोरों ने स्नानादि किया, अपना उद्दिष्ट कार्य पूरा करने के लिए मस्तक पर तिलक तथा अन्य मांगलिक कृत्य किये। सबने मिलकर भोजनशाला मे बने विपुल अशनादि वस्तुओं तथा पाँच प्रकार की मदिराओ का यथारुचि आस्वादन करना आरम्भ किया।

भोजन के पश्चात् यथोचित स्थान पर आकर सबने आचमन (कुल्ला) किया, मुख पर लगे अन्न के लेपादि को दूर कर शुद्ध हुए और उन पाँच सौ चोरो के साथ आर्द्रचर्म (गीले चमडे) पर आरोहण किया। पश्चात् दृढ़बन्धनो से बँधे हुए, लोहमय कसूलक आदि से युक्त कवच को धारण करके, आयुधो और प्रहरणो से सुसज्जित होकर, हाथों मे ढाले बाँधकर प्रचण्ड सिंहनाद आदि शब्दो के द्वारा गर्जना करते हुए, आकाशमण्डल को शब्दायमान करते हुए अभग्नसेन ने शालाटवी चोरपल्ली से मध्यान्ह के समय प्रस्थान किया। प्रचुर भोजन सामग्री साथ लेकर विषम और दुर्ग-गहन वन मे ठहरकर वह दण्डनायक के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

23. After that, bandit-chief Abhagnasen arranged for abundant *ashan, paan,* and *khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food) All five hundred bandits bathed and performed auspicious rituals including putting marks on their foreheads for the success of their mission After that they started enjoying ample food and wines as much as they liked.

After meals they went to an allotted spot and washed and wiped their mouths clean of any bits and pieces of food After cleansing they performed the ritual of *Ardracharm arohan* (riding over wet leather). Then they tightly strapped iron armours with sharp projections, equipped themselves with hand-wielding and launchable weapons and shields tied to their hands. Then filling the sky with tremendous roar and loud war cry, they left the Shalatavi hideout around noon Carrying large quantities of food, they stopped at a fortified area in the dense jungle and awaited the arrival of the police chief

विवेचन—आर्द्रचर्म पर आरोहण करने का क्या प्रयोजन है तथा वह क्या है ? इस सम्बन्ध मे आचार्य श्री आत्माराम जी म ने विस्तृत चर्चा करते हुए लिखा है–

''इस सम्बन्ध मे तीन मान्यताएँ प्रचलित है–(१) आचार्य श्री अभयदेव सूरि के मन्तव्यानुसार–आर्द्रचर्म पर आरोहण करना चोरो का अपना मागलिक अनुष्ठान था। अभग्नसेन और उसके साथियो ने दण्डनायक

की सेना को मार्ग मे रोकने मे आ सकने वाले सभावित विघ्नो के विनाश की कामना से प्रस्थान से पूर्व यह मगल–अनुष्ठान किया।

परम्परा का अनुसरण करने वाली (२) दूसरी मान्यता के अनुसार आर्द्र चर्म पर आरोहण करने का भावार्थ यह है कि अनुकूल–प्रतिकूल कैसी भी कठिन व विषम परिस्थिति मे पाँव पीछे नही हटेगा। **'कार्यं वा साधयेयं, देहं वा पातयेयम्'** हर प्रयत्न से हम कार्य को सिद्ध करके ही विराम लेगे, अन्यथा शरीर को छोड देगे।'' इस कठोर प्रतिज्ञा से बँध जाने का दृढतम सकल्प आर्द्रचर्म पर आरोहित होने से प्रतीत होता है।

(३) तीसरी मान्यता यह है कि जिस तरह आर्द्र चर्म फैलता रहता है, वृद्धि और विस्तार को प्राप्त होता है, उसी प्रकार इस पर आरोहण करने वाला भी धन–जनादि समृद्धि की वृद्धि रूप प्रसार को उपलब्ध करता है। इसी महत्त्वाकाक्षा रूप भावना को सन्मुख रखते हुए अभग्नसेन और उसके पाँच सौ साथियो ने आर्द्रचर्म पर आरोहण किया। *(हिन्दी टीका, पृ २४८)*

Elaboration—*Ardracharm arohan* (riding over wet leather)—What is the purport of this term ? Acharya Shri Atmaram ji M. provides detailed information about this—

"There are three different popularly accepted beliefs in this context—(1) According to Acharya Shri Abhayadev Suri this *Ardracharm arohan* (riding over wet leather) was an auspicious ritual of bandits and thieves Before launching their mission of waylaying the police chief, Abhagnasen and members of his gang performed this auspicious ritual with the wish of removing all possible hurdles

(2) The second and traditional belief is that the ritual of riding over wet leather signifies and symbolizes the resolve of embracing death instead of retreating in face of any favourable or unfavourable situation, no matter how tough or complex it is This ritual riding over wet leather conveys the bond of the unwavering resolve—'We will accomplish our mission no matter what it takes, otherwise we will abandon this body'

(3) The third belief is that as wet leather expands, likewise one who rides over it achieves the enhancement of his wealth and power With this wish of enhancing his wealth and power bandit-chief Abhagnasen and his five hundred companions performed the ritual *(Hindi Tika, p 248)*

युद्ध मे दण्ड नायक की पराजय

२४. तए णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। तए णं अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हयमहिय, जाव पडिसेहेइ।

२४. उसके बाद वह दण्डनायक जहाँ पर अभग्नसेन चोरसेनापति था, वहाँ पर आता है और आकर अभग्नसेन चोर सेनापति के साथ युद्ध करने लगता है। परन्तु अभग्नसेन चोर सेनापति ने उस दण्डनायक को शीघ्र ही हतमथित कर दिया अर्थात् दण्डनायक की सेना के छक्के छुडा दिये, वीरो का घात किया, ध्वजापताका को नष्ट कर दिया और दण्डनायक का भी मानमर्दन कर दिया। उसे घायल कर पीट डाला। उसके साथियो को इधर-उधर भगा दिया।

DEFEAT OF THE POLICE CHIEF

24. Then that police chief came where bandit-chief Abhagnasen was waiting and engaged him in a battle But soon bandit-chief Abhagnasen defeated the police chief, in other words the army lead by the police chief was trounced, its warriors were killed and its flag was destroyed The police chief was subdued, wounded and beaten up and his company was made to run helter-skelter

२५. तए णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय. जाव पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महाबले राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-जाव एवं वयासी-'एवं खलु, सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए। नो खलु से सक्का केणइ सुबहुएणा वि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा रहबलेण वा चाउरंगेण वि उरं उरेणं गिण्हित्तए।'

ताहे (महबले राया) सामेण य भेएण य उवप्पयायेण य विस्संभमाणेउं पयत्ते यावि होत्था। जे वि से अब्भिंतरगा सीसगभमा, मित्त-नाइ-नियग, सयण-संबंधि-परियणं तेवि य च विउलेण, धण-कणग-रयण-संतसार-सावएज्जेणं भिंदइ, अभग्गसेणस्स य चोरसेणावइस्स अभिक्खणं अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायरिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं वीसंभमाणेइ।

२५. इस प्रकार वह दण्डनायक अभग्नसेन चोरसेनापति के द्वारा घायल कर भगा दिये जाने पर **अकाम**-मनोबल से हीन हो गया, **अबल**-शरीर से शिथिल हो गया, **अवीर्य**-आत्मबल या साहस टूट गया, **अपुरिसक्कार पराक्रम**-मै वीर हूँ ऐसा स्वाभिमान भी खत्म हो गया और उसमे दुबारा शस्त्र उठाने की हिम्मत नही रही। तब उसे परास्त करना अशक्य मानकर पुरिमताल नगर मे महाबल नरेश के पास लौट आया एवं दोनो हाथ जोडकर नम्रतापूर्वक इस प्रकार कहने लगा-

"हे स्वामी ! चोरसेनापति अभग्नसेन ऊँचे, नीचे और विषम गहन वन मे पर्याप्त खाद्य-पेय सामग्री का संग्रह करके बैठा है। अत. बहुत से अश्वबल, गजबल, योद्धाबल और रथबल, कहाँ तक कहूँ-चतुरंगिणी सेना के बल से भी वह जीते जी पकडा नही जा सकता है।"

दण्डनायक द्वारा ऐसा कहने पर महाबल राजा सामनीति, भेदनीति व उपप्रदान नीति–देने–लेने की नीति से उसे विश्वास मे लाने के लिए प्रयत्नशील हुआ। इसलिए वह उसके (चोरसेनापति के) **सीसगभमा–** शिष्यभ्रम–शिष्य के समान सदा समीप मे रहने वाले पुरुषो को, अथवा जिन अगरक्षको को वह रक्षा कवच के समान अत्यन्त विश्वस्त समझता था, उनको, तथा उसके मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सम्बन्धी परिजनो को धन, सोना, रत्न और उत्तम सारभूत बहुत–सी मूल्यवान वस्तुओ के द्वारा लुभाकर तथा रुपयो पैसो का लोभ देकर उसके बीच भेद डालकर चोरसेनापति से जुदा करने का प्रयत्न करता है और अभग्नसेन चोरसेनापति को भी बार–बार बडा कार्य सिद्ध करने वाला, विशेष मूल्य वाला, बडे लोगो को देने योग्य, यहाँ तक कि राजा को उपहार देने योग्य सुन्दर भेटे भेजने लगा। इस तरह विविध उपहार भेजकर अभग्नसेन चोरसेनापति को अपने विश्वास मे ले लेता है।

25. On being wounded and made to retreat by bandit-chief Abhagnasen, that police chief lost his confidence (*akaam*), he became physically weak (*abal*), he lost his courage (*avirya*), his pride that he was brave shattered and he was drained of the energy of even lifting his weapons. Thinking that it was impossible to defeat the bandit-chief, he returned to king Mahabal in Purimtal City and joining his palms submitted humbly—

"O Lord ! Bandit-chief Abhagnasen camps in a dense forest in a difficult terrain with complex fortification and abundance of food and water. Therefore, he cannot be captured alive by an army of horse riders or elephant riders or charioteers or foot soldiers, not even by all these four combined "

On getting this report from the police chief, king Mahabal started working on apprehending the bandit-chief by taking him into confidence through negotiations, diplomacy, and enticement With this intent he started working on inspiring dissention among the personal companions, guards and followers as well as the friends, kinfolk, relatives, and family members of the bandit-chief by generously distributing cash, gold, gems and other valuables He also started sending beautiful, impressive and valuable gifts suited for people of high status including kings By sending a variety of such gifts he was able to take bandit-chief Abhagnasen in his confidence

महाबल राजा की कूटनीतिक चाल

२६. तए णं से महाबले राया अन्नया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालयं कूडागारसालं करेइ; अणेग–खंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं। तए णं से महाबले राया अन्नया कयाइ पुरिमताले नयरे

उस्सुक्कं जाव दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, अग्घोसावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी– 'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए। तत्थ णं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयह–

२६. इसके कुछ समय बाद महाबल राजा ने पुरिमताल नगर मे एक बहुत सुन्दर सैकडो खम्भो वाली व अत्यन्त विशाल कूटाकारशाला बनवायी। जिसे देखते ही मन मे हर्ष व उत्सुकता उत्पन्न हो जाती। उसके बाद महाबल नरेश ने किसी समय उस षड्यन्त्र के लिए बनवाई कूटाकारशाला के निमित्त उच्छुल्क–(जिसमे किसी प्रकार का शुल्क नही लिया जाय ऐसी टैक्स फ्री) ऐसे नि शुल्क दश दिन के **प्रमोद उत्सव** की उद्घोषणा कराई। कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा कि–हे भद्रपुरुषो ! तुम शालाटवी चोरपल्ली मे जाओ और वहा अभग्नसेन चोरसेनापति से दोनो हाथ जोडकर इस प्रकार निवेदन करो–

KING MAHABALS TREACHERY

26. Some time later king Mahabal got a beautiful and huge *Kootakarashala* (a camouflaged house), with hundreds of pillars, constructed It was very attractive and pleasing to look at After that he announced a ten-day fete, free of any admission fees, in that Kootakarashala specially designed for intrigues He then called his servants and instructed—Gentlemen ! Go to Shalatavi hideout and with joined palms convey this to bandit-chief Abhagnasen—

२७. एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलस्स रन्नो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं, देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फवत्थमल्लालंकारे य इह हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?

२७. "देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर मे महाबल नरेश ने शुल्करहित आदि अनेक सुविधाओ वाला दश दिन पर्यन्त चलने वाला प्रमोद–उत्सव की घोषणा कराई है, तो क्या आपके लिए अशन, पान आदि तथा पुष्प, वस्त्र, माला अलकार वगैरह यही पर लाकर उपस्थित करे अथवा आप स्वय वहा इस प्रसग पर उपस्थित होगे ?"

27. "Beloved of gods ! King Mahabal has announced a ten-day fete with many facilities and free of any admission fees in Purimtal City Should we bring here for you the festive food and drinks as also flowers, dresses, garlands, ornaments and other gifts or would you be kind enough to present yourself there on this occasion ?"

विवेचन–कूटाकारशाला का अर्थ है पर्वत की चोटी पर बना ऐसा भवन, जिसमे आने–जाने का एक ही मार्ग हो, जो चारो ओर से बन्द हो और जिसका शिखर गुम्बजनुमा बना हो।

टीकाकार अभयदेवसूरि न उस्सुक्कं जाव, शब्द के साथ एक प्राचीन पाठ उद्धृत किया है जिसमे इस उत्सव (मेले) से सम्बन्धित १२ विशेष नियम बताये गये है। यह सुविधाएँ मेले को लोकप्रिय बनाने के लिए दी जाती है। प्राचीन भारत की उत्सव प्रिय सस्कृति और व्यवस्था प्रबन्धन का एक सुन्दर उदाहरण भी मिलता है। पाठको की जानकारी हेतु उनका विशेष भाव यहाँ प्रस्तुत है।

(१) **उच्छुल्क**–जिस उत्सव मे आई हुई किसी भी वस्तु पर राजकीय शुल्क–महसूल नही लिया जाता, उसे उच्छुल्क कहते है।

(२) **उत्कर**–जिस उत्सव मे दुकानो के लिए ली गई जमीन का कर–भाडा तथा क्रय–विक्रय के लिए लाये गये गाय आदि पशुओ का कर–महसूल न लिया जाये, उसे उत्कर कहते है।

(३) **अभटप्रवेश**–जिस उत्सव मे राजपुरुषो द्वारा किसी की भी तलाशी नही ली जा सकती और न ही वे किसी घर मे प्रवेश कर सकते है।

(४) **अदण्डिम–कुदण्डिम**–न्यायानुसार दी जाने वाली सजा दण्ड कही जाती है और न्यूनाधिक सजा को कुदण्ड कहते है, उस दण्ड–कुदण्ड व्यवस्था का जिस उत्सव मे अभाव हो।

(५) **अधरिम**–जिस उत्सव मे किसी को कोई अपने पुराने ऋण के कारण कर्जदार को पीडित नही कर सकता है।

(६) **अधारणीय**–जिस उत्सव मे दुकान आदि लगाने के लिए राजा की ओर से वापस नही लौटाई जाने वाली आर्थिक सहायता (सब्सिडी) दी जाय।

(७) **अनुद्धृत मृदंग**–जिसमे मृदग बजाने वालो ने बजाने के लिए मृदग ग्रहण रखे हो, तबलो को बजाने के लिए ठीक ढग से ऊँचा कर लिया हो। अर्थात् मृदग व तबला निरनार बजते हो।

(८) **अम्लान माल्यदाम**–जिसमे खिले हुए पुष्प एवं पुष्पमालाओ की सुव्यवस्था हो।

(९) **गणिका नाटकीय कलित**–जिस उत्सव मे (मनोरजन के लिए) नगर की प्रमुख गणिका और अच्छे नाटक करने वाले सम्मिलित हो।

(१०) **अनेक तालाचरानुचरित**–जिस उत्सव मे ताल बजाकर नाचने वाले अपना कौशल दिखाते हो।

(११) **प्रमुदित प्रक्रीडिताभिराम**–जो उत्सव तमाशा दिखाने वालो तथा खेल दिखाने वालो से मनोहारी लगते हो।

(१२) **यथार्ह**–जिस उत्सव मे सर्वप्रकार से योग्य व्यवस्थाएँ हो, तात्पर्य यह कि वह उत्सव अपने आपमे आदर्श एव बेमिसाल हो। *(आचार्यश्री आत्माराम जी म कृत हिन्दी टीका, पृ २६१–६२)*

Elaboration—*Kootakarashala* (a camouflaged house) is a mansion built on a hilltop. It is closed from all sides and has just a single passage for entry and exit. It has a dome like top

Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), has quoted an ancient verse in context of the term *'utsukkam java'* This verse details twelve special conditions related to this fete or festival These facilities were provided to make the fete popular. It provides a perfect example of the festivity loving ancient Indian culture as well as its management system These conditions are given here in brief for the benefit of our readers

(1) **Uchchhulk**—festival where no state tax, levy, or fees is charged on anything.

(2) **Utkar**—festival where no tax or rent is charged on the land taken for shops and stalls Also where no tax is levied on the cattle brought for sale

(3) **Abhat pravesh**—festival where state officers are not allowed to search or frisk anyone or enter any premises

(4) **Adandim-kudandim**—festival that is free of any punitive measures Dand is punishment awarded exactly according to the law Kudand is less or more than the legally specified punishment

(5) **Adharim**—festival where no one can be pressurized or forced for some old dues

(6) **Adharaniya**—festival where a king provides establishment subsidy for stalls and other such things

(7) **Anudhrit mridang**—festival where *mridang, tabla* and other musical instruments are carried and placed properly and played continuously

(8) **Amlaan maalyadaam**—festival where there is proper and elaborate arrangement and decoration of blooming flowers and garlands

(9) **Ganika natakiya kalit**—festival where prominent courtesans and theatre artists give regular performances for entertainment

(10) **Anek taalacharanucharit**—festival where many dancers give dance performances on drum beats

(11) **Pramudit prakeeditabhiram**—festival where acrobats and other performers draw crowds

(12) **Yatharha**—festival that has all facilities and is well managed In other words, an ideal and unique festival *(Tika by Acharya Shri Atmaram ji M, pp 261-62)*

२८. तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा महाबलस्स रण्णो करयल. जाव 'एवं सामि त्ति' आणाए वयणं पडिसुणेति पडिसुणेत्ता, पुरिमतालाओ नयराओ पडिणिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महाबलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव उदाहु सयमेव गच्छित्था ?'

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी–'अहं णं देवाणुप्पिया ! पुरिमतालनयरं सयमेव गच्छामि।' ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ !

२८. तदनन्तर कौटुम्बिक पुरुषो ने महाबल नरेश की आज्ञा को दोनो हाथ जोडकर **'ऐसा ही होगा'** कहकर विनयपूर्वक स्वीकार किया और पुरिमताल नगर से बाहर निकल आये। छोटी–छोटी यात्राएँ करते हुए, तथा सुखजनक विश्राम स्थानो पर प्रात कालीन नाश्ता भोजन आदि करते हुए जहाँ शालाटवी चोरपल्ली थी वहाँ पहुँचे। वहाँ पर अभग्नसेन चोरसेनापति से दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अजुलि करके इस प्रकार निवेदन करने लगे–

'देवानुप्रिय ! महाबल नरेश ने पुरिमताल नगर मे शुल्क आदि से मुक्त दस दिनो का प्रमोद–उत्सव घोषित किया है, तो क्या आपके लिए अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्पमाला अलकार आदि यहाँ पर ही लाये जायँ अथवा आप स्वय वहाँ चलने की कृपा करेगे ?

तब अभग्नसेन सेनापति ने कौटुम्बिक पुरुषो से इस प्रकार–'हे भद्र पुरुषो ! मै स्वय ही प्रमोद–उत्सव हेतु पुरिमताल नगर मे आऊँगा।' तथा अभग्नसेन ने उनका उचित सत्कार–सम्मान करके विदा कर दिया।

28. Joining their palms, the servants humbly accepted king Mahabal's order uttering—"As you say, sire !" They came out of Purimtal City and came to Shalatavi hideout in short jaunts taking breakfasts and meals at comfortable resting-places On reaching there, raising their joined palms to their heads they submitted before bandit-chief Abhagnasen—

"Beloved of gods ! King Mahabal has announced a ten-day fete with many facilities and free of any admission fees in Purimtal City Should we bring here for you the festive food and drinks as also flowers, dresses, garlands, ornaments and other gifts or would you be kind enough to grace the occasion ?"

Bandit-chief Abhagnasen replied—"Gentlemen ! I will certainly come to Purimtal City for this fete " And he dismissed them with due honour and greetings

२९. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त जाव परिवुडे ण्हाए जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ। पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महाबले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयल. महाबलं रायं जएणं विजएणं बद्धावेइ, बद्धावेत्ता महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ।

तए णं से महाबले राया, अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहं दलयइ। तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महाबलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ।

२९. तदनन्तर वह अभग्नसेन चोरसेनापति स्नानादि से निवृत्त हो मस्तक पर तिलक आदि मागलिक अनुष्ठान करके विविध आभूषणो से अलकृत हो, मित्र, ज्ञाति व स्वजन परिजनो को साथ लिए शालाटवी चोरपल्ली से निकलकर जहाँ पुरिमताल नगर था, जहाँ महाबल नरेश थे, वहाँ पर आया। आकर दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अजलि करके महाबल राजा को 'जय-विजय' शब्द से बधाई दी। बधाई देकर राजा के योग्य बहुमूल्य उपहार भेट किये। महाबल राजा उस अभग्नसेन चोरसेनापति द्वारा भेट किये गये उपहारो को स्वीकार करके उसे सत्कार सम्मानपूर्वक अपने पास से विदा करता है और कूटाकारशाला मे उसे रहने के लिए स्थान देता है। अभग्नसेन चोरसेनापति महाबल राजा के द्वारा सत्कारपूर्वक विसर्जित होकर कूटाकारशाला मे आकर ठहरता है।

29. Then that bandit-chief Abhagnasen got ready after his bath, performing auspicious rites including putting mark on his forehead, and embellishing himself with a variety of ornaments He came out of the Shalatavi hideout along with his friends, kinfolk, relatives and family members and came to king Mahabal in Purimtal City On arriving there, raising his joined palms to his head he greeted king Mahabal with hails of victory and presented rich gifts King Mahabal accepted bandit-chief Abhagnasen's gifts and bid him farewell with honour and greetings and with a request to stay at the *Kootakarshala* After this, bandit-chief Abhagnasen went and stayed in the *Kootakarshala*

३०. तए णं से महाबले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी 'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं-४, सुरं च-५. सुबहुं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालं उवणेह।

तए णं से कोडुंबियपुरिसा करयल जाव उवणेंति।

तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्तनाइ. सद्धिं संपरिवुडे ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं-४ सुरं च ५, आसाएमाणे पमत्ते विहरइ।

३०. इसके बाद महाबल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा–तुम लोग विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम पुष्प, वस्त्र, गधमाला अलंकार एव पाचो प्रकार की सुरा आदि मदिराओ को तैयार कराओ और उन्हे कूटाकारशाला मे चोरसेनापति अभग्नसेन की सेवा में पहुँचा दो।

कौटुम्बिक पुरुषो ने राजा की आज्ञा के अनुसार विपुल अशनादिक सामग्री वहाँ पहुँचा दी।

तदनन्तर अभग्नसेन चोरसेनापति स्नानादि से निवृत्त हो, समस्त आभूषणो को पहनकर अपने बहुत से मित्रो व ज्ञाति जनो आदि के साथ मिलकर उस विपुल अशनादिक तथा पचविध मदिराओ का बार–बार सेवन करता हुआ प्रमत्त होकर रहने लगा।

30. Then king Mahabal called his servants and said—Get large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savory food), flowers, dresses, fragrant garlands, and ornaments, and five kinds of wines ready and take these to *Kootakarashala* for bandit-chief Abhagnasen

According to the king's order the servants took all these things there

Then that bandit-chief Abhagnasen took his bath embellished himself with all his ornaments and along with his friends, kinfolk, etc. started enjoying that abundant food and five kinds of wines again and again Thus he spent his time getting intoxicated on them

३१. तए णं से महाबले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह।'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, महाबलस्स रण्णो उवणेंति। तए णं से महाबले राया अभग्गसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरापोराणाणं जाव विहरइ।

३१. (इस प्रकार अभग्नसेन चोरसेनापति को विश्वास मे लेकर कूटाकारशाला मे ठहराने और भोजन कराने तथा मदिरा आदि पिलाने के पश्चात्) महाबल राजा ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा–'हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और जाकर पुरिमताल नगर के सब दरवाजो को बन्द कर दो और अभग्नसेन चोरसेनापति को जीवित अवस्था मे ही पकड लो और पकडकर मेरे सामने उपस्थित करो !'

तब उन कौटुम्बिक पुरुषो ने राजा की यह आज्ञा हाथ जोडकर शिरोधार्य की और पुरिमतालनगर के द्वारो को बन्द करके अभग्नसेन चोरसेनापति को राजा के सम्मुख उपस्थित किया। महाराजा ने इस विधि से–(हे गौतम, जैसा तुम देखकर आये हो) वध करने की आज्ञा प्रदान कर दी।

श्रमण भगवान महावीर कहते है–हे गौतम ! इस प्रकार वह अभग्नसेन चोरसेनापति पहले किये हुए पापकर्मों के नरक तुल्य विपाकोदय के रूप मे घोर वेदना एव पीडा का अनुभव कर रहा है।

31. (After winning bandit-chief Abhagnasen's confidence, making him stay in *Kootakarashala* and offering him food and wines) King Mahabal called his servants and said "Beloved of gods ! You all go and close all gates of Purimtal City Then capture bandit-chief Abhagnasen alive and present him before me "

The servants joined their palms and accepted the king's order They captured bandit-chief Abhagnasen alive and brought him to king Mahabal On getting bandit-chief Abhagnasen captured thus as an offender, King Mahabal ordered him to the gallows (as you witnessed)

Shraman Bhagavan Mahavir added—"Gautam ! In this way that bandit-chief Abhagnasen is suffering extreme pain and agony, like that in the hell, due to the fruition of demeritorious *karmas* acquired as a consequence of sinful deeds committed in the past

अभग्नसेन का भविष्य

३२. अभग्गसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

'गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।'

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, एवं ससारो जहा पढमे जाव वाउ–तेउ–आउ–पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्सइ !

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ सूयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे–'एवं जहा पढमे, जाव अंतं काहिइ।'

॥ तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

३२. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! वह अभग्नसेन चोरसेनापति मृत्यु को प्राप्त करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया–हे 'गौतम ! अभग्नसेन चोरसेनापति ३७ वर्ष की परम आयुष्य को भोगकर आज ही दिनके तीसरे प्रहर–अपरान्ह काल मे सूली पर चढाये जाने से मृत्यु को प्राप्त होकर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक मे नारकी रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ उसकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की होगी। फिर प्रथम नरक से निकलकर प्रथम अध्ययन मे प्रतिपादित मृगापुत्र के ससारभ्रमण की तरह यह भी भव भ्रमण करता रहेगा। पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय, तेजस्काय आदि मे लाखो बार उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकलकर वाराणसी नगरी मे शूकर के रूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ शिकारियो द्वारा उसका वध कर दिया जायेगा। तत्पश्चात् उसी वाराणसी नगरी के श्रेष्ठिकुल मे पुत्र रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ युवावस्था को प्राप्त होने पर प्रव्रजित होकर, सयमपालन करके, समस्त कर्मों का क्षय करके निर्वाण पद प्राप्त करेगा–जन्म–मरण का अन्त करेगा।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

FUTURE OF ABHAGNASEN

32. Gautam Swami asked—"*Bhagavan* ! Where will that bandit-chief Abhagnasen go after death ? Where will he be born ?"

Bhagavan replied—"Gautam ! After completing his life span of thirty-seven years this bandit-chief Abhagnasen will die in the gallows this afternoon and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha His maximum life span there will be one *Sagaropam* Getting out from the first hell he will continue to go around in cycles of rebirth like Mrigaputra, as mentioned in the first chapter and so on up to will be born millions of times as earth-bodied, water bodied, air-bodied, and fire-bodied beings

Coming out from there he will be born as a boar in Varanasi City After being killed by hunters he will reincarnate as a son in a merchant family of the same city On crossing adolescence and attaining youth he will get initiated as an ascetic and so on up to he will shed all his *karmas*, attain nirvana and end the cycles of death and rebirth

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : चतुर्थ अध्ययन
शकट (माँसाहारी, दुराचारी चण्डाल पुत्र)

उपोद्‌घात

यह कथा पशु-वध एवं माँसभक्षण जैसे दुष्कर्मों के पीडादायक कटु फलो का जीवन्त वर्णन प्रस्तुत करती है। यद्यपि छन्निक एक कसाई था, उसे पशुवध व माँसाहार मे आनन्द प्राप्त होता था। वह व्यभिचार व चरित्रहीनता मे भी रत था। इस सब का कटु फल उसे कई जन्मो तक भोगना पडा।

FIRST SHRUTSKANDH : FOURTH CHAPTER
SHAKAT (the non-vegetarian and debauch son of a *chandal*)

INTRODUCTION

This story lucidly details the agonising consequences of cruelty to animals and non-vegetarianism Although a butcher by profession, Chhannik enjoys killing animals and eating meat He also indulges in lascivious activities and adultery He gravely suffers the consequences for many births

चतुर्थ अध्ययन
FOURTH CHAPTER

जम्बूस्वामी की जिज्ञासा

१. चउत्थस्स उक्खेवो। जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

तओ णं सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी—

१. चौथे अध्ययन की प्रस्तावना। जम्बूस्वामी ने प्रश्न किया—भन्ते ! निर्वाण को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने यदि तीसरे अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो चौथे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

तब सुधर्मा स्वामी ने से इस प्रकार कहा—

CURIOSITY OF JAMBU SWAMI

1. The foreword of the third chapter should be read as before Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the third chapter, then what is the text and meaning of the fourth chapter as preached by him ?"

Sudharma Swami replied—

साहंजनी नगरी

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजणी णामं नयरी होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धा। तीसे णं साहंजणीए बहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए देवरमणे णामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे। तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे णामं राया होत्था, महया.। तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे णामं अमच्चे होत्था। साम—भेय—दंड—उपप्पयाणनीतिसुपउत्तनयविहण्णू निग्गह—कुसले।

तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरसिणा णामं गणिया होत्था। वण्णओ।

२. हे जम्बू ! उस काल उस समय मे साहजनी नाम की एक समृद्धिशाली भवनादि की शोभा से सम्पन्न, स्वचक्र—परचक्र के भय से रहित तथा धन—धान्यादि से परिपूर्ण नगरी थी। उसके बाहर ईशानकोण मे देवरमण नाम का एक उद्यान था। उस उद्यान में अमोघनामक यक्ष का एक प्राचीन यक्षायतन था। उस साहजनी नगरी मे महचन्द्र नाम का राजा राज्य करता था। वह हिमालय के समान महान् था। उस महचन्द्र

नरेश का सुषेण नाम का मत्री था, जो सामनीति, भेदनीति, दण्डनीति और उपप्रदाननीति के प्रयोग को और न्याय-नीतियों की विधि को भली प्रकार से जानने वाला तथा दुष्ट जनों का निग्रह करने मे कुशल था।

उस नगर मे सुदर्शना नाम की एक सुप्रसिद्ध गणिका रहती थी। उसका वर्णन (द्वितीय अध्ययन मे वर्णित कामध्वजा के समान) जान लेना चाहिए।

SAAHANJANI CITY

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Saahanjani which was beautiful, prosperous in all respects, and well secured In the northeastern direction (*Ishan Kone*) outside this town was a garden named Devaraman In that Devaraman garden there was an ancient temple of Amogh Yaksh In that Saahanjani city ruled King Mahachandra He was as majestic as the Himalayas That King named Mahachandra had a minister named Sushen, who was well versed in four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *bhed*, (guile), *dand* (threat), and *upapradan* (*daam* or bribery) as well as implementation of law He was proficient in controlling anti-social elements In Saahanjani city lived a courtesan named Sudarshana Her description (should be read as that of Kamadhvaja courtesan as mentioned in chapter two)

३. तत्थ णं साहंजीणे नयरीए सुभद्दे णामं सत्थवाहे परिवसइ। अड्ढे। तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा णामं भारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा। तस्स णं सुभद्दसत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे णामं दारए होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस साहजनी नगरी मे सुभद्र नाम का एक सार्थवाह रहता था। सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नामक भार्या थी जो पाँचो इन्द्रियो से परिपूर्ण सुन्दर थी। सुभद्र सार्थवाह का पुत्र व भद्रा भार्या का आत्मज शकट नाम का बालक था। वह भी पचेन्द्रियो से परिपूर्ण-सुन्दर शरीर से सम्पन्न था।

3. In Saahanjani city lived a caravan chief (*sarthavaha*) named Subhadra The name of Subhadra Sarthavaha's wife was Bhadraa She was beautiful and perfect in every way Subhadra Sarthavaha and Bhadraa had a son named Shakat who was also endowed with perfect and beautiful body

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा राया य निग्गए। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया, राया वि णिग्गओ।

४. उस काल, उस समय साहजनी नगरी के बाहर देवरमण उद्यान मे श्रमण भगवान् महावीर पधारे। भगवान् के दर्शनार्थ जनता और राजा नगर उद्यान मे आये। भगवान् मे धर्मदेशना दी। धर्मदेशना सुनकर राजा और जन समूह अपने-अपने स्थान पर चले गये।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Devaraman garden outside Saahanjani city People and the king came to pay homage *Bhagavan* gave his discourse to all after which the king and the people returned home

शकट के पूर्वभव का वृत्तान्त

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव रायमग्गमोगाढे। तत्थ णं हत्थी, आसे बहवे पुरिसे पासइ। तेसिं च पुरिसाणं मज्झगए पासइ एगं सइत्थीयं पुरिसं अवओडयबंधणं उक्खित्तकण्णनासं जाव घोसिज्जमाणं। चिंता तहेव जाव भगवं वागरेइ।

५. उस काल उस समय मे श्रमण भगवान् महावीर के प्रधान अन्तेवासी श्री गौतम स्वामी (पूर्ववत् भिक्षा ग्रहण करके) लौटते हुए राजमार्ग मे पधारे। वहाँ उन्होने हाथी, घोडे और बहुतेरे पुरुषो को एकत्र देखा। उन पुरुषो के बीच मे अवकोटक बन्धन (जिस बन्धन मे दोनो हाथो को पीछे मोडकर बाँधा जाता है) से युक्त कान और नाक कटे हुए स्त्री के साथ बँधे एक पुरुष को देखा। (राजपुरुष उन दोनों को कोडो से पीट रहे थे, अनेक प्रकार की यातनाएँ देते हुए उद्घोषणा कर रहे थे। गौतम स्वामी ने उनको उद्घोषणा करते देखा, सुना।) तब यह देखकर, सुनकर गौतम स्वामी ने पूर्ववत् विचार किया (यह पुरुष साक्षात् नारकीय वेदना भुगत रहा है, आदि) और भगवान् से आकर प्रश्न किया। भगवान् ने उत्तर मे इस प्रकार कहा–

PAST BIRTH OF SHAKAT

5. During that period of time, while returning after collecting alms in the city, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a man, accompanied by a woman, with his ears and nose cut off, tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back) Announcement was being made about him Gautam Swami was thoughtful (on hearing the announcement, seeing all this, and the person in pathetic condition) He came to Bhagavan Mahavir and asked about it In reply *Bhagavan* said—

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं नयरे होत्था। तत्थ सीहगिरी नामं राया होत्था, महया. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छण्णिए नामं छागलिए परिवसइ। अड्ढे अहिम्मए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. हे गौतम ! उस काल उस समय मे इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे छगलपुर नाम का एक नगर था। वहाँ सिहगिरि नामक राजा था। वह हिमालय पर्वत के समान महान् था। उस नगर

मे छन्निक नामक एक छागलिक–बकरो का माँस बेचकर आजीविका करने वाला कसाई रहता था, जो धनाढ्य था, साथ ही बडा अधर्मी दुष्कर्मी, पाप कर्मों में ही आनन्द मानने वाला था।

6. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Chhagalpur in Bharatvarsh area in Jambu continent A king named Simhagiri was the ruler of that city He was as majestic as the Himalayas In that city lived a *chhagalik* (a butcher selling goat meat) named Chhannik who was rich, irreligious and evil, and he derived enjoyment in sinful deeds only

हिंसाकर्मी छन्निक

७. तस्स णं छण्णियस्स छागलियस्स बहवे अयाण य एलयाण य रोज्झाण य वसभाण य ससयाण य पसयाण य सूयराण य सिंघाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाण य सहस्सबद्धाण य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं चिट्ठंति।

अन्ने ये तत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे अए य महिसे य सारक्खेमाणा चिट्ठंति।

अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवित्ता मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेंति, करेत्ता छण्णियस्स छागलियस्स उवणेंति।

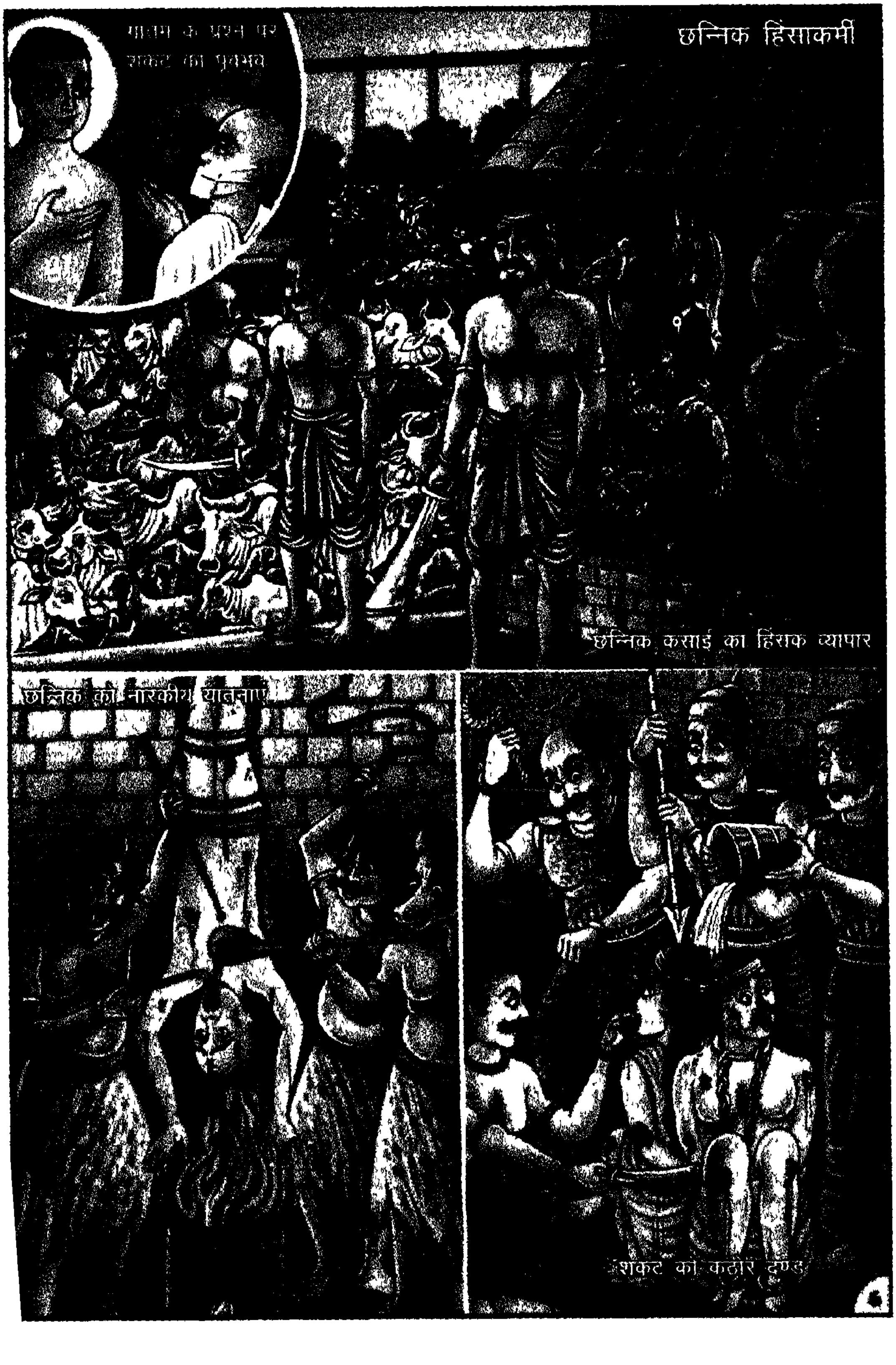
अन्ने य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइं तवएसु य कवल्लीसु य कंदुएसु य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोल्लेति य, तलित्ता भज्जित्ता सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि य णं से छण्णिए छागलिए तेहिं बहुविहेहिं अयमंसेहिं जाव महिसमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च आसाएमाणे विहरइ।

७. उस छण्णिक छागलिक के अनेक अजो–बकरो, रोझो–नीलगायो, वृषभो–बैलो, शशको–खरगोशो, मृग शिशुओ, शूकरो, सिहो, हरिणो, मयूरो और महिषो के शतबद्ध तथा सहस्रबद्ध अर्थात् सौ–सौ तथा हजार–हजार पशु जिनमे बँधे रहते थे जैसे वाटक–यूथ बाडे थे, उनमे पशुओ को रोककर रखा जाता था। वहाँ उसके अनेक आदमी जिनको वेतन के रूप मे भोजन तथा रुपया पैसा दिया जाता था, वे उन बकरे व भैसो आदि पशुओ का सरक्षण–सगोपन करते हुए उनकी रखवाली करते थे।

छण्णिक छागलिक के वे काम लेकर काम करने वाले अनेक नौकर सैकडो, तथा हजारो बकरा तथा भैसो आदि को मारकर उनके माँसो को कैची तथा छुरी से काट–काट कर छण्णिक छागलिक को दिया करते थे।

उसके अन्य अनेक नौकर पुरुष उन बहुत से बकरों आदि के माँसो को तवो पर, कडाहो मे, हाडो मे अथवा कडाहियो या लोहे के पात्रो मे, भूनने के पात्रो मे, अगारो पर तलते, भूनते और शूल द्वारा पकाते हुए अपनी आजीविका चलाते थे।


गौतम के प्रश्न पर
शकट का पूर्वभव
छन्निक हिंसाकर्मी
छन्निक कसाई का हिंसक व्यापार
छन्निक की नारकीय यातनाएँ
शकट को कठोर दण्ड

चित्र परिचय-६

Illustration No. 6

छन्निक हिंसाकर्मी

दृश्य–१ (नीचे दाहिने)

एक समय भगवान शोभाजनी नगरी मे पधारे। गणधर गौतम ने भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए नगर के चौराहे पर एक अपराधी पुरुष व स्त्री को कठोर बधनो मे बँधे देखा। उनके नाक-कान कटे है। जगह-जगह मॉस कटा हुआ है। जिस पर राजपुरुष खोलता क्षार युक्त गर्म पानी डालते है और चाबुको से पीटते है।

दृश्य–२ (ऊपर)

भगवान उसका पूर्व भव बताते है छगलपुर मे छन्निक नामक कसाई था। वह गाय बैल भैस -भेड-बकरियो आदि पशु पक्षियो को पकडकर बाडो व पिजरो मे बद रखता था। उनकी हिसा करके मॉस। शराब बेचता था। घोर हिसा कर्म करके नरक मे गया।

दृश्य–३ (नीचे बाये)

नरक मे छन्निक के जीव को घोर पीडा व यातना भुगतनी पडी। छन्निक कसाई का जीव क्रमश यहाँ सार्थवाह का पुत्र वह बना। शकट मद्य -मॉस का सेवन करता हुआ नगर की वेश्या के साथ आसक्त हो गया। भगवान कहते है- गौतम ! वही शकट उस वेश्या के साथ यहाँ बँधा है।

श्रुतस्कन्ध १ अ ४ सूत्र ५ १२

CHHANNIK BUTCHER

SCENE-1 (BOTTOM RIGHT)

Once *Bhagavan* came to Shobhanjani city While collecting alms Gautam Swami saw shackled male and female criminals There noses and earlobes are severed and bodies are wounded at many places Guards are thrashing them and pouring boiling water on their bodies

SCENE-2 (TOP)

Bhagavan tells about his past birth—In Chhagalpur lived a butcher named Chhannik He caught and kept cows, oxen, buffaloes, sheep, goats, and other animals and birds in cages and yards He butchered them and sold meat and wine These sinful activities lead to his birth in hell

SCENE-3 (BOTTOM LEFT)

In hell Chhannik suffers excruciating torture The soul that was Chhannik has taken birth as Shakat, the son of a caravan chief He habitually consumed meat and wine He got infatuated with a courtesan *Bhagavan* said—Gautam ! It is that Shakat and the courtesan who are shackled here

—Sec I, Ch 4, Sutra 5-12

वह छण्णिक स्वय भी उन अनेक प्रकार के माँसों के साथ सुरा आदि पाँच प्रकार के मद्यो का आस्वादन आदि करता हुआ वह जीवन बिताता था।

CHHANNIK IN OCCUPATION OF VIOLENCE

7. That Chhanik Chhagalık had many cattle-corrals which could accommodate hundreds and thousands of anımals lıke goats, sheep, *Rojhas* (*Neelagaya* or black-buck), bulls, hares, young deer, pıgs, lıons, deer, peacocks and buffaloes Such anımals were stocked there Numerous men were employed there on wages and food They used to look after and protect these anımals ıncludıng goats . and so on up to. . buffaloes.

Those numerous men, employed on wages and food, used to butcher thousands of these anımals ıncludıng goats and so on up to buffaloes, cut and chop theır meat wıth knıves and shears, and gıve ıt to Chhanık Chhagalık

Hıs many other servants earned theır lıvıng by fryıng, bakıng, and roastıng meat of those goats and other anımals on metal and earthen plates, pans, and a varıety of other cookıng pots as well as wıth stıcks on burnıng charcoal

That Chhanık too spent hıs lıfe enjoyıng aforesaıd dıshes of meat of goats (etc) wıth five kınds of wıne

८. तए णं से छण्णिए छागलिए एयकम्मे, एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्तवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

८. उस छण्णिक छागलिक ने अजादि पशुओ के माँसो को बेचना एव खाना तथा मदिराओ का पीना अपना नित्य कर्तव्य बना लिया था। इन्ही पापपूर्ण प्रवृत्तियो मे वह सदा सलग्न रहता था। वही प्रवृत्तियाँ उसके जीवन का विज्ञान बन गई थी और ऐसे ही पापपूर्ण कर्मों को उसने अपना सर्वोत्तम आचरण मान रखा था। अतएव वह क्लेशजनक और कलुषपूर्ण अत्यधिक पाप कर्मों का उपार्जन कर सात सौ वर्ष की पूर्ण आयु पालकर मृत्यु आने पर काल करके चतुर्थ नरक मे, उत्कृष्ट दस सागरोपम की स्थिति वाले नारकियो मे नारक रूप मे उत्पन्न हुआ।

8. Chhanık Chhagalık had made ıt hıs daıly duty to sell and eat meat of goats (etc) and drınk five kinds of wıne He was ever involved ın these sınful actıvities These actıvıties had become his way and ideal of life and he had accepted all these sınful actıvıtıes to be the best of conduct As a consequence he acquıred extremely malevolent and paın causıng *karmas* in

abundance. After completing his life-span of seven hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the fourth hell where the maximum life span is ten *Sagaropam*.

शकट का वर्तमान भव

९. तए णं तस्स सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। तए णं से छण्णिए छागलिए चउत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया। तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठाओ ठावेंति। दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खेंति, संगोवेंति, संवड्ढेंति, जहा उज्झियए, जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्ते चेव सगडस्स हेट्ठा ठाविए, तम्हा णं होउ णं अम्हं एस दारए 'सगडे नामेणं। सेसं जहा उज्झियए।

सुभद्दे लवणासमुद्दे कालगए, माया वि कालगया। से वि सयाओ गिहाओ निच्छूढे। तए णं से सगडे दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था।

९. उस सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नाम की भार्या जातनिन्दुका-(जिसके बच्च जन्म लेते ही मर जाते हो) थी। उसके बालक उत्पन्न होते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते छ। इधर छण्णिक नामक छागलिक-का जीव चतुर्थनरक से निकलकर सीधा इसी साहजनी नगरी मे सुभद्र सार्थवाह की भद्रा नाम की भार्या के गर्भ मे पुत्ररूप मे उत्पन्न हुआ।

लगभग नवमास परिपूर्ण हो जाने पर किसी समय भद्रा भार्या ने बालक को जन्म दिया। उत्पन्न होते ही माता-पिता ने उस बालक को शकट-छकडे (गाडे) के नीचे स्थापित कर दिया-रख दिया और फिर उठा लिया। उठाकर यथाविधि सरक्षण, सगोपन व सवर्द्धन किया।

[गाडे के नीचे रखने का उद्देश्य यह हो सकता है, चूँकि उसकी सन्तान जीवित नही रहती थी। इसलिए उसने पुत्र को जन्म लेते ही गाडे के नीचे रख दिया। इस प्रकार उसका पालन किया।-आचार्य श्री आत्मारामजी कृत टीका, पृ २१६]

यथासमय उसके माता-पिता ने कहा-''उत्पन्न होते ही हमारा यह बालक छकडे के नीचे स्थापित किया गया था, अत इसका नामकरण 'शकट' किया है व यो उसका नाम शकट रख दिया। शकट का शेष जीवन उज्झित की ही तरह समझ लेना चाहिए।

इधर सुभद्र सार्थवाह (समुद्र यात्रा करती हुआ) लवण समुद्र मे कालधर्म को प्राप्त हुआ और शकट की माता भद्रा भी शोक मग्न मृत्यु को प्राप्त हो गयी। तब शकट को राजपुरुषो के द्वारा घर से निकाल दिया गया। (लेनदारो को धन चुकाने के लिए राजपुरुषो ने उसका घर व सब सम्पत्ति नीलाम कर दी। शकट अनाथ

अवस्था मे असहाय घर से निकल गया) अपने घर से निकाले जाने पर शकट साहंजनी नगरी के शृगाटक आदि स्थानो मे भटकता रहा तथा जुआरियो के अड्डो (तथा शराबघरो मे घूमने लगा।) किसी समय उसकी सुदर्शना गणिका के साथ प्रगाढ प्रीति हो गयी। (जैसी उज्झित की कामध्वजा के साथ हो गयी थी।)

THIS BIRTH OF SHAKAT

9. Bhadraa, the wife of Subhadra Sarthavaha was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth) On leaving the fourth hell, the soul of that Chhanik Chhagalik was conceived as a son in the womb of Bhadraa, the wife of Subhadra Sarthavaha in Saahanjani city.

In due course, on completion of nine months, Bhadraa Sarthavahi gave birth to a son. Immediately after his birth the parents placed the child under a *shakat* (bullock cart) and then lifted it back After that they fed, protected and gradually brought up the child

[As her offspring did not survive, she placed her newborn son under a cart.—*Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M , p 216]

In due course the parents named the child—"When this son of ours was born he was placed under a cart (*shakat*) As such, he should be popularly known by the name 'Shakat' " Rest of the story should be read as that of Ujjhitak

Subhadra Sarthavaha met his death during a sea voyage in the Lavan Samudra Soon grief stricken Bhadraa Sarthavahi also met her end The city guards expelled young Shakat from his house (They auctioned the house to repay loans to creditors and Shakat had to abandon his house) On being expelled from his house, young Shakat started roaming around the trisections, (etc) in Saahanjani city and frequenting gambling houses (and bars) At one point of time he fell in love with courtesan Sudarshana (As Ujjhit fell for Kamadhvaja)

१०. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अन्नया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अब्भिंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

१०. तदनन्तर महचन्द्र राजा का अमात्य-मत्री सुषेण किसी समय उस शकट कुमार को सुदर्शना वेश्या के घर से निकलवा देता है और सुदर्शना गणिका को अपने घर मे (किसी स्वतत्र आवास पर) पत्नी के रूप मे रख लेता है। इस तरह घर मे पत्नी के रूप मे रखी हुई सुदर्शना के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगो को यथारुचि उपभोग करता हुआ समय बिताता है।

10. Later at some point of time king Mahachandra's minister Sushen got young Shakat expelled from the house of Kamadhvaja courtesan and kept her as mistress in an independent house He started enjoying all human comforts and carnal pleasures with the courtesan kept as his mistress

११. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं से सगडे दारए अन्नया कयांइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

११. सुदर्शना वेश्या के घर से निकाला गया शकट उस गणिका मे मूर्च्छित, गृद्ध, अत्यन्त आसक्त होकर अन्यत्र कही भी सुख, चैन, रति, शान्ति नही पा रहा था। उसका चित्त, मन, लेश्या और अध्यवसाय उसी मे रमा रहता था। वह सुदर्शना के विषय मे ही सोचा करता, उसमे मन को लगाये रहता, उसी की भावना से भावित रहता। प्रतिक्षण उसके पास जाने की ताक मे रहता और अवसर देखता रहता था। एक बार उसे अवसर मिल गया। वह सुदर्शना के घर मे घुस गया और फिर उसके साथ मन इच्छित काम-भोग भोगने लगा।

11. On getting expelled from the house of Sudarshana courtesan, that young Shakat, being madly attached (*murchhit*) with Sudarshana courtesan, infatuated (*griddha*) with her, entrapped in her love (*grathit*), lost in her thoughts (*adyupapanna*), could not think of, love and derive mental peace in any other person or thing Always thinking about her, making efforts to possess her, devoting his mind speech and body to her, impelled by his desire for her, he got himself involved in seeking an opportunity when the king did not come to courtesan Sudarshana's house, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there Once he got such an opportunity and he stealthily entered the house of Sudarshana courtesan He then started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her

१२. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुराए परिक्खित्ते जेणेव सुदरिसणाए गणिकाए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले

साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि जाव महियं करेइ, करित्ता अवओडयबंधणं करेइ, करेत्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु सामी ! सगडे दारए मम अंतेउरंसि अवरद्धे।'

तए णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी–'तुमं चेव णं, देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि।'

तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

तं एवं खलु, गोयमा ! सगडे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

१२. इधर एक दिन स्नान आदि करके तथा विविध आभूषण पहनकर अनेक मनुष्यो को साथ लिए सुषेण मत्री सुदर्शना गणिका के घर पर आया। आते ही उसने सुदर्शना के साथ स्वच्छन्द रूप मे कामभोगो का उपभोग करते हुए शकट कुमार को देखा। देखकर वह क्रोध के वश लाल–पीला हो, दांत पीसता हुआ मस्तक पर तीन भृकुटियाँ चढा लेता है। शकट कुमार को अपने पुरुषो से पकडवाकर लाठियो मुट्ठियो आदि से उसके शरीर को घायल कर अवकोटक बन्धन से जकडवा लेता है। उसे महाराज महचन्द्र के पास ले जाकर हाथ जोडकर इस प्रकार निवेदन करता है–'स्वामिन् ! इस शकट कुमार ने मेरे अन्त पुर मे प्रवेश करने का अपराध किया है।'

उत्तर मे महाराज महचन्द्र सुषेण मत्री से कहता है–'देवानुप्रिय ! तुम ही अपनी इच्छानुसार इसको दण्ड दे सकते हो।'

महाराज महचन्द्र से आज्ञा मिलने पर सुषेण मत्री ने शकट कुमार और सुदर्शना गणिका को पूर्वोक्त विधि से (जिसे हे गौतम ! तुमने देखा है) वध करने की आज्ञा राजपुरुषो को दे दी।

हे गौतम ! इस प्रकार वह शकट कुमार अपने पूर्व कृत पापकर्मो का फल भोग रहा है।

12. Then one day minister Sushen, after taking his bath, and so on up to embellished fully with ornaments, and accompanied by a throng of people went to the house of Sudarshana courtesan There he came across young Shakat enjoying all human comforts and carnal pleasures with Sudarshana courtesan When he saw this he turned red with anger and raised his eyebrows He got young Shakat caught by his guards and gave a thorough beating by hammering and tossing the body of Shakat with blows of stick, fist, and so on up to got him tied in the *avakotak* bond (bending the neck and tying it with hands already tied at the back) He took Shakat to king Mahachandra and submitted—"Sire this young Shakat has committed the crime of entering my private quarters (where women of the house live) "

The king replied—"You are allowed to punish him as you like"

On getting permission from king Mahachandra, minister Sushen sentenced young Shakat and courtesan Sudarshana to death by aforesaid method (As you saw, Gautam !)

Gautam ! This way that young Shakat is suffering for the sinful deeds he committed in the past

शकट का भविष्य

१३. सगडे णं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सगडे णं दारए सत्तावन्नं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अयोमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवयासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे नयरे मातंगकुलंसि जुगलत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं गोण्णं नामधेज्जं करिस्संति–'तं होउ णं दारए सगडे नामेणं, होइ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं।'

१३. शकट की दुर्दशा का कारण जानकर गौतम स्वामी ने पूछा–भते ! शकट कुमार बालक यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा और कहाँ पर उत्पन्न होगा ?

भगवान् ने उत्तर दिया–हे गौतम ! शकट दारक को ५७ वर्ष की परम आयु को भोगकर आज ही दिन के तीसरे पहर मे उसे एक लोह की तपी हुई अग्नि के समान देदीप्यमान विशाल स्त्रीप्रतिमा से आलिगित कराया जायेगा। उस साक्षात् अग्नि के समान प्रतिमा का आलिगन करने पर मृत्यु प्राप्त कर रत्नप्रभा नाम की प्रथम नरक भूमि मे नारक रूप मे उत्पन्न होगा।

(शकट और सुदर्शना का जीव) नरक से निकलकर राजगृह नगर मे मातग–चाण्डाल कुल मे युगल (जोडे) रूप से उत्पन्न होगा। उस युगल के माता–पिता बारहवे दिन उनमे से बालक का नाम 'शकटकुमार' और कन्या का नाम 'सुदर्शना' रखेगे।

THE FUTURE OF SHAKAT

13. Knowing the cause of Shakat's misery, Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this young Shakat go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of fifty seven years, this afternoon young Shakat will be forced to embrace a large and fire-like red hot female statue made of iron On embracing that fire-

like statue he will die and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha

Getting out of the hell they (the souls that are Shakat and Sudarshana) will take rebirth as twins in a *Chandal* (a low caste) family in Rajagriha city. The parents of the twins will name them as Shakat Kumar and Sudarshana

शकट कुमार का भव

१४. तए णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते भविस्सइ।

तए णं सा सुदरिसणा वि दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि भविस्सइ। तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ।

तए णं से सगडे दारए अन्नया सयमेव कूडग्गाहित्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सइ। तए णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ अहम्मिए जाव दुप्पडियाणन्दे। एयकम्मे-४ सुबहुं पाकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव जाव पुढवीए।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ मच्छबन्धिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

निक्खेवो।

॥ चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

१४. तदनन्तर शकट कुमार बचपन बीतने पर यौवन वय को प्राप्त करेगा। सुदर्शना कुमारी भी बाल्यावस्था पार करके विशिष्ट ज्ञानबुद्धि की परिपक्वता को प्राप्त करती हुई युवावस्था को प्राप्त होगी। वह रूप, यौवन व लावण्य मे श्रेष्ठ व सुन्दर शरीर वाली होगी।

सुदर्शना के रूप, यौवन और लावण्य की सुन्दरता मे मूर्च्छित होकर शकट कुमार अपनी बहिन सुदर्शना के साथ ही मनुष्य सम्बन्धी कामभोगो का सेवन करता हुआ जीवन व्यतीत करने लगेगा।

तत्पश्चात् किसी समय वह शकटकुमार स्वयमेव कूटग्राहित्व (कपट से जीवों को फँसाकर मारने का व्यवसाय) का कार्य करने लगेगा। वह कूटग्राह बना हुआ वह शकट महाअधर्मी एवं दुष्प्रत्यानन्द होगा। इन अधर्म-प्रधान कर्मों से बहुत भारी पापकर्मों को उपार्जित कर मृत्यु समय में मरकर रत्नप्रभा नाम प्रथम नरक मे नारकी रूप से उत्पन्न होगा। उसका संसार-भ्रमण भी पूर्ववत् (एकाई उज्झित आदि के समान) जान लेना चाहिए यावत् वह पृथ्वीकाय आदि में लाखो-लाखो बार उत्पन्न होगा।

तदनन्तर वहाँ से निकलकर वह सीधा वाराणसी नगरी मे मत्स्य के रूप मे जन्म लेगा। वहाँ पर मत्स्यघातको के द्वारा वध किये जाने पर फिर उसी वाराणसी नगरी मे एक श्रेष्ठिकुल मे पुत्ररूप से उत्पन्न होगा। वहाँ सम्यक्त्व एव अनगार धर्म को प्राप्त करके सौधर्म नामक प्रथम देवलोक मे देव होगा। वहाँ से च्युत हो, महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेगा। वहाँ साधुवृत्ति का सम्यक्तया पालन करता हुआ अन्त मे सिद्ध, बुद्ध होगा, समस्त कर्मों और दु खो का अन्त करेगा।

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

THE BIRTH AS SHAKAT KUMAR

14. In due course Shakat Kumar will cross his adolescence and attain youth Sudarshana Kumari will also acquire exceptional wisdom and maturity while attaining youth She will have exquisitely beautiful, charming, and youthful body

Falling for the beauty, youth and charm of his own sister, Shakat Kumar will start passing his time enjoying all human comforts and carnal pleasures with Sudarshana

At some point of time that Shakat Kumar will enter the profession of catching and killing animals As a *kootagraha* that Shakat Kumar will become extremely irreligious and derive contentment in sinful deeds As a consequence of these evil deeds he will acquire abundant demeritorious *karmas* Having completed his life-span, at the time of death, he will die and take rebirth as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in context of Ekadi, Ujjhitak, and others and so on up to will be born millions of times as earth-bodied and other such beings

Coming out from there he will be born as a fish in Varanasi city After being killed by fishermen he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Varanasi city There he will gain righteousness (*samyaktva*) and get initiated as an ascetic From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : पंचम अध्ययन
बृहस्पतिदत्त (व्यभिचारी राजपुरोहित)

उपोद्‌घात

पूर्व अध्ययनो की भाँति इस पचम अध्ययन मे बृहस्पतिदत्त के कथानक द्वारा क्रूरता, हिंसा–कर्म, और व्यभिचार के दुष्परिणामो का कटु फल विपाक बताया है। बृहस्पतिदत्त ने राजपुरोहित होकर भी राजा के साथ मित्रद्रोह किया, उसकी रानी के साथ व्यभिचाररत हुआ। इस दुष्कर्म का कठोर दण्ड तो उसे उसी जन्म मे मिल गया, किन्तु पिछले भवो व इस भव मे किये गये हिंसा आदि अनेक कुकर्मो का फल लाखो जन्मो तक भोगना पडा। इसका लोमहर्षक वर्णन इस अध्ययन मे है।

FIRST SHRUTSKANDH : FIFTH CHAPTER
BRIHASPATIDATT (the debauch priest)

INTRODUCTION

Like the preceding chapters this fifth chapter too informs about the grave consequences and bitter fruits of cruelty, sinful activity, and adultery Even though Brihaspatidatt was the state priest, he deceived his friend, the king, and indulged in adultery with the queen He not only got harsh punishment for this evil deed during the same life time but he had to suffer the consequences of many other violent and sinful deeds, committed during this and many past births, for millions of rebirths This chapter contains hair-raising description of that.

पंचम अध्ययन
FIFTH CHAPTER

प्रस्तावना : जम्बू स्वामी की जिज्ञासा

पंचमस्स उक्खेवो—जइ णं भंते !

पाँचवे अध्ययन का उत्क्षेप–प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए। (अर्थात् जम्बूस्वामी ने प्रश्न किया कि श्रमण भगवान महावीर ने दु:खविपाक के पाँचवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?) तब सुधर्मा स्वामी ने कहा–

FOREWORD : CURIOSITY OF JAMBU SWAMI

The foreword of the fifth chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the fifth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

१. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी णामं णयरी होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धा। बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे। सेयभद्दे जक्खे।

१. जम्बू ! उस काल उस समय मे कौशाम्बी नाम की एक नगरी थी, जो विशाल भवनादि से युक्त, समृद्धि सम्पन्न थी। उस नगरी के बाहर चन्द्रावतरण नामक उद्यान मे श्वेतभद्र नामक यक्ष का आयतन था।

1. Jambu ! During that period of time there was a city named Kaushambi which was beautiful and prosperous in all respects. Outside this town was a garden named Chandravataran in which was a temple of Shvetabhadra Yaksh

२. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणीए नामं राया होत्था। महया.। मियावई देवी। तस्स णं सयाणीयस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदायणे नामं कुमारे होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, जुवराया। तस्स णं उदायणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था।

२. उस कौशाम्बी नगरी में शतानीक नाम का प्रतापी राजा था। उसके मृगादेवी नाम की रानी थी। मृगादेवी राजा चेटक की पुत्री थी। शतानीक राजा का पुत्र और रानी मृगादेवी का आत्मज उदयन नाम का एक कुमार था जो सर्वेन्द्रिय सम्पन्न और युवराज पद से अलकृत था। उस उदयन कुमार की पत्नी का नाम पद्मावती था।

2. In that Kaushambi city ruled a majestic king named Shataneek. The name of his queen was Mrigadevi who was the daughter of king Chetak.

Shataneek and Mrigadevi had a son named Udayan who was perfectly proportioned and handsome He was the crown prince of the kingdom The name of prince Udayan's wife was Padmavati.

३. तस्स णं सयाणीयस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेय, यज्जुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेयकुसले। तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था। तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नामं दारए होत्था। अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस शतानीक राजा के पुरोहित का नाम सोमदत्त था, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का पूर्ण ज्ञाता था। उस सोमदत्त पुरोहित के वसुदत्ता नाम की भार्या थी, तथा सोमदत्त का पुत्र एव वसुदत्ता का आत्मज बृहस्पतिदत्त नाम का एक सर्वांग सम्पन्न सुन्दर बालक था।

3. The name of the state priest of king Shataneek was Somadatt. He had mastery over *Rigveda, Yajurveda, Saamaveda,* and *Atharvaveda* Priest Somadatt's wife was named Vasudatta Somadatt and Vasudatta had a perfect and handsome son named Brihaspatidatt

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीर समोसरिए। तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव रायमग्गमोगाढे। तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्झे पुरिसं। चिंता। तहेव पुच्छइ, पुव्वभवं। भगवं वागरेइ।

४. उस काल उस समय मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी कौशाम्बी नगरी के बाहर चन्द्रावतरण उद्यान मे पधारे। उस समय भगवान गौतम पूर्ववत् कौशाम्बी नगरी मे भिक्षाचरी करके लौटते हुए राजमार्ग पर पधारे। वहाँ हाथियो, घोडो और शस्त्र आदि से सुसज्जित अनेक पुरुषो को तथा उन पुरुषो के बीच एक वध्य पुरुष को बँधा हुआ देखा। (इसका वर्णन पिछले वर्णन के समान जाने) उनको देखकर मन मे विचार करते है और अपने स्थान पर आकर भगवान से उसके पूर्व-भव के सम्बन्ध मे प्रश्न करते है। भगवान उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार करते है।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Chandravataran garden outside Kaushambi city During that period of time while returning after collecting alms in Kaushambi city Bhagavan Gautam came to the main road as mentioned earlier There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons. Amongst them he saw a prisoner being taken to the gallows. Gautam Swami was thoughtful (on hearing the announcement, seeing all this and the person in pathetic condition) He came to Bhagavan Mahavir and asked about it. In reply *Bhagavan* said—

पूर्वभव

५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू राया। तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो महेसरदत्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेय, यजुव्वेय, सामवेय, अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था।

५. हे गौतम ! उस काल उस समय मे इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे स्थित भरतक्षेत्र मे सर्वतोभद्र नाम का एक विशाल नगर था, जो भवन आदि से समृद्ध तथा धनधान्यादि से परिपूर्ण था। उस सर्वतोभद्र नगर में जितशत्रु राजा था। उस जितशत्रु राजा का महेश्वरदत्त नाम का एक पुरोहित था जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का पूर्ण ज्ञाता था।

PREVIOUS BIRTH

5. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Sarvatobhadra in Bharatvarsh area in Jambu continent A king named Jitashatru was the ruler of that city King Jitashatru had a priest named Maheshvardatt who had mastery over *Rigveda, Yajurveda, Saamaveda,* and *Atharvaveda*

राजा द्वारा शान्ति होम

६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रन्नो रज्ज–बलविवद्धणट्ठाए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं एगमेगं वइस्सदारयं, एगमेगं सुद्ददारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवतंगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेइ।

तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमी–चउद्दसीसु दुवे–दुवे माहणखत्तिय–वइस्स–सुद्ददारगे, चउण्हं मासाणं चत्तारि–चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ–अट्ठ संवच्छरस्स सोलस–सोलस।

जाहे जाहे वि य णं जियसत्तु राया परबलेण अभिजुंजइ, ताहे ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं अट्ठसयं वइस्सदारगाणं अट्ठसयं सुद्ददारगाणं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेई। तए णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसिज्जइ वा पडिसेहिज्जइ वा।

६. महेश्वरदत्त पुरोहित जितशत्रु राजा के राज्य के हित बल की वृद्धि के लिए प्रतिदिन एक–एक ब्राह्मण बालक, एक–एक क्षत्रिय बालक, एक–एक वैश्य बालक और एक–एक शूद्र बालक को पकडवा लेता था और पकडवा कर जीते जी उनके हृदयो के मॉसपिण्डो को निकलवा लेता और बाहर निकलवाकर जितशत्रु राजा के निमित्त उनसे शान्ति–होम किया करता था। (टीकाकार ने शान्ति–होम का अर्थ किया है–किसी हिंसाप्रिय देवता के निमित्त मत्र आदि पढकर घी–तिल जो आदि द्वारा अग्नि मे हवन करना अथवा किसी क्रूर देवता को बलि पिण्ड आदि देना। इस प्रकार के हिंसात्मक होम से राजा की विजय का

क्या सम्बन्ध हो सकता है। इस विषय पर विस्तृत चर्चा पढे) *–(आचार्य श्री आत्माराम जी म कृत हिन्दी टीका पृष्ठ १२५–२६)*

इसके अतिरिक्त वह पुरोहित प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी के दिन दो–दो बालको के, चार मास मे चार–चार के, छह मास मे आठ–आठ बालको के और सवत्सर–वर्ष मे सोलह–सोलह बालको के हृदयो के माँसपिण्डो से शान्ति–होम किया करता था।

जब–जब जितशत्रु राजा का किसी शत्रु के साथ युद्ध होता तब–तब वह महेश्वरदत्त पुरोहित एक सौ आठ (१०८) ब्राह्मण बालको, एक सौ आठ क्षत्रिय–बालको, एक सौ आठ वैश्यबालको और एक सौ आठ शूद्रबालको को अपने पुरुषो द्वारा पकडवा कर और जीते जी उनके हृदय के माँसपिण्डो को निकलवा कर जितशत्रु नरेश की विजय के निमित्त शान्ति–होम करता था। उसके प्रभाव से जितशत्रु राजा शीघ्र ही शत्रु का विध्वस कर देता या शत्रु रण क्षेत्र से भागा जाता था।

PEACE-OFFERINGS BY THE KING

6. Everyday priest Maheshvardatt would get a boy each from a Brahmin family, a Kshatriya family, a Vaishya family, and a Shudra family captured and brought to him He would then get the hearts out from their live bodies and perform sacrificial peace-offerings for the well-being of king Jitashatru [The commentator (*Tika)* has interpreted *shanti-home* (peace offerings) as to throw butter, oil, barley etc or lumps of human or animal flesh in sacrificial fire accompanied by chanting of mantras as offerings to some violence loving deity It is hard to conceive what relationship the victory or well-being of a king can have with such violent act *(for detailed discussion refer to Hindi Tika by Acharya Shri Atmaram ji M , pp 125-126)]*

Besides this that priest would also perform the ritual peace-offerings of lumps of flesh from hearts of two sets of boys every eighth and fourteenth day of a fortnight, of four sets of boys every four months, of eight sets of boys every six months, and of sixteen sets of boys every year

Whenever king Jitashatru fought a battle with some adversary, that priest Maheshvardatt would get one hundred eight boys each from Brahmin families, Kshatriya families, Vaishya families, and Shudra families captured and brought to him. He would then get the hearts out from their live bodies and perform sacrificial peace-offerings for the victory of king Jitashatru. This helped king Jitashatru destroy or trounce his enemy in the battle.

हिंसा कर्म का दुष्परिणाम

७. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमीए पुढवीए उक्कोसेण सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववन्ने।

७. इस प्रकार क्रूर कर्मों का अनुष्ठान करने वाला, क्रूरकर्मों को प्रधानता देने वाला, इन्ही क्रूर कर्मों को अपना सदाचरण मानने वाला महेश्वर दत्त अनेक प्रकार के घोर पापकर्मों का उपार्जन करता हुआ तीन हजार वर्ष का परम आयुष्य भोगकर पाँचवे नरक मे उत्कृष्ट सत्रह सागरोपम की स्थिति वाले नारक के रूप मे उत्पन्न हुआ।

KKKK

7. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best of conduct, Priest Maheshvardatt acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance After completing his life-span of three thousand years, he died and reincarnated as an infernal being in the fifth hell where the maximum life span is seventeen *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

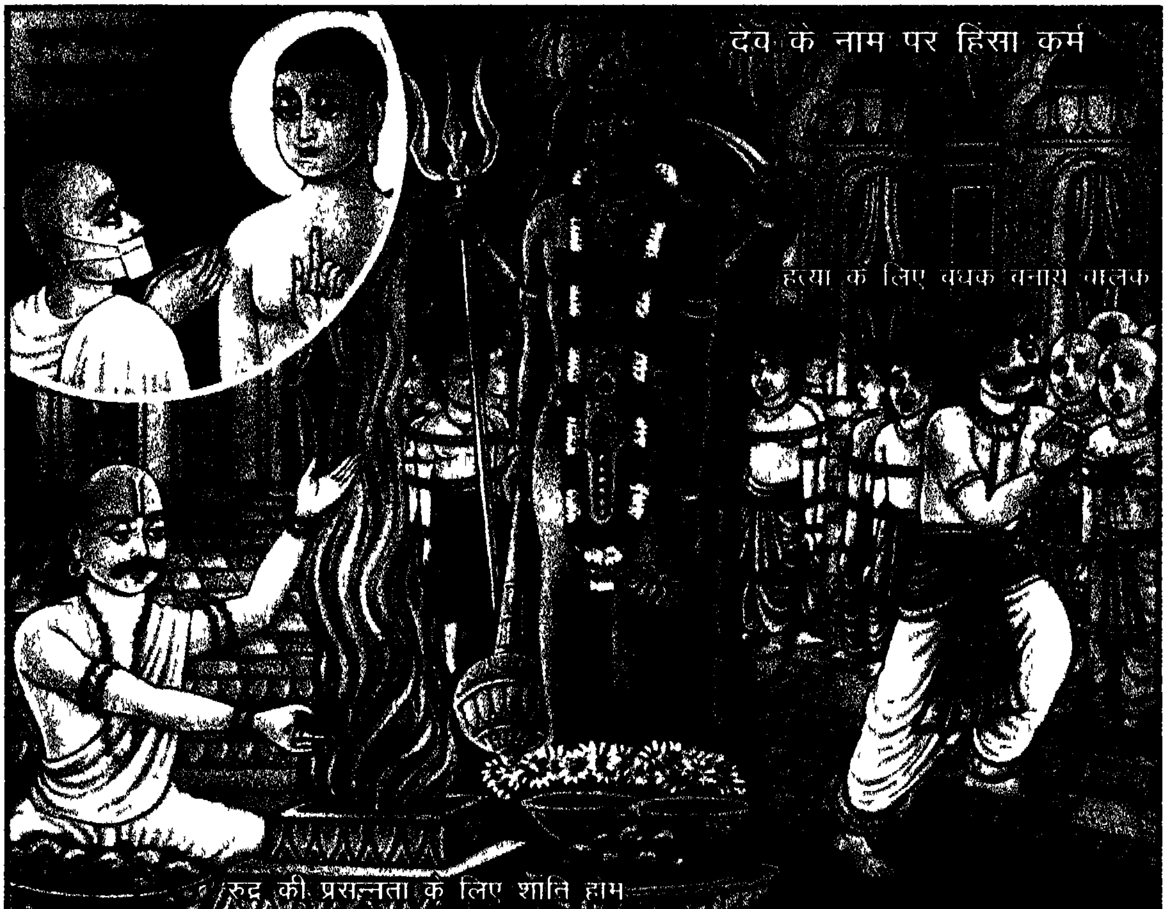
वर्तमान भव

८. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववन्ने। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते, वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं।'

तए णं से बहस्सइदत्ते दारए पंचधाइपरिग्गहिए जाव परिवड्ढइ। तए णं से बहस्सइदत्ते उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विन्नयपरिणयमेत्ते होत्था। से णं उदायणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था। सहजायए, सहवड्ढियए, सहपंसुकीलियए।

८. तदनन्तर महेश्वरदत्त पुरोहित का वह पापात्मा जीव पाँचवे नरक से निकलकर इसी कौशाम्बी नगरी मे सोमदत्त पुरोहित की वसुदत्ता भार्या के उदर मे पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ। यहाँ उत्पन्न हुए इस बालक के माता–पिता ने जन्म से बारहवे दिन नामकरण सस्कार करते हुए कहा–''यह बालक सोमदत्त का पुत्र और वसुदत्ता का आत्मज होने के कारण बृहस्पतिदत्त नाम से पुकारा जायेगा।''

क्रमश वह बृहस्पतिदत्त बालक पाँच धायमाताओ की देखरेख मे पालन–पोषण के साथ वृद्धि को प्राप्त होता हुआ तथा बाल्यावस्था को पार करके युवावस्था मे प्रवेश करता है। बुद्धि–ज्ञान आदि मे परिपक्व होता हुआ वह उदयन राजकुमार का बाल्यकाल से ही प्रिय मित्र बन गया। क्योंकि ये दोनों एक साथ ही उत्पन्न हुए, एक साथ बढ़े और एक साथ ही खेले थे।


देव के नाम पर हिंसा कर्म
हत्या के लिए वधक बनाये बालक
रुद्र की प्रसन्नता के लिए शांति होम


हिंसा का कटुफल : नरक यातना

चित्र परिचय-७

Illustration No. 7

हिंसाकर्मी महेश्वरदत्त

दृश्य–१

भगवान कौशाम्बी मे पधारे। नगर मे गणधर गौतम ने एक पुरुष को कठोर बन्धनो मे बँधे अनेक प्रकार के मर्मान्तक दण्ड पाते देखकर प्रभु से पूछा। भगवान ने बताया यह उदयन राजा का राज पुरोहित पुत्र बृहस्पतिदत्त है। फिर भगवान उसका पूर्वभव बताते है–प्राचीन काल मे सर्वतोभद्र नगर मे जितशत्रु राजा का एक राजपुरोहित था महेश्वरदत्त। वह बडा क्रूर स्वभाव का था। याज्ञिक हिसा मे विश्वास करता था। राजा की विजय के लिए किसी हिसाप्रिय रुद्रदेव के समक्ष प्रत्येक मास की अष्टमी चतुर्दशी के दिन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र जाति के बालको के हृदय के माँस पिण्ड निकालकर शान्ति होम करता था।

दृश्य–२

महेश्वरदत्त का जीव नरक मे गया। नरक कठोर यातनाएँ भोगता रहा। वहाँ से निकलकर महेश्वरदत्त का जीव उदयन राजा का राजपुरोहित बृहस्पतिदत्त बना है। यह राजा का अत्यन्त विश्वास पात्र था। राजा की रानी पद्मावती के साथ विषयानुरक्त हो गया। जिसका पता चलने पर राजा ने उसे यह कठोर दण्ड दिया है।

श्रुतस्कन्ध १ अ ५ सूत्र ८

CRUEL PRIEST MAHESHVARDATT

SCENE-1

Bhagavan came to Kaushambi Gautam Swami saw a person shackled and suffering excruciating punishment He asked *Bhagavan* and was informed—This is Brihaspatidatt, the son of the state priest of king Udayan Then *Bhagavan* told about his past birth—In ancient times King Jitashatru of Sarvatobhadra city had a state priest named Maheshvardatt He was very cruel and believed in religious violence Every eighth and fourteenth day of a fortnight he performed peace-sacrifice before a violent deity, Rudradev, by removing hearts of children from Brahmin, Kshatriya, Vaishya, and Shudra families and offering them to the deity

SCENE-2

The soul that was Maheshvardatt was born in hell He suffered hellish torture there Coming out of there he has reincarnated as Brihaspatidatt, the state priest of king Udayan He was a confidante of the king He fell for queen Padmavati and on knowing this, the king has sentenced him to this harsh punishment

—Sec I, Ch 5 Sutra 7

8. On leaving the fifth hell, the evil soul of that Priest Maheshvardatt was conceived as a son in the womb of Vasudatta, the wife of priest Somadatt in this Kaushambi city. On the twelfth day after his birth the parents named the child—"As the father of this boy is named Somadatt and the mother is named Vasudatta he should be popularly known by the name 'Brihaspatidatt'."

He was brought up under the care of five nursemaids In due course he crossed adolescence and attained youth While maturing in intelligence and wisdom he became a close friend of prince Udayan right since his childhood This was because they were born at the same time and grew up playing together

९. तए णं से सयाणीए राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से उदायणं कुमारे बहूहिं राईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठी–सेणावइ–सत्थवाहप्पभिइहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे, कंदमाणे, विलवमाणे सयाणीयस्स रन्नो महया इड्ढि–सक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूहिं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ।

तए णं ते बहवे राईसर जाव सत्थवाहा उदायणं कुमारं महया–महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

तए णं से उदायणं कुमारे राया जाये महया हिमवंत. !

९. तदनन्तर किसी समय महाराज शतानीक कालधर्म को प्राप्त हो गये। तब उदयनकुमार बहुत से राजा, तलवर, माडबिक, कौटुबिक, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाह आदि के साथ रोता हुआ, आक्रन्दन करता हुआ तथा विलाप करता हुआ शतानीक नरेश का राजकीय समृद्धि के अनुसार सम्मानपूर्वक नीहरण तथा मृतक सम्बन्धी समस्त लौकिक कृत्य करता है।

इसके पश्चात् उन राजा, ईश्वर, सार्थवाह आदि ने मिलकर बडे समारोह के साथ उदयन कुमार का राज्याभिषेक किया।

उदयनकुमार हिमालय पर्वत के समान महान् पराक्रमी राजा बना।

9. At a certain time King Shataneek died. Crying, weeping, and sobbing, Prince Udayan performed the formal last rites and cremated his father, King Shataneek, with state honour and grandeur in presence of numerous kings, influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), and caravan chiefs (*sarthavaha*) and other people.

After that those numerous kings, influential and rich persons (*ishvar*), and so on up to . caravan chiefs (*sarthavaha*) and other people joined the grand coronation ceremony and crowned prince Udayan

Prince Udayan became a king as majestic as the Himalayas

१०. तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उदायणस्स रन्नो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु, सव्वभूमियासु, अंतेउरे य दिन्नवियारे जाव यावि होत्था। तए णं से बहस्सइदत्ते पुरोहिए उदायणस्स रन्नो अंतेउरंसि वेलासु य अवेलासु य, काले य अकाले य राओ य वियाले य पविसमाणे अन्नया कयाइ पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

१०. तब वह बृहस्पतिदत्त कुमार उदयन नरेश का पुरोहित हो गया और पौरोहित्य कर्म करता हुआ सर्वस्थानो-(शयन-भोजन-मत्रणा-आय-महसूल-आदि कामो मे) सर्वभूमिकाओ-(राज सम्बन्धी सभी व्यवस्थाओ मे) तथा अन्त पुर-राजा के रनवास मे भी इच्छानुसार बेरोक-टोक गमनागमन करने लगा।

तत्पश्चात् वह बृहस्पतिदत्त पुरोहित उदयन नरेश के अन्त पुर मे समय-असमय, काल-अकाल, प्रात मध्याह्न तथा रात्रि एव सन्ध्याकाल मे स्वेच्छापूर्वक प्रवेश करने लगा। धीरे-धीरे पद्मावती देवी के साथ उसका अनुचित सम्बन्ध हो गया। तदनुसार पद्मावती देवी के साथ मनुष्य सम्बन्धी मन इच्छित काम-भोगो का सेवन करने लगा।

10. Then young Brihaspatidatt became king Udayan's priest and performing his duties as a priest started unrestricted movement at every place (bed chamber, dining hall, etc.) and getting involved in all activities (deliberations, meetings, state receipts including taxes, etc) to the extant that he visited the private quarters of the king unchecked and at will

Then that Brihaspatidatt priest started frequenting at will the inner quarters of king Udayan's palace timely and untimely, at suitable or odd hours including morning, noon, evening, and night Gradually he developed illicit relationship with Padmavati Devi and consequently started enjoying all human comforts and carnal pleasures with her

११. इमं च णं उदायणे राया ण्हाए जाव विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावइए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ जाव एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

एवं खलु गोयमा ! बहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पुराणाणं जाव विहरइ।

११. इधर किसी समय उदयन राजा स्नानादि करके विविध आभूषणो से अलकृत होकर पद्मावती देवी के महलो में आया। वहाँ पर उसने बृहस्पतिदत्त पुरोहित को पद्मावती देवी के साथ मनुष्य सम्बन्धी भोगोपभोग भोगते हुए देखा। देखते ही वह क्रोध से तमतमा उठा। मस्तक पर तीन भृकुटियाँ चढाकर बृहस्पतिदत्त पुरोहित को पुरुषो द्वारा पकडवाकर (अनेक प्रहारो से शरीर को क्षत-विक्षत करके, पीठ पीछे दोनो हाथ बँधवा कर) जैसा कि तुमने राजमार्ग मे देखा है ऐसा कठोर दण्ड दे रहा है।

हे गौतम ! इस तरह बृहस्पतिदत्त पुरोहित अपने ही पूर्वकृत दुष्कर्मों के फल को प्रत्यक्षरूप से अनुभव कर रहा है।

11. Then one day king Udayan, after taking his bath,. and so on up to . embellished fully with ornaments came to queen Padmavati Devi's palace There he came across priest Brihaspatidatt enjoying all human comforts and carnal pleasures with Padmavati Devi When he saw this he turned red with anger and raised his eyebrows He got priest Brihaspatidatt caught by his guards and and so on up to (he gave a thorough beating and got his hands tied at the back) sentenced him to death. He sentenced him to harsh punishment as you have seen on the road

Gautam ! This way that priest Brihaspatidatt is suffering for the sinful deeds he committed in the past

बृहस्पतिदत्त का भविष्य

१२. 'बहस्सइदत्ते णं भंते ! दारए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! बहस्सइदत्ते णं दारए पुरोहिए चउसट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलिय-भिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिति। संसारो जहा पढमे जाव वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मिगत्ताए पच्चायाइस्सइ। से णं तत्थ वउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ, बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

निक्खेवो।

॥ पंचम अज्झयणं समत्तं ॥

१२. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया-भगवन् ! बृहस्पतिदत्त पुरोहित यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया-गौतम ! बृहस्पतिदत्त पुरोहित ६४ वर्ष की आयु भोगकर दिन के तीसरे प्रहर में सूली से भेदन किया जाकर काल करके रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक मे उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति

वाले नारको मे उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर प्रथम अध्ययन मे वर्णित मृगापुत्र की तरह सभी नरको मे, सब तिर्यंचो मे तथा एकेन्द्रियो मे लाखो-लाखो बार जन्म-मरण करेगा।

तत्पश्चात् हस्तिनापुर नगर मे मृग के रूप मे जन्म लेगा। वहाँ पर वागुरिको-जाल मे फँसाने का काम करने वाले व्याधो के द्वारा मारा जायेगा और इसी हस्तिनापुर मे श्रेष्ठिकुल में पुत्ररूप से जन्म धारण करेगा।

वहाँ सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा और काल करके सौधर्म नामक प्रथम देवलोक मे उत्पन्न होगा। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेगा। वहाँ पर सयम धारण कर, सयम की आराधना करके सब कर्मों का अन्त करेगा-सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप--उपसहार पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

॥ पचम अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF SHAKAT

12. Gautam Swamı asked—"*Bhante* ! After hıs death where wıll thıs prıest Brıhaspatıdatt go ? Where wıll he be reborn ?

Bhagavan replıed—Gautam ! After completıng hıs lıfe-span of sıxty four years, thıs afternoon prıest Brıhaspatıdatt wıll dıe at the gallows and wıll reıncarnate as an ınfernal beıng ın the first hell named Ratnaprabha havıng a maxımum lıfe-span of one *Sagaropam* (a metaphorıc unıt of tıme) From there he wıll follow the cycles of rebırths as mentıoned ın the first chapter ın context of Mrıgaputra and so on up to wıll be born mıllıons of tımes in all hells, as all anımals, and as all one sensed beıngs

Coming out from there he wıll be born as a deer ın Hastınapur cıty After beıng kılled by anımal trappers he wıll reıncarnate as a son ın a merchant famıly of the same Hastınapur cıty

There he will gaın rıghteousness (*samyaktva*) and get ınıtıated as an ascetic. From there he wıll reıncarnate ın the first heaven named Saudharm Devlok Descendıng from there he wıll take bırth ın Mahavıdeh area and follow ascetıc conduct ımmaculately At last he wıll get enlıghtened and attaın the status of *Sıddha* sheddıng all hıs *karmas* and endıng all mısery

Conclusıon should be read as before

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : षष्ठम अध्ययन
नन्दिवर्द्धन (अत्याचारी क्रूर अधिकारी)

उपोद्‌घात

छठे अध्ययन मे नदीवर्धन (नन्दीषेण) राजकुमार की अत्यन्त करुणाजनक, बीभत्स दुर्दशा का जो वर्णन है उसे पढ–सुनकर हृदय काँप जाता है। गौतम स्वामी जैसे महान ज्ञानी का दिल भी द्रवित हो जाता है कि यह कितनी नारकीय यातनाएँ भोग रहा है।

इस यातना के निमित्त कर्मों पर गौतम स्वामी का ध्यान खीचते हुए भगवान फरमाते है–"नदीवर्धन इस जन्म मे तो पितृ–द्रोही बना है। पिता की घात कर उसका राज्य हडपना चाहता था। इसी का दण्ड राजपुरुषो द्वारा दिया जा रहा है। किन्तु इसके मूल मे पूर्व जन्मोपार्जित दुष्कर्म है, जब वह दुर्योधन नामक कारागार रक्षक होता है। कारागार रक्षक का कर्त्तव्य है दुष्टो, आततायियो से प्रजा की रक्षा करना तथा दुष्टो का निग्रह करना। परन्तु जब वह रक्षक मानवता से हीन हुआ, दानवी रूप अपना लेता है और दूसरो के साथ इतनी कठोर, दया विहीन दण्डनीति अपनाता है कि जिसे देखकर दानवता भी लज्जित हो जाये तो वह अपने राजधर्म तथा मानवधर्म से च्युत हो जाता है।" दुर्योधन की अत्यन्त कठोर दण्ड व्यवस्था का चित्रण आगमकार ने बडा ही रोमाचक शैली मे विस्तार पूर्वक किया है, जिसे पढ–सुनकर ही हृदय काँप उठता है।

इसी क्रूरता व निर्दयता पूर्ण दुष्कर्म का फल–विपाक इस कथा मे वर्णित है। इस वर्णन से अत्यन्त प्राचीन काल की कठोर दण्ड व्यवस्था का एक निम्नस्तरीय रूप प्रकट होता है।

सूत्र के प्रारम्भ मे इस अध्ययन का नाम 'नदी' बताया है, सूत्र २ मे नन्दिवर्द्धन है, तथा सूत्र १० मे नन्दीषेण है। यहाँ लिपिकारो की भूल प्रतीत होती है।

FIRST SHRUTSKANDH : SIXTH CHAPTER
NANDIVARDHAN (the tyrant and cruel officer)

INTRODUCTION

The sixth chapter contains the heart-rending description of the pathetic and horrific condition of prince Nandivardhan (Nandishen) Even a great sage like Gautam Swami was touched when he saw the infernal tortures suffered by him.

Drawing the attention of Gautam Swami on the *karmic* cause of this torture *Bhagavan* says—"During this birth Nandivardhan goes against his father and wants to gain the kingdom by killing his father He is being punished by the guards for this only But at the root of all this are the bad *karmas* acquired during the past birth, when he was Duryodhan, the jailer The duty of a jailer is to protect people from rogues and tyrants and subdue evil But when that protector, bereft of humanity, transforms into a demon and employs a ruthless and pitiless punitive policy that puts even demons to shame, he disgraces his post as well as humanity" The extremely harsh system of punishment adopted by Duryodhan has been described in details in a hair-raising style by the author of this *Agam* Shivers go through the spine while reading or listening to it

This story describes the fruits of these cruel and ruthless evil acts This description reveals the meanest point of the harsh ancient system of punishment

At the beginning the title of this chapter is mentioned as Nandi, in aphorism 2 it as Nandivardhan, and in aphorism 10 as Nandishen This appears to be a mistake committed by transcribes

षष्ठ अध्ययन
SIXTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. उक्खेवो–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

तए णं सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी–

१. (उत्क्षेप) जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने पाँचवे अध्ययन का यह अर्थ कहा, तो षष्ठ अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

तब सुधर्मा अनगार जम्बू अनगार से इस प्रकार कहने लगे–

FOREWORD

1. Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of the fifth chapter, then what is the text and meaning of the sixth chapter as preached by him ?"

Sudharma Swami replied to Jambu—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नामं नयरी होत्था। भंडीरे उज्जाणे। सुदंसणे जक्खे। सिरिदामे राया। बन्धुसिरी भारिया। पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे अहीण जाव जुवराया।

२. जम्बू ! उस काल उस समय मे मथुरा नाम की नगरी थी। वहाँ भण्डीर नाम का एक उद्यान था। सुदर्शन नामक यक्ष का आयतन था। वहाँ श्रीदाम राजा राज्य करता था, उसकी रानी का नाम बन्धुश्री था। उनका आत्मज सर्वेन्द्रिय सम्पन्न युवराज पद से अलकृत नन्दिवर्द्धन नाम का राजकुमार था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Mathura which was beautiful and prosperous in all respects Outside this town was a garden named Bhandir in which was a temple of Sudarshan Yaksh In that Mathura city ruled a majestic king named Shridaam. The name of his queen was Bandhushri Shridaam and Bandhushri had a son named Nandivardhan who was perfectly proportioned and handsome He was the crown prince of the kingdom.

३. तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था। साम–भेय–दंड.। तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तापुत्ते नामं दारए होत्था, अहीण.। तस्स णं सिरिदामस्स रन्नो चित्ते नामं अलंकारिए होत्था।

सिरिदामस्स रण्णो चित्ते बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिन्नवियारे यावि होत्था।

३. श्रीदाम नरेश का सुबन्धु नामक मत्री था, जो साम, दण्ड, भेद आदि नीतियो मे कुशल था। उस मत्री का बहुमित्रापुत्र नामक सर्वागसम्पन्न व रूपवान् बालक था। श्रीदाम नरेश का चित्र नामक अलकारिक-(केशादि को अलकृत करने वाला नाई) था। वह राजा का अनेकविध क्षौरकर्म करता हुआ विश्वासपात्र था। राजा की आज्ञा से सर्वस्थानो, सर्व भूमिकाओ तथा अन्त पुर मे भी बेरोक-टोक आना-जाना करता रहता था।

3. King Shridaam had a minister named Subandhu, who was well versed in four prongs of politics, namely *saam* (incantation), *bhed*, (guile), *dand* (threat), and *upapradan* (*daam* or bribery) The minister had a perfect and handsome son named Bahumitraputra King Shridaam had a barber (*alankarik* or hair-styler) Besides performing all his duties as a beautician he was a confidante of the king On king's order he had unrestricted access at every place and involvement in all activities to the extant that he visited the private quarters of the king's palace unchecked and at will

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव परिसा पडिगया।

४. उस काल उस समय मे मथुरा नगरी मे भगवान महावीर स्वामी पधारे। श्रोता परिषद् व राजा भगवान की धर्मदेशना श्रवण करने नगर से निकले, धर्मदेशना सुनकर वापिस चले गये।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Mathura city The king and the people came out of the city to attend his discourse After the discourse they returned home

गौतम स्वामी का प्रश्न

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जेट्ठे जाव रायमग्गमोगाढे तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे, पासइ। तेसिं च पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ जाव नरनारिसपरिवुडं। तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयसीहासणंसि निवेसावेंति। तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं पुरिसं बहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंबभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं, महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

तयाणंतरं च णं तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयसंडासएणं गहा य हारं पिणद्धंति। तयाणंतरं च णं अद्धहारं पिणद्धंति जाव पट्टं मउडं पिणद्धंति। चिंता तहेव जाव वागरेइ।

५. उस समय भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गणधर गौतम भिक्षा के लिए नगरी मे पधारे। लौटते हुए राजमार्ग पर आये। वहाँ उन्होने (पिछले वर्णन की तरह) हाथियो, घोडो और पुरुषो को देखा, तथा उन पुरुषो के मध्य मे बहुत से नर-नारियो से घिरे हुए एक पुरुष को देखा। राजपुरुष उस पुरुष को, चौराहे के बीच अग्नि के समान तपे हुए लाल-लाल लोहमय सिहासन पर बैठाते है। बैठाकर कोई-कोई राजपुरुष उसको अग्नि के समान उष्ण लोहे से भरे, पिघले ताँबे से भरे, जस्ता-रागा से भरे, पिघले सीसा से भरे, कल-कल शब्द करते हुए गर्म-गर्म पानी से भरे, क्षार मिले तैल से भरे, अग्नि के समान लाल-लाल तपे गर्म कलशो के द्वारा महान् राज्याभिषेक की तरह उसको अभिषेक-स्नान कराते है।

इसके पश्चात् उसे लोहमय सडासी से पकडकर अग्नि के समान तपे हुए लोहे के अठारह लडियो वाले हार, नौ लडी वाले हार पहनाते है, मस्तक पर गर्म लोहे का पट्टा बाँधते है, एव गर्म लोहे का बना आभूषण अथवा मुकुट पहनाते है।

यह भयावह दृश्य देखकर गौतम स्वामी का हृदय द्रवित हो उठता है। विचार करते है-यह पुरुष साक्षात् नारकीय वेदना भोग रहा है, आदि पूर्व के समान जिज्ञासा उत्पन्न होने पर गौतम स्वामी भगवान के पास आकर उस पुरुष का पूर्वभव सम्बन्धी वृत्तान्त पूछते है। भगवान उत्तर मे इस प्रकार कहते है-

GAUTAM SWAMI'S CURIOSITY

5. During that period of time Bhagavan Mahavir's senior disciple Ganadhar Gautam came to the city to seek alms While returning after collecting alms he came to the main road There he saw many elephants, horses and foot soldiers duly equipped with armours and weapons Amongst them he saw a prisoner surrounded by many men and women In the middle of the crossing the state guards made him sit on a red hot throne made of iron After making him sit on the throne, as if lavishly anointing him for coronation, they poured on him, from red hot urns, a variety of bubbling and scalding liquids including—molten iron, molten copper, molten zinc, molten lead and boiling water

After that they embellished him with red hot eighteen and nine string necklaces on the neck, tied a red hot metal strap on his forehead and placed a crown and other ornaments of red hot iron on his head

Gautam Swami was touched at this horrifying scene He was thoughtful—This man is, indeed suffering infernal torture and pain . and so on up to... He came to Bhagavan Mahavir and asked about the past birth of that person. In reply *Bhagavan* said—

नन्दिवर्द्धन का पूर्वभव

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था। तस्स णं सीहरहस्स रन्नो दुज्जोहणे नामं चारगपालए होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. गौतम ! उस काल उस समय मे इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे सिहपुर नामक एक धन-भवनादि से समृद्ध नगर था। वहाँ सिहरथ नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा के दुर्योधन नाम का चारकपाल-कारागाररक्षक-(जेलर) था, जो महाअधर्मी यावत् पाप कर्मों से ही आनन्द मानने वाला था।

PREVIOUS BIRTH OF NANDIVARDHAN

6. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Simhapur in Bharatvarsh area in Jambu continent A king named Simharath was the ruler of that city King Simharath had a jailer (*charak-paal*) named Duryodhan who was irreligious and so on up to enjoyed evil deeds only

चारकपाल का घोर अत्याचार

७. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—

(१) बहवे अयकुंडीओ अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ अगणिकायंसि अद्दहियाओ चिट्ठंति।

(२) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारपालगस्स बहवे उट्टियाओ अप्पेगइयाओ आसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठंति।

(३) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंडुयाणं य पायंडुयाण य हडीण य नियलाण य संकलाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(४) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण य वेत्तलयाण य चिंचालयाण य छियाण य कसाण य वायरासीण य पुंजा निगरा चिट्ठंति।

(५) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण य मोग्गराण य कणंगराण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(६) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंतीण य वरत्ताण य वागरज्जूण य वालय-सुत्तरज्जूण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(७) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलम्बचीरपत्ताण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(८) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडगसक्कराण य चम्मपट्टाण य अल्लपट्टाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(९) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूईण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

(१०) तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे पच्छाण (सत्थाण) य पिप्पलाणय कुहाडाण य नहच्छेयणाण य दब्भतिणाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति।

७. दुर्योधन नामक उस चारकपाल के (अपराधियो को कठोर दण्ड देने के लिए) निम्न **चारकभाण्ड**-दण्ड देने के कारागार सम्बन्धी साधन-उपकरण थे। जैसे-

(१) लोहे की अनेक प्रकार की **कुण्डियाँ** थी, जो हर समय आग पर रखी रहती थी। उनमे से कई एक ताँबे से भरी थी, कई एक त्रपु-रागा जस्ता से भरी थी, कई एक सीसे से भरी थी तो कितनीक क्षार चूर्णमिश्रित जल (जिस जल का स्पर्श होते ही जलन उत्पन्न हो जाये) से भरी हुई थी और कितनीक क्षारयुक्त तैल से भरी थी।

(२) दुर्योधन नामक उस चारकपाल के पास **उष्ट्रिकाएँ**-ऊँट की पीठ के समान बडे-बडे आकार के बर्तन (मटके) थे-उनमे से किसी मे अश्वमूत्र भरा हुआ था, किसी मे हाथी का मूत्र भरा था, कितनेक उष्ट्रमूत्र से, कितनेक गोमूत्र से, कितनेक महिषमूत्र से, कितनेक बकरे के मूत्र से तो कितनेक भेडो के मूत्र से भरे हुए रहते थे।

(३) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक **हस्तान्दुक**-हाथ बाँधने के काष्ठ निर्मित बन्धन-हथकडी, **पादान्दुक**-पैर मे बाँधने का बन्धन, **हडि**-काठ की बेडी, **निगड**-लोहे की बेडी और **शृंखला**-लोहे की जजीर के **पुंज**-ऊँची चोटी वाले ढेर तथा **निकर**-चोटी रहित फैला हुआ ढेर बनाए हुए रखे थे।

(४) उस दुर्योधन चारकपाल के पास वेणुलताओ-बांस के चाबुको, बेत के चाबुको, चिचा-इमली के चाबुको, कोमल चर्म के चाबुको, सामान्य चर्मयुक्त चाबुको, वल्कलरश्मियो-वृक्षो की त्वचा से निर्मित चाबुकों के पुज व निकर बने हुए रखे थे।

(५) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक शिलाओ, लकडियो, मुद्गरो और कनगरो-जल मे चलने वाले जहाज आदि को स्थिर करने वाले यन्त्रविशेष (लगर) के पुज व निकर रखे रहते थे।

(६) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक प्रकार की चमडे की रस्सियो, सामान्य रस्सियो, वृक्षो की छाल से निर्मित रस्सियो, केशररज्जुओ ऊनी रस्सियों और सूत्र रज्जुओ सूती रस्सियो के पुज व निकर रखे रहते थे।

(७) उस दुर्योधन चारकपाल के पास असिपत्र–कृपाण करपत्र–आरा क्षुरपत्र–(उस्तरा) और कदम्बचीरपत्र (शस्त्र–विशेष) के भी पुज व निकर रखे रहते थे।

(८) उस दुर्योधन चारकपाल के पास लोहे की कीलो, बाँस की सलाइयो, चमडे के पट्टो व अल्लपट्ट–बिच्छू की पूँछ के आकार जैसे शस्त्र–विशेष के पुज व निकर रखे रहते थे।

(९) उस दुर्योधन चारकपाल के पास अनेक सुइयो, दम्भनो–अग्नि मे तपाकर जिनसे शरीर मे दाग दिया जाता है, ऐसी सलाइयो तथा लघु मुद्‌गरो के पुज व निकर रखे रहते थे।

(१०) उस दुर्योधन के पास अनेक प्रकार के शस्त्र, पिप्पल (छोटे छुरे) कुठार–कुल्हाडो, नखच्छेदक–नेहरनो एव डाभ की नोक से तीक्ष्ण हथियारो के पुज व निकर रखे रहते थे।

EXCESSIVE TYRANNY OF THE JAILER

7. Jailer Duryodhan had numerous prison instruments (*charak bhaand*) for third degree torture of prisoners (listed as follows)—

(1) A variety of iron pots (*kundi*) placed on fire always Many of these were filled with copper, many with zinc (*trapu*), many with lead, and many others with alkaline or acidic water and oil (that gives burning sensation on touch)

(2) That Jailer Duryodhan had many large pitcher-like pots shaped like hump of a camel (*ushtrika*) Some of these were filled with urine of horses, others with that of elephants, camels, cows, buffaloes, goats, and sheep

(3) That Jailer Duryodhan had many wooden hand-cuffs (*hastanduk*), fetters for feet (*padanduk*), wooden shackles (*hadi*), iron shackles (*nigad*), and iron chains (*shrinkhala*) They were stored in stacks (*punj*) and bunches (*nikar*)

(4) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of a variety of whips made of bamboo creepers, cane creepers, tamarind creepers, soft leather, ordinary leather, and hemp and other barks (*valkal rashmi*)

(5) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of stone slabs, sticks, clubs or maces, and anchors (*kanangar*)

(6) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of ordinary ropes and those made of leather, hessian or other barks, woolen yarn, and cotton yarn

(7) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of weapons like swords (*asipatra*), saw blades (*karapatra*), razor blades (*kshurapatra*), and *kadambachirapatra* (a kind of blade).

(8) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of iron nails, bamboo-pegs, leather straps, and hooks (*allapatt*).

(9) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of needles, rods (meant for hot piercing), and small maces

(10) That Jailer Duryodhan had many stacks (*punj*) and bunches (*nikar*) of small weapons, small knives, axes, small chisels (nail-cutters), and other small tools with edges as sharp as a blade of grass.

८. तए णं से दुज्जोहणे चारगपालए सीहरहस्स रन्नो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेए य रायावयारी य अणहारए य बालघायए य विस्संभघायए य जूयगरे य खंडपट्टे य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता–

(१) उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडित्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेयगं करेइ।

(२) अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडित्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ, जाव एलमुत्तं पज्जेइ।

(३) अप्पेगइए हेट्ठामुहे पाडेइ, छडछडस्स वम्मावेइ, वम्मावित्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवीलं दलयइ।

(४) अप्पेगइए हत्थंदुयाइं बंधावेइ, अप्पेगइए पायंदुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियडबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडियमोडिययं करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ।

(५) अप्पेगइए हत्थछिन्नए करेइ जाव सत्थोवाडियं करेइ,

(६) अप्पेगइए वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि य हणावेइ।

(७) अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारेत्ता उरे सिलं दलावेइ, तओ लउडं छुहावेइ, छुहावित्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ।

(८) अप्पेगइए तंतीहि य जाव सुत्तरज्जुहि य हत्थेसु पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि ओचूलयालगं पज्जेइ।

(९) अप्पेगइए असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरयपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अब्भिंगावेइ।

(१०) अप्पेगइए निडालेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणुसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दवावेइ, अलिए भंजावेइ।

(११) अप्पेगइए सूईओ डंभणाणि य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहि य आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमिं कंडूयावेइ।

(१२) अप्पेगइए सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि य अंगं पच्छावेइ. दब्भेहि य कुसेहि य ओल्लबद्धेहि य वेढावेइ, वेढावेत्ता आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पावेइ !

८. वह दुर्योधन चारकपाल सिंहरथ राजा के अनेक चोर, परस्त्रीलम्पट, ग्रन्थिभेदक–गाँठकतरो, राजा के अपकारी–दुश्मनो, ऋणधारक–ऋण लेकर वापिस नही करने वालो, बालघातको, विश्वासघातियो, जुआरियो और धूर्त पुरुषो को राजपुरुषो के द्वारा पकडवाकर

(१) ऊर्ध्वमुख–सीधा–चित्त गिराता है और गिराकर लोहे के दण्डे से मुँह को खोलता है और खोलकर कितनेक को तपा हुआ गर्म–गर्म ताँबा पिलाता है, कितनेक को खोलता हुआ रागा, सीसा, चूर्णादिमिश्रित जल अथवा कलकल शब्द करता हुआ अत्यन्त उष्ण जल और क्षारयुक्त तैल पिलाता है तथा कितनो का इन्हीं से अभिषेक–स्नान कराता है।

(२) कितनो को ऊर्ध्वमुख–सीधा गिराकर उन्हे अश्वमूत्र, हस्तिमूत्र यावत् भेडो का मूत्र पिलाता है।

(३) कितनो को अधोमुख गिराकर छड्–छड् शब्द पूर्वक वमन कराता है और कितनो को (उसी के सिर पर रखकर) पीडा देता है अथवा उसे ही उसका वमन पिला देता है।

(४) कितनो को हथकडियो, बेडियो से, हडिबन्धनो (हथकडियो) व निगडबन्धनो (बेडियो) से बाँधता है। कितनो के शरीर को सिकोडता व मरोडता है। कितनो को साकलो से बाँधता है।

(५) कितनो का हस्तच्छेदन–हाथ काटता है यावत् शस्त्रो से चीरता–फाडता है।

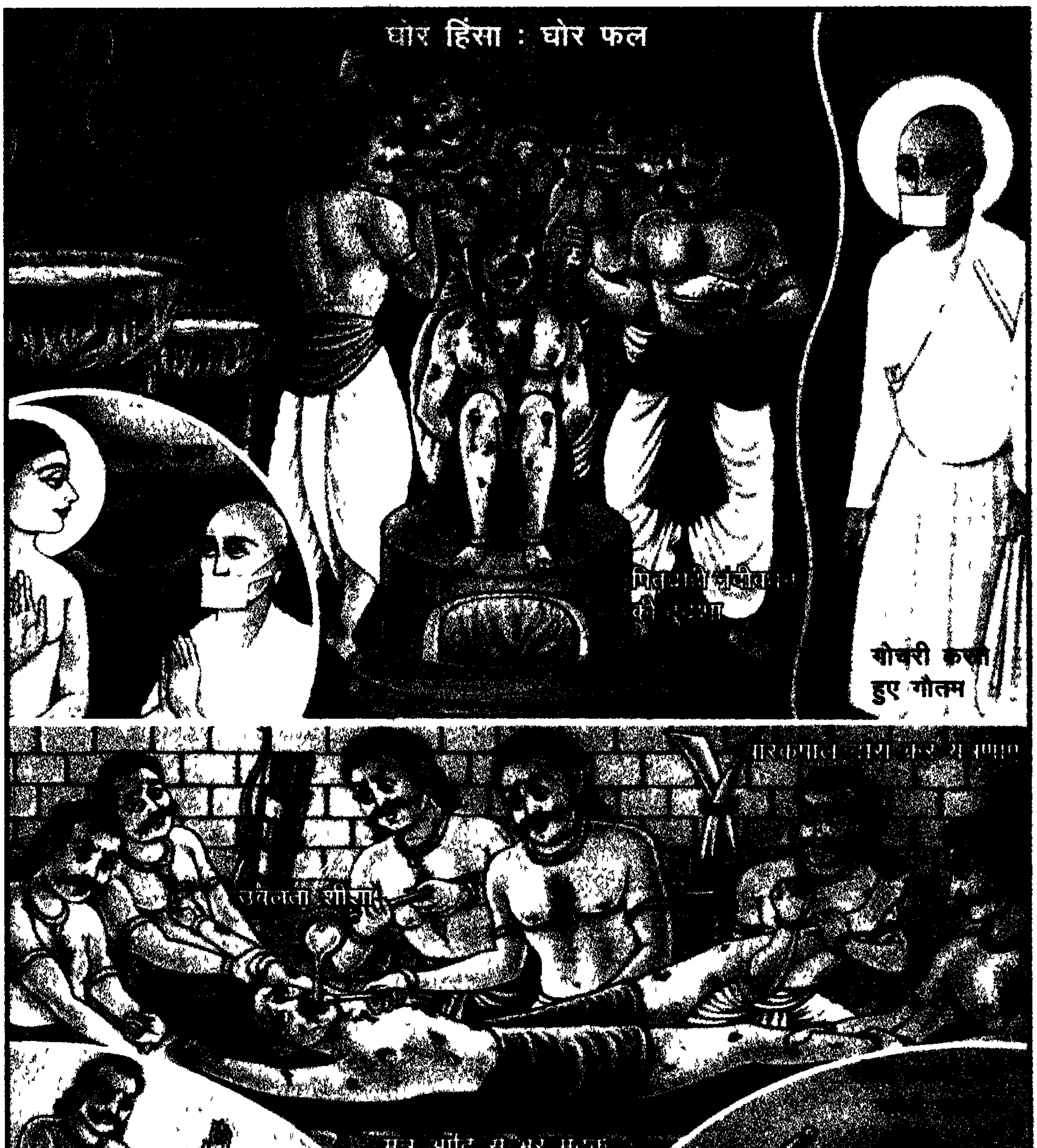
(६) कितनो को वेणुलताओ–बाँस के चाबुको, वृक्षत्वचा के चाबुको आदि से पिटवाता है।

(७) कितनो को सीधा गिराकर उनकी छाती पर शिला व लक्कड रखवा कर राजपुरुषो द्वारा उत्कम्पन–ऊपर–नीचे कराता है कि जिससे हड्डियाँ तड्–तड् कर टूट जायें।

(८) कितनो के चर्मरज्जुओ–चमडे की रस्सियो सूत की रस्सियो से हाथो और पैरो को बँधवाता है, बँधवाकर कुए मे उल्टा लटकवाता है, लटकाकर गोते खिलाता है।

(९) कितनो का असिपत्रो–तलवारो यावत् कलम्बचीरपत्रो से छेदन कराता है और उस पर क्षार मिला तैल डालकर मर्दन कराता है।

(१०) कितनो के मस्तको, कण्ठमणियो, घटियो, कोहनियो, जानुओ तथा गुल्फो–गिट्टो मे लोहे की कीलों को तथा बाँस की शलाकाओ को ठुकवाता है तथा वृश्चिककण्टको–बिच्छु के काँटो को शरीर मे प्रविष्ट कराता है।


घोर हिंसा : घोर फल
गोचरी
हुए गौतम
उबलता शीशा

चित्र परिचय-८

Illustration No. 8

जैसा किया; वैसा पाया

दृश्य–१

मथुरा नगरी मे गोचरी हेतु भ्रमण करते गौतम स्वामी ने नगर चौराहे पर एक दृश्य देखा, एक पुरुष गर्म तपते लोहे के सिहासन पर बैठा है। हाथ-पैर कठोर बन्धनो से बँध है। सिर पर गर्म तवे सी लोहे की पट्टी बँधी है। राजपुरुषो ने उसके कान नाक काट लिए है, शरीर मे गर्म गर्म भालो की नोक चुभो रहे है। गर्म उबलता हुआ ताँबा उसके शरीर पर डाला जा रहा है। वह जोर-जोर से चीख चिल्ला रहा है।

दृश्य–२

इस दयाजनक स्थिति को देखकर गणधर गौतम प्रभु से पूछते है भन्ते ! इसने ऐसा क्या क्रूर कर्म किया था ?

दृश्य–३

भगवान बताते है, पूर्व जन्म मे यह सिहपुर नगर के सिहरथ राजा का दुर्योधन नाम का चारकपाल था। उसके पास बडी-बडी कुण्डियाँ, उबलते ताँबे-सीसे से भरी रहती थी। मिट्टी के घडो मे घोडो, ऊँटो, गायो व मेढो आदि का मूत्र भरा रहता था। जब कभी किसी अपराधी को पकडता तो चार आदमी उसे पकड कर हाथ पैर खीचते। कुछ आदमी गर्म उबलता सीसा, ताँबा, लोहा तथा गो मूत्र आदि उसके मुँह मे डालते। किसी के घुटने आदि सधि स्थानो पर लोहे की कीले ठोक दी जाती, किसी को चमडे की गीली चाबुको से पीटकर लहुलुहान किया जाता। दुर्योधन निर्दयतापूर्वक उनको असह्य यातना देकर तडपा तडपाकर मारता।

इन क्रूर कर्मो के फलस्वरूप वह नरक यातनाएँ भोगता हुआ यहाँ मथुरा के श्रीदाम राजा का पुत्र बना है। यहाँ पर इसने राजलोभ मे आकर अपने पिता की हत्या का षडयन्त्र किया। राजा को षडयत्र का पता चल गया तब उसे पितृद्रोह का यह कठोर दण्ड दिया है। –श्रुतस्कन्ध १ अ ६ सूत्र ६

REAP AS YOU SOW

SCENE-1

While seeking alms in Mathura city Gautam Swami saw a horrifying scene on the crossing A shackled person is sitting on a hot iron seat His head is strapped in hot iron strip Guards have severed his nose and earlobes They are goading his body with hot lances Molten copper is being poured on his body He is shrieking and wailing loudly

SCENE-2

On seeing his pathetic condition Gautam Swami asks—*Bhante* ! What cruel deed he committed ?

SCENE-3

Gautam ! In his past birth he was the jailer of king Simharath of Simhapur He had large pots filled with molten copper and lead He had earthen pots filled with urine of horses, camels, cows, sheep etc Whenever he caught a criminal four guards held the prisoner and stretched his limbs Some guards poured molten metals and urines of animals in his mouth Some criminals he tortured by hammering pegs in their joints, others he got bloodied by thrashing with whips of wet leather Duryodhan killed them after cruelly torturing them As a consequence of these cruel deeds he suffered infernal tortures and was born as the son of king Shridaam of Mathura Coveting for the kingdom he conspired to kill his father The king came to know of it and has sentenced him to this harsh punishment

—*Sec I, Ch 6, Sutra 6*

(११) कितनो के हाथ की अगुलियो तथा पैर की अगुलियो मे मुद्गरो द्वारा सूइयाँ चुभाता है, तथा दम्भनो–दागने के शस्त्रविशेषो को प्रविष्ट कराकर भूमि को खुदवाता है।

(१२) कितनो का शस्त्रो व नेहरनो से अंग छिलवाता है और दर्भो–जड सहितकुशाओ, कुशाओ–जडरहित कुशाओ तथा आर्द्र चर्मो–गीले चमडो द्वारा बँधवाता है। तदनन्तर धूप मे गिराकर उनके सूखने पर इतनी जोर से उखाड लेता था कि–चड–चड शब्द करती हुई चमडी फट जाती थी।

8. That Jailer Duryodhan would get captured, by king's police, different types of criminals including—thieves, adulterers, pick-pockets (*granthibhedak*), king's enemies, defaulters, killers of children, traitors, gamblers, and villains He would then torture them many ways as follows—

(1) Making them lie on their back, face upward (*urdhvamukh*), and opening mouths with iron bars, he would force some of them to swallow molten copper, molten zinc, lead, hot and alkaline or acidic water and oil And some he would force to take bath with these scalding liquids

(2) Making many of them lie on their back, face upward, he would force some of them swallow urine of horses, elephants, and so on up to . sheep.

(3) Making many of them lie on their belly, face downward, he would force some of them to vomit with sounds of 'chhad-chhad' (like sound of a whiplash), and some he would torment by forcing them swallow their own vomit

(4) Many of them he would shackle with wooden hand-cuffs, fetters for feet, wooden shackles (*hadi*), and iron shackles (*nigad*) Some he would torture by squeezing and twisting Some he would tie with iron chains

(5) He would cut off hands of some He would pierce and slit others with different types of weapons

(6) He would get some of them beaten with whips made of bamboo creepers, and so on up to . hemp and other barks

(7) He would get some lie down on their backs and place heavy stone slabs or wooden logs on their chests. Having done that he would make policemen to heave the weights up and down in order to break the bones of the culprits

(8) He would get hands and feet of some tied with ropes made of leather, . and so on up to cotton yarn, suspend them upside down in a well, and dip them in water

(9) He would get many pierced and slit with swords and so on up to and *kadambachirapatra* and get alkaline oil rubbed in.

(10) He would get nails and bamboo pegs hammered in heads, Adam's apples, elbows, knees, and heels of some and get hooks inserted in some

(11) Using small clubs he would get needles and other pointed instruments thrust in the fingers and toes of some and force them to dig earth with these hands and feet

(12) With numerous chisel-like instruments he would get various parts of the bodies of some scraped and get these parts wrapped with *darbh* (grass with roots), *kusha* (grass without roots) and wet leather After that he would prostrate them in sun and pull out the wrappings when dry, in order to make the skin peal off with 'chad-chad' sound

अत्याचार का दुष्परिणाम

९. तए णं से दुज्जोहणे चारगपालए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

९. वह दुर्योधन चारकपाल इस प्रकार की निर्दयतापूर्ण प्रवृत्तियो को अपना कर्म, विशेष ज्ञान व सर्वोत्तम आचरण मानता हुआ अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन कर रहा था। इकतीससौ वर्ष की आयु पूरी करके मृत्यु प्राप्त करके छठे नरक मे उत्कृष्ट २२ सागरोपम की स्थिति वाले नारकियो मे नारक रूप मे उत्पन्न हुआ।

BITTER FRUITS OF TYRANNY

9. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best conduct, Jailer Duryodhan acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance After completing his life-span of three thousand one hundred years, he died and reincarnated in the sixth hell among the infernal beings having a maximum life span of twenty two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

१०. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रन्नो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुतत्ताए उववन्ने। तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाया। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्ते बारसाहे इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति–'होउ णं अम्हं दारगे नंदिसेणे नामेणं'।

तए णं से नंदिसेणे कुमारे पंचधाईपरिवुडे जाव परिवड्ढइ। तए णं नंदिसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ, जोव्वणगमणुप्पत्ते जुवराया जाए यावि होत्था।

तए णं से नंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव अंतेउरे य मुच्छिए इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्तए, सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे, पालेमाणे विहरित्तए। तए णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरइ।

१०. उस दुर्योधन चारकपाल का जीव छट्ठे नरक से निकलकर सीधा इस मथुरा नगरी में श्रीदाम राजा की बन्धुश्री देवी की कुक्षि मे पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ। लगभग नव मास परिपूर्ण होने पर बन्धुश्री ने बालक को जन्म दिया। तत्पश्चात् बारहवे दिन माता-पिता ने नवजात बालक का नन्दिषेण नाम रखा।

पाँच धायमाताओ द्वारा सार-सभाल किया जाता हुआ नन्दिषेण कुमार वृद्धि को प्राप्त होने लगा। जब युवावस्था को प्राप्त हुआ तब युवराज पद से अलकृत भी हो गया।

तत्पश्चात् राज्य और अन्त पुर मे अत्यन्त आसक्त हुआ नदिषेण कुमार श्रीदाम राजा को मारकर स्वयं ही राज्यलक्ष्मी को भोगने एव प्रजा पर शासन करने की इच्छा करने लगा। इसलिए नन्दिषेण कुमार श्रीदाम राजा के अनेक अन्तर-अवसर, छिद्र-जिस समय पारिवारिक व्यक्ति पास नही हो, अथवा विरह-कोई भी पास न हो, राजा अकेला ही हो, ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

10. On leaving the sixth hell, the evil soul of that Jailer Duryodhan was conceived as a son in the womb of Bandhushri, the wife of king Shridaam in this Mathura city. On the twelfth day after his birth the parents named the child as Nandishen

He was brought up under the care of five nursemaids. In due course he crossed adolescence and attained youth and was made the crown prince

Having excessive craving for the kingdom and the harem, prince Nandishen was obsessed with the desire to kill king Shridaam and enjoy the royal wealth and power. Therefore, prince Nandishen got himself involved in seeking an opportunity when king Shridaam was alone, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there

पितृवध का दुःसंकल्प

११. तए णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो अंतरं अलभमाणे अन्नया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमीसु य अंतेउरे य दिन्नवियारे सिरिदामस्स रन्नो अभिक्खणं अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे

विहरसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रन्नो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि। तो णं अहं तुम्हं अद्धरज्जयं करिस्सामि। तुमं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि।'

तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिसेणस्स कुमारस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ।

११. इतने पर भी, श्रीदाम नरेश की हत्या का अवसर प्राप्त नहीं होने से नन्दिषेण कुमार ने किसी अन्य समय चित्र नामक नाई को बुलाकर कहा–देवानुप्रिय ! तुम श्रीदाम नरेश के सर्वस्थानो, सर्वभूमिकाओ में अग्रणी हो, अन्त पुर मे स्वेच्छापूर्वक आ–जा सकते हो (उनके अत्यन्त विश्वासपात्र हो) और श्रीदाम नरेश का बारम्बार क्षौरकर्म करते हो। अत यदि तुम श्रीदाम नरेश के क्षौरकर्म करने के अवसर पर उसकी गर्दन पर उस्तरा चला दो–इस प्रकार यदि तुम्हारे हाथो राजा की मृत्यु हो जाये तो मै तुमको आधा राज्य दे दूँगा। तब तुम भी हमारे साथ मनचाहे श्रेष्ठ कामभोगो का उपभोग करते हुए सानन्द समय व्यतीत कर सकोगे।

चित्र नाई कुमार नन्दिषेण के उक्त कथन को सुनकर चुप रहा।

EVIL IDEA OF KILLING HIS FATHER

11. When he did not get any such opportunity to kill king Shridaam, one day he called Chitra barber and said—"Beloved of gods ! You have unrestricted access at every place, involvement in all activities, and you can visit even the private quarters of the king unchecked and at will (you are his close confidante) You regularly give him haircut and shave As such, if while shaving king Shridaam you cut his throat and consequently the king dies, I will give you half the kingdom Then, along with me, you will also be able to enjoy all the desirable and best of the pleasures and comforts and live happily ever after

Chitra barber remained silent at this statement from prince Nandishen

षड्यंत्र विफल · घोर कदर्थना

१२. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु–मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

'एवं खलु सामी ! नंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव मुच्छिए इच्छइ तुम्हें जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए।'

तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु नंदिसेणं कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता एएणं विहाणेणं आणवेइ।

'तं एवं खलु गोयमा ! नंदिसेणे पुत्ते जाव विहरइ।'

१२. परन्तु कुछ ही समय के बाद चित्र नाई के मन मे यह सन्देह व भय मिश्रित विचार उत्पन्न हुआ कि ''यदि किसी प्रकार से श्रीदाम नरेश को इस षड्यन्त्र का पता लग गया तो न मालूम वे मुझे किस कु-मौत से मारेगे। इस विचार के आते ही वह भयभीत हो उठा और एकान्त मे गुप्त रूप मे महाराज श्रीदाम के पास आया। दोनो हाथ जोडकर विनयपूर्वक इस प्रकार बोला–

'स्वामिन् ! निश्चय ही नन्दिषेण कुमार राज्य लोभ में फँसा राज्य प्राप्त करने को आतुर होकर आपका वध करके स्वयं ही राज्यलक्ष्मी को भोगना चाह रहा है।'

श्रीदाम नरेश ने चित्र अलकारिक से इस बात को सुनकर उस पर विचार किया और अत्यन्त क्रोध मे आकर नन्दिषेण को अपने अनुचरो द्वारा पकडवाकर इस पूर्वोक्त प्रकार से मार डालने का राजपुरुषो को आदेश दिया है।

(भगवान कहते है) 'हे गौतम ! नन्दिषेण कुमार इस प्रकार अपने किये अशुभ पापमय कर्मों के फल को भोग रहा है।

CONSPIRACY FAILS : GRAVE CONSEQUENCES

12. However, a little later Chitra barber was plagued with a doubt and apprehension—"If somehow king Shridaam comes to know of this conspiracy, I do not know what ghastly death he will deal me " Terrified by this thought he furtively went to the king when alone, and joining his palms submitted humbly—

"My lord ! I know it for a fact that, overwhelmed by his greed for the kingdom, prince Nandishen is eager to possess the kingdom and enjoy the royal wealth by killing you."

King Shridaam listened to what the barber said, thought over it, got Nandishen captured by his guards and sentenced him to death as stated above

Gautam ! This way that prince Nandishen is suffering for the sinful deeds he committed in the past.

नन्दिषेण का भविष्य

१३. 'नंदिसेणे कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

'गोयमा ! नंदिसेणे कुमारे सट्ठिवासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए संसारो तहेव।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ। निक्खेवो।

॥ षष्ठम अज्झयणं समत्तं ॥

१३. गौतम स्वामी ने भगवान से पूछा–भगवन् ! नन्दिषेण कुमार मृत्यु के समय यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया–गौतम ! यह नन्दिषेण कुमार साठ वर्ष की परम आयु को भोगकर मृत्यु के समय मर कर रत्नप्रभा नामक प्रथम–नरक मे उत्पन्न होगा। इसका शेष ससार भ्रमण मृगापुत्र के समान समझ लेना यावत् वह पृथ्वीकाय आदि सभी कायो मे लाखो बार जन्म–मरण करता रहेगा।

पृथ्वीकाय से निकलकर हस्तिनापुर नगर मे मत्स्य रूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ मच्छीमारो के द्वारा उसका वध किया जायेगा। फिर वही हस्तिनापुर नगर मे एक श्रेष्ठि कुल मे पुत्ररूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ पर संयम पालन करते हुए मृत्यु प्राप्त कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेगा। वहाँ पर चारित्र ग्रहण करेगा और उसका यथाविधि पालन कर उसके प्रभाव से सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा और परम निर्वाण को प्राप्त कर सर्व प्रकार के दु:खो का अन्त करेगा।

॥ षष्ठ अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF NANDISHEN

12. Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this prince Nandishen go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of sixty years, prince Nandishen will die and will reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha having a maximum life-span of one *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings

Coming out from there he will be born as a fish in Hastinapur city After being killed by fishermen he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city There he will get initiated as an ascetic From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery.

Conclusion should be read as before

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : सप्तम अध्ययन
उम्बरदत्त (हिंसाकर्मी क्रूर वैद्य)

उपोद्घात

उम्बरदत्त नामक इस सप्तम अध्ययन मे पूर्व जन्म कृत घोर हिंसात्मक क्रूरकर्मों का प्रत्यक्ष दुष्परिणाम बताया है। अन्य चरित्रों से इस चरित्र मे एक भिन्न प्रकार की कथा है–

धन्वन्तरी वैद्य, जो अपनी अष्टाग चिकित्सा विधि में इतना कुशल व यशस्वी है कि उसका हाथ लगते ही रोगी नीरोग हो जाते है। यो तो वैद्य का कर्म- एक परोपकार का कर्म है। चिकित्सक अपनी विद्या से जन–जन के कष्टों व पीडाओ का निवारण करके पुण्योपार्जन कर सकता है, परन्तु उसी चिकित्सा कर्म मे जब चिकित्सक, दया व करुणा विहीन होकर प्राणियो की हिंसाकर लोगो को माँस भक्षण व मद्य–सेवन का परामर्श देने लगे, उनकी हिंसा के लिए प्रोत्साहित करने लगे और स्वय भी माँस–मद्य का सेवन कर उसमे आसक्त हो जाये तो वह अपने चिकित्सा धर्म से तो च्युत होता ही है, साथ ही क्रूर हिंसा कर्म करके घोर पापो का उपार्जन भी करता है और जन्म–जन्म तक अनेक जन्मो तक, उसका दुष्फल भोगता रहता है। यही कथ्य इस अध्ययन मे व्यक्त हुआ है।

FIRST SHRUTSKANDH : SEVENTH CHAPTER
UMBARADATT (violent and cruel doctor)

INTRODUCTION

This seventh chapter too informs about the grave consequences and bitter fruits of violent and cruel deeds committed during the past birth However, there is a variation in the theme of this story—

Dhanvantari is a renowned *Vaidya* (an Ayurvedic doctor) who is so proficient in his subject of *Ashtanga Chikitsa* (the eight limbed science of healing) that he cures patients by mere touch. The profession of a *Vaidya* is a profession of beneficence A healer can acquire meritorious *karmas* by removing misery and pain of masses with the help of his knowledge and expertise But devoid of the feelings of altruism and compassion while practicing his profession of healing, when a doctor starts advising his patients to consume meat and alcohol, and encouraging them to indulge in violence besides consuming meat and wine himself, he transgresses the ethics of his profession. Besides this he also acquires highly demeritorious *karmas* through such cruel and violent activity He suffers the grave consequences of the same for many rebirths. This is what has been conveyed in this chapter.

सप्तम अध्ययन
SEVENTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते !' उक्खेवो सत्तमस्स।

१. भगवन् ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने दुःखविपाक के छट्ठे अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो भगवान ने सातवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? (इस प्रकार सप्तम अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् जान लेनी चाहिए।)

FOREWORD

1. The foreword of the seventh chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the sixth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir, what is the text and meaning of the seventh chapter ?)

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे। वणखंडे नामं उज्जाणे। उंबरदत्ते जक्खे। तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया।

तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था, अड्ढे.। गंगदत्ता भारिया, तस्स सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उम्बरदत्ते नामं दारए होत्था–अहीण.।

२. जम्बू ! उस काल उस समय मे पाटलिखड नाम का एक नगर था। वहाँ वनखण्ड नाम का उद्यान था। उस उद्यान मे उम्बरदत्त नामक यक्ष का यक्षायतन था। इस नगर मे सिद्धार्थ नामक राजा राज्य करता था।

पाटलिखण्ड नगर मे सागरदत्त नामक एक धनाढ्य सार्थवाह रहता था। उसकी भार्या का नाम गगदत्ता था। उस सागरदत्त का पुत्र व गगदत्ता भार्या का आत्मज उम्बरदत्त नाम का एक पुत्र था। जो सम्पूर्ण पाँच इन्द्रियो वाला सर्वांग सुन्दर था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Patalikhand Outside this town was a garden named Vanakhand in which was a temple of Umbaradatt Yaksh

In Patalikhand city lived a rich caravan chief (*sarthavaha*) named Sagardatt who had a wife named Gangadatta. Sagardatt and Gangadatta had a perfect and beautiful son named Umbaradatt He was fully endowed, well proportioned and handsome

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ समोसरणं, जाव परिसा पडिगया।

३. उस काल उस समय श्रमण भगवान महावीर वहाँ पधारे। परिषदा दर्शनार्थ आई। धर्मोपदेश सुनकर राजा तथा परिषद् वापिस चले गये।

3. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the city. People came to pay homage *Bhagavan* gave his discourse after which the king and the people returned home

उम्बरदत्त की दुर्दशा

४. तेणं कालेणं तेणं समणेणं भगवं गोयमे, तहेव जेणेव पाडसिलंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तत्थ णं पासइ एगं पुरिसं कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं, भगंदरियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोसिल्लं सुयमूहं सूयहत्थं सडियपायंगुलियं सडियकण्णनासियं रसियाए य पूएण य थिविथिवंतं–वणमुहकिमिउत्तरयंत पगलंत–पूयरुहिरं लालापगलंतकण्णनासं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं, कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूयमाणं, मच्छियाचडगरपहगरेणं अन्निज्जमाणमग्गं, फुट्टहडाहडसीसं दंडिखंडवसणं खंडमल्लय–खंडघडय–हत्थगयं गेहे–गेहे देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासइ।

तया भगवं गोयमे उच्च–नीय–मज्झिम–कुलाइं जाव अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पाडलिसंडाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणेणं अब्भणुन्नाए समाणे जाव बिलमिवपन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

४. उस काल उस समय भगवान गौतम स्वामी षष्ठतप–(बेले) के पारणे के निमित्त (दिन के तीसरे पहर मे) भिक्षा के लिए पाटलिखण्ड नगर मे जाते है। उस पाटलिखण्ड नगर मे पूर्वदिशा के द्वार से प्रवेश करते है। वहाँ एक पुरुष को देखते है, जिसका वर्णन निम्न प्रकार है–

वह पुरुष कण्डू–खुजली के रोग से पीडित था। कोढ, जलोदर, भगन्दर तथा बवासीर रोग से ग्रस्त था। उसे खाँसी, श्वास व सूजन का रोग भी हो रहा था। उसका मुख सूजा हुआ था। हाथ और पैर भी सूजे–फूले हुए थे। हाथ और पैर की अगुलियाँ सडी हुई थी, नाक और कान गले हुए थे। व्रणो (घावो) से निकलते सफेद गन्दे पानी तथा पीव से वह 'थिव थिव' शब्द कर रहा था। (अथवा बिलबिलाते हुए) कृमियो से अत्यन्त ही पीडित था तथा उसके घाव से पीव और रुधिर झर रहा था। उसके कान और नाक क्लेदतन्तुओ–फोडे के बहाव के तारों से गल चुके थे। बारबार वह मुख से पीव के कवलो–ग्रासों का, रुधिर के कवलो का तथा कृमियो के कवलो का वमन कर रहा था। अर्थात् उसके मुख से, कृमियो से भरी पीव–रुधिर की उलटियाँ हो रही थी, जिसमें रुधिर–पीव के कवल प्रमाण गोले निकल रहे थे। वह सुनने मे कष्टोत्पादक, करुणाजनक एव दीनतापूर्ण शब्द बोल रहा था। उसके पीछे–पीछे मक्षिकाओ के झुण्ड के झुण्ड

चले जा रहे थे। उसके सिर के बाल अस्त-व्यस्त थे। उसने थिगली लगे वस्त्रखण्ड धारण कर रखे थे। भिक्षा के लिए फूटे हुए घडे का टुकडा तथा जल के लिए टूटे हुए सिकोरे का टुकडा हाथ में लिए वह घर-घर के सामने भीख माँग रहा था।

इधर भगवान गौतम स्वामी ऊँच, नीच और मध्यम घरो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए और यथेष्ट भिक्षा प्राप्त कर पाटलिखण्ड नगर से निकलकर श्रमण भगवान महावीर के पास आये। आकर ईर्यापथ की आलोचना की और लाया हुआ आहार-पानी भगवान को दिखाया। उनकी आज्ञा मिल जाने पर बिल मे प्रवेश करते हुए सर्प की भाँति-बिना रस लिए ही सहज भावपूर्वक आहार करते है, सयम तथा तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरते हैं।

THE MISERY OF UMBARADATT

4. During that period of time Bhagavan Gautam Swami went into Patalikhand city in the afternoon to seek alms for breaking his two-day fast. He entered the city from the eastern gate There he saw a man described as follows—

He was suffering from *Kandu* or *khaaj* (Eczema) as well as *Kodh* (Leprosy), *Jalodar* (Dropsy), *Bhagandar* (fistula of the anus), and *Bavaseer* (bleeding piles) He was also suffering from diseases like *Khansi* (Bronchitis), *Shvas* (Asthma) and tumescence His face was swollen and so were his hands and legs His fingers, toes, nose and ears were in a state of decay Dirty water and pus was oozing from the pulsating sores on his body He was tormented by slithering worms in his wounds that were dripping blood and pus His nose and ears had decayed into a fibrous ooze He was vomiting and the vomit contained shreds of coagulated pus, blood and worms He was uttering piercing, pathetic, and plaintive sounds and words Swarms of flies were following him His hair were disheveled He was wearing rags Carrying broken pitcher and broken earthen-cup in his extended hands, he was seeking alms from every house.

Seeking and collecting required alms from high, medium, and low caste families Bhagavan Gautam Swami left Patalikhand city and came to Shraman Bhagavan Mahavir After critical review (*pratikraman*) of his movement for alms collection he showed the food to *Bhagavan*. On getting permission, he ate his food without enjoying its taste and only for sustenance, like a snake entering its hole He then spent his time enkindling his soul with discipline and austerities.

५. तए णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं जाव पाडलिसंडं नयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं तहेव जाव संजमेणं तवसा विहरइ।

५. उसके बाद भगवान गौतम ने दूसरी बार बेले के पारणे के निमित्त प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय किया। दूसरे पहर मे ध्यान किया तथा तीसरे पहर मे भिक्षार्थ गमन करते हुए पाटलिखण्ड नगर मे दक्षिण दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी कडू आदि रोगो से युक्त उसी पुरुष को उसी अवस्था मे देखा। वे भिक्षा लेकर वापिस आये। यावत् तप व सयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

5. Then on a second occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami did studies during the first quarter of the day and meditation during the second quarter of the day During the third quarter he moved out and entered Patalikhand city from the southern gate There also he saw the same person suffering from Eczema and other ailments in the same condition. He returned after collecting alms.. and so on up to He then spent his time enkindling his soul with discipline and austerities

६. तए णं से गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ कच्छुल्लं !

६. तत्पश्चात् गौतम स्वामी तीसरी बार बेले के पारणे के निमित्त उसी नगर मे पश्चिम दिशा के द्वार से प्रवेश करते है, तो वहाँ पर भी वे पूर्व मे देखे हुए उसी पुरुष को उसी प्रकार भिक्षा माँगते देखते है।

6. Then on a third occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami entered Patalikhand city from the western gate There also he saw the same person seeking alms in the same condition

पूर्वभव सम्बन्धी पृच्छा

७. भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरेण.।

इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने—'अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव एवं वयासी—एवं खलु अहं, भंते ! छट्ठ. रीयंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडे पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे। तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणं। तए अहं दोच्च छट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं, तहेव। तच्चंपि छट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमेणं, तहेव। तए णं अहं चउत्थं वि छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव विर्त्ति कप्पेमाणे विहरइ। चिंता ममं।' पुव्वभवपुच्छा। वागरेइ।

७. इसी प्रकार भगवान गौतम चौथी बार बेले के पारणे के लिए पाटलिखण्ड मे उत्तरदिशा के द्वार से प्रवेश करते हैं। तब भी उन्होने उसी पुरुष को वहाँ (उसी अवस्था मे) देखा। उसे देखकर मन में यह चिन्तन व विचार उत्पन्न हुआ कि–"अहो ! यह पुरुष अपने पूर्वकृत अशुभ कर्मों के कटु–विपाक को भोगता हुआ अत्यन्त दु खमय जीवन बिता रहा है।" ऐसा सोचकर वापिस आकर उन्होने भगवान से प्रश्न किया–

'भगवन् ! मैने बेले के पारणे के निमित्त पाटलिखण्ड नगर की ओर प्रस्थान किया। नगर मे पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो मैने एक पुरुष को देखा जो कण्डूरोग आदि अनेक रोगो से आक्रान्त था। तथा भिक्षावृत्ति से आजीविका कर रहा था। फिर दूसरी बार पुन षष्ट तप के पारणे के निमित्त भिक्षा के लिए उक्त नगर के दक्षिण दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी उसी पुरुष को उसी रूप मे देखा। तीसरी बार पारणे के निमित्त पश्चिम दिशा के द्वार से प्रवेश किया तो वहाँ पर भी पुन उसी पुरुष को उसी अवस्था मे देखा और जब चौथी बार बेले के पारणे के निमित्त पाटलिखण्ड मे उत्तर दिशा के द्वार से प्रविष्ट हुआ तो वहाँ पर भी कण्डूरोग से ग्रस्त भिक्षावृत्ति करते हुए उसी पुरुष को देखा। उसे देखकर मेरे मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ कि–"अहो ! यह पुरुष अपने पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मों का फल भोग रहा है।" इत्यादि।

प्रभो ! यह पुरुष पूर्वभव मे कौन था ? जो इस प्रकार भीषण रोगो से आक्रान्त हुआ कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है ? भगवान महावीर स्वामी ने तब इस प्रकार उत्तर दिया।

CURIOSITY ABOUT THE PAST BIRTH

7. In the same way on a fourth occasion on the day of breaking his two-day fast Bhagavan Gautam Swami entered Patalikhand city from the northern gate There also he saw the same person seeking alms in the same condition.

Looking at his condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This man leads a miserable life suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired due to evil deeds committed in the past " With these thoughts he returned and asked *Bhagavan*—

"*Bhagavan* I went to Patalikhand city to collect alms I entered the city from the eastern gate and saw a man suffering from Eczema and many other diseases He was living on alms. Then on a second occasion on the day of breaking my two-day fast I entered the city from the southern gate There also I saw the same person in the same condition Then on a third occasion on the day of breaking my fast I entered the city from the western gate and again saw the same person in the same condition Finally on a fourth occasion on the day of breaking my fast I entered the city from the northern gate and once again saw the same person in the same condition On seeing

him I thought 'Oh ! This man leads a miserable life suffering the fruits of sin as a consequence of the sinful *karmas* he acquired in the past ' (etc)

"Bhante ! Who was this person, suffering the agony of such terrible ailments, in his past birth ?" Bhagavan Mahavir replied as follows

पूर्वभव : धन्वन्तरि वैद्य

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रन्नो धन्नंतरी नामं वेज्जे होत्था।

अट्ठंगाउव्वेयपाढए, तं जहा–कुमारभिच्चं सालागे सल्लहत्ते कायतिगिच्छा जंगोले भूयविज्जा रसायणे वाजीकरणे। सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे।

८. गौतम ! उस समय (बहुत पूर्व काल) मे इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारतवर्ष मे विजयपुर नाम का समृद्ध नगर था। उसमे कनकरथ नाम का राजा राज्य करता था। उस कनकरथ राजा का धन्वन्तरि नाम का वैद्य था जो आयुर्वेद के आठो अगो का ज्ञाता था। आयुर्वेद के आठो अगो के नाम इस प्रकार है–

(१) **कौमारभृत्य**–आयुर्वेद का वह अग, जिसमे कुमारो, शिशुओ के पालन, पोषण व रोगो के उपशमन का वर्णन हो।

(२) **शालाक्य**–जिनमे नयन, नाक आदि ऊर्ध्वभागों के रोगो की चिकित्सा का विधान हो।

(३) **शाल्यहत्य**–आयुर्वेद का वह अग, जिसमे शल्य–कण्टक, गोली आदि निकालने की विधि का वर्णन हो।

(४) **कायचिकित्सा**–शरीर सम्बन्धी रोगो की प्रतिक्रिया–इलाज का प्रतिपादक आयुर्वेद का एक अग।

(५) **जांगुल**–आयुर्वेद का वह विभाग जिसमे सभी प्रकार के विषो की चिकित्सा का विधान हो।

(६) **भूतविद्या**–आयुर्वेद का वह भाग जिसमे भूत–निग्रह का तथा उनके शान्ति कर्म का विधान हो।

(७) **रसायन**–आयु को स्थिर रखने वाली व व्याधि–विनाशक औषधियो का विधान करने वाला प्रकरण विशेष।

(८) **बाजीकरण**–बल–वीर्यवर्द्धक औषधियो का विधायक आयुर्वेद का अग।

वह धन्वन्तरि वैद्य **शिवहस्त**–जिसके हाथ से रोगियो की व्याधि शान्त हो जाती थी। **शुभहस्त**–जिसका हाथ शुभ अथवा सुख उपजाने वाला था तथा **लघुहस्त**–जिसका हाथ कुशलता से युक्त शल्य चिकित्सा आदि मे सधा हुआ था।

PAST BIRTH : DHANVANTARI VAIDYA

8. Jambu ! During that period of time there was a prosperous city named Vijayapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. In that

Vijayapur city ruled a king named Kanakarath. King Kanakarath had a *Vaidya* (Ayurvedic doctor) named Dhanvantari who was a scholar of all the eight limbs of Ayurveda (Indian science of medicine and surgery). The names of these eight limbs of Ayurveda are as follows—

(1) **Kaumarabhritya**—The part of Ayurveda that deals with nursing, nutrition and cure of ailments of infants (Paediatrics)

(2) **Shalakya**—The part of Ayurveda that deals with the cure of diseases of eyes, nose and other parts of the upper half of the body

(3) **Shalyahatya**—The part of Ayurveda that deals with the removal of thorns, cysts etc. or surgery.

(4) **Kayachikitsa**—The part of Ayurveda that deals with the symptoms and cure of diseases in general

(5) **Jangul**—The part of Ayurveda that deals with the cure for poisons or toxicity.

(6) **Bhoot-vidya**—The part of Ayurveda that deals with warding off evil spirits and pacifying them.

(7) **Rasayan**—The part of Ayurveda that deals with the elixirs of life and other medicines

(8) **Baajikaran**—The part of Ayurveda that deals with the medicines and tonics for maintaining and toning up sexual performance.

That Dhanvantari Vaidya had a healing touch (*shivahast*). He had a pious and lucky touch (*shubhahast*) He had a skilled touch (*laghuhast*) In other words he cured his patients to their entire satisfaction with his skilled handling and treatment.

९. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रन्नो अंतेउरे य अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य अणाहाण य सणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खुयाण य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य,

अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं उवदेसेइ, अप्पेगइयाणं कच्छपमंसाइं, अत्थेगइयाणं गोहामंसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमंसाइं, अप्पेगइयाणं सुंसुमारमंसाइं, अप्पेगइयाणं वट्टक–लावक–कवोय–कुक्कुड–मयूर–मंसाइं अन्नेसिं च बहूणं जलयर–थलयर–खहयर–माईणं मंसाइं उवदेसेइ।

अप्पणा वि य णं से धन्नंतरी वेज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य अन्नेहि य बहूहिं जलयर–थलयर–खहयर–मंसेहिं य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिए हि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

९. वह धन्वन्तरि वैद्य विजयपुर नगर के महाराज कनकरथ के अन्त पुर मे निवास करने वाली रानियों को तथा अन्य बहुत से राजा, ईश्वर, सार्थवाहो आदि को तथा इसी तरह अन्य बहुत से दुर्बल, ग्लान–मानसिक चिन्ता से ग्रस्त रोगी, व्याधित या बाधित–गर्मी आदि रोगो से पीडित रुग्ण–ज्वरग्रस्त व्यक्तियो को एव सनाथो, अनाथो, श्रमणो, ब्राह्मणो, भिक्षुकों, करोटिको–कापालिको–हाथ मे खोपडी रखने वाले सन्यासी, कार्पटिको–चीवर कन्थाधारी, भिक्षुको अथवा भिखमगो और आतुरो–जिन्हे अन्य वैद्यो ने चिकित्सा के अयोग्य बता दिया है। की चिकित्सा किया करता था।

उनमें से कितनो को मत्स्य माँस खाने का उपदेश देता था, कितनो को कछुओं के माँस का, कितनों को ग्राह–जलचरविशेष के माँस का, कितनो को मगरो के माँस का, कितनो को सुसुमारो के माँस का, कितनो को बकरो के माँस खाने का उपदेश दिया करता था। इसी प्रकार भेडो, गवयों, शूकरो, मृगों, शशको, गौओ और महिषो का माँस खाने का भी उपदेश करता रहता था। कितनो को तित्तरो के मास का तो कितनो को बटेरो, लावको, कबूतरो, कुक्कुटो व मयूरो के माँस का उपदेश देता। इसी भाँति अन्य बहुत से जलचरो, स्थलचरो तथा खेचरो आदि के माँस खाने का उपदेश करता था।

इतना ही नही, वह धन्वन्तरि वैद्य स्वय भी उन अनेकविध मत्स्यमाँसो, मयूर–माँसो तथा अन्य बहुत से जलचर स्थलचर व खेचर जीवो के पकाये हुए, तले हुए, भूने हुए माँसो के साथ पाँच प्रकार की मदिराओं का **आस्वादन**–(थोडा–थोडा रसास्वाद लेना) व **विस्वादन**–(बार–बार या अधिक प्रमाण मे रसास्वाद लेना) **परिभोजन**–(स्वय भोगे तथा दूसरो को भी खिलाये या खूब अधिक मात्रा मे खाता हुआ) एव बार–बार उपभोग करता हुआ समय बिता रहा था।

9. That Dhanvantari Vaidya used to provide treatment to the queens residing in the inner quarters of king Kanakarath's palace. His patients included many kings, rich merchants, and so on up to... caravan chiefs, many other weak, mentally disturbed and ailing persons with or without guardians; *Shramans, Brahmins, Bhikshuks, Karotiks* (*Kapalik* or the mendicants who carried skull), *Karpatiks* (mendicants in rags), beggars, and critically sick persons.

To some of these he prescribed fish-meat, to some tortoise-meat, to some alligator-meat, to some crocodile-meat, to some *sumsumar*-meat, and to some goat-meat. In the same way he also prescribed flesh of sheep, black-bucks, pigs, deer, rabbits, cows, and buffaloes. To many he prescribed meat of partridge, quail (*lavak*), pigeon, hen, and peacock In the same way he advised for flesh from a variety of aquatic, terrestrial, and avian beings

Not only this, that Dhanvantari Vaidya himself spent his time tasting (*asvadan*), eating in larger quantity or enjoying (*visvadan*) and sharing (*paribhojan*) habitually a variety of cooked, fried, and roasted meat of fish, peacocks and so on up to aquatic, terrestrial, and avian beings He did that with five kinds of wines.

१०. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

१०. इस प्रकार वह धन्वन्तरि वैद्य इन्ही पापकर्मों को करता हुआ। इसीप्रकार की विद्या मे निपुण बने और ऐसा ही आचरण बनाये हुए, अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन करके बत्तीस सौ वर्ष की परम आयु को भोगकर काल मास मे काल करके छट्ठी नरकपृथ्वी मे उत्कृष्ट बाईस सागरोपम की स्थिति वाले नारकियो मे नारक रूप से उत्पन्न हुआ।

10. Ever involved in these sinful activities, accepting these activities to be ideal of his life and the best of conduct, Dhanvantari Vaidya acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance After completing his life-span of three thousand two hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell where the maximum life span is twenty two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

सन्तान प्राप्ति के लिए यक्ष–पूजा

११. तए णं सा गंगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था, जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। तए णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने–

'एवं खलु, अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ, कयत्थाओ, कयपुण्णाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धेणं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपंजप्पियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणयाइं मुद्धयाइं पुणो पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए !

अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारं गहाय बहुमित्त–नाइ–नियग

सयण–संबंधि–परियणमहिलाहिं सद्धिं पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्तए। तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करित्ता जन्नुपायवडियाए ओयाइत्तए–

'जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खनिहिं च अणुवड्ढइस्सामि।' त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए।' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु अहं, देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं जाव न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया जाव ओवाइणित्तए।'

तए णं से सागरदत्ते गंगदत्तं भारियं एवं वयासी–'मम पि णं, देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे, कहं तुमं दारगं दारियं वा पयाइज्जसि।' गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ।

११. उस समय सागरदत्त की पत्नी गगदत्ता जो जातनिन्दुका थी, अर्थात् उसके बालक उत्पन्न होने के साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे, एक बार मध्यरात्रि मे कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता मे जागती हुई उस गगदत्ता सार्थवाही के मन मे इस प्रकार का सकल्प उत्पन्न हुआ–"मै बहुत समय से सागरदत्त सार्थवाह के साथ मनुष्य सम्बन्धी कामभोगो का सेवन करती आ रही हूँ परन्तु मुझे आज तक जीवित रहने वाले एक भी बालक अथवा बालिका को अपने उदर से जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ है। वे माताएँ धन्य है तथा वे माताएँ ही कृतार्थ है, पुण्यवान है, उन्ही का वैभव पाना सार्थक है और उन्होने ही मनुष्य सम्बन्धी जन्म और जीवन को सफल किया है, जिनके अपने उदर से उत्पन्न हुए बालक या बालिकाएँ है। जो स्तनगत दूध मे लुब्ध हुए, मधुरवाणी से अव्यक्त तथा तुतलाते वचन बोलते हुए, स्तनमूल प्रदेश से काँख तक अभिसरण करने (मचलकर सरक कर चलने) वाले है, तथा जिन्हे माताएँ कमल के सामन कोमल, सुकुमार हाथो से पकडकर गोद मे बिठाती है। तथा वे शिशु पुन –पुन सुमधुर कोमल–मजुल वचन बोलते रहते है।

वास्तव मे, मै तो अधन्या हूँ, (धिक्कार योग्य हूँ) पुण्यहीन हूँ, मैने पूर्वजन्म मे पुण्योपार्जन नही किया है, क्योकि मै इस प्रकार की इन बालसुलभ चेष्टाओ वाली एक सन्तान को भी प्राप्त न कर सकी। अब मेरे लिए यही श्रेयस्कर है कि मै कल प्रात काल, सूर्य उदय होते ही, सागरदत्त सार्थवाह से पूछकर विविध प्रकार के पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और अलकार लेकर, बहुत से ज्ञातिजनो, मित्रों, निजको, स्वजनो, सम्बन्धीजनो और परिजनो की महिलाओ के साथ पाटलिखण्ड नगर से बाहर उद्यान मे, जहाँ उम्बरदत्त यक्ष का यक्षायतन है, वहाँ जाकर उम्बरदत्त यक्ष की पुष्पार्चना करके और उसके चरणो मे नतमस्तक हो इस प्रकार प्रार्थनापूर्ण याचना करूँ–

'हे देवानुप्रिय ! यदि मै अब जीवित रहने वाले बालिका या बालक को जन्म दूँगी, तो मै तुम्हरे **याग**–देव–पूजा, **दान**–(पर्व दिवसो मे किया जाने वाला दान) **भाग**–(लाभ अश) मन्दिर मे चढावा चढाकर व **अक्षयनिधि**–देव भण्डार (देव द्रव्य) मे वृद्धि करूँगी।' इस प्रकार उपयाचना–ईप्सित वस्तु की प्रार्थना करने

के लिए उसने निश्चय किया। निश्चय करके प्रात.काल सूर्योदय होने के साथ ही जहाँ पर सागरदत्त सार्थवाह था, वहाँ पर आई, आकर सागरदत्त सार्थवाह से इस प्रकार कहने लगी–'हे स्वामिन् ! मैंने आपके साथ सासारिक सुखों का पर्याप्त उपभोग करते हुए आज तक एक भी जीवित रहने वाले बालक या बालिका को प्राप्त नही किया। अत मै चाहती हूँ कि यदि आप आज्ञा दे तो मै अपने मित्रो, ज्ञातिजनो, निजकों, स्वजनो, सम्बन्धीजनो और परिजनों की महिलाओ के साथ पाटलिखण्ड नगर से बाहर उद्यान मे उम्बरदत्त यक्ष की महा मूल्यवान पुष्पार्चना कर पुत्र-प्राप्ति के लिए मनौती मनाऊँ।'

उत्तर मे सागरदत्त सार्थवाह ने कहा–'भद्रे ! मेरी भी यही इच्छा है कि किसी प्रकार से तुम्हारे जीवित रहने वाले पुत्र या पुत्री उत्पन्न हो।' ऐसा कहकर उसने गगदत्ता के उक्त प्रस्ताव का समर्थन करते हुए स्वीकृति प्रदान कर दी।

YAKSH WORSHIP FOR OFFSPRING

11. Gangadatta, the wife of Sagaradatt, was a *jatunandika* (a woman whose offspring die at birth) One day while Gangadatta was thinking about family matters around midnight, an aspiration surfaced—"I have been enjoying my married life with Sagaradatt Sarthavaha However, I have not been lucky enough to have given birth even to a single surviving boy or girl. Fulfilled is the life as humans of those mothers and blessed, fortunate, and meritorious are those mothers who have surviving children born to them Who breast-feed their own children that are eager to suckle, sweetly stutter, and in stupor shift from the base of the breasts toward the armpit, and who have lifted the baby with their lotus-like tender and loving hands, put it in the lap and enjoyed sweet and loving talk with the baby

"I am, indeed, the wretched, ill-fated and unhappy one that has been deprived of any of these pleasures with even a single such offspring. Therefore it would be good for me that tomorrow at dawn after seeking permission from Sagaradatt Sarthavaha and, taking along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members, I go to the temple of Umbaradatt Yaksh in the garden outside Patalikhand city carrying a variety of flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments Arriving there I offer flowers and other things to Umbaradatt Yaksh, bow at his feet, and beg his favour thus—

'Beloved of gods ! If I give birth to a child who survives I will offer worship (*yaag*) and enhance your non-diminishing treasure (*akshayanidhi*) by gifts on auspicious days (*daan*), and share in profit (*bhaag*)' " She resolved thus to pray for the desired boon Acting upon her resolve she went

to Sagaradatt Sarthavaha at dawn and said to him—"My lord ! I have been enjoying my married life with you. However, I have not given birth even to a single surviving boy or girl. Therefore, I want that if you give permission I will take along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members, and go to the temple of Umbaradatt Yaksh in the garden outside Patalikhand city and so on up to... perform highly beneficent flower-worship to get a son as boon"

Sagaradatt Sarthavaha replied—"Lady ! I also desire that somehow you give birth to a surviving son or a daughter." With these words he supported Gangadatta's proposal and gave her permission.

१२. तए णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं पुप्फ वत्थ–गंध–मल्लालंकारं गहाय मित्त जाव महिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पाडलिखडं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता, पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करित्ता जलकीडं करेमाणी ण्हाया कयकोउय–मंगलपायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरणीओ पच्चुत्तरइ पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव उम्बरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उम्बरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेइ, करित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता उम्बरदत्तं जक्खं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खित्ता, पम्हलसुकुमालगंध–कासाइयाए गायलट्ठी ओलूहेइ, ओलूहित्ता सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, परिहित्ता महरिगं पुप्फारुहणं, मल्लारुहणं, गंधारुहणं, चुण्णारुहणं करेइ, करित्ता धूवं डहइ, डहित्ता जन्नुपायवडिया एवं वयइ–'जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारयं दारियं वा पयामि तो णं जाव ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

१२. तब सागरदत्त सार्थवाह की आज्ञा प्राप्त कर वह गगदत्ता विविध प्रकार के पुष्प, वस्त्र, गध, माला एवं अलंकार तथा विविध प्रकार की पूजा की सामग्री लेकर, मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी एव परिजनो की महिलाओं के साथ अपने घर से निकल कर पाटलिखण्ड नगर के मध्य से होती हुई एक पुष्करिणी–बावडी के समीप आई। फिर पुष्करिणी के किनारे पुष्पो, वस्त्रों, गन्धो, मालाओ तथा अलकारो को एक ओर रखकर पुष्करिणी मे प्रवेश किया। वहाँ जलमज्जन (जल मे गोते लगाना) एव जलक्रीडा कर तिलक आदि लगाये, माँगलिक क्रिया करके गीली साडी पहने हुए पुष्करिणी से बाहर आई। बाहर आकर उक्त पुष्पादि पूजासामग्री को लेकर उम्बरदत्त यक्ष के यक्षायतन के पास पहुँची। यक्षप्रतिमा पर नजर पडते ही उसने यक्ष को नमस्कार किया। फिर लोमहस्तक–मयूरपिच्छ लेकर उसके द्वारा यक्षप्रतिमा का प्रमार्जन

किया। फिर जलधारा से उस यक्षप्रतिमा का अभिषेक किया, गेरु जैसे रग से रगे हुए सुगन्धित एव सुकोमल वस्त्र से उसके अंगो को पोछा। पोछकर श्वेत वस्त्र पहनाया, पहिनाकर देवताओ के योग्य बहुमूल्य पुष्पार्पण, वस्त्रार्पण, गन्धार्पण, माल्यार्पण और चूर्णार्पण किया। धूप जलाई। फिर धूप लेकर यक्ष के सन्मुख घुटने टेककर, चरणो मे गिरकर इस प्रकार निवेदन किया–'हे यक्ष देव ! जो मै एक जीवित बालक या बालिका को जन्म दूँ तो आपके याग, दान एव भण्डार की वृद्धि करूँगी।' इस प्रकार याचना करती हुई मान्यता मनाती है। मान्यता मनाकर वापस अपने स्थान को चली आती है।

12. On getting permission from Sagaradatt Sarthavaha, Gangadatta took along numerous kinfolk, friends, near and far relatives and family members and left her house carrying a variety of flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments Crossing Patalikhand city she came near a *pushkarini* (*bavadi*, a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level) She placed the flowers, dresses, perfumes, garlands and ornaments at one side on the bank and entered the *bavadi* After dipping and playing around in the water she performed auspicious rituals like putting mark on her forehead She came out of the *pushkarini* in wet *sari* (Indian female dress) and went to the temple of Umbaradatt Yaksh with flowers and other worship material As soon as she saw the *Yaksh* image she paid homage and cleansed the *Yaksh* image with a peacock feather broom Then she anointed the image with water and wiped it dry with a saffron coloured perfumed soft cloth After that she dressed the image in white garb and offered costly flowers, dresses, perfumes, garlands, incense powders suitable for deities She then burned incense and with her knees on the ground bowed at the feet of the image In this posture she submitted—"O divine *Yaksh* ! If I give birth to a child who survives I will offer worship (*yaag*) and enhance your non-diminishing treasure (*akshayanidhi*) by gifts on auspicious days (*daan*), and share in profit (*bhaag*)" With these words she begged the deity's favour and returned home

१३. तए णं से धन्नंतरी वेज्जे ताओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे पाडलिसंडे नयरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए–'धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव फले, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता बहूहिं मित्त. जाव परिवुडाओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं

च जाइं च सीधुं च पसण्णं च पुप्फं जाव गहाय पाडलिसंडं नयरं मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता ण्हाया जाव कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ, तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्तनाइनियग. जाव सद्धिं आसाएंति, विसायंति परिभाएंति परिभुंजंति दोहलं विणेंति;

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–'धन्नाओ णं ताओ जाव विणेंति, तं इच्छामि णं जाव विणित्तए।'

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाइ।

१३. तदनन्तर वह धन्वतरि वैद्य का जीव नरक से निकलकर इसी पाटलिखण्ड नगर मे गगदत्ता भार्या की कुक्षि मे पुत्ररूप में उत्पन्न हुआ–(गर्भ मे आया) लगभग तीन मास पूर्ण हो जाने पर गगदत्ता भार्या को इस प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ।

"धन्य है वे माताएँ यावत् (पूर्ववत्) उन्होने अपना जन्म और जीवन सफल किया है, जो विपुल अशन, पान आदि तैयार करवाती है और अनेक मित्र, ज्ञाति आदि की महिलाओ से परिवृत होकर पाटलिखण्ड नगर के मध्य मे से निकलकर पुष्करिणी पर जाती हैं। वहाँ पुष्करिणी मे प्रवेश कर जल स्नान करती है तथा मस्तक पर तिलक व अन्य मांगलिक कार्य करके उस विपुल अशनादिक का मित्र, ज्ञातिजन आदि की महिलाओ के साथ आस्वादनादि करती हुई दोहद को पूर्ण करती है।"

इस प्रकार विचार करके प्रात काल देदीप्यमान सूर्य के उदित हो जाने पर सागरदत्त सार्थवाह के पास आती है और आकर सागरदत्त सार्थवाह से (अपने दोहद के सम्बन्ध मे) इस प्रकार कहती है–'स्वामिन् ! वे माताएँ धन्य है जो उक्त प्रकार से अपना दोहद पूर्ण करती है। मै भी अपने दोहद को पूर्ण करना चाहती हूँ।'

तब सागरदत्त सार्थवाह भी दोहद पूर्ति के लिए गगदत्ता भार्या को आज्ञा दे देता है।

13. The soul that was Dhanvantarı Vaıdya, comıng out of the hell, was conceived as a son ın the womb of Gangadatta ın thıs Patalıkhand cıty After three months of pregnancy Gangadatta had a *dohad* (pregnancy-desire)

"Fulfilled ıs the lıfe as humans of those mothers and blessed.. and so on up to . are those mothers who get ample staple food, lıquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) prepared, take along numerous kınfolk, frıends, near and far relatives and famıly members and, crossing Patalikhand cıty, go to a *pushkarını* (*bavadı*; a deep and elaborate masonry tank or well wıth steps down to the water level). They enter the *bavadı*. After dippıng ın the water and performıng auspicious rıtuals like

putting mark on forehead, they enjoy the food they brought along. And thus they fulfill their *dohad*."

Thinking thus, in the morning when the brilliant sun dawned, she came to Sagaradatt Sarthavaha and informed him about her *dohad*—"My lord! Blessed are those mothers who satisfy their pregnancy-desire (*dohad*) (as aforesaid). I also want to satisfy my pregnancy-desire."

Then Sagaradatt Sarthavaha gave permission to wife Gangadatta to satisfy her *dohad*.

दोहद संपूर्ति

१४. तए णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं ४ सुरं च ६ सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं परिगिण्हावेइ परिगिण्हावेत्ता बहूहिं जाव ण्हाया कयबलिकम्मा जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खाययणे जाव धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ।

तए णं ताओ मित्त. जाव महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति। तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्तनाइहिं अन्नाहिं बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं. आसाएमाणे दोहलं विणेइ, विणेत्ता, जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेण परिवहइ।

१४. सागरदत्त सार्थवाह से आज्ञा अनुमति प्राप्त कर गंगदत्ता पर्याप्त मात्रा मे अशनादिक चतुर्विध आहार तैयार करवाती है। तैयार आहार एव विविध प्रकार के मदिरादि पदार्थ तथा बहुत-सी पुष्पादि पूजा सामग्री को लेकर मित्र, ज्ञातिजन आदि की तथा अन्य महिलाओ को साथ लेकर पुष्करिणी में स्नान करती है, मस्तक पर तिलक व अन्य मांगलिक अनुष्ठान करती है, तत्पश्चात् उम्बरदत्त दक्ष के आयतन मे आ जाती है। वहाँ पहले की ही तरह पूजा करती है व धूप जलाती है। तदनन्तर पुष्करिणी पर आ जाती है।

वहाँ पुष्करिणी पर साथ मे आने वाली मित्र, ज्ञाति आदि महिलाएँ गंगदत्ता को सभी प्रकार के अलंकारो से विभूषित करती है, तत्पश्चात् उन मित्रादि महिलाओ तथा अन्य महिलाओ के साथ उस विपुल अशनादि तथा षड्विध सुरा आदि का आस्वादन करती हुई गंगदत्ता अपने दोहद को पूर्ण करती है। इस तरह दोहद को पूर्ण कर वापिस अपने घर आ जाती है। दोहद सम्पन्न होने पर प्रसन्न हुई वह गंगदत्ता उस गर्भ को सुखपूर्वक धारण करती है।

FULFILLMENT OF PREGNANCY-DESIRE

14. On getting permission from Sagaradatt Sarthavaha, Gangadatta gets ample staple food, liquids, general food, and savoury food (*ashan, paan, khadya, svadya*) prepared. She then collects the food so prepared,

wines (etc.), flowers and other things needed for worship. Taking along numerous female kinfolk, friends, (etc.) and many other women she goes to a *pushkarini* (*bavadi*; a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level) and takes a dip. Performing auspicious rituals like putting mark on her forehead, she enters the temple of Umbaradatt Yaksh There she performs worship as before and burns incense Once that is done she returns to the *pushkarini*.

At the *pushkarini* the accompanying ladies embellish Gangadatta with all kinds of ornaments. Then Gangadatta enjoys the food and six kinds of wine they brought along and satisfies her *dohad* She returns home once her *dohad* is satisfied Pleased by the fulfillment of her *dohad*, Gangadatta carries the fetus happily

पुत्र जन्म

१५. तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाया। ठिइवडिया जाव नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए, तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं।' तए णं से उंबरदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए परिवड्ढइ।

१५. नव मास परिपूर्ण हो जाने पर उस गगदत्ता ने एक बालक को जन्म दिया। माता-पिता ने कुल परम्परा के अनुसार पुत्र जन्म सम्बन्धी विशेष उत्सव मनाया। फिर उसका नामकरण-सस्कार किया-'यह बालक क्योकि उम्बरदत्त यक्ष की मान्यता मानने से जन्मा है, अत इसका नाम भी 'उम्बरदत्त' ही हो। इस प्रकार उम्बरदत्त बालक पाँच धायमाताओ की देख-रेख मे वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

BIRTH OF A SON

15. After nine months of pregnancy, that Gangadatta gave birth to a son Following their family tradition, the parents celebrated the birth of their son. Then they performed the naming ceremony—"As this child was born through the favour of Umbaradatt Yaksh he should be named Umbaradatt" And child Umbaradatt began to grow up in care of five nursemaids.

उम्बरदत्त की दुर्दशा

१६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जहा विजयमित्ते कालधम्मुणा संजुत्ते, गंगदत्ता वि। उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए। तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अन्नया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया। तं जहा–सासे, कासे जाव कोढे।

तए णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कच्छुल्ले जाव देहं बलियाए विर्त्तिं कप्पेमाणे विहरइ। 'एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरइ।

१६. कुछ समय पश्चात् सागरदत्त सार्थवाह भी विजयमित्र की ही तरह (समुद्र मे जहाज डूब जाने पर) कालधर्म को प्राप्त हुआ। क्रमश· गगदत्ता भी कालधर्म को प्राप्त हुई। इधर उम्बरदत्त को भी उज्झित कुमार की तरह राजपुरुषो ने घर से निकाल दिया। उसका घर किसी अन्य को सौंप दिया।

(अनाथ–असहाय हुआ उम्बरदत्त भीख माँगकर गुजारा करने लगता है) किसी समय उम्बरदत्त के शरीर मे एक ही साथ सोलह प्रकार के महा रोग उत्पन्न हो गये, जैसे कि, श्वास, कास यावत् कोढ आदि। इन सोलह प्रकार के रोगातको से पीडित हुआ उम्बरदत्त हाथ–पैर आदि अग सड जाने से दु खपूर्ण जीवन बिता रहा है।

भगवान कहते है–"हे गौतम ! उम्बरदत्त बालक अपने पूर्वकृत अशुभ कर्मो का यह भयकर फल भोगता हुआ इस तरह अत्यन्त कष्ट मे समय व्यतीत कर रहा है। जैसा तुमने अभी देखा है।"

KKKK

16. Some time later Sagaradatt Sarthavaha died (like Vijayamitra during a sea voyage) In due course Gangadatta also died Like Ujjhitak Umbaradatt was also expelled from his house by state guards and his house was given to some other person

(Helpless Umbaradatt starts living on alms) At some point of time Umbaradatt was inflicted by sixteen diseases, namely Asthma, Bronchitis, and so on up to. Leprosy Suffering from these sixteen deadly diseases and with decayed limbs Umbaradatt leads a miserable life

Bhagavan added—"Gautam ! This way that young Umbaradatt is biding his time in excruciating pain, suffering horribly for the sinful deeds he committed in the past That is what you just saw"

विवेचन–इस सूत्र के प्राय सभी वर्णनो मे यह एक ही प्रकार की स्थिति बताई जाती है कि माता–पिता की मृत्यु होने पर उसके पुत्र को राजपुरुषो ने घर से निकाल दिया। टीकाकार का अनुमान है, उस समय मे सभवत यह परिस्थिति बनी हो कि सार्थवाह अन्य श्रेष्ठियो से व्यापार के निमित्त कर्जा लेकर व्यापार हेतु समुद्र यात्रा पर गया हो। समुद्र मे जहाज डूब जाने से उसका सब धन नष्ट हो गया। तब अन्य लेनदारो ने अपना धन वसूल करने राजा से पुकार की हो, तब राजा उसका घर सम्पत्ति नीलाम करके उनका धन लौटाने के लिए उसके पुत्र को घर से निकालकर अन्य लोगो की लेनदारी चुकाई जाती हो। इस कारण कर्जदार पिता की सन्तान अनाथ–असहाय होकर घर–घर भीख माँगने लगी।

Elaboration—Almost all stories in this book describe a common situation that the son is expelled from the house by state officials on death of his parents The commentator (*Tika*) surmises that at the time of going on a

sea voyage for trading, the seafarıng merchant must have taken loans from other merchants. When the shıp capsized he lost all hıs merchandıse and wealth. The creditors must have appealed to the king for realization of their dues and the king must have ordered to auctıon the property after expellıng the heırs. Thıs could be the prevalent practıce at that tıme That must have been the reason for the sons of defaulters to go beggıng house to house for lıving

उम्बरदत्त का भविष्य

१७. 'से णं उंबरदत्ते दारए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव जाव पुढवी।

तओ हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ। जायमेत्ते चेव गोट्ठिल्लवहिए तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥

१७. तदनन्तर गौतमस्वामी ने भगवान महावीर से पूछा–भगवन् ! यह उम्बरदत्त काल करके कहाँ जायेगा ? और कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान ने उत्तर दिया–हे गौतम ! उम्बरदत्त बहत्तर वर्ष का परम आयुष्य भोगकर–मरण के समय मृत्यु प्राप्त कर इसी रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक मे नारक रूप से उत्पन्न होगा। वह पूर्ववत् (मृगापुत्र के वर्णन अनुसार) ससार भ्रमण करता हुआ पृथिवी आदि सभी कायो मे लाखो बार उत्पन्न होगा।

वहाँ से निकल कर हस्तिनापुर मे कुर्कुट (मुर्गा) के रूप मे उत्पन्न होगा। वहाँ जन्म लेने के साथ ही कुछ गोष्ठिकों–दुराचारियो द्वारा उसका वध कर दिया जायेगा। तब पुन हस्तिनापुर मे ही एक श्रेष्ठिकुल मे उत्पन्न होगा। वहाँ सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा। वहाँ से मरकर सौधर्म नामक प्रथम कल्प मे जन्म लेगा। वहाँ से च्यवन कर महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होगा। वहाँ अनगार धर्म को प्राप्त कर यथाविधि सयम की आराधना करता हुआ कर्मों का क्षय करके सिद्धि को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–श्रमण भगवान महावीर ने सप्तम अध्ययन का यह अर्थ कहा है।

॥ सप्तम अध्ययन समाप्त ॥

UMBARADATT'S FUTURE

17. Gautam Swamı asked—"*Bhante* ! After hıs death where will thıs Umbaradatt go ? Where will he be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing his life-span of seventy two years, Umbaradatt will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha. From there he will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra.. and so on up to... will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings

Coming out from there, he will be born as a cock in Hastinapur city. After being killed by some evil persons, he will reincarnate as a son in a merchant family of the same Hastinapur city There he will gain righteousness (*samyaktva*). From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok. Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE SEVENTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : अष्टम अध्ययन
शौरिकदत्त (मत्स्य व्यापारी)

उपोद्घात

इस अष्टम अध्ययन मे एक विशेष प्रकार के हिंसक व्यापार तथा उसके कटु फलो का वर्णन है, जो आज के युग में अधिक प्रासगिक है। इस अध्ययन का केन्द्रित विषय मास विक्रय एव मासाहार का कटु फल बताना है। श्रीयक रसोइया, अपने राजा के लिए अनेक प्रकार के पशु–पक्षियो को मारकर, उनकी हिंसा करवा कर तरह–तरह का स्वादिष्ट मासाहारी भोजन बनाता था और स्वय भी करता था। हिंसानुबन्धी इन सस्कारो के प्रभाव से दूसरे भव मे वह शौरिकदत्त नामक मच्छीमार बनता है। शौरिकदत्त बहुत बडा मत्स्य व्यापार करता है। मत्स्यो को पकडने के लिए वह तालाबो व झीलो को भी सुखा देता है, उनका पानी जहरीला कर देता है।

इस प्रकार अनेक प्रकार से बडी क्रूरता के साथ मत्स्य व्यापार करता है और स्वय भी माँसाहार मे गृद्ध हो जाता है। इसका कटु फल वह इस भव मे भी प्रत्यक्ष भोगता है तथा आगे अनेक–अनेक भवो तक उसके कटु फलो को भोगता, दु ख पाता है। इससे यह स्पष्ट होता है, न केवल मासाहार करने वाला, अपितु मासाहार तैयार करने वाला, मास बेचने वाला, मास खिलाने वाला भी उसी प्रकार हिंसा का भागी होता है।

FIRST SHRUTSKANDH : EIGHTH CHAPTER
SHAURIKADATT (the fish merchant)

INTRODUCTION

This eighth chapter describes a particular violent profession and its bitter fruits It is more relevant in modern times The central theme of this chapter is to describe the bitter fruits of sale and consumption of meat Shriyak the cook killed or arranged to get killed a variety of animals and birds and prepared food for his master, the king. He too ate that food As a result of this violence inspiring *karma*-programming he takes rebirth as Shaurikadatt Fisherman He becomes a big fish-merchant In order to catch fish he even poisons and dries ponds and lakes

This way, employing extremely cruel means, he indulges in fish-trading He develops an insatiable craving for non-vegetarian diet. He suffers bitter fruits of this act during this life and continues to suffer miserable consequences for many future births This explicates that not only the meat eater but also the cook, the seller, and the provider of meat is equally responsible for the violence involved

अष्टम अध्ययन
EIGHTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते' अट्ठमस्स उक्खेवो–

१. "भगवन् ! अष्टम अध्ययन का श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ कहा है ?" इस प्रकार उत्क्षेप का कथन पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—*"Bhante* ! What is the text and meaning of the eighth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं नयरं होत्था, सोरियवडिंसगं उज्जाणं सोरियो जक्खो। सोरियदत्ते राया।

२. हे जम्बू ! उस काल तथा उस समय मे शौरिकपुर नाम का नगर था। वहाँ 'शौरिकावतसक' नाम का एक उद्यान था। उसमे शौरिक नाम के यक्ष का यक्षायतन एव शौरिकदत्त नामक राजा वहाँ राज्य करता था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Shaurikapur Outside this town was a garden named Shaurikavatansak, in which was a temple of Shaurik Yaksh In that city ruled a king named Shaurikadatt

शौरिकदत्त का वर्तमान भव

३. तस्स णं सोरियपुरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तत्थ णं एगे मच्छंधपाडए होत्था। तत्थ णं समुद्ददत्ते नामं मच्छंधे परिवसइ। अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। तस्स णं समुद्ददत्तस्स समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे। तस्स णं समुद्ददत्तस्स पुत्ते समुद्ददत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे।

३. उस शौरिकपुर नगर के बाहर ईशानकोण मे मच्छीमारो का एक पाटक–पाडा–(मोहल्ला) था। वहाँ समुद्रदत्त नामक मच्छीमार रहता था। वह महाअधर्मी यावत् दुष्प्रत्यानन्द–पाप कर्मों मे ही आनन्द मानने वाला था। उसकी समुद्रत्ता नाम की भार्या थी। समुद्रदत्त का पुत्र और समुद्रदत्ता भार्या का आत्मज शौरिकदत्त नामक बालक था।

PRESENT LIFE OF SHAURIKADATT

3. There was a settlement of fishermen in the northeastern direction outside Shaurikapur City. A fisherman named Samudradatt lived there. He was irreligious... and so on up to.. enjoyed evil deeds only He had a wife named Samudradatta They had a son named Shaurikadatt whose body was fully and perfectly endowed.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, जाव परिसा पडिगया।

४. उस समय में (शौरिकावतसक उद्यान मे) भगवान् महावीर स्वामी पधारे। परिषद् व राजा धर्मकथा सुनने आये। सुनकर वापिस अपने-अपने स्थान को चले गये।

4. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived (at Shaurikavatansak garden) People and the king came to attend his discourse They returned home after the discourse.

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव सोरियपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमकुले अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छंधवाडगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं एगं पुरिसं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं नीलसाडगनियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं उक्कूवमाणं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमिकवले य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पन्ने-'अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव विहरइ' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। पुव्वभवपुच्छा जाव वागरणं।

५. उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी, षष्ठभक्त के पारणे के अवसर पर शौरिकपुर नगर मे उच्च, नीच तथा मध्यम-सर्व सामान्य घरो मे भिक्षाचरी के लिए भ्रमण करते हुए आवश्यक आहार लेकर शौरिकपुर नगर से बाहर निकलते है। तब उस मच्छीमार मुहल्ले के पास से निकलते हुए उन्होने जनता की भीड के बीच एक ऐसे पुरुष को देखा, जो अत्यन्त भूखा (भूखा), माँसरहित व अतिकृश (अत्यन्त दुर्बल) होने के कारण जिसकी चमडी हड्डियो से चिपटी हुई है, उठते, बैठते हुए जिसकी हड्डियाँ किटिकिटि-कडकड़-शब्द कर रही है, नीली धोती पहने हुए है एवं गले मे मत्स्यकण्टक-मछली का काँटा फँसा होने के कारण कष्टात्मक-(शरीर की पीडा से कराहता हुआ), करुणाजनक-(मनो व्यथा से पूर्ण) एव दीनतापूर्ण आक्रन्दन-(कर्णकटु रुदन) कर रहा है। वह खून के कुल्लो, पीव के कुल्लो और कीडों के कुल्लो का बारम्बार वमन कर रहा था। अर्थात् उसके मुँह से पीव, रुधिर के साथ कुलबुलाते कृमि कीडे निकल रहे थे। उस दीन पुरुष को देख कर गौतम स्वामी के मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ- "अहो ! यह पुरुष अपने पूर्व कृत अशुभकर्मों के फलस्वरूप नरकतुल्य यातना-वेदना भोग रहा है।" इस

प्रकार विचार कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास पहुँचे। भगवान् से उसके पूर्वभव के विषय मे पृच्छा की। भगवान् महावीर उत्तर में इस प्रकार फरमाते है–

5. During that period of time, while returning after collecting alms from houses of high, low and medium castes in Shaurikapur city, for breaking his two-day fast, Bhagavan Gautam, the chief disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, came to the main road (as mentioned earlier) While passing by that settlement of fishermen he saw in the middle of a crowd a hungry, emaciated and lean skeleton-like person clad in blue His bones crackled when he sat or stood up On account of a fish-bone being stuck in his throat he was uttering piercing, pathetic, and plaintive sounds and words. He was vomiting and the vomit contained shreds of coagulated pus, blood and worms. Looking at his pathetic condition Bhagavan Gautam Swami thoughtfully contemplated—"Oh ! This man is suffering infernal agony due to the sinful *karmas* he acquired due to evil deeds committed in the past " With these thoughts he returned and asked Shraman Bhagavan Mahavir about the past birth of that person In reply *Bhagavan* said—

पूर्वभव–कथा : श्रीयक रसोइया

६. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं नयरे होत्था। मित्ते राया। तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरीए नामं महाणसिए होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

६. हे गौतम ! उस (प्राचीन) समय मे इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे नन्दिपुर नाम का नगर था। वहाँ मित्र राजा राज्य करता था। उस मित्र राजा के श्रीयक नाम का एक रसोइया था। वह महाअधर्मी यावत् पापकर्मों मे ही आनन्द मानने वाला था।

PREVIOUS BIRTH : SHRIYAK COOK

6. Gautam ! During that period of time there was a city called Nandipur in Bharatvarsh area in Jambu continent A king named Mitra was the ruler of that city King Mitra had a cook named Shriyak who was irreligious and so on up to.. enjoyed evil deeds only

७. तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया य दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे सण्हमच्छा य जाव पडागाइपडागे य, अए य जाव महिसे य, तित्तिरे य जाव मऊरे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति। अन्ने य से बहवे तित्तिरा य जाव मऊरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति। अन्ने य बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा ते बहवे तित्तिरे य जाव मऊरे य जीवंतए चेव निप्पक्खेंति, निप्पक्खेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति।

७. उस रसोइये के अधीन ऐसे अनेक पुरुष रहते थे, जैसे—**मात्स्यिक**—मच्छीमार, **वागुरिक**—जाल डालकर मृगादि पशुओ को पकडने वाले शिकारी, **शाकुनिक**—पक्षियो को पकडकर लाने वाले, व **श्लक्ष्णमत्स्यो**—कोमल चमडी वाली मछलियो यावत् **पताकातिपताकों**—मत्स्यविशेषो, तथा अजो (बकरो) महिषो एवं तित्तिरो तथा मयूरो का वध करके श्रीयक रसोइये को देते रहते थे। अन्य बहुत से तित्तिर, मयूर आदि पक्षी उसके यहाँ पिंजरो में बन्द किये हुए रहते थे। श्रीयक रसोइया के पास अन्य अनेक रुपया, पैसा, भोजनादि के रूप मे वेतन लेकर काम करने वाले पुरुष भी थे, जो जीवित तित्तरो, मयूरो आदि को पक्ष रहित करके (पख उखाड करके) उसे लाकर दिया करते थे।

7. That Shriyak cook had many assistants including—*matsyiks* (fishermen), *vaguriks* (animal trappers), and *shakuniks* (bird catchers). They used to kill small and soft as well as larger fish, goats .. and so on up to. buffaloes, and partridges. and so on up to. peacocks and bring them to Shriyak cook Many more partridges and so on up to . peacocks were kept in cages Shriyak cook also had many other employees, working on wages and food, who used to pluck out feathers of live partridges.. and so on up to peacocks and give him the bare bodies

८. तए णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर—थलयर—खहयराणं मंसाइं कप्पणिकप्पियाइं करेइ, तं जहा—सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि य रहस्सखंडियाणि य हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य वेगपक्काणि घम्मपक्काणि य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता,

अन्ने य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव मयूररसए य, अन्नं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रन्नो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति।

अप्पणा वि य णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जाव जलयर—थलयर—खहयरमंसेहिं रसएहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववन्ने।

८. तत्पश्चात् वह श्रीयक रसोइया अनेक जलचर, स्थलचर व खेचर जीवो के माँसो को लेकर सूक्ष्म खण्ड—(छोटे टुकडे) वृत्त—(गोल) खण्ड, दीर्घ—(लम्बे) खण्ड, तथा ह्रस्व—(छोटे, छोटे) खण्ड किया करता था। उन खण्डो मे से कई एक को बर्फ से पकाता था, कई एक को अलग रख देता जिससे वे खण्ड स्वत

अपने आप ही पक जाते थे, कई एक को धूप की गर्मी से व कई एक को हवा (भाप) के द्वारा पकाता था। कई एक को कृष्ण वर्ण वाले तो कई एक को हिंगुल के जैसे लाल वर्ण वाले किया करता था। वह उन खण्डो को छाछ से संस्कारित करता, आँवले के रस से भावित करता, द्राक्षारस, कपित्थ तथा अनार के रस से भी सस्कारित करता था एव मत्स्यरसो से भी भावित किया करता था। तदनन्तर उन माँसखण्डो में से कई एक को तैल से तलता, कई एक को आग पर भूनता तथा कई एक को शूलाप्रोत-शूल में पिरोकर पकाता था।

इसी प्रकार मत्स्यमाँसो के रसो को, मृगमाँसो के रसो को, तित्तिरमाँसों के रसो को यावत् मयूरमाँसो के रसो को तथा अन्य बहुत से हरे शाको को तैयार करता था, तैयार करके (सजाकर) मित्र राजा के भोजनमण्डप मे ले जाकर भोजन के समय उन्हे प्रस्तुत करता था। श्रीयक रसोइया स्वय भी अनेक जलचर, स्थलचर एव खेचर जीवों के माँसो, रसो को हरे शाको के साथ, जो कि शूलपक्व होते, तले हुए होते, भूने हुए होते थे, छह प्रकार की सुरा आदि का आस्वादन करता रहता था।

रात-दिन इस प्रकार के कर्मों को करने वाला, इन्ही कर्मों मे अपनी प्रधानता, श्रेष्ठता रखने वाला, इन्ही मे विशेषज्ञता रखने वाला, तथा इन्ही पापो को सर्वोत्तम आचरण मानने वाला वह रसोइया अत्यधिक पापकर्मों का उपार्जन कर तेत्तीस सौ वर्ष की परम आयु को भोग कर मृत्यु काल मे मृत्यु प्राप्त करके छट्ठे नरक मे उत्पन्न हुआ।

8. Then that Shriyak cook used to chop the meat of numerous terrestrial, aquatic, and avian beings into small pieces, round pieces, long pieces, and short pieces Some of these he cooked with ice, some he just stored separately to get seasoned naturally, some he left in the sun, and some he cooked in hot air or steam Some of these pieces he cooked black and others brown Some of these pieces he seasoned with buttermilk, some with hog-plum juice, some with grape juice, some with wood-apple juice, some with pomegranate juice, and some with fish juice After this he fried some in oil, roasted some in fire, and grilled some on sticks (*shulaprot*)

In the same way he also prepared soups from meat of fish, deer, partridge, and so on up to . peacock. He also prepared salad of a variety of vegetables. After arranging all these dishes properly he took them to the dining place of king Mitra and offered to the king. Shriyak cook too frequently enjoyed the so cooked, roasted and grilled meat and soup of numerous terrestrial, aquatic, and avian beings with vegetables and six kinds of wine

That Shriyak cook was ever involved in these sinful activities These activities had become his way and ideal of life and he had accepted all these

sinful activities to be the best conduct As a consequence he acquired extremely malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of thirty three hundred years he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell.

शौरिकदत्त का जन्म

९. तए णं सा समुद्दत्ता भारिया जायनिंदुयावि होत्था। जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति। जहा गंगदत्ताए चिंता, आपुच्छणा, ओवाइयं दोहला जाव दारगं पयाया, जाव 'जम्हा णं अम्हे इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धे, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं। तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाई जाव उम्मुक्कबालभावे विन्नयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमुणप्पत्ते यावि होत्था।

९. वह समुद्रदत्ता (मच्छीमार की पत्नी) मृतवत्सा थी। उसके बालक जन्म लेने के साथ ही मर जाया करते थे। उसने गंगदत्ता की ही तरह रात मे कुटुम्ब जागरणा करते हुए विचार किया। पति की आज्ञा लेकर शौरिक यक्ष की मान्यता मनाई और गर्भवती हुई। दोहद की पूर्ति कर समुद्रदत्त बालक को जन्म दिया। "शौरिक यक्ष की मनौती मनाने के कारण हमें यह बालक उपलब्ध हुआ है' ऐसा कहकर माता-पिता ने उसका नाम 'शौरिकदत्त' रखा। वह शौरिकदत्त पाँच धायमाताओ की देख-रेख मे बाल्यावस्था को पार कर तथा बुद्धि की परिपक्व अवस्था से सम्पन्न हो युवावस्था को प्राप्त हुआ।

BIRTH OF SHAURIKADATT

9. Samudradatta (wife of the fisherman) was a *jatunandika* Her offspring died at birth Like Gangadatta, she also had an idea while thinking about family matters around midnight After seeking permission from her husband she sought boon from Shaurik Yaksh and got pregnant. After satisfying her *dohad* (pregnancy-desire) she gave birth to a son In due course the parents named the child—"As this child was born as a favour by Shaurik Yaksh he should be named Shaurikadatt" And child Shaurikadatt began to grow up in care of five nursemaids Crossing his adolescence he attained youth and maturity

१०. तए णं से समुद्दत्ते अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। तए णं से सोरियदत्ते बहूहिं मित्त-नाइ रोयमाणे समुद्दत्तस्स नीहरणं करेइ, लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ। अन्नया कयाइ सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से सोरियदारए मच्छंधे जाए, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

१०. तदनन्तर किसी समय समुद्रदत्त कालधर्म को प्राप्त हो गया। रुदन आक्रन्दन व विलाप करते हुए शौरिकदत्त ने अनेक मित्र-ज्ञाति-स्वजन परिजनो के साथ समुद्रदत्त की अर्थी निकाल कर श्मशान ले गये;

वहाँ दाहकर्म व अन्य लौकिक क्रियाएँ की। इसके बाद किसी समय वह स्वय ही मच्छीमारो का मुखिया बन गया। अब वह मच्छीमार हो गया जो महा अधर्मी यावत् दुष्प्रत्यानन्द था।

10. Some tıme later Samudradatt Fısherman dıed Cryıng, wailıng and weepıng Shaurıkadatt took the dead body to crematıon ground ın a funeral processıon joıned by many frıends, kınfolk, and famıly members There last rıtes and other formal rıtuals were performed. After thıs Shaurıkadatt became the chıef of the fishermen Now he was a fisherman who had become ırrelıgıous and so on up to enjoyed evıl deeds only

शौरिकदत्त का हिंसक व्यवसाय

११. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं एगट्ठियाहिं जउणं महाणइं ओगाहेति, ओगाहित्ता बहूहिं दहगालणेहि य दहमलणेहि य दहमद्दणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य अयंचुलेहि य पंचपुलेहि य मच्छंधलेहि य मच्छपुच्छेहि य जंभाहि य तिसिराहि य भिसिराहि य धिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य झिल्लिरीहि य लल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य वक्कबंधेहि य सुत्तबंधणेहि य वालबंधणेहि य बहवे सण्हमच्छे जाव पडागाइपडागे य गिण्हंति,

गेण्हित्ता एगट्ठियाओ भरेति, भरित्ता कूलं गाहेति, गाहित्ता मच्छखलए करेंति, करित्ता आयवंसि दलयंति। अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा आयव–तत्तएहिं मच्छेहि सोल्लेहि य तलिएहि ए भज्जिएहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। अप्पणा वि य णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य भज्जिएहि य तलिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

११. शौरिकदत्त मच्छीमार ने पैसा और भोजनादि का वेतन लेकर काम करने वाले अनेक वेतनभोगी पुरुष रखे थे, जो छोटी–छोटी नौकाओ द्वारा यमुना महानदी मे प्रवेश करते, घूमते, ह्रद–गलन, ह्रद–मलन, ह्रद–मर्दन, ह्रद–मन्थन, ह्रद–वहन, ह्रद–प्रवहन–(अर्थात् जलाशय या झील मे मछली आदि जीवो को पकडने के लिए चक्कर लगाकर सरोवर मे से जल को निकालना या थूहर आदि का दूध डालकर जल को दूषित करना, जल का विलोडन करना जिससे भयभीत व स्थानभ्रष्ट मत्स्यादि सरलता से पकडे जा सके आदि विविध क्रियाओ से) तथा प्रपचुल, प्रपपुल, मत्स्यपुच्छ, जृम्भा, त्रिसरा, भिसरा, विसरा, द्विसरा, हिल्लिरि, झिल्लिरि, लल्लिरि, जाल, गल, कूटपाश, वल्कबन्ध, सूत्रबन्ध और बालबन्ध–(ये सब मत्स्यादिको को पकडने के विविध साधन–उपकरणो के नाम है) आदि के द्वारा कोमल चमडी वाले मत्स्यो यावत् पताकातिपताक नामक मत्स्यो को पकडते, पकडकर उनसे नौकाएँ भरते है। भरकर नदी के किनारे पर लाते है, लाकर बाहर एक स्थल पर ढेर लगा देते है। तत्पश्चात् उनको वहाँ धूप मे सूखने के लिए रख देते है।

इसी प्रकार उसके अन्य वेतनभोगी पुरुष धूप से सूखे हुए इन मत्स्यों के माँसों को शूलाप्रोत कर पकाते, तलते और भूनते तथा उन्हें राजमार्गों मे विक्रयार्थ रखकर आजीविका करते थे। शौरिकदत्त स्वय भी उन शूलाप्रोत किये हुए, भुने हुए और तले हुए मत्स्य माँसों के साथ विविध प्रकार की सुरा, सीधु आदि मदिराओं का सेवन करता रहता था।

THE VIOLENT PROFESSION OF SHAURIKADATT

11. That Shriyak cook had employed many assistants, working on wages and food, who used to enter the great river Yamuna in small boats They used to move around and scoop (*hrid-galan*), contaminate (*hrid-malan*), agitate (*hrid-mardan*), churn (*hrid-manthan*), drain (*hrid-vahan*) and discharge (*hrid-pravahan*) the river water in order to terrify and displace fish to facilitate hauling the same. Besides this they used a variety of means and equipment including *prapanchul, prapampul, matsyapuchchha jrimbha, trisara, bhisara, visara, dvisara, hilliri, jhilliri, lalliri, jaal, gal, kootapash, valkal-bandh, sutra-bandh,* and *baal-bandh* (these are names of different types and designs of fishing nets) Thus they caught small and soft and so on up to . large and stout fish and filled their boats With the haul they returned to the river-bank, unloaded it in a heap, and left it to dry in the sun

Many other employees, working on wages and food, fried, roasted, and grilled this sun-dried fish-meat in order to earn their living by selling the same on roadside Shaurikadatt too frequently enjoyed the cooked roasted and grilled fish-meat with six kinds of wine

क्रूर कर्मों का कठोर दण्ड

१२. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स अन्नया कयाइ ते मच्छसोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे यावि होत्था। तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु य महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकंटे गले लग्गे। तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियमच्छियस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसेंति।

१२. किसी अन्य समय उन शूल द्वारा पकाये गये, तले गये व भूने गये मत्स्य-माँसों का आहार करते समय उस सौरिकदत्त मच्छीमार के गले मे मत्स्य का काँटा फँस गया। इसके कारण वह असाध्य असह्य

वेदना का अनुभव करने लगा। अत्यन्त दु खी हुए शौरिक ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर कहा–'देवानुप्रियो ! शौरिकपुर नगर के चौराहे–तिराहे आदि मार्गों व सामान्य मार्गों पर जाकर ऊँचे शब्दो से इस प्रकार उद्घोषणा करो कि–देवानुप्रियो ! शौरिकदत्त के गले मे मत्स्य–कटक–मछली का काँटा फँस गया है, यदि कोई वैद्य या वैद्यपुत्र इस उपाय का जानकार या जानकार का पुत्र, चिकित्सक या चिकित्सकपुत्र उस मत्स्य–कटक को निकाल देगा तो, शौरिकदत्त उसे बहुत–सा मुँह माँगा धन देगा।'' कौटुम्बिक पुरुषो–अनुचरो ने उसकी आज्ञानुसार सारे नगर मे उद्घोषणा कर दी।

HARSH PUNISHMENT FOR EVIL DEEDS

12. At a certain time while eating the cooked roasted and grilled fish-meat, a fish bone got stuck in Shaurikadatt Fisherman's throat causing excruciating pain to him Tormented by this, Shaurikadatt called his servants and instructed, "Beloved of gods ! Go and make this announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in Shaurikapur City—'O Beloved of gods ! Shaurikadatt has a fish bone stuck in his throat Any *Vaidya* (qualified Ayurvedic doctor) and junior *Vaidya*, senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), and senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to remove this fish bone will be amply and richly rewarded by Shaurikadatt' The servants made the announcement as told

१३. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता या जाणुया या जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता या इमेयारूवं उग्घोसणं उग्घोसिज्जमाणं निसामेंति, निसामित्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे, जेणेव सोरियमच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणा परिणामेमाणा वमणेहि य सड्डणेहि य, ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणे हि विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियमच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए। नो चेव णं संचाएंति नीहरित्तए वा। तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता या जाणुया या जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तिए, ताहे संता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियारनिव्विण्णे तेणं महया दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के जाव विहरइ। एवं खलु गोयमा ! सोरिए पुरापोराणाणं जाव विहरइ।

१३. तब बहुत से वैद्य, वैद्यपुत्र आदि उपर्युक्त उद्घोषणा को सुनते है और सुनकर शौरिकदत्त का जहाँ घर था और जहाँ पर शौरिक मच्छीमार रहता था वहाँ पर आते हैं। आकर बहुत–सी औत्पत्तिकी



शौरिकदत्त का पूर्वभव
मांसाहारी की रसोई
पशु पक्षी मत्स्य मार लाते कर्मचारी
तालाब से मछलियाँ
नाव में भरी मछलियाँ
धूप में सूखती मछलियाँ
शौरिकदत्त
असाध्य रोग पीड़ित शौरिक की वैद्यों से प्रार्थना
संसार परिभ्रमण
नरक तिर्यंच गति में भ्रमण
विकलेन्द्रिय में भ्रमण

चित्र परिचय-९

Illustration No. 9

शौरिकदत्त के कष्टों की कहानी

दृश्य—१

सोरियपुर मे गौतम गणधर ने एक ऐसे दीन पुरुष को देखा, जो शरीर मे सूखा कॉटा जैसा दुर्बल, क्षीण था। और जोर-जोर से बडी आर्त पुकार कर रहा था। गौतम स्वामी के पूछने पर भगवान ने बताया–पूर्वजन्म मे यह श्रीयक नामक राजा का रसोइया था। राजा को नित्य मत्स्य–मॉस का स्वादिष्ट भोजन देने के लिए उसने अनेक नौकरो को पशु पक्षियो को पकडकर लाने, मछलियॉ लाने आदि का काम सौप रखा था।

दृश्य—२

हिसाकर्मी श्रीयक इस नगर मे शौरिकदत्त नामक मत्स्य व्यापारी बना। तालाबो से मछलियॉ पकडने के लिए वह जाल डालता। तालाबो के पानी मे थूहर का दूध डालकर मछलियो को बाहर भागने पर मजबूर करता। फिर उन्हे पकडकर सुखाता छाबडियो मे भर भरकर बेचता। वह स्वय भी उनको तल भूनकर खाता था।

दृश्य—३

एक बार शौरिकदत्त के गले मे मछली का कांटा फँस गया। उस कारण वह अत्यन्त पीडा भुगतने लगा। कोई भी वेद्य उसका कॉटा नही निकाल सका। पीडा से पीडित वही शौरिकदत्त अब चौराहे पर पडा है जिसे तुमने देखा है।

दृश्य—४

उसका भावी जीवन बताते हुए भगवान ने कहा यह निगाद मे, विकलेन्द्रिया मे फिर नरक-पशु पक्षी, जलचर आदि गतियो मे भ्रमण करेगा। *श्रुतस्कन्ध १ अ ८ सू ७ ८*

THE STORY OF SHAURIKADATT'S PAIN

SCENE-1

In Shaurikpur Gautam Swami saw a person who was lean, weak and emaciated and was shrieking and wailing loudly On being asked *Bhagavan* informed—In his last birth he was Shriyak, the royal cook To offer tasty dishes of fish and meat he had appointed many servants to haul fish and catch animals and birds

SCENE-2

Cruel Shriyak reincarnated as Shaurikdatt, the fish trader He would throw nets in lakes to catch fish He would poison the water of lakes for the same purpose He would then dry and fill fish in baskets for selling He ate them too after frying and roasting

SCENE-3

Once a fish bone got stuck in Shaurikdatt's throat He suffered excruciating pain due to that No doctor could remove that bone from his throat Suffering this agony that Shaurikdatt lies on the crossing, as you have seen

SCENE-4

Telling about his future *Bhagavan* said—He will go through cycles of rebirth and be born millions of times in all hells, as all animals, and as all one sensed beings

—*Sec I Ch 8, Sutra 7-8*

बुद्धि (स्वाभाविक प्रतिभा), वैनयिकी, कार्मिकी तथा पारिणामिकी बुद्धियो से (निदान आदि को समझते हुए) वमनो, छर्दनो–(वमन कराना), अवपीडनो–(दबाना) कवलग्राहो (मुख की मालिश करने के लिए दाढो के नीचे लकडी का टुकडा रखना) शल्योद्धारो–(यन्त्र–प्रयोग से काँटो को निकालना) विशल्य–करणो–(औषध द्वारा काँटा निकालना) आदि विविध उपचारो से शौरिकदत्त के गले में से काँटे को निकालने का तथा पीडा को बन्द करने का भरसक प्रयत्न करते है, परन्तु उसमे वे सफल नही हो सके अर्थात् शौरिकदत्त के गले का काँटा निकाला नहीं जा सका, और नही पीव व रुधिर बन्द हो सका। तब वे थके–हारे निराश व उदास होकर वापिस अपने–अपने स्थान पर चले गये।

इस तरह वैद्यो के इलाज से निराश हुआ शौरिकदत्त उस असह्य प्राणातक वेदना को भोगता हुआ सूखकर अस्थिपिंजर मात्र शेष रह गया। वह दु खपूर्वक समय बिता रहा है।

भगवान् फरमाते है कि–हे गौतम ! इस प्रकार वह शौरिकदत्त (जिसको तुमने देखा है) अपने पूर्वकृत अत्यन्त अशुभ कर्मों का फल भोग रहा है।

13. Hearing and understanding this announcement many healers (etc) came to the residence of Shaurikadatt They did the diagnosis by employing their four kinds of wisdom, namely—*autpattiki buddhi* (intuitive wisdom), *vainayiki buddhi* (acquired wisdom), *karmaja buddhi* (practical wisdom), and *parinamiki buddhi* (deductive wisdom) Then they tried their best to give relief to Shaurikadatt by making efforts to remove the fish bone by using various procedures, such as—making him vomit, by giving him expectorants (*chhardan*), by giving massage or compression (*avapidan*), by placing wooden pieces between molars to force open the mouth (*kavalagraha*), by using surgical instruments (*shalyoddhar*), and by applying medicines But they failed to remove the fish bone from Shaurikadatt's throat and stop the flow of blood and pus When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came

Disappointed with the treatment given by the healers and suffering excruciating and intolerable pain, Shaurikadatt has become emaciated and has been reduced to a mere skeleton He spends his time in misery.

Bhagavan added—"Gautam ! Thus that Shaurikadatt is suffering (as you have seen) the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past "

शौरिकदत्त का भविष्य

१४. 'सोरिए णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?'

गोयमा ! सत्तरिवासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए। संसारो तहेव, जाव पुढवीए। तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ, बोही, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ अष्टम अज्झयणं समत्तं ॥

१५. गौतम स्वामी ने पूछा–भते ! शौरिकदत्त मच्छीमार यहाँ से काल करके कहाँ जायेगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान् ने उत्तर दिया–गौतम ! वह सत्तर वर्ष की परम आयु को भोगकर मृत्यु आने पर मरकर रत्नप्रभा नामक प्रथम नरक मे उत्पन्न होगा। उसका शेष ससार–भ्रमण पूर्ववत् पूर्व अध्ययनो की तरह समझ लेना चाहिए। वह पृथ्वीकाय आदि मे लाखो बार उत्पन्न होगा। वहाँ से निकलकर हस्तिनापुर मे मत्स्य होगा। वहाँ मच्छीमारो के द्वारा मारा जाकर वही हस्तिनापुर मे एक श्रेष्ठिकुल मे जन्म लेगा। वहाँ उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी। वहाँ से मरकर सौधर्म देवलोक मे देव होगा। वहाँ से च्यव कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्मेगा, चारित्र ग्रहण कर उसकी सम्यक् आराधना करके सिद्ध पद को प्राप्त करेगा।

उपसहार पिछले अध्ययन के समान समझे।

॥ अष्टम अध्ययन समाप्त ॥

THE FUTURE OF SHAURIKADATT

14. Gautam Swamı asked—"*Bhante* ! After hıs death where wıll thıs Shaurıkadatt Fısherman go ? Where wıll he be reborn ?"

Bhagavan replıed—Gautam ! After completıng hıs lıfe-span of seventy years, Shaurıkadatt Fısherman wıll dıe at the destıned tıme of hıs death and wıll reincarnate as an ınfernal beıng ın the first hell named Ratnaprabha havıng a maxımum lıfe-span of one *Sagaropam* From there he wıll follow the cycles of rebırths as mentıoned ın the first chapter ın context of Mrıgaputra and so on up to wıll be born mıllıons of tımes ın all hells, as all anımals, and as all one sensed beıngs Comıng out from there he wıll be born as a fish ın Hastınapur cıty After beıng kılled by fishermen he wıll reıncarnate as a son ın a merchant famıly of the same Hastınapur cıty There he wıll gaın rıghteousness (*samyaktva*) and get ınıtıated as an ascetıc From there he wıll reıncarnate ın the first heaven named Saudharm Devlok Descendıng from there he wıll take bırth ın Mahavideh area and follow ascetıc conduct ımmaculately At last he wıll get enlıghtened and attaın the status of *Sıddha*, sheddıng all hıs *karmas* and endıng all mısery

Conclusıon should be read as before

● END OF THE EIGHTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : नवम अध्ययन
देवदत्ता (एक निर्दय नारी)

उपोद्घात

इस नवम अध्ययन मे एक निर्दय नारी की दिल दहला देने वाली कथा है। पिछले अध्ययनो मे पशु–पक्षियो–मत्स्य आदि की क्रूर हिंसा करने वाले कठोर हृदय पुरुषो का चरित्र बताया है, किन्तु इसमे एक ऐसा चरित्र है, जो नारी होकर, नारी की बहू होकर अपनी सास की क्रूर हत्या करती है। पूर्वजन्म मे उसका जीव सिहसेन राजा था, वह अपनी प्रमुख रानी के उकसाने–बहकाने पर चार सौ सोतो की माताओ को बुलाकर धोखे से उन्हे एक कूटाकारशाला मे बन्दकर रात मे सोये हुए आग लगाकर उन्हे जला देता है, इतना क्रूर निर्दय कर्म करने वाला निर्दयता के सस्कार लिए मरकर देवदत्ता नामकी कन्या बनता है। देवदत्ता ने शारीरिक सुन्दरता तो पायी, परन्तु मन उसका अत्यन्त मलिन–कुरूप–बीभत्स था। अपने स्वतंत्र सुख–भोग के लिए उसने मातृभक्त पति की मासूम माता को अत्यन्त निर्दयता पूर्वक मार डाला।

इन क्रूर कर्मो के कटु विपाक बताने वाला यह वर्णन सुनते–पढते ही रोम–रोम काँप उठता है और हिसा से मन मे सहज ग्लानि होने लगती है।

FIRST SHRUTSKANDH : NINTH CHAPTER
DEVADATTA (a cruel woman)

INTRODUCTION

This ninth chapter contains the horrifying story of a cruel woman. The preceding chapter contained the description of a callous male characters who killed and tortured animals, birds, and fish, but this chapter describes a female character who mercilessly kills her own mother-in-law. In her earlier birth she was king Simhasen, a male Instigated by his chief queen he imprisons the mothers of his other four hundred wives in a camouflaged house through deception and then burns them alive while they were asleep The perpetrator of such cruel deed dies with cruel attitude and reincarnates as girl Devadatta Although endowed with physical beauty, Devadatta had a perverted, ugly, and despicable mind For her unrestricted enjoyment of mundane pleasures she mercilessly killed the mother of his husband, a devotee of his mother

Reading or listening to the grave consequences of such cruel deeds makes one shiver, and abhor violence

नवम अध्ययन
NINTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. 'जइ णं भंते !' उक्खेवो नवमस्स।

१. 'भते ! श्रमण भगवान् महावीर ने अष्टम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो नवम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?' जम्बू स्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार उत्तर दिया–

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the eighth chapter, what is the text and meaning of the ninth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे ! पुढविवडिंसए उज्जाणे। धरणे जक्खे। वेसमणदत्तो राया। सिरीदेवी। पूसनंदी कुमारे जुवराया।

२. हे जम्बू ! उस काल उस समय मे रोहीतक नाम का समृद्ध नगर था। वहाँ पृथिवी–अवतसक नामक उद्यान था। उसमे धरण नामक यक्ष का यक्षायतन था। उस नगर मे वैश्रमणदत्त नाम का राजा था, जिसके श्रीदेवी नामक रानी थी। युवराज पद से अलकृत पुष्पनन्दी नामक कुमार था।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Rohitak Outside this town was a garden named Prithvi-avatansak in which there was a temple of Dharan Yaksh In that city ruled a king named Vaishramanadatt The name of his queen was Shridevi and that of his son, who was the crown prince, was Pushpanandi

३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे। कण्हसिरी भारिया। तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा।

३. उस रोहीतक नगर मे दत्त नाम का एक गाथापति व्यापारी रहता था। वह बडा धनी और नगर मे सम्माननीय था। उसकी पत्नी का नाम कृष्णश्री था। उस दत्त गाथापति की दुहिता–पुत्री तथा कृष्णश्री की आत्मजा देवदत्ता नाम की बालिका–कन्या थी, जो निर्दोष इन्द्रियो वाली सुन्दर शरीर सम्पन्न थी।

3. In that Rohitak city lived a merchant named Datt Gathapati who was very rich and respected The name of his wife was Krishnashri Datt

Gathapatı and Krıshnashrı had a daughter named Devadatta who was perfectly endowed and beautıful

शूली पर चढ़ी स्त्री

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे; जाव परिसा निग्गया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ। तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ एगं इत्थियं; अवओडगबंधणं उक्खित्त–कण्णनासं (नेह–तुप्पियगत्तं वज्झकर–कडिजुयनियच्छं कंठे गुणरत्तमल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणीयं) जाव सूले भिज्जमाणं पासइ, पासित्ता इमे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने, तहेव निग्गए, जाव एवं वयासी– 'एसा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसी ?'

४. उस समय मे वहाँ पृथ्वी अवतसक उद्यान मे श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे। उनकी धर्मदेशना सुनकर राजा व नगरजन वापस चले गये।

उस समय भगवान् के ज्येष्ठ शिष्य गौतम स्वामी षष्ठखमण–बेले के पारणे के निमित्त भिक्षार्थ नगर मे गये (भिक्षा ग्रहण करके लौटते हुए) राजमार्ग मे पधारे। वहाँ पर सुसज्जित हाथी, घोडा और पुरुषो को देखते है और उन सबके बीच अवकोटक बन्धन से बँधी हुई, कटे कान तथा कटे नाक वाली स्त्री को देखा। (जिसके शरीर पर चिकनाई पुती है, जिसके हाथो और कमर पर वध्य पुरुष के योग्य वस्त्र पहिनाए गये है, हाथो मे हथकडियाँ है, गले मे लाल फूलो की माला पहिनाई गयी है, गेरू के चूर्ण से जिसका शरीर पोता गया है) वह शूली पर टँगी हुई थी। उस स्त्री को देखकर गौतम स्वामी के मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह साक्षात् नरकतुल्य वेदना भोग रही है।

भिक्षा लेकर नगर से निकले। भगवान के पास आकर इस प्रकार निवेदन करने लगे–भते ! यह स्त्री पूर्वभव मे कौन थी ?

WOMAN IN GALLOWS

4. Durıng that perıod of tıme Shraman Bhagavan Mahavır arrıved at Prıthvı-avatansak garden *Bhagavan* gave hıs dıscourse to all, after whıch the kıng and the people returned home Durıng that perıod of time, whıle returnıng after collectıng alms ın the cıty, Gautam Swamı, the senıor dıscıple of Shraman Bhagavan Mahavır, came to the maın road There he saw many elephants, horses and foot soldıers duly equipped wıth armours and weapons Amongst them he saw a woman, wıth her ears and nose cut off, tıed in the *avakotak* bond (bendıng the neck and tyıng ıt wıth hands already tied at the back) and ımpaled on the gallows (Oil was smeared on her body On her hands and waıst she wore the garb of a person sentenced

to death. She was handcuffed and wore garland of red flowers on her neck. Her body was also smeared with chalk) Gautam Swami thought that this woman was, indeed, suffering infernal agony

After collecting alms he left the city, came to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Who was this woman in her last birth ? In reply *Bhagavan* said—

पूर्वभव

५. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। महासेणे राया। तस्स णं महासेणस्स रन्नो धारिणीपामोक्खाणं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तस्स णं महासेणस्स रन्नो पुत्तो धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्ता, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे, जुवराया।

५. हे गौतम ! उस काल उस समय इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे सुप्रतिष्ठ नाम का एक समृद्ध नगर था। वहाँ पर महासेन नाम का प्रतापी राजा राज्य करता था। उसके अन्त पुर मे धारिणी आदि एक हजार रानियाँ थी। महाराज महासेन का पुत्र और महारानी धारिणी का आत्मज सिहसेन नामक राजकुमार था जो सर्वांग पूर्ण सुन्दर शरीर वाला व युवराज 'पद' पर अभिषिक्त था।

PAST BIRTH

5. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Supratishth in Bharatvarsh area in Jambu continent A majestic king named Mahasen was the ruler of that city He had one thousand queens including Dharini in the inner quarters of his palace King Mahasen and queen Dharini had a perfectly endowed and handsome son named Simhasen who was made the crown prince

६. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइ पंच पासायवडिंसयसयाइं करेंति, अब्भुगयमूसियाइं। तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइ सामा पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एगदिवसे पाणिं गिण्हाविंसु। पंचसयओ दाओ। तए णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खाहिं पंचसयाहिं देवीहिं सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ।

६. (युवा होने पर) उस सिहसेन राजकुमार के माता-पिता ने एक बार किसी समय उसके लिए पाँच सौ सुविशाल श्रेष्ठ महल बनवाये। तत्पश्चात् उन्होने सिहसेन राजकुमार का श्यामा आदि पाँच सौ सुन्दर राजकन्याओ के साथ एक ही दिन मे उसका विवाह कर दिया। सभी को हिरण्य-सुवर्ण आदि की पाँच सौ पाँच-सौ वस्तुओ का प्रीतिदान दिया। राजकुमार सिहसेन श्यामा आदि उन पाँच सौ राजकन्याओ के साथ ऊँचे प्रासादों मे सानन्द समय व्यतीत करने लगा।

6. At a certain time the parents got constructed five hundred large and exclusive mansions for prince Simhasen (when he attained youth). After this prince Simhasen was married to five hundred beautiful princesses including Shyama in a single day Each of these brides were given sets of five hundred things in gold, silver (etc) in dowry He lived happily in lofty mansions enjoying all these gifts with the five hundred princesses including Shyama.

७. तए णं से महासेणे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं। राया जाए।

७. कुछ समय पश्चात् राजा महासेन कालधर्म को प्राप्त हुए। राजकुमार सिंहसेन ने नि सरण–(शवयात्रा) क्रियाएँ की। तत्पश्चात् सिंहसेन राजा बन गया।

7. After some time king Mahasen died Prince Simhasen performed the last rites including cremation and ascended the throne

सपत्नियो का षड्यंत्र

८. तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ, नो परिजाणाइ। अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं, देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं 'एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणे, अपरिजाणमाणे विहरइ। तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गिप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा, सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए, एवं संपेहेंति, संपेहित्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति।

८. तब वह सिंहसेन राजा श्यामादेवी (प्रमुख रानी) मे अत्यन्त प्रेमासक्त हुआ रात–दिन उसी के ध्यान मे पागल–सा बना अन्य रानियो को न तो आदर करता है और न ही उनका ध्यान रखता है। इसके विपरीत उनका अनादर करके विस्मृत जैसा करके सानन्द समय बिता रहा था।

तब उन एक कम पाँच सौ रानियो की माताओ को जब इस वृत्तान्त का पता चला कि–'राजा सिंहसेन श्यामादेवी मे मूर्च्छित व आसक्त होकर हमारी कन्याओ का न तो आदर करता और न ध्यान ही रखता है, अपितु उनका अनादर व उपेक्षा कर रहा है, तब उन्होने परस्पर मिलकर निश्चय किया कि हमारे लिए यही उचित है कि हम श्यामादेवी को किसी प्रकार अग्नि–प्रयोग से, विष–प्रयोग से अथवा शस्त्र–प्रयोग से मार डाले। इस तरह विचार करके वे उसे अकेली व हत्या का अवसर मिलने की ताक मे रहने लगी।

CONSPIRACY BY CO-WIVES

8. Then that king Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts and without caring for or

honouring other queens. On the contrary he spent his time happily neglecting and forgetting them all

Then the mothers of these four hundred ninety nine queens came to know of the fact that—'King Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts without caring or honouring their daughters On the contrary he spent his time happily neglecting and forgetting them all ' On getting aware of this, they jointly decided that it would be to their benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons With this thought they awaited the opportunity to find her alone and murder her

९. तए णं सा सामादेवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी एवं वयासी–'एवं खलु, एगूणगाणं पंचण्हं सवत्तीसयाणं एगूणगाइं पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं अन्नमन्नं एवं वयासी–'एवं खलु, सीहसेणे–जाव पडिजागरमाणीओ विहरंति। तं न नज्जइ णं मम केणइ कु–मारेण मारिस्संति, त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जाव जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ।

९. इधर श्यामादेवी को भी इस षड्यन्त्र का पता लग गया। जब उसे यह वृत्तान्त मालूम हुआ तब वह इस प्रकार विचार करने लगी–'मेरी एक कम पाँच सौ सपत्नियो (सौतो) की माताओ को यह पता चला है कि–'महाराजा सिहसेन, श्यामा मे अत्यन्त आसक्त होकर हमारी पुत्रियो का आदर नही करते, उनकी पूर्ण उपेक्षा कर रहे है। अत किसी 'अग्नि, शस्त्र या विष के प्रयोग से श्यामा के जीवन का अन्त कर देना ही हमारे लिए श्रेष्ठ है' ऐसा विचार कर वे अवसर की ताक मे रहने लगी है। जब ऐसा है तो न जाने वे किस कुमौत से मुझे मार डालेगी। ऐसा विचार कर वह श्यामा **भीत**–मन मे डर गई, **त्रस्त**–मेरे प्राण लूट लिये जायेगे, यह सोचकर घबराई, **उद्‌विग्न**–भय से हृदय काँपने लगा, **सजातभय**–भय से शरीर के अग भी काँपने लगे और जहाँ कोपभवन था वहाँ आई। आकर मानसिक सकल्प–विकल्प की उथल–पुथल से निराश–हताश होकर आर्त्तध्यान करके लगी।

9. Somehow Shyama Devi got to know of this conspiracy When aware of all this, she thought—"The mothers of my four hundred ninety nine co-wives have come to know of the fact that—'King Simhasen, highly enamoured of Shyama Devi, spent his time madly engrossed in her thoughts without caring for our daughters On the contrary he completely neglects them all Therefore, it would be to our benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons ' With this thought they look forward to an opportunity to find me alone and murder me In this situation I do not know when, how and what wretched death they will deal

me " These thoughts made her afraid, terrified, and agitated. Every part of her body trembled with fear and she came to the *copebhavan* (the room where an angry and displeased person spends time). There she spent her time brooding gloomily in a state of mental turmoil swinging between hope and despair

श्यामादेवी द्वारा राजा को सूचना

१०. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरे, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता सामं देविं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ, पासित्ता एवं वयासी-"किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियासि ?"

तए णं सा सामा देवी सीहसेणेण रन्ना एवं वुत्ता समाणी उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी-

'एवं खलु सामी ! मम एगूणपंचसवत्तिसयाणं एगूण-पंचमाइसयाणं इमीसे कहाए लद्धट्ठाणं समाणाणं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-'एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए उवरिं मुच्छिए अम्हं धूयाओ नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ, तं सेयं खलु, अम्हं सामं देविं अग्गिप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए।' एवं संपेहेति, संपेहित्ता मम अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति। तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेण मारिस्संति त्ति कट्टु भीया जाव झियामि।

१०. तब सिहसेन राजा को श्यामा देवी के इस वृत्तान्त की सूचना मिली तो, तत्काल जहाँ कोपगृह था, जहाँ श्यामादेवी थी वहाँ पर आया। आकर भय आदि से त्रस्त व हताश-निराश हुई चिन्ताग्रस्त निस्तेज श्यामादेवी को देखकर पूछा- देवानुप्रिये ! तू क्यो इस तरह **अपहतमन-संकल्पा**-दिल तोडकर दु खी व चिन्तित हो रही हो ?

सिहसेन राजा के द्वारा इस प्रकार पूछने पर दूध के उफान के समान क्रोध मे उफनती हुई क्रोधयुक्त वचनो से सिहसेन राजा से इस प्रकार बोली-

-हे स्वामिन् ! मेरी एक कम पाँच सौ सपत्नियो (सौतो)की एक कम पाँच सौ माताएँ इस वृत्तान्त को (कि आप मुझमे अनुरक्त है) जानकर इकट्ठी होकर एक दूसरे को इस प्रकार कहने लगी-महाराज सिहसेन श्यामादेवी मे अत्यन्त आसक्त व प्रेम-पाश मे बँधे हुए हमारी कन्याओ का आदर सत्कार नही करते है। उनका ध्यान भी नही रखते है, प्रत्युत उनका अनादर व उपेक्षा कर रहे है, इसलिए अब हमारे लिए यही समुचित है कि अग्नि-प्रयोग, विष-प्रयोग या किसी घातक शस्त्र के द्वारा श्यामा का अन्त कर डाले। तदनुसार वे मेरे अन्तर-(एकान्त) छिद्र-(असावधानी) विवर-(जब आप उपस्थित न हों) उस अवसर की प्रतीक्षा कर रही है। हे स्वामी ! न जाने मुझे किस कुमौत से मार डाले ! इसकारण भयाक्रान्त हुई मै कोपभवन में आकर शोक मे डूबी हुई हूँ।

SHYAMA DEVI INFORMS THE KING

10. When king Simhasen got the information about Shyama Devi's condition, he at once came to Shyama Devi in the *copebhavan* Seeing her hapless and brooding gloomily in a state of mental turmoil swinging between hope and despair, he asked—"Beloved of gods ! Why are you so worried and heart-broken ?"

Seething in anger, like boiling milk, Shyama Devi responded with angry words—

"My lord ! On being aware of the fact (that you are infatuated with me), the mothers of my four hundred ninety nine co-wives met at a place and deliberated—'Infatuated with Shyama Devi, king Simhasen does not respect our daughters On the contrary he completely neglects them all Therefore, it would be to our benefit to somehow kill Shyama Devi by means of fire, poison, or weapons ' Accordingly they await the opportunity to find me alone when you are not present and I am without any protection My lord ! I do not know what wretched death they will deal me Terrified by this I came to the *copebhavan* (the room where an angry and displeased person spends time) and started brooding gloomily"

११. तए णं से सीहसेणे सामं देविं एवं वयासी–'मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। अहं णं तहा जत्तिहामि जहा णं तव नत्थि कत्तो वि सरीरस्स आवाहे पवाहे वा भविस्सइ' त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव समासासेइ।

समासासित्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स बहिया एग महं कूडागारसालं करेह, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पासादीयं करेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सुपइट्ठनयरस्स बहिया पच्चत्थिमे दिसीविभाए एगं महं कूडागारसालं जाव करेंति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पासाइयं, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

११. (रानी की यह बात सुनकर) राजा सिहसेन ने श्यामादेवी से कहा–'हे देवानुप्रिय ! तू इस प्रकार उत्साहहीन उदास होकर आर्तध्यान मत कर। निश्चय ही मै ऐसा कोई उपाय करूँगा कि तुम्हारे शरीर को कही से भी किसी प्रकार आबाधा–थोडी भी पीडा तथा प्रबाधा–हानि नही पहुँच सकेगी।

इस प्रकार श्यामा देवी को इष्ट, प्रिय व मधुर वचनो से आश्वासन व सान्त्वना देता है और वहाँ लौट आता है। तदनन्तर कौटुम्बिक अनुचरो को बुलाता है और उनसे कहता है–तुम लोग जाओ और जाकर

सुप्रतिष्ठ नगर से बाहर एक बडी कूटाकारशाला बनाओ जो सैकडो खम्भो से युक्त हो, मन को भाने वाली हो, महारानी के रहने योग्य तथा देखने मे अत्यन्त सुन्दर रमणीय हो।

वे कौटुम्बिक पुरुष दोनो हाथ जोड कर सिर पर अजलि रखकर आदर विनयपूर्वक इस राजाज्ञा को शिरोधार्य करते हुए चले जाते है। जाकर सुप्रतिष्ठ नगर के बाहर पश्चिम दिशा मे एक विशाल व अनेक स्तम्भो वाली प्रासादिक, अत्यन्त मनोहर कूटाकारशाला तैयार करवाते है, तैयार करवा कर महाराज सिहसेन को कूटाकारशाला यथायोग्य रूप से तैयार हो जाने की सूचना करते है।

11. King Simhasen reassured Shyama Devi—"Beloved of gods ! Stop brooding gloomily in a hapless state of despair. I will certainly make arrangements to the effect that you are not caused even slightest of physical discomfort, pain or harm

Consoling and reassuring Shyama Devi thus, with loving and sweat words, king Simhasen returned. He then called his servants and instructed—"Go outside Supratishth city and construct a large *kootakarashala* (camouflaged house) with hundreds of pillars, which is very beautiful, charming, attractive and fit to be a queen's residence

Those servants left after raising their joined palms to their heads and humbly accepting the king's order Going in the northeastern direction outside Supratishth city, they constructed a large and beautiful *kootakarashala* with hundreds of pillars Once that was done they informed king Simhasen about the desired *kootakarashala* being ready

१२. तए णं से सीहसेणे राया अन्नया कयाइ एगूणागाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइयसयाइं आमंतेइ। तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं सीहसेणेणं रन्ना आमंतियाइं समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया, तेणेव उवागच्छंति। तए णं से सीहसेणे राया एगूणगाणं पंचदेवीसयाणं एगूणगाणं पंचमाइसयाणं कूडागारसालं आवासं दलयइ।

१२. तदनन्तर राजा सिहसेन किसी समय उन चार सौ निन्यानवे रानियो की माताओ को आमंत्रित करता है। सिहसेन राजा का आमन्त्रण पाकर वे सबकी माताएँ सर्वप्रकार से वस्त्रो एव आभूषणो से सुसज्जित हो, अपने-अपने वैभव के अनुसार सुप्रतिष्ठ नगर मे राजा सिहसेन के वहाँ आ जाती है। सिहसेन राजा भी उन सभी देवियो की माताओ को निवास के लिए कूटाकारशाला मे स्थान दे देता है।

12. Then at an opportune moment king Simhasen invited the mothers of those four hundred ninety nine queens Getting king Simhasen's invitation, those mothers of the queens got ready embellished fully with dresses and

ornaments according to their respective status and came to king Simhasen in Supratishth city King Simhasen provided them lodging in the said *kootakarashala*.

कूटाकारशाला का दहन

१३. तए णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारं च कूडागारसालं साहरह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव साहरंति

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंचमाईसयाइं सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च पसण्णं च आसाएमाणाइं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं उवगीयमाणाइं विहरंति।

१३. उसके पश्चात् सिहसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा–'देवानुप्रियो ! तुम जाओ और बहुत–सी भोजन सामग्री वहाँ ले जाओ तथा अनेक प्रकार के पुष्पो, वस्त्रो, सुगन्धित पदार्थों, मालाओ और अलकारो को कूटाकारशाला मे पहुँचाओ।

कौटुम्बिक पुरुष भी राजा की आज्ञा के अनुसार सभी सामग्री पहुँचा देते है।

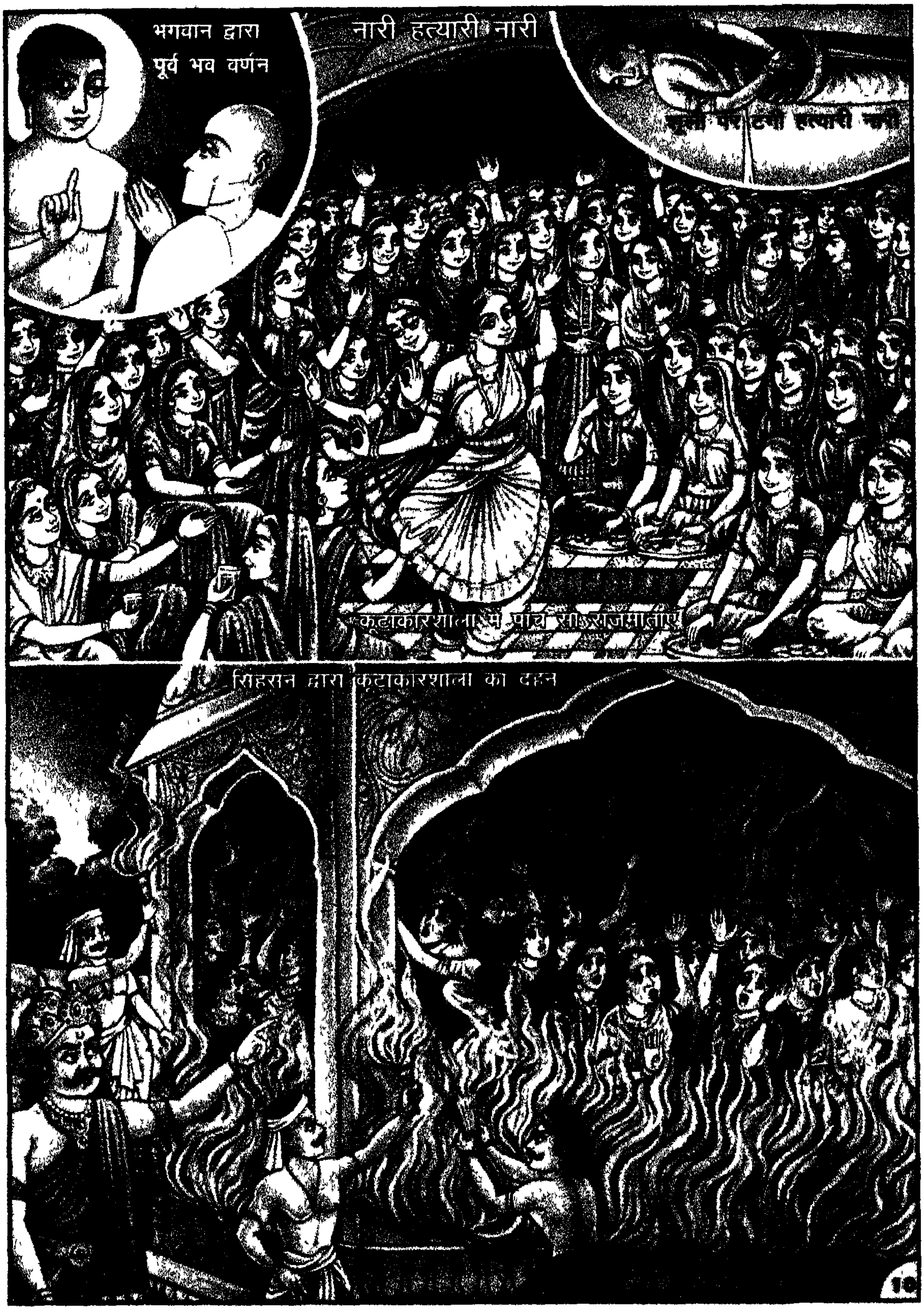
तत्पश्चात् सर्व प्रकार के अलकारो से विभूषित उन चार सौ निन्यानवे देवियो की माताओ ने मिलकर उस विपुल भोजन सामग्री और सुरादिक पेय पदार्थो का आस्वादन किया–यथारुचि उपभोग किया और गान्धर्वो (गाने वाले व्यक्तियो) तथा नाटको–(नृत्य करने वाला) नर्तको द्वारा किये गये गान–नृत्य का आनन्द लेने लगी। अर्थात् भोजन तथ मद्यपान करके नाच–गान मे मस्त हो गईं।

KOOTAKARASHALA SET AFIRE

13. Then king Simhasen called his servants and said—Take large quantities of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food), flowers, dresses, fragrant garlands, and ornaments to the *Kootakarashala*

According to the king's order the servants took all these things there

Then those four hundred ninety nine mothers of queens embellished themselves with all kinds of ornaments and started enjoying that abundant food and wines as well as music and dance (by musicians and dancers) In other words, got engrossed in enjoying food, wines, dance and music



भगवान द्वारा
पूर्व भव वर्णन
नारी हत्यारी नारी
कूटाकारशाला में पांच सौ राजमाताएं
सिंहसेन द्वारा कूटाकारशाला का दहन

चित्र परिचय-१०

Illustration No. 10

कर्म विपाक की करुण कहानी

दृश्य–१

रोहितक नगर मे भिक्षाचरी करते हुए गणधर गौतम ने नगर के चौराहे पर एक हृदय द्रावक दृश्य देखा, एक सुन्दर स्त्री शूली पर लटक रही है। हाथ पीछे बँधे है, कान नाक कटे हुए है और बडा करुण विलाप कर रही है।

दृश्य–२

जिज्ञासु गौतम भगवान से पूछते है–इसने ऐसा क्या क्रूर कर्म किया था जिसका फल भोग रही है ?

दृश्य–३

पूर्व जीवन की कथा सुनाते हुए प्रभु फरमाते है प्राचीन समय मे सिहसेन राजा की पॉच सौ रानियॉ थी, जिनमे श्यामा पटरानी थी। पॉच सौ सौतो व उनकी माताओ ने मिलकर श्यामा को मारने का षड्यत्र रचा। पता लगने पर राजा अत्यन्त कुपित हुआ। उन पॉच सौ रानियो व उनकी माताओ को राजा ने एक कूटाकारशाला मे आमत्रित कर नृत्य गान मद्य-मॉस आदि की दावत दी। रात म सभी मेहमान माताएँ नृत्य आदि म मस्त हो रही थीं।

दृश्य–४

राजा ने कूटाकारशाला का द्वार बन्द करवा दिया और चारो तरफ से अग्नि लगा दी। आग लगने पर सभी स्त्रियॉ अत्यन्त करुण विलाप आर्त पुकार करती हुई सभी उसी म जलकर भस्म हो गई।

सिहसेन का जीव दुर्गतियो म भ्रमण करता हुआ यहाँ देवदत्ता नाम की सुन्दर श्रेष्ठी कन्या बनी। देवदत्ता का विवाह यहा के राजकुमार पुष्यनदी के साथ हुआ। पुष्यनदी मातृभक्त था। देवदत्ता ने पुष्यनदी की माता को दुर्दशा करके मार डाला। जिससे क्षुब्ध क्रुद्ध होकर राजा ने देवदत्ता को यह कठोर दण्ड दिया है।

वही देवदत्ता आज शूली पर लटक रही है। *श्रुतस्कन्ध १ अ ९ सूत्र १० १२*

PATHETIC STORY OF FRUITION OF KARMAS

SCENE-1

While seeking alms in Rohitak city Gautam Swami saw that a beautiful woman was hanging on gallows Her hands are tied at her back and her nose and earlobes have been severed She is wailing and moaning pitifully

SCENE-2

Gautam asks *Bhagavan—Bhante*! What cruel deed she committed for which she suffers now ?

SCENE-3

Bhagavan narrates the story of the past birth—In ancient times King Simhasen had five hundred queens, Shyama being the chief among them The other queens and their mothers hatched a conspiracy to kill Shyama When the king came to know of it he got angry He invited the five hundred queens and their mothers to a dance, drinks and dinner party in a camouflaged house During the night all these women are enjoying the party

SCENE-4

The king got the gates of that house closed and set it to fire from all sides All the women, crying for help and wailing in pain, were burnt alive

Passing through cycles of rebirth in lower genuses, he has been reborn as Devadatta, the beautiful daughter of a merchant It is that Devadatta that hangs on gallows

—*Sec I Ch 9, Sutra 10 12*

१४. तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता कूडागारसालाए सव्वओ अगणिकायं दलयइ।

तए णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंचमाइसयाइं सीहसेणेण रन्ना आलिवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं।

१४. तत्पश्चात् सिंहसेन राजा अर्द्धरात्रि के समय अनेक राजपुरुषो को साथ लेकर जहाँ कूटाकारशाला थी वहाँ पर आया। आकर उसने कूटाकारशाला के सभी दरवाजे बन्द करवा दिये। बन्द करवाकर कूटाकारशाला को चारो तरफ से आग लगवा दी।

राजा सिहसेन के द्वारा जलाई गईं, त्राण व शरण (आश्रय) से रहित हुई उन एक कम पाँच सौ रानियो की माताएँ रुदन–(रोना), क्रन्दन (चिल्लाना, कर्ण कटु शब्दो मे रोना) व विलाप–(आर्तस्वर से छाती पीटकर पुकारना) करती हुईं कालधर्म को प्राप्त हो गई।

14. Around midnight king Simhasen came to the *kootakarashala* with many attendants He got all the gates of the *kootakarashala* closed and then set it ablaze from all directions

Set afire by king Simhasen those four hundred ninety nine mothers of queens failed to find any shelter or protection They died crying, wailing, and sobbing in despair

देवदत्ता का जन्म

१५. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयेसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ने।

१५. इस प्रकार के (घोर–दारुण) पाप कर्म करने वाला, ऐसी विद्या–बुद्धि वाला, ऐसा दुष्ट आचरण करने वाला सिहसेन राजा अत्यधिक पापकर्मो का उपार्जन करके ३४ सौ वर्ष की परम आयु भोगकर काल करके उत्कृष्ट २२ सागरोपम की स्थिति वाली छठ्ठी नरकभूमि मे नारक रूप से उत्पन्न हुआ। वही सिहसेन राजा का जीव नरक स्थिति समाप्त होने पर वहाँ से निकलकर इसी रोहीतक नगर मे दत्त सार्थवाह की कृष्णश्री भार्या की कुक्षि मे बालिका के रूप मे उत्पन्न हुआ।

BIRTH OF DEVADATTA

15. Ever involved in such sinful activities, accepting these activities to be ideal of life and the best conduct, king Simhasen acquired extremely

malevolent and pain causing *karmas* in abundance. After completing his life-span of three thousand four hundred years, he died and reincarnated as an infernal being in the sixth hell where the maximum life span is twenty two *Sagaropam*. The soul that was king Simhasen, coming out of the hell, was conceived as a daughter in the womb of Krishnashri, the wife of Datt Sarthavaha in this Rohitak city

१६. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारियं पयाया सुउमालपाणिपाया जाव सुरूवा। तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहियाए विउलं असणं जाव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेंति तं होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं, तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव परिवड्ढइ।

१६. तब उस कृष्णश्री ने नव मास परिपूर्ण होने पर एक कन्या को जन्म दिया। वह कन्या अत्यन्त कोमल हाथ-पैरो वाली तथा बहुत रूपवती थी। कन्या के माता-पिता ने बारहवे दिन बहुत-सी खाद्य सामग्री तैयार कराकर मित्र, ज्ञाति सम्बन्धी तथा परिजनो को निमन्त्रित किया एव भोजनादि से निवृत्त हो लेने पर कन्या का नामकरण सस्कार करते हुए कहा-'हमारी इस कन्या का नाम देवदत्ता रखा जाता है, क्रमश वह देवदत्ता पाँच धायमाताओ के सरक्षण मे वृद्धि को प्राप्त होने लगी।

16. After nine months of pregnancy, that Krishnashri gave birth to a daughter. That girl was very delicate and beautiful On the twelfth day after birth, the parents arranged for abundant food and invited their friends, relatives and kinfolk After the feast they performed the naming ceremony—"Our daughter is hereby named Devadatta" And girl Devadatta began to grow up in care of five nursemaids

१७. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण य रूवेण लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था।

तए णं सा देवदत्ता दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणी विहरइ।

१७. तदनन्तर वह देवदत्ता बालिका बाल्यावस्था को पारकर यौवन, रूप व लावण्य से अत्यन्त उत्तम व उत्कष्ट शरीर वाली हो गई।

एक बार वह देवदत्ता स्नान करके विविध प्रकार के आभूषणो से विभूषित होकर बहुत-सी कुब्जा आदि दासियो के साथ अपने भवन के ऊपर की छत पर सोने की गेद से क्रीडा कर रही थी।

17. In due course girl Devadatta crossed her adolescence and became a beautiful, charming, and well proportioned young woman.

One day, after taking her bath and adorning herself with a variety of ornaments, Devadatta, surrounded by numerous maids including hunchbacks, was playing on the rooftop of her mansion with a golden ball

१८. इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव विभूसिए आसं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहिणियाए निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ। तए णं से वेसमेणे राया जाव वीइवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? किं वा नामधेज्जेणं ?

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणं रायं करयल जाव एवं वयासी–'एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया, कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठसरीरा।'

१८. इधर स्नानादि से निवृत्त होकर आभूषण आदि पहनकर राजा वैश्रमणदत्त घोडे पर बैठकर बहुत से राजपुरुषो के साथ घिरा हुआ, अश्ववाहनिका–अश्वक्रीडा के लिए जाता हुआ दत्त गाथापति के घर के कुछ पास से निकलता है। अचानक वह वैश्रमणदत्त राजा देवदत्ता कन्या को सोने की गेद से खेलती हुई देखता है और देखकर देवदत्ता दारिका के रूप, यौवन व लावण्य से विस्मित होता है। फिर कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर पूछता है–'हे देवानुप्रियो ! यह बालिका किसकी है ? और इसका क्या नाम है ?'

तब वे कौटुम्बिक पुरुष हाथ जोडकर इस प्रकार कहते है–'स्वामिन् ! यह कन्या दत्त गाथापति की पुत्री और कृष्णश्री की आत्मजा है जो रूप, यौवन तथा लावण्य से उत्तम तथा उत्कृष्ट शरीर वाली है।'

18. Around that time, after taking his bath, adorning himself with ornaments (etc), surrounded by many attendants, and mounted on a horse, king Vaishramanadatt was going for horse-riding He passed in the vicinity of Datt Gathapati's mansion All of a sudden king Vaishramanadatt saw Devadatta playing with a golden ball He was astonished at the beauty, charm and youth of Devadatta He summoned his attendants and asked—"Beloved of gods ! Whose daughter is this ? What is her name ?"

The attendants joined their palms and informed—"Sire ! This beautiful, charming, and well proportioned young woman is Devadatta, the daughter of Datt Gathapati and Krishnashri "

१९. तए णं से वेसमणे राया आसवाहिणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे, देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूयं कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पुस्सनंदिस्स जुवरन्नो भारियत्ताए वरेह, जइ वि सा सयंरज्जसुक्का।'

१९. राजा वैश्रमणदत्त अश्वक्रीडा से वापिस आकर अपने आभ्यन्तर स्थानीय–अन्तरग विश्वस्त पुरुषों को बुलाता है और उनको इस प्रकार कहता है–

–देवानुप्रियो ! तुम जाओ और जाकर सार्थवाह दत्त की पुत्री और कृष्णश्री भार्या की आत्मजा देवदत्ता नाम की कन्या की युवराज पुष्यनन्दी के लिए भार्या रूप मे माँग करो। यदि वह पूर्ण राज्य के बदले भी प्राप्त की जा सके तो भी प्राप्त करने के योग्य है। (अथवा वह राज्य की पटरानी बनना चाहे तो भी हमे स्वीकार है।)

19. On his return from horse-riding, king Vaishramanadatt summoned his officials of confidence and said—

"Beloved of gods ! Please go and seek the hand of Devadatta, the daughter of Datt Gathapati and Krishnashri, in marriage for crown prince Pushyanandi She is worth getting even in exchange of our kingdom (In other words, she is acceptable even if she wants to be the chief queen of the kingdom)

२०. तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ण्हाया जाव सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छित्था। तए णं से दत्ते सत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे, आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गए आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतित्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी–'संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?'

तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरन्नो भारियत्ताए वरेमो। तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता भारिया पूसनंदिस्स जुवरन्नो। भण, देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं ?

तए णं से दत्ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी–'एयं चेव देवाणुप्पिया ! मम सुक्कं जं णं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हइ।

ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, संमाणेइ सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं ते अब्भिंतरठाणिज्जपुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेसमणस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेंति।

२०. तब वे अन्तरग व्यक्ति राजा वैश्रमण की इस आज्ञा को सम्मानपूर्वक स्वीकार कर, हर्षित हुए। फिर स्नानादि क्रिया करके तथा राजसभा मे प्रवेश करने योग्य उत्तम वस्त्र पहनकर जहाँ दत्त सार्थवाह का

घर था, वहाँ आये। दत्त सार्थवाह भी उन्हे आता देखकर बडी प्रसन्नता के साथ आसन से उठकर उनके सम्मान के लिए सात–आठ कदम सामने अगवानी करने गया। उनका स्वागत कर उचित आसन पर बैठने की प्रार्थना की। तदनन्तर आश्वस्त–(मार्ग चलने का श्रम दूर होने पर) विश्वस्त–(मानसिक दृष्टि से स्थिर हो जाने पर) आने वाले राजपुरुषों से कहा–देवानुप्रियो ! आज्ञा दीजिए, आपके शुभागमन का क्या प्रयोजन है ?

दत्त सार्थवाह के पूछने पर आगन्तुक राजपुरुषो ने कहा–'हे देवानुप्रिय ! हम आपकी पुत्री और कृष्णश्री की आत्मजा देवदत्ता नाम की कन्या की युवराज के लिए भार्या रूप से मँगनी करने आये हैं। यदि हमारी यह माँग आपको उपयुक्त, अवसर के अनुकूल, श्लाघनीय तथा वरवधू की जोडी के अनुरूप जान पडती हो तो देवदत्ता को युवराज, पुष्यनन्दी के लिए दीजिए और बतलाइये कि इसके लिए आपको क्या शुल्क–उपहार दिया जाय ?

उन आभ्यन्तरस्थानीय पुरुषो के इस कथन को सुनकर दत्त सार्थवाह बोले–'देवानुप्रियो ! मेरे लिए यही बडा शुल्क है कि महाराज वैश्रमणदत्त–(अपने पुत्र के लिए) मेरी इस बालिका को ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत कर रहे है।'

इसके पश्चात् दत्त गाथापति ने उन अन्तरग राजपुरुषो का पुष्प, गध, माला तथा अलंकारादि से यथोचित सत्कार–सम्मान किया और सत्कार–सम्मान पूर्वक विसर्जित किया। वे आभ्यन्तर स्थानीय पुरुष जहाँ वैश्रमणदत्त राजा था वहाँ आये और उन्होने वैश्रमण राजा को उक्त सारा वृत्तान्त कह सुनाया।

20. The officials formally joined their palms and humbly and happily accepted king Vaishramanadatt's order After taking their bath and putting on their best court dresses they went to Datt Sarthavaha's mansion Datt Sarthavaha was pleased to see them coming He got up from his seat and went ahead seven-eight steps to welcome them. After greeting them he offered them suitable seats When the officials took there seats and made themselves comfortable Datt Sarthavaha asked, "Beloved of gods ! Tell me what gives me the honour of your visit ?"

On being asked thus by Datt Sarthavaha, the king's officials said, "Beloved of gods ! We have come to seek the hand of your and Krishnashri's daughter Devadatta in marriage for our crown prince Beloved of gods ! If you feel that the match is seemly, appropriate, desirable, commendable and worth a union, please give your consent to marry Krishnashri to crown prince Pushyanandi If you agree to our proposal please tell us the desired dowry ?"

On hearing the proposal from the king's officials Datt Sarthavaha replied, "Beloved of gods ! By asking the hand of my daughter king

Vaishramanadatt has bestowed honour on me and, that is more than any dowry"

After this he sent them away after offering them food and honouring them with flowers, apparels, perfumes, garlands, and ornaments. The messengers returned to king Vaishramanadatt and informed him the aforesaid details (about the acceptance of the proposal)

देवदत्ता का विवाह

२१. तए णं से दत्ते गाहावई अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सम्बंधिपरियणं आमंतेइ। ण्हाए जाव पायच्छित्ते सुहासणवरगए तेणं मित्त० सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विहरइ। जिमियभुत्तत्तरागए वि य णं आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तनाइनियगसयण-संबंधिपरियणं विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ,

सक्कारित्ता सम्माणेत्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाए नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव वेसमणरन्नो गिहे, जेणेव वेसमणे राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रन्नो देवदत्तं दारियं उवणेइ।

२१. (राजपुरुषो से समाचार जानकर) किसी अन्य समय दत्त गाथापति शुभ तिथि-(चन्द्र दिवस), करण-(बालव आदि ११ करण होते है) दिवस-(दोष रहित शुभ दिन), नक्षत्र-(दो घडी का समय) व मुहूर्त मे अशनादिक-(मिठाईयाँ आदि) सामग्री तैयार करवाता है और करवाकर मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी तथा परिजनो को आमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक व अन्य मागलिक कार्य करके सुखप्रद आसन पर स्थित हो उस विपुल अशनादिक का मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी व परिजनो के साथ उपभोग करता है। अनन्तर उचित स्थान पर बैठ (आचमन-कुल्ला करके) मुँह को शुद्ध-स्वच्छ करके परम शुद्ध होकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन-सम्बन्धियो का विपुल पुष्प, माला, गन्ध, वस्त्र, अलकार आदि से सत्कार करता है, सम्मान करता है।

सत्कार व सम्मान करने के पश्चात् देवदत्ता नामक अपनी पुत्री को स्नान करवाकर विविध प्रकार के आभूषणो द्वारा उसके शरीर को विभूषित कर एक हजार पुरुषो से उठाई जाने वाली शिविका-पालखी मे बिठलाता है। फिर बहुत से मित्र व ज्ञातिजनो आदि को साथ लेकर सर्व प्रकार के उपहार आदि साथ लिए, बाजे-गाजे के साथ रोहीतक नगर के बीच होकर जहाँ वैश्रमण राजा था, वहाँ आया और आकर हाथ जोडकर उसे बधाया। बधा कर वैश्रमण राजा को देवदत्ता कन्या अर्पण कर दी।

DEVADATTA'S MARRIAGE

21. (After getting this information from the king's officials) On an auspicious *tithi* (date of the lunar calendar), *karan* (a division of the day, there being eleven in number including *balav*), *divas* (auspicious day), *nakshatra* (lunar mansion), and *muhurta* (moment) Datt Sarthavaha got plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) ready He then invited his friends, kinfolk, family members, near and far relatives and other people. After performing auspicious rituals including putting mark on his forehead, he took a comfortable seat and enjoyed that food with the guests Having done that he sat at a place to wash his mouth and face clean. He then honoured friends, kin folk, family members, near and far relatives and other people with liberal gifts of flowers, garlands, perfumes, dresses, ornaments (etc).

After this he got his daughter adorned with a variety of ornaments, when she had taken her bath, and seated her in a palanquin lifted by one thousand persons Carrying all kinds of gifts and accompanied by all his friends and relatives, he moved in a procession with all pomp and show including dance and music. Crossing Rohitak City he arrived at king Vaishramanadatt's palace and greeted him by joining his palms There he presented his daughter before king Vaishramanadatt

२२. तए णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त नाइ. आमंतेइ, जाव सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पूसनंदिकुमारं देवदत्तं च दारियं पट्टयं दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वर नेवत्थाइं करेइ, अग्गिहोमं करेइ, करेत्ता पूसनंदिकुमारं देवदत्ताए दरियाए पाणिं गिण्हावेइ।

तए णं से वेसमणे राया पूसनंदिस्स कुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेइ, कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त जाव परियणं च विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ।

तए णं पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धनाडएहि उवगिज्जमाणे जाव विहरइ।

२२. तब वैश्रमणदत्त राजा अर्पण की गई उस देवदत्ता दारिका को देखकर बहुत हर्षित हुए, हर्षित होकर विपुल अशनादिक तैयार कराया और मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी व परिजनो को आमन्त्रित कर उन्हे भोजन कराया। उनका पुष्प, वस्त्र, गध, माला व अलकार आदि से सत्कार-सम्मान-किया। तदनन्तर

कुमार पुष्यनन्दी और कुमारी देवदत्ता को चौकी (पाट) पर बैठाकर श्वेत व पीत अर्थात् चाँदी और सोने के कलशो से स्नान कराते है, सुन्दर वेशभूषा से सुसज्जित कराते है। अग्निहोम–हवन कराते हैं। हवन कराने के बाद कुमार पुष्यनन्दी को कुमारी देवदत्ता के साथ पाणिग्रहण–(हस्त मिलाप) कराते हैं। तत्पश्चात् वह वैश्रमणदत्त नरेश पुष्यनदी व देवदत्ता का सम्पूर्ण ऋद्धि (समृद्धि के अनुरूप) यावत् महान् वाद्य–ध्वनियाँ और ऋद्धिसमुदाय (वस्त्र अलकारादि सम्पत्ति) व सन्मानसमुदाय–(सत्कार–सम्मान व मधुर वचन) के साथ विवाह रचाते है। इस प्रकार विधिपूर्वक बडे समारोह के साथ कुमार पुष्यनदी और कुमारी देवदत्ता का विवाह सम्पन्न हो जाता है।

पश्चात् (राजा वैश्रमणदत्त) देवदत्ता के माता–पिता तथा उनके साथ आने वाले अन्य उनके मित्रजनो, सम्बन्धिजनो और परिजनो का भी विपुल अशनादिक तथा वस्त्र, गन्ध, माला और अलकारादि से सत्कार करते है, सन्मान करते है, सत्कार व सन्मान करने के बाद उन्हे विदा करते है।

राजकुमार पुष्यनदी श्रेष्ठिपुत्री देवदत्ता के साथ उत्तम प्रासाद मे जहाँ पर विविध प्रकार के वाद्य व मृदग बज रहे थे, मधुर सगीत गाये जा रहे थे, ३२ प्रकार के नाटको का प्रदर्शन किया जा रहा था, उनको सुनते देखते, आनन्द लेते हुए मनुष्य सम्बन्धी भोग भोगते हुए समय बिताने लगे।

22. When king Vaishramanadatt saw Devadatta as a bride he was very pleased Then he got plenty of *ashan, paan, khadya, svadya* (staple food, liquids, general food, and savoury food) ready He then invited his friends, kinfolk, family members, near and far relatives and other people and offered them food After the feast he honoured them with liberal gifts of flowers, garlands, perfumes, dresses, ornaments (etc) Having done that he seated prince Pushyanandi and bride Devadatta on a platform anointing them with water poured from gold and silver urns The bridal couple was then adorned with beautiful dresses and ornaments Offerings were made into the sacred fire and the ritual of the bridegroom accepting the hand of the bride (*panigrahan*) was performed At last with all grandeur, music and dance, rich gifts (dresses and ornaments) and exchange of greetings the marriage-ritual of prince Pushyanandi and Devadatta was ceremoniously performed

After the marriage ceremony king Vaishramanadatt liberally offered food and gifts (dresses, perfumes, garlands, ornaments etc) to Devadatta's parents and their family members, relatives and friends and bade them farewell

Then in his exclusive palace prince Pushyanandi along with merchant's daughter Devadatta passed his time seeing, listening to, and enjoying sweet music of a variety of musical instruments including drums, thirty

two kinds of dramas, other such performances and all other human comforts and pleasures

२३. तए णं से वेसमणे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं जाव राया जाव पूसनंदी।

२३. कुछ समय बाद राजा वैश्रमण कालधर्म को प्राप्त हो गये। उनकी मृत्यु पर शोकग्रस्त पुष्यनन्दी ने बडे राजकीय समारोह के साथ उनकी निस्सरण (शवयात्रा) आदि सभी क्रियाएँ की। शोक निवृत्त होकर राज सिहासन पर आरूढ हुए। युवराज से राजा बन गये।

23. After some time king Vaishramanadatt died On his death grief stricken Pushyanandi performed his last rites and other formal rituals with state honour After the mourning Pushyanandi ascended the throne From crown prince he became the king

राजा की मातृ भक्ति

२४. तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्तए यावि होत्था। कल्लाकल्लिं जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेइ, करित्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भिंगावेइ। अट्ठिसुहाए, मंससुहाए, तयासुहाए, रोमसुहाए चउव्विहाए संवाहणाए संवाहावेइ संवाहावेत्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वट्टित्तावेइ, उव्वट्टावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेइ, तंजहा— उसिणोदएणं सीओदएणं गन्धोदएणं। विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ। सिरीए देवीए ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए जाव जिमियभुत्तुत्तरागयाए तए णं पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

२४. पुष्यनन्दी राजा अपनी माता श्रीदेवी का परम भक्त था। माता श्रीदेवी जहाँ भी हो वहाँ प्रतिदिन आकर श्रीदेवी के चरणो में प्रणाम करता और प्रणाम करके शतपाक और सहस्रपाक-(सौ औषधो तथा हजार औषधो के सम्मिश्रण से बने) तैलो की मालिश करवाता था। अस्थियो को सुख देने वाले, मॉस को सुख पहुँचाने वाले, त्वचा को और रोमो को सुखकारी ऐसी चार प्रकार की सवाहना-अगमर्दन क्रिया से सुखशान्ति पहुँचाता था। तदनन्तर सुगन्धित गन्धवर्तक-सुगन्धित चूर्ण का उबटन करवाता अर्थात् उबटना मलवाता। उसके पश्चात् उष्ण, शीत और सुगन्धित यो तीन प्रकार के जल से स्नान करवाता, फिर विपुल अशनादि चार प्रकार का भोजन कराता। इस प्रकार श्रीदेवी के नहा लेने, तिलक व अन्य मागलिक कार्य करके भोजन कर लेने के पश्चात् अपने स्थान पर आकर कुल्ला तथा मुखगत लेप को दूर कर परम शुद्ध हो सुखासन पर बैठ जाने के बाद ही पुष्यनन्दी स्वय स्नान करता, भोजन करता था। तथा फिर मनुष्य सम्बन्धी सुख-भोग के अन्य कार्य करता था।

DEVOTION FOR MOTHER

24. King Pushyanandi was greatly devoted to his mother Shridevi Every morning he would go to mother Shridevi, wherever she was, an

touch her feet Then he would get her body massaged with *shatpaak* and *sahasrapaak* medicated and perfumed oils and pastes (made with mixtures of one hundred and one thousand herbs) He would also give her comfort and relaxation through four types of body-massage—bone stimulating, muscle stimulating, skin stimulating, and hair stimulating After that he would get her body cleansed by applying and rubbing perfumed powders. Then he would let her bathe with three kinds of water—lukewarm, cold, and fragrant Once all this was done he would offer her enough food of four kinds. He would take his bath and food only after Shridevi had taken her bath, performed auspicious rituals, eaten her food, washed her mouth and face and reclined on her seat Then he would commence his other daily activities including enjoying human comforts and pleasures

२५. तए णं तीसे देवदत्ताए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने-'एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते समाणे जाव विहरइ। तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं सिरिं देविं अग्गिप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए, ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रन्ना सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए' एवं संपेहेइ संपेहित्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी विहरइ।

२५. किसी समय मध्यरात्रि मे कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ताओ मे उलझी हुई (जागती हुई) देवदत्ता के हृदय मे यह सकल्प उत्पन्न हुआ कि 'यह पुष्यनन्दी राजा अपनी माता श्रीदेवी का परम भक्त बना हुआ है। उसी की सेवा मे लगा रहता है। इस अवक्षेप-विघ्न के कारण मै पुष्यनन्दी राजा के साथ पर्याप्त रूप से मनचाहे मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगो का उपभोग नही कर पाती हूँ। इसलिए अब मुझे यही करना योग्य है कि किसी प्रकार अग्नि, शस्त्र, विष अथवा मत्र के प्रयोग से श्रीदेवी का प्राणान्त कर महाराज पुष्यनन्दी के साथ मनुष्य सम्बन्धी विषयभोगो का मन इच्छित रूप मे उपभोग करूँ।' ऐसा विचार कर वह श्रीदेवी को मारने के लिए अन्तर-(जिस समय राजा का आगमन न हो), छिद्र-(राजपरिवार के किसी सदस्य की जिस समय उपस्थिति न हो) और विवर-(जिस समय श्रीदेवी बिल्कुल अकेली हो ऐसे अवसर) की प्रतीक्षा करने लगी।

25. Once around midnight, engrossed in family problems, Devadatta thought—"King Pushyanandi is very much devoted to his mother Shridevi and spends all his time taking her care This distraction does not allow me to enjoy human comforts and conjugal pleasures with king Pushyanandi fully and to the desired extant Therefore, it is better that I kill Shridevi somehow by means of fire, weapon, poison, or mantra and enjoy human

comforts and conjugal pleasures with king Pushyanandi fully and to my entire satisfaction." With these thoughts she looked forward to an opportunity to kill Shridevi when the king did not visit, when no other royal person was there and when even an ordinary person was also not there (she was absolutely alone)

देवदत्ता का षड्यंत्र

२६. तए णं सा सिरीदेवी अन्नया कयाइ मज्जाइया विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था। इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सिरिं देविं मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासेत्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवइ।

तए णं सा सिरीदेवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता।

२६. किसी समय स्नान आदि करके श्रीदेवी एकान्त मे अकेली अपनी शय्या पर सुखपूर्वक सो रही थी। इधर मौका पाकर देवदत्ता देवी भी जहाँ श्रीदेवी थी वहाँ पर आती है। श्रीदेवी को एकान्त मे शय्या पर सुखपूर्वक सोई हुई देखती है। देखकर दिशा का अवलोकन करती है अर्थात् कोई मुझे देख तो नही रहा है, यह निश्चय करने के लिए चारो तरफ देखती है। उसके बाद जहाँ भक्तगृह-रसोई थी, वहाँ पर जाती है और जाकर लोहे का डण्डा लेती है। लोहे के उस डण्डे को तपाती है, तपाकर अग्नि के समान जाज्वल्यमान या खिले हुए किशुक-केसू के फूल के समान लाल अग्नि रूप बने हुए उस लोहे के दण्ड को सडासी से पकडकर जहाँ श्रीदेवी सोई थी वहाँ आती है। आकर श्रीदेवी के अपान-गुदास्थान मे प्रविष्ट करा देती है। तब श्रीदेवी बडे भयकर आर्त स्वर से चिल्लाती हुई मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

DEVADATTA'S CONSPIRACY

26. Once after her bath Shridevi was sleeping comfortably in her bed alone and in solitude Availing the opportunity, Devadatta came to the room and found Shridevi sleeping comfortably in her bed She looked around to ensure that no one was there to see her. Then she went to the kitchen, picked up an iron rod and heated it When it was red hot like *Kimshuk* flower (Butea frondosa) and fire she picked it with a pair of tongs and came where Shridevi was sleeping. Here she thrust the red hot iron rod into Shridevi's anus With a terrible pathetic shriek Shridevi died

२७. तए णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं तओ अवक्कममाणिं पासंति, पासेत्ता जेणेव सिरीदेवी तेणेव

उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरिं देविं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता 'हा हा अहो अकज्जं' इति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पूसनंदि रायं एवं वयासी—'एवं खलु, सामी ! सिरीदेवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया।'

तए णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणे अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया माइसोएण अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपग वरपायवे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए।

२७. श्रीदेवी की दासियाँ उस भयानक चीत्कार शब्दो को सुनकर दौडती है। जहाँ श्रीदेवी थी वहाँ आती है, तब वहाँ से देवदत्ता देवी को निकलती हुई–वापिस जाती देखती है। देखकर जिधर श्रीदेवी सोई हुई थी वहाँ आती है, वहाँ पर श्रीदेवी को प्राणरहित, चेष्टा रहित मृत अवस्था मे देखती है। देखकर–'हा ! हा ! अहो ! बडा अनर्थ हुआ' इस प्रकार कहकर रुदन, आक्रन्दन तथा विलाप करती हुई, जहाँ पर पुष्यनदी राजा था वहाँ पर जाती है। जाकर महाराज पुष्यनदी से इस प्रकार निवेदन करती है–हे स्वामिन् ! श्रीदेवी को देवदत्ता देवी ने अकाल मौत से मार डाला है।'

पुष्यनदी राजा उन दासियो से इस वृत्तान्त को सुन/समझ कर महान् मातृशोक से विह्वल होकर परशु से काटे हुए चम्पक वृक्ष की भाँति धडाम से भूमि पर गिर पडा।

27. Hearing the terrible shriek Shridevi's maids rushed to her room and saw Devadatta leaving The maids came to Shridevi's bed and found her lifeless, still and dead After seeing this they went to king Pushyanandi crying and wailing, and sobbing—"Oh ! Oh ! Alas ! Great misfortune has befallen us " They informed king Pushyanandi—"Sire ! Queen Devadatta has killed mother Shridevi "

Hearing and understanding what the maids told him, king Pushyanandi, grief stricken due to the loss of his mother, fell on the ground like an axed *Champak* tree

२८. तए णं सं पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे वीसत्थे समाणे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहेहिं मित्त जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्ढी सक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एतेणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ।

'तं एवं खलु, गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरापोराणाणं जाव विहरइ।'

२८. तदनन्तर कुछ समय के पश्चात् वह पुष्यनन्दी राजा आश्वस्त हुआ, होश मे आया। चित्त को शान्त किया। तब अनेक राजा, सार्थवाह तथा मित्रो परिजनो के साथ रुदन, आक्रन्दन कर ऊँचे स्वर से

रोता है। विलाप (आर्तस्वर मे हाय हाय) करता हुआ श्रीदेवी का महान् ऋद्धि तथा सत्कार सम्मान के साथ निष्कासन कृत्य–(मृत्यु–सस्कार) करता है। तत्पश्चात् क्रोध के आवेश मे रुष्ट, कुपित, अतीव क्रोधाविष्ट व रौद्ररूप धारण कर तथा लाल–पीला होता हुआ देवदत्ता देवी को राजपुरुषो से पकडवाता है। पकडवाकर इस पूर्वोक्त प्रकार से (जिसे तुम देखकर आये हो) 'यह वध्या–हतव्या है' ऐसी राजपुरुषो को आज्ञा देता है।

इस प्रकार निश्चय ही, हे गौतम ! देवदत्ता देवी अपने पूर्वकृत अशुभ पापकर्मो का फल पा रही है।

28. After some time king Pushyanandi regained his consciousness and composure In the company of many kings. . and so on up to. . caravan chiefs, friends and relatives he wept, wailed and sobbed loudly Sobbing thus he performed the last rites of Shridevi with all state honour Having done all this his anger surfaced with great intensity, giving him a terrifying look Gnashing his teeth he got Devadatta caught by guards He then sentenced her to death—"She is to be taken to gallows and killed " (As you have seen)

Thus, Gautam ! Devadatta ! suffers the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past.

देवदत्ता का भविष्य

२९. देवदत्ता णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो। वणस्सई। तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नयरे हंसत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गंगपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो।

॥ नवम अज्झयणं समत्तं ॥

२९. (यह सब वृत्तान्त सुनकर) गौतम स्वामी ने प्रश्न किया–अहो भगवन् ! देवदत्ता देवी यहाँ से काल करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

भगवान महावीर ने कहा–हे गौतम ! देवदत्ता देवी ८० वर्ष की पूर्ण आयु भोग कर काल करके इस रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथिवी–नरक मे नारक पर्याय मे उत्पन्न होगी। प्रथम अध्ययन मे कहे अनुसार अनेक योनियो मे ससारभ्रमण करती हुई यावत् वनस्पति, निम्ब आदि कटु–वृक्षो तथा कटुदुग्ध वाले अर्कादि पौधो मे लाखो बार उत्पन्न होगी। तदनन्तर वहाँ से निकलकर गगपुर नगर मे हस रूप से उत्पन्न होगी। वहाँ शाकुनिको–पक्षियो का शिकार करने वालो द्वारा वध किये जाने पर वह उसी गगपुर मे ही श्रेष्ठिकुल मे

पुत्ररूप मे जन्म लेगी, वहाँ उसका जीव सम्यक्त्व बोधि को प्राप्त करेगा। वहाँ से सौधर्म नामक प्रथम देवलोक मे उत्पन्न होगा। वहाँ से च्युत होकर महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होगा। वहाँ चारित्र ग्रहण कर यथावत् पालन कर सिद्धि को प्राप्त करेगा। सर्व कर्मों से मुक्त होगा।

निक्षेप—श्री सुधर्मा स्वामी ने उपसहार करते हुए कहा–हे जम्बू ! निर्वाण–प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने नौवे अध्ययन का यह अर्थ कहा है।

॥ नवम अध्ययन समाप्त ॥

DEVADATTA'S FUTURE

17. (Hearing these details) Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After her death where will this Devadatta go ? Where will she be reborn ?

Bhagavan replied—Gautam ! After completing her life-span of eighty years, Devadatta will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha From there she will follow the cycles of rebirths as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra and so on up to will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all plants including the bitter ones Coming out from there she will be born as a swan in Gangapur city After being killed by some bird catchers she will reincarnate as a son in a merchant family of the same Gangapur city There he will gain righteousness (*samyaktva*) From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately At last he will get enlightened and attain the status of Siddha, shedding all his *karmas* and ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE NINTH CHAPTER ●

प्रथम श्रुतस्कन्ध : दशम अध्ययन
अंजू (दुराचारिणी नारी)

उपोद्‌घात

इस अध्याय मे दुराचारिणी स्त्री के मुक्र दुष्चरित्र के कटु फलो का वर्णन है। कथा संक्षिप्त होते हुए भी दुराचरण के त्याग की प्रभावी प्रेरणा प्रदान करती है।

FIRST SHRUTSKANDH : TENTH CHAPTER
ANJU (a corrupt woman)

INTRODUCTION

This chapter narrates the bitter fruits of unchecked licentious activities of a corrupt woman This is a brief but effective story providing inspiration to avoid lechery.

दशम अध्ययन
TENTH CHAPTER

प्रस्तावना

१. दसमस्स उक्खेवो–'जइ णं भंते !'

१. भंते ! श्रमण भगवान महावीर ने दशम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है, इत्यादि, उत्क्षेप–प्रस्तावना पूर्ववत् जानना चाहिए। सुधर्मा स्वामी बोले–

FOREWORD

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! When this is the text and meaning of the ninth chapter, what is the text and meaning of the tenth chapter of *Duhkha-vipaak* as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?) Sudharma Swami replied—

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वद्धमाणपुरे नामं नयरे होत्था, अड्ढे ! पियंगू नामं भारिया ! अंजू दारिया जाव उक्किट्ठसरीरा। समोसरणं, परिसा जाव पडिगया।

२. हे जम्बू ! उस काल तथा उस समय मे वर्द्धमानपुर नाम का एक नगर था। वहाँ विजयवर्द्धमान नामक उद्यान था। उसमे मणिभद्र यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ विजयमित्र नामक राजा राज्य करता था। धनदेव नामक एक सार्थवाह रहता था, जो धनाढ्य और प्रतिष्ठित था। उसके प्रियगु नाम की भार्या थी। उनकी सुन्दर शरीरवाली अजू नामक एक बालिका थी। उस समय विजयवर्द्धमान नामक उद्यान मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। परिषद् धर्मदेशना सुनने आई और धर्मोपदेश सुनकर वापिस चली गयी।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Vardhamanapur Outside this town was a garden named Vijayavardhan in which was a temple of Manibhadra Yaksh In that city ruled a king named Vijayamitra In Vardhamanapur city lived a merchant named Dhanadev Gathapati who was very rich and respected The name of his wife was Priyangu. They had a daughter named Anju who was perfectly endowed and beautiful During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived at Vijayavardhan garden People came and *Bhagavan* gave his discourse to all after which the masses returned home

अंजू का वर्तमान भव

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे जाव अडमाणे जाव विजयमित्तस्स रन्नो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे पासइ एगं इत्थियं सुक्कं, भुक्खं निम्मंसं, किडिकिडियाभूयं, अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं कूवमाणिं पासइ, पासित्ता चिंता तहेव, जाव एवं वयासी–'सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसी ?' वागरणं !

३. उस समय भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य श्री गौतमस्वामी भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए विजयमित्र राजा के घर की अशोकवाटिका के समीप से जा रहे थे। तब वहाँ एक स्त्री को देखा, जो शरीर से सूखी, भूखी, निर्मांस (जिसके शरीर का माँस सूख गया हो) किटि–किटि शब्द करती हुई (जिसकी शरीर–अस्थियाँ कडकड शब्द कर रही हो) वह दुर्बल व कृश काय इतनी थी कि उसकी चमडी हड्डियो से चिपटी हुई जैसी लगती थी तथा नीली साडी पहने हुए, कष्टमय, करुणोत्पादक, दीनतापूर्ण वचन बोलकर पुकार रही थी। यह करुण दृश्य देखकर गौतम स्वामी विचार करते है, उनके मन मे चिन्तन उठता है, "यह ऐसी नारकीय वेदना क्यो भोग रही है" ? गौतम स्वामी भगवान के निकट आकर पूछते है–'भगवन् ! यह स्त्री पूर्वभव मे कौन थी ?' इसके उत्तर मे भगवान महावीर स्वामी कहने लगे–

PRESENT BIRTH OF ANJU

3. During that period of time, while going to collect alms, Gautam Swami, the senior disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, was passing in the vicinity of the garden outside the palace of king Vijayamitra There he saw a woman who was lean, famished, emaciated (devoid of flesh), producing rattling sound (having rattling skeleton), and so weak and cadaverous that her bones appeared to be covered with skin alone She wore a blue dress and was uttering distressful, pathetic and plaintive sounds and words Seeing this pathetic scene Gautam Swami thought—"Why she is suffering such infernal agony ?" He came to Bhagavan Mahavir and asked—"*Bhante* ! Who was this woman in her last birth ? In reply *Bhagavan* said—

अंजू का पूर्वभव : पृथ्वी श्री गणिका

४. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे इंदपुरे नामं नयरे होत्था। तत्थ णं इंददत्ते राया। पुढविसिरी नामं गणिया होत्था। वण्णो। तए णं सा पुढिविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे बहवे राई–सर जाव प्पभिइओ बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव अभिओगेत्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ।

४. हे गौतम उस काल (प्राचीन काल) मे इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारत वर्ष में इन्द्रपुर नाम का एक नगर था। वहाँ इन्द्रदत्त नाम का राजा राज्य करता था। इसी नगर में पृथ्वीश्री नाम की एक

गणिका रहती थी। उसका वर्णन कामध्वजा गणिका की ही तरह जान लेना चाहिए। इन्द्रपुर नगर मे वह पृथ्वीश्री गणिका अनेक ईश्वर, तलवर यावत् सार्थवाह आदि लोगो को अपनी सुन्दरता, हाव-भाव, अग प्रदर्शन, कला दिखाकर अपनी ओर आकृष्ट करती थी। यदि कोई इनसे बच जाता तो उसे वशीकरण सम्बन्धी चूर्णादि के प्रयोगो से अपने वश मे करके मनुष्य सम्बन्धी मनचाहे काम-भोगो का यथेष्ट रूप मे उपभोग करती हुई जीवन व्यतीत कर रही थी।

PAST BIRTH OF ANJU . PRITHVISHRI COURTESAN

4. Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Indrapur in Bharatvarsh area in Jambu continent A king named Indradatt was the ruler of that city In that city lived a courtesan named Prithvishri (description to be read as that of Kamadhvaja courtesan) In Indrapur city that Prithvishri courtesan enticed many kings and so on up to .. caravan chiefs by means of her beauty, gestures, display of body-parts, and her art Where she failed, she used magical powers and powders for seduction. She spent her time enjoying all human and carnal pleasures fully and as she desired

५. तए णं सा पुढिवीसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना।

५. इसप्रकार के कर्म, इसप्रकार की विद्या एव इसप्रकार के आचार वाली वह पृथ्वीश्री गणिका (अत्यन्त कामासक्ति के कारण) अत्यधिक पापकर्मो का उपार्जन कर ३५ सौ वर्ष की आयुष्य भोगकर कालमास मे काल करके छट्ठी नरकभूमि मे २२ सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकियो मे नारक रूप से उत्पन्न हुई।

5. Considering this kind of acts to be her duty, giving importance to, being well versed in, and being engrossed in such deeds that Prithvishri courtesan (due to lechery) continued to accumulate intense malevolent *karmas* Completing her life span of three thousand five hundred years she died and took rebirth as an infernal being in the sixth hell with a maximum life span of twenty two *Sagaropam*

वर्तमान भव

६. सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेह वद्धमाणपुरे नयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगु भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ना। तए णं सा पियंगु भारिया नवण्हं मासाणं दारिया पयाया। नामं अंजुसिरी। सेसं जहा देवदत्ताए।

६. वहाँ से निकलकर इसी वर्धमानपुर नगर में वह धनदेव नामक सार्थवाह की प्रियगु भार्या की कोख से कन्या रूप मे उत्पन्न हुई। तदनन्तर उस प्रियगु भार्या ने नव मास पूर्ण होने पर उस कन्या को जन्म दिया और उसका नाम अजुश्री रखा। उसका शेष वर्णन (नौवे अध्ययन मे वर्णित) देवदत्ता की तरह जान लेना चाहिए।

PRESENT LIFE

6. On leavıng the second hell, her soul was conceıved as a daughter ın the womb of Prıyangu, the wıfe of Dhanadev Sarthavaha ın thıs Vardhamanapur cıty On completıon of nıne months Priyangu gave bırth to a daughter who was named Anjushri. All other detaıls should be read as in case of Devadatta

७. तए णं से विजये राया आसवाहणियाए जहा वेसमणदत्ते तहा अंजु पासइ। नवरं अप्पणो अट्ठाए वरेइ, जहा तेयली जाव अंजूए भारियाए सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ।

७. किसी समय महाराज विजयमित्र अश्वक्रीडा के लिए जाते हुए अजुश्री के रूप लावण्य को देखकर राजा वैश्रमणदत्त की भाँति ही मुग्ध हो जाते है और फिर अपने लिए तेतलीपुत्र अमात्य (ज्ञातासूत्र मे वर्णन) की तरह उसकी माँग करते है। यावत् वे अजुश्री के साथ विवाह करके प्रासादो मे सानन्द विहरण करते है।

7. Once whıle kıng Vıjayamıtra was goıng for horse-rıdıng he saw the beauty and charm of Anjushrı He was attracted to her lıke kıng Vaıshramanadatt He then sought her hand ın marrıage lıke mınıster Tetalıputra (*Jnata Sutra*) . and so on up to He marrıed Anjushrı and lıved happıly ın hıs palace

८. तए णं तीसे अंजूए देवीए अन्नया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था। तए णं से विजये राया, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वद्धमाणपुरे नयरे सिंघाडग जाव एवं वयह—'एवं खलु, देवाणुप्पिया ! विजयस्स रन्नो अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए ! जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए। तस्स णं विजए राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसेंति।

८. किसी समय अजुश्री रानी के शरीर मे योनिशूल नामक रोग उत्पन्न हो गया। पता लगने पर विजय नरेश ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा-'तुम लोग वर्धमानपुर नगर मे जाओ और जाकर त्रिपथ, चतुष्पथ यावत् सामान्य मार्गों पर यह उद्घोषणा करो कि देवी अजुश्री को योनिशूल रोग उत्पन्न हुआ है। अत जो कोई वैद्य या वैद्यपुत्र, जानकार या जानकार का पुत्र, चिकित्सक या उसका पुत्र उस रोग को उपशान्त कर देगा, राजा विजयमित्र उसे विपुल धन-सम्पत्ति प्रदान करेगे।'

कौटुम्बिक पुरुष राजाज्ञा से उक्त उद्घोषणा करते हैं।

8. Once queen Anjushri was afflicted with acute vaginal pain. When king Vijaya came to know of this he called his attendants and said—"Beloved of gods ! Go and make this announcement loudly at every corner, crossings where three, four or more roads meet, main road and streets in Vardhamanapur City that queen Anjushri is suffering from acute vaginal pain Any *Vaidya* (qualified Ayurvedic doctor) and junior *Vaidya*, senior and junior *Jnayak* (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), and senior and junior *Chikitsak* (those who practiced medicine and surgery) who is able to cure that diseases will be amply and richly rewarded by king Vijayamitra

The servants made the announcement as told

९. तए णं ते बहवे वेज्जा वा ६ इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजये राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंजूए देवीए बहूहिं उप्पत्तियाहिं वेणइयाहिं कम्मियाहिं पारिणामियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए। तए णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति अंजुए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तए णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं विस्सराइं विलवइ।

एवं खलु गोयमा ! अंजू देवी पुरा पोराणाणं जाव विहरइ।

९. राजपुरुषो द्वारा की गयी इस प्रकार की उद्घोषणा को सुनकर नगर के बहुत से अनुभवी वैद्य, वैद्यपुत्र चिकित्सक, विजयमित्र आदि राजा के पास आते है। अपनी औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी बुद्धियो के द्वारा निरीक्षण-परीक्षण और निदान आदि करते हुए विविध प्रयोगो के द्वारा देवी अजूश्री के रोग को उपशान्त करने का प्रयत्न करते है, परन्तु उसके उपायो से अजूश्री का रोग शान्त नही हो सका। जब वे अनुभवी वैद्य आदि अजूश्री के रोग को शमन करने मे विफल हो गये, तब खिन्न, श्रान्त एव हतोत्साह होकर अपने-अपने घर को लौट गये।

तत्पश्चात् देवी अजूश्री उस योनिशूलजनित वेदना से अत्यन्त पीडित हुई सूकने लगी, भूखी रहने लगी और मास रहित होकर कष्ट कारक, करुणोत्पादक और दीनतापूर्ण शब्दो मे विलाप करती हुई समय बिताने लगी।

भगवान कहते है-हे गौतम ! इस प्रकार तुमने जिसे देखा है, यह रानी अजूश्री अपने पूर्वोपार्जित पाप कर्मो के फल भोगती हुई जीवन व्यतीत कर रही है।

9. Hearing this announcement by the state officials many healers (etc.) came to king Vijayamitra They did the diagnosis by employing their four kinds of wisdom, namely—*autpattiki buddhi* (intuitive wisdom), *vainayiki buddhi* (acquired wisdom), *karmaja buddhi* (practical wisdom), and *parinamiki buddhi* (deductive wisdom) Then they tried their best to cure ailing Anjushri by using various procedures However, they failed to do so. When these healers got exhausted (*shraant*), confused or mentally tired (*tant*), and disappointed (*paritant*) they returned from where they came.

Suffering from that excruciating vaginal pain, queen Anjushri went lean, famished, emaciated (devoid of flesh), and cadaverous She spent her time in this state uttering distressful, pathetic and plaintive sounds and words

Bhagavan added—Thus, Gautam ! Anju ! suffers the fruits of the extremely bad *karmas* acquired in the past (as you have seen).

भविष्य वृत्तान्त

१०. "अंजू णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ।'

'गोयमा ! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव वणस्सई। सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सव्वओभद्दे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ। पव्वज्जा। सोहम्मे।

"से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे जहा पढमे जाव सिज्झिहिइ, जाव अंतं काहिइ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

सेवं भंत। सेवं भंते ! त्ति बेमि।

१०. गौतम स्वामी ने प्रश्न किया–भगवन् ! अजू देवी यहाँ से मृत्यु प्राप्त करके कहाँ जायेगी ? कहाँ उत्पन्न होगी ?

भगवान ने उत्तर दिया–हे गौतम ! अजू देवी ९० वर्ष की पूरी आयु भोगकर काल मास मे काल करके इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के नारकों में नारकी रूप से उत्पन्न होगी। उसका शेष ससार–परिभ्रमण प्रथम

अध्ययन की तरह जानना चाहिए। यावत् वनस्पति आदि मे लाखो बार उत्पन्न होगी। वहाँ की भव-स्थिति को पूर्ण कर इसी सर्वतोभद्र नगर मे मयूर के रूप मे जन्म लेगी। वहाँ वह मोर, शिकारियो द्वारा मारा जाने पर सर्वतोभद्र नगर के ही एक श्रेष्ठिकुल मे पुत्र रूप से उत्पन्न होगा। वहाँ बालभाव को पार कर युवावस्था प्राप्त होने पर वह तथारूप स्थविरो से बोधिलाभ-सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा। प्रव्रज्या-दीक्षा ग्रहण कर मृत्यु के बाद सौधर्म देवलोक मे उत्पन्न होगा।

गौतम-भगवन् ! देवलोक की आयु तथा स्थिति पूर्ण हो जाने के बाद वह जीव कहाँ जायेगा? कहाँ उत्पन्न होगा?

भगवान-गौतम ! वह महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेगा। फिर दीक्षा लेकर सिद्ध बुद्ध होकर सब दु खो का अन्त करेगा।

हे जम्बू ! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने दु खविपाक नामक दशम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादन किया है।

जम्बू-भगवन् ! आपका यह कथन सत्य है। जैसा आपने कहा वह यथार्थ है।

ANJU'S FUTURE

10. (Hearing these details) Gautam Swami asked—"*Bhante* ! After his death where will this Anju go ? Where will she be reborn ?"

Bhagavan replied—Gautam ! After completing her life-span of ninety years, Anju will die and reincarnate as an infernal being in the first hell named Ratnaprabha From there she will follow the cycles of rebirth as mentioned in the first chapter in context of Mrigaputra and so on up to will be born millions of times in all hells, as all animals, and as all plants Coming out from there she will be born as a peacock in Sarvatobhadra city After being killed by some hunters she will reincarnate as a son in a merchant family of the same Sarvatobhadra city There he will gain righteousness (*samyaktva*) From there he will reincarnate in the first heaven named Saudharm Devlok

Gautam—"*Bhante* ! After completing the life and state of Devlok where will that soul go ? Where will he be born ?"

Jambu ! Descending from there he will take birth in Mahavideh area and follow ascetic conduct immaculately At last he will get enlightened and attain the status of *Siddha* shedding all his *karmas* and ending all misery

Sudharma Swamı concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nırvana, has narrated thıs text and meanıng of the tenth chapter of *Duhkha-vıpaak* So I state."

Jambu—"*Bhante* ! What you say ıs, ındeed, true What you saıd ıs a fact"

उपसंहार

भगवान महावीर की वाणी का एक शाश्वत सत्य है–**सव्वं सुचिण्णं सफल नराणं**–प्राणियो के शुभ-अशुभ उपार्जित सभी कर्म सफल है–वे अपना फल अवश्य देते है। **दुचिण्णा कम्मा दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति। सुचिण्णा कम्मा सुह फल विवाग सजुत्ता भवंति**–हिंसा, असत्य, चोरी, व्यभिचार, धन–लोभ आदि प्रवृत्तियो से बँधे अशुभकर्म–सदा अशुभ और दु खदायी फल देते है। तप–त्याग–सयम, दान–सेवा आदि वृत्तियों का आचरण शुभकर्म है और इनसे बँधे शुभकर्म सदा सुख देने वाले होते है।

भगवान महावीर के उक्त वचन **सव्व सुचिण्ण सफलं नराण** का सम्यग् सोदाहरण प्रतिपादन इस विपाक श्रुत आगम मे प्रथम दु खविपाक तथा दूसरा सुख विपाक नामक श्रुत स्कन्धो मे हुआ है।

ससार मे जिस प्रकार प्रकाश का महत्त्व अधकार के कारण से है, उसी प्रकार सुख का महत्त्व भी दु ख के कारण से है। दु ख है, तभी तो जीव उससे घबराकर सुख की लालसा करता है और सुख पाने का प्रयत्न करता है। मृत्यु है, तभी उससे बचने के प्रयत्न मे अमरता की खोज की जाती है। इसलिए प्रस्तुत आगम विपाक श्रुत मे अशुभ एव शुभ कर्मो के फलो का दिग्दर्शन कराया गया है। इसमे पहले अशुभ कर्मों के कटु फलो का एक से एक बढकर रोमाचकारी वर्णन है, जिसे पढ–सुनकर ही हृदय काँप उठता है। दु ख विपाक श्रुत का यह वर्णन समाप्त हुआ। अब अगले श्रुतस्कध सुख विपाक मे शुभ कर्मों के शुभ फलो का वर्णन है।

॥ दशम अध्ययन सम्पूर्ण ॥

॥ दुःखविपाक का प्रथम श्रुतस्कन्ध समाप्त ॥

CONCLUSION

There ıs an all pervadıng truth ın Bhagavan Mahavır's sermon—All good or bad *karmas* acquıred by beıngs, essentıally bear fruıts. Bad *karmas* acquired through vıolence, falsıty, stealıng, lechery, greed, and other base attıtudes and indulgences always bear bad and paınful fruıts Austerıtıes, detachment, dıscipline (self-control), charıty, servıce and other noble attıtudes and ındulgences cause acquısıtıon of good *karmas* that always bear good and happıness causıng fruıts

In the two parts of this *Agam Vipaak Shrut—Duhkha-vipaak* and *Sukha-vipaak*—Bhagavan Mahavir has established the aforesaid statement and elaborated it with examples

In this world darkness emphasizes the importance of light. In the same way sorrow emphasizes the importance of happiness. Because sorrow exists, a being gets afraid of it and desires for happiness, endeavours for availing happiness Because death exists, a being searches for immortality to avoid death That is the reason that in this *Agam, Vipaak Shrut,* the fruits of good and bad *karmas* have been revealed It first of all states hair raising description of the bitter fruits of bad *karmas* It sends shivers through the spine while reading or listening to it The narration of *Duhkha-vipaak* concludes here Now the second part *Sukha-vipaak* details the fruits of good karmas

● END OF THE TENTH CHAPTER ●

● END OF DUHKHA-VIPAAK, THE FIRST SHRUTSKANDH ●

द्वितीय श्रुतस्कन्ध : सुखविपाक
सुबाहुकुमार : प्रथम अध्ययन

उपोद्घात

दु ख विपाक के दस अध्ययनो मे हिंसा, असत्य, व्यभिचार आदि दुष्कर्मो के दारुण फलो का दिग्दर्शन कराकर उनसे विरत होने की प्रेरणा है। दु खो से मुक्ति की कामना मे सुख की कामना स्वय ही निहित होती है। सुख का मूल कारण है, शुभ कर्मों का उपार्जन। शुभ कर्मों का उपार्जन धर्म के द्वारा किया जाता है। अत यह माना जाता है कि सुख का मूल धर्म ही है।

शास्त्र मे धर्म के चार प्रकार बताये है, दान, शील, तप और भावना। इनमे पहला मार्ग है दान। दान के दस भेदो मे मुख्य है धर्मदान। धर्मदान का एक अग है–सुपात्रदान। अर्थात् उच्च भावो के साथ त्यागी, तपस्वी आत्माओ को शुद्ध दान देना। इस दान की अपूर्व महिमा है। दान के फलस्वरूप अनेको आत्माओ ने, जीवन मे सुख, सौभाग्य, समृद्धि और धर्ममय जीवन की साधना का सुअवसर प्राप्त किया है, प्रस्तुत सुखविपाक सूत्र के दस अध्ययनो मे मुख्य रूप मे, दानधर्म की महिमा का कथन है। दान के प्रभाव से जीवन मे कितना सुख–सौभाग्य प्राप्त होता है। इसके जीवत उदाहरण है यह दसो अध्ययन।

इनमे प्रथम अध्ययन का नाम है सुबाहुकुमार। सुबाहुकुमार को जीवन मे इतनी सुन्दरता, रमणीयता, लोकप्रियता, वैभव और सुख–सौभाग्य की प्राप्ति हुई कि जिसे देखकर गणधर गौतम जैसे महाज्ञानी महातपस्वी को भी आश्चर्य हुआ और उन्होने भगवान से इसका कारण पूछा। भगवान महावीर ने सुबाहुकुमार के सुख–सौभाग्य के कारणो पर प्रकाश डालकर प्रत्येक भव्य आत्मा को धर्म आराधना की प्रेरणा दी है। यही इस सुखविपाक श्रुत का सन्देश है।

SECOND SHRUTSKANDH : SUKHA-VIPAAK
SUBAHU KUMAR : FIRST CHAPTER

INTRODUCTION

The ten chapters of *Duhkha-vipaak* have stories that inspire us to avoid violence, falsity, corruption and other such evil activities by vividly describing their terrible consequences The desire for happiness is inherent within the wish to be rid of sorrows The basic source of happiness is acquisition of good *karmas* which in turn is done through *dharma* (righteousness and piety). That is the reason for the belief that *dharma* is the source of happiness

Four kinds of *dharma* have been mentioned in the scriptures—*daan* (charity), *sheel* (morality), *tap* (austerity), and *bhaavana* (pious attitude) Of these the first path is charity Most important among the ten kinds of charity is *dharma-daan* (pious charity) One of the limbs of pious charity is *supatra daan* (charity to the deserving) This specifically means 'to offer pure things or services with noble feelings to the lofty individuals who have renounced the world and are practicing austerities' The greatness of this charity is unparalleled As a result of such charity many people have gained happiness, good fortune, and wealth as well as an opportunity to lead a pious and righteous life In the ten chapters of this *Sukha-vipaak* the glory of pious charity been elaborated These ten chapters present lively examples of the extant of happiness and good fortune gained through charity

Of these the first chapter is titled Subahu Kumar This person gained so much beauty, charm, popularity, wealth, happiness and good luck in life that astonished even a great sage and spiritualist like Ganadhar Gautam So much so that he asked about its reason from Bhagavan Mahavir Throwing light on the source of Subahu Kumar's happiness and good luck, *Bhagavan* provided inspiration for every pious soul to follow the path of *dharma*. This, indeed, is the message of *Sukha-vipaak Shrut*

प्रथम अध्ययन
FIRST CHAPTER

प्रस्तावना

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सुहम्मे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा–

सुबाहू भद्दनंदी य, सुजाए य सुवासवे।
तहेव जिणदासे य धणवई य महब्बले॥
भद्दनंदी महच्चंदे वरदत्ते तहेव य॥

१. उस काल उस समय राजगृह नगर के समीप गुणशील नामक चैत्य था। गणधर आर्य सुधर्मा स्वामी पधारे। उनकी सेवा मे सलग्न आर्य जबू स्वामी ने पूछा–भते ! मोक्ष को सप्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने दु खविपाक का यह (पूर्वोक्त) अर्थ कहा है, तो सुखविपाक का क्या अर्थ–भाव बताया है ?

आर्य जम्बू की जिज्ञासा के उत्तर मे श्रीसुधर्मा स्वामी बोले–हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के दस अध्ययन प्रतिपादित किये है। जिनके नाम इस प्रकार है–

(१) सुबाहु, (२) भद्रनदी, (३) सुजात, (४) सुवासव, (५) जिनदास, (६) धनपति (७) महाबल, (८) भद्रनदी, (९) महचद्र, और (१०) वरदत्त।

FOREWORD

1. During that period of time there was a city called Rajagriha near which was a *chaitya* named Gunasheelak Ganadhar Arya Sudharma Swami arrived there Jambu Swami, involved in his service, asked—"*Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained liberation, has preached the aforesaid text and meaning of *Duhkha-vipaak* then what according to him is the text and meaning of *Sukha-vipaak* ?"

In reply Sudharma Swami said—"Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir has preached ten chapters of *Sukha-vipaak*. They are—

(1) Subahu, (2) Bhadranandı, (3) Sujaat, (4) Suvasava, (5) Jınadas, (6) Dhanapatı, (7) Mahabal, (8) Bhadranandı, (9) Mahachandra, and (10) Varadatt "

२. 'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी–

२. हे भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के सुबाहुकुमार आदि दश अध्ययन कहे है तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

उत्तर मे श्रीसुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार कहा–

2. *Bhante* ! When Shraman Bhagavan Mahavır has preached ten chapters of *Sukha-vıpaak*, includıng Subahu Kumar, then what ıs the text and meanıng of the first chapter ?

Arya Sudharma replıed—

३. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था–रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिसीसस्स नयरस्स बहिया उत्तर–पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय–पुप्फ–फल–समिद्धे। तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, दिव्वे.।

तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था, महया तस्स णं अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीपामोक्खा देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था।

३. हे जम्बू ! उस काल उस समय मे हस्तिशीर्ष नाम का एक बडा विशाल भवनादि युक्त, स्वचक्र–परचक्र के भय से मुक्त, धन–धान्यादि से परिपूर्ण एव व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध नगर था।

उस नगर के ईशान कोण मे सभी ऋतुओ मे फलने–फूलने वाले फल–पुष्पादि से युक्त पुष्पकरण्डक नाम का एक उद्यान था। उस उद्यान मे कृतवनमालप्रिय नामक यक्ष का यक्षायतन था। जो सुन्दर और बहुजन मान्य था।

उस नगर मे अदीनशत्रु नामक राजा राज्य करता था, जो राजाओ मे प्रभावशाली था। अदीनशत्रु नरेश के अन्त पुर मे एक हजार रानियाँ थी, जिनमे मुखिया पटरानी थी–धारिणी देवी।

3. Jambu ! During that perıod of tıme there was a large cıty named Hastıshırsha. It was rıch, prosperous and secured wıth respect to buildıngs, wealth, trade and governance

In the north-eastern direction (*Ishan Kone*) outside this city was a garden named Pushpakarandak having trees bearing all season flowers and fruits. In that garden there was a temple of Kritavanamalapriya Yaksh. It was beautiful and very popular.

That city was ruled by king Adeenashatru who was highly influential among kings. He had one thousand queens in his inner palace Chief among them was queen Dharini Devi

सुबाहु का गृहस्थजीवन

४. तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे। जहा मेहस्स जम्मणं तह भाणियव्वं जाव सुबाहुकुमारे अलंभोगसमत्थे यावि होत्था।

तए णं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं जाव अलंभोगसमत्थं वा वि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं कारवेंति अब्भुग्गयमूसियपहसियाइं। एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महाबलस्स रन्नो णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति। तहेव पंचसइओ दाओ, जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ।

४. किसी एक समय राजा की महारानी के योग्य वासभवन–(महल) मे शयन करती हुई धारिणी देवी ने सिह का स्वप्न देखा। ज्ञाताधर्मकथाग सूत्र मे जिस प्रकार मेघकुमार के जन्म का वर्णन है, उसी प्रकार सुबाहु के जन्म आदि का वर्णन भी जान लेना चाहिए। (जन्म महोत्सव, कला अध्ययन आदि का सभी वर्णन मेघकुमार की तरह जानना चाहिए।) सुबाहुकुमार युवा हुआ, सासारिक कामभोगो का उपभोग करने मे समर्थ हो गया।

जब सुबाहुकुमार के माता–पिता ने उसे बहत्तर कलाओ मे कुशल तथा भोग भोगने मे समर्थ (शारीरिक एव मानसिक दृष्टि से योग्य) हुआ जाना, तब उन्होने पाँच सौ प्रासादावतसक–(जिस प्रकार आभूषणो में मुकुट सर्वोत्तम आभूषण होता है, उसी प्रकार महलो मे जो महल उत्तम–कलापूर्ण होता है उसे प्रासादावतंसक कहा जाता है) उत्तम पाँच सौ महलो का निर्माण करवाया जो अत्यन्त ऊँचे, भव्य एव सुन्दर थे। उन प्रासादो के मध्य मे एक विशाल भवन बनवाया। महाबल की ही तरह उसका विवाह हुआ। सुबाहुकुमार के विवाह मे विशेषता यह थी कि पुष्पचूला आदि पाँच सौ श्रेष्ठ राजकन्याओ के साथ एक ही दिन मे उसका विवाह कर दिया गया। इसी तरह माता–पिता द्वारा पाँच सौ वस्तुओ का प्रीतिदान–दहेज–(उपहार) उसे विवाहोपलक्ष्य मे दिया गया। (इन उपहारो में श्रेष्ठ आभूषण, वस्त्र आदि से लेकर प्रतिदिन उपयोग की छोटी–छोटी वस्तुएँ भी रहती हैं।) सुबाहुकुमार उन सुन्दर प्रासादो में निवास करता था। जहाँ हर समय मृदग बजाये जा रहे थे, नाट्य–सगीत आदि हो रहे थे। वह मानव जीवन के सुखो का उपभोग करता हुआ सुखपूर्वक रहता था।

FAMILY LIFE OF SUBAHU

4. Once while sleeping in her regal palace, Dharini Devi saw a lion in her dream The story of the birth of Subahu should be read as that of Meghakumar mentioned in *Jnatadharmakathanga Sutra* (So should be read the description of his birth ceremony, education, etc) Subahu Kumar attained youth and became capable of enjoying worldly and carnal pleasures

When his parents realized that Subahu Kumar had become proficient in seventy two arts and had attained desired maturity to enjoy all the pleasures of life, they got constructed five hundred *Prasadavatamsak* (most exclusive, as the crown is among ornaments) palaces, which were lofty, grand, and beautiful. In the middle of these palaces he got constructed a gigantic palace Like Mahabala, Subahu Kumar was also married The unique thing about Subahu Kumar's marriage was that he was married to five hundred very beautiful princesses in one day Following the same tradition, the parents gave five hundred sets of things as dowry (These gifts included exclusive ornaments, garments, and other large and small household things.) Subahu Kumar resided in these beautiful palaces that reverberated with sound of drums and music as well as dramas He lived happily enjoying all human pleasures and comforts

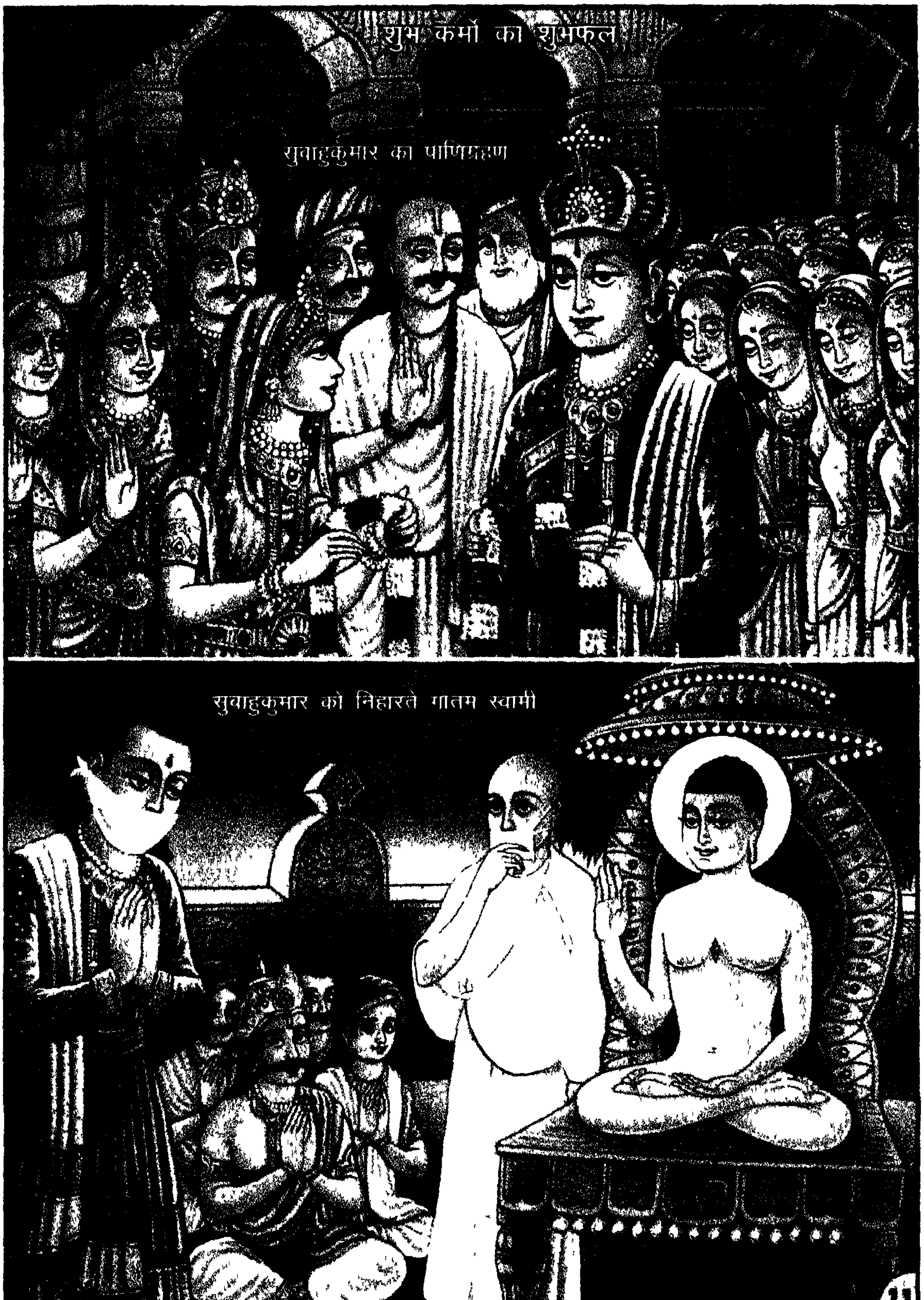
सुबाहु का धर्म–श्रवण

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। अदीणसत्तू जहा कूणिओ निग्गओ सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए, जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा गया।

५. किसी एक समय विहार करते हुए श्रमण भगवान महावीर हस्तिशीर्ष नगर मे पधारे। नगर की जनता धर्मदेशना सुनने के लिए आई। जैसे राजा कूणिक निकला था, उसी प्रकार अदीनशत्रु राजा भी बडे समारोह के साथ भगवद्दर्शन तथा देशना श्रवण करने के लिए निकला। सुबाहुकमार भी जमालिकुमार की भाँति भगवान् के दर्शनार्थ रथ मे बैठकर गया। भगवान् ने धर्म का प्रतिपादन किया। परिषद् और राजा धर्म देशना सुनकर वापस लौट गये।

SUBAHU ATTENDS DISCOURSE

5. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Hastishirsha city People of the city came to attend his discourse. Like king Kunik, king Adeenashatru also came out to pay homage and attend the discourse with great pomp and show Like Jamali Kumar, Subahu Kumar also went to pay homage to *Bhagavan* riding a chariot. *Bhagavan* gave his sermon, after which the king and the people dispersed


शुभ कर्मों का शुभफल
सुबाहुकुमार का पाणिग्रहण
सुबाहुकुमार को निहारते गौतम स्वामी

चित्र परिचय-११

Illustration No. 11

पुण्यशाली सुबाहुकुमार

दृश्य–१

हस्तिशीर्ष नगर के राजकुमार सुबाहु का रूप अत्यन्त रमणीय तथा सबका मन-मोहने वाला था। पॉच सौ राजकुमारियों के साथ उसका विवाह होता है।

दृश्य–२

एक समय भगवान महावीर हस्तिशीर्ष नगर मे पधारे। सुबाहुकुमार भगवान की वन्दना करने आता है। देशना सुनकर उसने प्रभु से श्रावक धर्म ग्रहण किया।

गणधर गौतम सुबाहकुमार को देखकर सोचते है यह राजकुमार अत्यन्त इष्ट, प्रिय वल्लभ दर्शनीय लगता है। इसका रूप लावण्य अदभुत है। वाणी अत्यन्त मधुर प्रियकारी है। सब लोक इसको आदर मान दे रहे है। ऐसी विशिष्ट मानवीय ऋद्धि-सौन्दर्य-पुण्याई इसे किन शुभ कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुई? अवश्य ही इसने पूर्व जन्म मे कोई विशेष सत्कर्म किये होग ?

गणधर गौतम भगवान से पूछते है।

श्रुतस्कन्ध १, २ अ १ सूत्र ८

MERITORIOUS SUBAHU KUMAR

SCENE-1

Subahu, the prince of Hastisheersh city, was very handsome and charming He got married to five hundred princesses

SCENE-2

Once Bhagavan Mahavir came to Hastisheersh city Subahu Kumar came to pay homage to *Bhagavan* After the discourse he accepted *Shravak Dharma*

Seeing Subahu Kumar, Gautam Swami thinks--This prince is very beautiful, adorable and attractive He is astonishingly beautiful and charming His voice is very sweet and enticing Every one is giving him respect and honour What pious deeds have resulted in such grand human opulence ? He must have done some highly meritorious deeds in his past birth

Gautam Swami asks Bhagavan Mahavir

—Sec II, Ch 1, Sutra 4

६. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, वंदित्ता नमंसइ, नमंसित्ता एवं वयासी—'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव प्पभिईओ मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए; अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि।''

''अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।''

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ। पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

६. वह सुबाहुकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मकथा सुनकर तथा उस पर मनन करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ। सुबाहुकुमार उठा, उठकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दन, नमस्कार करके कहने लगा—'भगवन् ! मै निर्ग्रंथ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ यावत् जिस तरह आपके श्रीचरणो मे अनेको राजा, ईश्वर सार्थवाह आदि मुण्डित होकर तथा गृहस्थावस्था त्याग कर अनगार धर्म मे दीक्षित हुए है, अर्थात् राजा, ईश्वर आदि ने पच महाव्रतो को स्वीकार किया है, वैसे मै मुण्डित होकर घर त्याग कर अनगार अवस्था धारण करने मे समर्थ नही हूँ। अत मै आप द्वारा प्ररूपित पाँच अणुव्रतो तथा सात शिक्षाव्रतो वाले बारह प्रकार के गृहस्थ धर्म को अगीकार करना चाहता हूँ।''

भगवान् ने कहा—''देवानुप्रिय ! जैसे तुमको सुख हो वैसे करो, किन्तु इस शुभ कार्य मे विलम्ब या विघ्न मत करो।''

तब सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान महावीर के समक्ष पाँच अणुव्रतो और सात शिक्षाव्रतो वाले बारह प्रकार के गृहस्थधर्म को स्वीकार किया। फिर उसी रथ पर सवार हुआ और सवार होकर अपने घर की दिशा मे वापस चला गया।

ACCEPTING THE HOUSEHOLDER'S CODE

6. Listening to and contemplating on the discourse of Shraman Bhagavan Mahavir, that Subahu Kumar was very happy Subahu Kumar stood up and, after paying homage and obeisance, said—"*Bhante* ! I have faith in the word of the *Nirgranth* (one who is free of all knots, inner and outer) At your pious feet many kings, influential and rich persons (*ishvar*) and so on up to and caravan chiefs (*sarthavaha*) have been initiated into the *Anagar Dharma* (the religion of the homeless ascetics;

Jain religion) after renouncing their households and tonsuring their heads. In other words, they have accepted the code of five great vows (*Panch Mahavrat*) But I am not capable enough to renounce my household, tonsure my head and embrace asceticism. Therefore I want to accept the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*)

Bhagavan said—"Beloved of gods ! Do as you please and avoid languor when doing a good deed "

Then Subahu Kumar accepted the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*) before Bhagavan After that he returned home riding his chariot.

गौतम की सुबाहुविषयक जिज्ञासा

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव एवं वयासी–"अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे, इट्ठरूवे,कंते, कंतरूवे, पिये, पियरूवे, मणुन्ने, मणुन्नरूवे, मणामे, मणामरूवे, सोमे, सोमरूवे, सुभगे, सुभगरूवे, पियदंसणे सुरूवे। बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे जाव सुरूवे। साहुजणस्स वि य णं भंते सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे जाव सुरूवे।

सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि किन्ना लद्धा ? किन्ना पत्ता ? किन्ना अभिसमन्नागया ? के वा एस आसी पुव्वभवे ?" जाव (किं नामए वा किं वा गोत्तेणं ? कयरंसि गामंसि वा संनिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं वयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता) अभिसमन्नागया ?

७ उस समय श्रमण भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति गौतम अनगार ने इस प्रकार पूछा–'अहो भगवन् ! यह सुबाहुकुमार बडा ही इष्ट, इष्टरूप, कान्त, कान्तरूप, प्रिय, प्रियरूप, मनोज्ञ,मनोज्ञरूप, मनोम, मनोमरूप, सौम्य, सुभग, प्रियदर्शन और सुरूप–सुन्दर रूप वाला है। यह सुबाहुकुमार बहुत लोगों को और साधुजनो को भी इष्ट, इष्टरूप यावत् सुरूप लगता है।

भते ! सुबाहुकुमार ने इस प्रकार की अपूर्व मानवीय समृद्धि कैसे उपलब्ध की ? कैसे प्राप्त की, और कैसे उसके सन्मुख उपस्थित हुई ? सुबाहुकुमार पूर्वभव मे कौन था ? (इसका नाम और गोत्र क्या था ? किस ग्राम अथवा बस्ती मे उत्पन्न हुआ था ? क्या दान देकर, क्या उपभोग कर। रूखा–सूखा नीरस आहार लेकर और कैसे आचार (मुनि धर्म या श्रावक धर्म) का पालन करके और किस श्रमण या माहन के एक भी धर्म

वचन को श्रवण कर सुबाहुकुमार को ऐसी यह ऋद्धि मिली है। प्राप्त हुई है–(स्वयं उपार्जित की है, किस कारण यह समृद्धि इसके सन्मुख उपस्थित हुई है एवं उसका उपभोग करने मे समर्थ हुआ है)

GAUTAM'S CURIOSITY ABOUT SUBAHU

7. Durıng that period of tıme Indrabhutı Gautam Anagar, the senior discıple of Shraman Bhagavan Mahavır asked—*"Bhante* ! Thıs Subahu Kumar is beloved (of all) havıng lovable appearance, attractive havıng attractive appearance, adorable havıng adorable appearance, enchantıng having enchantıng appearance, serene havıng serene appearance, good-lookıng, and pretty. *Bhante* ! To many people and even ascetıcs he appears to be beloved . and so on up to and pretty

"Bhante ! How thıs Prınce Subahu Kumar got and avaıled thıs human opulence ? How ıt appeared before hım ? [What was hıs name and caste ? In whıch vıllage or settlement was he born ? What charıty, ındulgence, blend and dry food, conduct (ascetıc or householder's) and the sermon of whıch Shraman or Brahmın has helped hım attain thıs opulence ? Has he been blessed wıth thıs or acquıred hımself ? What ıs the cause of hıs acquırıng and enjoyıng thıs ?]

विवेचन–सुबाहुकुमार के सम्बन्ध मे आगमकार ने इष्ट इष्टरूप आदि १४ विशेषणो का प्रयोग किया है, तथा आगे कहा है, वह बहुजन समाज को भी प्रिय लगता है और साधु जनो को भी प्रिय व मनोज्ञ लगता है। यह दो विशेषण उसकी जीवन जीने की अद्‌भुत कला के सूचक है। कुछ लोग जो समाज के लिए सेवा, दान आदि करते है, सबके साथ मधुर भाषण व अनुकूल व्यवहार करते है, वे लोकप्रिय तो बन जाते है, उनकी नैतिकता व सामाजिकता उत्कृष्ट होती है, परन्तु धार्मिक जीवन की साधना मे वे इतने सफल नही होते। त्याग–तप–व्रत–नियम आदि की आराधना मे पीछे रह जाते है। कुछ लोग धार्मिक जीवन मे बडे आदर्श होते है, परन्तु व्यवहारिक जीवन मे कुशल नही होते है। धर्म और नीति मे, स्वार्थ और परमार्थ साधना मे, निवृत्ति और प्रवृत्तिमय दोनो जीवन मे जिसकी समान उत्कृष्टता और उच्च आदर्श हो ऐसा व्यक्ति बहुजन प्रिय और साधुजन प्रिय होता है। सुबाहुकुमार की इस उत्कृष्ट व्यावहारिकता व धार्मिकता से प्रसन्न व अभिभूत होकर गौतम जैसे महाज्ञानी, महातपस्वी योगीराज भगवान से पूछते है। इसका अर्थ है,वह कुछ अद्‌भुत व्यक्तित्व का धनी होगा। सूत्र मे उसके चौदह विशेषण बताये है। ये विशेषण भले ही समानार्थक प्रतीत होते है, परन्तु इनके निहितार्थ सकेत अलग–अलग भावो के सूचक है–टीकाकार अभयदेवसूरि की व्याख्यानुसार आचार्यश्री आत्माराम जी म ने इनका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है।

(१) इष्ट–जिसका व्यवहार व व्यापार सबके अनुकूल हो, जिसे सभी चाहते हैं, सभी जिसकी इच्छा करते हैं वह इष्ट होता है।

(२) **इष्टरूप**–किसी की चाह उसके विशेष काम को लेकर भी सम्भव है, परन्तु इष्टरूप वह होता जिसकी आकृति भी ऐसी हो कि वह देखने मे ही इष्ट लगता है।

(३) **कान्त**–इष्टरूपता भी अनेक कारणो से हो सकती है, किन्तु वह इष्ट होने के साथ कान्त–रमणीय, मन भावना था।

(४) **कान्तरूप**–उसका सुन्दर स्वभाव था। (सुबाहु की इष्टता मे उसका सुन्दर स्वभाव कारण था।)

(५) **प्रिय**–सुन्दर स्वभाव होने पर भी कर्म के प्रभाव से प्रेम उत्पन्न करने मे असमर्थ रह सकता है, अत जो प्रेम का उत्पादक हो वह प्रिय है।

(६) **प्रियरूप**–जिसका रूप प्रिय–प्रीतिजनक हो।

(७–८) **मनोज्ञ–मनोज्ञरूप**–आन्तरिक वृत्तियो से जिसकी शोभनता अनुभव मे आती हो वह मनोज्ञ तथा उसके रूप वाला मनोज्ञरूप कहलाता है।

(९–१०) **मनोम, मनोमरूप**–किसी की मनोज्ञता तात्कालिक या क्षणिक भी हो सकती है, अत मनोम विशेषण से उसकी स्थायी मनोज्ञता, सूचित की गई है, जो गहरे मन मे बसी हो और जिसकी सुन्दरता का स्मरण बार–बार होता रहे, तथा जिसकी सुन्दरता का स्थायी प्रभाव हो।

(११) **सोम**–रुद्रतारहित व्यक्ति सोम, जिसके चेहरे व आँखो मे शान्ति व प्रसन्नता झलकती हो। जिसे देखने पर दूसरो को भी शान्ति अनुभव होती है। सोम रूप–सौम्य स्वभाव वाला होता है।

(१२) **सुभग**–वल्लभता, जिसको देखना भी सौभाग्य वर्धक हो।

(१३) **सुरूप**–जिसका आकार सुन्दर तथा स्वभाव भी सुन्दर वह सुरूप कहा जाता है।

(१४) **प्रियदर्शन**–प्रेम का जनक। जिसको देखने पर मन मे प्रेम उत्पन्न होता हो।

इन सभी विशेषणो को अनेक उदाहरणो सहित आचार्यश्री ने हिन्दी टीका मे समझाया है। पाठक पृष्ठ ६०७–६०८ देखे।

लद्धा, पत्ता, अभिसमन्नागया–तीनो शब्दो मे अर्थ व अभिप्राय का अन्तर बताते हुए कहा है–पूर्वजोपार्जित सम्पत्ति का मिलना लब्ध है, अपने पुरुषार्थ द्वारा उपार्जित करना प्राप्त है, तथा लब्ध–प्राप्त सम्पत्ति का उपभोग करना अभिसमन्वागत है। अर्थात् ये विशेषण सूक्ष्म रूप मे लाभान्तराय और भोगान्तराय सम्बन्धी क्षयोपशम के सूचक है।

Elaboration—The author of this *Agam* has used fourteen adjectives including *isht* and *ishtaroop* to describe Subahu Kumar He has mentioned further that ' to many people and even ascetics he appears to be beloved .. and so on up to and pretty' This last statement emphasizes his proficiency in art of living Some people gain popularity through their social service, charity and congenial speech and behavior Their morality and social

behaviour are excellent but they are not so successful in their religious and spiritual life. They lag behind in the practice of detachment, austerities, vows and self-control Some people have ideal religious life but they are inept in their social life. Only a person with equal excellence and lofty ideals in every facet of life including religion and ethics, service of the self and others, detachment and indulgence is popular among masses as well as sages. A great sage, hermit, and yogi like Gautam Swami was so pleased and impressed with the social behaviour and religious conduct of Subahu Kumar that he presented his curiosity before *Bhagavan*. This indicates that Subahu Kumar must have had a unique personality. The aphorism under reference states fourteen adjectives in this regard These words appear to be synonyms but, in fact, they vary in their nuances and connotations On the basis of the elaborations by Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), Acharya Shri Atmaram ji M has explained these terms as follows—

(1) Isht (adorable)—One whose behaviour and action is congenial for all, who is liked and adored by all is called *isht*

(2) Isht roop—Adoration may be due to some specific work or accomplishment of a person But *isht-roop* is a person having adorable appearance

(3) Kaant—Adorable appearance could also be for many reasons But at the same time, he was desirable (*kaant*) as well

(4) Kaant roop—He was good natured (Subahu's good nature was the reason he was adorable)

(5) Priya—In spite of loving nature a person can fail in invoking love But one who inspires love is *priya* (beloved)

(6) Priya roop—One whose appearance inspires love is *priya roop* (lovable)

(7-8) Manojna and manojna roop—Whose inner feelings or attitudes make him appear beautiful is called *manojna* (beautiful) One having that appearance is *manojna roop*

(9-10)—Manom and manom roop—The quality of being *manojna* (beautiful) could be momentary and transitory. The adjective *manom* indicates its permanence The quality that inspires a profound and memorable experience of beauty makes a person *manom*. What leaves a lasting imprint of beautiful appearance is *manom roop*.

(11) Soma—A person devoid of rage or anger, whose face and eyes are serene and happy, and whose looks inspire peace in others is *soma*. One with serene nature is *soma roop*

(12) Subhag—auspicious; beholding whom enhances good luck

(13) Suroop—whose appearance is pretty and nature is friendly.

(14) Priyadarshan—love inspiring, one whose mere look invokes love

Laddha, patta, and abhisamannagaya—explaining the difference in the meaning and purport of these three terms it has been mentioned that—to inherit wealth earned by ancestors is *'labdh'(laddha),* to earn wealth through one's own efforts is *'prapt' (patta);* and to enjoy the *labdh/prapt* wealth is *abhisamnvagat* (*abhisamannagaya*) These adjectives subtly convey the *kshayopasham* (extinction-cum-pacification) of *labhantaraya* (gain hindering) and *bhogantaraya* (enjoyment hindering) *karmas*

सुबाहुकुमार का पूर्वभव

८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे।

८. (गौतम के प्रश्न पर भगवान सुबाहुकुमार के पूर्वभव का वृत्तान्त बताते है) गौतम ! उस काल उस समय मे जम्बूद्वीप नामक द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष मे हस्तिनापुर नाम का एक समृद्ध नगर था। वहाँ सुमुख नाम का धनाढ्य गाथापति रहता था।

PAST BIRTH OF SUBAHU KUMAR

8. (On being asked by Gautam, narrating the story of previous birth of Subahu Kumar Shraman Bhagavan Mahavir said—) "Gautam ! During that period of time there was a prosperous city called Hastinapur in Bharatvarsh area in Jambu continent. A rich merchant named Sumukh lived there

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

९. उस काल उस समय धर्मघोष नाम के स्थविर थे। वे उत्तम जाति (मातृपक्ष) और उत्तम कुल (पितृपक्ष) से सम्पन्न पाँच सौ श्रमणो के साथ क्रमपूर्वक विहार करते हुए तथा ग्रामानुग्राम विचरते हुए

हस्तिनापुर नगर के सहस्राम्रवन उद्यान मे पधारे। वहाँ **यथाप्रतिरूप**–अनगार मर्यादा के अनुकूल अवग्रह (आश्रयस्थान) को ग्रहण करके सयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे।

9. During that period of time Dharmaghosh Sthavir (senior ascetic) was living He belonged to a prominent *jati* (maternal caste) and *kula* (paternal caste) Wandering from one village to another, along with his five hundred disciples, he arrived at the Sahasramravan garden in Hastinapur city After seeking formal permission he camped there and commenced enkindling his soul with discipline and austerities

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे उराले जाव तेउलेस्से मासंमासेण खममाणे विहरइ। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेई, जहा गोयमसामी तहेव, धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ, जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गेहे अणुप्पविट्ठे।

१०. उस काल उस समय मे धर्मघोष स्थविर के अन्तेवासी सुदत्त नाम के अनगार थे। वे उत्कृष्ट आचार वाले तथा तेजोलेश्या को सक्षिप्त किये हुए–(घोर तप से प्राप्त होने वाली अनेक योजनप्रमाण क्षेत्र मे स्थित वस्तुओ को क्षणमात्र मे भस्म कर देने की सामर्थ्य वाली तेजोलेश्या को अपने मे सक्षिप्त–गुप्त किये हुए) थे। वे सुदत्त अनगार एक मास का तप करते हुए अर्थात् एक–एक मास के उपवास के बाद पारणा करते हुए विचर रहे थे। वे सुदत्त अनगार मास–क्षमण पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय करते है, दूसरे प्रहर मे ध्यान करते है और तीसरे प्रहर मे जैसे भगवान महावीर से भिक्षार्थ गमन के लिए गौतम स्वामी पूछते है, वैसे ही वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर आचार्य से भिक्षार्थ जाने के लिए आज्ञा लेकर भिक्षा के लिए भ्रमण करते हुए सुमुख गाथापति के घर मे प्रवेश करते है।

10. During that period of time Dharmaghosh Sthavir had a disciple named Sudatt ascetic He observed noble conduct He had ingested *Tejoleshya* after toning it down (*Tejoleshya* being the firepower acquired through rigorous austerities and having intensity to burn things in a wide range of many *Yojans* within a moment) He was observing a series of month-long fasts interspersed with a day of meals On the day of fast-breaking, that Sudatt ascetic spent first quarter of the day in studies and second quarter of the day in meditation During the third quarter, like Gautam Swami had sought Bhagavan Mahavir's permission to go to seek alms, he sought Dharmaghosh Sthavir's permission to go to seek alms After that, wandering around he entered the house of Sumukh Gathapati to seek alms

११. तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणेणं पडिलाभिस्सामि त्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे !

११ उस समय वह सुमुख गाथापति सुदत्त अनगार को आते हुए देखता है, देखकर अत्यन्त हर्षित और प्रसन्न होकर आसन से उठता है। आसन से उठकर पाद–पीठ–सिहासन, भद्रासन आदि आसन से नीचे उतरता है। उतरकर पादुकाओ को छोडता है, जूते उतारता है। फिर एकशाटिक--एक कपडा (यह उत्तरासग मुख की यतना के लिए किया जाता है जो बीच मे बिना सिला हुआ दुपट्टा जैसा होता है) लेकर, उससे इस प्रकार का उत्तरासग–(उत्तरीय वस्त्र को शरीर पर रखता) करता है, उत्तरासग करने के पश्चात् सुदत्त अनगार के सत्कार के लिए सात–आठ कदम सामने जाता है। सामने जाकर तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा करता है, वदना करता है, नमस्कार करके जहाँ अपना भक्तगृह–भोजनालय था वहाँ आता है। अपने हाथ से विपुल अशन पान आहार का दान दूँगा अथवा दान का लाभ प्राप्त करूँगा, इस विचार से अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करता है। वह दान देते समय भी प्रसन्न होता है और आहार दान देने के पश्चात् भी प्रसन्नता का अनुभव करता है।

11. When Sumukh Gathapatı saw Sudatt ascetıc approachıng, he was pleased and delıghted He rose from hıs seat, stepped on the foot-rest and got down He then put off hıs slıppers and took an *ekashatıka* (a long scarf-lıke non-stıtched pıece of cloth, also called *uttarıya)* He placed thıs *uttarıya* on hıs shoulders (for coverıng hıs mouth) As a mark of respect, he took seven to eıght steps ahead to greet Sudatt ascetıc He then went around the ascetıc three tımes clockwıse and paıd hım homage and obeısance After thıs he proceeded to hıs kıtchen He was overjoyed wıth the ıdea of gettıng the opportunıty to gıve ample food as alms to the vısıtıng ascetıc He was pleased at the tıme of gıvıng charıty as well as after gıvıng charıty

१२. तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निबद्धे। गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा–

१. वसुहारा वुट्ठा


सुपात्र दान-महिमा
देवताओं द्वारा
दान की महिमा
तपस्वी अणगार
का पात्रदान
12

चित्र परिचय-१२

Illustration No. 12

पात्रदान का महान फल

सुबाहुकुमार के कृत पुण्यो की कहानी सुनाते हुए भगवान कहते है प्राचीन समय मे हस्तिनापुर नगर मे सुमुख नामक गाथापति रहता था।

नगर मे एक बार धर्मघोष स्थविर पधारे। उनके साथ एक महान उग्र तपस्वी सुदत्त नामक अणगार भी थे। वे मास मास क्षपण का तप करते थे। अनेक प्रकार की विशिष्ट ऋद्धियो से सम्पन्न थे।

मासक्षपण तप का पारणा लेने सुदत्त अनगार भ्रमण करते हुए सुमुख गाथापति के घर पर पधारते है। सुमुख ने मुनिवर को अत्यन्त भाव-भक्ति पूर्वक वन्दना की और उत्कृष्ट परिणामो मे शुद्ध एषणीय आहार का दान अपने हाथो से दिया। दान देकर वह अत्यन्त आनन्द अनुभव करने लगा। इस पात्र दान की महिमा करने आकाश मे देवताओ ने पॉच दिव्य प्रकट किये -(१) सुवर्ण की वृष्टि, (२) पॉच वर्ण के फूलो की वर्षा (३) दिव्य वस्त्रो की वृष्टि, (४) देव दुदुभि नाद, (५) और अहोदान अहोदान कहकर सुमुख गाथापति के दान की महिमा की।

श्रुतस्कन्ध १ २ अ १ सूत्र ७

GREAT FRUIT OF DONATION TO THE DESERVING

Narrating the story of the meritorious deeds of Subahu Kumar *Bhagavan* said—Gautam ! In ancient times a merchant named Sumukh lived in Hastinapur city

Once Dharmaghosh Sthavir came there He had a disciple named Sudatt ascetic who observed rigorous austerities He was observing a series of month-long fasts He was endowed with special powers Wandering around to seek alms he entered the house of Sumukh Gathapati The host paid homage to the ascetic with great devotion and, with his own hands, offered pure food with pious feelings to the ascetic He felt elated after giving this charity In order to commend this donation to the deserving five divine things were caused by gods in the sky—(1) Shower of gold, (2) shower of flowers of five colours, (3) falling of clothes (4) sounding of divine drums, and (5) divine pronouncement of '*Ahodanam*' (Great Charity !)

—*Sec II, Ch 1, Sutra 7*

२. दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए

३. चेलुक्खेवे कए

४. आहयाओ देवदुन्दुभीओ

५. अंतरा वि य णं आगासे 'अहो दाणं अहो दाणं' घुट्ठे य।

हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ ४–'धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई जाव तं धन्ने ५।'

१२. उस सुमुख गाथापति के त्रिविध शुद्ध–(१) शुद्ध द्रव्य, (२) शुद्ध पात्र एव (३) शुद्ध दाता तथा त्रिकरण शुद्धि से अर्थात् मन, वचन और काया की सहज उदारता, सरलता एव निर्दोषता से सुदत्त अनगार के प्रतिलम्भित होने पर अर्थात् सुदत्त अनगार को विशुद्ध भावना द्वारा शुद्ध आहार दान से अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए सुमुख गाथापति ने ससार को (जन्म–मरण की परम्परा को) बहुत कम कर दिया और मनुष्य आयुष्य का बन्ध किया। उसके घर मे पॉच दिव्य प्रकट हुए। जैसे–(१) सुवर्णवृष्टि, (२) पॉच रगो के फूलो की वर्षा, (३) वस्त्रो का उत्क्षेप–फेकना (४) देवदुन्दुभियो का बजना तथा (५) आकाश मे 'अहोदान' इस दिव्य उदघोषणा का होना।

हस्तिनापुर के त्रिपथ यावत् सामान्य मार्गो मे अनेक मनुष्य एकत्रित होकर आपस मे एक दूसरे से कहने लगे–हे देवानुप्रियो ! धन्य है सुमुख गाथापति ! उसका जीवन सफल हो गया।

12. By giving three-way-pure charity (pure food, pure seeker, pure donor) through three-way-pure means (natural altruism, simplicity, and purity of mind, speech and body) to Sudatt ascetic (in other words, by giving pure food as alms with pious feelings to Suddatt ascetic) Sumukh Gathapati was overwhelmed with joy Through this pious deed he considerably reduced the extant of the cycles of rebirth and acquired the bondage of *karmas* responsible for a birth as a human being Five divine things appeared in his house—(1) Shower of gold, (2) shower of flowers of five colours, (3) falling of clothes, (4) sounding of divine drums, and (5) divine pronouncement of '*Ahodanam*' (great charity)

On the crossing of three roads and so on up to and streets people gathered and talked to each other—"Beloved of gods ! Blessed is Sumukh Gathapati ! His life has become meaningful "

विवेचन–भावनाशील और सरलचेता दाता को दान देते हुए तीन बार हर्ष का अनुभव होता है–(१) आज मै दान दूँगा, आज मुझे सद्भाग्य से दान देने का स्वर्णावसर उपलब्ध हुआ है, विचार से प्रथम हर्ष ! (२) फिर दान देने के समय उसके रोये–रोये मे आनन्द उभरता है, यह कृत्य से दूसरा हर्ष !

(३) और दान देने के पश्चात् अन्तरात्मा मे सतोष व आनन्द वृद्धिगत होता रहता है, यह तीसरा अनुभव से हर्ष।

त्रिविध-शुद्धि-(१) देय शुद्ध-निर्दोष आहार, (२) **दाता शुद्ध** (भावनाशील देने वाले) व (३) **प्रतिग्राहक** शुद्ध (त्यागी श्रमण) पात्र, ये तीनो ही शुद्ध हो तो वह दान जन्म-मरण के बन्धनो को तोडने वाला और ससार को परित्त-सक्षिप्त-कम करने वाला होता है।

पाँच दिव्य प्रकट होने का अभिप्राय है, कि वह इतना उत्कृष्ट आदर्शदान था कि उसकी अनुमोदना व प्रभावना करने के लिए देवताओ ने आकाश से स्वर्णादि की वृष्टि की। (१) देवकृत सुवर्ण-वृष्टि को ही वसुधारा कहते है। (२) कृष्ण, नील,पीत, श्वेत और रक्त पाँच रग पुष्पो मे पाये जाते है। देवो द्वारा बरसाए गये ये पुष्प वैक्रिय-लब्धिजन्य है, अत अचित्त होते है। (३) **चेलोत्क्षेप**-चेल-वस्त्र, उसका उत्क्षेप-फेकना चेलोत्क्षेप कहा जाता है। दिव्यवस्त्र आकाश से वर्षते है। (४) देवदुन्दुभिनाद-देव-दुन्दुभियो का बजना। (५) आश्चर्य उत्पन्न करने वाले दान की 'अहो दान' सज्ञा है। जिस दान के प्रभाव से आकर्षित हो देवता स्वय ऐसा कहते हो उसे 'अहोदान' शब्द से कहना युक्तिसगत ही है।

Elaboration—While donating, a sentimental and guileless donor experiences joy three times—(1) The first instance of joy comes with the thought, 'I will donate today I am fortunate to get the golden opportunity of giving charity today' (2) The second instance is when every pore of his body is filled with joy during the act of giving (3) And the third instance is when his joy and contentment continues to enhance with the remembrance of the act of donating

Trividh-shuddhi (three-way-purity)—(1) *Deya shuddha*—pure food or alms (2) *Data shuddha*—pure donor, sincere and guileless donor (3) *Patra shuddha*—pure seeker, such as a detached *Shraman* When a donation has such three-way-purity or triple purity it becomes the cause of breaking the bonds of *karmas* and reducing the extant of the cycles of rebirth

Appearance of five divine things indicates that the charity was so ideal and lofty that gods effected showers of gold (etc) in order to commend and popularize the act (1) Divine shower of gold is called *vasudhara* (2) Shower of flowers of five colours—black, blue or green, yellow, white and red As these divine flowers are created through the power of transmutation or transformation, they are lifeless (*achit*) (3) *Chelotkshep—chela* means clothes and *utkshep* means throwing There is a shower of clothes from the sky, (4) Sounding of divine drums (5) Divine pronouncement of '*Ahodanam*' (great charity) An astonishing charity is called *Ahodanam* When a charity

attracts gods and forces them to exclaim—'*Ahodanam*' (Great charity !), it is, indeed, a great charity

१३. तए णं से सुमुहे गाहावई बहूहिं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने।

तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरइ।

तं एवं खलु, गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।

१३. इसके पश्चात् वह सुमुख गाथापति सैकडो वर्षो की दीर्घ आयु का उपभोग कर यथा समय मृत्यु प्राप्त कर इसी हस्तिशीर्ष नगर मे अदीनशत्रु राजा की धारिणी देवी की कुक्षि मे पुत्र रूप मे उत्पन्न हुआ। तब वह धारिणी देवी किंचित सोई और किंचित जागती हुई स्वप्न मे सिह को देखती है। शेष वर्णन पहले किया जा चुका है। इसप्रकार वह उन्नत प्रासादो मे मानव सम्बन्धी भोगो का यथेष्ट उपभोग कर रहा है।

भगवान ने कहा - हे गौतम ! सुबाहुकुमार को उपर्युक्त महादान के प्रभाव से इस तरह की मानव-समृद्धि उपलब्ध तथा प्राप्त हुई है।

13. Then that Sumukh Gathapati enjoyed a long life of hundreds of years After his death at the destined moment he descended as a son into the womb of Dharini Devi, the consort of king Adeenashatru of Hastishirsha city Queen Dharini Devi saw a lion in her dream in her state of partial slumber Other details have already been stated This way he is fully enjoying the human pleasures and comforts in his lofty mansions

Bhagavan added—Gautam ! As a consequence of the aforesaid great charity Subahu Kumar availed and acquired this human opulence

१४. "पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?"

'हंता पभू'।

तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खिमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणए विहरइ।

१४. सुबाहुकुमार का पूर्वभव सुनकर गौतम स्वामी ने पूछा–भते ! सुबाहुकुमार आपश्री के पास मुण्डित होकर, गृहस्थावास को त्याग कर अनगार धर्म को ग्रहण करने मे समर्थ है ?

भगवान–हाँ गौतम ! वह प्रव्रजित होने मे समर्थ है।

भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दना व नमस्कार किया। तथा सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरण करने लगे।

कुछ समय पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने हस्तिशीर्ष नगर के पुष्पकरण्डक उद्यानगत कृतवनमाल नामक यक्षायतन से विहार किया और अन्य देशो मे विचरने लगे।

इधर सुबाहुकुमार श्रमणोपासक–देशविरत श्रावक हो गया। जीव अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता बना। सुपात्रदान का लाभ प्राप्त करता हुआ समय व्यतीत करने लगा।

14. After listening to the story of the past birth of Subahu Kumar Gautam Swami asked—"*Bhante* ! Is Subahu Kumar capable of getting initiated by you into ascetic religion by renouncing his household and tonsuring his head ?"

Bhagavan—"Yes, Gautam ! He is capable of getting initiated "

Bhagavan Gautam paid homage and obeisance and resumed enkindling his soul with discipline and austerities

Some time later Shraman Bhagavan Mahavir left the temple of Kritavanamalapriya Yaksh in Pushpakarandak garden in Hastishirsha city and resumed his wanderings in other states

Here that Subahu Kumar became a *Shramanopasak* (a devotee of ascetics) He acquired the knowledge of fundamentals including being (soul) and non-being (matter) He spent his time availing every opportunity of donation to the deserving

सुबाहुकुमार की धर्म आराधना

१५. तए णं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमिज्जत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथरइ संथरित्ता दब्भसंथारं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

१५. श्रावक व्रतो का पालन करता हुआ वह सुबाहुकुमार किसी समय चतुर्दशी, अष्टमी, उद्दिष्ट–अमावस्या और पूर्णमासी, इन पर्व तिथियो मे जहाँ पौषधशाला थी (पौषधव्रत करने का स्थान–विशेष था) वहाँ आता है। पौषधशाला का प्रमार्जन (अच्छी प्रकार निरीक्षण व सफाई) करता है, प्रमार्जन कर उच्चार

प्रस्रवणभूमि-मल मूत्र विसर्जन के स्थान की प्रतिलेखना-(निरीक्षण) करता है। दर्भसस्तार-सूखे घास पुआल का बिछौना करता है। उस पर आरूढ होता है और अटठमभक्त-तीन दिन का लगातार उपवास ग्रहण करता है। पौषधशाला मे पौषधिक-पौषधव्रत धारण किया हुआ वह, अष्टमभक्त के साथ धर्म जागरणा करता है।

SUBAHU KUMAR'S SPIRITUAL PRACTICES

15. Observing the vows of a *shravak* (Jain layman), Subahu Kumar used to go to the *paushadhashala* (place for observing partial ascetic vow or *paushadh-vrat*) on every auspicious day of a fortnight—fourteenth, eighth, fifteenth (both dark or *amavasya* and bright or *purnima*) There he would properly inspect and clean (*pramarjan*) the *paushadhashala* and inspect the place for disposing excreta He would then make a bed of hay, sit on it and take the vow of a three day fast (avoiding eight meals or *ashtam-bhakt*) Having taken the partial ascetic vow (*paushadh-vrat*) and observing a three day fast he would remain awake and alert absorbed in spiritual contemplation

शुभ भावना

१६. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-समुप्पज्जित्था-धन्ना णं ते गामागर जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ।

धन्ना णं ते राईसर. जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति।

धन्ना णं ते राईसरतलवर. जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति।

धन्ना णं ते राईसरतलवर. जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सुणेंति।

ते जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरिज्जा, तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्से अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

१६. एक बार पौषधव्रत के समय मध्य रात्रि मे धर्मजागरणा करते हुए सुबाहुकुमार के अन्तर् मन मे यह सकल्प उठा कि-वे ग्राम, नगर और सन्निवेश धन्य है जहाँ पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी विचरते है।

वे राजा, ईश्वर आदि भी धन्य है जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के समीप मुण्डित होकर प्रव्रज्या ग्रहण करते है।

वे राजा, ईश्वर आदि भी धन्य है, जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार के गृहस्थ धर्म को अगीकार करते है।

वे राजा ईश्वर आदि भी धन्य है, जो श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास धर्म का श्रवण करते है।

सो यदि श्रमण भगवान महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वी-गमन करते हुए, ग्रामानुग्राम विचरते हुए, यहाँ पधारे तो मै भी गृह त्याग कर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास मुण्डित होकर प्रव्रजित हो जाऊँ।

PIOUS FEELINGS

16. Once while absorbed in spiritual contemplation during his partial ascetic vow a thought surfaced in his mind—

Blessed are those villages, cities, and settlements where Shraman Bhagavan Mahavir visits

Also blessed are those kings, nobles (etc) who, in presence of Shraman Bhagavan Mahavir, get initiated after tonsuring their heads

Also blessed are those kings, nobles (etc) who, in presence of Shraman Bhagavan Mahavir, accept the householder's code (*Grihasth Dharma*) of twelve vows including five minor vows (*Anuvrats*) and seven instructive or complimentary vows of spiritual discipline (*Shikshavrats*)

Also blessed are those kings, nobles (etc) who listen to the sermon of Shraman Bhagavan Mahavir

Therefore, in case, wandering from one village to another, Shraman Bhagavan Mahavir arrives here, I will also renounce my home and get initiated in his presence after tonsuring my head

विवेचन–सुबाहु के चिन्तन के साथ पाँच अन्य विशेषण भी है, सबका भावार्थ इस प्रकार है- (१) **अज्झत्थिए**–आत्मा की गहराई मे भाव उठना, (२) **कप्पिए**–कल्पना की ऊँचाई पर पहुँचना, (३) **चिंतिए**–चित्त मे बार-बार उसी विचार का उठना, (४) **पत्थिए**–बार-बार उसी बात की प्रार्थना करना, कामना करना, (५) **मणोगए**–जो विचार अभी मन मे है, शब्दो से प्रगट नहीं हुआ है, (६) **सकप्पे**–भावना का सुदृढ सकल्प का रूप धारण करना।

योगशास्त्र मे माना गया है, जब कोई चिन्तन-मनन मे एकाग्र हो जाता है, तब उसका श्वास, उसकी भावना और प्राणधारा सुषुम्ना नाडी मे प्रवाहित होता है, उस अवस्था मे किया गया विचार सकल्प शीघ्र ही सफल होता है।

Elaboration—The number of adjectives used with Subahu Kumar's contemplation is six They are—**(1) Ajjhatthiye**—surfacing of thoughts from the depths of soul **(2) Kappiye**—to reach the heights of imagination

(3) **Chintiye**—repeated surfacing of the same idea in mind. (4) **Patthiye**—to wish and pray again and again for a specific thing (5) **Manogaye**—the idea that is still in mind and not expressed in words (6) **Sankappe**—crystallization of an idea into a resolve

According to *Yogashastra* when a person fully concentrates on his thoughts, his breath, feelings, and life force flows through the *Sushumna* (the channel of the spinal cord) In that state the thought or resolve materializes soon.

भगवान का पदार्पण

१७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

परिसा, राया निग्गया। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणसण्णिवायं वा जहा जमाली तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिगया।

१७. श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने सुबाहुकुमार के इस प्रकार के मानसिक सकल्प को जाना, तदनुसार ग्रामानुग्राम विचरते हुए हस्तिशीर्षनगर मे जहाँ पुष्पकरण्डक नामक उद्यान था और जहा कृतवनमालप्रिय यक्ष का यक्षायतन था, वहाँ पधारे। अनगार मर्यादा के अनुकूल स्थान आदि का अवग्रह ग्रहण कर सयम व तप से आत्मा को भावित करते हुए अवस्थित हुए।

भगवान का आगमन सुनकर नगर की जनता व राजा दर्शनार्थ आये। सुबाहुकुमार भी पूर्व की तरह समारोह के साथ (जमाली की भाँति)भगवान् की सेवा मे उपस्थित हुआ। भगवान ने उस विशाल परिषद् तथा सुबाहुकुमार को धर्म का उपदेश दिया। परिषद् और राजा धर्मदेशना सुनकर वापिस चले गये।

ARRIVAL OF BHAGAVAN

17. Shraman Bhagavan Mahavir became aware of Subahu Kumar's resolve Wandering from one village to another he arrived at the temple of Kritavanamalapriya Yaksh in Pushpakarandak garden in Hastishirsha city Following the ascetic norms he sought for a suitable place of stay and commenced enkindling his soul with discipline and austerities

On getting the news of *Bhagavan's* arrival people of the city and the king came to pay their homage Subahu Kumar also came ceremoniously to *Bhagavan* (like Jamali). *Bhagavan* gave his sermon to the large gathering and Subahu Kumar After which the king and the people dispersed

१८. तए णं सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ. जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाव इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

१८. सुबाहुकुमार ने श्रमण भगवान् महावीर के श्रीमुख से धर्म का श्रवण किया। फिर उस पर मनन करता हुआ वैराग्य प्राप्त कर दीक्षा के लिए श्रेणिक राजा के पुत्र मेघकुमार की तरह अपने माता–पिता से अनुमति लेता है। अनुमति मिलने पर सुबाहुकुमार का निष्क्रमण–अभिषेक मेघकुमार की भाँति किया जाता है। यावत् वह अनगार हो जाता है, ईर्यासमिति का पालक यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन जाता है।

18. Subahu Kumar listened to the sermon by Shraman Bhagavan Mahavir While contemplating over it he got detached and sought permission from his parents to get initiated as an ascetic, as Megh Kumar, King Shrenik's son, did On getting permission his pre-renouncing lustration was performed like that of Megh Kumar and so on up to He became an ascetic, observed the codes of *Irya samiti* (care of movement) and so on up to he became completely celibate

१९. तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम–तवोवहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने।

१९. दीक्षा लेने के पश्चात् सुबाहु अनगार श्रमण भगवान महावीर के तथारूप स्थविरो के पास से सामायिक (आचाराग) आदि एकादश अगो का अध्ययन करते है। अनेक उपवास, बेला, तेला आदि विविध प्रकार के तपो के आचरण से आत्मा को भावित करके अनेक वर्षो तक श्रमणपर्याय का पालन कर अन्त मे एक मास की सलेखना के द्वारा अपनी आत्मा की आराधना कर साठ भक्तो -भोजनो का अनशन द्वारा छेदन कर अर्थात् २९ दिन का अनशन कर आलोचना व प्रतिक्रमणपूर्वक समाधि को प्राप्त होकर कालमास मे काल करके सौधर्म देवलोक मे देव रूप से उत्पन्न हुए।

19. He studied all the eleven *Angas* (canons) including *Samayik* from the senior ascetics of Shraman Bhagavan Mahavir's order Enkindling his soul by observing numerous austerities including fasting for one, two, three, and more days, he immaculately followed the ascetic code for many years In the end he took the ultimate vow (*sallekhana*) of one month duration At the conclusion of the month long fast (avoiding sixty meals) at the destined moment of death he embraced meditational death after doing critical review (*pratikraman*) He reincarnated as a god in the Saudharma kalp (a dimension of gods)

भविष्य वर्णन

२०. से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लहिहिइ, लहिहित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं ताओ देवलोगाओ माणुस्सं, पव्वज्जा बंभलोए। माणुस्सं। तओ महासुक्के। तओ माणुस्सं, आणए देवे। तओ माणुस्सं, आरणे। तओ माणुस्सं, सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइं अड्ढाइं जहा दढपइन्ने, सिज्झिहिइ।

२०. सुबाहुकुमार का जीव सौधर्म देवलोक की पूर्ण आयु भोगकर वहाँ से **आयु** (आयुष्य कर्म के दलिको का) **भव** (देवगति सम्बन्धी कर्म दलिको का) और **स्थिति** (आयुष्य कर्म की स्थिति का) का क्षय होने पर देव शरीर को छोडकर सीधा मनुष्य शरीर को प्राप्त करेगा। बोधि को प्राप्त करेगा, बोधि उपलब्ध कर तथारूप स्थविरो के पास मुण्डित होकर साधुधर्म मे प्रव्रजित हो जायेगा। वहाँ वह अनेक वर्षो तक श्रमण पर्याय का पालन करता हुआ अन्त मे आलोचना तथा प्रतिक्रमण कर समाधि को प्राप्त होगा। काल धर्म को प्राप्तकर सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोक मे देवता के रूप से उत्पन्न होगा।

वहॉ से पुन मनुष्य भव प्राप्त करेगा। दीक्षित होकर महाशुक्र नामक देवलोक मे उत्पन्न होगा। वहॉ से च्यव कर फिर मनुष्य-भव मे जन्म लेगा और पूर्व की ही तरह दीक्षित होकर आनत नामक नवम देवलोक मे उत्पन्न होगा। वहॉ की भवस्थिति को पूर्ण कर मनुष्य-भव मे आकर दीक्षित हो आरण नाम के ग्यारहवे देवलोक मे उत्पन्न होगा। वहॉ से च्यव कर मनुष्य-भव को धारण करके अनगार-धर्म का आराधन कर देह त्याग पर सर्वार्थसिद्ध नामक विमान मे उत्पन्न होगा। वहाँ से च्यवकर सुबाहुकुमार का वह जीव व्यवधानरहित महाविदेह क्षेत्र मे सम्पन्न कुलो मे से किसी कुल मे उत्पन्न होगा। वहाँ दृढप्रतिज्ञ कुमार की भाँति चारित्र प्राप्त कर सिद्धपद को प्राप्त करेगा।

FUTURE DESCRIPTION

20. Completing the age, state and life by *ayukshaya* (shedding the life span determining *karma* particles), *bhavakshaya* (shedding the divine state determining *karma* particles), and *sthitikshaya* (shedding the *karma* particles determining the extant of life span), the soul that was Subahu Kumar will abandon his divine body and reincarnate as a human being He will get enlightened Then after tonsuring his head, will get initiated as an ascetic by *sthavirs* (senior ascetics) Following the ascetic code for many years he will embrace meditational death after doing critical review (*pratikraman*) He will reincarnate as a god in the Sanatkumar kalp (the third heaven)

From there he will again reincarnate as a human being After getting initiated (etc) he will reincarnate in the Mahashukra Devlok (divine dimension) Descending from there he will again take birth as a human being and get initiated as before Then he will reincarnate in the ninth Devlok called Anat Completing the state and life there, he will again take birth as a human being and get initiated as before Then he will reincarnate in the eleventh Devlok called Aran Descending from there he will once again reincarnate as a human being, get initiated and after death reincarnate in the Sarvarthsiddha Viman Descending from there the soul that is Subahu Kumar will at once take rebirth as a human being in one of the wealthy families in Mahavideh area He will get initiated like Dridhapratijna Kumar and attain the status of a Siddha

उपसंहार

२१. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

२१. आर्य सुधर्मा स्वामी कहते है–हे जम्बू ! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाकश्रुत के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ प्रतिपादित किया है। ऐसा मै कहता हूँ।

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

CONCLUSION

21. Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the first chapter of *Sukha-vipaak* So I state "

● END OF THE FIRST CHAPTER ●

द्वितीय अध्ययन
SECOND CHAPTER

भद्रनन्दी कुमार

१. विइयस्स उक्खेवो।

१. द्वितीय अध्ययन की प्रस्तावना पूर्ववत् समझ लेनी चाहिए।

जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया-भते ! श्रमण भगवान महावीर ने सुखविपाक के दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? उत्तर मे सुधर्मा स्वामी कहते है-

BHADRANANDI KUMAR

1. The foreword of the second chapter should be read as before

(Jambu Swami asked—*"Bhante* ! What is the text and meaning of the second chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे नयरे। थूभकरंडगउज्जाणं। धन्नो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी।

सुमिणदंसणं, कहणं, जम्मं, बालत्तणं, कलाओ य।
जोव्वणं पाणिग्गहणं दाओ पासाय भोगा य।

जहा सुबाहुस्स। नवरं भद्दनंदी कुमारे। सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं सामिस्स समोसरणं। सावगधम्मं। पुव्वभवपुच्छा।

महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी नयरी। विजय कुमारे। जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए। मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पन्ने। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। निक्खेवो।

२. उस काल उस समय मे ऋषभपुर नाम का नगर था। वहाँ स्तूपकरण्डक नामक उद्यान था। धन्य नामक यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ धनावह नाम का राजा राज्य करता था। उसकी सरस्वती देवी नाम की रानी थी। महारानी का स्वप्न-दर्शन। पति से स्वप्न-वृत्तान्त-कथन, समय आने पर बालक का जन्म, बालक का बाल्यावस्था मे कलाएँ सीखकर यौवन को प्राप्त होना, माता-पिता के द्वारा दहेज देना और ऊँचे प्रासादो मे सुख भोगना आदि सभी वर्णन सुबाहुकुमार की तरह जानना चाहिए।

उसमे अन्तर केवल इतना ही है कि सुबाहुकुमार के स्थान पर बालक का नाम 'भद्रनन्दी' था। उसका श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ देवियो के साथ विवाह हुआ। महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ। भद्रनन्दी ने श्रावकधर्म अगीकार किया। गौतम स्वामी द्वारा उसके पूर्वभव सम्बन्धी प्रश्न करने पर भगवान ने इस प्रकार उत्तर दिया–

(पूर्वभव) महाविदेह क्षेत्र मे पुण्डरीकिणी नगरी मे विजय नामक कुमार था। विजय ने युगबाहु तीर्थकर को प्रतिलाभित किया–दान दिया, उससे मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ, वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर यहाँ भद्रनन्दी के रूप मे जन्म लिया, यह सब वर्णन सुबाहुकुमार ही की तरह जान लेना चाहिए। यावत् वह महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होकर सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, मुक्त होगा, निर्वाण पद को प्राप्त करेगा एव सर्व दु खो का अन्त करेगा।

निक्षेप–उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Rishabhapur It had a garden named Stupakarandak In it was a temple of Dhanya Yaksh That city was ruled by king Dhanaavaha His queen was named Saraswati Devi The dream of the queen, telling the king about the dream, birth of a son, growing of the child, education, maturing, marriage, dowry, and enjoying pleasures in lofty mansions, all these details should be read as those about Subahu Kumar (Chapter-1)

The only difference being that the name is Bhadranandi Kumar instead of Subahu Kumar and he was married to five hundred girls, chief among them being Shridevi Bhagavan Mahavir arrived Bhadranandi accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) He was a prince named Vijaya in Pundarikini city in Mahavideh area Vijaya gave alms donation to Tirthankar Yugabahu and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Bhadranandi All these details should be read as those about Subahu Kumar and so on up to He will take rebirth in Mahavideh area and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE SECOND CHAPTER ●

तृतीय अध्ययन
THIRD CHAPTER

सुजातकुमार

१. तच्चस्स उक्खेवो।

१. तृतीय अध्ययन की प्रस्तावना भी पूर्व अध्ययन की तरह जान लेना चाहिए।

SUJAT KUMAR

1. The foreword of the third chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the third chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. वीरपुरं नयरं। मणोरमं उज्जाणं। वीरकण्हमित्ते राया। सिरिदेवी। सुजाए कुमारे। बलसिरीपामोक्खाणं पंचसयकन्नगाणं पाणिग्गहणं। सामीसमोसरणं। पुव्वभवपुच्छ।

उसुयारे नयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए। माणुस्साउए निबद्धे। इह उप्पन्ने जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ।

निक्खेवो।

२ (संक्षेप मे तृतीय अध्ययन का वर्णन इस प्रकार है) वीरपुर नामक नगर था। वहाँ मनोरम नाम का उद्यान था। महाराज वीरकृष्णमित्र राज्य करते थे। श्रीदेवी नामक उनकी रानी थी। सुजात नाम का कुमार था। बलश्री प्रमुख ५०० राज कन्याओ के साथ सुजातकुमार का पाणिग्रहण हुआ। श्रमण भगवान महावीर स्वामी पधारे। सुजातकुमार ने श्रावक-धर्म स्वीकार किया। श्री गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव विषयक जिज्ञासा की। श्रमण भगवान महावीर ने इस तरह पूर्वभव का वृत्तान्त कहा–

(पूर्वभव) इक्षुसार नामक नगर था। वहाँ ऋषभदत्त गाथापति रहता था। उसने पुष्पदत्त अनगार को निर्दोष आहार दान दिया, फलत शुभ मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ। आयु पूर्ण होने पर यहाँ सुजातकुमार के रूप मे उत्पन्न हुआ आदि महाविदेह क्षेत्र मे चारित्र ग्रहण कर सिद्ध पद को प्राप्त करेगा।

2. (The story in brief is—) There was a city named Virapur It had a garden named Manoram That city was ruled by king Virakrishnamitra His queen was named Shridevi They had a son named Sujat Kumar He was married to five hundred girls, chief among them being Balashri Bhagavan Mahavir arrived Sujat accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Ikshusara Rishabhdatt Gathapati lived there He gave faultless food as alms to ascetic Pushpadatt and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Sujat Kumar and so on up to He will take rebirth in Mahavideh area, get initiated and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

विवेचन—दूसरे अध्ययन की तरह तीसरे अध्ययन का भी समग्र वर्णन प्रथम अध्ययन के ही समान है। केवल नाम व स्थान मात्र का भेद है। अत सारा वर्णन सुबाहुकुमार की ही तरह समझ लेना चाहिए।

निक्षेप—उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—The details of the third chapter are same as those in the second chapter The only difference is in name and place Therefore all the details should be read as those about Subahu Kumar

Conclusion should be read as before

● END OF THE THIRD CHAPTER ●

चतुर्थ अध्ययन
FOURTH CHAPTER

सुवासवकुमार

१. चउत्थस्स उक्खेवो

१. चतुर्थ अध्ययन की प्रस्तावना भी पिछले अध्ययनो की तरह समझ लेनी चाहिए।

SUVASAV KUMAR

1. The foreword of the fourth chapter should be read as before (Jambu Swamı asked—"*Bhante* ! What ıs the text and meanıng of the fourth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavır ?" Sudharma Swamı replıed—)

२. विजयपुरं नयरं। नन्दणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हादेवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसयाणं रायवर कन्नगाणं जाव पुव्वभवे।

कोसंबी नयरी। धणपाले राया। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इहं उववन्ने। जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. सुधर्मा स्वामी ने कहा–हे जम्बू ! विजयपुर नाम का एक नगर था। वहाँ नन्दनवन नाम का उद्यान था। उस उद्यान मे अशोक नामक यक्ष का एक यक्षायतन था। विजयपुर नगर के राजा का नाम वासवदत्त था। उसकी कृष्णादेवी नाम की रानी थी। सुवासवकुमार नामक राजकुमार था। भद्रा–प्रमुख पाँच सौ राजाओ की श्रेष्ठ कन्याओ के साथ विवाह हुआ। श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पधारने पर सुवासवकुमार ने श्रावकधर्म स्वीकार किया। गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा। उत्तर मे भगवान ने फरमाया–

(पूर्वभव) कौशाम्बी नगरी थी। वहाँ धनपाल राजा था। उसने वैश्रमणभद्र अनगार को निर्दोष आहार का दान दिया, उसके प्रभाव से मनुष्य आयुष्य का बन्ध हुआ यावत् यहाँ सुवासवकुमार के रूप मे जन्म लिया, यावत् इसी भव मे सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story ın brief ıs—) There was a cıty named Vıjayapur. It had a garden named Nandanavan. In that garden was a temple of Ashoka Yaksh That cıty was ruled by kıng Vasavadatt Hıs queen was named

Krishnadevi They had a son named Suvasav Kumar He was married to five hundred girls, chief among them being Bhadraa Bhagavan Mahavir arrived. Suvasav accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Kaushambi King Dhanapal ruled there He gave faultless food as alms to ascetic Vaishramanabhadra and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma)* to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Suvasav Kumar and so on up to At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE FOURTH CHAPTER ●

पंचम अध्ययन
FIFTH CHAPTER

जिनदास

१. पंचमस्स उक्खेवो।

१. पचम अध्ययन की प्रस्तावना भी पूर्ववत् जान लेनी चाहिए।

JINADAS

1. The foreword of the fifth chapter should be read as before (Jambu Swamı asked—"*Bhante* ! What ıs the text and meanıng of the fifth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavır ?" Sudharma Swamı replıed—)

२. सोगंधिया नयरी। नीलासोए उज्जाणे। सुकालो जक्खो। अप्पडिहओ राया। सुकण्हा देवी। महाचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं।

जिणदासपुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहो राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. (पचम अध्ययन का वर्णन इस प्रकार है) सौगन्धिका नाम की नगरी थी। वहाँ नीलाशोक नाम का उद्यान था। उसमे सुकाल नाम के यक्ष का यक्षायतन था। उक्त नगरी मे अप्रतिहत नामक राजा था। सुकृष्णा नाम की रानी थी। उनके पुत्र का नाम महाचन्द्रकुमार था। उसकी अर्हदत्ता नाम की भार्या थी। महाचन्द्र के जिनदास नाम का पुत्र था। किसी समय श्रमण भगवान महावीर का पदार्पण हुआ। जिनदास ने भगवान से बारह व्रत युक्त गृहस्थ धर्म स्वीकार किया। गौतम स्वामी ने जिनदास के पूर्वभव की जिज्ञासा की और भगवान ने इसके उत्तर मे इस प्रकार बताया–

(पूर्वभव) माध्यमिका नाम की नगरी थी। महाराज मेघरथ वहाँ के राजा थे। सुधर्मा अनगार को महाराज मेघरथ ने भावपूर्वक निर्दोष आहार दान दिया, उससे मनुष्य भव के आयुष्य का बन्ध किया और यहाँ पर जन्म लेकर यावत् इसी जन्म मे सिद्ध होगा।

2. (The story ın brıef ıs—) There was a cıty named Saugandhıka It had a garden named Nılashoka In that garden was a temple of Sukaal Yaksh. That city was ruled by kıng Apratıhat. His queen was named Sukrishna They had a son named Mahachandra Kumar The name of his wıfe was Arhadatta Mahachandra had a son named Jinadas. Bhagavan Mahavir

arrived. Jinadas accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Madhyamika King Megharath ruled there He gave faultless food as alms to ascetic Sudharma and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Jinadas and so on up to At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

विवेचन—प्रस्तुत अध्ययन मे जिनदास के जीवन-वृत्तान्त के सकलन मे केवल इतनी ही विशेषता है कि इसके पितामह अप्रतिहत राजा और पितामही सुकृष्णा देवी का भी इसमे उल्लेख है, जो प्राय अन्य किसी अध्ययन के जीवनवृत्तो मे उपलब्ध नही है। शेष कथावस्तु सुबाहुकुमार के समान ही है। विशिष्टता है तो इतनी ही कि इसी भव मे (इसी जन्म मे) यह मोक्ष को प्राप्त हुआ।

निक्षेप—उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ पचम अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—In this chapter the only unusual thing in the story of Jinadas is that it has the mention of his grand parents Apratihat and Suknishna Almost all other stories do not mention that All other details should be read as those about Subahu Kumar The only other variation being that Jinadas will get liberated at the end of this life only

Conclusion should be read as before

● END OF THE FIFTH CHAPTER ●

षष्ठ अध्ययन
SIXTH CHAPTER

धनपति

१. छट्ठस्स उक्खेवो।

१. छठे अध्ययन का भाव इस प्रकार है।

DHANAPATI

1. The foreword of the sixth chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante*! What is the text and meaning of the sixth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir?" Sudharma Swami replied—)

२. कणगपुरं नयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरीदेवी पमोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं।

धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो। मणिवया नयरी। मित्तो राया। संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

निक्खेवो।

२. कनकपुर नाम का नगर था। वहाँ श्वेताशोकनामक एक उद्यान था। वहाँ वीरभद्र नाम के यक्ष का यक्षायतन था। कनकपुर का राजा प्रियचन्द्र था, उसकी रानी का नाम सुभद्रादेवी था। युवराज पदासीन पुत्र का नाम वैश्रमण कुमार था। श्रीदेवी प्रमुख ५०० श्रेष्ठ राजकन्याओ के साथ उसका विवाह हुआ। किसी समय तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी पधारे। युवराज के पुत्र धनपति कुमार ने भगवान से श्रावको के व्रत ग्रहण किये यावत् गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव की पृच्छा की। उत्तर मे भगवान ने कहा–

(पूर्वभव) धनपति कुमार पूर्वभव मे मणिपदा नगरी का राजा था मित्र। उसने सभूतिविजय नामक अनगार को शुद्ध आहार से प्रतिलाभित किया यावत् इसी जन्म मे वह सिद्धगति को प्राप्त होगा।

2. (The story in brief is—) There was a city named Kanakapur It had a garden named Shvetashoka In that garden was a temple of Virabhadra Yaksh That city was ruled by king Priyachandra. His queen was named Subhadraadevi. They had a son named Vaishraman Kumar, who was the crown prince He was married to five hundred girls, chief among them being Shridevi Bhagavan Mahavir arrived. Dhanapati, the son of the

crown prince, accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Manipada King Mitra ruled there. He gave faultless food as alms to ascetic Sambhutivijaya and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Dhanapati and so on up to . At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

विवेचन—इस भव व पूर्वभव मे नामादि की भिन्नता के साथ-साथ सुबाहुकुमार व धनपति कुमार के जीवन मे इतना ही अन्तर है कि सुबाहुकुमार देवलोको मे जाता हुआ और मनुष्य-भव प्राप्त करता हुआ अन्त मे महाविदेह क्षेत्र मे सिद्ध होगा जबकि धनपति कुमार इसी जन्म मे निर्वाण को उपलब्ध होगा।

निक्षेप—उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ षष्ठ अध्ययन समाप्त ॥

Elaboration—All other details should be read as those about Subahu Kumar The only variation being that whereas Subahu Kumar will reincarnate in divine realms before taking birth as a human being in Mahavideh area and getting liberated, Dhanapati will get liberated at the end of this life only

Conclusion should be read as before

● END OF THE SIXTH CHAPTER ●

सप्तम अध्ययन
SEVENTH CHAPTER

महाबल

१. सत्तमस्स उक्खेवो।

१. सातवे अध्ययन का भाव इस प्रकार है।

MAHABAL

1. The foreword of the seventh chapter should be read as before (Jambu Swamı asked—"*Bhante* ! What ıs the text and meanıng of the seventh chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavır ?" Sudharma Swamı replıed—)

२. महापुरं नयरं। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवईपामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुरं नयरं। नागदत्ते गाहावई। इन्दंदत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२ महापुर नामक नगर था। वहाँ रक्ताशोक नाम का उद्यान था। उसमे रक्तपाद यक्ष का आयतन था। महाराज बल वहाँ के राजा थे। सुभद्रा देवी नाम की रानी थी। महाबल नामक राजकुमार था। रक्तवती प्रभृति ५०० राजकन्याओ के साथ उसका विवाह किया गया।

उस समय तीर्थकर भगवान श्री महावीर स्वामी पधारे। महाबल राजकुमार ने भगवान से श्रावकधर्म अगीकार किया, गणधर इन्द्रभूति ने भगवान से पूर्वभव के सम्बन्ध मे प्रश्न किया। तथा भगवान ने प्रतिपादन करते हुए कहा–

(पूर्वभव) गौतम ! मणिपुर नाम का नगर था। वहाँ नागदेव नाम का गाथापति रहता था। उसने इन्द्रदत्त नाम के अनगार को पवित्र भावनाओं से निर्दोष आहार का दान देकर प्रतिलाभित किया तथा उसके प्रभाव से मनुष्य आयुष्य का बन्ध करके यहाँ पर महाबल के रूप मे उत्पन्न हुआ। इसी भव मे श्रमणदीक्षा स्वीकार कर सिद्धगति को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसहार भी पूर्ववत् समझना।

॥ सप्तम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story ın brief ıs—) There was a cıty named Mahapur It had a garden named Raktashoka In that garden was a temple of Raktapad Yaksh That cıty was ruled by kıng Bala Hıs queen was named

Subhadraadevi. They had a son named Mahabal Kumar He was married to five hundred girls, chief among them being Raktavati

Bhagavan Mahavir arrived Prince Mahabal accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Manipur Naagdev Gathapati lived there He gave faultless food as alms to ascetic Indradatt and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Mahabal. and so on up to At last at the end of this very life he will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE SEVENTH CHAPTER ●

अष्टम अध्ययन
EIGHTH CHAPTER

भद्रनन्दी

१. अट्ठमस्स उक्खेवो।

१. अष्टम अध्ययन का वर्णन भी इस प्रकार किया है।

BHADRANANDI

1. The foreword of the eighth chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the eighth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. सुघोसं नयरं। देवरमणे उज्जाणे वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दनन्दी कुमारे। सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवे। महाघोसे नयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. सुघोष नगर था। वहाँ देवरमण उद्यान था। उसमे वीरसेन यक्ष का यक्षायतन था। सुघोष नगर मे अर्जुन नामक राजा राज्य करता था। उसके तत्त्ववती नाम की रानी थी और भद्रनन्दी नाम का राजकुमार था। उसका श्रीदेवी आदि ५०० श्रेष्ठ राजकन्याओ के साथ पाणिग्रहण हुआ।

किसी समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी का वहाँ पदार्पण हुआ। भद्रनन्दी ने भगवान की देशना से प्रभावित होकर श्रावकधर्म अगीकार किया। गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध मे पृच्छा की, तब भगवान ने उत्तर देते हुए फरमाया-

(पूर्वभव) हे गौतम ! महाघोष नगर मे धर्मघोष गाथापति रहता था। उसने धर्मसिह मुनिराज को निर्दोष आहार के दान से प्रतिलाभित कर मनुष्य-भव के आयुष्य का बन्ध किया और यहाँ पर उत्पन्न हुआ। यावत् साधुधर्म का यथाविधि अनुष्ठान करके भद्रनन्दी अनगार बँधे हुए कर्मो का आत्यतिक क्षय कर इसी भव मे मोक्ष पद को प्राप्त करेगा।

निक्षेप-उपसहार पूर्ववत समझना चाहिए।

॥ अष्टम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Sughosh It had a garden named Devaraman In that garden was a temple of Virasen Yaksh. That city was ruled by king Arjun. His queen was named Tattvavati They

had a son named Bhadranandı Kumar He was married to five hundred gırls, chıef among them beıng Shrıdevı

Bhagavan Mahavır arrıved Prınce Bhadranandı accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On beıng asked by Gautam about hıs past bırth, Bhagavan Mahavır replıed—

(In past bırth) There was a cıty named Mahaghosh Dharmaghosh Gathapatı lıved there He gave faultless food as alms to ascetıc Dharmasımha and as a consequence acquıred *Ayushya karma* (lıfe span determınıng karma) to be a human beıng Completıng hıs lıfe span there, he has reincarnated as Bhadranandı and so on up to At last he wıll ımmaculately follow the ascetıc code and at the end of thıs very lıfe become *Sıddha* (perfect), *Buddha* (enlıghtened), *Mukta* (lıberated) and attaın nirvana endıng all mısery

Conclusıon should be read as before

● END OF THE EIGHTH CHAPTER ●

नवम अध्ययन
NINTH CHAPTER

महाचन्द्र

१. नवमस्स उक्खेवो।

१. नवम अध्ययन का उत्क्षेप भी पूर्ववत् जान लेना चाहिए।

MAHACHANDRA

1. The foreword of the ninth chapter should be read as before. (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the ninth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. चंपा नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवईदेवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरीकंतापामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवो। तिगच्छिया नयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

२. चम्पा नाम की नगरी थी। वहाँ पूर्णभद्र नामक सुन्दर उद्यान था। उसमे पूर्णभद्र यक्ष का यक्षायतन था। वहाँ के राजा का नाम दत्त था और रानी का नाम रक्तवती था। उनके युवराज के पद पर आसीन महाचन्द्र नामक राजकुमार था। श्रीकान्ता प्रमुख ५०० राजकन्याओ के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ।

एक दिन पूर्णभद्र उद्यान मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी का आगमन हुआ। महाचन्द्र ने धर्मदेशना सुनकर श्रावको के बारह व्रतो को ग्रहण किया। गणधर गौतम स्वामी ने उसके पूर्वभव के सम्बन्ध मे जिज्ञासा की। भगवान महावीर स्वामी ने उत्तर देते हुए पूर्वभव इस प्रकार बताया–

(पूर्वभव) चिकित्सिका नाम की नगरी थी। महाराज जितशत्रु वहाॅ राज्य करते थे। उसने धर्मवीर्य अनगार को प्रासुक–निर्दोष आहार का दान दिया, फलत मनुष्य–आयुष्य का बन्धकर यहाँ उत्पन्न हुआ। यहाँ पर श्रमण–धर्म का यथाविधि अनुष्ठान करके महाचन्द्र मुनि बन्धे हुए कर्मों का समूल क्षय कर परमपद को प्राप्त करेगा।

निक्षेप–उपसहार–पूर्ववत् समझ लेना चाहिए।

॥ नवम अध्ययन समाप्त ॥

2. (The story in brief is—) There was a city named Champa. It had a garden named Purnabhadra In that garden was a temple of Purnabhadra Yaksh That city was ruled by king Datt His queen was named Raktavati

They had a son named Mahachandra Kumar, who was the crown prince He was married to five hundred girls, chief among them being Shrikanta

Bhagavan Mahavir arrived Prince Mahachandra accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Chikitsika King Jitashatru ruled there He gave faultless food as alms to ascetic Dharmavirya and as a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining karma) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Mahachandra and so on up to At last he will immaculately follow the ascetic code and at the end of this very life become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery

Conclusion should be read as before

● END OF THE NINTH CHAPTER ●

दशम अध्ययन
TENTH CHAPTER

वरदत्त

१. दसमस्स उक्खेवो।

१. दशम अध्ययन की प्रस्तावना पूर्व की भाँति ही जाननी चाहिए।

VARADATT

1. The foreword of the tenth chapter should be read as before (Jambu Swami asked—"*Bhante* ! What is the text and meaning of the tenth chapter as preached by Shraman Bhagavan Mahavir ?" Sudharma Swami replied—)

२. एवं खलु, जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नाम नयरे होत्था। उत्तर कुरू उज्जाणे। पासमिओ जक्खो। मित्तनन्दी राया। सिरिकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वरसेणापामोक्खाणं पंचदेवीसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थगरागमणं। सावगधम्मं।

पुव्वभवपुच्छा। सयदुवारे नयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई नामं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पडिलाभिए समाणे मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पन्ने।

सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स। चिंता जाव पव्वज्जा। कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिइ।

'एवं खलु, जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।'

सेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा।

२. सुधर्मा स्वामी कहते है–हे जम्बू ! उस काल उस समय मे साकेत नगर था। वहाँ उत्तरकुरु उद्यान था। उसमे पाशमृग यक्ष का यक्षायतन था। उस नगर का राजा मित्रनन्दी था। उनकी श्रीकान्ता रानी थी। (उनका) वरदत्त राजकुमार था। कुमार वरदत्त का वरसेना आदि ५०० सुन्दर राजकन्याओ के साथ पाणिग्रहण–सस्कार हुआ। किसी समय उत्तरकुरु उद्यान मे श्रमण भगवान महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ। वरदत्त ने देशना श्रवण कर भगवान से श्रावकधर्म अगीकार किया। गणधर गौतम स्वामी के पूछने पर भगवान महावीर ने वरदत्त के पूर्वभव का वृत्तान्त इस प्रकार फरमाया–

(पूर्वभव) हे गौतम ! शतद्वार नामक नगर मे विमलवाहन नामक राजा राज्य करता था। उसने एकदा धर्मरुचि अनगार को आते हुए देखकर उत्कट भक्तिभावो से निर्दोष आहार का दान कर प्रतिलाभित किया। उसके पुण्य प्रभाव से शुभ मनुष्य आयुष्य का बन्ध किया। वहाँ की भवस्थिति को पूर्ण करके इसी साकेत नगर मे महाराज मित्रनन्दी की रानी श्रीकान्ता की कुक्षि से वरदत्त के रूप मे उत्पन्न हुआ।

शेष वृत्तान्त सुबाहुकुमार की तरह की समझ लेना चाहिए। अर्थात् भगवान के विहार कर जाने के बाद पौषधशाला मे पौषधोपवास किया, भगवान के पास दीक्षित होने वालो को पुण्यशाली बतलाया और भगवान के पुन पधारने पर दीक्षित होने का सकल्प किया। यह सब वर्णन सुबाहुकुमार व वरदत्त कुमार दोनो के जीवन मे समान ही है। तदनन्तर दीक्षित होकर सयमव्रत का पालन करते हुए मनुष्य–भव से देवलोक और देवलोक से मनुष्य भव, देवलोको मे भी बीच–बीच के एक–एक देवलोक को छोडकर–सुबाहु के समान ही गमनागमन करते हुए अन्त मे सुबाहुकुमार की तरह महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर, वहाँ पर चारित्र की सम्यक् आराधना से कर्मरहित होकर दृढ प्रतिज्ञ की तरह मोक्षगमन करेगा।

हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने सुखविपाक के दशम अध्ययन का अर्थ कहा है, ऐसा मै कहता हूँ।

जम्बू स्वामी–भगवन् ! यह सुखविपाक का कथन, जैसे कि आपने फरमाया है, वैसा ही है, वैसा ही सत्य है।

2. Jambu ! During that period of time there was a city named Saket It had a garden named Uttarakuru In that garden was a temple of Paashamriga Yaksh That city was ruled by king Mitranandi His queen was named Shrikanta They had a son named Varadatt Kumar He was married to five hundred girls, chief among them being Varasena Bhagavan Mahavir arrived Prince Varadatt accepted *Shravak Dharma* (householder's code) On being asked by Gautam about his past birth, Bhagavan Mahavir replied—

(In past birth) There was a city named Shatadvar King Vimalavahan ruled there He saw ascetic Dharmaruchi coming and with great devotion he offered faultless food as alms to the ascetic As a consequence acquired *Ayushya karma* (life span determining *karma*) to be a human being Completing his life span there, he has reincarnated as Varadatt the son of King Mitranandi and queen Shrikanta

Remaining details should be read as those about Subahu Kumar Like— After *Bhagavan's* departure he went to *paushadhashala* and observed fasts. Considered those who got initiated in presence of *Bhagavan* to be lucky Resolved to get initiated when *Bhagavan* visited again All these

details are similar both for Subahu Kumar and Varadatt Kumar Then after getting initiated and observing ascetic code he will move alternatively from human dimension to divine dimension and so on. Then like Subahu Kumar he will take rebirth in Mahavideh area and at last will become *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened), *Mukta* (liberated) and attain nirvana ending all misery like Dridhpratijna

Sudharma Swami concluded, "Jambu ! Shraman Bhagavan Mahavir, who has attained nirvana, has narrated this text and meaning of the tenth chapter of *Sukha-vipaak* So I state "

Jambu—"*Bhante* ! What you say is, indeed, true What you said is a fact "

उपसंहार

नमो सुयदेवयाए। विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा–दुहविवागो य सुहविवागो य।

तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एवं सुहविवागे वि। सेसं जहा आयारस्स। एक्कारसमं अंगं समत्तं।

श्रुतदेवता को नमस्कार हो। विपाकश्रुत के दो श्रुतस्कध है। जैसे कि–(१) दु खविपाक और (२) सुखविपाक।

दु खविपाक के दश अध्ययन है जो कि दस दिनो मे प्रतिपादन किये जाते है। इनका वाचन दसदिन मे ही पूर्ण किया जाता है। इसी तरह सुखविपाक के विषय मे भी जानना चाहिए अर्थात् उसके भी दस अध्ययन एक जैसे है और दस दिनो मे वर्णन किये जाते है। शेष वर्णन आचाराग सूत्र की भाँति समझ लेना चाहिए। यह ग्यारहवा अग विपाक श्रुत समाप्त हुआ।

(उपसहार का यह पाठ आगम प्रकाशन समिति ब्यावर की प्रति मे नही है। आचार्य श्री आत्माराम जी म की टीका मे एव घासीलालजी म की प्रतियो मे उपलब्ध है।)

निक्षेप–उपसहार भी पूर्ववत् समझना चाहिए।

॥ दशम अध्ययन समाप्त ॥

॥ सुखविपाक समाप्त ॥

॥ विपाकश्रुत समाप्त ॥

CONCLUSION

My salutations to *Shrut Devata* (the divine scripture) There are two *Shrutskandhs* of *Vipaak Shrut*—(1) *Duhkha-vipaak* and (2) *Sukha-vipaak*

Duhkha-vipaak has ten chapters that are read and recited in ten days Same is true for *Sukha-vipaak*, that is, *Sukha-vipaak* also has ten chapters that are read and recited in ten days Here the remaining details should be read as in *Acharanga Sutra* (Here ends the eleventh *Anga* called *Vipaak Shrut*)

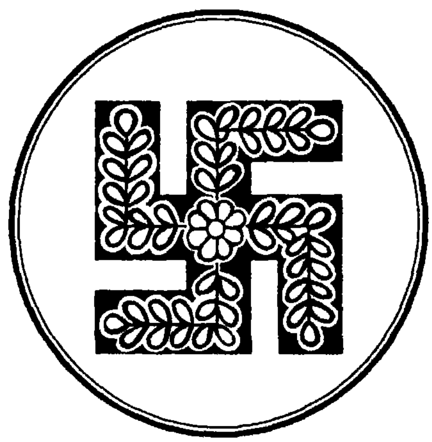
[*This text of conclusion is not included in the edition published by Agam Prakashan Samiti Beawar It is available in the Tika by Acharya Shri Atmaram ji M and that by Ghasilal ji M*]

● END OF THE TENTH CHAPTER ●

● END OF THE SUKHA-VIPAAK ●

● END OF THE VIPAAK SHRUT ●

परिशिष्ट
APPENDIX



परिशिष्ट-१

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमो मे जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल मे स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियो मे भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायो का उल्लेख करते है। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थो का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या सयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रो मे अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानागसूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए है, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है।

दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिए असज्झाए, तं जहा—अट्ठी, मंसं, सोणिते, असुतिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।

—स्थानांगसूत्र, स्थान १०

नो कप्पति निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए, कत्तिअपाडिवाए सुगिम्हपाडिवए।

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पढिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते।

कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

—स्थानांगसूत्र, स्थान ४, उद्देशक २

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. उल्कापात—तारापतन—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२. **दिग्दाह**–जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा मे आग–सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नही करना चाहिए।

३. **गर्जित**–बादलो के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. **विद्युत्**–बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास मे नही मानना चाहिए। क्योकि वह गर्जन और विद्युत् प्राय ऋतु–स्वभाव से ही होता है। अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता।

५. **निर्घात**–बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६. **यूपक**–शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनो प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

७. **यक्षादीप्त**–कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे–थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

८. **धूमिका–कृष्ण**–कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघो का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध पडती है। वह धूमिका–कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

९. **मिहिकाश्वेत**–शीतकाल मे श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१०. **रज–उद्‌घात**–वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११–१३. **हड्डी, मॉस और रुधिर**–पचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दे, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते है।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन–रात का होता है। स्त्री

के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. **अशुचि**—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५. **श्मशान**—श्मशान भूमि के चारो ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. **चन्द्रग्रहण**—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

१७. **सूर्यग्रहण**—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. **पतन**—किसी बडे मान्य राजा अथवा राष्ट्र-पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह-सस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ न हो, तब तक शनै -शनै स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. **राजव्युद्ग्रह**—समीपस्थ राजाओ मे परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नही करे।

२०. **औदारिक शरीर**—उपाश्रय के भीतर पचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पडा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२१-२८. **चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा**—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव है। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते है। इनमे स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. **प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्ध-रात्रि**—प्रात· सूर्य उगने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर मे एक घडी पहले और एक घडी पीछे एव अर्ध-रात्रि मे भी एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नही करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन-रात्रि मे चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

Appendix-1

INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaramji M.)

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the *Agams* Study of scriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti* Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas* This rule is applicable to other Aryan holy books As Jain *Agams* are sermons of the Omniscient, ensconced by the *devas*, and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures For example

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night, and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening, and midnight) They are briefly described as follows

RELATING TO SKY

1. Ulkapat or Tarapatan—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident.

2. Digdaha—As long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done

3. Garjit—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited.

4. Vidyut—For three hours following lightening such studies are prohibited

However, the prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon. This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season. Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon)

5. Nirghat—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited

6. Yupak—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak* During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night.

7. Yakshadeepti—Some times there is a lightning like intermittent glow visible in the sky This is called *Yakshadeepti* As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited

8. Dhoomika-krishna—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon. This is called *Dhoomika-krishna* As long as this fog exists such studies are prohibited

9. Mihikashvet—The white mist during winter season is called *Mihikashvet*. As long as this exists such studies are prohibited

10. Raj-udghat—High speed wind causes dust storm. This is called *Raj-udghat* As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited.

RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY

11-13. Bone, flesh and blood—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited. According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective.

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night. The period prohibited for studies is three days in

case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth.

14. Ashuchi—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited

15. Smashan—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited

16. Chandra grahan—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours

17. Surya grahan—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours

18. Patan—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over

19. Raaj-vyudgraha—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail Studies should be resumed only 24 hours after peace is established.

20. Audarik Sharir—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay

21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada—*Ashadh, Ashvin, Kartik*, and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days The days after these festival days are called *Mahapratipada*. On all these days such studies are prohibited

29-32. Sandhya—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz morning, noon, evening, and midnight such studies are prohibited

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies).

Appendix-2

Technical Terms
NIRAYAVALIKA SUTRA

The alphabetical index of technical terms according to aphorism number

(A)

aayudh = countering weapons (Nir I/33 a)

abhakshya = unacceptable (Nir III/14)

Abhaya Kumar = (Nir I/11 b)

Abhiyogik Devs = servant-gods (Nir III/2, 29)

Acharya Siddharth = (Nir V/12)

Achyut kalp = (Nir II/5, V/19)

ahar = food (Nir III/5)

ajjhatthiye (adhyatmik) = aspiration (Nir III/31)

Amrashaalvan = (Nir III/14)

Amrashalavan Chaitya = (Nir III/30)

Anadrit = (Nir III/1, 63)

anagar = homeless ascetic (Nir II/2, III/4)

Anagar Varadatt = (Nir V/12)

Anand Shravak = (Nir II/1, III/3)

Anangasen = (Nir V/8)

Angas = the primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts (Nir II/3, III/5, 53, 57, V/14, 18)

Angati = (Nir III/3)

Angul = (Nir III/44)

Antakriddashanga Sutra = (Nir I/1, I/34, II)

Anuttar Vimans = (Nir I/34)

Anuttaraupapatik Sutra = (Nir I/22, 34)

anuvrat = minor vows (Nir III/23, 24)

Apsaras = (Nir V/6)

Arani = a type of wood (Nir III/18)

Arya Sudharma Anagar = (Nir I/2)

aryaa = female ascetic (Nir III/4, 32, 49, IV/7)

aryikas = female ascetics (Nir III/33, 49, 50)

ashan = staple food (Nir III/16 a)

ashan, paan, khadya, svadya ahaar = staple food, liquids, general food, and savoury food (Nir III/33, 49)

Ashoka tree = (Nir I/1, III/21)

Aupapatik Sutra = (Nir I/1, 5, III/16 b, V/7, 10)

autpattiki buddhi = instantaneous wisdom (Nir I/13)

Avadhi Jnana = extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance (Nir III/2, 29, 57)

avasanna = indulging in base activities (Nir III/44)

avasannavihari = disgraceful (Nir III/44)

avashyak = essential duties (Nir III/14)

Avashyak Churni = (Nir I/24, 34)

(B)

Bahuputrik Vimaan = celestial vehicle (Nir III/29, 44)

bahuputrika = having many offsprings (Nir III/45 a)

Bahuputrika Devi = (Nir III/1, 29, IV/5)

Bala = (Nir III/1, 63)

Baldev = (Nir V/8)

Bhadra = (Nir II/1, III/30)

Bhagavati Sutra = (Nir I/11 b, 33 b, III/4, 14, 18, 39, 57, IV/7)

Bhagavati Tika = (Nir I/22)

bhakshya = edible, usable, acceptable (Nir III/14)

bhanja = nephew, sister's son (Nir III/46)

Bharateshvar-Bahubali Vritti = (Nir I/22)

Bharatvarsh = (Nir I/5, III/45 b)

bhasha-man = speech and mind (Nir III/5, 57, IV/9)

bhed = guile (Nir I/11 b)

Bhikshu = (Nir I/34)

Bhoota = (Nir IV/5)

Bhoota Darika = Miss Bhoota (Nir IV/6)

Biyahari = those who subsist on seeds (Nir III/16 a)

Bil-vasi = those who dig holes and live in them (Nir III/16 a)

Bilva = Bel, timb, Aegle marmelos (L.) (Nir III/15)

Brahmalok Kalp = a divine dimension (Nir II/5, V/14, 15)

Buddha = enlightened (Nir V/20)

Buddhi Viman = (Nir IV/11)

Buddhidevi = (Nir IV/2)

(C)

chaitya = garden (Nir III/2, 11), temple complex (Nir III/61, 63, IV/5, 11)

Chakravaks = Brahminy duck, Anas casarca (Nir V/6)

Chamarendra = (Nir I/33 b)

Champa city = (Nir I/1, 21 b)

champak tree = (Nir I/21 a)

Chandana city = (Nir III/63)

Chandra = (Nir III/1, 5, 57)

Chandra Jyotishk god = (Nir III/5)

Chandravatansak Viman = celestial vehicle (Nir III/2, 5)

Charans = (Nir V/6)

Chelana = (Nir I/11 b)

Chetak = (Nir I/6)

Chincha = Imli, tamarind (Nir III/15)

Chitta Sarathi = (Nir V/11)

cough = phlegm (Nir III/14)

(D)

daam = bribery (Nir I/11 b)

Dakshin-koolak = those who live on the southern bank of the Ganges (Nir III/16 a)

Dakshinardha Bharat = (Nir V/8)

dand = threat (Nir I/11 b)

Dantodukhalik = those who remove husk from grain with their teeth before eating (Nir III/16 a)

Dashadhanva = (Nir V/2)

Dashar clan = (Nir V/6)

Dasharath = (Nir V/2)

Dashashrutaskandh = (Nir I/34)

Datt = (Nir III/63)

Datta = (Nir III/1)

Devananda = (Nir IV/7)

Dhanush = an ancient linear measure (Nir V/9)

Dharmakathanuyoga = (Nir III/4)

Dhriti Viman = (Nir IV/11)

Dhritidevi = (Nir IV/2)

dhvaj = flag (Nir III/2)

dhyan = meditation (Nir III/14)

Disha-chakraval practice = (Nir III/16 b)

Dishaprokshi or Dishaprokshiks = those who sprinkle water in all directions for worship (Nir III/16 a, b)

dohad = desires of a pregnant mother (Nir I/12 a, 12 c, 13, 14 a, 14 b, 14 c, 20 b)

Dridharath = (Nir V/2)

Dvaravati = Dvarika (Nir V/5)

(G)

gamanugamam = moving from one village or city to another (Nir I/2)

Gandh Hasti = (Nir I/34)

Gandhadevi = (Nir IV/2)

Gang-datt = (Nir III/4, 57)

Garud Vyuha = eagle shaped battle formation (Nir I/6, 33 a, b)

gathapati = householder (Nir III/3, 8, 57, 61, IV/5)

Ghan Mridang = (Nir III/2)

Graiveyak Vimans = (Nir V/19)

greeshma = summer (Nir V/12)

Gunasheelak Chaitya = (Nir I/1, III/2, 8)

gupta brahmacharini = woman practicing celibacy with nine fences (Nir III/32)

guptindriya = complete restraint over sense organs (Nir III/32)

guptis = restraints (Nir III/32, 34, 39, 52)

(H)

Hastinapur city = (Nir III/18, 63)

Hastitapas = those who subsist on elephant-meat (Nir III/16 a)

Hemabh Narak = name of a specific area in the infernal world (Nir I/11 a, b)

hemant = winter (Nir V/12)

Himavan parvat = the Himalayas (Nir I/11 b)

Hotrak = those who do offerings at fire sacrifice (Nir III/16 a)

Hri Viman = (Nir IV/11)

Hridevi = (Nir IV/2)

Humbauttha = jungle dwelling ones (Nir III/16 a)

(I)

Iladevi = (Nir IV/2)

indriya = sense organs (Nir III/5)

indriya yaapaniya = restraint over senses (Nir III/14)

Irya samiti = regulation of movement (Nir III/34, 41, IV/8)

Ishan kalp = a dimension of gods (Nir II/4, 5, V/19)

Ishan Kone = north-east direction (Nir I/5, IV/7)

(J)

Jain Tattvadarsh = (Nir I/33 b)

Jal-bhakshi = those who subsist only on water (Nir III/16 a)

Jal-vasi = those who live in water (Nir III/16 a)

Jamali = (Nir IV/7, V/13)

Jambu Anagar = (Nir I/3)

Jambudveep continent = (Nir I/5, III/2, 45 b, V/20)

Jitshatru = (Nir IV/5)

Jnata Dharma Katha Sutra = (Nir I/5, 17 c, 34, III/14)

Jyoti = (Nir V/2)

Jyotishk Rajas = kings of the stellar gods (Nir III)

Jyotishk Vimans = the stellar celestial vehicles (Nir II/3)

(K)

Kaal Kumar = (Nir I/1)

Kaali Devi = (Nir I/5)

kaarmiki buddhi = wisdom confirmed through experience (Nir I/13)

kaasth mudra = a small strip of wood having tie-holes at both ends to cover one's mouth when taking a vow of strict silence (Nir III/18)

Kakandi city = (Nir III/63)

Kalp Vimans = celestial vehicles (Nir II)

Kalpavatansika (Kappavadinsiya) = name of an Upanga (Nir I/1,3)

Kalpik (Kappiya) = name of an Upanga (Nir I/1)

kamandalu = gourd-bowl (Nir III/17)

Kandahari = those who subsist on bulbous roots (Nir III/16 a)

kantak = small thorn (Nir I/33 b)

karod (crore) = ten million (Nir I/33 b)

Kartik = (Nir III/4)

Kautrik = those who sleep on the ground (Nir III/16 a)

Kavittha = Kaith, Feronia limonia (Nir III/15)

Keshi Kumar Shraman = (Nir I/2, V/12)

khadya = general food (Nir III/16 a)

kheer = a pudding made of rice and milk (Nir III/40)

King Prasenjit = (Nir I/34)

King Shrenik = (Nir I/11 b)

Kirti Viman = (Nir IV/11)

Kirtidevi = (Nir IV/2)

kodi = koti, crore or ten million, a group of soldiers like company, battalion or brigade, a count of 20, a noun coined for some specific number (Nir I/33 b)

Kooladhma = those who take their meals on the bank after shouting loudly (Nir III/16 a)

Koshthak Chaitya = (Nir III/3)

Kraunch = the Demoiselle crane (Nir V/6)

Krishna = (Nir I/4)

Krishna Vasudev = (Nir V/8)

kubja = hunchbacks (Nir I/8)

Kulattha = Kulathi, horse-bean, Dolichos biflorus L (Nir III/14)

kulattha = noble woman (Nir III/14)

Kunik = (Nir I/5)

kunik = one with a cut finger (Nir I/17 c)

Kutagar-shala or Kutagar = camouflaged house (Nir III/2, 11, 30)

(L)

Lakshmidevi = (Nir IV/2)

Lantak kalp = (Nir II/5)

Lavana sea = (Nir V/8)

(M)

Maan-bhadra = (Nir III/1)

maas = month, measure of gold or silver (Nir III/14)

Maash = Udad, a kind of pulse, Phaseolus mungo L (Nir III/14)

madhu = a variety of wine (Nir I/12 a)

madya = a variety of wine (Nir I/12 a)

Magadh = (Nir I/1)

Mahabal Kumar = (Nir I/11 b, V/8)

Mahadhanva = (Nir V/2)

Mahakaal = (Nir I/4)

Mahakrishna = (Nir I/4)

Mahapadma = (Nir II/1)

mahaprasthan = the great journey, the vow of rigorous conduct accepted with the purpose of embracing death (Nir III/18)

Mahasen-krishna = (Nir I/4)

mahashila = great boulder (Nir I/33 b)

Mahashilakantak = war-machines (tank-like) (Nir I/33 b)

Mahashilakantak battle = (Nir I/33 b)

Mahashukra kalp = (Nir II/5)

mahattarika goddesses = teacher goddesses who taught ethics and morality (Nir III/29, IV/5)

Mahavideh area = a mythical area (Nir I/34, 36, II/3, 4, III/6, 8, 26, 54, 57, 61, IV/9, 11, 20)

Mahendra kalp = (Nır II/5)

Manibhadra god = (Nır III/61)

Manibhadra Vıman = celestıal vehıcle (Nır III/61)

Manidatt Yaksh = (Nır V/12)

Manipadıka cıty = (Nır III/57)

manogaye (manogat) = notıon (Nır III/31)

Manoram Viman = celestıal vehıcle (Nır V/14)

Matalı = (Nır V/2)

Matulıng = Bıjaura, a kınd of lemon (Nır III/15)

Megh Kumar = (Nır I/5)

Meghavan = a garden (Nır V/12)

merak = a varıety of wıne (Nır I/12 a)

Mıthila city = (Nır III/63)

Moolaharı = those who subsıst on roots only (Nır III/16 a)

Mrıgalubdhak = those who subsıst on deer-meat (Nır III/16 a)

Munısuvrat = (Nır III/4)

myna = a type of Asıan starlıng (Nır V/6)

(N)

naarak = ınfernal beıng (Nır I/11 a)

naırayık = ınfernal beıng (Nır I/11 a, 33 b)

Nalinıgulma = (Nır II/1)

Nanda = (Nır I/11 b)

Nandan = (Nır II/1)

Nandan Kanan = the dıvıne garden (Nır V/7)

Nandanvan = a garden (Nır V/7)

narak = ınfernal world (Nır I/1)

Nımajjak = those who remaın under water for some tıme (Nır III/16 a)

Nirgranth = the Omnıscıent (Nır III/50)

Nirgranth Shramanis = female ascetıcs (Nır III/34, 41, IV/8)

Nirgranth Shramans = detached ascetıcs (Nır III/14)

Nırgranth-pravachan = Tırthankar's sermon (Nır V/11)

Niryavalıka (Narakavalıka) = the first Upanga, ıt ıs also known as Kappıya (Nır I/1)

Nıryavalıka Tika = (Nır I/22)

Nıshadh = (Nır V/2, 8)

nıyam = codes (Nır III/14)

noındrıya yaapanıya = restraınt other than that over senses (Nır III/14)

(P)

paan = lıquıds (Nır III/16 a)

paarınamıki buddhı = wısdom enrıched through ımagınatıon, logıc, and example (Nır I/13)

Padma = (Nır II/1)

Padmabhadra = (Nır II/1)

Padmagulma = (Nır II/1)

Padmasen = (Nır II/1)

Padmavati = (Nır I/5, V/12)

padopagaman anashan = lıfelong fastıng keepıng the body motıonless lıke a fallen tree (Nır II/3)

Pagata = (Nır V/2)

Palyopam = (Nır III/6, 9, 26, 45 a)

Pankaprabha Prıthvi = the fourth hell (Nır I/11 a, 33 b)

paryaptı = state of full development (Nır III/5, 25, 44, 57, IV/9)

pasatth-viharı = lax ın hıs or her ascetıc conduct (Nır III/44)

pasattha = dıstancıng herself from ascetıc vırtues (Nır III/44)

Patraharı = those who subsıst on leaves (Nır III/16 a)

patthiye (prarthit) = expectation (Nir III/31)

paushadh shala = place of stay for ascetics (Nir I/33 b), place of meditation (Nir V/16)

paushadh vrata = partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period (Nir V/16)

pavas = monsoon (Nir V/12)

Pitrasen-krishna = (Nir I/4)

pitta = bile (Nir III/14)

Potrak = the clad ones (Nir III/16 a)

Prabhavati = (Nir I/11 b)

Pradyumna = (Nir V/8)

praharan = attacking weapons (Nir I/33 a)

prajnapti = detailed explanations (Nir III/37)

Pranat kalp = (Nir II/5)

prasanna = a variety of wine (Nir I/12 a)

prasuk vihar = defined movement and stay (Nir III/14)

pratikraman = critical review (Nir II/3, III/5, 8, 25, 53, 57, 61, V/14, 18, 19)

Priya = (Nir IV/5)

Purnabhadra god = (Nir III/57)

Purnabhadra Viman = celestial vehicle (Nir III/57)

Purnabhadra Yaksha = (Nir I/5)

Purushadaniya Arhat Parshva = (Nir III/4, 13, IV/6)

Pushp-chulika = (Pupphachuliya) = name of an Upanga (Nir I/1)

Pushpahari = those who subsist on flowers (Nir III/16 a)

Pushpika (Pupphiya) = name of an Upanga (Nir I/1)

(R)

Raivatak mountain = (Nir V/7)

Rajagriha = (Nir I/1)

Ramakrishna = (Nir I/4)

Rasadevi = (Nir IV/2)

Rashtrakoot = (Nir III/46)

Rath-musal = war-machines (tank like) (Nir I/33 b)

Rath-musal war = (Nir I/1)

Rayapaseniya Sutra = (Nir I/11 b, 25 b, 34, III/2, III/29)

Revati Devi = (Nir V/8)

Rohitak city = (Nir V/12)

Rukmini = (Nir V/8)

(S)

saadhvi = female ascetic (Nir I/34)

saam = incantation (Nir I/11 b)

Sadhu vrat = ascetic-code (Nir III/27)

Sagaropam = a metaphoric unit of time (Nir I/11 a)

Sahasrara kalp = (Nir II/5)

Sakth = an instrument (Nir III/17)

sallekhana = ultimate vow (Nir II/3, III/5, 53, 57, 61, V/14, 18, 19, 20)

samachaturasra samsthan = the anatomical structure of a human being where parallel lines drawn from the extremities of a body sitting cross-legged form a square and where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions (Nir I/3)

Samanik = of equal status (Nir III/53)

Samavasaran = divine assembly of a **Tirthankar** = (Nir I/8, II/2, III/29)

Samayik = (Nir II/3, 5, III/53, 57, V/14, 18)

samitis = self regulations (Nir III/32)

Sammajjak = those who wash their hands and feet repeatedly (Nir III/16 a)

Samprakshalak = those who cleanse their body by rubbing sand or clay (Nir III/16 a)

samsakt = to keep contact with householders (Nir III/44)

samsaktavihari = gregarious (Nir III/44)

Samudanik trumpet = a trumpet on hearing which people start gathering (Nir V/9)

Samudravijaya = (Nir V/6)

samyaktva = righteousness (Nir I/33 b)

samyam = discipline (Nir III/14)

Sanatkumar kalp = (Nir II/5)

sangrahani Gatha = collective verse (Nir V/20)

sanjnapti = narration of examples and incidents (Nir III/37)

sankappe (sankalp) = intention (Nir III/31)

Saptadhanva = (Nir V/2)

Saptaparna tree = (Nir III/20)

sarisava (sadrashvaya) = of same age (Nir III/14)

Sarisava = Sarason or mustard (Nir III/14)

sarthavaha = caravan chief (Nir III/30)

Sarus = crane (Nir V/6)

Sarva Sangh ke Samast Acharya Sanghayan = (Nir I/33 b)

Sarvarthasiddha Viman = celestial vehicle (Nir V/19)

Saudharm = (Nir V/19)

Saudharma Kalp Devlok = divine dimension (Nir II/3, 5, III/44, 57, IV/5, 9)

sechanak = one who waters plants (Nir I/34)

seedhu = a variety of wine (Nir I/12 a)

Shailak Rajarshi = (Nir III/14)

Shaivalabhakshi = those who subsist on moss or grass only (Nir III/16 a)

shakat = chariots (Nir I/33 b)

shakat vyuha = cart shaped battle formation (Nir I/33 a, b)

Shakra = the king of gods = in the first heaven (Nir III/45 a, 53)

Shakrendra = (Nir I/33 b)

Shamb = (Nir V/8)

Shankhadhma = those who take their meals after blowing conch-shell (Nir III/16 a)

sharad = autumn (Nir V/12)

Sharak = a type of wood (Nir III/18)

sharir-bakushika = a woman having an attitude that spoils ascetic-discipline as a consequence of over indulgence in beautification of the body, over indulgent in beautification of the body (Nir IV/8, 11)

sharira = body (Nir III/5)

Shatadhanva = (Nir V/2)

shayya-bhaand = bed and utensils (Nir III/17)

shikshavrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (Nir III/23, /24)

Shiva = (Nir III/1, 63)

Shiva Rajarshi = (Nir III/18)

Shraaddhakin = those who perform rituals for the benefit of deceased relatives (Nir III/16 a)

Shraman = (Nir III/2)

shraman = male ascetic (Nir I/34, III/4)

Shramanis = female ascetics (Nir I/34)

Shramanopasak = a male devotee of Shramans (Nir I/9, III/25, V/15)

Shramanopasika = a female devotee of Shraman (Nir I/9, III/35, 52)

Shravak dharma = Jain code for laity (Nir III/23, 24, 35, 52, V/11)

Shravak vrat = the code for laity (Nir III/14, 27)

Shravasti = (Nir I/25 b, III/3, III/8)

Shrenik = (Nir I/1, III/8)

Shri Avatansak Vimaan = celestial vehicle (Nir IV/5, 9)

Shridevi = (Nir IV/2)

Shrutskandh = part (Nir V/21)

Shukra = (Nir III/1)

Shukra Mahagraha = great planet, the king of Shukra Jyotishk gods (Nir III/11, 25)

Shukravatansak Viman = celestial vehicle (Nir III/11, 25)

shvasochhavas = breathing (Nir III/5)

Siddha = liberated soul (Nir II/5)

Siddha-state = (Nir I/3)

Soma = (Nir III/45 b)

Somil = (Nir III/13)

Sthaalakin = those who carry plate or thaali and other pots (Nir III/16 a)

sthaan = aasan, seat or mattress (Nir III/17)

Sthavir Bhagavants = senior ascetics (Nir III/57)

Subhadra = (Nir II/1, III/30)

Sudarshan = (Nir IV/5)

Sudharma Sabha = divine assembly (Nir III/29, 57, IV/5)

Sudharma Swami = (Nir I/2)

suhamsuhenam = to move comfortably (Nir I/2)

Sukaal = (Nir I/4)

Sukrishna = (Nir I/4)

Supratishtha = (Nir III/8)

sura = a variety of wine (Nir I/12 a)

Suradevi = (Nir IV/2)

Surapriya Yaksh = (Nir V/7)

Surya = (Nir III/1, 8)

Surya Jyotishk Dev = (Nir III/8)

Surya viman = (Nir III/8)

Suryabh Dev = (Nir III/2, 29, 57)

Suryabh viman = (Nir III/2)

Suvrata = (Nir. III/32, 49)

svadhyaya = self-study (Nir III/14)

svadya = savoury food (Nir III/16 a)

Swami = Shraman Bhagavan Mahavir (Nir III/29, IV/5)

(T)

taalput-vish = a deadly poison (Nir I/21 a)

tap = austerities (Nir III/14)

tapas = hermit (Nir III/16 a, b)

Tarakeern = a garden (Nir III/57)

tilak = auspicious mark (Nir I/20 a)

Trutit = (Nir III/2)

Tvachahari = those who subsist on bark of a plant (Nir III/16 a)

(U)

Uddandak = those who move about raising their staff (Nir III/16 a)

Udumbar = Gular, the wild fig, Ficus glomerata (Nir III/23)

Ugrasen = (Nir V/8)

Unmajjak = those who bathe by taking just one dip in water (Nir III/16 a)

Unnak city = (Nir V/20)

Upangas = the auxiliary explanatory works to the twelve Angas or the main corpus of the Jain canonical texts (Nir I/1,4)

upapat = to reincarnate instantaneously (Nir III/5, 25, 57, IV/9)

Upapat-hall = (Nir III/5)

upashraya = place of stay for ascetics (Nir III/38, 43, 52, IV/8)

Uttar-koolak = those who live on the northern bank of the Ganges (Nir III/16 a)

(V)

vaat = air (Nir III/14)

Vaha = (Nir V/2)

Vahe = (Nir V/2)

vaikriya sharira = transmuted body (Nir III/29)

vainayiki buddhi = wisdom acquired with modesty (Nir I/13)

Vaishali city = (Nir I/24)

Vaishraman = the guardian angel of the north (Nir III/17)

Vaitadhya mountain = (Nir V/8)

valkal = bark garment (Nir III/17)

Valkavasi = the bark-clad (Nir III/16 a)

Vaman = emesis (Nir III/33)

Vanavyantar = interstitial (Nir I/34)

Vanijyagram = (Nir III/14)

Vankachula necklace = A divine eighteen **string necklace** = (Nir I/34)

Varanasi = (Nir III/13, 30)

varg = section (Nir V/21)

varsha = monsoon (Nir V/12)

Varun = the guardian angel of the west (Nir III/17)

vasant = spring (Nir V/12)

Vastikarma = common enema (Nir III/33)

Vayubhakshi = those who subsist only on air (Nir III/16 a)

Veena = (Nir III/2)

Vibhanga Jnana = pervert knowledge (Nir III/18)

Vibhel village = (Nir III/45 b)

Vidyadhars = (Nir V/6)

vijnapti = persuasions (Nir III/37)

vimaan = (Nir III/2)

Vindhyachal = (Nir III/45 b)

vipul tejoleshya = great radiant energy (Nir I/3)

Virakrishna = (Nir I/4)

Virangad = (Nir V/12)

virechan = purgation (Nir III/33)

Virsen = (Nir V/8)

Visheshavati = (Nir I/33 b)

Vrikshamoolak = those who live under trees (Nir III/16 a)

Vrishnidasha (Vanhidasa) = name of an Upanga (Nir I/1)

Vyakhya Prajnapti = Bhagavati Sutra (Nir III/14)

(Y)

yaapaniya = restraints (Nir III/14)

Yajnik = those who perform yajna or ritual sacrifice (Nir III/16 a)

yoga = associations (Nir III/14)

Yojan = an ancient measure of distance (Nir III/29, V/5)

yupas = ritual pillar in a yajna (Nir III/15)

Appendix-3

Technical Terms
VIPAAK SUTRA

The alphabetical index of technical terms according to aphorism number. For space restrictions the terms that very frequently recur have been referred to only at their first use. *e.g.* Jambu continent.

(A)

Aaigare (Aadikar) = the first propagator of dharma (Vip I/Ch 1/6)

abal = became physically weak (Vip I/Ch 3/25)

abhagna = unbroken (Vip I/Ch 3/16)

Abhagnasen = (Vip I/Ch 1/6, 3/6)

abhat pravesh (-utsava) = A festival where state officers are not allowed to search or frisk anyone or enter any premises (Vip I/Ch 3/27)

Abhayadev Suri = (Vip I/Ch 3/23), II/Ch 1/7)

abhisamannagaya (abhisamnvagat) = to enjoy the inherited and acquired wealth (Vip II/Ch 1/7)

abhyangan = application of medicinal pastes (Vip I/Ch 1/23)

Acharanga Sutra = (Vip II/Ch 10/2)

achit = lifeless (Vip II/Ch 1/12)

adandim-kudandim (-utsava) = A festival which is free of any punitive measures (Vip I/Ch 3/27)

Adeenashatru = (Vip II/Ch 1/3)

adharaniya (-utsava) = A festival where a king provides establishment subsidy for stalls and other such things (Vip I/Ch 3/27)

adharim (-utsava) = A festival where no one can be pressurized or forced for some old dues (Vip I/Ch 3/27)

adharm praloki = one who always concentrates on evil activities (Vip I/Ch 3/4)

adharma-vritti = one who subsists only on evil doing (Vip I/Ch 3/4)

adharmanujna = one who supports activities devoid of or against religiosity (Vip I/Ch 3/4)

adharmapraranjan = one whose only entertainment is evil deeds (Vip I/Ch 3/4)

adharmasheel samudachar = one whose morality, style, attitude, and behaviour merge with evil doing (Vip I/Ch 3/4)

adharmi = evil doer (Vip I/Ch 3/4)

adharmisht = one who loves evil or irreligious activity (Vip I/Ch 3/4)

adhramakhyayi = one who preaches others to indulge in irreligious conduct (Vip I/Ch 3/4)

adyupapanna = (Vip I/Ch 4/11)

Agni Kone = south-east direction (Vip I/Ch 1/20)

ahodanam = great charity (Vip II/Ch 1/12)

ajeern = indigestion (Vip I/Ch 1/22)

ajjhatthiye = surfacing of thoughts from the depths of soul (Vip II/Ch 1/16)

ajjhovavanne (adhypapanna) = having obsessive involvement in possessing something (Vip I/Ch 2/22)

akaam = lost his confidence (Vip I/Ch 3/25)

akshi vedana = pain in the eyes (Vip I/Ch 1/22)

alankarik = barber or hair-styler (Vip I/Ch 6/3)

allapatt = hooks (Vip I/Ch 6/7)

amlaan maalyadaam (-utsava) = A festival where there is proper and elaborate arrangement and decoration of blooming flowers and garlands (Vip I/Ch 3/27)

Amogh Yaksh = (Vip I/Ch 4/2)

Amoghadarshan = (Vip I/Ch 3/2)

Amoghadarshi Yaksh = (Vip I/Ch 3/2)

Anagar Dharma = the religion of the homeless ascetics, Jain religion (Vip II/Ch 1/6)

Anat = ninth Devlok (Vip II/Ch 1/20)

anek taalacharanucharit (-utsava) = A festival where many dancers give dance performances on drum beats (Vip I/Ch.3/27)

Anga = The primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts This consists of twelve treatises, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition (Vip I/Ch 1)

Anju = (Vip I/Ch 1/6, 10/2)

Anka Dhatri = lap-nurse-maid or the one who took charge of keeping the baby in her lap (Vip I/Ch 2/17)

anudhrit mridang (-utsava) = A festival where mridang, tabla and other musical instruments are carried and placed properly and played continuously (Vip I/Ch 3/27)

anuvasana = enema of medicated oils (Vip I/Ch 1/23)

anuvrat = minor vows (Vip II/Ch 1/6)

Anuyogadvar = (Vip I/Ch 1/3)

apasnan = washing with medicated water (Vip I/Ch 1/23)

Apratihat = (Vip II/Ch 5/2)

Aran = eleventh Devlok (Vip II/Ch 1/20)

ardracharm arohan = riding over wet leather (Vip I/Ch 3/23)

Arhadatta = (Vip II/Ch 5/2)

Arjun = (Vip II/Ch 8/2)

arsh (bavasir) = bleeding piles (Vip I/Ch 1/22)

artt = mentally tormented (Vip I/Ch 1/24)

ashan, paan, khadya, svadya = staple food, liquids, general food, and savoury food (Vip I/Ch 1/16)

Ashoka Yaksh = (Vip II/Ch 4/2)

ashtam-bhakt = avoiding eight meals (Vip II/Ch 1/15)

Ashtanga Chikitsa = the eight limbed science of healing (Vip I/Ch 7)

asipatra = swords (Vip I/Ch 6/7)

asvadan = tasting (Vip I/Ch 7/9)

Atharvaveda = (Vip I/Ch 5/3, 5)

audarik = gross physical (Vip I/Ch 1/32)

Aupapatik Sutra = (Vip I/Ch 1/1, 7, 8)

aushadh = medicines of vegetable origin and single ingredient (Vip I/Ch 1/23)

autpattiki buddhi = intuitive wisdom (Vip I/Ch 8/13, 10/9)

avadahan = cauterizing with hot metal (Vip I/Ch 1/23)

avakotak bond = bending the neck and tying it with hands already tied at the back) (Vip I/Ch 2/23)

avapidan = give massage or compression (Vip I/Ch 8/13)

avirya = lost his courage (Vip I/Ch 3/25)

ayudhs = hand carried weapons held like sword (Vip I/Ch 2/6 a)

ayukshaya = shedding the life span determining karma particles (Vip II/Ch 1/20)

Ayurveda = Indian science of medicine and surgery (Vip I/Ch 7/8)

Ayushya karma = life span determining karma (Vip II/Ch 2/2)

(B)

Baajikaran = The part of Ayurveda that deals with the medicines and tonics for maintaining and toning up sexual performance (Vip I/Ch 7/8)

baal bhaava = childhood (Vip I/Ch 1/32)

baal-bandh = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

Bagulas = herons (Vip I/Ch 3/10)

Bahumitraputra = (Vip I/Ch 6/3)

bahya bhaandasar = deposits made in presence of a witness (Vip I/Ch 2/18)

Bala = (Vip II/Ch 7/2)

Balashri = (Vip II/Ch 3/2)

Bandhushri = (Vip I/Ch 6/2)

bavaseer = bleeding piles (Vip I/Ch 7/4)

bhaag = share in profit (Vip I/Ch 7/11)

bhaavana = pious attitude (Vip II/Ch 1)

Bhadraa = (Vip II/Ch 4/2)

Bhadranandi = (Vip II/Ch 1/1, 2/2, 8/2)

bhagandar = fistula of the anus (Vip I/Ch 1/22, 7/4)

Bhagavati Sutra = (Vip I/Ch 2/6 a)

Bhaishajya = medicines with many ingredients including those of metallic and mineral origin

Bhandir = (Vip I/Ch.6/2)

Bharatvarsh = (Vip I/Ch 1/20)

bhasmak = a disease in which food is digested quickly (Vip I/Ch 1/27)

bhavakshaya = shedding of the divine state determining karma particles (Vip II/Ch 1/20)

bhed = guile (Vip. I/Ch 4/2, 6/3)

Bheem = (Vip I/Ch 2/9)

Bhikshuks = (Vip I/Ch 7/9)

bhisara = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

bhogantaraya = enjoyment hindering (Vip II/Ch 1/7)

bhojan-aruchi = loss of appetite (Vip I/Ch 1/22)

Bhoot-vidya = The part of Ayurveda that deals with warding off evil spirits and pacifying them (Vip I/Ch 7/8)

bhuj-parisarp = limbed reptilian (Vip I/Ch 1/32)

Brihaspati = (Vip I/Ch 1/6)

Brihaspatidatt = (Vip I/Ch 5/3)

Buddha = enlightened (Vip II/Ch 2/2)

(C)

chachas (chullapiuye) = father's younger brothers, uncles (Vip I/Ch 3/8)

chachis (chullamauyao) = wives of father's younger brothers, Champa city (Vip I/Ch 1/1)

Champa tree = (Vip I/Ch 2/17)

Chandal = a low caste (Vip I/Ch 4/13)

Chandanapadap = (Vip I/Ch 1/7, 10)

Chandravataran = (Vip I/Ch 5/1)

charak bhaand = prison instruments (Vip I/Ch 6/7)

charak paal = jailer (Vip I/Ch 6/6)

Charak Samhita = (Vip I/Ch 1/8)

chela = clothes (Vip II/Ch 1/12)

chelotkshep = shower of clothes from the sky (Vip II/Ch 1/12)

Chetak = (Vip I/Ch 5/2)

chhaal = medicinal use of bark of trees (Vip I/Ch 1/23)

chhagalik = a butcher selling goat meat (Vip I/Ch 4/6)

Chhagalpur = (Vip I/Ch 4/6)

Chhannik = (Vip I/Ch.4/6)

chhardan = give expectorants (Vip I/Ch 8/13)

chikitsak = those who practice medicine and surgery (Vip I/Ch 1/22, 8/12, 10/8)

Chikitsika = (Vip II/Ch 9/2)

chintiye = repeated surfacing of the same idea in mind (Vip II/Ch 1/16)

Chitra = (Vip I/Ch 6/11)

copebhavan = the room where an angry and displeased person spends time (Vip I/Ch 9/9)

(D)

daaha = burning sensation (Vip I/Ch.1/22)

daan = gifts on auspicious days (Vip I/Ch 7/11); charity (Vip II/Ch.1)

dand = punishment awarded exactly according to the law (Vip I/Ch 3/27), threat (Vip I/Ch 4/2, 6/3)

darbh = grass with roots (Vip I/Ch 6/8)

data shuddha = pure donor, sincere and guileless donor (Vip II/Ch 1/12)

Datt Gathapati = (Vip I/Ch 9/2)

dattabhritibhaktavetan = servants who were given food and cash as daily wages (Vip I/Ch 3/10)

Devadatta = (Vip I/Ch 1/6, 9/3, 10/6)

Devaraman = (Vip I/Ch 4/2, II/Ch 8/2)

deya shuddha = pure food or alms (Vip II/Ch 1/12)

Dhanavaha = (Vip II/Ch 2/2)

Dhanadev Gathapati = (Vip I/Ch 10/2)

Dhanapal = (Vip II/Ch 4/2)

Dhanapati = (Vip I/Ch 1/20, II/Ch 1/1)

Dhanvantari = (Vip I/Ch 7/8)

Dhanya Yaksh = (Vip II/Ch 2/2)

Dharan Yaksh = (Vip I/Ch 9/2)

dharim = goods that are sold by weight, such as sugar, butter, oil, etc (Vip I/Ch 2/18)

Dharini = (Vip I/Ch 9/5)

Dharini Devi = (Vip II/Ch 1/3)

dharma = righteousness and piety (Vip II/Ch 1)

dharma-daan = pious charity (Vip II/Ch 1)

Dharmaghosh Gathapati = (Vip II/Ch 8/2)

Dharmaghosh Sthavir = (Vip II/Ch 1/9)

Dharmaruchi = (Vip. II/Ch 10/2)

Dharmasimha = (Vip II/Ch 8/2)

Dharmavirya = (Vip II/Ch 9/2)

divas = auspicious day (Vip I/Ch 9/21)

dohad = pregnancy desire (Vip I/Ch 2/9, 3/13, 7/13, 8/9)

Dridhapratijna = (Vip I/Ch 1/32, 2/17, II/Ch 10/2)

drishti shool = Glaucoma (Vip I/Ch 1/22)

duhkhart = physically tortured (Vip I/Ch 1/24)

dushchirna = karmas acquired by intentionally committed evil deeds (Vip I/Ch 1/19)

dushpratikrant = karmas that are not easily destroyed (Vip I/Ch 1/19)

dushprtyanandi = a person who enjoys evil deeds or who is so discontented that it is difficult to please him (Vip I/Ch 1/20)

Dutipalash = (Vip I/Ch 2/2)

Dutipalash Chaitya = (Vip I/Ch 2/5)

dvisara = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

(E)

Ekadi (Ikkai) = (Vip I/Ch 1/20, 4/14)

ekashatika = a long scarf-like non-stitched piece of cloth, also called uttariya (Vip II/Ch 1/11)

eyakamme = indulging in such (wicked and cruel) deeds (Vip I/Ch 1/21)

eyappahane = considering such (deceitful) activities to be his prime duty (Vip I/Ch 1/21)

eyasamayare = accepting such (willful) action to be good conduct (Vip I/Ch 1/21)

eyavijje = gaining expertise in such (tormenting people) activities (Vip I/Ch 1/21)

(G)

gaalana = to dissolve and throw out (Vip. I/Ch 1/26)

gadhiye (grathit) = entrapped in bonds of love (Vip I/Ch.2/22)

gal = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

gandharva = dance drama (Vip I/Ch 2/3)

Gangadatta = (Vip I/Ch 7/2, 8/9)

Gangapur city = (Vip I/Ch 9/29)

Ganges = (Vip I/Ch 1/32)

ganika natakiya kalit (-utsava) = A festival where prominent courtesans and theater artists give regular performances for entertainment (Vip I/Ch 3/27)

ganim = goods that are sold in numbers, such as coconut (Vip I/Ch 2/18)

geet = singing and music (Vip I/Ch 2/3)

giddhe (griddha) = a licentious person, one who pounces like a vulture, infatuated (Vip I/Ch 2/22)

Gitika = use of pills or tablets (Vip I/Ch 1/23)

gotras = one who terrifies cows (Vip I/Ch 2/13)

granthibhedak = bamboozlers (Vip I/Ch 3/5,), pick-pockets (Vip I/Ch 6/8)

grathit = (Vip I/Ch 4/11)

griddha = (Vip I/Ch 4/11)

grihasth Dharma = householder's code (Vip II/Ch 1/16)

Gunasheelak = (Vip II/Ch 1/1)

(H)

hadi = wooden shackles (Vip I/Ch 6/7)

hastanduk = wooden hand-cuffs (Vip I/Ch 6/7)

Hastinapur city = (Vip I/Ch 2/8)

Hastishirsha city = (Vip II/Ch 1/3)

hastnikshep = deposits without any witness (Vip I/Ch 2/18)

hilliri = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

Himalayas = (Vip I/Ch 2/8)

hrid-galan = to scoop river water (Vip I/Ch 8/11)

hrid-malan = to contaminate river water (Vip I/Ch 8/11)

hrid-manthan = to churn river water (Vip I/Ch 8/11)

hrid-mardan = to agitate river water (Vip I/Ch 8/11)

hrid-pravahan = to discharge river water (Vip I/Ch 8/11)

hrid-vahan = to drain river water (Vip I/Ch 8/11)

hun chhind-bhind-vikartak = one who utters such dreadful words like kill, cut to pieces, tear apart, slaughter

hund-samsthan = a body constitution where almost every part of the body is deformed and disfigured (Vip I/Ch 1/8)

(I)

ibhya = (Vip I/Ch 2/18, 5/9)

Ikshusara = (Vip II/Ch 3/2)

Indradatt = (Vip I/Ch 10/4, II/Ch 7/2)

Indrapur = (Vip I/Ch 2/24, 10/4)

irya samiti = care of movement (Vip I/Ch 1/13, 1/32, II/Ch 1/18)

Ishan Kone = north-eastern direction (Vip I/Ch 1/7)

isht = adorable (Vip II/Ch 1/7)

isht roop = (Vip II/Ch 1/7)

ishvar = influential and rich persons (Vip I/Ch 1/21, 2/18, 5/9, II/Ch 1/6)

(J)

jaal = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

jalachar-panchendriya tiryanch-yonik = aquatic five-sensed animal (Vip I/Ch 1/32)

Jalodar = dropsy (Vip I/Ch 1/22, 7/4)

Jamali Kumar = (Vip II/Ch 1/5)

Jambu continent = (Vip I/Ch 1/20)

Jangul = The part of Ayurveda that deals with the cure for poisons or toxicity (Vip I/Ch 7/8)

janmandh = congenital blind (Vip I/Ch 1/12)

janmandh roop = person does not even have fully formed eyes (Vip I/Ch 1/12)

jati = a class of beings (Vip I/Ch 1/32), maternal caste (Vip II/Ch 1/9)

jatunandika = a woman whose offspring die at birth (Vip I/Ch 2/16, 4/9, 8/9)

java = to read description from some other place (Vip I/Ch 1/7)

jhilliri = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

jhool = caparisons (Vip I/Ch 2/6 a)

Jinadas = (Vip II/Ch 1/1, 5/2)

Jitashatru = (Vip I/Ch 5/5, II/Ch 9/2)

Jnatadharmakathanga Sutra = (Vip I/Ch 1/3, 10/7, II/Ch 1/4)

jnayak = those who learned and practiced the art of healing through their own experience (Vip I/Ch 1/22, 8/12, 10/8)

jovvanaganupatte = to attain youth (Vip I/Ch 1/32)

jrimbha = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

jvar = fever (Vip I/Ch 1/22)

(K)

kaant = (Vip II/Ch 1/7)

kaant roop = (Vip II/Ch 1/7)

kaas = bronchitis (Vip I/Ch 1/22)

kadambachirapatra = a kind of blade (Vip I/Ch 6/7)

Kakini = a small coin (Vip I/Ch 2/6 b)

kala = arts (Vip I/Ch 2/3)

Kama Sutra = (Vip I/Ch 2/3)

Kamadhvaja = (Vip I/Ch 2/3, 4/2, 10/4)

Kamashastra = (Vip I/Ch 2/3)

kambal = dewlaps (Vip I/Ch 2/10)

Kanakapur = (Vip II/Ch 6/2)

Kanakarath = (Vip I/Ch 7/8)

kanangar = anchors (Vip I/Ch 6/7)

Kandu (khaaj) = Eczema (Vip I/Ch 7/4)

kappiye = to reach the heights of imagination (Vip II/Ch 1/16)

karan = a division of the day, there being eleven in number including *balav* (Vip I/Ch 9/21)

karapatra = saw blades (Vip I/Ch 6/7)

karmaja buddhi = practical wisdom (Vip I/Ch 8/13, 10/9)

karna vedana = pain in the ears (Vip I/Ch 1/22)

Karnirath = (Vip I/Ch 2/3)

Karotiks = Kapalik or the mendicants who carried skull (Vip I/Ch 7/9)

Karpatiks = mendicants in rags (Vip I/Ch 7/9)

Kaumarabhritya = The part of Ayurveda that deals with nursing, nutrition and cure of ailments of infants (Paediatrics) (Vip I/Ch 7/8)

Kaushambi = (Vip I/Ch 5/1, 4/2)

kautumbik = heads of large families (Vip I/Ch 1/21, 2/18, 5/9)

kavalagraha = place wooden pieces between molars to force open the mouth (Vip I/Ch 8/13)

Kayachikitsa = The part of Ayurveda that deals with the symptoms and cure of diseases in general (Vip I/Ch 7/8)

khansi = Bronchitis (Vip I/Ch 7/4)

khechar = aerial beings (Vip I/Ch 1/32)

khet = a settlement surrounded by a temporary mud wall, borough (Vip I/Ch 1/20)

khujali = eczema (Vip I/Ch 1/22)

Kimshuk flower = Butea frondosa (Vip I/Ch 9/26)

Kodh = Leprosy (Vip I/Ch 7/4)

kootagraha = trapper (Vip I/Ch 2/9, 4/14)

kootakarashala = a camouflaged house (Vip I/Ch 3/26, 9/11)

kootapash = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

Kridayan Dhatri = play-nurse- maid or the one who took charge of playing with the baby (Vip I/Ch 2/17)

Krishnadevi = (Vip II/Ch 4/2)

Krishnashri = (Vip I/Ch 9/3)

Kritavanamalapriya Yaksh = (Vip II/Ch 1/3)

kshatrakhanak = wall-breakers (Vip I/Ch 3/5)

Kshatriya = (Vip I/Ch 1/8, 5/6)

kshayopasham = extinction-cum-pacification (Vip II/Ch 1/7)

Kshipraturya trumpet = (Vip I/Ch 3/13)

Kshir Dhatri = milk-nurse-maid or the one who took charge of feeding (Vip I/Ch 2/17)

kshurapatra = razor blades (Vip I/Ch 6/7)

kudand = less or more than the legally specified punishment (Vip I/Ch 3/27)

kukshi shool = stomach ache (Vip I/Ch 1/22)

kukud = humps (Vip I/Ch 2/10)

kula = a sub-class of beings, species (Vip I/Ch 1/32, paternal caste (Vip II/Ch 1/9)

kulakoti = sub-group of a class of beings (Vip I/Ch 1/32)

kundi = iron pots (Vip I/Ch 6/7)

Kunik = (Vip II/Ch 1/5)

kusha = grass without roots (Vip I/Ch 6/8)

kusht roag = leprosy (Vip I/Ch 1/22)

(L)

labhantaraya = gain hindering (Vip II/Ch 1/7)

laddha (labdh) = to inherit wealth earned by ancestors (Vip II/Ch 1/7)

laghuhast = skilled touch (Vip I/Ch 7/8)

lalliri = a kind of fishing net (Vip. I/Ch 8/11)

lavak = quail (Vip I/Ch 7/9)

Lavan Samudra = (Vip I/Ch 2/18)

(M)

maarana = to kill (Vip I/Ch 1/26)

madhu = wine made from flowers or honey (Vip I/Ch 2/10, 3/11)

Madhyamika = (Vip II/Ch 5/2)

madya = a kind of white wine (Vip I/Ch 2/10, 3/11)

Mahabal = (Vip I/Ch 3/2, II/Ch 1/1, 7/2)

Mahachandra = (Vip I/Ch 4/2, II/Ch 1/1, 5/2)

Mahaghosh = (Vip II/Ch 8/2)

Mahapur = (Vip II/Ch 7/2)

maharth = impressive (Vip I/Ch 3/19)

Mahasen = (Vip I/Ch 9/5)

Mahashukra Devlok = divine dimension (Vip II/Ch 1/20)

Mahavideh = (Vip I/Ch 1/32)

Maheshvardatt = (Vip I/Ch 5/5)

Majjan Dhatri = bath-nurse-maid or the one who took charge of giving a bath (Vip I/Ch 2/17)

Mandan Dhatri = dress-nurse-maid or the one who took charge of putting on dress and ornaments (Vip I/Ch 2/17)

mandavik = landlords (Vip I/Ch 1/21, 2/18, 5/9)

Manibhadra Yaksh = (Vip I/Ch 10/2)

Manipad = (Vip II/Ch 6/2)

Manipur = (Vip II/Ch 7/2)

manogaye = the idea that is still in mind and not expressed in words (Vip II/Ch 1/16)

manojna = (Vip. II/Ch 1/7)

manojna roop = (Vip II/Ch 1/7)

manom = (Vip II/Ch 1/7)

manom roop = (Vip II/Ch.1/7)

manoram = (Vip II/Ch 3/2)

mastak shool = headache (Vip I/Ch 1/22)

Mathura = (Vip I/Ch.6/2)

mati, shrut, avadhi and manahparyav jnana = sensory knowledge, scriptural knowledge, extrasensory perception of the physical dimension, and extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings (Vip I/Ch 1/2)

matsyapuchchha = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

matsyiks = fishermen (Vip I/Ch 8/7)

Megh Kumar = (Vip II/Ch 1/18)

Megharath = (Vip II/Ch 5/2)

merak = wine made from palm-fruit (Vip I/Ch 2/10, 3/11)

meya = goods that are sold by measurement, such as cloth, tape etc (Vip I/Ch 2/18)

Mitra = (Vip I/Ch 2/2, 8/6, II/Ch 6/2)

Mitranandi = (Vip II/Ch 10/2)

Mool kand = use of radish, carrot, potato and other roots (Vip I/Ch 1/23)

Mriga Devi = (Vip I/Ch 1/12, 5/2)

Mrigagram = (Vip I/Ch 1/7)

Mrigaputra = (Vip I/Ch 1/6, 2/25, 8/14, 9/29, 10/10)

muchchhiye (murchchhit) = irrational state of mind, madly attached (Vip I/Ch 2/22, 4/11)

muhurta = moment (Vip I/Ch 9/21)

Mukta = liberated (Vip II/Ch 2/2)

(N)

Naagdev Gathapati = (Vip II/Ch 7/2)

nabvangasuttapadibohiya = her nine latent sense organs were animated (two ears, two eyes, two nose-holes, one tongue, one skin or organ of touch and one mind) (Vip I/Ch 2/3)

nakshatra = lunar mansion (Vip I/Ch 9/21)

Nandanavan = (Vip II/Ch 4/2)

Nandipur = (Vip I/Ch.8/6)

Nandivardhan = (Vip I/Ch 1/6, 6/2)

nigad = iron shackles (Vip I/Ch 6/7)

nikar = bunches (Vip I/Ch 6/7)

Nilashoka = (Vip II/Ch 5/2)

Nirgranth = one who is free of all knots, inner and outer (Vip II/Ch 1/6)

Nirnaya = (Vip I/Ch.3/10)

Niruha = to cause sweating by applying medicated oil (Vip I/Ch 1/23)

nritya = dance (Vip I/Ch 2/3)

(O)

oodhas = udders (Vip I/Ch 2/10)

(P)

paardariks = womanizers (Vip I/Ch 3/5)

paaricchedya = goods that are sold in pieces after testing, such as diamond, emerald, etc (Vip I/Ch 2/18)

Paashamriga Yaksh = (Vip II/Ch 10/2)

paatana = to abort in one piece (Vip I/Ch 1/26)

padanduk = fetters for feet (Vip I/Ch 6/7)

Padmavati = (Vip I/Ch 5/2)

Panch Mahavrat = five great vows (Vip II/Ch 1/6)

panigrahan = the ritual of the bridegroom accepting the hand of the bride (Vip I/Ch 9/22)

paribhajan = distributing (Vip I/Ch 2/10)

paribhog = sharing with their friends (Vip I/Ch 2/10)

paribhojan = sharing (Vip I/Ch 7/9)

parinamiki buddhi = deductive wisdom (Vip I/Ch 8/13, 10/9)

paritant = disappointed (Vip I/Ch 1/23, 8/13, 10/9)

Patalikhand = (Vip I/Ch 7/2)

patra shuddha = pure seeker, such as a detached Shraman (Vip II/Ch 1/12)

patta (prapt) = to earn wealth through one's own efforts (Vip II/Ch 1/7)

patthiye = to wish and pray again and again for a specific thing (Vip II/Ch 1/16)

paushadh-vrat = partial ascetic vow (Vip II/Ch 1/15)

paushadhashala = place for observing partial ascetic vow or paushadh-vrat (Vip II/Ch 1/15, 10/2)

praharans = weapons that can be launched or thrown like arrow (Vip I/Ch 2/6 a)

Prajnapana Sutra Vritti = (Vip I/Ch 1/32)

pramarjan = inspect and clean (Vip II/Ch 1/15)

pramudit prakeeditabhiram (-utsava) = A festival where acrobats and other performers draw crowds (Vip I/Ch 3/27)

prapampul = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

prapanchul = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

prasadavatamsak = most exclusive, as the crown is among ornaments (Vip II/Ch 1/4)

prasanna = wine made from grapes (Vip I/Ch 2/10)

Prashna Vyakaran = (Vip I/Ch 1/4)

pratikraman = critical review and expiation (Vip I/Ch 1/32)

pravakshan = cutting of the epidermis using special micro-instruments (Vip I/Ch 1/23)

Prithviavatansak = (Vip I/Ch 9/2)

Prithvishri = (Vip I/Ch 10/4)

priya = (Vip II/Ch 1/7)

priya roop = (Vip II/Ch 1/7)

Priyachandra = (Vip II/Ch 6/2)

Priyadarshan = (Vip II/Ch 1/7)

Priyangu = (Vip I/Ch 10/2)

Priyasen = (Vip I/Ch 2/24)

Pundarikini city = (Vip II/Ch 2/2)

punj = stacks (Vip I/Ch 6/7)

Purimtal = (Vip I/Ch 3/2)

Purnabhadra = (Vip II/Ch 9/2)

Purnabhadra Chaitya = (Vip I/Ch 1/1)

Purnabhadra Yaksh = (Vip I/Ch 1/7, II/Ch 9/2)

Purvas = subtle canon (Vip I/Ch 1/2)

pushkarini = bavadi, a deep and elaborate masonry tank or well with steps down to the water level (Vip I/Ch 7/12)

Pushpadatt = (Vip II/Ch 3/2)

Pushpakarandak = (Vip II/Ch 1/3)

Pushpanandi = (Vip I/Ch 9/2)

Putpaak = use of cooked medicines (Vip I/Ch 1/23)

(R)

raja = regional kings (Vip I/Ch 1/21)

Rajagriha = (Vip II/Ch 1/1)

Raktapad Yaksh = (Vip II/Ch 7/2)

Raktashoka = (Vip II/Ch 7/2)

Raktavati = (Vip II/Ch 7/2, 9/2)

Rasayan = The part of Ayurveda that deals with the elixirs of life and other medicines (Vip I/Ch 7/8)

rashtrakoot = a governor (Vip I/Ch 1/20)

rati = sex play (Vip I/Ch 2/3)

Ratnaprabha Prithvi = the first hell (Vip I/Ch 1/24)

Rigveda = (Vip I/Ch 5/3)

Rishabhapur = (Vip II/Ch 2/2)

Rishabhdatt Gathapati = (Vip II/Ch 3/2)

Rohita = (Vip I/Ch 9/2)

Rojhas = Neelagaya or black-buck (Vip I/Ch 4/7)

(S)

Saahanjani = (Vip I/Ch 4/2)

saam = incantation (Vip I/Ch 4/2, 6/3)

Saamaveda = (Vip I/Ch 5/3)

Sagardatt = (Vip I/Ch 7/2)

Sagaropam = (Vip I/Ch 1/24)

Sahasramravan garden = (Vip II/Ch 1/9)

sahasrapaak = medicated and perfumed oils and pastes made with mixtures of one thousand herbs (Vip I/Ch 9/24)

Saket = (Vip II/Ch 10/2)

sallekhana = ultimate vow (Vip II/Ch 1/19)

Samavasaran = (Vip I/Ch 1/10)

Samayik = (Vip II/Ch 1/19)

Sambhutivijaya = (Vip II/Ch 6/2)

sammaniya dohala= whose pregnancy-desire has been respected by providing the desired thing (Vip I/Ch 3/15)

sampanna dohala = her mind is contented as a consequence of satiation of pregnancy-desire (Vip I/Ch 3/15)

sampunna dohala = one whose pregnancy-desire has been fulfilled (Vip I/Ch 3/15)

samyaktva = righteousness (Vip I/Ch 2/25)

Sanatkumar kalp = the third heaven (Vip II/Ch 1/20)

sandhicchedak = housebreakers (Vip I/Ch 3/5)

sankappe = crystallization of an idea into a resolve (Vip II/Ch 1/16)

Saraswati Devi = (Vip II/Ch 2/2)

sari = Indian female dress (Vip I/Ch 7/12)

sarthavaha = caravan chiefs (Vip I/Ch 1/21)

Sarvarth Siddha Viman = (Vip II/Ch 1/20)

Sarvatobhadr = (Vip I/Ch 5/5)

Sarvatobhadra city = (Vip I/Ch 10/10)

Saudharma Devlok = (Vip I/Ch.1/32)

Saudharma kalp = a dimension of gods (Vip II/Ch 1/19)

Saugandhika = (Vip II/Ch 5/2)

seedhu = wine made from mixture of jaggery and grains (Vip I/Ch 2/10, 3/11)

shaatana = to disintegrate and throw out in pieces (Vip I/Ch 1/26)

Shakat = (Vip I/Ch 1/6, 4/3)

shakat = bullock cart (Vip I/Ch 4/9)

shakuniks = bird catchers (Vip I/Ch 8/7)

Shalakya = The part of Ayurveda that deals with the cure of diseases of eyes, nose and other parts of the upper half of the body (Vip I/Ch 7/8)

Shalatavi = (Vip I/Ch 3/3)

Shalyahatya = The part of Ayurveda that deals with the removal of thorns, cysts etc or surgery (Vip I/Ch 7/8)

shalyoddhar = use surgical instruments (Vip I/Ch 8/13)

shanti-home = peace offerings (Vip I/Ch 5/6)

shashthakhaman tap = two day fast (Vip I/Ch 2/6 a)

Shatadvar = (Vip I/Ch 1/20, 10/2)

Shatani = (Vip I/Ch 5/2)

shatpaak = medicated and perfumed oils and pastes made with mixtures of one hundred herbs (Vip I/Ch 9/24)

Shaurik Datt = (Vip I/Ch 1/6, 8/2)

Shaurik Yaksh = (Vip I/Ch 8/2)

Shaurikapur = (Vip I/Ch 8/2)

Shaurikavatansak = (Vip I/Ch 8/2)

sheel = morality (Vip II/Ch 1)

Shikshavrats = instructive or complimentary vows of spiritual discipline (Vip II/Ch 1/6)

Shilika = herbal medicines like Chirayata (Vip I/Ch 1/23)

Shiravedh = bleeding toxic blood by cutting nerve/end (Vip I/Ch 1/23)

Shirovasti = covering head with leather bag filled with medicated oil or other such liquid (Vip I/Ch 1/23)

shivahast = healing touch (Vip I/Ch 7/8)

shraant = exhausted (Vip I/Ch 1/23, 8/13, 10/9)

Shraman = (Vip II/Ch 1/7)

Shramanopasak = a devotee of ascetics (Vip II/Ch 1 14)

shravak = Jain layman (Vip II/Ch 1/15)

Shravak Dharma = householder's code (Vip II/Ch 2/2)

Shrenik = (Vip II/Ch 1/18)

shreshti = established merchants (Vip I/Ch 1/21, 2/18, 5/9)

Shri = (Vip I/Ch 2/2)

Shridaam = (Vip I/Ch 6/2)

Shridevi = (Vip I/Ch 9/2, II/Ch 2/2, 3/2, 6/2, 8/2)

Shrikanta = (Vip II/Ch 9/2, 10/2)

shrinkhala = iron chains (Vip I/Ch 6/7)

Shriyak = (Vip I/Ch 8/6)

Shrut Devata = the divine scripture (Vip II/Ch 10/2)

shrutskandhs = parts of a book (Vip I/Ch 1)

shubhahast = pious and lucky touch (Vip I/Ch 7/8)

Shudra = (Vip I/Ch 5/6)

shulaprot = grilled on sticks (Vip I/Ch 8/8)

shvas = asthma (Vip I/Ch 1/22, 7 4)

Shvetabhadra Yaksh = (Vip I/Ch 5/1)

Shvetashoka = (Vip II/Ch 6/2)

Shyama = (Vip I/Ch 9/6)

Siddha = perfect (Vip II/Ch 2/2)

Siddha-state = (Vip I/Ch 1/4)

Simhagiri = (Vip I/Ch 4/6)

Simhapur = (Vip I/Ch 6/6)

Simharath = (Vip I/Ch 6/6)

Simhasen = (Vip I/Ch 9/5)

Skandashri = (Vip I/Ch 3/6)

Snehapan = giving medicated oils (Vip. I/Ch 1/23)

soma = (Vip II/Ch 1/7)

soma roop = (Vip II/Ch 1/7)

Somadatt = (Vip I/Ch 5/3)

sthasak = plumed belly-band and other ornaments (Vip I/Ch 2/6 a)

sthavirs = senior ascetics (Vip II/Ch 1/20)

sthitikshaya = shedding the karma particles determining the extant of life span (Vip II/Ch 1/20)

Stupakarandak = (Vip II/Ch 2/2)

Subahu = (Vip II/Ch 1/1, 2/2, 10/2)

Subandhu = (Vip I/Ch 6/3)

Subhadra = (Vip I/Ch 2/4, 4/3)

Subhadraadevi = (Vip II/Ch 6/2, 7/2)

Subhag = (Vip II/Ch 1/7)

Sudarshan Yaksh = (Vip I/Ch 6/2)

Sudarshana = (Vip I/Ch 4/2)

Sudatt = (Vip II/Ch 1/10)

Sudharma = (Vip II/Ch 5/2)

Sudharma Yaksh = (Vip I/Ch 1/7, 2/2)

Sughosh = (Vip II/Ch 8/2)

Sujaat = (Vip II/Ch 1/1)

Sujat Kumar = (Vip II/Ch 3/2)

Sukaal Yaksh = (Vip II/Ch 5/2)

Sukha-vipaak = fruits of good or noble karmas (Vip I/Ch 1)

Sukrishna = (Vip II/Ch 5/2)

Sunand = (Vip I/Ch 2/8)

Sunsumar = (Vip I/Ch 1/32)

supatra daan = charity to the deserving (Vip II/Ch 1)

Supratishth = (Vip I/Ch 9/5)

Supratishthapur city = (Vip I/Ch 1/32)

sura = wines (Vip I/Ch 2/10, 3/11)

Suroop = (Vip II/Ch 1/7)

Sushen = (Vip I/Ch 4/2)

Sushumna = the channel of the spinal cord (Vip II/Ch 1/16)

sutra-bandh = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

Suvasav = (Vip II/Ch 1/1, 4/2)

Swedan = perspiring (Vip I/Ch 1/23)

(T)

tabbhavanabhaviye (tadbhaavana bhaavit) = devoting all mental efforts to a goal (Vip I/Ch.2/22)

tachchitte (tadchitta) = obsessed state of psyche (Vip I/Ch 2/22)

tadajjavasane (tadadhyavasaya) = engaged in owning some thing (Vip I/Ch 2/22)

tadappiyakarane (tadarpit karan) = devoting all physical efforts to a goal (Vip I/Ch 2/22)

tadatthovautte (tadarthopayukt) = carefully engaged in fulfilling one's desires (Vip I/Ch 2/22)

taijas and karman shariras = fiery and karmic bodies (Vip I/Ch 1/32)

tais (mahamauyao) = wives of father's elder brothers, uncles (Vip I/Ch 3/8)

Takshan = scraping of the epidermis with knife or other such instrument (Vip I/Ch 1/23)

talavar = knights of honour (Vip I/Ch 1/21, 2/18, 5/9)

tallese (tadleshya) = obsessed state of soul (Vip I/Ch 2/22)

tammane (tadman) = obsessed state of mind (Vip I/Ch 2/22)

tant = confused or mentally tired (Vip I/Ch 1/23, 8/13, 10/9)

tap = austerity (Vip II/Ch 1)

Tarpan = pouring of medicated oils (Vip I/Ch 1/23)

Tattvavati = (Vip II/Ch 8/2)

taus (mahapiuye) = father's elder brothers, uncles (Vip I/Ch 3/8)

Tejoleshya = firepower (Vip II/Ch 1/10, 2/6 a)

Tetaliputra = (Vip I/Ch 10/7)

Tirthankar Yugabahu = (Vip II/Ch 2/2)

tithi = date of the lunar calendar (Vip I/Ch 9/21)

Titodis = sandpipers (Vip I/Ch 3/10)

Titthagare (Tirthankar) = the religious ford-maker (Vip I/Ch 1/6)

trapu = zinc (Vip I/Ch 6/7)

trisara = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

trividh-shuddhi = three-way-purity (Vip II/Ch 1/12)

(U)

uchchhulk (-utsava) = A festival where no state tax, levy, or fees is charged on anything (Vip I/Ch 3/27)

Udayan = (Vip I/Ch 5/2)

Udit = (Vip I/Ch 3/10)

Udvartan = rubbing with medicinal pastes (Vip I/Ch 1/23)

Ujjhitak = (Vip I/Ch 1/6, 2/4, 4/14)

ujjhitak = the discarded one (Vip I/Ch 2/17)

Umbaradatt Yaksh = (Vip I/Ch 7/2)

Umbardatt = (Vip I/Ch 1/6)

upapradan (daam) = bribery (Vip I/Ch 4/2, 6/3)

ur-parisarp = non-limbed reptilian (Vip I/Ch 1/32)

urdhvamukh = face upward (Vip I/Ch 6/8)

ushtrika = pitcher-like pots shaped like hump of a camel (Vip I/Ch.6/7)

utkar (-utsava) = A festival where no tax or rent is charged on the land taken for shops and stalls Also where no tax is levied on the cattle brought for sale (Vip I/Ch 3/27)

utkshep = to throw (Vip II/Ch 1/12)

Utpala = (Vip I/Ch 2/9)

Utsedhangul units = standard of fragmentary units of angul or the breadth of finger (Vip I/Ch 1/3)

Uttar Kanchuk = a special additional armour plate (Vip I/Ch 2/6 a)

Uttarakuru = (Vip II/Ch 10/2)

(V)

vaat = one of the body humours (Vip I/Ch 1/8)

vaat-roag = rheumatism (Vip I/Ch 1/8)

vaguriks = animal trappers (Vip I/Ch 8/7)

Vaidya = Ayurvedic doctor (Vip I/Ch 1/22, 7/8, 8/12, 10/8)

vaikriya = transmutable (Vip I/Ch 1/32)

vainayiki buddhi = acquired wisdom (Vip I/Ch 8/13, 10/9)

Vaishraman Kumar = (Vip II/Ch 6/2)

Vaishramanabhadra = (Vip II/Ch 4/2)

Vaishramanadatt = (Vip I/Ch 9/2)

Vaishya = (Vip I/Ch 5/6)

Vaitadhya mountain = (Vip I/Ch 1/32, 2/24)

valkal rashmi = whips made of hemp and other barks (Vip I/Ch 6/7)

valkal-bandh = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

Vaman = emesis (Vip I/Ch 1/23)

Vanakhand = (Vip I/Ch 7/2)

Vanijyagram = (Vip I/Ch 2/2)

vannao (varnan) = description (Vip I/Ch 1/7)

Varadatt = (Vip II/Ch 1/1, 10/2)

Varanasi = (Vip I/Ch 3/32, 4/14)

Varasena = (Vip II/Ch 10/2)

Vardhamanapur = (Vip I/Ch 10/2)

Vasavadatt = (Vip II/Ch 4/2)

vashart = enslaved by sense organs (Vip I/Ch 1/24)

Vastikarma = common enema (Vip I/Ch 1/23)

Vasudatta = (Vip I/Ch 5/3)

Vatsyayan = (Vip I/Ch 2/3)

Vijaya = (Vip I/Ch 1/8, 2/2, 3/4)

Vijayamitra = (Vip I/Ch 2/4, 10/2)

Vijayapur = (Vip I/Ch 7/8, II/Ch 4/2)

Vijayavardhaman borough = (Vip I/Ch 1/20)

Vijayavardha = (Vip I/Ch 10/2)

Vimalavahan = (Vip II/Ch 10/2)

viniya dohala = who has become free of her pregnancy-desire (Vip I/Ch 3/15)

vinnaya = one who can differentiate between good and bad, sagacious (Vip I/Ch 1/32)

vipaak = the fruits of the good and bad karmas acquired by a soul (Vip I/Ch 1)

Virabhadra Yaksh = (Vip II/Ch 6/2)

Virakrishnamitra = (Vip II/Ch 3/2)

Virapur = (Vip II/Ch 3/2)

Virasen Yaksh = (Vip II/Ch 8/2)

Virechan = purgation (Vip I/Ch 1/23)

visara = a kind of fishing net (Vip I/Ch 8/11)

visvadan = enjoyed (Vip I/Ch 7/9)

vochchhinna dohala = the craving for the desired thing has disappeared from her mind (Vip I/Ch 3/15)

vrishan = testicles (Vip I/Ch 2/10)

(Y)

yaag = offering worship (Vip I/Ch 7/11)

Yajurveda = (Vip I/Ch 5/3)

Yamuna = (Vip I/Ch 8/11)

Yatharha (-utsava) = A festival that has all facilities and is well managed (Vip I/Ch 3/27)

Yogashastra = (Vip II/Ch 1/16)

yoni = the place of origin (genus (Vip I/Ch 1/32)

सम्पादन में सहयोगी-उपयोगी आगम : आभार दर्शन
GRATITUDE FOR REFERENCE WORKS USED IN THIS BOOK

★ **निरयावलिका सूत्र (संस्कृत टीका)** — **Nirayavalika Sutra (Sanskrit Tika)**
टीकाकार · श्रीचन्द्र सूरि (पार्श्व देवगणि) — *by* Shrichand Suri (Parshvadev Gani)

★ **निरयावलिका सूत्र** — **Nirayavalika Sutra**
हिन्दी–व्याख्याकार · — ***Hindi commentator*** :
आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म — Acharya Samrat Shri Atmaram ji M.
सम्पादिका · उपप्रवर्तनी साध्वी स्वर्णकान्ता जी म — ***Editor*** : Up-pravartini Sadhvi Svarnakanta ji M

★ **निरयावलिका सूत्र** — **Nirayavalika Sutra**
संस्कृत–हिन्दी–गुजराती व्याख्या सहित — ***with Sanskrit-Hindi-Gujarati commentary*** :
आचार्यश्री घासीलाल जी म — Acharya Shri Ghasilal ji M

★ **निरयावलिका सूत्र** — **Nirayavalika Sutra**
प्रधान सम्पादक युवाचार्य श्री मधुकर मुनि — ***Editor-in-chief*** : Yuvacharya Shri Madhukar Muni

★ **विपाक सूत्र** — **Vipaak Sutra**
संस्कृत टीका आचार्य अभयदेवसूरि — ***Sanskrit Tika*** : Acharya Abhay Dev Suri

★ **विपाक सूत्र** — **Vipaak Sutra**
हिन्दी व्याख्या — ***Hindi commentary*** :
आचार्यसम्राट् श्री आत्माराम जी म — Acharya Samrat Shri Atmaram ji M

★ **विपाक सूत्र** — **Vipaak Sutra**
संस्कृत–हिन्दी–गुजराती व्याख्या सहित — ***with Sanskrit-Hindi-Gujarati commentary*** :
आचार्यश्री घासीलाल जी म — Acharya Shri Ghasilal ji M

★ **विपाक सूत्र** — **Vipaak Sutra**
प्रधान सम्पादक युवाचार्य श्री मधुकर मुनि — ***Editor-in-chief*** : Yuvacharya Shri Madhukar Muni

उक्त पुस्तकों के सम्पादक–प्रकाशक सभी के प्रति हार्दिक आभार।
Heartfelt gratitude for editors and publishers of aforesaid books.

विशेष : *आचार्य देवेन्द्र मुनि शोध संस्थान, उदयपुर से सम्पादन हेतु आवश्यक सभी प्रकार की पुस्तके प्राप्त कराने में श्री दिनेश मुनि जी तथा वहाँ के अधिकारियो के प्रति विशेष आभार।*

Special reference : Special indebtedness for Shri Dinesh Muni ji and management of **Acharya Devendra Muni Shodh Samsthan,** Udaipur for making available all needed reference books

---

